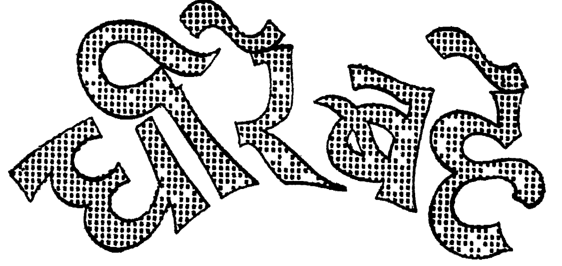
धीरे बहे डोन रे.

रूस मे बदलती सस्कृति के चित्रण का

महान्, मानवीय उपन्यास



मिखाइल शोलोखोव

अनुवादक :

गोपीकृष्ण 'गोपेश'

धीरे...

चौथा खण्ड





राजकमल प्रकाशन

मूल्य : दस रुपये

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली
मुद्रक :
एवरेस्ट प्रेस, ४, चमेलियान रोड, दिल्ली-६

हमारी धरती पर हलो की लीके नहीं हैं...
हमारी धरती पर घोडो की टापो के निशान हैं—
और
हमारी धरती मे बीज नहीं,
कज़्ज़ाको के शीश बोए जाते है।
हमारा शान्त दोन-नद जवान बेवाओ से जवान है—
हमारे दोन-नद के प्रदेश मे फूल नहीं,
यतीम फूलते है—
शान्त दोन की लहरो मे
हमारे पिताओ और माताओ के आँसू तरगित हैं।
ओह, दोन नद।
ओह, पिता दोन-नद—
तुम बहते हो तो तुम्हारी धार
इतनी गँदली क्यों होती है ?
मै दोन-नद
मेरी लहरियाँ इतनी गँदली भला क्यो हो ?
मेरी गहराइयों से शीतल सोते फूटते हैं—
मेरे अन्तराल मे, शान्त दोन,
रुपहली मछलियाँ उछलती हैं।

एक पुराना कज़्ज़ाक गीत

: १ :

लाल फौजें दक्षिणी मोर्चे से बहुत बडी सख्या मे खीच ली गईं तो ऊपरी दोन के कज्जाको के विद्रोह से दोन-सेना की कमान को अपनी सेनाओ को फिर से वर्गों मे बाँटने का अवसर मिल गया। कमान ने नोवोचेरकास्क तक अपने काम का विस्तार किया और इसमे किसी तरह की कोई बाधा कही नही पडी। साथ ही कमान ने कामेन्स्काया और उस्त-बेलोकालितवेन्स्काया के जिलो मे अपनी सबसे विश्वसनीय और अनुभवी रेजीमेटे जमा की। इन रेजीमेटो मे उन्होने दोन के निचले इलाको के कज्जाको और कालमीको को मुख्य रूप से रखा। इस हमलावर फौज का काम रहा सही मौके पर जनरल फितशालौरोव की यूनिटो से अपना तार जोडना, आठवी लाल सेना की बारहवी डिविजन को तार-तार करना, उसकी तेरहवी और यूराल डिविजनो को बाहर से घेरना और उत्तर का मोर्चा भेदकर विद्रोही कज्जाको से मिल जाना।

हमलावर फौज को एक जगह जमाने की योजना, कुछ समय पहले, जनरल देनिसोव और उसके चीफ-ऑफ-स्टाफ जनरल पोल्याकोव ने बनाई थी। उस समय दोन सेना की कमान उनके हाथो मे थी। मई के खत्म होते-होते पूरी योजना पर अमल हो गया था। कोई सोलह हजार सगीनें और तलवारें, छत्तीस फील्ड तोपें और एक सौ चालीस मशीनगने कामेन्स्काया पहुँचा दी गई थी। १९१८ की गर्मी मे भर्ती की उम्र के कज्जाको की जो 'तरुण-सेना' बनी थी, उसे बहादुर

रेजीमेटों और आखिरी घुडसवार यूनिटो के साथ जमाव के ठिकानो की तरफ रवाना कर दिया गया था।

इस बीच विद्रोही सेनाएँ सभी तरफ से घिर गईं। पर वे सजा देने वाली लाल फौजो के हमले को नाकाम करती रही। दक्षिण मे, दोन के बायें किनारे पर, दो विद्रोही डिविजनें अपनी खाइयो मे डटी रही और उन्होने दुश्मन को पार पहुँचने नही दिया, हालाँकि लाल सेना की बैटरियाँ पूरे मोर्चे पर फैली बहुत ही बेरहमी से उन पर बराबर गोले बरसाती रहीं। तीन दूसरी डिविजनो ने पश्चिम, उत्तर और पूर्व मे विद्रोहियो के सीमा-क्षेत्रो की रक्षा की। इस सिलसिले मे उन्हें बडा नुकसान उठाना पडा। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र मे तो नुकसान खास तौर पर ज्यादा हुआ। लेकिन इन डिविजनो ने पीछे हटने की कोशिश नाम को भी न की और खोपर-क्षेत्र की सीमाओं पर यह बडी ही मजबूती से अपने कदम जमाये रही।

तातारस्की के कज्जाक, जो अपने गाँव के सामने के नदी-किनारे मोर्चा बाँधे रहे, उससे लाल फ़ौजो के बीच थोडी घबराहट फैली। दूसरी तरफ कज्जाको को मजबूर होकर जो निकम्मापन छोड़ना पडा उससे वे ऊब गए। एक रात उन्होंने चुपचाप बजरों पर सवार होकर नदी पार की और दाहिने किनारे पर पहुँचकर, लाल फौजियो की एक चौकी अचानक ही हथिया ली, चार लोगो को मार डाला और एक मशीनगन छीन ली। दूसरे दिन लाल फ़ौजी व्येशेन्स्काया के निचले इलाको से एक बैटरी ले आये, और कज्जाक खाइयों पर पूरे जोर-शोर से आग छिडकने लगे। तोपो के गोले पेड़ो के बीच फटे तो कम्पनी ने हड़बडाकर अपनी खाइयाँ छोड़ दी और कम्पनी के लोग नदी से पीछे हट-कर जगल की तरफ भागे। एक दिन बाद बैटरी वापस बुला ली गई और तातारस्की के कज्जाक फिर अपनी-अपनी जगह आ डटे। कम्पनी की तोपों के गोलो से थोडी बरबादी हुई। हाल की कुमुक के दो जवान गोलों के टुकड़ो से मारे गए, और कम्पनी के कमांडर का अर्दली जख्मी हो गया। वह अभी-अभी थोड़े समय पहले व्येशेन्स्काया से आया था।

उसके बाद अपेक्षाकृत शान्ति-सी हो गई, और खाइयों की जिन्दगी

बदस्तूर चलने लगी। अब कज्जाको की औरते अकसर ही रात को खाइयो मे आने और रोटी और घर की बनी वोदका अपने साथ लाने लगी। वैसे खाने-पीने की यहाँ कोई तकलीफ न थी। कज्जाको ने दो छुट्टे बछडो को मार डाला था। इस पर भी वे हर दिन तालाब पर जाकर मछलियाँ फँसा लाते थे। क्रिस्तोनिया मछली महकमे का मुखिया माना जाता था। किसी शरणार्थी का सत्तर फुट लम्बा जाल उसके हाथ लग गया था और मछली के शिकार के समय वह इसे ताल के गहरे-से-गहरे हिस्से मे डाल देता था। साथ ही बडी डीगे मारता था कि नदी-किनारे की सारी चरागाहो मे एक भी ताल ऐसा नही है जिसे वह पानी मे हिलकर पार न कर सके।

मगर एक हफ्ते की लगातार मछलीमारी से क्रिस्तोनिया की कमीज और 'शारोवारी' कीचड से इस तरह चीकट होकर बदबू करने लगी कि अनीकुश्का ने खाई मे उसके साथ लेटने से साफ-साफ इन्कार कर दिया। बोला—"तुम्हारे बदन से मीठे पानी की मरी हुई, बड़ी मछली की तरह बदबू आती है। अगर मैं तुम्हारे साथ एक दिन और रहा तो किसी मछली को हाथ न लगा पाऊँगा।"

और, फिर, मच्छरो के बावजूद अनीकुश्का खुले मे सोने लगा। तो, अब खाई की बगल मे लेटने से पहले वह जमीन से मछलियो की खाल और अतड़ियो से भरी रेत साफ करता और परेशानी से नाक-भो सिकोडता। लेकिन, सबेरे क्रिस्तोनिया मछली के शिकार से लौटता, शात भाव से, मर्यादा के साथ खाई के दरवाजे के पास बैठता और फिर, शिकार की कार्प मछलियो को साफकर उनकी अतडियाँ निकालने लगता। बड़ी मक्खियाँ उसके सिर के ऊपर मँडराती और पीली चीटियो के दल-के-दल धावा-सा बोलते। अनीकुश्का हाँफते हुए दौड़ता और दूर से ही चीखता—"तुम्हे कोई दूसरी जगह नही मिलती ? काश कि तुम्हारी मछलियो की ये हड्डियाँ तुम्हारे गले मे जा फँसे ! दूर चले जाओ, ईसा के नाम पर यहाँ से दूर चले जाओ। यहाँ मैं सोता हूँ और तुम हो कि यही चारो तरफ मछलियो की अतड़ियाँ फैला रहे हो ! चीटियो की एक पूरी फौज-की-फौज अपने साथ ले आये हो, और ऐसा कर दिया

है कि जगह अस्त्राखान की तरह बू करने लगी है।"

क्रिस्तोनिया घर का बना अपना चाकू पतलून के पाँयचो में पोछता, अनीकुश्का के सफाचट नफरत से भरे चेहरे पर विचार-भरी दृष्टि डालता और फिर शात भाव से कहता—"अनीकुश्का, तुम मछलियो की महक सह नही पाते। इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पेट मे कीडे है। तुम खाली पेट थोडा-सा लहसुन क्यो नही खा लिया करते ?"

इस पर अनीकुश्का थूकते और गालियाँ बकते हुए चला जाता।

इस तरह उनकी चोचे चलती रहती। यो पूरी कम्पनी खासे मेल-मिलाप से रहती। खाने की चीजे बराबर भरी रहती और स्तीपान अस्ताखोव के अलावा बाकी सभी कज्जाक खुश नजर आते।

जहाँ तक स्तीपान का सवाल है, उसने शायद कज्जाको से सुन लिया या शायद उसके दिल ने ही उससे कह दिया कि अकसीनिया, व्येशेन्स्काया जाकर ग्रिगोरी से मिलती रहती है। जो भी हो, वह अचानक ही कटु हो उठा, अकारण ही ट्रुप कमाडर पर बरस गया, और उसने पहरेदारी की ड्यूटी करने से साफ इनकार कर दिया।

अब वह सारा दिन काले ब्रैड वाले स्लेज कम्बल पर पडा आहे भरता और घर की उगी तम्बाकू अधाधुध फूंकता रहता। फिर सहसा ही उसने सुना कि कम्पनी कमाण्डर अनीकुश्का को कारतूसो के लिए व्येशेन्स्काया भेज रहा है। इस पर दो दिन मे पहली बार वह अपनी खाई से बाहर निकला तो जगने के कारण सूजी आँखो से पानी बहने लगा। उसने लहराते पेड़ो की चमचमाती पत्तियाँ और हवा के इशारे पर आगे-आगे दौड़ते, सफ़ेद अयाल वाले बादलो को अविश्वास से देखा और जगल की मर्मर ध्वनि सुनी तो उसकी आँखें चौधियाने-सी लगी। वह खाइयों के किनारे-किनारे अनीकुश्का की खोज मे बढा।

अनीकुश्का मिला तो दूसरे कज्ज़ाको के सामने उसने उससे बाते करना पसद न किया। वह उसे एक किनारे ले गया और बोला—"व्येशेन्स्काया मे अकसीनिया को तलाशना और उससे मेरी तरफ से कहना कि वह फौरन ही आकर मुझसे मिले। उससे कहना कि मेरे बालो में जुएँ पड गई हैं और मेरी कमीज़े और पतलून गदे हो गए हैं।

साथ ही उससे यह भी कहना···" स्तीपान घबराहट से मूँछो-ही-मूँछो मुस्कराते हुए एक क्षण को चुप रहा और फिर अपनी बात खत्म करते हुए बोला—"कह देना कि उससे मिलने के लिए मै बहुत ही बेचैन हूँ··· मेरा दिल बहुत तडप रहा है।"

अनीकुश्का ने आधी रात को व्येशेन्स्काया पहुँचकर अकसीनिया का ठिकाना खोज निकाला। वह ग्रिगोरी से हुई कहा-सुनी के बाद अपनी चाची के यहाँ रहने लगी थी। अनीकुश्का ने स्तीपान के पैगाम का शब्द-शब्द कह सुनाया और फिर बात मे वजन लाने के लिए, अपनी तरफ से बोला—"स्तीपान ने कहा है अगर तुम न गईं तो वह खुद यहाँ आयेगा।"

अकसीनिया ने पूरी बात सुनी और लौटने की तैयारियाँ करने लगी। चाची ने आटा भिगोया और आटे के उठने पर केके तैयार कर दी। दो घटे बाद अकसीनिया, अनीकुश्का के साथ तातारस्की कम्पनी के पड़ाव की ओर रवाना हो गई।···

स्तीपान ने अपने मन की उत्तेजना मन मे ही रखते हुए अपनी पत्नी का अभिवादन किया। उसने अब पढने की कोशिश की तो उसे अकसीनिया का चेहरा कही हलका लगा। अब उसने बडी ही सावधानी से स्वास्थ्य-सम्बन्धी पूछताछ की और ग्रिगोरी से मिलने या न मिलने की बात गलती से भी न उठाई। बातचीत के दौरान सिर्फ एक बार, आँखे नीची किये और मुँह दूसरी ओर को मोडते हुए, उसने पूछा—"लेकिन, तुम उधर से व्येशेन्स्काया क्यो नही गईं? तुमने तातारस्की के सामने से नदी पार क्यो नही की?"

अकसीनिया ने खुश्की से जवाब दिया—"अजनबियो के साथ नदी पार करने का मुझे मौका नही लगा और मेलेखोवो के यहाँ जाकर कुछ पूछना मैने ठीक नही समझा।" और, बात मुँह से निकलते ही औरत ने समझा कि मेरी बात का मतलब यह है कि मेलेखोव मेरे लिए अजनबी नही है, बल्कि अपने ही है। पर उसने चिन्ता नही की कि स्तीपान भी इन शब्दो का यही अर्थ लगायेगा या नही। शायद स्तीपान

ने ठीक ही समझा, क्योंकि क्षण-भर को उसकी भौंहें काँप गईं और उसके चेहरे पर एक रंग आया और एक रंग गया।

स्तीपान ने प्रश्न-भरी आँखें उठाईं। अकसीनिया ने सवाल समझा और अन्दर की परेशानी और खीझ के कारण उसका चेहरा एकाएक लाल हो गया।

स्तीपान, पत्नी की परेशानी बचाने के लिए, यों बना जैसे कि उसने कुछ देखा ही न हो और बात बदल दी। फ़ार्म की चर्चा की। पूछा—"घर को छोड़कर आते बक्त कौन-कौन-सी चीज़ें छिपाकर रखीं? और क़ायदे से छिपा भी दीं या नहीं?"

अकसीनिया ने अपने पति की उदारता अन्दर-ही-अन्दर सराही और उसके सवालों के जवाब दिये। पर उसके मन में एक काँटा-सा बराबर चुभता रहा। सो उसने अपने अन्तर की उथल-पुथल पर पर्दा डालना और अपने पति को इस बात का विश्वास दिलाना चाहा कि जो कुछ हुआ, वह यों ही है, उसकी ऐसी कोई अहमियत नहीं है। इसके लिए उसने जो कुछ कहा वह जान-बूझकर व्यवस्थित ढंग से, धीरे-धीरे, तोल-तोलकर कहा।

इस तरह दोनों खाई में बैठे बातें करते रहे। पर कज्ज़ाक उनकी बातचीत में रह-रहकर बाधा डालते रहे। पहले एक आदमी अन्दर आया और फिर दूसरा। क्रिस्तोनिया आया तो फ़ौरन ही सोने की तैयारी करने लगा। स्तीपान ने अकेले में बातें करने का मौक़ा न पाया तो न चाहते हुए भी बातचीत थोड़े में ही खत्म कर दी।

अकसीनिया के मन से बोझ उतरा। वह खुश-खुश उठी, पुलिंदा खोला, केकों से पति की गोद भर दी और उसके फ़ौजी बंडल से गंदे कपड़े निकाले और पास के दलदली ताल पर धोने को चल दी।

तड़के के सन्नाटे में, रुपहली भूरी धुन्ध की एक चादर-सी जंगल के ऊपर तनी रही। घास की पत्तियाँ, ओस की बूँदों के बोझ से जमीन पर झुक-झुक गईं। दलदल में मेंढक अपनी बेसुरी टर्र-टर्र छेड़े रहे। खाई के पास मेपिल की घनी झाड़ी के पीछे कहीं कोई रेल-चिड़िया कर्कश-ध्वनि करती।

अकसीनिया झाड़ी की बगल से गुज़री । झाडी के सिरे से तने तक, नीचे की घास-फूस के अन्दर, मकड़ी के जाले एक-दूसरे मे उलझे रहे । उनके तार ओस की झलाझल बूंदो से सजे रहे और ये बूंदे पानीदार मोतियों की तरह चमचमाती रही । रेल-चिडिया कुछ क्षणो को चुप रही और अकसीनिया के पैरो के नीचे दबी घास की पत्तियो के सीधा होने के पहले-पहले, फिर ज़ोर से बोलने लगी । दूसरी ओर दलदल के पार उडती टिटहरी जवाब मे अपने स्वरो में उदासी घोलने लगी ।

अक्सीनिया ने हिलने-डुलने की आसानी के लिए अपना ब्लाउज़ और चोली उतारकर एक ओर को फेंक दी, ताल के भाप उगलते, गर्म पानी मे, घुटनो-घुटनो तक हिली और कपडे धोने लगी । उसके सिर के ऊपर छोटे-मोटे कीडो के दलो से घिरे मच्छर भनभनाने लगे । उन्हे हटाने के लिए उसने भरा हुआ साँवला हाथ चेहरे पर फेरा ।

इस समय उसे ग्रिगोरी और ग्रिगोरी से हुई कहा-सुनी का ख़याल रह-रहकर आने लगा ।

वह तो कभी से मेरी तलाश कर रहा होगा । मै आज ही रात को व्येशेन्स्काया लौट जाऊँगी । उसने दृढता से निश्चय किया और उसके होंठो पर मुस्कान दौड़ गई कि मै फिर ग्रिगोरी से मिलूँगी और हमारे बीच समझौता हो जाएगा ।

सारा कुछ विचित्र रहा । इधर अकसीनिया ने जब भी ग्रिगोरी की कल्पना की, एक ऐसा नक़शा खीचा, जो उसका होकर भी सचमुच उसका न रहा । आज का ग्रिगोरी, शक्ति और शौर्य का अवतार कज़्ज़ाक उसकी आँखो के सामने कभी आया ही नही । इस आदमी ने तो जाने कितना-कुछ देखा-सुना और सहा था । इसकी आँखो मे थकान थी, काली मूँछो की नोको पर ज़ंग-सी थी, कनपटियो पर उम्र के पहले ही सफेदी दौड गई थी और माथे पर गहरी लकीरें थी । यह सारा कुछ इतने-इतने वर्षों की लडाई के कठिन जीवन के अमिट निशानो का लेखा था ।

अकसीनिया के मानसपटल पर तो सदा ही उभरा पुराना, शुरू का ग्रीशा मेलेखोव—जवानी से भरा, अपने प्यार-दुलारो मे भी अल्हड और भद्दा—पतली, गोल गर्दन—होठो पर बेफिक्री से थिरकती सदाबहार

मुस्कान ! यही नही, इन विशेषताग्रो के कारण ही उसे उस पर ज्यादा-से-ज्यादा प्यार ग्राया ग्रौर उसने उसके प्रति माता-सुलभ स्नेह ग्रौर कोमलता का भी ग्रनुभव किया ।

ग्रौर, इसीलिए इस समय भी ग्रिगोरी की एक-एक विशेषता स्पष्टतम रूप मे जो ग्रक्सीनिया के सामने ग्राई ग्रौर उसे बेहद बेशकीमती लगी तो वह बुरी तरह हाँफने लगी। उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। वह तनी। उसे ग्रपने गले मे कुछ ग्रटकता-सा लगा। प्यार के ग्राँसू पलको से ढुलक चले। उसने ग्रपने पति की ग्राधी धुली कमीज नीचे पटककर पैरो से रौदी ग्रौर फुसफुसाती हुई बोली—"बुरा हो तेरा, तू तो हमेशा-हमेशा के लिए मेरे दिल मे समा गया है, ग्रीश्का।"

ग्राँसुग्रो से दिल हलका हुग्रा, पर बाद मे उसके चारो ग्रोर की सवेरे की पीली-नीली दुनिया सहसा ही रगो मे बुझने लगी। उसने ग्रपने हाथ के पिछले हिस्से से गाल पोछे। ग्रपनी गीली भौहो से बाल पीछे झटके ग्रौर बहुत देर तक, विचार शून्य-सी एक जलमुर्गी को देखती रही। जलमुर्गी पानी पर फिसली ग्रौर फिर हवा मे उमडती धुध की गुलाबी कसीदेकारी के बीच खो गई।

ग्रकसीनिया ने कपडे धोये, उन्हे झाडियो पर फैलाया ग्रौर खाई को लौट दी।

क्रिस्तोनिया सोकर उठ गया, खाई के प्रवेश के पास बैठा ग्रपने गाँठ-गँठीले ग्रँगूठे ऐठ रहा था ग्रौर स्तीपान को छेड-छेडकर उससे जबरदस्ती बातें करने की कोशिश कर रहा था। स्तीपान कम्बल पर लेटा चुपचाप धुग्राँ उड़ा रहा था ग्रौर क्रिस्तोनिया के सवालो के जवाब देने से बच रहा था। ग्राखिरकार क्रिस्तोनिया बोला—

"तो, तुम्हारा खयाल है कि लाल फौजी नदी पारकर इस तरफ नही ग्रायेंगे ? जवाब क्यो नही देते ? खैर, नही देना चाहते जवाब, तो न दो। लेकिन, मेरा ग्रपना तो खयाल यह है कि वे कटाव की तरफ से नदी पार करेंगे·· वहाँ से नदी पार की जा सकती है, ग्रौर कही से पार करना उनके बस की बात नही है···शायद तुम सोच रहे हो कि वे ग्रपने घुड़सवार नदी के पानी मे हिला देगे·· क्यो ?

बोलते क्यो नही, स्तीपान ? ऐसा लगता है कि आखिरी मोर्चा यहीं बँधेगा। और तुम हो कि लकडी के कुदे की तरह पसरे पडे हो।"

स्तीपान आधा उठकर बैठ गया और गुस्से से भरकर बोला—"तुम मेरी जान के पीछे क्यो पडे हुए हो ? तुम सब, अजीब मजाकिया लोग यहाँ जमा हो। यानी मेरी बीवी मुझसे मिलने आई हो, और तुम हो कि मुझे साँस नही लेने देते। यानी तुम दुनिया की बकवास करते चले जाते हो और मुझे अपनी बीवी से दो बातें नही करने देते।"

"अच्छा है तुमने मुँह खोलकर अपने दिल की बात तो कही।" ख्रिस्तोनिया बिगडकर उठा, नगे पैरो पर सैंडिल चढाये और दरवाजे के सिरे से अपना सिर टकराता बाहर चला गया।

"यहाँ तो इन लोगो के मारे हमे बाते करने का मौका मिलने से रहा। आओ, जगल मे चले।" स्तीपान अकसीनिया से बोला और उसके जवाब का इन्तजार किये बिना दरवाजे की ओर बढ चला। अकसीनिया आजिज़ी से पीछे-पीछे चल दी।

दोनो दोपहर को खाई मे वापस आये। आल्डार की झाडी की ठडी छाँव मे लेटे, दूसरे ट्रुप के कज्जाको ने अकसीनिया और स्तीपान को देखा तो ताश के पत्ते एक तरफ को रख दिए और एक-दूसरे को देख-देखकर आँखे मारने, हँसने और जोर-ज़ोर से आहे भरने लगे।

अकसीनिया अपना गीजा हुआ, लेसवाला, सफेद रूमाल कसती और नफरत से होठ बिचकाती इन फौजियो के पास से गुज़र गई। किसी ने उससे कुछ नही कहा। लेकिन स्तीपान उसके पीछे-पीछे इनके पास पहुँच भी न पाया कि अनीकुश्का उठा, टोली से बाहर आया, बनावटी ढग से आदर दिखलाते हुए स्तीपान के सामने झुका और ज़ोर से बोला, "ऐश के लिए मुबारकबाद, अब तो रोजा टूट गया न ?"

स्तीपान सहज भाव से मुस्कराया। उसे खुशी हुई कि कज्जाको ने उसे उसकी बीवी के साथ जगल से लौटते देख लिया। मन-ही-मन सोचा, अच्छा हुआ। अब यह अफवाह तो कम होगी कि मेरी अकसीनिया से बनती नही।

उसने तो जवानी दिखलाने के लिए अपने कधे तक झटके और

संतोष की साँस लेते हुए पीठ पीछे कर दी। कमीज का पिछला हिस्सा अब तक पसीने से तर दीखा।

इस तरह स्तीपान के व्यवहार से कज्जाको को बढावा मिला और वे हँसने और तरह तरह की आवाजकशी करने लगे।

"लेकिन, औरत गर्म है, प्यारो! स्तीपान की कमीज़ आसानी से उतरेगी नही, पसीने से ऐसी तर है कि कधो से चिपक गई है।

"औरत ने सारी खाई-पी निकाल ली है—हर जगह से पसीने-पसीने हो रहा है·· मुँह से झाग छूट गया है।"

एक जवान की खुशी से भरी निगाहे खाई तक अकसीनिया का पीछा करती रही। बाद मे वह बडी हसरत से बोला—"दुनिया-भर मे ढूँढ आओ कही ऐसी हसीन औरत मिलेगी नही ··नीली छतरीवाला मुझे अकसीनिया! माफ़ करे।"

इस पर अनीकुश्का ने तर्क सामने रखा—"ऐसा क्यो कहते हो? तुमने खोजने की कोशिश की है कभी?"

अकसीनिया ने ये सारी उल्टी-सीधी बातें सुनी तो उसके चेहरे का रंग थोडा उड गया। खाई मे धँसी तो अपने पति और अपने बीच की हाल की घनिष्ठता और उसके साथियो की लुच्चेपन से भरी बातो के खयाल से उसकी भौंहे तन गईं और उसका अन्तर घृणा से भर उठा। स्तीपान ने दूसरे ही क्षण पूरी बात भाँपी और मनौती करते हुए बोला—"ये आदमी नही स्टैलियन घोडे हैं। इनकी बातो पर नाराज़ न हो और बात यह है कि ये खुद औरतो के लिए तरस रहे हैं।"

"मेरा ऐसा कोई नही, जिससे मैं नाराज हो सकूँ।" उसने अपने थैले में हाथ डालते हुए, बुझे हुए दिल से कहा और पति के लिए लाई गई सारी चीजें जल्दी-जल्दी निकालकर सामने रख दी। फिर, और सधे हुए स्वर मे बोली—"मुझे नाराज़ तो सिर्फ अपने आपसे होना चाहिये, लेकिन इसके लिए कलेजा मेरे पास नही है···।"

फिर, कुछ ऐसा हुआ कि उन दोनो के सामने बातचीत करने के लिए जैसे कुछ बचा ही नही। कोई दस मिनट बाद अक्सीनिया उठ खडी हुई।

'मैं इससे कह दूँगी कि मैं व्येशेन्स्काया लौट जाऊँगी।' उसने सोचा, लेकिन इसी समय उसे खयाल आया कि सूखे कपडे तो वह उठाकर लाई ही नही।

फिर वह खाई के दरवाज़े के पास बैठी अपने पति की, पसीने से सडी कमीज़े और पतलून ठीक करती रही। इस बीच रह-रहकर उसने आँखे उठाईं और क्षितिज की ओर जाते सूरज पर निगाहे डाली।

इसके बावजूद उस दिन वह वहाँ से कही नही गई। उसका हियाव ही न हुआ। लेकिन, अगले दिन सवेरे सूरज उग भी नही पाया कि उसने तैयारी शुरू कर दी। स्तीपान ने उसे बहुत रोका, ज्यादा नही तो एक दिन और रुकने की मिन्नत की। लेकिन, अकसीनिया ने इतनी दृढ़ता से नही की कि आगे उसने कुछ नही कहा। सिर्फ चलते वक्त बोला, "तुम्हारा इरादा क्या व्येशेन्स्काया मे रहने का है ?"

"हाँ, फिलहाल तो है।"

"तुम यहाँ मेरे पास नही रह सकती ?"

"यहाँ · कज्ज़ाको के साथ रहना, मेरे लिए अक्ल की बात नही है।"

"शायद तुम ठीक कहती हो।" स्तीपान ने पत्नी की बात का समर्थन किया, लेकिन उसने पत्नी को विदाई बहुत ही भावहीन ढग से दी।

हवा दक्षिण-पूर्वी थी। दूर से आई थी और रात मे थक-सी गई थी। पर, सवेरा होने का समय होते-होते वह फिर ट्रास-कैस्पियन रेगिस्तान की उमस और गरमी दोन के इलाके मे ला-लाकर उँडेलने लगी और बायें किनारे की पानी से भरी चरागाहो के टुकडो पर टूट-टूट पडने लगी। उसने ओस सोख ली, धुन्ध उडा दी और दोन-क्षेत्र की पहाडियो की खडियावाली चोटियो को गुलाबी कुहरे से मढ दिया।

जगल मे अब भी ओस थी। इसलिए अकसीनिया ने सैडल उतार लिए, अपनी स्कर्ट का सिरा बाये हाथ से पकड लिया और जगल की एक सूनी सडक के किनारे-किनारे धीरे-धीरे चल दी। उसके पैर गीली धरती पर पडे तो तरी उसे बहुत ही अच्छी लगी। दूसरी ओर, खुश्क हवा उसकी मोटी, नगी पिडलियो और गर्दन को रह-रहकर चूमती रही।

अकसीनिया, खुले मैदान मे इग्लैण्टाइन फूलो से भरी झाडी के पास बैठ गई और आराम करने लगी। कही पास ही आधे सूखे ताल के सरपतो के बीच बत्तखें सरसराने लगी और एक नर बत्तख ने भर्राये गले से अपनी मादा को आवाज दी। दोन के पार मशीनगनें धीरे-धीरे मगर बराबर खडखडाती रही। बीच-बीच मे तोपे भी गरजती रही और गोलो के धडाको की गूँज इस पार सुनाई पडती रही।

इसके बाद गोलाबारी का तार बीच-बीच मे टूट भी गया और धरती की सारी छिपी हुई आवाजे अकसीनिया के कानो मे एक साथ बजने लगी। (अखरोट के किस्म के) ऐश पेड की सफेद किनारियो वाली हरी पत्तियाँ, और शाहबलूत के फफूंदी-लगे नक्काशीदार पत्ते हवा मे ज़ोर-जोर से खडखडाते रहे। ऐस्प के नये पेडो के झुरमुट से स्थिर गति से सरसराहट होती रही। दूर, बहुत दूर कोई उल्लू किसी की जिन्दगी के बचे-खुचे सालो की गिनती बहुत हलके-हलके करता रहा। ताल के ऊपर से उडती एक टिटहरी 'पीविट-पीविट' करती रही। अकसीनिया से दो कदम के फ़ासले पर कोई भूरी चिडिया अपनी गर्दन ज़रा-जरा पीछे की ओर झटकते और खुशी से पलकें झपकाते हुए, सड़क के छोटे गढे मे पानी पीती रही। शहद की मखमली, गर्द से नहाई बडी मक्खियाँ भनभनाती रही। साँवली, जगली तितलियाँ चरागाही फूलो की पखुडियो से रह-रहकर टकराती और मधुमय पराग चुरा-चुराकर उडती रही। देवदारुओ की शाखो से रस टपकता रहा और हाथर्न-झाडी के नीचे से पत्तियो की सडायध आती रही।

अकसीनिया स्थिर बैठी जगल की तरह-तरह की महको से अपनी साँसें सीचती रही। जगल का स्वाभाविक, सहज-जीवन, अनगिनत सुरीले कठो से मुखर होता रहा। वसन्त के पानी की बाढ से सीझी चरागाह की मिट्टी से तरह-तरह की घासो की पत्तियाँ उगती रही। सो फूलो और जडी-बूटियो के इस मायाजाल को देखकर अकसीनिया का मुँह अचरज से खुला-का-खुला रह गया।

उसने मुस्कराते और बिना आवाज़ के होंठ चलाते हुए, अनामे, पीले, नीले, छोटे-छोटे फूलो के डठलो को सावधानी से छुआ और फिर उन्हे

सूंघने के लिए अपनी कमर लचकाई। सहसा ही घाटी के लिली-फूलों की उन्माद से भरी महक उसके नथुनो मे आ भरी। उसने हाथ से टटोलते हुए पौधा खोज लिया। पौधा उसकी बगल मे, दाईं ओर एक अभेद्य छायादार झाडी के नीचे उगा नजर आया। कभी की हरी, चौडी पत्तियाँ झुके हुए, बर्फ से सफेद फूलो के मधु-पात्रो से लदे नीचे के डठलो को इस समय भी सूरज से बचाती दीखी। पर, ऊपर, ओस और पीली जग के पर्दे मे वे खुद अतिम साँस लेती रही और मौत फूलो को रह-रहकर अपनी ठडी उँगलियो से छूती रही। एक जगह नीचे के दो फूलों के चेहरे झुर्रियो से भरे और सँवराए समझ पडे। सिर्फ ऊपर का एक फूल ओस के झलाझल आँसुओ से नहाया, सहसा ही धूप मे कौधा। उसके कपूरी रग ने ध्यान अपनी ओर खीच लिया।

अकसीनिया भरी आँखो से इस समय इन फूलो को देखती और इनकी उदासी से भरी महक का सुख लेती रही कि पता नही क्यो उसकी जवानी और पूरी ज़िन्दगी आँखो के आगे साकार हो उठी। इतनी लम्बी ज़िन्दगी सुख के क्षणो की गिनती की दृष्टि से बहुत ही छोटी लगी। मन ने कहा—'अब तू शायद बूढी हो रही है'······· 'भला कोई जवान औरत भी कभी ठिठककर आँसू सहेजती है, क्योकि उसे कोई भूली कथनी याद-सी आकर रह जाती है!'

उसने आँसुओ से नहाया चेहरा हाथो से छिपा लिया और गीले गाल पर रूमाल रख लिया। फिर रोते-रोते सो गई।

हवा और तेज़ हो गई और देवदार और बेतो के सिरो को पश्चिम की ओर झुकाने लगी। ऐस्प-वृक्ष का पीला तना उडती हुई पत्तियो के कपूरी अधड मे लिपटा, हवा मे लहराने लगा। अक्सीनिया जिसके नीचे सोती रही, उस फूलो से भरी इग्लैटाइन की झाडी पर हवा उतरी। हरी, जादूई चिडियो के चौके हुए दल की तरह पत्तियाँ उत्सुकता से सरसराने और गुलाबी परो-सी पखुडियो को हवा के झोको को सौपने लगी। अकसीनिया पर इग्लैटाइन की ये मुरझाई हुई पखुडियाँ बरसती रही और वह इस तरह सोती रही कि न तो जगल के मुखर स्वर उसके कानो मे पडे, न दोन पार गोलाबारी

के फिर से शुरू होने का एहसास हुआ और न नगे सिर पर सीधी पडती सूरज की किरणो की गरमी ही अनुभव हुई। वह जगी तो तब जगी जब किसी आदमी की आवाज और घोडे की हिनहिनाहट उसके कानो मे पडी। फिर तो हडबडाकर उठकर बैठ गई।

उसने देखा बगल मे खडा एक जवान कज्जाक—मूँछे सफेद, दाँत मोती की तरह उजले·· ··कसे हुए, सफेद नाक वाले घोडे की लगाम हाथ मे। कज्जाक खुलकर मुस्कराता, कधे झटकता, पैर पटकता और भर्राये गले, मगर प्यारे ढग से एक गीत गाता रहा—

धरती पर ढही रही,
कनखी से देखा—
कभी उधर और कभी इधर को—
कोई नही ऐसा जो हाथ मुझे दे दे···
किस्मत मे बदा एक ऐसा भी दिन था—
लेकिन, फिर मैंने जो देखा पलटकर—
पास खडा पाया कज्जाक एक सुन्दर!

"मुझे मदद की जरूरत नही, मैं यो भी उठ सकती हूँ।" अकसीनिया मुस्कराई और भीगी हुई स्कर्ट ठीक करती हुई फुर्ती से उछलकर खडी हो गई।

"कहो मेरी रानी, बात क्या है? पैरो ने आगे बढने से इनकार कर दिया या यो ही आलस आ गया?"—खुशी से खिले कज्जाक ने उसका अभिवादन किया।

"यो ही नीद आ गई।" अक्सीनिया ने शर्म से लाल होते हुए जवाब दिया।

"व्येशेन्स्काया जा रही हो?"

"हाँ।"

"मैं तुम्हे अपने साथ ले चलूँ वहाँ?"

"लेकिन, किस पर?"

"तुम घोडे पर सवार हो जाओ। मैं पैदल ही चला चलूँगा। यह भी मुझ पर मेहरबानी होगी तुम्हारी···" जवान कज्जाक ने आँख मारी।

"नही, तुम जाओ···ईश्वर तुम्हारी मदद करे ··मैं यो ही पैरों-पैरो अपनी मजिल तय कर लूँगी ।"

लेकिन, कज्जाक इश्क और जिद के मामले मे खिलाडी साबित हुआ । अकसीनिया अपने सिर के रूमाल को ठीक करने मे उलझी तो उसने इस क्षण-से फायदा उठाया । उसे छोटे पर मजबूत हाथ से कसकर सीने से लगा लिया और चूमने की कोशिश की ।

"बेवकूफी न करो !" अकसीनिया चीखी और उसकी नाक की नोक पर कुहनी मारी ।

"मेरी रानी, बेकार परेशान न हो। देखो, आस-पास की दुनिया कितनी प्यारी, कितनी हसीन है···हर एक अपने जोडे की तलाश मे है··· ऐसे मे हम लोग ही अपने हिस्से के गुनाह से क्यो परहेज करे और क्यों बचे···और कज्जाक अपनी खुशी से चमकती आँखे सिकोडने और अकसीनिया की गर्दन को अपनी मूँछो से सहलाते हुए धीरे से बोला ।

अकसीनिया का गुस्सा जैसे उतार पर आ गया । पर, उसने अपने हाथ छुडाये और कज्जाक के भूरे पसीने से तर चेहरे को पीछे ठेलते हुए अपने को आजाद करने की कोशिश की । मगर सख्त पकड ने जुम्बिश नही खाई ।

"गधे हो तुम ! तुम्हे पता है, मुझे बहुत ही गन्दी बीमारी है··· छोड दो मुझे ।" अकसीनिया ने हाँफते हुए मिन्नत की और सोचा कि इस मामूली-सी चालाकी से इस पाप से मेरी जान बच जाएगी ।

"उफ·· लेकिन सवाल यह है कि बीमारी कितनी पुरानी है !" कज्जाक ने दाँत भीचे-ही-भीचे कहा और सहसा ही उसे गोद मे उठा लिया ।

अकसीनिया को अचानक ही लगा कि मजाक खत्म हो गया और अब तो मामला गम्भीर शक्ल ले चला । सो, उसने कज्जाक की भूरी धूप मे सँवराई नाक पर भरपूर घूँसा जमाया और अपने को जकडने वाले हाथो को झटककर दूर कर दिया । बोली—"मैं ग्रिगोरी मेलेखोव की बीवी हूँ । तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम बदनीयती से मेरे पास फटक भी जाओ ! कुतिया के बच्चे, कही के ! ·· मैं उससे सारा कुछ

बतला दूँगी, और वह तुम्हारी हड्डी-पसली·· ”

पर, उसे लगा कि उसकी बातो का कज्जाक पर असर कुछ न होगा। इसलिए उसने लपककर एक मोटी-सी सूखी लकडी उठा ली। लेकिन कज्जाक का सारा जोश देखते-देखते ठण्डा पड गया। उसने नाक से बहकर गलमुच्छो पर आते खून को अपनी खाकी कमीज की आस्तीन से पोछा और दर्द से तडपते हुए बोला—“बेवकूफ कही की! बिलकुल ही बेअक्ल औरत हो तुम! तुमने यह बात पहले ही क्यो नही कही? उफ, · देखो तो कैसा खून बह रहा है! दुश्मनो ने जैसे कुछ रियायत बरत दी है कि अब खुद कज्जाक औरते हमारा खून बहाने पर उतर आई हैं। ”

कज्जाक का चेहरा एकाएक जर्द पड गया और सारी मोहब्बत खत्म हो गई। वह सडक-किनारे के एक गढे से पानी ले-लेकर खून साफ करने लगा कि अकसीनिया तेजी से मुडी और हवा की तरह मैदान पार करने लगी। कोई पाँच मिनट के अन्दर-अन्दर कज्जाक बराबर से आ गया। फिर, औरत को कनखी से देखता, चुप-चुप मुस्कराता, अपनी राइफल के सीने पर पडे फीते को कायदे से ठीक करता और अपने घोड़े को दुलकी-चाल से दौडाता आगे निकल गया।

: २

उस रात लाल फौज ने लकडी के तख्तों और कुण्डो के बेडो पर दोन नदी पार की, और वे एक छोटी झोपडी के पास आ निकले।···

झोपड़ी के कज्जाको पर अनायास ही बिजली-सी टूट पडी, क्योंकि उनमें से अधिकांश रगरेलियाँ मना रहे थे। तीसरे पहर से ही उनकी बीवियाँ आती और अपने साथ घडे-घडे और बाल्टी-बाल्टी-भर घर की बनी वोद्का लाती रही थी। आधी रात होते-होते वे अपने आपे मे न रह गए थे, मानो नशे मे धुत औरतो की चीख-पुकारो और मर्दों के हँसी के ठहाको और सीटियो की आवाजें खाइयो से आ रही थी। पहरे की ड्यूटी पर तैनात बीस कज्जाको ने भी इस शराबखोरी मे हिस्सा लिया था। सिर्फ दो तोपची और एक बाल्टी वोद्का मशीनगन के पास छोड दी थी।

···लाल फौज के बेड़े, सन्नाटे से भरे, दोन के दाहिने किनारे से

चले। लाल फौजी सामने के किनारे पर उतरे और एक-एक, दो-दो के क्रम से खाइयो की ओर बढे। खाइयाँ नदी से कोई दो सौ कदमो के फासले पर थी।

बेडे बनाने वाले फौजी इजीनियर लाल फौजियो की दूसरी टोली को लाने के लिए अपने बेडो पर तेज़ी से वापस लौट गये।

बाये किनारे पर गाने के फुटपुट स्वरो के अलावा पाँच मिनट तक कोई आवाज़ कही सुनाई न पडी। इसके बाद हथबम फटने लगे, मशीनगन खडखडाने लगी, राइफलो से गोलियाँ बरसने लगी और रात के सन्नाटे मे दूर-दूर तक हुर्रा-हुर्रा का शोर गूँजने लगा।

टुकडी बौखला उठी और उसके पूरे-के-पूरे लोग बरबादी से सिर्फ इसलिए बचे कि घटाटोप अंधकार मे लोगो का पीछा नही किया जा सका।

कज्जाको का कोई बहुत नुकसान न हुआ, उनके बीच खलबली मच गई और वे अपनी-अपनी औरतों को लिये-दिये, चरागाहे पार कर उल्टे-सीधे व्येशेन्स्काया की ओर भागे। पर, इस बीच बेडे लाल फ़ौजियो की नई टुकडियाँ ले आये और १११वी रेजीमेट की पहली बटेलियन की आधी कम्पनी दो हलकी मशीनगनो से लैस होकर, बाजकी के किनारे से बागी स्क्वैड्रन को भूनने लगी।

इस तरह जो दरार बनी उसे पाटने के लिए ताजा कुमुक लाई गई। लेकिन, इन फौजो की रफ्तार धीमी रही क्योकि किसी भी लाल फौजी को जगह का पता न रहा। यूनिटो के पास गाइड नही रहे और अँधेरे मे अधो की तरह आगे बढ़ते हुए उनके सदस्य नालो और बाढ के पानी की तेज धारो मे रह-रहकर भहराते और फँसते रहे। बाढ के पानी को काटा न जा सका।

हमले का निर्देशन करने वाले ब्रिगेड कमाडर ने लोगो को खदेडने का खयाल तडके तक के लिए उठा रखा। इस बीच रिज़र्व फौजें ला-लाकर व्येशेन्स्काया के रास्तो पर जमाई गईं और तोपो की तैयारी का हुक्म दे दिया गया।

पर, व्येशेन्स्काया मे दरार को पाटने के लिए कदम तेज़ी से उठाये

जाते रहे। ज्योही सदेशवाहक लाल फौजियो के नदी पार करने की खबर लेकर अपना घोडा दौडाता आया, त्योही स्टाफ-हेडक्वार्टर्स मे कार्याधिकारी ने कुदिनोव और मेलेखोव को बुला भेजा। कारगिन्स्काया रेजीमेट की टुकडियाँ चोर्नी, गोरोखोवका और दुबरोवका से बुलाई गईं। ग्रिगोरी मेलेखोव ने पूरी कार्रवाई की आम कमान सँभाल ली। उसने तीन सौ तलवारबद कज्जाक येरेन्स्की गाँव के सामने झोक दिए, ताकि बायाँ बाजू मजबूत हो सके, और अगर दुश्मन पूर्व की ओर से व्येशेन्स्काया लेने की कोशिश करे तो तातारस्की और लेब्याजी के कज्जाक दुश्मन का धक्का झेलकर अपने पैर जमाये रह सके। ग्रिगोरी ने व्येशेन्स्काया के विदेशी स्वयसेवको को पश्चिम की तरफ रवाना किया, बाजकी स्क्वैड्रन की मदद के लिए चिर-प्रदेश की एक पैदल टुकडी भेजी, आठ मशीनगने खतरे के इलाके मे जमवाई और कोई दो बजे सबेरे घुडसवार फौजियो की दो टुकडियाँ लेकर, खुद जगल के सिरे पर जा जमा और लाल फौजियो पर हमला बोलने के लिए सुबह का इन्तजार करने लगा।

दूसरी ओर व्येशेन्स्काया के स्वयसेवको की टुकडी ने जगल मँझाते हुए, दोन के बाजकी वाले किनारे तक की मजिल तय कर डाली। पर सप्त-ऋषि आसमान मे चमकता ही रहा कि उसकी टक्कर बाजकी के पीछे हटते लोगो से हो गई। टुकडी के लोगो ने इन लोगो को गलती से दुश्मन समझा, इसलिए कुछ देर तक इन पर आग बरसाई और फिर भाग खडे हुए। व्येशेन्स्काया को चरागाह से अलगाने वाली बडी झील के पास पहुँचने पर इन्होने हडबडी मे जूते-कपडे किनारे पटके और तैर-तैरकर उस पार पहुँचे। गलती जल्दी ही पकड गई। लेकिन लाल फ़ौजियो के व्येशेन्स्काया पहुँचने की खबर हवा की रफ्तार से, बहुत पहले ही हर तरफ फैली मिली। नतीजा यह हुआ कि तहखानो मे छिपे शरणार्थी गाँव छोड-छोडकर उत्तर की तरफ भागे और हर जगह यह अफ़वाह फैलाते गये कि लाल फौजियो ने दोन पार कर ली है, मोर्चा तोड डाला है और व्येशेन्स्काया पर चढे चले जा रहे है।

···ग्रिगोरी को स्वयसेवको के भागने की खबर मिल गई और

आसमान मे दिन का उजाला छिटकना शुरू ही हुआ कि वह घोडा दौडाता दोन तक जा पहुँचा। इस बीच स्वयसेवको ने अपनी गलती समझी और जोर-जोर से बाते करते हुए खाइयो की ओर लौटे। ग्रिगोरी उनके एक दल के पास पहुँचा और व्यग्य करते हुए बोला—"झील तैरकर पार करने मे बहुत लोग डूब गये क्या ?"

सिर से पैर तक पानी से तर-बतर एक राइफलमैन ने चलते-चलते अपनी कमीज़ उतारी और स्वरो के उतार-चढाव के साथ जवाब दिया—"हम सब तो पाइक-मछलियो की तरह तैरे। डूबते आखिर क्यो ?"

"वैसे गलतियाँ हर आदमी करता है।" सिर्फ़ पैंट पहने एक दूसरा आदमी सूत्रो की भाषा मे बोला—"अब हमारे ग्रुप-कमाडर को ही लो। सचमुच डूबते-डूबते बचा। बात यह हुई कि उसने पट्टियाँ खोलने में खर्च होने वाले वक्त को बचाने के खयाल से जूते नही उतारे और पानी मे हिल गया। तैरने लगा तो पट्टियाँ बीच मे ही खुल गईं और पैरो मे उलझने लगी। फिर तो किस तरह गला फाडकर चिल्लाया वह। कोई एक वर्स्ट दूर होता तो भी उसकी आवाज सुन लेता।"

ग्रिगोरी ने स्वयसेवको की टुकडी के कमाडर को खोजा और उसे हुक्म देते हुए बोला—"इन लोगो को जगल के सिरे पर ले जाओ और इन्हे इस तरह रखो कि ज़रूरत पडने पर ये बाहर से लाल फौजियों की कतारो को घेर सकें।" इसके बाद उसने अपना घोडा मोडा और अपने स्क्वैड्रन की ओर बढा।

सडक पर उसे स्टाफ का एक अर्दली मिला। आदमी ने घोड़े की रासें खीची और सन्तोष की साँस लेते हुए बोला—"मैं हलाकान हो गया आपको खोजते-खोजते।" और घोड़े के पुट्ठो और बाजुओ से देखने से लगा कि जानवर को ताबडतोड दौडाया गया है।

"क्यो ? बात क्या है ?"

"स्टाफ ने आपके पास खबर भेजी है कि तातारस्की कम्पनी के लोगो ने अपनी-अपनी खाइयाँ छोड दी हैं और वे, घिर जाने के डर से, बलुहे मैदान की तरफ पीछे भाग रहे है। खुद कुदिनोव ने कहा है कि आप

फौरन ही वहाँ पहुँचे।"

ग्रिगोरी ने, ताज़े-से-ताजे घोडों पर सवार, कज्ज़ाको के ट्रूप के साथ जगल पारकर सडक का रास्ता लिया और कोई बीस मिनट की घुडदौड के बाद, वह गोली-इलमेन की झील के इलाके मे पहुँच गया। बाईं ओर तातारस्की के घबराये हुए लोग चरागाह के आरपार दौडते दीखे। इनमे से मोर्चे के अनुभव वाले लोग या सयानी उम्र के दूसरे कज्ज़ाक, झील के पास-ही-पास रहने और नदी-किनारे के झाड-झाडियो की आड लेते इत्मीनान से चलते रहे। लेकिन बाकी मे से ज्यादातर लोगो के मन मे सिर्फ एक इच्छा पलती रही कि जैसे भी हो जल्दी-से-जल्दी जगल तक पहुँच चला जाए। बस, तो, ऐसे सारे लोग आगे-आगे झपटते रहे, और उन्होने मशीनगनो की बीच-बीच मे बरसती गोलियों की एक भी चिन्ता नही की।

"पीछा करो इनका! जरा जमाओ तो इन पर चाबुक।" ग्रिगोरी ने गुस्से से पलकें भपकते हुए चिल्लाकर कहा और सबसे पहले खुद अपने गाँव के लोगो का पीछा किया। घोडा हवा की रफ्तार से दौड़ाया।···

क्रिस्तोनिया झूमते और भचकते हुए, नाच के-से अन्दाज से, जाता नज़र आया। अभी पिछली शाम को मछली मारते समय सरपत से उसकी एडी बहुत ही बुरी तरह कट गई थी, इसलिए वह आम दिनो की तरह भाग नही पा रहा था। सो, ग्रिगोरी, अपना चाबुक सिर से ऊपर ताने हुए, उसके बराबर आ गया, और घोडे के कदमो की टपाटप कानो मे पडी तो क्रिस्तोनिया ने मुडकर देखा और अपनी रफ्तार बढ़ा दी।

"दौडे कहाँ जा रहे हो? रुको···रुको···मैं कहता हूँ, रुको!" ग्रिगोरी चीखा, मगर कोशिश बेकार ही गई। क्रिस्तोनिया ने रुकने की बात तक न सोची और बडा ही अजीब लगा कि ऊँट की तरह उचक-उचककर और तेज़ी से चलना शुरू कर दिया।

इस पर ग्रिगोरी को इतना गुस्सा आया कि वह अपने आपे मे न रहा। उसने बहुत ही बुरी गाली दी, घोड़े को और तेज़ी से आगे बढाया,

बराबर आने पर सन्तोष की साँस ली और क्रिस्तोनिया की पसीने से नहाई पीठ पर भरपूर चाबुक जमाया। क्रिस्तोनिया जमीन पर बैठ गया और धीरे-धीरे सावधानी से पीठ सहलाने लगा।

ग्रिगोरी के साथ के कज्ज़ाक अपने घोडे दौडाते आगे निकल गये और भागते हुए लोगो को रोकने लगे। मगर, चाबुक उन्होने नही चलाया।

"चाबुक जमाओ·· चाबुक जमाओ इन लोगो पर।" ग्रिगोरी ने दस्तकारी के काम वाला अपना चाबुक हिलाते हुए, फटी-सी आवाज मे चिल्लाकर कहा। इसी समय उसका घोडा बिदका, पीछे हटा और आगे बढने से इन्कार करने लगा। ग्रिगोरी ने जैसे-तैसे उसे काबू मे किया और सामने भागते लोगो तक पहुँचा। बगल से गुजरा तो उसकी निगाह एक झाडी के पास टिककर चुपचाप मुस्कराते स्तीपान अस्ताखोव पर पडी। साथ ही अनीकुश्का हँसी से दोहरा होता नजर आया। उसने अपने हाथ की तुरही बनाई और तीखी, औरतो की-सी आवाज मे चीखा—"भाइयो ··हर आदमी अपनी जान के लिए जिम्मेदार होगा। लाल फौजी आ रहे है। बस, तो उन्हे पकडकर छोडो।"

अब ग्रिगोरी ने रूईभरी जर्किन से लैस एक दूसरे गॉव वाले के पीछे घोडा दौडाया। यह गॉव वाला थकान का नाम लिये बिना, फुरती से दौडता दिखलाई पडा। आदमी के गोल कधे बहुत ही जाने-जाने-से लगे, पर ग्रिगोरी को उसे पहचानने का मौका नही मिला, और वह कुछ दूर पीछे से ही चिल्लाया—"ठहरो···ओ कुतिया के बच्चे, ठहर जाओ, वरना मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकडे कर डालूंगा।"

सहसा ही जर्किन से लैस गॉव वाले ने अपनी चाल धीमी की और फिर रुक गया। वह एक खास ढग से मुडा और उसकी आँखो से ज्यादा-से-ज्यादा नफरत बरसी। ग्रिगोरी इस मुद्रा से अपने बचपन से ही परिचित था, इसलिए कज्जाक के नाक-नक्शो पर पूरी तरह निगाह पडने के पहले ही उसने अनुमान लगा लिया कि हो-न-हो यह तो मेरे पापा है।

पैन्तेली के गालो की खाल काँपी····"तो, तुम्हारा अपना बाप

कुतिया का बच्चा है, क्यो ? यानी, तुम अपने बाप के ही टुकडे-टुकडे कर डालने की धमकी दे रहे हो ?"

उसे अपने ऊपर कोई नियन्त्रण न रहा और उसकी आँखे इस तरह क्रोध से जलने लगी कि ग्रिगोरी का सारा गुस्सा देखते-देखते काफूर हो गया। उसने झटके से घोडे की रासे खीची और जोर से बोला—"मैं तुम्हारी पीठ तो पहचानता नही। इस तरह आसमान सिर पर क्यो उठा रहे हो, पापा ?"

"पहचानता नही···क्या मतलब तुम्हारा ? यानी, तुमने अपने बाप को नही पहचाना ?"

बुजुर्गी कुछ ऐसे गलत और बेहूदे ढग से छू गई कि ग्रिगोरी हँसता हुआ अपने पिता की सीध मे आया और उसे समझाते हुए बोला—"पापा, पागल न बनो ! तुमने एक ऐसा कोट पहन रखा था जो मैने तुम्हारे बदन पर पहले कभी देखा ही नही। फिर तुम भागे जा रहे थे रेस के घोडे की तरह। हमेशा की तरह भचक भी तो नही रहे थे। ऐसे मे भला मैं तुम्हें कैसे पहचानता ?"

घर और बाहर के पहले के दिनो की तरह पैन्तेली एक बार फिर शान्त हो गया। पर, हाँफता वह बुरी तरह अब भी रहा। फिर भी, अपने ऊपर और ज्यादा काबू पाते हुए बेटे की हाँ-मे-हाँ मिलाते हुए बोला—"तुम ठीक कहते हो। कोट नया है। मैंने अपनी भेड की खाल के बदले मे ले लिया है···भेड की खाल भारी होती है और इसलिए रास्ते में तकलीफदेह लगती है···और जहाँ तक मेरे भचकने का सवाल है, भचकने के लिए वक्त नही है। शाहज़ादे, यहाँ भचकने का तो सवाल ही नही उठता। यानी, मौत हमारी आँखो मे आँखे डाल रही है, और तुम लगडे पैर को लेकर गाल बजा रहे हो······"

"खैर, मौत अभी कोसो दूर है। पीछे लौटो पापा ! और तुमने अपने कारतूस अभी तक नही फेंके है न ?"

"लेकिन, हम लौटकर कहाँ जायें ?" बूढे ने घृणा से भरकर विरोध किया।

इस पर ग्रिगोरी ने अपनी आवाज़ ऊँची की और एक-एक शब्द

पर बल देते हुए आदेश दिया—"मै तुम्हे पीछे लौटने का हुक्म देता हूँ । पता है कि लडाई के मैदान मे कमाडर का हुक्म न मानने की सजा क्या होती है ?"

शब्दो का प्रभाव पडा । पैन्तेली ने कधे पर लटकी राइफल ठीक की, लाख न चाहते हुए भी पीछे लौट पडा और एक ओर धीरे चलते बूढे के बराबर पहुँचते ही बोला—"इस ज़माने में हमारी औलादे ऐसी होती है । अपने बाप की इज्जत करने के बजाय या लडाई की मुसीबत से छुटकारा दिलाने के बजाय, औलाद उल्टे उसे लडाई के ऐन मुँह मे ढकेलने की कोशिश कर रही है·· हाँ भाई हाँ !···एक मेरा बेटा प्योत्र था···आसमान वाला उस पर हमेशा रहम करे ··इससे कही बेहतर था · ·मिजाज का ठण्डा था । मगर यह बेवकूफ तो बिलकुल ही अलग है··· माना कि डिवीजनल-कमाडर है, और दूसरी तमाम बाते है, और ठीक ही है ।·· यह तो भाऊ चूहे की तरह तुनुकमिजाज है । मुझे जरा भी ताज्जुब न होगा, अगर मेरे इस बुढापे मे यह मुझे मोची के इस्तेमाल की कीलो से कोच-कोचकर भट्ठी मे झोक देगा ।"

उचित बात तातारस्की के कज्जाको की समझ मे आसानी से आ गई है । ग्रिगोरी ने पूरी कम्पनी जमा की, उसे किसी ढकी हुई जगह ले गया···और फिर घोडे पर बैठे-ही-बैठे सख्त लहजे मे बोला—

"लाल फौजियो ने नदी पार कर ली है और वे व्येशेन्स्काया पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं । दोन के किनारे लडाई शुरू हो गई है । यह सारा कुछ कोई मज़ाक नही है, और मैं तुमको बेकार मे भागने की सलाह नही दूँगा । अगर तुम सब दूसरी बार भागने की कोशिश करोगे तो मै येरेन्स्की के घुडसवार फौजियो को हुक्म दूँगा और वे तुम्हे काटकर फेक देंगे ।" उसने अपने गाँव के लोगो की भीड़ पर एक नज़र दौडाई और उनके तरह-तरह के लिबासो पर दृष्टि गडाते हुए स्पष्ट घृणा से कहा—"तुम्हारी कम्पनी मे कुछ कूडा-करकट लोग जमा हो गए है, और यह सारी घबराहट वे ही फैला रहे है । क्या शानदार बहादुर हो तुम लोग ! लडाई का मैदान छोडकर भागे जा रहे हो, तुम्हारी पतलूनें खराब हुई जा रही है । इस पर भी तुम अपने को कज्जाक कहते हो । और बड़े

बुजुर्गो, तुम्हारी यह हिम्मत ! तुमने खुद ही कहा है कि तुम लडोगे, इसलिए अब टॉगो के बीच खोपडियाँ अडाने के कोई माने नही होते । तो बस, ट्रूप ऑर्डर मे डबल-मार्च करते हुए उन झाडियो तक पहुँचो, फिर उनके बीच से दोन का रास्ता पकडो, बाद को दोन के किनारे-किनारे सेम्योनोवस्की-कम्पनी की तरफ बढो और कम्पनी से मिलने पर लाल फौजियो पर धावा बोल दो ! · क्विक मार्च ! और देखो, चौकस रहना ।"

तातारस्की के गाँव के लोगो ने चुपचाप पूरी बात सुनी और फिर वे उसी तरह झाडियो की तरफ बढ चले । ग्रिगोरी और उसके साथ के कज़्ज़ाक घोड़े दौडाकर हवा से बाते करते निकल गये । बूढो ने, मायूसी से, लम्बी-लम्बी साँस लेते हुए उनकी तरफ मुडकर देखा । पैन्तेली की बगल मे चलते बूढे ओबनिज़ोव ने तारीफ करते हुए कहा—"ठीक है···मगर उस आसमान वाले का लाख-लाख शुक्र कि उसने तुम्हे ऐसा बहादुर, नामी जवान बेटा दिया है । असली सूरमा है ! कैसा चाबुक जमाया उसने क्रिस्तेनिया की पीठ पर ! हर आदमी के पैर जहाँ थे, वही जमकर रह गये ।"

ओबनिजोव की बातो ने पैन्तेली की पितृ-सुलभ भावनाओ को गुदगुदाया और बूढा गदगद स्वर मे बोला—"यह कहने की बात नही । किसी का ऐसा दूसरा बेटा खोजने के लिए आदमी को बडी दुनिया मेंझानी पडेगी···सीना मैडलो से भरा हुआ है, इतने मैडल जीतना कोई मजाक नहीं है···क्यो ? इसके मुकाबले प्योत्र को लो । वह भी मेरा ही बेटा था और पहला बेटा था, मगर ऐसा नही था । मिजाज मे गर्मी नही थी, और कही-न-कही उसमें कुछ-न-कुछ कमी ज़रूर थी । कमीज के नीचे दिल औरत का था । लेकिन, यह दूसरा बेटा, मेरा ग्रिगोरी, बिलकुल मेरी तरह है···जान और जोश तो उसमे मुझसे भी ज्यादा है ।"

ग्रिगोरी दुश्मन की नज़र बचाते हुए अपने आधे ट्रूप के साथ-साथ कालमीक-घाट तक आ पहुँचा और जगल मे पहुँचने पर उसने और उसके साथ के लोगो ने अपने को पूरी तरह सुरक्षित समझा । लेकिन, दूर की पर्यवेक्षक-चौकी से लाल फ़ौजियो ने इन्हे देख लिया और एक टीम ने

अपनी तोपो के दहाने खोल दिए। पहला गोला सरपत के पौधों के सिरो के ऊपर से सरसराता निकला और किसी दलदली खड्ड में जा गिरा, फूटा नही। लेकिन दूसरा गोला सडक के पास ही, बूढ़े, काले देवदार की नगी जडो के बीच फूटा तो आग-सी छिटकी और धड़ाके से कज्जाको के कान के पर्दे फटने लगे। वे मिट्टी और सडी हुई लकड़ी के टुकडो की बौछारो से नहा उठे।

इसी समय घोडे की दुमची के पास किसी गीली चीज के पड़ाक से गिरने की आवाज हुई, तो ग्रिगोरी अपने-आप आगे की ओर झुक गया और उसने अपनी आँखो पर हाथ की आड़ कर ली।

धडाके से जमीन हिल गई। कज्जाको के घोडे बिदके और कूल्हों के बल बैठ गए, मगर फिर, जैसे कि किसी कमान पर, आगे की तरफ ताबडतोड भागे। परन्तु ग्रिगोरी का घोडा भयानक रूप से पीछे हटा, ढह पडा और धीरे-धीरे लुढकने-सा लगा। ग्रिगोरी ने जल्दी से कूद-कर घोडे की लगाम पकड ली। अब दो गोले और हवा मे सरसराते गुज़रे और फिर जगल के सिरे पर सन्नाटा हो गया। बारूद का धुआँ घास की पत्तियो पर जम गया। आसपास से ताजी उल्टी मिट्टी, लकड़ी की चैलियो और अधसडी लकडी का सकेत मिलने लगा। दूर झुरमुट मे मैगपाई चिडियाँ उत्सुकता से चहचहाती रही।

ग्रिगोरी का घोडा हींसा। उसके थरथराते हुए पिछले पैर धँसने लगे। दर्द से दाँत निकल आये, गर्दन ऐंठ गई और मखमली भूरे नथुनों से गुलाबी-से झाग के बुलबुले फूटने लगे। घोडे का पूरे-का-पूरा बदन बुरी तरह काँपने लगा और नीचे की खाल रह-रहकर सिहरने लगी।

"काम तमाम हो गया···क्यो ?" एक घुडसवार कज्ज़ाक ने ज़ोर से पूछा। ग्रिगोरी ने कोई जवाब नही दिया। वह घोड़े की बुझती हुई आँखो मे आँखे डाले रहा। उसने तो ज़ख्म तक नही देखा। ज़रा दूर-भर हट गया। इस पर घोडे ने झटके से आगे बढने की कोशिश मे अपने को समेटा, और फिर सहसा ही घुटनो के बल गिर पडा। इसके साथ ही उसकी गर्दन इस तरह झूल गई, जैसे कि वह मालिक से किसी

कुसूर के लिए माँफी माँग रहा हो। इसके बाद खोखले ढग से कराहते हुए वह बाजू के बल लुढक गया और उसने सिर उठाने की कोशिश की। पर, साफ है कि उसकी ताकत टूट चुकी थी। फिर, कँपकँपी धीरे-धीरे खत्म हो गई, आँखे चमकी कि चमककर रह गईं और गर्दन पसीने से नहा उठी। केवल टखनो के पास नब्ज हल्के-हल्के बजती लगी और काठी का बद धीरे-धीरे काँपता नजर आया।

ग्रिगोरी ने जानवर की बाईं बाजू की तरफ निगाह दौडाई तो एक गहरा जख्म नजर आया और जख्म से काले खून की धार उमडती दीखी। उस बीच दूसरा कज्जाक घोडे से नीचे उतरा। ग्रिगोरी की आँखो से आँसू बहने लगे। उसने उन्हे पोछा नही और अटक-अटककर बोला—"गोली मारकर एक बार मे ही इसे खत्म कर दो।" उसने अपनी माँज़र-राइफल कज्जाक की ओर बढाई, और उसके घोडे पर सवार होकर अपने स्क्वैड्रन के ठिकाने की तरफ रवाना हो गया। वहाँ बाकायदा लडाई चालू मिली।''

लाल सेना के ट्रूपो ने तडके नये सिरे से हमला कर दिया था। धुन्ध के पसारे के बीच उनकी कतारे उठी और चुपचाप व्येशेन्स्काया की दिशा मे बढी थी। दाईं ओर, बाढ के पानी से लबालब एक खड्ड ने क्षण-भर को उनका रास्ता रोका, पर दूसरे क्षण वे पानी मे हिल गए और गोलियो वगैरा के अपने थैले और राइफले हाथो मे ऊपर उठाये-ही-उठाये इस पार से उस पार पहुँच गये।···

थोडी देर बाद, दोन के किनारे की पहाडियो पर से चार बैटरियाँ गरजने लगीं। फिर तोपो के गोलो ने पूरे जगल को अपनी लपेट मे लिया और विद्रोहियो की ओर से भी आग बरसने लगी। अब लाल फौजी अपनी राइफलें ज़मीन पर घसीटते हुए, मार्च करने के बजाय दौडने लगे। उनसे कोई आधे वर्स्ट के फासले पर तोपो के गोलो के धडाके होते और उनके टुकडे हवा मे उडते रहे। गोले पेड़ो को तार-तार करते रहे और पेड चरमराकर ज़मीन पर गिरते रहे। धुएँ के सफेद बादल आसमान मे उमड़ते रहे। साथ ही दो मशीनगनें भी ज़रा-ज़रा देर पर खड़खड़ाती रही।

लाल फौजियो की पहली पक्ति के लोग गिरने लगे। वे कधो पर मुडे हुए बरानकोट लटकाये रहे कि गोलियो ने उन्हे पकडा और पीठो या सीनो के बल दे मारा। लेकिन बाकी लोगो ने जमीन पर लेटने की कोई कोशिश नही की और उनके और जगल के बीच का फासला बराबर कम होता गया।

दूसरी लाल पक्ति के सामने एक लम्बा-सा कमाडर, लम्बे डग भरते हुए, आसानी से लपकता नजर आया। उसका बदन थोडा आगे की ओर झुका दीखा और बरानकोट के सिरे खुसे नजर आए। पक्ति बढते-बढते क्षण-भर को ठिठकी। पर, दौडते-दौडते कमाडर मुडा, उसने चिल्लाकर कुछ कहा, लोग फिर दौड पडे। उनके भर्राये हुए गलो से फिर हुर्रा का घोष उमडा और उसमे क्रोध ने अपनी तेजी घोली।

इसके बाद कज़्ज़ाको की सारी-की-सारी कुल मशीनगनें एक साथ ज़बाने खोलने लगी। दूसरी ओर जगल के सिरे से राइफले अवाधुंध गोलियाँ बरसाने लगी। ग्रिगोरी जगल के बाहर की सडक पर अपने स्क्वैड्रनो के साथ खडा रहा कि कही पीछे से बाज की कम्पनी की मशीनगने खडखडाने लगी। इस पर लाल पंक्तियाँ डगमगाईं, उनके फौजी जमीनो पर लेटे और आग का जवाब आग से दिया जाने लगा। इस तरह कोई डेढ घटे तक सघर्ष चलता रहा। लेकिन विद्रोहियो ने ऐसी आग छिडकी कि लाल सेना की दूसरी पक्ति उसका सामना न कर सकी। उसके सैनिक उठे, जान छोडकर पीछे भागे और तीसरी पक्ति से जा मिले। जल्दी ही चरागाह मे हर जगह, घबराकर पीछे भागते लाल फौजी-ही फौजी नजर आने लगे। इसके बाद ग्रिगोरी ने अपने स्क्वैड्रनो को जगल से बाहर निकाला, उन्हे एक व्यवस्था दी और दुश्मनो के पीछे छोड दिया। चिर-प्रदेश के स्क्वैड्रन ने लाल सेनाओ के ट्रूपो को उनके बेडो से काट दिया। यह स्क्वैड्रन आगे बढा तो जगल के बाहर नदी के दाहिने किनारे पर आमने-सामने लडाई होने लगी। लाल सेना के केवल कुछ ही सैनिक जैसे-तैसे बेडो तक लौट सके। वे बेडो पर सवार हुए तो तिल रखने को भी जगह न बची। फिर बेड़ो ने किनारा छोड दिया। दूसरो को, पीछे हटते-हटते, नदी के बिल्कुल

सिरे तक लोहा बजाना पडा ।

ग्रिगोरी ने अपने स्क्वैड्रनो के लोगो को घोडो से उतरने का हुक्म दिया, घोडो की निगरानी करने वाले कज्जाको को जगल से बाहर न निकलने की हिदायत दी और बाकी को लेकर नदी-किनारे की ओर चला । सो, एक पेड से दूसरे पेड तक दौडते हुए वह और उसके फौजी नदी के पास-ही-पास पहुँचते गये । कोई एक सौ पचास लाल सैनिक हथबमो और मशीनगनो की गोलियो से विद्रोही, पैदल सेना की हिम्मत तोड़ने मे व्यस्त मिले । इस बीच बेडे फिर बाये किनारे के लिए रवाना हुए । लेकिन बाजकी के कज्जाको ने लगभग सभी डाँड चलाने वालो को भूनकर रख दिया । दाहिने किनारे के लाल सैनिको को अपना भाग्य-विधान निश्चित लगा । उनका साहस जवाब दे गया । उन्होने अपनी राइफले एक ओर को फेक दी और तैरकर नदी पार करने की कोशिश की। पर, उनमे से कितने ही कमजोर पड गए। नदी की तेज धारा नही काट सके और बीच मे ही डूब गये। सिर्फ दो सैनिक सही-सलामत उस पार पहुँच सके ।

इनमे से नौसैनिक वाली धारीदार जर्सी पहने लाल फौजी सधा हुआ तैराक लगा । उसने किनारे से दूर पहुँचने पर डुबकी लगाई और फिर मँझधार मे पहुँचने पर ही ऊपर आया ।

ग्रिगोरी सरपत की छितरी हुई जडो के पीछे से नौसैनिक के हाथो का पानी काटना देखता रहा । नौसैनिक स्थिर गति से किनारे के पास पहुँचता गया । इसी तरह एक दूसरे लाल-सैनिक ने भी सही सलामत नदी पार कर ली। पर, दूसरी तरफ पहुँचने पर वह सीने-सीने तक पानी मे खडा हुआ, उसने अपने सारे बचे हुए कारतूसो को आग मे बदला, फिर कज्जाको की ओर मुट्ठी दिखलाते हुए चिल्लाकर कुछ कहा और तिरछे तैरने लगा । गोलियाँ उसके चारो ओर बरस-बरसकर पानी मे बुझने लगी, पर उसे एक नही लगी । वह जानवरो के पानी पीने की जगह बाहर निकला, बदन का पानी झटकने के बाद धीरे-धीरे किनारे की तरफ़ बढा और फिर गाँव के अहातो की तरफ कदम बढाने लगा ।

जो लाल फौजी दूसरे किनारे पर बाकी रह गए, वे एक बलुहे टीले के पीछे लौट गये। उनकी मशीनगनें तब तक गोलियाँ बरसाती रही जब तक कि जैकेट मे पानी उबलने नही लगा।

"मेरे पीछे आओ !" मशीनगन के शान्त होते ही ग्रिगोरी ने धीरे से हुक्म दिया और अपनी तलवार म्यान से खीचकर टीले की तरफ बढा।

कज्जाक उसके पीछे-पीछे हाँफते और पैर पटकते हुए आगे बढते गये।

फिर, इनके और लाल सैनिको के बीच ज्यादा-से-ज्यादा सौ कदम का फासला रह गया कि गोलियो की तीन बौछारो के बाद एक लम्बे कद, साँवले चेहरे और सफेद गलमुच्छो वाला कमाडर टीले के पीछे से उठा और सीधा हुआ।

कमाडर जख्मी हो गया था और इसे एक औरत सहारा दे रही थी।

सो, अपनी टूटी टाँग घसीटते हुए वह टीले से नीचे उतरा, और अपनी सगीन लगी राइफल को जमकर हाथ मे जकडते हुए उसने भर्राई आवाज मे हुक्म दिया—"कॉमरेडो · आगे बढो और इन श्वेतगार्दों को मसलकर रख दो।"

बस तो, मुट्ठी-भर जाँबाज फौजी 'इन्तरनेशनाल'[1] गाते हुए हमले का जवाब हमले से देने के लिए आगे बढे, आगे क्या बढे, मौत के मुँह मे धँस गये।

पता चला कि इस तरह जो ११६ अन्तिम लाल सैनिक दोन के किनारे काल के गाल मे समाये, वे सभी अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी के कम्यूनिस्ट सदस्य थे।

: ३ ·

ग्रिगोरी उस दिन काफी रात गए स्टाफ से अपने यहाँ वापस आया। प्रोखोर-ज़िकोव उसे बेत के छोटे फाटक के पास राह देखता मिला।

---

१ १८७१ में फ्रास में रचित एक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट गीत।

"अकसीनिया का कुछ अता-पता मिला ?" ग्रिगोरी ने अपने स्वर मे बरबस उदासीनता भरते हुए पूछा।

"नही···कोई खबर नही है···वह तो जैसे हवा हो गई।" प्रोखोर ने जमुहाई लेते हुए जवाब दिया, पर मन-ही-मन चिन्तित होकर सोचने लगा, नीली छतरी वाला न करे कि इस वक्त यह मुझे जबरदस्ती ठेल कर भेजे और कहे कि जाओ, जहाँ से भी हो, अकसीनिया को खोज-कर लाओ। दुनिया के शैतान इस वक्त मेरे सिर पर सवार है।

"कुछ पानी-वानी लाओ। पसीने से तर-बतर हो रहा हूँ। चलो··· लाओ जल्दी !" ग्रिगोरी ने बिगडते हुए कहा।

प्रोखोर अन्दर से मग लाया। फिर बहुत देर तक ग्रिगोरी अजुरी-पर-अजुरी बाँधता रहा और वह पानी उँडेलता रहा। ग्रिगोरी को इस तरह मुँह-हाथ धोने मे बडा मजा आया। फिर उसने पसीने से गधाती अपनी ट्यूनिक उतारी और बोला—"थोडा पानी पीठ पर डालो।"

ठडा पानी पसीने से नहाई पीठ पर पडा तो वह कनकना उठा। उसने अपने छिले हुए कधे और बालो से भरा सीना रगड-रगडकर धोया। उसने घोडे की पीठ पर बिछाये जाने वाले कपडे से बदन पोछा और खुशी से भरी आवाज मे प्रोखोर को हुक्म देते हुए बोला—

"लोग मेरे लिए घोडा लेकर आयेंगे सबेरे। घोडा ले लेना, उसकी खूब मलाई करना और उसे दाना दे देना। लेकिन मुझे मत जगाना। मै जीभर सोना चाहता हूँ। हाँ, अगर स्टाफ से कोई आए, तब अलबत्ता मुझे जगा देना। समझे ?"

वह शेड के नीचे जाकर एक गाडी मे लेटा तो लेटते ही गहरी नींद आ गई। तडके उसे सर्दी लगी तो उसने पैर सिकोड लिए और ओस से गीला बरानकोट अपने चारो ओर लपेट लिया। लेकिन धूप निकलते ही वह फिर औंघा गया और फिर तोपो की भयानक गरज सुनने के बाद ही उठकर बैठा। गाँव के ऊपर के नीले आसमान मे हलके रुपहले रग का एक हवाई जहाज चक्कर लगाता दीखा। नदी के दूर के किनारे से तोपें और मशीनगनें उस पर आग बरसाती नजर आईं।

"क्यो, जैसे कि हवाई जहाज को मार ही तो गिराएँगे।" प्रोखोर ने, खम्बे से बँधे ऊँचे स्टैलियन घोड़े को मलते हुए कहा—"देखो, पैन्तेलेयेविच, ज़रा देखो तो कि कैसा घोडा उन लोगो ने भेजा है तुम्हारे लिए।"

ग्रिगोरी ने स्टैलियन के ऊपर निगाह दौडाई और सन्तोष से भर-कर पूछा—"कै साल का है यह ? देखने से तो कोई पाँच साल का लगता है ?"

"हाँ, पाँच साल का ही है।"

"शानदार जानवर है···पैर बहुत ही खूबसूरत है और चार के चारो का निचला हिस्सा सफेद है। बढिया घोडा है। खैर, तो काठी कसो इस पर, जरा मैं जाकर देख आऊँ कि कौन आया है।"

"देखने मे तो अच्छा ही लगता है·· सवारी मे पता नही कैसा साबित होगा ! वैसे जानवर जानदार मालूम होता है।" प्रोखोर ने काठी के बद कसते हुए धीरे से कहा।

इसके बाद हो तोप के गोले का एक सफेद टुकडा जहाज़ के बिल्कुल पास ही फटा और धुएँ का बादल घिर गया।

वायुयान-चालक ने उतरने लायक जगह देखकर जहाज़ तेज़ी से नीचे उतारा। ग्रिगोरी ने अपना घोडा बेत के छोटे फाटक से निकाला और गाँव के अस्तबलो से गुज़रता जहाज के उतरने की जगह की तरफ बढा।

कभी गाँव के स्टैलियनो के अस्तबलो का काम देने वाली गाँव के बाहर बनी, पत्थरो की यह लम्बी इमारत इस समय आठ सौ से ज्यादा लाल फौजियो से ठसाठस भरी रही। पहरेदारो ने इन फौजियो को शौचादि के लिए कही बाहर नही जाने दिया और वहाँ एक भी स्टूल इस काम के लिए नही रखा। सो, फौजियो के पाखाने की तेज़ बदबू ने इमारत को चारों ओर से एक दीवार की तरह घेर रखा। दरवाजे से गँधाते पेशाब की धारे बहती रही और उन पर पन्नो की तरह हरी मक्खियो के दल-के-दल उमडते रहे।

नजरबदो की इस जेल से रात-दिन घुटी हुई कराहे उठती रही

और सैकडो लाल फौजी कमजोरी, टाइफस और पेचिश से दम तोडते रहे। कभी-कभी तो कई-कई दिनो तक लाशे उठाई तक नही गई।

ग्रिगोरी इन अस्तबलो का चक्कर लगाकर घोडे से उतरने को हुआ कि दोन के किसी दूर के किनारे से फिर तोप की गरज सुनाई पड़ी। पास आते गोले की आवाज बराबर तेज होती गई कि बीच मे ही वह फूट गया और उस धडाके ने पिछले शोर का तार तोड दिया।

हवाई जहाज से चालक और सैनिक-अधिकारी बाहर निकलने लगे। इस बीच कज्जाको ने पूरा जहाज़ घेर लिया। लेकिन, ऐन इसी वक्त पहाडी की बैटरी की सारी तोपो ने एक साथ अपने दहाने खोल दिए और गोले आकर अस्तबलो के ठीक चारो तरफ गिरने लगे।

विमान-चालक फिर कॉकपिट मे घुस गया, लेकिन इजन ने स्टार्ट होने से इनकार कर दिया।

"ज़ोर से धक्का दो ज़रा!" फौजी अधिकारी ने चिल्लाकर कहा और सबसे पहले उसने हवाई जहाज के एक डैने को ढकेलना शुरू किया। जहाज़ डगमगाता हुआ देवदारुओ के झुरमुट की ओर बढा। बैटरी भी उसके आगे बढने के साथ-ही-साथ आग बरसाती रही। एक गोला लाल फौजियो से ठसाठस भरी इमारत के ठीक ऊपर आकर गिरा और धुएँ के बादलो और चूने की उमडती धूल के बीच एक हिस्सा ढह गया। पूरा मकान भयभीत कैदियो की चीख-पुकारो से कॉप उठा। तीन कैदियो ने सध से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन कज्जाको ने बिलकुल पास पहुँचकर उन्हे विस्मय मे डाल दिया। उनकी समझ मे न आया कि वे करे तो करें क्या!

ग्रिगोरी ने एक तरफ को अपना घोडा दौडाया।

"तुम्हे ले डालेंगे वे लोग! अपना घोडा देवदारुओ की तरफ ले जाओ!" एक कज्ज़ाक ने बगल से दौडकर गुजरते हुए चिल्लाकर कहा। भय से उसका चेहरा भरा रहा और आँखें नाचती रही।

'सचमुच हो सकता है कि वे मुझे ले डालें। इस मामले मे कौन, क्या कह सकता है!' ग्रिगोरी ने सोचा और घोडे को धीरे-धीरे हाँकते हुए वह अपने क्वार्टरो को लौट दिया।

उस दिन कुदिनोव ने स्टाफ-हेडक्वार्टरो मे एक बिल्कुल गुप्त मीटिंग की और ग्रिगोरी को नही बुलाया। हवाई जहाज से आए सैनिक अधिकारी ने सक्षेप मे कहा, "कामेन्स्काया के चारो तरफ जमा हमलावर फौज किसी भी दम लाल मोर्चा भेद सकती है। साथ ही यह भी है कि जनरल सेक्रेतोव की कमान मे दोन सेना की एक घुड-सवार डिविजन जल्दी ही मार्च कर विद्रोहियो से जा मिलेगी।" अधिकारी ने सलाह दी—"नदी पार करने के लिए कोई-न-कोई इन्तजाम जल्दी-से-जल्दी किया जाना चाहिए, ताकि सेक्रेतोव की डिविजन से मिलने के बाद बागियो की घुडसवार रेजीमेटे दोन के दाहिने किनारे से पार इकट्ठी की जा सके। हमे रिजर्व ट्रुपो को भी नदी के ज्यादा-से-ज्यादा पास पहुँचा देना चाहिए।" फिर, ट्रुपो को नदी के पार भेजने की योजनाओ और उनकी कार्यवाहियो की सारी रूपरेखा बन गई तो अत मे अधिकारी ने पूछा—"लेकिन आपने व्येशेन्स्काया मे कैदी क्यो जमा कर रखे है?"

"क्योकि उन्हे और कही रखने की जगह नही है। गाँवो के बाहर इस काम के लायक कोई इमारत नही है।" स्टाफ के एक कार्यकर्त्ता ने जवाब दिया।

अधिकारी ने अपना सफाचट पसीने से तर सिर रूमाल से रगडा, अपनी ट्यूनिक के कालर के बटन खोले और एक आह भरकर बोला—"कैदियो को कज्जान्स्काया भेज दीजिए।"

कुदिनोव ने आश्चर्य से अपनी भौहें ऊपर उठाईं। पूछा—"और फिर?"

"और, वहाँ से उन्हे फिर व्येशेन्स्काया वापस ले आइये।" अधिकारी ने अपनी भावहीन नीली आँखे सिकोडी। फिर सख्ती से होठ भीचते हुए बोला—"भाईजान, मेरी तो यही समझ मे नही आता कि आप इस तरह उनकी इतनी खातिर क्यो कर रहे है? मेरे खयाल मे यह वक्त इस खातिर का तो बिलकुल ही नही। इन्सान के बदन और समाज मे सभी तरह की बीमारियाँ फैलाने वाले इन बिलबिलाते कीडो को तो खत्म ही कर देना चाहिए। आया की तरह इनकी

परवरिश करने का मतलब कुछ नही होता। मै अगर आपकी जगह होता तो मैने इनका नाम-निशान मिटा दिया होता।"···

बस तो अगले दिन दो सौ लाल फौजियो की पहली टोली को बलुहे पसारे मे मार्च करने का हुक्म दे दिया गया। पर, हड्डी-हड्डी रह गए, मौत की तरह पीले चेहरे वाले इन फौजियो के पैर उठाए न उठे। वे 'परछाइयो की तरह' जैसे-तैसे आगे बढे। इसके बाद घुड-सवार फौजियो की एक टोली ने इन्हे घेर लिया और फिर गाँव से कोई सात वर्स्ट के फासले पर इन लाल सैनिको को बीन-बीनकर काटकर फेक दिया गया और शाम होते ही उनकी दूसरी पार्टी रवाना कर दी गई। इन एक सौ पचास लाल सैनिको मे से सिर्फ सत्रह कज्ज़ान्स्काया पहुँचे। बीच मे, देखने-सुनने मे जिप्सी-जैसे एक जवान लाल सैनिक का दिमाग खराब हो गया। वह पुदीने का एक गुच्छा सीने से लगाये पूरे रास्ते नाचता, गाता और रोता रहा। वह बार-बार मुँह के बल रेत पर गिरता तो हवा उसकी सूती कमीज के फटे हिस्सो से खिलवाड करती और पहरेदार कज्जाको की निगाह उसकी हड्डी, पीठ की खिची हुई खाल और पैर के फटते तलवो पर पडती। वे उसे उठाते और फ्लास्क से उसके ऊपर पानी छिडकते। वह अपनी काली उन्माद से चमकती आँखें खोल देता, शात भाव से हँसता और फिर लडखडाता हुआ आगे बढने लगता।

एक जगह उस पर औरतो को इतनी दया आई कि सडक के पास की एक झोपडी के सामने उन्होने कैदियो को घेर लिया, और एक शानदार, मोटी-बूढी औरत ने रक्षकदल के मुखिया से सख्ती से कहा—"सुनते हो, तुम उस साँवले आदमी को छोड दो! वह इस दुनिया मे नही है। आसमान वाले के पास पहुँच चुका है। अगर तुम ऐसे आदमी को मारोगे तो बडा गुनाह कमाओगे।"

मुखिया, लाल गलमुच्छो वाला एक तेज़ किस्म का घुडसवार अफसर था। उसने हँसते हुए व्यग्य किया—"बुढिया, हमे इसका कोई डर नही। एक गुनाह और सही। ऐसे-ऐसे गुनाह तो हम पहले भी इतने कमा चुके हैं कि अब फकीरो मे गिने जाने से तो रहे।"

"लेकिन, खैर, तुम इसे छोड दो ! मेरी बात मत टालो ।" बुढिया ने आग्रह से कहा—"यह न भूलो न कि मौत तुममे से हर एक के सिर पर मँडरा रही है ।"

दूसरी औरतो ने पूरी ताकत से बूढी औरत का समर्थन किया और मुखिया उसकी बात मानने पर राजी हो गया । बोला—"अच्छा, कोई बात नही, ले जाओ इसे । अब यह किसी तरह का कोई नुकसान नही पहुँचा सकता । लेकिन, हम इतने अच्छे दिल के लोग है तो इस एवज़ मे तुम हममे से हर एक को एक-एक कुल्हिया दूध क्यो न पिला दो ।"

बुढिया उस लाल पागल फौजी को अपनी झोपडी मे ले गई । वहाँ उसने उसे खिलाया-पिलाया और सोने के कमरे मे उसके लिए बिस्तर लगा दिया । वह सारे दिन सोता रहा । सोकर उठा तो खिडकी से पीठ सटाकर खडा हो गया और धीरे-धीरे गाने लगा । उसी समय बुढिया कमरे मे आई तो गाल पर हाथ रखकर बहुत देर तक उसके चेहरे के ढाँचे को ध्यान से देखती रही और फिर भारी आवाज मे बोली—"सुना है कि तुम्हारे घर के लोग यही, कही पास ही मे रहते है ।"

पागल कुछ क्षणो तक चुप रहा और इसके बाद फिर गाने लगा । लेकिन इस बार उसकी आवाज़ और धीमी हो गई ।

बुढिया ने सख्त पडते हुए कहा—"तुम अपना यह खिलवाड बंद करो···समझे न लडके ! और, यह न सोचो कि तुम मुझे बेवकूफ बना सकते हो । मैंने एक लम्बी जिन्दगी देखी है···तुम मुझे चरका नही दे सकते···मै ऐसी कोई बेअक्ल नही । मुझे पता है कि तुम्हारा दिमाग बिल्कुल ठीक है ··मैंने नीद मे तुम्हारी बाते सुनी है ··सभी बातें समझदारी की थी ।"

पर, लाल सैनिक गाता ही रहा । हाँ, शान्त अधिक होता गया । बुढिया कहती गई—"मुझसे डरो मत । मै तुम्हारा कोई नुकसान नही करूँगी । मै अपने दो बेटे जर्मनी की लड़ाई मे और एक बेटा अभी चेरकास्क की इस लडाई मे खो चुकी हूँ । मैंने उन्हे अपनी कोख में रखा, दूध पिलाया, खाना खिलाया और अपनी जवानी के दिनो मे रातों-रात सोई नही ।···इसलिए जो जवान फौज मे काम करते और लडाई

मे हिस्सा लेते है, उन्हे देखकर मेरा दिल हमेशा ही टीस उठता है।" बुढिया कुछ क्षणो तक चुप रही।

लाल फौजी भी चुप हो गया। सांवले गालो पर हलकी-हलकी लाली दौड गई और गले की एक नस रह-रहकर फडकने लगी। एक क्षण तक शान्त रहने के बाद उसने अपनी पलके आधी खोली, तो उसकी निगाहो से समझ टपकी। काली आँखे इतने धैर्य और आशा से चमकी कि बुढिया के होठो पर सहज ही मुस्कान दौड गई। पूछा—"तुम शुमिलिन्स्काया की सडक जानते हो ?"

"नही, माँ!" लाल सैनिक ने होठ कठिनाई से ही खोलते हुए जवाब दिया।

"तो तुम वहाँ पहुँचोगे कैसे ?"

"मैं नही जानता "

"यही तो बात है। लेकिन, अब तुम्हारे लिए मैं करूँ क्या ?" वृद्धा बहुत देर तक सैनिक के उत्तर की प्रतीक्षा करती रही और फिर प्रश्न किया—"लेकिन, तुम चल तो सकते हो न ?"

"किसी तरह चल ही लूँगा।"

"यह जमाना 'किसी तरह चल लेने' का नही। तुम्हे रात मे मजिल तय करनी होगी, और ज्यादा-से-ज्यादा तेज़ी से चलना होगा। तुम एक दिन यहाँ और ठहरो। इसके बाद मैं तुम्हे खाना दे दूँगी और रास्ता दिखलाने के लिए अपना पोता तुम्हारे साथ कर दूँगी···और ···फिर खुदा हाफिज! यह बात मैं पक्की तरह जानती हूँ कि तुम्हारे साथी लाल फौजी शुमिलिन्स्काया के ठीक बाहर है और तुम उनके पास जा सकते हो · सिर्फ बडी सडक से नही जा सकते। तुम्हे स्तेपी-मैदान पार करना होगा, घाटियो के किनारे-किनारे चलना होगा, जगलो के बीच से गुजरना पडेगा और सडको से दूर-ही-दूर रहना होगा, वरना कज्जाक तुम पर टूट पडेंगे· ····और फिर सारा खेल खत्म हो जाएगा······सूरत यह है, मेरे राजा-बेटे!"

अगले दिन, साँझ का धुँधलका घिरते ही बुढिया ने अपने बारह साल के पोते और उस लाल सैनिक को क्रास से सुरक्षित किया,

जवान को कसा हुआ कज्जाक कोट पहनाया और गम्भीर स्वर मे बोली—"अच्छा, अब जाओ·· प्रभु तुम्हे बचायें !······लेकिन देखो, दुश्मनो के हाथो मत पड जाना······किसी तरह नही······मेरे बेटे, किसी तरह !······मेरे सामने न झुको·· तुम उस प्रभु के आगे झुको ! मैं ही अकेली नही, हम सभी दिल वाली माँएँ · ···तुम्हारे जैसे लाड़लों के लिए दुखी है······बहुत ही ज्यादा दुखी है । जाओ······अब जाओ····· प्रभु तुम्हे सही-सलामत पहुँचा दे।" और उसने झोपड़ी का पीला, चिकनी मिट्टी से पुता टेढा-मेढा दरवाज़ा झटके से बन्द कर लिया।

४ ·

इलीनीचिना हर रोज उजाले की पहली किरण के साथ उठती, दूध दूहती और घर के दूसरे काम करने लगती। वह घर के अन्दर का स्टोव न जलाकर बाहर के बावर्चीख़ाने मे आग दहकाती, खाना पकाती और फिर घर मे बच्चो के पास लौट आती।

नताल्या का स्वास्थ्य, टाइफस के बाद, बहुत धीरे-धीरे सुधरा। वह त्रिदेव पर्व के दूसरे दिन पहली बार बिस्तर से उठी तो पैरो की कँपकँपी के बावजूद कमरा-कमरा देख आई और बच्चो के सिरों से जुएँ निकालती रही। उसने स्टूल पर बैठकर कुछ कपड़े तक धोने की कोशिश की।

उसका चेहरा लट जाने पर भी बराबर चमकता रहा, पिचके गालो पर भी गुलाबी छिटकी रही और बीमारी के कारण बडी लगने वाली आँखे, प्रसव के बाद की चचलता और उछाह से चमकती रही।

"पोलयुश्का···मेरी मुन्नी-रानी, मै बीमार हो गई तो मीशात्का ने तुम्हे तग तो नही किया ?" नताल्या ने, एक-एक शब्द विशेष प्रयत्न से निकालते हुए कमजोर आवाज मे पूछा और अपनी बेटी के काले बालो पर हाथ फेरने लगी।

"नही, माँ·· सिर्फ एक बार मीशात्का ने मुझे मारा···लेकिन हम लोग साथ-साथ खूब खेले !" लड़की ने धीमे से कहा और चेहरा

माँ के घुटनो से टिका दिया ।

"और, दादी ने तुम्हारी फिक्र ठीक से की ?" नताल्या मुस्कराते हुए पूछती गई ।

"दादी ने खूब प्यार किया ।"

"और, अजनबी, लाल फौजियो ने तो तुम्हारे बदन को हाथ नही लगाया ?"

"उन्होने हमारे नन्हे-मुन्ने बछडे को मार डाला ··बुरा हो उनका !" मीशात्का ने पतली गहरी आवाज़ मे जवाब दिया। वह अपने पिता से इतना अधिक मिलता-जुलता था कि कोई देखता तो अचरज मे पड जाता ।

"तुम्हे कोसा-कासी नही करनी चाहिए, मीशात्का ! तुम तो बडे-सयानो की तरह बाते बनाने लगे । अब से याद रखना और अपने से बडो के लिए बुरी बात मुँह से कभी न निकालना ।" नताल्या ने अपनी मुस्कराहट दबाते हुए भर्त्सना के स्वर मे कहा ।

"दादी ने ऐसा ही तो कहा था, उन लोगो के बारे मे·· न हो तो पोल्या से ही पूछ देखो ।" नन्हे मेलोखोव ने उदास मन से अपना बचाव किया ।

"यह बात ठीक है, माँ···और, उन लोगो ने हमारी मुर्गियो के सभी बच्चे मार डाले· ···एक-एक बच्चा मार डाला ।"

पोल्या उमग मे आई । उसकी छोटी-छोटी काली आँखें चमकने लगी और वह पूरी दास्तान सुना गई कि कैसे लाल फौजी अहाते मे दाखिल हुए, कैसे उन्होने सभी चूजे और बत्तखे समेटी, कैसे दादी ने मुर्गियो के अण्डो के लिए पाला-मारी, चोटी वाले, मुर्गे को उनसे छोड देने को कहा और कैसे उसी मुर्गे को हाथ मे झुलाते हुए एक खुश-मिज़ाज लाल फौजी बोला—"बुड्ढी, इसी मुर्गे ने सोवियत हुकूमत के खिलाफ कुकड़ूँकूँ की है, इसलिए हमने इसे मौत की सज़ा दे दी है। अब तुम चाहे जो कुछ कहो, हम तो इसका शोरवा तैयार करेंगे । बदले मे, कहो तो, हम अपने फैल्ट-बूट भले ही तुम्हारे लिए छोड जाएँ ।"

अपने हाथ फैलाते हुए नन्ही पोल्या बोली—"और, इतने · इतने बडे-बडे अपने बूट वे लोग छोड गए···बहुत ही बड़े हैं, माँ·· और उनमें छेद-ही-छेद है।"

नताल्या ने आँसुओं के बीच बच्चो को दुलारा और खुशी से खिली आँखो की निगाहे बेटी पर जमाए-ही-जमाए धीरे-धीरे बोली—"आह ·· बेटी मेरे ग्रिगोरी की है · मेरे ग्रिगोरी की असली बेटी है···तू बिल्कुल अपने पापा की तरह है · रोआँ-रोआँ उससे मिल रहा है।"

"लेकिन, मै हूँ पापा की तरह, माँ !" मीशात्का ने ईर्ष्या से भर-कर पूछा और कातर मन से अपनी माँ से चिपक गया।

"हाँ, तुम भी अपने पापा की तरह हो। सिर्फ यह याद रखना कि जब बडे होना तब अपने पापा की तरह बुरे न निकलना।"

"लेकिन, पापा बुरे है, माँ ? क्यो हैं बुरे पापा ?" पोल्या ने पूछा।

नताल्या के चेहरे पर उदासी का बादल घिर आया। उसने कोई जवाब नही दिया और जैसे-तैसे बेंच से उठ खडी हुई।

इलीनीचिना कमरे मे थी। वह असन्तोष से भरकर एक तरफ को चली गई। नताल्या, बच्चो की बातो को अनसुनी करती हुई, खिडकी के पास जा खडी हुई और लम्बी-लम्बी आहे भरती और 'परेशानी के कारण' अपनी बदरग चोली के बदो मे उगलियाँ उलझाती, अस्ताखोव के घर की बद झिलमिलियो को एकटक घूरती रही।

अगले दिन सवेरे उसकी आँख खुली तो बच्चो की नीद खराब न करने के खयाल से चुपचाप उठी, हाथ-मुँह धोया और एक साफ स्कर्ट, चोली और सफेद रूमाल बक्से से निकाला। वह देखने मे उत्तेजित लगी, पर अपनी उदासी के बीच भी उसने यो ही कपडे बदल लिए। इलीनीचिना समझ गई कि बहू अपने बाबा ग्रीश्का की समाधि पर जाने की तैयारी मे है।

"कहाँ जा रही हो ?" बुढिया ने अपने अनुमान की पुष्टि के लिए जान-बूझकर पूछा।

"मै बाबा की कब्र पर जा रही हूँ।" फूट पडने के डर से आँखे ऊपर न उठाते हुए नताल्या ने जवाब दिया। उसे बाबा की मौत की

खबर के साथ यह भी मालूम हो गया था कि मीशा-कोशेवोई ने बाबा के घर और फार्म मे भी आग लगा दी है।

"बहुत कमजोर हो अभी···वहाँ तक पहुँच भी न पाओगी।" सास ने कहा।

"मै बीच-बीच मे, जरा-ज़रा आराम करके, वहाँ तक पहुँच जाऊँगी। तुम बच्चो को खाना दे देना, माँ! हो सकता है कि मुझे वहाँ थोडी देर लग जाए।"

"लेकिन, देर क्यो लग जाएगी? वहाँ देर तक क्या करोगी तुम? कब्र पर जाने का अच्छा वक्त चुना है तुमने भी! तुम्हारी जगह मै होती तो इस वक्त जाती नही, नताल्या बेटी!"

"नही, मै तो जाऊँगी।" नताल्या के चेहरे पर बादल छा गया और उसने दरवाजे के हत्थे पर हाथ रखा।

"ज़रा ठहरो तो···तुम वहाँ इस तरह भूखी-प्यासी क्यों जा रही हो? थोडा-बहुत कुछ मुँह मे डाल लो न। थोडा-सा दही ले आई हूँ।"

"नही, माँ·· प्रभु ईसा रहम करे···मुझे कुछ नही चाहिए···लौटने पर ही कुछ खाऊँ-पीऊँगी।"

तो, बहू को जाने पर उतारू देखकर सास सलाह देती हुई बोली—"अच्छा हो कि तुम दोन के ऊपर के रास्ते से, बागो के बीच से होकर जाओ। उधर काफी सन्नाटा रहता है। कोई इतना ज्यादा देखेगा नही तुम्हे।"

इस समय दोन पर धुंध की एक चादर-सी तनी हुई थी। सूरज अभी नही उगा था, पर पूर्व मे देवदारुओ के पीछे छिपे आसमान के किनारे पर उषा की नीली परछाइयाँ धधक रही थी और बादलों के नीचे से बदन को ठिठुरा देने वाली समीर बह रही थी।

ऐसे मे नताल्या अपने बाबा के यहाँ पहुँची, सरपत का गिरा हुआ फाटक पार कर अपनी ही बगिया मे आई और सीने को अपने हाथ से दबाती हुई मिट्टी के एक ताज़े छोटे ढूह के पास ठिठकी।··· ··

बगिया मे घास और बिच्छुओ के पौधे जहाँ-तहाँ उगे हुए थे। हर ओर से ओस से नहाए पुदीने, गीली धरती और धुंध की गमक आ रही

थी। आग मे जल गए, कोयला-कोयला रह गए, पुराने सेब के पेड़ पर, अपने पख फैलाए एक मैना बैठी हुई थी। कब्र का ढूह धीरे-धीरे नीचे की ओर धँसा जा रहा था। खुश्क, सूखी घास के गुच्छो के बीच जहाँ-तहाँ छोटी हरी घास की पत्तियाँ अपना सिर उठा रही थी।······

नताल्या को पुरानी याद आई तो वह बुरी तरह भर गई, धीरे से घुटनो के सहारे बैठी और फिर चेहरे के बल बेरहम धरती पर भहरा पड़ी। धरती से मौत और बरबादी की सदाबहार बू आई।

एक घण्टे बाद, सताप से छलनी दिल लिये, नताल्या चुपके-चुपके बगिया के बाहर निकली और उसने मुडकर अतिम बार पूरी जगह पर निगाह डाली। यही तो उसकी जवानी मे फूल आए थे। उपेक्षित हाते मे शेडो की अधजली धन्नियाँ, स्टोवो के काले खण्डहर और घर की नीवे जहाँ-तहाँ नजर आ रही थी। सारा दृश्य अपने दर्द की कहानी आप कह रहा था।

······नताल्या बाहर निकली और कोने की एक गली मे मुड गई।

× × ×

······नताल्या की हालत दिनो-दिन सुधरती गई। होते-होते उसके पैरो मे ताकत आई, कधे गोलाए और पूरा बदन स्वास्थ्य से भरा। जल्दी ही वह घर के काम-काज मे अपनी सास का हाथ बँटाने लगी। अब बावर्चीखाने मे कुछ पकाते समय उनके बीच काफी देर तक बातें होने लगी। एक दिन नताल्या गुस्से मे भरकर बोली, "यह तूफान खत्म कब होगा ? मै तो इससे तग आ गई।"

"देखो, अब जल्दी ही हमारे यहाँ के लोग दोन पार कर अपने-अपने घर-गाँव आयेंगे।" इलीनीचिना ने विश्वास से उत्तर दिया।

"लेकिन, यह बात तुम कैसे कह सकती हो, माँ ?"

"मेरा दिल ऐसा कहता है।"

"अभी तक तो हमारे घर के कज़्जाक सही-सलामत है। ईश्वर न करे कि उनमे से किसी को किसी तरह की कोई आँच आए।······ ग्रीशा तो बहुत ही लापरवाह है···" नताल्या ने आह भरकर कहा।

"मैं नही सोचती कि हमारे घर के किसी भी आदमी का बाल बाँका

होगा। ईश्वर बेरहम नही है। ग्रीश्का के पापा ने तो घर ग्राने का वायदा किया था, लेकिन ग्राया नही—कोई बात खास हो गई होगी। अगर ग्रा जाना तो तुम उसके साथ जाकर ग्रपने ग्रीशा से मिल ग्राती। हमारे गाँव के लोग सामने ही तो मोर्चा बाँधे हुए है। जिन दिनो तुम बेहोश थी, मै एक दिन तडके नदी से पानी लेने गई तो उस पार से ग्रनीकुश्का की ग्रावाज मेरे कानो मे पडी। "सलाम, बूढी ग्रम्मा! पैन्तेली ने सलाम भेजा है तुम्हे।"

"लेकिन, ग्रीशा कहाँ है ?" नताल्या ने सावधानी बरतते हुए पूछा।

"वह तो पीछे है। पूरी फौज की कमान उसके हाथो मे है।" इलीनीचिना ने सहज-भाव से धीरज बँधाते हुए कहा।

"लेकिन वह कमान सम्हालता कहाँ से है ?"

"शायद व्येशेन्स्काया से। ग्रौर कही से यह काम मुमकिन नही है।"

नताल्या चुप हो गई। इलीनीचिना ने उसके चेहरे पर नज़र डाली ग्रौर उत्सुकता से पूछा—"लेकिन ग्राखिर बात क्या है ? तुम रो क्यो रही हो ?"

नताल्या ने जवाब नही दिया। ऐप्रन के सिरे से ग्रपना चेहरा ढँककर सिसकने लगी।

सास बोली—"रोग्रो मत, नताल्या बेटी, ग्राँसुग्रो से ग्रब कोई बात नही बनेगी। ईश्वर चाहेगा तो बाप-बेटे सही-सलामत घर ग्रायेंगे। तुम ग्रपनी फिक्र रखो। तुम बेकार ग्रहाते के बाहर न जाना, नही तो ईसा के दुश्मनो की नज़र तुम पर गड जाएगी।"

बावर्चीखाने मे ग्रँधेरा हो गया। सहसा ही खिडकी के बाहर कोई ग्रादमी दीख पडा। इलीनीचिना ने उधर देखा ग्रौर उसके मुँह से कराह निकल गई। "वही लोग है। लाल फौजी है। नताल्या बेटी, जल्दी से बिस्तर पर लेट जाग्रो ग्रौर बीमार बन जाग्रो····· तुम नही जानती कि कौन-सा गुनाह···लो इस बोरे से ग्रपने को ढंक लो।"

नताल्या डर से थरथराने लगी ग्रौर वह बिस्तर पर लेट भी न पाई थी कि दरवाज़ा खडका ग्रौर एक लम्बा-सा लाल फौजी झुककर बावर्चीखाने में घुसा। बच्चे इलीनीचिना की स्कर्ट से लिपट गए ग्रौर वह स्टोव के

पास खडे-ही-खड़े बेंच पर ढह पड़ी। इससे जलते हुए दूध की हडिया लुढक गई।

लाल फौजी ने बावर्चीखाने के चारो तरफ तेजी से निगाह दौडाई और जोर से बोला—"डरती क्यो हो ? मैं तुम्हे खा तो नही जाऊँगा। दो ब्रयेद्येन (गुड-डे)।"

नताल्या बीमार की तरह कराहने लगी और उसने बोरा अपने ऊपर खीच लिया। पर मीशात्का आगन्तुक को देखकर झुका और खुश होते हुए बोला—"दादी···इसी आदमी ने हमारा मुर्गा मारा था··· तुम्हे खयाल है ?"

फौजी ने अपनी खाकी टोपी उतारी, जीभ चटकारी और मुस्कराया—"बदमाश मुझे पहचानता है ! यानी उस मुर्गे तक की याद है इसे ? खैर, यह बतलाओ कि तुम हम लोगो के लिए थोडी-सी डबल रोटी तैयार कर दोगी ? आटा हमारे पास है।"

"हाँ · हाँ·· तैयार हो जाएगी···" इलीनीचिना ने लाल फौजी की निगाह बचाई और हकलाते हुए कहा। साथ ही बेंच पर फैला दूध पोछने लगी।

फौजी ने दरवाजे के पास बैठते हुए जेब से तम्बाकू की थैली निकाली और सिगरेट रोल करते हुए बातचीत करने की कोशिश की—'रात तक रोटी तैयार हो जाएगी ?"

"हाँ, अगर जल्दी मे हो तो तैयार हो जाएगी।"

"दादी, लडाई के जमाने मे तो हड़बडी रहती ही है। लेकिन तुम उस मुर्गे के लिए परेशान न हो।"

"मै परेशान नही हूँ।" इलीनीचिना ने घबराकर जवाब दिया—"लडका बेवकूफ है और जिन बातो को भूल जाना ही बेहतर है, उन्हें याद रखता है।"

"ठीक है···मगर तुम थोडे कजूस हो, बेटे ?" बातूनी मेहमान प्यार से मुस्कराया और मीशात्का की तरफ मुडा—"तुम मेरी तरफ भेडिये की तरह घूर क्यो रहे हो ? आओ, इधर आओ, हम लोग तुम्हारे मुर्गे के बारे मे जी भर बातें करेंगे।"

"जाओ, मेहमान के पास जाओ, गधे कही के।" इलीनीचिना ने पोते को अपने घुटनो से दूर ढकेलते हुए फुसफुसाकर कहा।

लेकिन मीशात्का ने अपनी दादी की स्कर्ट छोड दी और वहाँ से खिसकने के लिए दरवाजे की ओर बढा। लाल फौजी ने अपना लम्बा हाथ बढाकर उसे अपनी ओर खीचा और पूछा—"मुझसे नाराज हो तुम ?"

"नही।" मीशात्का ने धीरे से जवाब दिया।

"खैर, तो यह भी अच्छा ही है, खुशी एक मुर्गे पर निर्भर नही करती·· तुम्हारे पापा कहाँ है ?···दोन के पार है ?"

"हाँ।"

"यानी, हम लोगो से लड रहे है ?"

लाल सैनिक के स्नेह-भरे शब्दो से मीशात्का का दिल बढा और वह तुरन्त ही बोला—"सभी कज्जाको की कमान मेरे पापा के हाथो मे है।"

"बेपर की मारे जा रहा है रे।"

"तो दादी से पूछ देखो।"

पर अपने पोते के बातूनीपन से तग आकर बुढिया ने हाथ पीट लिये और उसके मुँह से एक कराह-सी निकल गई।

"सभी कज्ज़ाको की कमान उसके हाथो मे है ?" परेशान लाल फ़ौजी ने पूछा।

"हो सकता है कि सभी कज्जाकों की न भी हो।" अपनी दादी की परेशानी से भरी निगाह देखकर लडके ने घबराते हुए कहा।

लाल फौजी एक क्षण तक चुप रहा और फिर नताल्या पर नज़र डालते हुए बोला—"यानी, उसकी जवान बीवी है यह···बीमार है ?"

"इसे टाइफस हो गया है।" इलीनीचिना ने हिचकते हुए कहा।

इसी समय दो लाल सैनिक एक बोरा आटा लेकर आये और उन्होने बोरा बावर्चीखाने की ड्योढी पर रख दिया। उनमे से एक बोला—"स्टोव जलाओ अब·· हम शाम के पहले-पहले ही रोटियो के लिए आएँगे। मगर देखो, कायदे की रोटियाँ तैयार करना, वरना अच्छा न होगा।"

"जितनी अच्छी-से-अच्छी तैयार कर सकूँगी, कर दूँगी।" इलीनीचिना ने कहा। उसे इस बात से अकूत खुशी हुई कि नवागन्तुको ने खतरनाक

बातचीत का तार बीच मे ही तोड दिया और मीशात्का इस बीच कमरे से बाहर भाग गया ।

नताल्या की ओर देखकर गर्दन हिलाते हुए एक लाल फौजी ने पूछा—"टाइफस है ?"

"हाँ ।"

फिर दोनो ने आपस मे धीरे-धीरे कुछ बाते की और वे बावर्चीखाने से बाहर निकले । मगर, आखिरी लाल फौजी नुक्कड पर मुड भी न पाया कि दोन के पार से राइफले गोलियाँ बरसाने लगी ।

लाल सैनिक दोहरे हुए, दौडकर घेरे की आधी बरबाद पत्थर की दीवार के नीचे जा लेटे और अपनी राइफलो के खटके खडकाते हुए आग का जवाब आग से देने लगे ।

इलीनीचिना के हाथो के तोते उड गए और वह मीशात्का की खोज मे अहाते की तरफ दौडी । दीवार के पीछे से लाल सैनिको ने चिल्लाकर कहा, "ऐ दादी, सुनती हो, घर के अन्दर चली जाओ, नहीं तो मर जाओगी ।"

"वह लडका···मीशात्का अहाते मे है । मेरा दुलारा···।" बुढिया ने उसी तरह जवाब दिया और उसकी आवाज मे आँसू टूटने लगे ।

बुढिया दौडी-दौडी अहाते के बीचो-बीच पहुँची कि दोन-पार की राइफलो की गोलियाँ एकदम रुक गईं । साफ है कि कज्जाको ने उसे देखा और पहचान लिया । दूसरी ओर मीशात्का उसके पास दौड आया । फिर वह उसे घसीटती हुई बावर्चीखाने मे घुसी कि राइफलो के दहाने फिर आग उगलते लगे, और यह सिलसिला तब तक चालू रहा जब तक कि लाल सैनिक मेलेखोव-परिवार के अहाते से बाहर नही निकल गये ।

इलीनीचिना ने नताल्या से बहुत ही धीरे-धीरे बाते करते हुए आटा गूंधकर उठने को रख दिया । मगर हुआ कुछ ऐसा कि रोटियो की तैयारी की नौबत ही न आई ।

मशीनगनो वाली चौकियो के जो लाल फौजी गाँव मे थे वे दोपहर होते-होते हडबडाते हुए अहातो से बाहर निकले और अपनी मशीनगनें घसीटते हुए पहाडी के ढाल की ओरें बढ़े । पहाडी की खाइयो वाली

कम्पनी के पैर उखड गए और उसने हेतमान की बडी सडक की तरफ तेज़ी से मार्च कर दिया ।

दोन के किनारे के इलाको मे देखते-देखते पूरा सन्नाटा हो गया । तोपे और मशीनगने शान्त हो गईं । हर गाँव से सामान, गाडियाँ और बैटरियाँ उमडी और हेतमान की बडी सडक तक उनकी बेशुमार कतारे बँध गईं । वे सडको के किनारो और गर्मी के घास-मढे रास्तो पर छा गईं । पैदल सेना और घुडसवार फौजी पक्तियो मे मार्च करते दीखे ।

इलीनीचिना खिडकी से झाँककर देखने लगी । फिर जब आखिरी लाल फौजी भी गिरते-पडते, जैसे-तैसे पहाडी के खडिया वाले उभार पर चढ़ गया तो बुढिया ने पर्दे से अपना हाथ पोछा और भाव-विह्वल होकर क्रास बनाया—"नताल्या बेटी, उस आसमान वाले ने ऐसा किया कि सारी मुसीबत टल गई । लाल फौजी पीछे भाग रहे है ।"

"अरे, माँ, वे तो गाँव से सिर्फ अपनी खाइयो मे जा रहे हैं···शाम होते-होते फिर लौट आएँगे ।"

"अगर ऐसा है तो भाग क्यो रहे है ? अरे, वे भाग रहे है, क्योकि हमारे जवानो ने खदेड़ दिया है उन्हे । शैतान कही के, पीछे लौट रहे हैं । ईसा के दुश्मन भागे जा रहे है···।" इलीनीचिना खुशी से खिल उठी । लेकिन इसके बावजूद भी रोटी का आटा ठीक करने लगी ।

नताल्या निकलकर बरसाती मे आई, ड्योढी पर खडी हुई और आँखो पर हथेली रखकर, धूप से झुलसे उभारो वाली खड़िया की पहाडी पर दूर तक नजर दौडाने लगी । दोपहर का सूरज धरती को तपाता रहा । चरागाह-भर मे जगली मूसे सीटियाँ बजाते रहे और उनकी शान्त, दुख से भरी आवाज, स्काईलार्कों के सुख से नहाए, सम्हाल मे न आने वाले, गानो मे खोती रही । तोपो के आग बरसाने के बाद धरती पर उतरने वाला सन्नाटा नताल्या के हृदय को इतना प्रिय लगा कि वह बिना हिले-डुले खडी रही और लवा-पछियो के सरल-सहज गाने, कुएँ की लकडी की गरारी की चरमराहट और चिरायते की महक से बसी हवा की सरसराहट कान लगाकर सुनती रही ।

तीखी और महकदार रही पूर्वी स्तेपी के मैदान से आने वाली,

पंखोंवाली हवा। उसने धूप से तपी धरती की गर्म साँसे और घास की धूप मे झूलती पत्तियो की उन्माद से भरी उसासें अपनी साँसो मे पिरोईं। लेकिन, इस सबके बावजूद वर्षा दरवाजे पर दस्तक देती लगी। नदी की ओर से एक ताजा नमी उमडती लगी। अबाबीलें अपनी दोहरी नोको वाली दुमो से धरती को लगभग छू छूकर उडने लगी, और गहरे-नीले आसमान मे दूर कही एक बाज आनेवाले तूफान से डरकर तेजी से उडता दीखा।

नताल्या अहाते के बीच से गुज़री। पत्थर की दीवार के पास की कुचली हुई घास पर कारतूस के केसो का सुनहरा अम्बार लगा रहा। घर की खिडकियाँ और चूने से पुती दीवारे मशीनगनो की गोलियों के सुराखो के मुंह फैलाकर जम्हाइयाँ लेती रही। नताल्या को देखकर एक चूजा कीकता हुआ खत्ती की छत पर उड गया। एक अकेला वही तो बाकी बचा था।

लेकिन सन्नाटा बहुत देर तक न रहा। हवा गाँव के घरों की खुली खिडकियो को खडखडाने और वीरान घरो के दरवाज़ो को भडभड़ाने लगी, ओलो से भरे एक दूधिया बादल ने सूरज को ढँक लिया और हवा के कधो पर सवार होकर पश्चिम की ओर बढने लगा।

नताल्या अपने बालो को हवा के झोको से बचाते हुए गर्मी के बावर्चीखाने तक गई और फिर मुडकर पहाडी की तरफ देखने लगी। बकाइनी धुएँ मे लिपटे क्षितिज मे फौजी, घोडो या दो पहियो वाली फौजी गाडियो पर सवार उन्हे दौडाते नजर आये।

'तो यह बात ठीक है कि लाल फौजी पीछे भाग रहे हैं।' उसने मन-ही-मन कहा और सन्तोष की साँस ली।

फिर वह घर मे घुस भी न पाई कि पहाडी के पार कही दूर तोपें गरजने लगी और, जैसे कि उनके जवाब मे, व्येशेन्स्काया के दो गिरजों के घण्टो की घनघन नदी की लहरो पर आरपार लहराने लगी।

दूरवर्ती किनारे पर भीड-की-भीड लोग बजरे साधते या घसीटते हुए जगलो से बाहर निकले और नदी की ओर बढे। उन्होने बजरे पानी मे उतारे और फिर अगले हिस्सो पर खडे होकर पूरी ताकत से डाँड़

चलाने लगे। इस तरह कोई तीन दर्जन बजरे एक-दूसरे का पीछा करते हुए गाँव की तरफ बढे।

"नताल्या, रानी·· मेरी दुलारी···हमारे कज्ज़ाक अपने गाँव-घर वापस आ रहे है। इलीनीचिना ने बावर्चीखाने से दौडकर बाहर आते हुए चिल्लाकर कहा और उसकी आँखो से आँसू बहने लगे।

नताल्या ने लपककर मीशात्का को हाथो मे उठाया। उसकी आँखें खुशी से चमकने लगी लेकिन वह हाँफने लगी। और इसके साथ ही उसकी आवाज़ टूटने लगी—"मुन्ने, देख तो तेरी आँखे तेज़ है···देख तो, हो सकता है कि तेरे पापा इन कज्जाको मे हो। दिखलाई पडते है? पहले बजरे मे वही है क्या? उफ, लेकिन तू तो कही और देख रहा है···"

सास-बहू भागी-भागी किनारे गईं। पैन्तेली एक बजरे से उतरा तो हड्डी-हड्डी लगा। बूढे ने सबसे पहले बैलो, फार्म की चीजो और अनाज की सलामती के बारे मे पूछताछ की, और उसकी पलको मे एक आँसू उलझ गया। फिर, उसने बच्चो को सीने से लगाया। लेकिन जल्दी-जल्दी भचकते हुए वह अपने अहाते मे पहुँचा तो उसका चेहरा पीला पड गया। वह घुटनो के बल बैठा, हाथ फैला-फैलाकर क्रॉस बनाने लगा और पूर्व की ओर मुँह कर नमन करने लगा। फिर धूप से तपती धरती से उसने बहुत देर तक सफेद बालो से भरा सिर ऊपर नही उठाया।

: ५ :

१० जून को, जनरल सेक्रेतेव की कमान मे तीन हजार फौजियो, छ घोडागाडियो वाली तोपो और अट्ठारह मशीनगनो के, दोन सेना के घुडसवार-दलों ने पूरे ज़ोर-शोर से हमला बोला और उस्त-बेलोकालित्वेस्काया के ज़िला-केन्द्र के पास का मोर्चा तोड दिया। इसके बाद सेना रेलवे लाइन के किनारे-किनारे कजान्स्काया के ज़िला-केन्द्र की ओर बढी।

तीसरे दिन सवेरे-तडके नवी दोन-रेजीमेट के अफसरो की जासूसी गश्ती ने दोन के पास की बागी फौजी चौकी से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया। इस सिलसिले मे ये लोग पास पहुँचे तो इन

घुडसवार फौजियो को देखते ही चौकी के कज्जाक जान छोडकर नालों की तरफ भागे। लेकिन गश्ती टुकडी के कज्ज़ाक कैप्टन ने विद्रोहियो को लिबास से पहचाना, अपनी तलवार से बँधा रूमाल हिलाया और बजती हुई आवाज़ मे चिल्लाकर कहा—"हम तुम्हारे ही साथी है···भागो मत कज्जाको !"

फिर अपने बचाव की चिन्ता किये बिना, यह टुकड़ी नालो के किनारो पर पहुँची, तो विद्रोही चौकी का बूढा सफेद बालो वाला सार्जेन्ट कमाडर, ओस से भीगे बरानकोट के बटन लगाता, सबसे पहले सामने आया। आठ के-आठो अफसर घोडो से उतरे। इनका कैप्टन, फ़ौजी कलगी वाली अपनी टोपी उतारता हुआ सार्जेन्ट की ओर बढा, मुस्कराया और बोला—"सलाम कज्जाको, आओ, अपने पुराने कज्ज़ाक रिवाज के मुताबिक हम एक-दूसरे को चूमे।" उसने सार्जेन्ट के दोनों गाल चूमे, रूमाल से होठ और मूँछें पोछी और अपने साथियो की निगाहे अपने ऊपर गडी देखकर, अर्थभरी मुस्कान के साथ प्रश्न किया—"तो, तुम्हे होश आ गया ? तुम्हारे अपने साथी आखिरकार बोलशेविको से बेहतर साबित हुए कि नही ?"

"आप ठीक कहते है, सरकार ! हमने अपना गुनाह धो दिया है। हम पिछले तीन महीने से लडते और आपसे मिलने को बेताब रहे है।"

"अच्छा ही हुआ कि तुमने अक्ल से काम ले लिया, हालांकि देर से लिया। खैर, ये सारी गुजरी बातें हैं। हम बीते कल को बीता कल माने लेते है।······हाँ, तो किस ज़िले के हो तुम ?"

"कजान्स्काया का हूँ सरकार !"

"तुम्हारी टुकड़ी नदी के उस पार है ?"

"जी हाँ।"

"दोन से लाल फौजी किस तरफ गये ?"

"शायद दोनेत्स की बस्ती की तरफ।"

"तुम्हारी घुडसवार टुकड़ी ने अभी नदी पार नही की ?"

"बिल्कुल नही।"

"क्यो नही ?"

"मुझे पता नही, सरकार ! सबसे पहले हम लोगो को इस पार भेजा गया है।"

"लाल फौजो की कुछ भी तोपें है यहाँ ?"

"दो बैटरियाँ हैं।"

"वे पीछे किस वक्त हटी ?"

"रात के वक्त।"

"उनका पीछा करना चाहिये था···उफ···तुमने मौका खो दिया !" कैप्टन ने भर्त्सना के स्वर मे कहा, और अपने घोडे के पास जाकर, थैले से पत्र लिखने का पैड और नक्शा निकाला।

सार्जेन्ट अटेंशन की स्थिति मे खडा रहा और उसके दो कदम पीछे खडे कज्जाक, प्रसन्नता और हलकी-हलकी-सी उत्सुकता की मिली-जुली भावनाओ के साथ अफसरो, घोडो की काठियो और शानदार नस्ल के उन घोडो को गौर से देखते रहे। साफ-सुथरी फिटिंग और कधे के झब्बो वाली अग्रेज़ी ट्यूनिको और चौडी बिरजिसो से लैस अफसर कभी इस पैर पर बल देकर खडे होते तो कभी उस पैर पर ज़ोर देकर। बीच-बीच मे वे अपने घोडो के चारो ओर चचल दृष्टि से देखते और कभी कनखी से कज्जाकों पर निगाह डालते।

उनमे से एक के भी कधो पर वैसा झब्बा न था, जैसा १९१८ के पतझर मे हर अधिकारी के कधो पर नज़र आता था। उनके बूट, घोडो की काठियाँ, कारतूस-पेटियाँ, दूरबीनें और काठियो के सहारे लटकी राइफलें वगैरा तमाम चीजे नई थी। उनमे मे सिर्फ एक देखने-सुनने मे सबसे बडी उम्र के अफसर के बदन पर शानदार नीले कपडे का सरकैशियन-कोट, सिर पर बोखारान-कराकुल की गोल, कुबान टोपी और पैरो मे बिना एडी के पर्वतारोहियो वाले जूते थे।

सबसे पहले वही अफसर हलके-हलके कदमो से कज्जाको की तरफ़ बढा। उसने अपने केस से बेलजियम के सम्राट् अलबेर्त की तस्वीर वाला सिगरेटो का पैकेट निकाला और अपनी तरफ से बोला—"सिगरेट पियो, भाइयो !"

कज्जाको ने बहुत ललचाकर हाथ बढाये। दूसरे अफसरो ने भी सिगरेटे ली।

"कहो, बोलशेविको के निजाम मे जिन्दगी कैसी लगी ?" बड़े सिर और चौडे कधोवाले एक घुडसवार अफसर ने पूछा।

"सब कुछ मीठा-ही-मीठा नही कह सकते।" किसानो का पुराना कोट पहने एक कज्जाक ने कहा। वह सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश लेता और अफसर की मज़बूत पिडलियो से कसे लम्बे गैटरो पर नज़र जमाये रहा।

कज्जाक के टूटे हुए सैंडिलो का हिस्सा-हिस्सा जवाब दे रहा था। सफेद, कायदे से रफू किये हुए मौजे पतलून के पायचो मे खोसे हुए थे और तार-तार थे। यही कारण है कि अफसर के अग्रेज़ी बूटो ने उस पर जादू-सा कर दिया था और वह उन पर से नजर हटा नही पा रहा था। बूटो के तल्ले मोटे और मज़बूत थे और पीले बक्सुए चमाचम चमक रहे थे।

इसीलिए कज्जाक का अपने ऊपर वश न रहा और उसने सीधे-सादे ढग से तारीफ करते हुए कहा, "लेकिन आपके बूट बहुत अच्छे है।"

पर फौजी अफसर मित्रता और घनिष्ठता से बचा और मज़ाक और चुनौती से भरी आवाज़ मे बोला—"तुम तो अपनी चीज़े मास्को मे गँठे सैंडिलो से बदलने जा रहे थे। तो अब तुम्हे दूसरो से डाह क्यो करनी चाहिये ?"

"हमने गलती की······हम गलत रास्ते पर बह गए·· ···" कज्जाक ने कहा और समर्थन की आशा से दूसरे कज्जाको की ओर घूमकर देखा।

कज्जाक ने अपना भाषण चालू रखा—"तुमने यह साबित किया कि तुम्हे दिमाग बैलो का मिला है। बैल बिल्कुल यही करता है। पहले मुड़ जाता है और पीछे ठिठककर सोचता है—'गलती की!'—लेकिन पतझड मे जब मोर्चा दुश्मनो के लिए खाली छोड दिया था, तब आखिर तुमने सोचा क्या था ? तुम कमीसार बनने के सपने देख रहे थे ! तुम्हारा जवाब नही ! क्या शानदार बचाने वाले हो तुम अपने मुल्क के !"

"छोडो भी · · · बहुत हुआ !" देखने सुनने मे जवान, एक कम्पनी कमाडर ने बौखलाते अफसर के कानो मे धीरे से कहा। अफसर ने सिगरेट का सिरा ज़मीन पर फेककर उसे पैर से कुचला और घोडो की तरफ बढा।

कैप्टन ने उसे एक पत्र दिया और फुसफुसाकर कुछ कहा। भारी-भरकम अफ़सर उछलकर अपने घोड़े पर सवार हुआ और पश्चिम की तरफ उड चला।

कज्जाक अजब ढग से गुमसुम बने रहे। कैप्टन उनके पास आया और खुशी से खनकती आवाज़ मे पूछने लगा—"वारवारिस्की गाँव यहाँ से कितनी दूर है ?'

"यहाँ से पैतीस वर्स्ट दूर है।" कई कज्ज़ाक एक साथ बोल उठे।

"ठीक···तो, अब, कज्जाको, तुम लोग जाओ और अपने कमांडर को खबर दे दो कि घुड़सवार फौजे, एक लमहा भी खोए बिना, नदी पारकर इसी तरफ आ रही है। हमारा एक अफसर तुम्हारे साथ जायेगा और घुडसवारो को रास्ता दिखलायेगा। पैदल फौज कज़ान्स्काया की तरफ मार्च कर सकती है। समझे ? ······बस, तो हमारी अपनी ज़बान मे ·· राइट एबाउट टर्न···क्विक मार्च !'

कज्जाको की भीड पहाडी से नीचे उतरी और कोई दो सौ कदम तक लोग इस तरह मुँह सिये रहे, जैसे कि इसके लिए कौल हार चुके हो। लेकिन, इसके बाद, जिस किसान के कोटवाले कज्ज़ाक को गुस्सावर अफसर ने लेक्चर पिलाया था, उसने अपना सिर हिलाया और आह भरते हुए, दर्द से बोला—"यानी, हम फिर एक हो गए, भाइयो··· 'दूसरे कज्ज़ाक ने तडाक से जबाब दिया—"हॉर्स-रैडिश जड, मामूली मूली से कोई ज्यादा मीठी तो होती नही।"

: ६ :

लाल सेनाओ के पीछे हटने की खबर व्येशेन्स्काया पहुँची नही कि मेलेखोव के साथ दो घुडसवार रेजीमेटो ने अपने घोड़े दोन के पार

तैरा दिए, ज़ोरदार गश्ती टुकडियाँ भेजी और खुद दक्षिण का रास्ता लिया।

दोन के किनारे के पार लडाई चलती रही और तोपो की गरज भी सुनाई पडती रही जैसे कि जमीन के नीचे से आ रही हो।

"कैडेट अपने गोले बेकार कभी नही करते। वे बाँध गिरा रहे हैं।" एक कमाडर ने, ग्रिगोरी की तरफ अपना घोडा बढाकर तारीफ-सी करते हुए कहा।

ग्रिगोरी शात रहा और सावधानी से चारो ओर नजर दौडाते हुए, पक्ति के आगे-आगे बढता गया। दोन से बाजकी गाँव तक का तीन वर्स्ट का फासला, विद्रोहियो द्वारा छोड दी गई, हजारो गाडियो से पटा हुआ था। जगल मे जहाँ-तहाँ टूटे बक्से, कुर्सियाँ, कपड़े, काठियाँ, बरतन, सिलाई की मशीने, अनाज के बोरे और तमाम दूसरी चीजे बिखरी पडी थी। दोन की ओर पीछे भागते समय लोग ये तमाम घरेलू चीजे अपने साथ यहाँ तक लाद लाए थे।······सडक पर कई जगह सुनहरे गेहूँ का घुटनो-घुटनो गहरा अम्बार था। जहाँ-तहाँ बैलो और घोडो की फूली हुई लाशे सड रही थी और बुरी तरह सडायध फैला रही थी।·····

"इस तरह फिक्र की है लोगो ने अपनी चीजो की!" ग्रिगोरी ने दर्द से कहा। उसे सारे दृश्य से धक्का-सा लगा। उसने सिर से टोपी उतारी, साँस रोकी और सावधानी से अनाज के गधाते टीले का चक्कर लगाया। टीले पर एक बूढे की लाश नजर आई। बूढे के सिर पर कज्ज़ाक टोपी थी। उसका कोट खून से तर था और फैला हुआ था।

"बहुत देर तक अपने माल की रखवाली करता रहा। बूढा! उन शैतानो ने ही इसे यहाँ इस हालत मे छोड दिया होगा!" एक कज्ज़ाक ने हमदर्दी से कहा।

"अपने गेहूँ को छोडकर जाना नही चाहता होगा······"

"अरे बाबा, आगे बढो न! बुड्ढा जाने किस तरह बू करता है।··· ऐ, आगे बढाओ घोडे!" पीछे की कतार से क्रोध-भरी आवाजे आई।

स्क्वैड्रन के फौजी अपने घोडे दुलकी दौडा चले। बातचीत खत्म हो

गई। जगल मे गूँजती रही सिर्फ घोड़ों की टापो की आवाजें और कज्ज़ाक फौजी सामान की धीमी खनखनाहटें।···

लिस्तनित्स्की की जागीर के पास ही लडाई चलती रही। लाल सैनिको की पक्तियाँ, एक-दूसरे से सटी, एक सूखी घाटी के किनारे-किनारे यागोदनोये की एक बाजू की तरफ भागी चली जाती रही। तोपो के गोले लाल सैनिक के सिरो पर आ-आकर फूटते रहे, मशीनगनें उनकी पीठो पर गोलियाँ बरसाती रही, और रेजीमेट के लोग उन्हे बीच मे ही रोक लेने के लिए पहाडी पर उमडते रहे।···

ग्रिगोरी अपनी रेजीमेटो के साथ तब पहुँचा जब लडाई खत्म हो गई।

लाल सेना की चौदहवी डिविजन की तार-तार फौजों और माल-गाडियो की दो कम्पनियाँ काल्मीक-रेजीमेट द्वारा पूरी तरह नेस्तनाबूद मिली।

घाटी की ऊपर की चोटी पर ग्रिगोरी ने कमान येरमाकोव को सौपते हुए कहा—"यहाँ इन लोगो ने हमारे बिना ही अपना काम चला लिया। तुम जाओ और उन लोगो से अपना तार जोडो। मैं थोड़ी देर के लिए उस जागीर मे जाना चाहता हूँ।"

"किस लिए ?" येरमाकोव ने अचरज से पूछा।

"वजह एक बार मे ही बतला देना मुश्किल है। बात यह है कि जब मैं छोटा था तो मैं वहाँ काम करता रहा था और इस वक्त वहाँ की पुरानी जगहे मुझे अपनी तरफ खीच रही हैं·········।"

ग्रिगोरी, प्रोखोर को आवाज देकर यागोदनोये की तरफ मुडा। फिर, उन दोनो ने आधे वर्स्ट की दूरी तय की कि ग्रिगोरी मुडा। उसे स्क्वैड्रनो के आगे एक सफेद चद्दर-सी हवा मे फड़फडाती नजर आई। यह चादर कोई कज्ज़ाक कुछ सोच-समझकर अपने साथ ले आया था।···

'लगता है कि वे लोग हथियार डाल रहे है।' ग्रिगोरी ने उत्सुकता से भरकर सोचा। प्रतीत हुआ कि फ़ौजियो की क़तार धीरे-धीरे जैसे कि बेमन से, घाटी मे उतरी और सेक्रेतेव के घुड़सवार-

सैनिको की ओर बढी। ये फौजी उन लाल सैनिको से मिलने के लिए चरागाह के पार ठीक सीध मे घोडो को दुलकी दौडाते दीखे।

······ग्रिगोरी गिरे हुए फाटक के बीच से अपना घोडा अहाते मे लाया तो उदासी और लापरवाही से भरी हवा ने उसका स्वागत किया। अहाते मे कलहसो के पैरो की बाढ-सी मिली। यागोदनोये पहचान मे न आया। हर कोना अकूत लापरवाही और बरबादी की कहानी कहने लगा। कभी की शानदार हवेली इस समय काली और अपनी नीव मे ही धँसती-सी लगी।···लम्बी बदरग छत पर जहाँ-तहाँ जग के पीले धब्बे थे। नाली के टूटे पाइप, ओरियो के सहारे लटक रहे थे। झिलमिलियाँ टेढी-मेढी थी, झूल रही थी और कब्जो से आधी अलग थी। हवा चूर-चूर खिडकियो के बीच से सर्राटे भर रही थी, और गन्दे कमरो से उमडती खट्टी-खट्टी बास कह रही थी कि हमे वीरान हुए एक जमाना हुआ।

बरसाती-सहित, घर का पूर्वी कोना, तीन इची तोप के एक गोले से ढह गया था। मेपल पेड का सिरा गोले से कटकर, बरामदे की टूटी हुई वेनेशियन खिडकी मे धँस गया था। खुद पेड गिर गया था और उसका तना नीव से उखडकर गिरी ईंटो के अम्बार मे दबा पड़ा था। सूखी शाखो के किनारे-किनारे जगली हॉप-लता रेग और दोहर रही थी। मजाक की बात है कि लता, खिडकियो के बचे-खुचे साबित शीशो के ऊपर छितरकर बारजे तक पहुँच गई थी।

वक्त और मौसम ने अपना काम अपने ढग से किया था। अहाते की इमारते चौपट हो गई थी। लगता था कि इन्सान के हाथो ने सालो-साल उन्हे छुआ नही है। अस्तबल की पत्थर की दीवार गिर गई थी और बहार की बरसात उसे बहा ले गई थी। गाडीखाने की छत तूफान उडा ले गया था। सफेद पड गई धरनो और धन्नियो पर मुट्ठी भर फूस यहाँ बच रहा तो मुट्ठी-भर फूस वहाँ। वह फूस भी सड़ गया था।

तीन (रूसी शिकारी कुत्ते) बोरज़ोइस नौकरो के क्वार्टरो की सीढ़ियो पर पडे हुए थे और पूरी तरह जगली हो गए थे। सो, इन्सानो

को देखते ही वे उछलकर खडे हो गए और भयानक ढग से भूँकते हुए बरसाती मे गायब हो गए। ग्रिगोरी नौकरो के क्वार्टरो की चौपट खुली पडी खिडकी के पास अपना घोडा लाया, काठी पर ज़ोर देते हुए झुका और ज़ोर से चिल्लाकर बोला—"कोई ज़िन्दा भी बचा है यहाँ ?"

बहुत देर तक सन्नाटा रहा। आखिरकार एक औरत थमी-बँधी आवाज मे बोली—"रुको···ईसा के नाम पर रुको। अभी आई !"

लुकेर्या नगे पैरो गिरती-पडती आई और धूप बचाने के लिए आँखो पर हथेलियाँ रखकर ग्रिगोरी को एकटक देखने लगी।

ग्रिगोरी ने घोडे से उतरते हुए पूछा "लुकेर्या चाची, तुमने मुझे पहचाना ?"

इस पर लुकेर्या के चेचक के दागो से भरे चेहरे पर एक कँप-कँपी-सी दौड गई और उदासी से भरी तटस्थता की जगह भावो की भयानक बाढ ने ले ली। वह फूट पडी और काफी देर तक उसके मुँह से बोल न फूटा। ग्रिगोरी ने घोडा बाँधा और उसके चुप होने का इन्तजार करने लगा।

"कैसे-कैसे दिन देखे है मैंने ! ईश्वर न करे कि इतनी मुसीबत अब दुबारा कभी सहनी पडे मुझे।" किरमिच के गदे ऐप्रन से अपने गाल रगड़ते हुए लुकेर्या दर्द-भरी आवाज़ मे बोली—"मै तो समझी कि वे लोग फिर आ गए !···उफ···ग्रीशा···क्या-क्या नही हुआ है यहाँ ! तुम्हे बताऊँ तो तुम्हे यकीन न आए !···एक अकेली मैं ही बची हूँ।···"

"क्यो, बाबा शाश्का कहाँ है ? मालिको के साथ क्या वे भी भाग गये ?"

"अगर भाग जाते तो आज जीते-जागते न होते···"

"तो, क्या मर गए वे ?"

"नही, लोगो ने उन्हे मार डाला। पिछले तीन दिनो से तहखाने मे पडे हैं···उन्हें दफनाया जाना चाहिए था, मगर मैं बीमार पड गई··· मुझसे तो तुम्हारी आवाज़ पर भी मुश्किल से ही उठा गया···और अब ग्रीश्का की लाश के पास जाने मे मेरा दिल काँपता है···"

"लेकिन, मार क्यो डाला लोगो ने ?" ग्रिगोरी ने ज़मीन पर

नज़र गडाए-ही-गडाए पूछा ।

"सारी मुसीबत एक घोडी को लेकर खडी हुई···घर के मालिक तो सिर पर पाँव रखकर भागे । सिर्फ नकद रकम साथ ले गए । बाकी सारा कुछ मेरे पास छोड गए ।" लुकेर्या आवाज़ धीमी कर फुसफुसाने लगी—'मैंने सभी कुछ सम्हालकर रखा । छोटी से-छोटी चीज सहेजकर रखी । अब तक ज़मीन के नीचे गढी हुई है ।···और घोडो मे वे सिर्फ तीन ओरलोव-स्टैलियन ले गये । बाकी बाबा-साश्का के पास छोड गये । फिर जब झगडा शुरू हुआ तो घोडे कज्ज़ाक भी ले गये और लाल-फौजी भी । तुम्हे उस 'अखड' नाम के काले स्टैलियन का खयाल होगा···उसे लाल फौजी बहार के दिनो मे ले गए । ले तो गये, मगर उस पर काठी कसने मे उन्हे बडी परेशानी का सामना करना पडा । तुम तो जानते हो कि सवारी के लिए उसे निकाला तो गया नही था । सो, वह उनके काबू मे कभी नही आया । एक हफ्ते बाद कारगिन्स्काया के कुछ कज्जाक आये तो उन्होने एक दूसरा किस्सा सुनाया । हुआ यह कि पहाडी पर इन कज्ज़ाको की मुठभेड एकाएक लाल फौजियो से हो गई, और वे उन पर गोलियाँ बरसाने लगे । पर, इनके पास एक बेवकूफ घोडी थी । वह घोडी ऐन इसी वक्त जो हिनहिनाई तो 'अघड' स्टैलियन जगल की आग की तरह उसकी तरफ ताबडतोड इस तरह भागा कि सवार के सम्हाले न सम्हला । उसने सारी हालत समझी और पूरी रफ्तार से दौडते घोडे की पीठ से कूदने की कोशिश की । पर इस कोशिश मे पैर रकाब मे फँस गया और 'अघड' ने उस फौजी को ले जाकर ऐन कज्जाको के हाथो सौंप दिया ।"

'शाबाश !" प्रोखोर ने जोश मे आते हुए कहा ।

"अब कारगिन्स्काया का एक घुडसवार अफसर उस पर सवारी करता है ।" लुकेर्या ने अपनी दास्तान जारी रखी—"उस अफसर ने वायदा किया है कि मालिक के लौटते ही वह आकर 'अखड़' को अस्तबल में बाँध जाएगा । इस तरह सभी घोडे चले गये । बच रही दुलकी-चाल वाली घोडी—'तीर' और, बस ! जहाँ तक 'तीर' की

बात है, वह थी गाभिन, इसलिए किसी ने उसे छुआ नही। सो, उसके बछेडा अभी कुछ दिन पहले हुआ। और, तुम यकीन नही करोगे कि बछेडा हुआ तो साश्का ने उसकी जी-जान से फिक्र की। वह उसे गोद मे लिये फिरा। उसने उसे दूध पिलाया और पैर की मजबूती के लिए किसी जडी का काढा तक दिया। मगर, फिर हमारे सिर पर मुसीबत का पहाड टूट पडा। अभी तीन दिन पहले साश्का बगिया मे घास काट रहा था कि तीसरे पहर के बाद तीन घुडसवार आये और चीखते हुए बोले—'इधर आ बे · तू यह ··तू वह !' इस पर साश्का ने हंसिया नीचे रखा और उनके पास जाकर उनसे दुआसलाम की। लेकिन, उन लोगो ने आँख उठाकर उसे नही देखा। सिर्फ दूध पिया और पूछा—'घोडे है तुम्हारे यहाँ ?' साश्का बोला—'सिर्फ एक जानवर है। वह भी घोडी है। अभी-अभी बच्चा हुआ है।' आपके फौजी काम की नही है। इस पर उनमे से सबसे खूखार आदमी चिल्ला उठा—'इस बात से तेरा कोई मतलब नही। फौरन घोडी ला सामने · बूढा शैतान कही का ! मेरी घोडी की पीठ छिल गई है। मुझे उसको बदलना है !' ऐसी वैसी बात होती तो साश्का मान जाता और घोडी के मामले मे अडता नही, मगर तुम तो जानते हो कि बूढा अपने-आपमे कैसा अजीब आदमी था· कभी-कभी तो मालिक तक उसकी जबान पर लगाम लगाने मे हार जाते थे · तुम्हे खयाल होगा !"

"तो घोडी साश्का ने दी नही ?" प्रोखोर ने बीच मे ही पूछ लिया।

"क्यो, वह न देता तो और करता क्या ? मगर देने के पहले बोला, 'तुम्हारे पहले भी जाने कितने घुडसवार हमारे यहाँ घोड़े लेने को आये, लेकिन सभी ने इस एक घोडी पर रहम किया। और, अगर सबने रहम किया तो एक अकेले तुम्ही क्यो नही करोगे ?' · यह सुनते ही वे लोग आने से बाहर होकर चीखने लगे—'थूक चाटने वाला · हरामखोर · तू वह घोडी अपने मालिक के लिए रख छोडना चाहता है !' और उन्होने उसे घसीटकर एक तरफ कर दिया ··

फिर उनमे से एक घोड़ी बाहर लाकर उस पर काठी कसने लगा तो बछेड़ा माँ के थन से आ लगा। साश्का बोला—'रहम करो, इस घोडी को मत ले जाओ। अगर इसकी माँ चली जायेगी तो यह बछेड़ा बेचारा कहाँ जायेगा ?'··· 'मैं बतलाता हूँ कि बेचारा बछेड़ा कहाँ जाएगा ?'···एक दूसरे घुडसवार ने कहा, बछेडे को माँ से दूर खदेडा, कधे से राइफल उतारी और गोली मार दी। मेरे आँसू बह चले···मैं दौडकर उन लोगो के पास गई। मैने उन्हे बहुत मनाया और साश्का को मुसीबत से उबारने की कोशिश की। लेकिन उसकी तो बछेडे पर निगाह पडते ही दाढी हिलने लगी। बिल्कुल सफेद पड गया और बोला—'अगर ऐसा है तो, कुतिया के बच्चे, तू मुझे भी गोली मार दे।' साश्का दौडकर उनसे जा लिपटा और उसने उनका घोडी कसना हराम कर दिया। जवाब मे घुडसवारो को गुस्सा आया तो उन्होने उसे, ठौर-की-ठौर गोली से उडा दिया।···और, अब मेरी समझ मे नही आता कि करूँ तो उसका करूँ क्या ? उसके लिए एक ताबूत चाहिए, और ताबूत मुहय्या करना औरत का काम तो है नही।"

"दो फावडे और थोडी-सी किरमिच ला दो।" ग्रिगोरी बोला।

प्रोखोर ने पूछा—"तुम उसे दफन करना चाहते हो क्या ?"

"हाँ।"

"बहुत अच्छी बात है कि यह जिम्मेदारी तुम खुद ले रहे हो, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच ! मैं फौरन ही जाकर थोडे-से कज्जाको को बुला लाऊँ। वे ताबूत बना देंगे और उसके लिए कायदे की कब्र खोद देंगे।"

साफ है कि प्रोखोर ने किसी अनजाने बूढे के दफनाए जाने की परेशानी मोल लेना ठीक न समझा। लेकिन ग्रिगोरी ने उसकी बातें टाल दी और अपनी जिद पर अडा रहा। बोला—"हम कब्र खोदकर उसे खुद दफनाएँगे। बूढा साश्का अच्छा और नेक आदमी था। तुम बगिया मे जाओ और झील के किनारे मेरा इन्तजार करो। मैं जरा जाकर एक निगाह साश्का को देख लूँ।"

और, ज़मीन पर छितरी जडो वाले जिस देवदारु के नीचे साश्का ने कभी अकसीनिया और ग्रिगोरी की नन्ही-मुन्नी बच्ची को दफन किया था, वही आज स्वय उसकी चिर-निद्रा का सरजाम होने लगा ।

कज्जाको ने उसके शरीर को, खमीर उठाने के सिलसिले मे काम आने वाली साफ चद्दर मे लपेटकर कब्र मे लिटाया और गढे को मिट्टी से पाटा । इस तरह उस नन्ही कली की समाधि की बगल मे कब्र का एक दूसरा ढूह उठ गया । कज्जाको ने बूटो से पिटाई कर दी तो ऊपर की ताज़ी, नरम मिट्टी अपने ढग से चमकने लगी ।

ग्रिगोरी को जाने कितनी बीती बातें एक साथ याद आ गई । वह नन्ही समाधि के पास ही घास पर लेट गया और ऊपर के नीले आसमान के पसारे को देर तक एकटक देखता रहा । हवाएँ अनन्त-आकाश मे ऊँचाई पर चहलकदमी करती रही और शीतल घन धूप की चमचमाती किरणो पर उतराने लगे । मगर हसोड-शराबी सईस को हज़्म कर जाने वाली धरती पर ज़िन्दगी उसी जोर-शोर से चालू रही । बगिया के सिरे तक लहलहाती हरियाली की बाढ और कदीमी खलिहानो की बाडो के चारो ओर लिपटे पटुए के उलझावो मे अभिव्यक्त स्तेपी की नब्ज़ ग्रिगोरी के कानो मे बजने लगी । सूर्यास्त के रगो की छूट के बीच अबाबीलें कूकती, जगली मूसे सीटियाँ बजाते, बडी मधुमक्खियाँ भनभनाती, हवा की बाँहो मे कसी घास सरसराती और स्काईलार्क गाती रही । इनके साथ ही दूर घाटी की गहराई से कोई राइफल बराबर क्रोध से उमडती रही, जैसे कि इस बात पर मुहर मार रही हो कि कुदरत शानदार है मगर इन्सान उससे कही ज्यादा शानदार है ।

: ७ :

जनरल सेक्रेतोव, कज्जाको की एक व्यक्तिगत टुकडी के साथ व्येशेन्स्काया आया तो लोगो ने रोटी और नमक लेकर उसकी राह मे पलकें बिछाई और गिरजो के घटो ने उसका स्वागत किया । दोनों गिरजो के घटे सारे दिन यो टन-टन करते रहे, जैसे कि ईस्टर हो । निचली दोन के कज्जाक, मजबूत, लेकिन थकान से चूर घोडो पर

सवार सडको से गुजरे। चुनौती देते-से नीले झब्बे उनके कन्धो पर चमके। बाद मे जनरल व्यापारी के जिस मकान मे ठहरा, उसके पास ही चौक मे अर्दलियो की भीड लगी रही। वे सूरजमुखी के बीज कुटकुटाते, उधर से निकलती, इतवार की अच्छी-से-अच्छी पोशाको से सजी-बजी गाँव की लडकियो से छेड-छेडकर बाते करते रहे।

दोपहर के समय तीन घुडसवार कालमीक पन्द्रह बन्दी लाल सैनिको को लेकर हैडक्वार्टर्स आये। उनके पीछे बाजो से भरी एक, दो घोडो वाली गाडी आई। लाल फौजियो की वर्दी अजीब और गैरमामूली लगी। उनके भूरे पतलून चौडी मोहरी के थे और उनकी ट्यूनिको की आस्तीनो पर लाल पट्टियाँ थी।

सो, तीन मे से एक कालमीक, फाटक के पास निकम्मे खडे अर्दलियो के पास आया, घोडे से उतरा और अपना, चिकनी मिट्टी का पाइप जेब मे डालते हुए बोला—"हम लाल फौजियो के बैंड वालो को पकडकर लाए है। समझे ?"

"तो, हम क्या करे ?" एक मोटे चेहरे वाले अर्दली ने, सूरजमुखी के बीजो के छिलके कालमीक के गर्द से भरे बूटो पर थूकते हुए पूछा।

"करो यह कि इन्हे अन्दर ले जाओ। तुम्हारा मोटे चेहरे वाला मुँह खुलता है तो उससे बेवकूफी बरसती है।"

"चल चल · बहुत हुआ···भेड की दुम कही का !" अर्दली ने नाराज होकर कहा। लेकिन, इसके बावजूद कैदियो के आने की सूचना देने के लिए अन्दर चला गया।

कसी कमर वाली भूरी 'बेशमेत' पहने एक, मोटा फफ्फस-सा कैप्टन फाटक से बाहर निकला, पैर फैलाकर खडा हुआ और बहुत ही नाटकीय ढग से सैनिको पर निगाह डालने लगा। बोला—"तो, तुमने कमीसारो को खूब खुश किया ··क्यो तामबोव-बजनियो ?··· ··ये भूरी वर्दियाँ तुम्हे कहाँ मिली ?·· ·· जर्मनो से उडा दी।"

"बिल्कुल नही।" ग्रुप के आगे के लाल फौजी ने, जल्दी-जल्दी

पलके झपकाते हुए जवाब दिया। "हमारे बैंड को यह वर्दी तो केरेन्स्की के जमाने मे दी गई थी· 'हम इसे बराबर पहन रहे हैं तब से · "

"और, तुम बराबर पहनते ही रहोगे ··मै देखूँगा कि तुम इसे ही पहनते रहो।" कैप्टन ने चौरस छत वाली कुबान टोपी सिर के पिछले हिस्से की तरफ ठेली, तो उसकी सफाचट खोपडी का गुलाबी-सा धब्बा चमका। अब वह कालमीक फौजियो पर गरम हुआ—"तुम इन्हे यहाँ क्यो लेकर चले आये? सुअर कही के! तुमने रास्ते मे ही इनका सफाया क्यो नही कर दिया?"

कालमीक ने अलबेले ढग से अपना बदन कसा, एडियाँ जोडी और टोपी की चोटी तक सख्ती से हाथ ले जाकर जवाब दिया—"स्क्वैड्रन-कमाडर के हुक्म से हम इन्हे लाए है यहाँ।"

"हुक्म से हम इन्हे लाये हैं यहाँ!" छैला-से अफसर ने होठ सिकोडते हुए मज़ाक बनाया और अपने चूतड हिलाता, पैर पटकता, कैदियो के मुआइने के लिए चल पडा। फिर बहुत देर तक वह उन्हे उस तरह देखता-समझता रहा, जैसे घोडे का सौदागर किसी घोड़े को देखे-समझे।

अर्दली आपस मे धीरे-धीरे ज़बानें चलाते रहे। कालमीको के चेहरे बदस्तूर भावहीन बने रहे।

कैप्टन ने आदेश दिया—"फाटक खोलो और इन कैदियो को हाते मे हाँक ले जाओ!"

"तुममे बैंडमास्टर कौन है?"···कैप्टन ने सिगरेट जलाते हुए पूछा।

"बैंडमास्टर हमारे बीच नही है।" कई आवाज़ो ने एक साथ जवाब दिया।

"कहाँ है वह? क्या भाग गया?"

"नही, मार डाला गया।"

"क्या अच्छा छुटकारा पाया! तुम्हारा काम उसके बिना भी चल जाएगा। तो, फिर चलो अपने बाजे तैयार करो।"

लाल फौजी गाड़ियो तक गये और फिर गिरजो के घण्टो की लगातार टन-टन मे पीतल के बाजो की खनक घुल गई।

"तैयार हो गए ? बजाओ—'प्रभु कि बचाओ जार को'।"

बैंड बजाने वालो ने मौन भाव से एक-दूसरे को देखा। किसी ने कुछ नही बजाया। एक क्षण तक तो भयानक सन्नाटा रहा, मगर इसके बाद नगे पैर मगर चुस्त पट्टियो वाले एक आदमी ने धरती पर दृष्टि जमाते हुए कहा—"हम लोग यह पुराना जार गीत नही जानते · "

"तुममे से कोई नही जानता ? क्या कहते है · ऐ, आधे प्लैटून अर्दलियो सुनते हो ? · अपनी राइफले सभालो जरा।"

कैप्टन अपने बूट के अँगूठे वाले हिस्से से ताल देने लगा। अर्दली, अपनी राइफले खटखटाते हुए बरामदे मे आ जमा हुए। बाड के पास के घने अकाशिया झाडो मे गौरैया चहचहाती रही। लोहे की तपती छतों और लोगो के तीखे पसीने के कारण अहाते मे खासी उमस रही।

ऐसे मे कैप्टन शेड मे गया कि नंगे पैरो वाले सगीतज्ञ ने अपने साथियो की ओर मायूसी से देखा और शात भाव से कहा—"सरकार, हम सभी नई धुनें जानते है, पुरानी धुने हमने कभी नही बजाई ··हम तो ज्यादातर मार्च की क्रान्तिकारी धुने बजाते हैं।"

कैप्टन ने विचारो मे खोए-खोए ही, अपना हाथ तलवार की मूँठ पर रखा और कोई जवाब नही दिया।

आधी-की-आधी प्लैटून बरसाती के बाहर कतार मे खडी हो गई और हुक्म का इन्तजार करने लगी। अब बैंड का कजी आँखो वाला, एक सयानी उम्र का सदस्य दल के आगे की ओर बढा और अपना गला साफ करते हुए पूछने लगा—"मुझे इजाजत है, मै बजा सकता हूँ ?" और इजाजत का इन्तजार किये बिना धूप से काली बाँसुरी उसने अपने थरथराते हुए होठो पर रख ली।

फिर बाँसुरी के स्वर व्यापारी के लम्बे-चौडे अहाते मे धीरे धीरे गूँजे तो कैप्टन की भौहे क्रोध से तन गईं और वह अपना हाथ चमकाते हुए बोला—"बन्द करो ·खत्म करो यह फकीरो की गिड़-गिड़ाहट से भरी अपनी धुन·· इसी को तुम धुन कहते हो ?"

स्टाफ-अफसर और ऐडजुटेट मुस्कराते हुए खिडकियो से झाँकने लगे।

"इन लोगो से कोई अच्छा मातमी मार्च बजाने को कहो ।" एक लेफ्टिनेन्ट ने खिडकी के दासे पर झुकते हुए तरुणाई से बजती आवाज़ मे कहा ।

गिरजे के घण्टो की टनटन एक क्षण को रुकी और कैप्टन ने अपनी आँखे सिकोडते हुए, खतरनाक ढग से कहा—"मेरा खयाल है कि 'इन्तरनेशनाल' तो तुम सब बजा ही लेते, होगे ? तो, वही बजाओ डरो नही । बजाओ मेरे हुक्म की तामील होनी चाहिए ।"

और·· पूरे अहाते मे सन्नाटा छा गया । तो, फिर इस सन्नाटे और दोपहर की गर्मी के वातावरण को भेदता हुआ 'इन्तरनेशनाल' का पूरे स्वर-ताल मे बँधा सिंहनाद सहसा ही चारो तरफ की हवा को झकझोरने लगा ।

कैप्टन अपने पैर फैलाये, बाड़ पर बेल की तरह झुका खडा 'इन्तरनेशनाल' सुनता रहा । उसकी मज़बूत गर्दन की नसो और अधमुँदी आँखो की निलहरी सफेदियो मे खून छलक आया ।

उसकी नसो पर जो ज़ोर पडा, वह सभाल के बाहर हो गया । बौखलाते हुए गरजा—"बद करो !"

बैंड ने किसी प्राणी की तरह दम तोड दिया । सिर्फ एक फ्रेंच भोपू को रुकने मे एक क्षण की देर लगी ।

बैंड बजाने वालो ने अपने खुश्क होठ चाटे और आस्तीन और गदी हथेलियो से उन्हे पोछा । उनके उतरे हुए चेहरो से थकान टपकी । एक, गर्द से नहाये, गाल पर आँसू का निशान झलका ।

इस बीच जनरल सेक्रेतेव एक साथी अफसर के यहाँ दावत खाता रहा । इस अफसर ने उसके साथ ही कभी रूसी-जापानी लडाई में हिस्सा लिया था । इस समय जनरल अपने, नशे मे धुत, एडजुटेट के सहारे, लडखडाता हुआ चौक मे आया । नशे और गरमी की शिद्दत के कारण, हाई स्कूल की ईंटो वाली इमारत के ठीक सामने वाले कोने में पहुँचने पर उसके पैर काँपे और वह मुँह के बल गरम-रेत पर भहरा पड़ा । एडजुटेंट ने उठाने की भरसक कोशिश की, मगर काम न चला । फिर थोडी दूर पर जमा लोगो ने एडजुटेट की सहायता की ।

उनमे से दा सयानी उम्र के कज्जाको ने जनरल सेक्रतोव को बडी इज्जत से हाथ पकडकर उठाया और फिर उसे इस हालत मे सभी ने देखा। लेकिन बीच-बीच मे उसने कै की और यो हाथ चलाये जैसे लड़ाई के मैदान मे हो। आखिकार किसी तरह उसे अपने ठिकाने पर जाने को मजबूर किया गया।

दूर-दूर खडे कज्जाको ने उसे घूर-घूरकर देखा और एक-दूसरे के कानो मे फुसफुसाने लगे।

"अहा······कितने मजे मे है ·····ये है हमारे सरकार! जनरल है, मगर पैर तक ठिकाने से नही पडते!"

"जाहिल है · ···अपने ओहदे की ज़र्रा बराबर फ़िक्र नही है ····· देखा।"

"अरे म्याँ, किसने कहा था कि मेज़ पर जितनी रखी हो, वह कुल की कुल ढाल डालो।"

"भाईजान, शराब पीना और बर्दाश्त कर लेना हर एक का काम नही। कितने ही लोग है जो बेशर्मी से ढालते है और फिर तौबा करते है कि दुबारा शराब हाथ से छुएँगे नही। वैसे बात यह है कि आस-पास खाने को कुछ न हो तो कोई भी सुअर रोज़ा रखने की कस्म खा सकता है।"

"हाँ······यह तो है·· ···मगर, लोगो को चिल्लाकर कह दो कि इस तरह भीड न लगाये। बदमाश, इस तरह घूरते है जैसे कभी किसी को नशे मे धुत देखा ही न हो।"

······फिर गिरजाघरो मे घण्टे बजाए गए और व्येशेन्स्काया मे शाम होने तक शराब की नदियाँ बही। लेकिन, शाम ढले बागियो की कमान ने, अफसरो के मेस के लिए निश्चित मकान मे, नवागन्तुको को दावत की।·· ···

सेक्रेतेव, हट्टा-कट्टा, लम्बे कद का आदमी था। रहने वाला क्रासनोकुत्स्क जिले के एक गाँव का था, और उसे घुडसवारी का बेहद शौक था। खुद शानदार घुडसवार और घुडसवार-फौज का बहुत ही जिगरे वाला जनरल था। लेकिन वक्ता वह कोई खास न

था। फलत. दावत मे उसने जो भाषण दिया, वह शराबियो की-सी बे सिर-पैर की बातो से भरा रहा। इस सिलसिले मे उसने ऊपरी दोन के कज्ज़ाको की बड़ी लानत-मलामत की और उन्हे बडी-बडी धमकियाँ दी।

ग्रिगोरी ने भी दावत मे हिस्सा लिया तो, जनरल की बाते सुनकर वह गरम होता और गुस्से से उबलता रहा। जनरल अब तक पूरी तरह सतुलित न हो सका था। वह मेज पर हाथ रखे खडा रहा, उसके गिलास से घर की निकली, महकदार वोद्का रह-रहकर छलकती रही और वह अपने शब्द-शब्द पर बल देता रहा।

" · ·· नही, सच तो यह है कि आपकी मदद के लिए हमे आपका शुक्रगुज़ार नही होना चाहिए, बल्कि आपको हमारा शुक्रगुजार होना चाहिए। आपको और सिर्फ आपको हमारा शुक्रिया अदा करना चाहिए····· यह बात साफ-साफ कही जानी चाहिए। अगर हम न होते तो लाल फौजी आपका नाम-निशान मिटाकर रख देते। यह हकीकत आप अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन, जहाँ तक हमारा सवाल है, हम तो आपके बिना भी यह गलीज़ दूर कर ही देते। हम उन्हे कुचल रहे हैं, और हम उन्हे तब तक कुचलते रहेगे जब तक कि पूरे रूस से उनका सफाया न हो जाएगा। ·· बहार मे आप लडाई के मैदान से पीठ दिखाकर चले आये। आपने बोलशेविको को कज्जाको के इलाके मे घुस आने दिया। आप उनके साथ बनाकर आराम से रहना चाहते थे, पर यह मुमकिन न हुआ। इसलिए अपनी जान-माल के बचाव के नाम पर आपने सिर उठाए। दो टूक बात कहनी हो तो कहा जाएगा कि आपको फिक्र हुई अपनी और अपने जानवरो की खाल की। मैं ये बीती बातें आपके गुनाह गिनाने के लिए नही कर रहा। मै ऐसी बातें कर आपको नाराज भी नही करना चाहता। लेकिन, सच्चाई को सच्चाई करके पेश करने से नुकसान कभी नही होता। हमने आपकी सारी गद्दारी के लिए आपको माफ कर दिया है। हम भाइयो की तरह, ज़रूरत पडने पर आपके दाहिने आये हैं और आपकी इमदाद करने के लिए आए हैं। लेकिन, अपनी बेहयाई से भरी सारी करतूतो को आपको आगे के

शानदार कारनामो से धोना चाहिए। यह बात आप सब समझते हैं न ? आपको दोन की खिदमत जी-जान से करनी चाहिए। समझे आप ?"

"तो, आइये, बेहयाई से भरी करतूतो को शानदार कारनामो से धोने के लिए पिये।" ग्रिगोरी के सामने बैठे एक बुजुर्ग-से कज्ज़ाक ने मुस्कराते हुए, जैसे अपने-आपसे ही, काफी धीरे से कहा और दूसरों की राह देखे बिना सबसे पहले अपना गिलास खाली कर दिया।

इस कज्जाक के मर्दाने चेहरे पर कही-कही चेचक के दाग थे और अपनी गहरी भूरी आँखो से खासा हँसोड मालूम होता था। सो सेक्रेतौव के भाषण के बीच उसके होठ कई बार मुस्कान से फडके, लेकिन फिर उसकी आँखे गहरा गईं और स्याह-काली लगने लगी। ग्रिगोरी ने इस अफसर की हरकते देखी तो वह उसे जनरल का काफी मुँहलगा मालूम हुआ और उससे मनमाने ढग से पेश आया पर, दूमरे अफसरो के मामले मे उसने खासी रोकथाम से काम लिया।

एक अकेले उसकी खाकी ट्यूनिक पर खाकी झब्बे दीखे और उसकी आस्तीनो पर कोरनीलोव निशान नजर आए। ग्रिगोरी ने सोचा— 'बड़े उसूलो वाला आदमी है। शायद वालेटियर है।'

उस कज्जाक अफसर ने शराब घोडे की तरह पी, पर कुछ न खाने के बावजूद शराब उसे चढी नही। सिर्फ अपनी चौड़ी अग्रेज़ी पेटी बीच-बीच मे खोलकर हाथो मे लेता रहा।

"मेरे सामने कौन है वह······चेचक के दागो वाले चेहरे का आदमी ?" ग्रिगोरी ने बगल में बैठे बोगातिरयोव के कानो मे कहा।

"शैतान जाने कौन है वह !" बोगातिरयोव ने यो ही कहा। अब उसे नशा चढ चला था।

कुदिनोव ने मेहमानो के लिए वोदका नही छोडी तो कच्ची स्प्रिट मेज पर आ गई। सेक्रेतोव ने अपनी बात जैसे-तैसे, बडी मुश्किल से खत्म की और अपना खाकी कोट खोलते हुए आरामकुर्सी पर धम से गिर पडा। देखने-सुनने मे बहुत ही साफ-साफ मगोलियन-से लगने वाले एक जवान स्क्वैड्रन-कमाडर ने उसकी ओर अपना मुँह बढाया और उसके

कानो मे कुछ कहा ।

"शैतान ले जाए !" सेक्रेतेव ने नीले पडते हुए जवाब दिया। कुदिनोब ने उस पर एहसान जताते हुए स्प्रिट उँडेली तो उसने गिलास दूर लोका दिया ।

"और, ऐंची-तानी आँखो वाला वह कौन है ?" ग्रिगोरी ने बोगातिरयोव से पूछा ।

उसके साथी ने मुँह पर हथेली रखते हुए जवाब दिया—"वह सेक्रेतेव का मुँहबोला बेटा है । जापानीलडाई के दौरान वह उसे बेटा बनाकर मचूरिया से लाया । फिर उसने उसे कैडेटो के फौजी स्कूल मे भेजा । बाद मे लड़के ने सारा नमक अदा कर दिया । बड़ा ही कलेजे वाला आदमी है । कल उसने माकेयेवका के पास के खजाने पर कब्जा कर लिया । बीस लाख रूबल हाथ लगे । देखो, इस वक्त भी नोटो के बंडल जेब से झाँक रहे है । बडा खज़ाना मार दिया ।···लेकिन, गिलास खाली करो न, अपने आस-पास क्या देख रहे हो ?"

कुदिनोव ने जवाबी-तकरीर की, पर शायद ही किसी ने उसकी बाते सुनी । शराबखोरो के जश्न का शोर-शराबा बराबर बढता गया । सेक्रेतेव ने अपनी जेकेट उतार फेकी और कमीज़ पहने बैठा रहा । उसकी सफाचट खोपडी पर पसीने की बूँदे झलकने लगी । लिनेन की बेदाग कमीज़ से बाहर झलकती रही उसकी बैजनी हरी और जेतून के रग की, धूप मे सँवराई गर्दन । कुदिनोव ने उसके कान मे कुछ कहा— लेकिन सेक्रेतेव ने उसकी ओर देखे बिना दुराग्रह से दोहराया— "नही·· माफ कीजिये ।···लेकिन, आपको माफ कर ही देना चाहिए । हम आपका यकीन करते है, लेकिन जहाँ तक···आपकी गद्दारी जल्दी भूली नही जाएगी । पतझड मे लाल फौजियों के चारो ओर नाचने वाले लोगो को यह बात अपने दिलो पर नक्श कर लेनी चाहिए ।"

'खैर · हम तो जैसे थे वैसे ही रहेगे·· हम आपकी खिदमत वही तक करेगे जहाँ तक ··' ग्रिगोरी ने मन-ही-मन क्रुद्ध होते हुए सोचा और उठकर खडा हो गया ।

वह बिना टोपी लगाये, निकलकर बरसाती मे आया और चैन

की साँस लेते हुए रात की ताजी हवा मे साँस ली।

दोन के निचले क्षेत्र मे मेढक टर्र-टर्र करते रहे और पनडाँस, बरसात के पहले के दिनो की तरह, भनभनाते रहे। बालू पर एक जगह चाहा-चिडियाँ एक-दूसरे को आवाजे देती रही। दूर कही, पानी के सरकडो के बीच एक बछेडा अपनी माँ से बिछुडकर ज़ोर-ज़ोर से हिनहिनाता रहा।

'ज़रूरत की बात है कि हमे एक-दूसरे से मिलना पडा है, नही तो तुम्हारी परछाईं तक का खयाल न आता ··सुअर का बच्चा, सोठ की टिकिया की तरह फूलता है और हम पर लानते बरसाता है···एक हफ्ते मे तो यह हमारी गरदनो पर पैर रखना शुरू कर देगा···जो हो चुका सो हो चुका ··ऐसा ही तो मैने सोचा भी था···ऐसा ही तो होना भी था··· लेकिन अब कज्जाक नाक-भौह सिकोडेगे···इन्हे सैल्यूट झाडने और बडे सरकारो के सामने अटेशन मारने की आदत रही नही। ग्रिगोरी ने सीढियो से नीचे उतरते हुए सोचा और अधेरे मे बेत के छोटे फाटक की ओर बढा।

शराब ने अपना असर उस पर भी दिखलाया। उसका सिर घूमने लगा और शरीर की हरकतो मे खास भारीपन महसूस हुआ। फाटक से निकलते समय उसके पैर लडखडा गए, उसने टोपी अपने सिर पर जमाई और वह घिसट-घिसटकर चलने लगा।

अकसीनिया की चाची के घर के पास पहुँचने पर वह क्षण-भर को ठिठका और फिर एक सकल्प से दरवाजे की ओर बढा। बरसाती को जाने वाला अदर का दरवाजा खुला मिला। वह बिना खटखटाये, सोने के कमरे मे दाखिल हुआ तो उसने अपने को और स्तेपान अस्ताखोव को आमने-सामने पाया। अकसीनिया की चाची स्टोव पर कुछ पकाने मे व्यस्त रही। मेज पर बिछे साफ-सुथरे मेजपोश पर रखी दीखी एक बोतल मे बची-बचाई घर की बनी थोडी-सी वोदका और एक तश्तरी मे गुलाबी, सूखी मछली के कुछ टुकडे।

स्तीपान ने अभी अपना गिलास खाली किया था और वह सिगरेट पीने जा रहा था। पर ग्रिगोरी को देखते ही उसने अपनी प्लेट एक

ओर को खिसका दी और दीवार से टिककर बैठ गया ।

ग्रिगोरी ने, नशे मे होने पर भी देखा कि स्तीपान का चेहरा भयानक ढग से पीला पडा और उसकी आँखो से क्रोध की लपटें फूटने लगी। इस अप्रत्याशित भेट पर आश्चर्य से अवाक् रह जाने पर भी ग्रिगोरी ने शक्ति जुटाई और भर्राये गले से बोला—"खाना तुम्हे सेहत दे ।"

"उस आसमान वाले का शुक्र है ।" चाची ने चौकते हुए कहा और ग्रिगोरी से अपनी भतीजी के सम्बन्धो का खयाल कर मन-ही-मन सोच गई कि इत्तिफाक से इस वक्त खाविंद और आशिक की जो मुलाकात हो गई है उसका नतीजा कोई अच्छा न निकलेगा ।

स्तीपान मुँह से कुछ नही बोला। उसने बायाँ हाथ अपनी गलमुच्छो पर फेरा और अपनी जलती हुई आँखे ग्रिगोरी पर जमाये रहा। पर ग्रिगोरी ड्योढी पर पैर फैलाये खडा हलके-हलके मुस्कराता रहा । "हाँ, मैं यो ही चला आया···माफ करना ।"

स्तीपान चुप ही रहा और यह सन्नाटा चलता रहा कि चाची ने हिम्मत बटोरी और ग्रिगोरी को अन्दर आने की दावत दी । बोली—"आओ, बैठो ।"

अब ग्रिगोरी को छिपाने को कुछ न रहा और अक्सीनिया के यहाँ उसके आने के बाद स्तीपान को जानने को कुछ न बचा। उसने सीधे अन्दर की तरफ कदम बढाये—"लेकिन तुम्हारी बीवी कहाँ है ?"

"यानी, तुम मुझसे मिलने आये हो ?" स्तीपान ने शात भाव से, स्पष्ट शब्दो मे पूछा और अपनी फडफडाती हुई बरौनियाँ आँखो पर गिरा ली।

"हाँ !" ग्रिगोरी ने आह भरी ।

वह इस वक्त हर परिस्थिति के लिए तैयार लगा। जरा गम्भीर हुआ और अपने बचाव के लिए कमर कस ली । इस बीच स्तीपान की आँखो की आग बुझ गई। उसने अपनी आँखें आधी खोली और बोला—"मैंने उसे थोड़ी वोदका लेने को भेजा है । अभी आई जाती है, बैठो ।"

ग्रौर, फिर तो उसने खडे होकर उसका स्वागत तक किया ग्रौर एक कुर्सी उसकी ग्रोर बढा दी । इसके बाद ग्रकसीनिया की चाची की तरफ देखे बिना बोला—"चाची, जरा एक साफ गिलास ला दो ।"··· ग्रौर ग्रिगोरी से कहने लगा—"थोडी शराब तो चलेगी न ?"

"एक गिलास पी लूँगा ।"

"खैर, तो, बैठो तो ।"

ग्रिगोरी मेज़ के पास ग्रा बैठा । स्तीपान ने बोतल की वोदका दो गिलासो मे बराबर-बराबर ढाली ग्रौर ग्रपनी ग्रजीब, धुँधलाई ग्राँखे ऊपर कर ग्रिगोरी पर नज़र डाली ।

"हर एक के लिए ।"

"ग्रौर उनकी सेहत के लिए ।"

उन्होने गिलास ग्रापस मे लडाये, वोदका गले के नीचे उतारी ग्रौर चुप हो रहे । ग्रकसीनिया की चूहे-सी फुर्तीली चाची ने मेहमान को एक तश्तरी ग्रौर दाँतेदार मूँठवाला एक काँटा दिया ग्रौर बोली—"थोडी-सी मछली ले लो · बहुत नमकीन नही है ।"

'शुक्रिया ।"

"शुरू करो · थोडी-सी मछली ले लो···तुम्हे ग्रच्छी लगेगी ।" ग्रौरत ने ग्रब खुशी से खिलते हुए ग्राग्रह किया । उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, क्योकि वक्त ग्राराम से कटता गया । न हाथापाई हुई, न तश्तरी-प्याले चकनाचूर हुए ग्रौर न शोर-शराबा हुग्रा । उनकी ग्रापस की बातचीत खत्म हो गई । खाविंद, ग्रपनी बीवी के ग्राशिक की बगल मे शात मन से बैठा रहा । फिर उसी तरह, मुँह सिये-ही-सिये, बिना एक-दूसरे की तरफ देखे वे खाते रहे । घर की चलतापुर्ज़ा मालकिन ने बक्से से हाथ पोछने का साफ तौलिया निकाला ग्रौर दोनो की ही जाँघो पर इस तरह डाला जैसे कि उन्हे एक सूत्र मे पिरो रही हो ।

"तुम ग्रपने स्क्वैड्रन के साथ न होकर इस वक्त यहाँ कैसे नजर ग्रा रहे हो ?" ग्रिगोरी ने मछली को गौर से देखते-समझते हुए पूछा ।

"मै भी घर के लोगो से मिलने-जुलने के लिए गाँव ग्राया हूँ ।" स्तीपान ने एक क्षण बिसूरने के बाद कहा ग्रौर उसके लहज़े से यह पता न चला

कि बात गम्भीर है अथवा व्यग्य से कही गई है ।

"मेरा खयाल है कि पूरे-का-पूरा स्क्वैड्रन ही घर लौट आया है···क्यो ?"

"हाँ, लोग गाँव मे मजे कर रहे है । तो, हम लोग अपना-अपना गिलास खत्म करे···क्यो ?"

"कर दे ।"

"तुम्हारी सेहत के लिए ।"

"तुम्हारी कामयाबी के लिए ।"

इसी समय बरसाती मे दरवाजा खडका । इस बीच ग्रिगोरी पूरी तरह गम्भीर हो गया और अब उसने स्तीपान की ओर देखा तो उसे उसके चेहरे पर पीलापन एक बार फिर दौडता नजर आया ।

अकसीनिया, कसीदे के काम का रूमाल सिर मे बाँधे, अन्दर आई । उसने ग्रिगोरी को नही पहचाना और मेज़ के पास पहुँचकर उसे कनखी से देखा । स्थिति समझ मे आई तो उसकी काली, फटी-फटी आँखो से डर झाँकने लगा । वह हाँफने लगी और बहुत कोशिश के बाद बोली—"सलाम·· ग्रिगोरी-पैन्तेलेपेविच ।"

स्तीपान के मेज पर रखे बडे-बडे, गाँठ-गठीले हाथ काँपने लगे । ग्रिगोरी मुँह से बिना कुछ कहे, अकसीनिया की ओर देखकर झुका ।

अकसीनिया ने घर की बनी वोदका की दो बोतले मेज पर रखी, ग्रिगोरी पर चिन्ता के साथ-साथ प्रसन्नता से भरी नज़र फिर डाली, मुडकर कमरे के अँधेरे कोने मे आई और कँपकँपाते हुए हाथो से बाल ठीक करने लगी । स्तीपान का गला फँसने-सा लगा । उसने कमीज का कॉलर खोला, गिलास ऊपर तक लबालब भरे और पत्नी से बोला—"तुम भी अपना गिलास ले आओ और हम लोगो के साथ आ बैठो ।"

"मेरा वोदका पीने को मन नही ।"

"आओ और बैठो यहाँ ।"

"लेकिन मैं वोदका नही पीती, स्तीपान !"

"कितनी बार कहना पड़ेगा तुमसे ?" स्तीपान की आवाज़

कांपी।

"आओ, यहाँ आ बैठो अकसीनिया !" ग्रिगोरी हिम्मत बँधाते हुए मुस्कराया। अकसीनिया ने उसे मिन्नत-भरी आँखों से देखा और बरतनो की अलमारी की तरफ लपकी। एक तश्तरी अलमारी से नीचे गिर पडी और चूर-चूर हो गई।

"उफ···कितना नुकसान हुआ !" चाची ने मायूसी से हाथ मले। अकसीनिया ने चुपचाप टूटे हुए टुकडे बीन लिए। स्तीपान ने तीसरा गिलास भी ऊपर तक भरा और एक बार फिर उसका मन खीझ और नफरत से भर-उठा। बोला—"चलो···उठाओ गिलास।" और, फिर चुप हो रहा।

अकसीनिया मेज के किनारे आकर बैठी तो मन की ऐंठने का सकेत देती-सी लम्बी-लम्बी साँसे साफ-साफ सुन पडी। स्तीपान बोला—"बीवी, अब पीयेगे एक लम्बे अर्से की बिछुडन के लिए···क्यो, यह जाम तुम नही पीना चाहती ? पियोगी नही ?"

"लेकिन, तुम तो जानते हो कि ··"

"अब मै सभी-कुछ जानता हूँ···खैर तो किसी बिछुडन के लिए न सही···अब हम पीयेगे अपने प्यारे मेहमान ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच की सेहत का जाम।"

"हाँ ग्रिगोरी की सेहत का जाम मैं पिऊगी।" अकसीनिया ने बजती हुई आवाज़ मे कहा और पूरा गिलास एक घूँटे मे ही खाली कर दिया।

"उफ···बेअक्ल···बदजात कही की !" चाची दौडकर बावर्चीखाने मे जाती हुई बुदबुदाई। वहाँ वह एक कोने मे दुबक गई और हाथो से सीना कसकर इन्तजार करने लगी कि अब सारी मेज चरमराकर टूटी और अब गोलियाँ चली कि कानो के पर्दे फटे।···लेकिन सोने के कमरे मे कब्र का-सा सन्नाटा बना रहा। सिर्फ रोशनी से परेशान मक्खियाँ छत के नीचे भनभनाती रही। दूसरी ओर, खिडकी से बाहर मुर्गे एक-दूसरे को आवाज़ दे-देकर आधी रात का स्वागत करते रहे। ··

· ८ ·

दोन के इलाके की जून की रातें अँधेरी होती है। दम घोटने वाले सन्नाटे के बीच सिलेटी काले आसमान मे सुनहरी बिजली कौंधती है, सितारे टूटते है और नदी की तेज धार मे झिलमिलाते है। खुश्क, गर्म हवा के झोके स्तेपी की ओर से फूलते हुए पुदीने की भीनी-भीनी महक घर-घर मे लाते है। नदी के किनारे निचले इलाके की भीगी घास, पानी के साथ बहकर आई रेत-मिट्टी और एक तरह के कच्चेपन से महमह करती रही।

ऐसे मे प्रोखोर आधी रात के समय जागा। उसने अपने क्वार्टर के मालिक से पूछा—"हमारा सूरमा घर आ गया ?"

"अभी तक तो आया नही···जनरलो के साथ ऐश काट रहा होगा।"

"मेरा तो खयाल है कि शराब की नदियो मे डूब-उतरा रहे होंगे ये लोग।" प्रोखोर ने जमुहाई लेते हुए कहा। ईर्ष्या से लम्बी आह भरी और कपडे पहनने लगा।

"तुम कहाँ चले ?"

"मैं घोडो को पानी पिलाने और दाना देने जा रहा हूँ··· पन्तेलेयेविच ने कहा था कि सूरज उगते ही घोडो पर सवार होकर तातारस्की के लिए रवाना हो जाना है···दिन हम वही बितायेंगे और फिर अपनी यूनिटों से जा मिलेगे।"

"सूरज उगने मे तो अभी बडी देर है···तब तक थोडा-सा और सो क्यों नही लेते ?"

प्रोखोर ने असन्तोष से भरी आवाज मे कहा—"तुम्हे देखकर तो कोई आँखो का अन्धा भी कह देगा कि बूढे बाबा अपनी जवानी के दिनों मे तुम फौज मे कभी नही रहे। हमारी नौकरी ऐसी है कि हम अगर घोड़ो को कायदे से न खिलायें-पिलाये और उनकी पूरी देख-रेख न करें तो हम ही जिन्दा बाकी न बचें। घोडे का पेट न भरा होगा तो उसे दौड़ाओगे क्या खाक, तुम्हारा घोडा जितना अच्छा और ठीकठाक होगा, अपने दुश्मन से तुम उसी हिसाब से तेजी से भागकर जान बचा

सकोगे। मैं दुश्मनों को पकडने का दम नही भरता, लेकिन अगर कही घिराव मे पड जाऊँगा तो सबसे पहले अपना घोडा मैं भगाऊँगा। यह है मेरी बात। गोलियो का सामना करते-करते जाने कितने साल हो गए हैं। मेरी तो जान ऊब गई। ज़रा रोशनी करना बाबा—ऐसे अँधेरे में तो कपडे मिलने से रहे।···शुक्रिया···और हमारा ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच··· हाँ वह अपने सारे क्रॉसो और वर्दी-ओहदे के नाम पर सिर के बल दोज़ख मे फट पडा है। लेकिन मै ऐसा बेवकूफ नही हूँ·· मुझे इन चीज़ो का कोई लालच नही।···लो आ रहा है वह·· मेरा ख़याल है कि होश मे नही है।"

इतने मे दरवाज़ा धीरे से खटका। प्रोखोर ने जोर से कहा—"आ जाओ!"

पर, अन्दर आया एक कज्जाक नॉन-कमीशंड अफसर। उसकी खाकी ट्यूनिक की बाँहो पर पट्टियाँ थी टोपी चोचदार थी और उसमे तुर्रा लगा हुआ था।

उसने ड्योढी पर खडे होकर सैल्यूट दी, अटेंशन हुआ और बोला—"मैं जनरल सेक्रेतेव के स्टाफ से आया हूँ। क्या मैं मेलेखोव साहब बहादुर से मिल सकता हूँ?"

"मेलेखोव यहाँ नही है।" प्रोखोर ने जवाब दिया और अर्दली की ट्रेनिंग, तौर-तरीके और बोलने के ढग से ताज्जुब मे पड गया। फिर बोला—"लेकिन अपनी हड्डियाँ इस तरह न तोडो। अपनी जवानी के दिनो मे भी उतना ही बेवकूफ था, जितने इस वक्त तुम हो।···मैं मेलेखोव का अर्दली हूँ·· क्या काम है तुम्हे उनसे?"

"मुझे जरनल-सेक्रेतेव ने मेलेखोव साहब के पास भेजा है, और दरख्वास्त की है कि वे अफसरो के मेस वाली इमारत मे जल्दी-से-जल्दी पहुँच जाएँ।"

"मेलेखोव तो आज तीसरे पहर वहाँ गया था।"

"हाँ, गये थे, पर बाद मे वापस आ गये।"

प्रोखोर ने सीटी बजाई और बिस्तरे पर बैठे कज्ज़ाक की तरफ देखकर आँख मारी।

"समझे, दादा ! वहाँ से खिसक दिया। इसके मानी यह है कि अपनी माशूका के पास पहुँच गया।"

"तुम जाओ, म्यॉ-फौजी ! मै अभी उसकी तलाश कर उसे सीधे वहाँ भेजता हूँ।"

प्रोखोर ने बूढे से घोडो को पानी और चारा देने को कहा और खुद अकसीनिया की चाची के घर की तरफ रवाना हुआ।

व्येशेन्स्काया अभेद्य अधकार के बीच सोता रहा। दोन के किनारे दूर, कही जगल मे नाइटिंगल, एक-दूसरे से होड बद-बदकर, सीटियाँ बजाती रही। ऐसे मे प्रोखोर ने आराम-आराम से जाने-पहचाने, छोटे घर तक की मजिल तय की। वहाँ गलियो मे होकर दरवाजे के हत्थे को हाथ लगाया ही कि स्तीपान की गहरी आवाज उसके कानो मे पडी। प्रोखोर ने सोचा—अब मेरी जान फँसी। स्तीपान मुझसे यहाँ आने की वजह पूछेगा तो मेरे पास जवाब देने को कुछ न होगा। खैर·· बात बना ली जाएगी। कह दूँगा कि शराब खरीदने आया हूँ, पडोसियो ने तुम्हारे यहाँ भेज दिया है।

सो, वह हिम्मत कर सोने के कमरे मे घुसा, पर वहाँ आश्चर्य से अवाक् हो गया और उसका मुँह खुले का खुला रह गया। चुपचाप खडा देखता रहा कि एक ही मेज के किनारे ग्रिगोरी और स्तीपान इस तरह बैठे गिलासो से बदलिया हरी, घर की बनी वोदका की चुस्कियो पर चुस्कियाँ ले रहे है, जैसे कि उनके बीच कभी कुछ न हुआ हो।

स्तीपान ने बरबस मुस्कराते हुए प्रोखोर की ओर देखा और कहा—"वहाँ मुँह फैलाये क्या खडे हो ? दुआ-सलाम तक का खयाल नही रहा ? कोई भूत यहाँ देख लिया क्या ?"

"कुछ ऐसा ही है।" प्रोखोर ने एक पैर के बदले बल दूसरे पैर पर दिया। परन्तु, आश्चर्यचकित वह अब भी रहा। स्तीपान बोला—"खैर, डरो मत·· अन्दर आ जाओ···हमारे यहाँ आ बैठो।"

"मेरे पास बैठने का वक्त नही है।···मैं आपके पास आया हूँ, ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच, आपको फौरन ही जनरल सेक्रेतेव ने याद किया है।"

···प्रोखोर के आने के पहले ही ग्रिगोरी ने कई बार जाने की सोची थी, अपना गिलास एक ओर को खिसका दिया था और उठ खडा हुआ था। लेकिन फिर फौरन ही बैठ गया था। उसे लगा था कि उसके इस तरह चले जाने को स्तीपान उसकी बुजदिली समझेगा। साथ ही उसके स्वाभिमान ने यह भी गवारा न किया था कि वह अकसीनिया को छोड दे ताकि स्तीपान को मौका मिल जाए। नतीजा यह कि वह पीता गया था, पर वोदका का उस पर असर कुछ न हुआ था। उसने सारी परिस्थिति गम्भीरता से समझी थी और परिणाम की राह देखता रहा था। फिर, अकसीनिया ने उसकी सेहत का जाम पिया था तो उसे क्षण-भर को लगा था कि स्तीपान ने अकसीनिया को अब हाथ जमाया कि तब हाथ जमाया। लेकिन उसका अनुमान गलत निकला था। स्तीपान ने अपना हाथ उठाया, धूप से सँवराया माथा पोछा और जरा देर शात रहने के बाद प्रशसा से भरकर कहा था—"बीबी, औरत तुम शानदार हो! तुम्हारी हिम्मत के लिए मैं तुम पर जान छिडकता हूँ।"

ठीक इसी समय प्रोखोर घर मे दाखिल हुआ था और ग्रिगोरी ने क्षण भर बिसूरने के बाद वही रहने का इरादा किया था। सोचा था कि मौका दूँगा···स्तीपान जो कहना चाहे, आज मुँह खोलकर कह ले।···

इसीलिए वह प्रोखोर की तरफ मुडा और बोला—"जाओ और कह दो कि मैं तुम्हे मिला ही नही। समझे?"

"सो तो मैं समझ गया· मगर बेहतर यही कि आप वहाँ चले जायें ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच।"

"यह फैसला करना तुम्हारा काम नही···चलो जाओ यहाँ से।"

प्रोखोर दरवाजे की तरफ बढा, लेकिन इसी समय अकसीनिया ने अप्रत्याशित रूप से दखल दिया और ग्रिगोरी की ओर देखे बिना, खुश्क ढग से बोली—"लेकिन, इसके मानी क्या है? अच्छा यही होगा कि तुम इसके साथ चले जाओ, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच! शुक्रिया कि तुमने यहाँ आकर हमारी मेहमानी कबूल की और अपना थोडा वक्त यहाँ बिताया···मगर, काफी वक्त हो गया है···दूसरा मुर्गा बाँग दे चुका

है···जल्दी ही सवेरा होगा···मुझे और स्तीपान को सूरज उगते ही घर भी तो जाना है···इसके अलावा, तुम काफी पी चुके। अब और नही पीना।"

इसके बाद स्तीपान ने भी रोकने की कोशिश नही की और ग्रिगोरी उठ गया। दोनो एक-दूसरे से अलग होने को हुए तो स्तीपान ने ग्रिगोरी का हाथ अपने हाथ मे यो लिया, जैसे कि आखिरकार कुछ कहना ही चाहता हो। लेकिन उसने कुछ नही कहा, और दरवाजे की ओर बढते ग्रिगोरी को चुपचाप देखता रहा। बाद मे उसने बोतल की बची-खुची शराब की ओर इत्मीनान से हाथ बढाया।

ग्रिगोरी को सडक पर आते ही भयानक थकान का अनुभव हुआ। वह जैसे-तैसे पहले चौराहे तक पहुँचा और फिर अपने ठीक पीछे-पीछे आते प्रोखोर से बोला—"जाओ और घोडे कसकर यही ले आओ। मैं पैदल वहाँ तक पहुँच नही पाऊँगा।"

"मै वहाँ जाकर पहुँच की इत्तिला दे दूँ?"

"नही।"

"खैर · तो, मै अभी-अभी आया।"

हमेशा का सुस्त और काहिल प्रोखोर इस समय बिल्कुल दुलकी चाल से क्वार्टर की ओर लपका।

ग्रिगोरी ने बाड़ के पास बैठकर सिगरेट जलाई, और स्तीपान से मुलाकात की पूरी बात का ध्यान कर मन-ही-मन सोचा—'यानी, अब स्तीपान को सभी कुछ मालूम हो गया है। खैर···क्या फर्क पडता है इससे·· सिर्फ यह है कि वह उसे कही मारे-पीटे नही।'···इसके बाद तन की थकान और मन की बेकली से त्रस्त होकर वह वही लेट गया और औंघा गया।

जल्दी ही प्रोखोर घोडे लेकर आ गया तो दोनो ने नदी पार की और उधर पहुँचते ही घोडे पूरी रफ्तार से छोड दिए। सुबह होते-होते तातारस्की पहुँच गये। यहाँ ग्रिगोरी अपने अहाते के पास घोडे से उतरा और रासें प्रोखोर की तरफ फेककर, उत्तेजित मन से, हडबडाता हुआ घर के अन्दर घुसा।

इसी समय नताल्या, आधे कपडे पहने, किसी काम से बाहर आई और पति को देखते ही उसकी नींद से भरी आँखें खुशी से इस तरह चमकी कि ग्रिगोरी का दिल धडकने लगा। क्षण-भर को उसकी पलकें गीली हो उठी। नताल्या ने उसे चुपचाप सीने से लगाया और पूरी ताकत से कसा। उसके कधो के काँपने से ग्रिगोरी को उसके रोने का पता चला।

वह घर के अन्दर दाखिल हुआ और बुजुर्गों और सोने के कमरे में सोते बच्चो को चूमकर बावर्चीखाने के बीचो-बीच आ खडा हुआ। हाँपते हुए बोला—"कैसी गुजरी ? मुसीबत के दिन किस तरह कटे ? सब ठीकठाक तो है ?"

"आसमान वाले की मेहरबानी है, बेटे ! हमे जो कुछ देखना पड़ा है वह हमारी हड्डी-हड्डी कँपा देने को तो काफी है। पर यह कहना ग़लत होगा कि हमे कोई गैर मामूली मुसीबत सहनी पडी है।" इलीनीचिना ने जल्दी-जल्दी कहा और रोती हुई नताल्या को कनखी से देखकर चीखी —"तुझे तो खुश होना चाहिये···और, तू है कि आँसू बहा रही है, बेवकूफ कहीं की। यह वक्त यहाँ इस तरह निकम्मे बनकर खडा रहने का नहीं। जा थोडी लकडी ले आ और आग जला ले।"

अब सास-बहू नाश्ता बनाने लगी कि पैन्तेली प्रोकोफियेविच एक साफ तौलिया ले आया और बेटे से बोला—"तुम हाथ-मुँह धो लो। मैं पानी डाले देता हूँ। तुम्हारे मुँह से वोदका की गध आ रही है। मेरा खयाल है कल तुमने जमकर जश्न मनाया है। क्यो ?"

"हा, हमने जी भरकर जश्न मनाया है। इस वक्त सिर्फ यह कहना मुश्किल है कि हमारा यह जश्न खुशी का रहा या मातम का।"

"इसके मानी क्या ?" बूढे के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

"बात यह है कि सेक्रेनेव हम सबसे बहुत नाराज है।"

"खैर·· तो, यह ऐसी परेशानी की बात नहीं···वैसे तुम लोगों के साथ पीने वालो मे वह तो नही था न ?"

"वह भी था······"

"सचमुच ! कितनी इज्जत उसने तुम्हे दी है, ग्रीशा ! यानी सच्चे जनरल की तरह वह भी उसी मेज के किनारे बैठा। जरा सोचने की बात है।" अपने बेटे पर स्नेह-भरी दृष्टि डालते हुए पैन्तेली ने जबान चटकारी।

ग्रिगोरी मुस्कराया और उसने अपने पिता के गँवारपन से भरी खुशी मे जरा भी हिस्सा नही बँटाया।

फिर, उसने पिता से जानवर, माल और अनाज के नुकसान की बात तफसील मे पूछी तो आज वह उसे पहले की तरह फार्म की बात-चीत मे दिलचस्पी लेता नही लगा। इससे बडी कही कोई चीज़ बूढे के दिमाग मे नाचती और उसका मन मथती महसूस हुई।

पैन्तेली ने भी अपने मन की आशका को तुरन्त ही वाणी दे दी। बोला—"ग्रिगोरी, अब क्या होगा ? अब हमे लडाई मे और तो खटना नही पडेगा ?"

"किसे खटना नही पडेगा ?"

"हम बूढो को · मिसाल के लिए मुझे।"

"अभी कुछ कहा नही जा सकता।"

"यानी हमे लाम पर जाना पडेगा ?"

"नही, तुम चाहो तो न जाओ।"

"सचमुच !" पैन्तेली ने गदगद होते हुए पूछा और उत्तेजना मे बावर्चीखाने-भर मे भचकता फिरा।

"बैठ जा, लगडे बुड्ढे ! घर-भर को अपने बूटो की गर्द से नहलाता मत फिर। तू तो खुशी से इस तरह फूला नही समा रहा है कि पागल कुत्ते की तरह इधर-उधर दौडता फिर रहा है।" इलीनीचिना चीखी।

लेकिन बूढे ने उसकी बात की तरफ ध्यान ही नही दिया। उसने मुस्कराते और हाथ मलते हुए मेज से स्टोव तक कई चक्कर काटे। लेकिन, फिर उसका मन सदेह की उगलियाँ उठाने लगा—"लेकिन, मेरा नाम काट सकते हो ?"

"क्यो नही काट सकता ?"

"मुझे लिखकर दे दोगे ?"

"जरूर दे दूंगा ।"

आदमी कुछ निश्चय न कर पाया और हकलाने लगा । आखिरकार पूछा—"कैसा दस्तावेज होगा वह ?·· उस पर मुहर नही होगी । या यह कि मुहर तुम्हारे पास यहाँ है ?"

"मुहर के बिना भी काम चल जाएगा ।" ग्रिगोरी मुस्कराया ।

"अगर ऐसा हो ही सकता है तो बेकार की बातो से क्या फायदा ?" बूढा फिर खिल उठा—"नीली छतरी वाला तुम्हे हमेशा तन्दुरुस्त रखे !·· तुम वापस कब जा रहे हो ?"

"कल जाऊँगा ।"

"तुमने अपने फौजी क्या आगे भेज दिये ?"

"हाँ···लेकिन, तुम अपने बारे मे परेशान न हो, पापा ! जो भी हो, तुम्हारी तरह के सभी बूढो को घर जाने की इजाजत जल्दी ही दे दी जाएगी । जरूरत पडने पर तुम सभी ने अपना फर्ज़ अदा किया, है···।"

"काश कि ऐसा ही हो !" पैन्तेली ने क्रॉस बनाया । साफ़ है कि ग्रिगोरी की बात पर उसे पूरी तरह विश्वास हो गया था और अन्तर नये सिरे से आश्वस्त हो उठा था ।

इस बीच बच्चे सोकर उठ गए तो ग्रिगोरी ने उन्हे गोद मे उठाया, घुटनो पर बिठाया, बारी-बारी से चूमा और मुस्कराते हुए उनकी आनद-भरी बातो का रस लेने लगा ।

इन बच्चो के बाल उसे किस तरह मह-मह करते लगे—धूप से, घास से, तकियो की गरमाहट से, और अपने अन्तरतम की किसी प्रियतम वस्तु से ! और ये बच्चे, उसके अपने ही अश, उसे स्तेपी की नन्ही-मुन्नी चिडियो-से प्रतीत हुए । दोनो बच्चो को हृदय से लगाते समय उसे अपने हाथ कैसे गदे समझ पडे, और इस चैन और अमन से भरे वातावरण मे वह अपने-आपको किस तरह परदेशी लगा । वह तो एक घुडसवार था, जो अपने घोडे को अपने से अलग कर एक दिन को यहाँ खिसक आया था । वह तो सिर से पैर तक घोडे के पसीने और

चमडे के साज-सामान की तीखी बदबू से नहाया हुआ था।···

ग्रिगोरी की आँखे आँसुओ की धुन्ध से धुँधला उठी और गलमुच्छो के अन्दर-ही-अन्दर उसके होंठ काँपने लगे। तीन बार तो उसने अपने पिता के सवालो के जवाब नही दिये और मेज के पास तभी आया जब पत्नी ने उसकी ट्यूनिक की आस्तीन पर अपना हाथ रखा···

और, सचमुच इस समय ग्रिगोरी अब तक वाला ग्रिगोरी न रहा, किसी विशेष भावना की बाढ मे वह पहले कभी न बहा था और रोया तो वह बचपन मे भी नही था। लेकिन, आज उसी आदमी की आँखो मे आँसू थे, आज उसी का दिल जोर-ज़ोर से धडक रहा था और आज उसी को यो लग रहा था, जैसे कि गले मे छोटी-छोटी घटियाँ बज रही हो, लेकिन उनसे आवाज न हो रही हो।···कहने को कहा जा सकता है कि इस सबका कारण था। कारण यह था कि उसने पिछली रात अधाधुध ढाली थी, और सोया वह बिल्कुल नही था।··

इसी समय दार्या चरागाह मे ढोर हाँककर लौटी। ग्रिगोरी को देखते ही वह उसकी तरफ बढी। मजाक मे उसके गलमुच्छो पर हाथ फेरा और होठ उसके होठो पर रखे तो आँखे मूँद ली। ग्रिगोरी को उसकी बरौनियाँ जैसे हवा मे फडफडाती दीखी। साथ ही, औरत के खिले हुए गालो की बदबूदार क्रीम की बू ने उसे क्षण-भर को परेशान कर दिया।

यानी, दार्या जैसी-की-तैसी मिली। कही किसी तरह का कोई परिवर्तन नही। ऐसा लगा कि दुनिया का बडे से-बडा दर्द तोडना तो अलग इसे झुका भी नही सकता। उसकी ज़िन्दगी सरपत की एक पत्ती के-सी समझ पडी—उतनी ही लचीली, उतनी ही खूबसूरत, उसी तरह पास से कही कडाई या सख्ती का नाम नही।

"अब तक बहार बनी हुई हो?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"बिल्कुल सडक के किनारे उगे, नीद बुलाने वाले हेनबेन-पौधे की तरह।" दार्या अपनी चमकती हुई आँखो को आधा बन्द कर मुस्कराई तो जैसे बिजली-सी कौध गई। दूसरे ही क्षण वह शीशे के सामने जा खड़ी हुई और रूमाल से झाँकते बाल अन्दर करते हुए, बाकी ठीकठाक

करने लगी।···

दार्या···यह हमेशा ऐसी ही रही थी। इस किस्म की औरत के साथ कुछ और मुमकिन भी तो नही था। प्यार की मौत ने उसे एड-सी दी थी और उस सदमे से उभरने के बाद उसमे जिन्दगी की प्यास और भी तीखी हो उठी थी। वह अपने रख-रखाव की तरफ ध्यान और भी ज्यादा देने लगी थी।··

दून्या·· खत्ती मे सो रही थी। अब उसे जगाया गया। इसके बाद क्रॉस बनाकर परिवार के सभी लोग एक साथ मेज़ के किनारे आ बैठे। दून्या रहम दिखलाती हुई बोली—"अरे तुम तो बूढे लगने लगे हो, भैया! तुम्हारे बाल भेडिये के बालो की तरह सफेद हो गए है।"

ग्रिगोरी ने उस पर गम्भीर दृष्टि डाली और फिर बोला—"अब बूढा तो होना ही चाहिए। पर अब तो तुम्हे सयानी होना है और अपने लिए खाविंद तलाश करना है।···लेकिन, तुमसे एक बात कह दूँ··· मीशा कोशेवोइ को आज से तुम्हारे ख्वाब मे भी नही आना चाहिए··· अगर अब मैने उसके लिए तुम्हारी तडप की बात भी कानो-कान सुन ली तो तुम्हारा एक पैर दबाकर पीस दूंगा और दूसरा पकडकर, मेढक की तरह, बीच से दो करके रख दूंगा। समझी ?"

दून्या का चेहरा गाजर की तरह लाल हो उठा और आँसुओ के बीच मे ग्रिगोरी को एकटक घूरने लगी। ग्रिगोरी ने क्रोध से जलती निगाह उसकी तरफ से नही हटाई। गलमुच्छो के नीचे के भिचे हुए दाँतो और सिकुडी हुई आँखो से मेलेखोव खानदान का असली रूप उभर-कर सामने आया। वही जगलीपन जैसे पूरी तरह साकार हो उठा।

लेकिन, दून्या की रगो मे भी तो आखिर वही खून बहता था। सो अपनी परेशानी और शर्म के पहले लहरे के गुज़र जाने के बाद वह शात स्वरो पर दृढ सकल्प की वाणी मे बोली—"भाई, क्या तुम इतना नही जानते कि दिल पर किसी की हकूमत नही चलती ?"

"जो दिल आदमी का कहा न माने, उसे काटकर फेक देना चाहिए।" ग्रिगोरी भाव-हीन ढग से बोला।

'लेकिन, तुम्हे इस तरह से बात नही करनी चाहिए, बेटे!'

इलीनीचिना ने सोचा । लेकिन, उसी बीच पैन्तेली प्रोकोफियेविच बातचीत मे टूट पडा और मेज पर मुट्ठी पटकते हुए बोला—"अपनी ज़बान काबू मे रख, कुतिया की बच्ची कही की, वरना इस तरह झोटा पकडकर घसीटूँगा कि सिर पर एक बाल भी बाकी न बचेगा। रडी कही की, मैं अभी जाकर रासे लिये आता हूँ···"

"लेकिन, पापा, हमारे यहाँ तो रासे बाकी ही नही बची है। लोग सारी-की-सारी उठा ले गए है।" दार्या बीच मे बोली और उसने दून्या पर सीधी-सादी नज़र डाली।

पैन्तेली की निगाह ने उस पर आग बरसाई, और उसी तरह तेज आवाज मे वह अपने दिल की भडाँस निकालता रहा। "मैं अभी घोड़े का तग ले आता हूँ और तुम सबके भूत झाडे देता हूँ···।"

"लाल फौजी तो तग भी उठा ले गए।" दार्या ने इस बार और तेज़ आवाज मे दखल दिया, पर अपने ससुर की तरफ भोली निगाहो से देखती रही।

लेकिन, इतना पैन्तेली के लिए बहुत हो उठा। वह मौन रोष से नीले पडते हुए एक क्षण तक अपनी बहू को घूरता रहा। उसका मुँह पानी से बाहर तडफ रही माइक मछली की तरह फैला रहा। आखिरकार भर्राती हुई आवाज मे बोला—"मुँह बद कर···भाड मे जा··· हज़ार शैतान ले जाएँ तुझे···ऐसे लोग हैं कि मुझे एक लफ्ज़ नही कहने देंगे।·· कोई भला क्या कहेगा इसे ?·· लेकिन, दून्या, तुम यह बात पूरी तरह समझ लो। यह हो नही सकता। मैं तुमसे तुम्हारे बाप की हैसियत से कहे देता हूँ।·· और, ग्रिगोरी ने बिल्कुल ठीक कहा है। अगर तुम ऐसे हरामज़ादे की बात भी सोचोगी तो तुम्हारी गरदन मरोड देना, ऐसा कुछ बुरा न रहेगा।·· क्या आशिक खोजा है इसने ! खुद फाँसी के फन्दे मे फँसी चिडिया ने इसका दिल जीत लिया है। ऐसे ही आदमी को इन्सान कहते हैं ! क्या तुम्हारा खयाल है कि ऐसे जूडाज को मैं अपना दामाद बनाऊँगा ? अगर वह कभी मेरे हाथ लग गया, तो मैं खुद उसे मौत के घाट उतार दूंगा।···अब तुम एक जवाब उलटकर दो, फिर देखो कि मै सरपत लाकर किस तरह तुम्हारी खाल खीचकर रख

देता हूँ ।···"

"क्या कह रहे हो ? तुम दिन मे रोशनी लेकर पूरा अहाता मँझा आओ, तब भी तुम्हे सरपत की एक पत्ती नही मिलेगी ।" इलीनीचिना ने आह भरकर कहा—"सारा अहाता झाड आओ, आग जलाने को एक चैली नही मिल सकती । यह हालत हो गई है हमारी !"

पैन्तेली को सीधी-सादी बात मे भी बुराई दीखी । उसने बुढिया को घूरकर देखा, फिर पागल की तरह उछला और दौडता हुआ बाहर चला गया ।

ग्रिगोरी ने अपना चम्मच नीचे रख दिया, चेहरा तौलिये से ढँका, और मुँह बदकर हँसी से लोट-पोट होने लगा । इस बीच उसका गुस्सा उतर गया, और वह पुराने दिनो की तरह हँसा । फिर दून्या के अलावा सभी हँसी के ठहाके लगाने लगे और खाने की मेज़ के चारो ओर का तनाव कम हो गया । लेकिन बरसाती की सीढियो पर पैन्तेली के पैरो की आहट हुई कि सभी चुप हो गए । बूढा आल्डार का एक बड़ा पेड घसीटता, तूफान की तरह, बेतहाशा कमरे मे दाखिल हुआ ।

"अब बोलो···यह एक शाख तुम सबके लिए काफी होगी, सडी हुई लम्बी जबान वालो, लम्बी दुमो वाली सियारिनो·· सरपत की एक पत्ती कही नही है न ? तो फिर यह क्या है ? और तुझे इसका मजा चखने का मौका मिलेगा, बुढिया चुडैल तुझे मजा चखने को मिलेगा ।"

पर शाख इतनी बडी निकली कि बावर्चीखाने मे आसानी से आ नही सकी । एक बर्तन लॉघते हुए पैन्तेली ने एक धमाके के साथ उसे गलियारे मे पटक दिया और हॉफते हुए मेज के किनारे आ बैठा ।

पैन्तेली साफ-साफ बहुत बौखलाया हुआ था । सो, शूँ-शूँ करते हुए, बिना बोले खाता रहा । बाकी लोग भी चुप ही रहे । दार्या ने, हँस पडने के डर से, अपनी आँख मेज पर से नही उठाई । इलीनीचिना ने आह भरी और बहुत ही धीरे से बोली—"ओ नीले आसमान वाले, हमारे गुनाह बहुत भारी और दर्दनाक है ।" सिर्फ दून्या का ही हँसने को जी न चाहा और बूढे के बाहर रहने पर अजीब ढग से, कोशिश कर हँसने वाली नताल्या अब गम्भीर हो गई और विचारो मे खो गई ।

"जरा नमक देना··· रोटी उठाओ।" पैन्तेली ने अपनी निगाह परिवार वालो पर डालते हुए, धमकी-भरे लहजे मे कहा।

और फिर परिवार का यह झगडा बडे गैर-मामूली ढग से खत्म हुआ, यानी आम सन्नाटे के इस वातावरण मे मीशात्का ने कुछ ऐसा किया कि बाबा नये सिरे से भडक उठा।···बच्चे ने बहुत बार बाबा और दादी के बीच झगडा होते देखा था। हर बार दादी ने बाबा को जाने कितनी-कितनी बातें सुनाई थी। परन्तु आज वही बाबा हर एक को मार डालने की धमकी देता फिर रहा था। इस पर बच्चा तो बच्चा, उसका सन्तुलन गड़बड़ा गया, और वह अपने नथुने फडकाते हुए, गूंजती हुई आवाज मे बोला—"बूढा, भूत कही का! कैसी-कैसी बाते करता है! मुझे और मेरी दादी को डराता है। तेरे सिर पर एक लकडी ऐसी पड़नी चाहिए कि बस।"

"यह बात तूने मुझसे कही ··यानी, अपने बाबा से कही ?"

"हाँ, तुमसे कही।" मीशात्का ने बहादुरी से ऐलान किया।

"लेकिन, अपने बूढे बाबा के लिए ऐसे लफ्ज इस्तेमाल करने की तेरी हिम्मत कैसे पडी ?"

"तो, तुम इस तरह शोर क्यो करते हो ? चिल्लाते क्यो हो ?"

"हाथ-भर का है, मगर शैतान की आँत है!" पैन्तेली ने दाढी पर हाथ फेरते हुए कमरे मे चारों तरफ नजर दौडाई "और, इतनी सारी बातें इसने तुमसे सीखी है, बुढिया···तू सिखलाती है उसे सभी कुछ।"

"कौन सिखलाता है उसे ? अपने बाबा और अपने बाप की तरह ही वह खुद भी क्या कुछ काबू मे आने वाला है।" इलीनीचिना ने गुस्से से भरकर अपनी वकालत की।

नताल्या ने उठकर मीशात्का के चूतडो पर कई हाथ मारे और फिर हिदायत देती हुई बोली—"खबरदार जो बाबा से अब कभी इस तरह बात की! सुनता है कि नही ?"

मीशात्का रोने लगा और उसने आकर ग्रिगोरी की गोद मे अपना चेहरा छिपा लिया। इस पर बच्चो पर जान छिडकने वाले पैन्तेली की

आँखो से आँसू बहने और गिर-गिरकर दाढी पर आने लगे। पर, उसे उन्हे पोछने का जैसे खयाल ही न आया। वह तो खुशी से खिलकर बोला—"ग्रीशा बेटे, ऊपर वाला समझेगा मुझे !···बुढिया ने ठीक ही कहा। बच्चा सच्चे मानी मे हमारा है। उसकी रगो मे खालिस मेलेखोव खून बहता है। ऐसे ही मौको पर खून की पहचान होती है, अब उसे कोई चुपा नही सकता।·· मेरा नन्हा-मुन्ना, मेरा राजा···ले, मार ले। अपने बूढे बाबा को जिस चीज से चाहे मार ले। उसे दाढी पकडकर घसीट ले।" बूढे ने मीशात्का को ग्रिगोरी की गोद से घसीटा और सिर ऊँचा उठा लिया।

सब लोग नाश्ता खत्म कर मेज़ के पास से उठे। औरतें बरतन साफ करने लगी। पर पैन्तेली एक सिगरेट जलाकर ग्रिगोरी से बोला—"तुम थोडे-से वक्त के लिए घर आये हो। मुझे तुमसे इस तरह की बात कहनी नही चाहिए। पर सवाल यह है कि तुमसे न कहूँ तो फिर कहूँ किससे ? अजनबियो से तो कहूँगा नही। फिर उनकी हालत हमसे कुछ बेहतर नही है। यानी कहना सिर्फ यह है कि सभी-कुछ ढहा और गिरा पडा है। अगर तुम थोडा हाथ लगा दो तो बाड ठीक कर दूँ और खलिहान के चारो तरफ छड लगा दूँ।"

ग्रिगोरी तुरन्त ही राज़ी हो गया और फिर दोनो खाने के समय तक अहाते मे बाड दुरुस्त करते रहे।

बीच मे बूढा बोला—"कटाई का वक्त आ गया है, लेकिन समझ नही पाता कि थोडी-बहुत घास खरीदी जाए या न खरीदी जाए ? तुम क्या सोचते हो फार्म के बारे मे ? परेशानी उठानी भी चाहिए या नही ? हो सकता है कि एक महीना भी न बीत पाए और लाल फौजी हम पर फिर मेहरबान हो जाएँ और सारा कुछ उन शैतानो के हाथो फिर पहुँच जाए।"

"मैं नही कह सकता, पापा !" ग्रिगोरी ने सीधे-सीधे कहा—"मैं नही कह सकता कि ऊँट किस करवट बैठेगा और हार किसकी होगी और जीत किसकी। आजकल के-से ज़माने मे सब-कुछ बेकार ही होता है। मिसाल के लिए मेरे ससुर को ही ले लो। वे ज़िन्दगी-भर

खपते, रकम भुनाते और अपना और दूसरो का खून-पसीना एक करते रहे, लेकिन बचा क्या आखिरकार ? बचे अहाते के अधजले ठूंठ और बस।"

"यही तो मै भी सोचता रहा हूँ, बेटे !" बूढे ने आह दबाते हुए बेटे की हाँ-मे-हाँ मिलाई और फिर फार्म की बात न उठाई। पर, ग्रिगोरी को खलिहान मे फाटक जमाने की कोशिश मे गैर-मामूली ढग से खटते देखकर उसने सिर्फ दोपहर के बाद मुँह खोला और खीझ और कटुता से भरे स्वर मे बोला—"काम-भर का कर लो फाटक को। इतनी मशक्कत बेकार मे क्या कर रहे हो ? फाटक कोई जिन्दगी-भर तो ज्यो-का-त्यो खड़ा रहना नही है।"

ऐसा लगा जैसे कि केवल अब बूढे ने समझा कि पुराने ढग से जीवन को व्यवस्थित करने की कोशिश कितनी बेमानी है।

ग्रिगोरी सूरज डूबने के जरा पहले काम खत्म कर घर लौटा। नताल्या सोने के कमरे मे अकेली मिली और लिबास से जैसे किसी उत्सव या समारोह मे हिस्सा लेने को तैयार दीखी। गहरी, नीली, ऊनी स्कर्ट और सीने पर कसीदेकारी वाली, हल्की नीली पॉपलीन की जैकेट खूब फिट नजर आई।

नताल्या का चेहरा मोह से गुलाबी और साबुन से धुलने के कारण कुछ-कुछ चमकदार रहा और वह बक्से मे कुछ खखोरती रही। पर ग्रिगोरी को देखते ही उसने बक्से का ढक्कन गिरा दिया और मुस्कराती हुई सीधी हो गई। ग्रिगोरी बक्से पर ही बैठ गया और बोला—"आओ, ज़रा मेरे पास बैठ लो। बाद मे एक साथ बैठकर बाते करने का वक्त शायद ही मिले। फिर, कल तो मैं चला ही जाऊँगा।"

नताल्या आजिज़ी से बगल मे आ बैठी और थोडी घबराहट से भरी कनखी से पति को देखने लगी। पर, ग्रिगोरी ने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और दुलार से बोला—"तुम तो ऐसी चिकनी-चिकनी लग रही हो, जैसे कि कभी बीमार रही ही नही।"

"बीमारी खत्म हो गई · उसकी कमज़ोरी भी दूर हो गई···हम औरतें बिल्लियों की तरह बदन की पोढी और तकलीफ सहार जाने

वाली होती है।" नताल्या डरते हुए मन से मुस्कराते और सिर झुकाते बोली।

ग्रिगोरी ने बाल की लटो के बीच से उसके कान का निचला हिस्सा और गर्दन की पिलछरी-खाल देखी और पूछा—"तुम्हारे बाल गिर रहे हैं क्या ?"

"हाँ, गिर रहे है, जल्दी ही सिर एकदम गजा हो जाएगा।"

"लाओ, मैं तुम्हारा सिर मूंड दूं ?" ग्रिगोरी ने सहसा ही कहा।

"क्या ?" नताल्या चौककर चीख उठी, "लेकिन उस हालत में, कैसी लगूंगी मै ?"

"एकदम सिर मुंडवा लेना सबसे अच्छा रहेगा·· नही मुंडवाओगी तो फिर बाल नही उगेगे।"

"माँ ने कैंची से बाल काटने का तायदा किया है।" नताल्या ने घबराहट के बीच भी मुस्कराते हुए कहा और बर्फ-सा उजला रूमाल फुर्ती से अपने सिर पर डाल लिया।

नताल्या, उसकी पत्नी, मीशात्का और पोल्युशका की माँ उसकी बगल मे बैठी थी···उसके लिए ही तो उसने अपने को इस तरह सजाया था, साबुन से मुँह धोया था···जल्दी-जल्दी सिर पर रूमाल डाल लिया था ताकि पति को यह न दिखलाई पडे कि बीमारी ने बाल किस तरह चौपट कर दिए है। उसने सिर एक तरफ को थोडा-सा इस तरह झुका रखा था कि जितनी ही दयनीय और भद्दी लग रही थी, उतनी ही खूबसूरत मालूम हो रही थी·· चेहरा आन्तरिक सौन्दर्य की पावनता से जगमग कर रहा था, वैसे भी वह हमेशा ऊँचे कॉलर वाली जैकेट पहनती थी कि गर्दन को बदसूरत बनाने वाले दाग पर हमेशा पर्दा पडा रहे··· यह सब वह करती थी मात्र उसके लिए···ग्रिगोरी के अन्तर मे स्नेह और ममता की बाढ-सी उमड पडी। उसने कुछ प्यारी-प्यारी-सी बात उससे कहनी चाही, पर शब्द ही नही जुटे। बस, तो मुँह से बिना कुछ कहे, उसने उसे अपनी ओर घसीटा और उसकी चौड़ी भौहे और उदासीभरी आँखे चूम ली।

आज के पहले ग्रिगोरी ने इतना दुलार उसे कभी नही दिया था। अक्सीनिया जिन्दगी-भर उसके रास्ते मे खडी रही थी।

सो, नताल्या ग्रिगोरी के भाव-प्रदर्शन से हिल उठी और उत्तेजना से जलने लगी। उसने उसका हाथ उठाकर अपने होठो पर रख लिया।

दोनो क्षण-भर मौन बैठे रहे। पश्चिम के सूरज की किरणें कमरे में उतरती रही और बच्चे सीढियो पर खेलते रहे। पति-पत्नी के कानो में आवाज़ पडी। दार्या ने मिट्टी की कुल्हियाँ आवे से निकाली और असन्तोष से भरकर सास से बोली—"तुम इतना भी नही कर सकती कि हर दिन गायो को ही दूह लिया करो ? बूढी गाय का दूध घटता मालूम होता है।"

इसी समय ढोर चरागाह से लौटे। गाये डकारी। चरवाहो ने अपने रोग्रो से मढे चाबुक झटकारे। गाँव का साँड बीच-बीच मे फटी आवाज़ मे डकारा। उसका रेशमी सीना और चिकनी साँचे मे ढली-सी पीठ डाँसो से लहू-लुहान लगी। उसने गुस्से से अपनी गर्दन रह-रहकर झटकी, आगे बढकर अपने सीगो से अस्ताखोव की सरपत की बाड तार-तार कर दी, ढहा दी और खुरो से रौदकर रख दी। नताल्या ने खिडकी के बाहर नज़र दौडाते हुए कहा—"जानते हो, यह साँड भी दोन के पार चला गया था। माँ कहती थी कि गाँव मे आग लगते ही वह अपने ठिकाने से बाहर निकला, तैरकर सीधे दूसरे किनारे पहुँचा और बराबर नरकट की झाडियो के पीछे छिपा रहा।"

ग्रिगोरी कुछ न बोला। विचारो मे डूबा रहा। मन-ही-मन सोचता रहा—'नताल्या की आँखो मे इतनी उदासी भला क्यो और कहाँ से आई ! कोई एक राज़ ऐसा है जिसे यह मेरी निगाहो से बचाना चाहती है, पर जो रह-रहकर इसकी आँखो मे डूबता और उतराता है। उसकी खुशी तक मे एक दर्द-सा घुला रहा है, और यह बात किसी भी तरह मेरी समझ मे नही आई है। शायद इसे भनक मिल गई है कि मैं यगोदन्स्काया मे अकसीनिया से मिलता रहा हूँ।'···आखिरकार वह पूछ ही तो बैठा—"तुम्हारा मन इतना बुझा-बुझा-सा क्यो रहता है ? किस

गम का पत्थर तुम्हारे सीने पर रखा रहता है, नताल्या ? बतला दो मुझे···क्यो ?"

और उसने सोचा कि वह आँसू बहायेगी, उसकी लानत-मलामत करेगी। लेकिन, यह सब-कुछ नही हुआ। नताल्या भय से भरे स्वर से बोली—"नही, नही, ऐसा कुछ नही है···तुम्हे महज लगता है ऐसा···मै ठीक हूँ···वैसे यह सच है कि मेरी तबीयत अभी पूरी तरह ठीक नही हुई है। मुझे चक्कर आता है और यो या कुछ उठाने के लिए झुकती हूँ तो मेरी आँखो के आगे अंधेरा छा जाता है।"

ग्रिगोरी ने उत्सुकता से उसे भर-आँख देखा और फिर पूछा—"मेरी गैरहाजिरी मे तुम यहाँ ठीक-ठाक तो रही ? किसी ने तुम्हे छेडा-छाडा तो नही ?"

"नही ··यह तुम क्या कह रहे हो ? मै तो बराबर बीमार ही रही हूँ।" नताल्या ने ग्रिगोरी की आँखो मे आँखे डाली, हलके से मुस्करा दी और जरा देर चुप रहने के बाद पूछा—'तुम कल सवेरे जाओगे ?"

"तडके ही चला जाऊँगा।"

"लेकिन, क्या एक दिन और नही ठहर सकते ?" एक अनिश्चित-सी आशा उसकी आवाज़ मे बजी।

ग्रिगोरी ने जवाब मे सिर हिला दिया तो पत्नी आह भरकर बोली—"अब क्या होगा···तुम्हे झब्बे लगाने पड़ेगे ?"

"हाँ सो तो लगाने ही पड़ेंगे।"

"खैर, तो ट्यूनिक दे दो मुझे···मै उजाला रहते टाँक दूँ।"

ग्रिगोरी ने ट्यूनिक खीच ली। वह अब भी पसीने से तर थी। पीठ और कन्धो पर जहाँ-जहाँ फौजी पट्टो की रगड पडी थी, वहाँ-वहाँ पसीने के चमकदार धब्बे थे।

नताल्या ने बक्से से एक जोड़ा, बदरग खाकी झब्बे निकाले और पूछा—"यही लगेगे न ?"

"हाँ···यानी तुमने यह रख छोडे थे ?"

"हमने बक्सा ज़मीन मे गाड दिया था," सुई की आँख मे तागा डालते हुए नताल्या बोली। उसने गर्द से भरी ट्यूनिक चोरो की तरह

ऊपर उठाई, नाक से लगाई और ग्रिगोरी के खारी पसीने की बास ली। यह महक उसे बहुत ही प्यारी लगी थी।

"तुमने इसे इस तरह सूँघा क्यो ?" ग्रिगोरी ने अचरज से पूछा।

"इससे तुम्हारी महक आती है।" नताल्या ने कहा और उसकी आँखें लौ देने लगी। उसने गालो पर सहसा ही खिलते गुलाबो को छिपाने के लिए गर्दन झुका ली और सधे हुए हाथो से सिलाई शुरू कर दी।···

ग्रिगोरी ने ट्यूनिक पहनी और कन्धे झटके। उसके चेहरे पर एक बादल-सा छा गया। नताल्या की निगाहे सराहना से भरकर उस पर जम गईं। बोली—"इन झब्बो को लगाने पर तो तुम और भी अच्छे लगते हो।"

लेकिन, ग्रिगोरी ने अपने बाँए कन्धे की तरफ कनखी से देखा और आह भरी—"मुझे ज़रा भी बुरा न लगे, अगर यह मुझे देखने को कभी न मिले। एक बात तुम बिल्कुल नही समझती।"

दोनो, एक-दूसरे का हाथ अपने हाथ मे लिये, अपने-अपने विचारो में डूबे, सोने के कमरे मे सन्दूक पर चुपचाप बैठे रहे। फिर, जब साँझ का धुँधलका घिरना शुरू हुआ और इमारतो की बकाइनी परछाइयाँ ठडाती धरती पर फैलने लगी तो वे उठे और खाने के लिए बावर्चीखाने मे आए।

और, फिर रात बीत गई। सूरज के उगने तक गरमी की बिजली आसमान मे कौधती रही। दिन के उजाले तक चेरी की बगिया की बुलबुलें रात के अँधेरे को अपनी चचलता और कलरव से भरती रही। ग्रिगोरी जग गया लेकिन आँखें मूँदे उनके मधुर गीत सुनता रहा। इसके बाद, नताल्या की नीद खराब न करने के मामले मे पूरी होशियारी बरतते हुए वह धीरे से उठा और कपडे पहनकर बाहर अहाते मे निकल आया।

पैन्तेली प्रोकोफियेविच ने इस बीच ग्रिगोरी के घोडे को दाना दिया और सैनिक-सुलभ कल्पना से काम लेते हुए बोला—"तुम कहो तो मैं इस पर सवार होकर चला जाऊँ और तुम्हारे रवाना होने से पहले-

पहले इसे नहला लाऊँ···क्यो ?"

"इसके बिना भी काम चल जाएगा।" ग्रिगोरी ने सुबह की ताज़गी मे खिलते हुए कहा।

"नीद तो मज़े मे आई ?" पिता ने पूछा।

"हाँ नीद मज़े की आई, लेकिन बुलबुलो ने जगा दिया। किस तरह इन्होने सारी रात तूफान बरपा किया ? हद है।"

पैन्तेली ने घोडे के मुँह से थैला उतारा और मुस्कराया—"इन्हें और काम ही क्या है, बेटे ? इन आसमानी चिडियो को देखकर तो कभी-कभी डाह होती है···लडाई या बरबादी से तो बिल्कुल अनजान रहती हैं।"

प्रोखोर घोडे पर सवार फाटक पर आया। उसका चेहरा खुशी से खिला और बातो की बरसात करने को सदा की तरह उत्सुक दीखा। उसने घोडा एक खम्भे से बाँधा और ग्रिगोरी की ओर बढा। उसकी मोमजामे की कमीज पर कायदे का लोहा नजर आया। कधे पर लगे झब्बे नए-जैसे लगे। प्रोखोर पास आते हुए चिल्लाकर बोला—"तो तुमने झब्बे भी लगा लिये, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच !" कम्बख्त जैसे कि हमारा इन्तजार करते रहे है··हम इन्हे इस्तेमाल कर सकते है लेकिन इनका कुछ बना-बिगाड नही सकते। यह तो जिन्दगी-भर चलते चले जायेंगे। मैने अपनी बीवी से कहा—"बेवकूफ कही की, इस तरह मत सी कि ये कभी कही गिरे ही नही। तू तो इन्हे सिर्फ इस तरह टाँक कि ये कही हवा मे उड न जाएँ, और बस।"···तुम तो हम लोगो की हालत अच्छी तरह जानते-समझते हो। अगर कही क़ैदी बनने की नौबत आई तो दुश्मन देखते ही समझ जायेंगे कि यह फौजी अफसर भले ही न हो, मगर सीनियर नॉन-कमीशड तो है ही। कहेगा—"क्या कहने हैं···अपनी तरक्की करवाना तो आपको खूब ही आता था···तो, अब ज़रा फाँसी का फन्दा भी अपनी गर्दन मे डालना सीख लीजिए।··· ज़रा देखो कि मेरे झब्बे कैसे झूल रहे है। देखकर हँसी आती है।"

प्रोखोर के झब्बे इतने ढीले टँके हुए थे कि क्या कहिए। नतीजा यह कि अपनी जगह पर तो जैसे थे ही नही।

पैन्तेली ने हँसी का ठहाका लगाया। वक्त की झकझोर से अनजान उसके दाँत दाढी के बालो के बीच दमके।

"तुम भी अपने को फ़ौजी कहते हो। यानी, अगर खतरे का कोई भी निशान तुम्हे नजर आएगा तो तुम झब्बे नोचकर फेंक दोगे, है न?"

"और, तुम क्या सोचते हो?" प्रोखोर हँसा। ग्रिगोरी मुस्कराते हुए अपने पापा से बोला—"देखा कैसा अर्दली मुहय्या किया है मैने अपने लिए? अगर मैं मुसीबत मे फँस जाऊँ तो भी इसके साथ मेरा बालबाँका नही होगा।"

"यह तो सब बहुत ठीक है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच! लेकिन, तुम जानते हो कि सूरत क्या है—आज तुम मरोगे तो कल मौत मुझे बुलायेगी।" प्रोखोर ने अपनी ओर से सफाई देते हुए कहा, देखते-देखते अपने झब्बे नोच डाले और लापरवाही से अपनी जेब मे ठूँसते हुए बोला—"मोर्चे के पास पहुँचने पर फिर टाँक लूँगा इन्हे।"

ग्रिगोरी ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और इसके बाद अपने परिवार से बिदा ली।

"माँ मेरी का हाथ हमेशा तुम्हारे सिर पर रहे।" इलीनीचिना ने अपने बेटे को चूमते समय बहुत भाव भरे ढग से कहा—"अब एक तुम्ही तो बाकी रहे हो···"

"अच्छा, देखो···आँसू-वाँसू मत बहाओ···कौन जाने क्या अच्छा-बुरा हो···सफर लम्बा है।" ग्रिगोरी ने काँपती हुई आवाज मे कहा और अपने घोडे की ओर बढा।

नताल्या, इलीनीचिना का काला तिकोना रूमाल सिर पर डालकर बाहर निकली और फाटक के पार तक गई। बच्चे उसकी स्कर्ट से लिपटे रहे। उनमे भी पोल्युशका इस तरह सिसकने लगी कि धीरज बँधाना कठिन हो गया। होते-होते आँसुओ से उसका गला रुँधने लगा और वह माँ से मिन्नत करती हुई बोली—"पापा को मत जाने दो··· पापा को जाने मत दो, माँ·· वे लड़ाई मे मार डाले जायेंगे···पापा, तुम लड़ाई में मत जाओ।"

मीशात्का के भी होठ फडके, पर वह रोया नही। उसने बड़ी हिम्मत से मन पर काबू रखा और नाराज होकर नन्ही-मुन्नी बहन से बोला—"ढरके मत बहा···पगली कही की। लडाई मे हर आदमी नही मर जाता।"

बाबा के शब्द उसके अन्तर मे गहराई से अंकित रहे। बाबा ने कभी कहा था कि कज्ज़ाक कभी नही रोते और कज्जाको की आँखों मे आँसू आने से बडी शर्म की बात और कोई दूसरी नही।

इस पर भी जब ग्रिगोरी घोडे पर सवार हुआ और उसने मीशात्का को ऊपर उठाकर चूमा तो बच्चे को पापा की गीली पलक देखकर बडा ही अचरज हुआ। इसके बाद उसके धैर्य का बाँध ढह गया और आँसू आँखो से बरसात की बूंदो की तरह टपाटप चूने लगे। उसने पिता के सीने और सीने के चमडे की पट्टियो मे मुंह छिपा लिया और अधीरता से बोला—"बाबा जाएँ और लडे···हमे उनकी जरूरत नही—पर, मैं नही चाहता कि तुम, पापा··।"

ग्रिगोरी ने बेटे को सावधानी से जमीन पर उतारा, अपने हाथ के पिछले हिस्से से उसकी आँखो के आँसू पोछे और घोडे को हलके से सनकारा।

अब तक जाने कितनी बार ग्रिगोरी घोडे पर सवार होकर घर से बिदा हुआ था और उसका घोडा हवा से बातें करता दूर चला गया था। अब तक जाने कितनी बार उसने बने-बनाये रास्ते और बिना रास्तो वाला स्तेपी मँझाया था। इस तरह जाने कितनी बार वह उस मोर्चे पर पहुँचा था, जहाँ मनहूस मौत कज्जाको पर अपनी मुहर मारती थी और जहाँ कज्ज़ाक गीत के अनुसार हर दिन, हर घटे दहशत और दर्द का बाजार गर्म रहता था। लेकिन, उस दिन सुबह की सुहानी बेला मे भी वह जिस भारी मन से गाँव से बिदा हुआ, वह उसके लिए एकदम नया अनुभव रहा।

उसके मन पर जाने कितनी धुँधली-धुधली-सी अटकलो का बोझ रहा। उनके कारण वह जाने कितना चिंतित रहा और जाने कितनी-कितनी बाते पहले से ही सोचता रहा। इस तरह काठी पर

रासें टिकाए उसने पहाडी की चोटी तक की मजिल तय की। परन्तु फिर जहाँ गर्द से नहाई सडक हवा-चक्की की तरफ कटी, उसने गर्दन मोडी। केवल नताल्या फाटक के पास खडी दीखी। समीर के ताजा झोके काला मातमी रूमाल उसके हाथ से छीन-छीनकर भागते रहे।

हवा बादलो पर कोडो पर कोडे जमाती रही। बादलो के मुँह झाग-झाग होते रहे। और वे आकाश के जमे हुए, नीलम के तालाब में आगे-ही-आगे बढते गये। क्षितिज के चचल चक्के पर धुध थरथराने लगी। घोडे कदम-चाल से बढते गये। प्रोखोर काठी पर हिलते-डुलते औंघा गया। ग्रिगोरी ने दाँत भीचते हुए, बार-बार पीछे मुडकर देखा तो सरपत के हरे झुरमुट, झटके से मोड लेती दोन का हवा मे फडफडाता रेशमी रिबन, और हवाचक्की के धीरे-धीरे घूमते पाल उसे थोडी देर तक नजर आते रहे। फिर रास्ता तेजी से दाईं ओर को मुड गया। इसके साथ ही झाड-झाडियो से भरा किनारा, दोन और हवाचक्की आदि सभी कुछ अनाज के रौदे हुए खेतो के पीछे अदृश्य हो गया।· ग्रिगोरी सीटी बजाने लगा। उसने घोडे की पसीने की झलाझल बूँदो से भरी भूरी गर्दन पर नज़र जमा ली और फिर एक बार भी पीछे मुडकर नही देखा।······

उसे खयाल आया—'मौत ले जाए इस लडाई को! पहले लडाई चिर के किनारे-किनारे चली, फिर दोन के तटो पर बढी, और अब यह बिजली कौंधेगी खोपर के ऊपर, मेदवेदित्सा के ऊपर और बुज़ुलुक के ऊपर। क्या फर्क पडता है! दुश्मन कही भी मुझे अपनी गोली का शिकार बना सकता है और मैं कही भी ढेर हो सकता हूँ।"

: ६ ·

लडाई उस्त-मेदवेदित्स्काया के जिला केन्द्र के आसपास चलती रही। ग्रिगोरी गर्मी वाली सड़क छोड़कर हेतमान की चौडी सडक पर मुड़ा कि तोपों की गरज की हलकी-हलकी आवाज़ सबसे पहले उसके कानों मे पडी।

इस चौड़ी-बडी सड़क पर जहाँ-तहाँ ऐसे निशान नज़र आए,

जिनसे लगा कि कम्यूनिस्ट हडबडाकर पीछे भागे है। दो पहियो वाली गाडियो और चार पहियो वाली, एक-एक सीट की ब्रित्स्काएँ बीच-बीच मे पडी मिली। एक खास झोपडी के पार खड्ड मे एक तोप खडी दीखी। दूसरी तोप के गोले ने उसका धुरा तोड दिया और नली मोड दी थी। अगले भाग से जुडे बम तिरछे होकर टुकडे-टुकड़े हो गये थे। खड्ड से आधे वर्स्ट की दूरी पर खार से भरे दलदल की बौनी घूप से झुलसी घास पर फौजियो की लाशे पडी थी। इनके बदनो पर खाकी कमीज़ और पतलून, पिडलियो पर कसी हुई पट्टियो और पैरो मे भारी नाल जडे जूते थे। ये सारे लाल सैनिक थे, कज्जाक-घुडसवारो की पकड मे आ गये थे और उन्होने इन्हे काटकर फेक दिया था।

इन लाशो की बगल से गुजरते ही यह चीज ग्रिगोरी की समझ मे फौरन ही आ गई। फौजियो की चिकटी कमीज़ो पर खून की धारे सूख गई थी। फिर यह कि पडे वे यो थे जैसे कि हँसिये से कटी घास का ढेर लगा हो। हाँ, कज्ज़ाको ने लाल फौजियो के कपड़े न उतारे थे। शायद उन्हे दुश्मन का पीछा करने की जल्दी थी और यह काम ज्यादा जरूरी था।

मगर, एक कज्जाक भी हॉथर्न की एक झाडी के पास पडा हुआ था। उसके पैर फैले हुए थे और उसके पतलून की लाल पट्टियाँ दूर से नजर आ रही थी। थोडी दूर पर लाख के हल्के रग का एक घोडा पडा था। उसकी काठी पुरानी और टूटी-फूटी थी और उसके उभरे हुए हिस्से गेरू से रगे हुए थे।

ग्रिगोरी और प्रोखोर के घोडे थकान महसूस करने लगे। चारे-दाने का समय हो चुका था फिर भी ग्रिगोरी ने इस जगह रुकना ठीक न समझा। क्योकि कुछ ही दिन पहले वहाँ लडाई हो चुकी थी। एक वर्स्ट का फासला तय करने के बाद उसने घोडा एक नाले मे उतारा और रास खीचो। पास ही एक ताल नजर आया। उसके बाँध की बुनियादे तक बह गई समझ पडी। प्रोखोर ढहते और चटखते कगार की तरफ बढ़ा। लेकिन फिर अचानक ही लौट पड़ा।

"क्या बात है ?" ग्रिगोरी ने पूछा ।

"जरा घोडा और पास लाओ और देखो ।"

ग्रिगोरी ने अपना घोडा बाँध की तरफ बढाया तो एक मुर्दा औरत कीचड मे पडी देखी । औरत का चेहरा उसकी गहरे रग की स्कर्ट के निचले सिरे से ढका लगा । धूप से सँवराई पिंडलियो और गढो से भरे घुटनो वाले उसके पैर बड़ी ही बेहयाई और बेहूदगी से फैले दीखे । बायाँ हाथ पीठ के नीचे दबा और ऐंठा रहा ।

ग्रिगोरी तुरन्त ही घोड़े से उतरा, अपनी टोपी उतारी और स्कर्ट से औरत का बदन ढक दिया । जवानी से भरपूर, साँवला चेहरा मृत्यु के बाद भी प्यारा लगा । दर्द से तनी भौहो के नीचे अधमुँदी आँखो की पुतलियाँ हलके-हलके चमकती रही । कोमल चेहरे पर भिचे हुए दाँत सीपियो-से दमकते रहे । गाल पर झूलती बाल की एक खुशनुमा लट घास पर दबी रही । मौतगालो पर, उडने वाली, केसरिया पीली झाइयाँ धुनने मे व्यस्त दीखी और उतावली चीटियाँ वहाँ रेंगती मिली ।

"कुत्ते के पिल्लो ने कैसा हुस्न खाक मे मिलाकर रख दिया !" प्रोखोर धीमे से बोला, एक क्षण शात रहा और फिर ज़ोर से थूकते हुए कहने लगा—"आगे बढो ईसा के लिए ! मुझसे यह नज़ारा अब और देखा नही जाता । मेरा दिल गडबडाता है ।"

"हम दफना दें इस औरत को·· क्या खयाल है ?" ग्रिगोरी ने पूछा ।

प्रोखोर ने तड से कहा—"अभी रास्ते मे जितने मुर्दे मिलेंगे उन सबको दफनाना हमारा काम होगा ?···कुछ बूढे खूसटो को यागोदनोये मे दफनाया, और अब इस औरत को यहाँ दफनाना पडेगा ! ···अगर हमने तमाम लाशे दफनाने का ठेका ले लिया तो हाथ मे घट्टो के लिए जगह न रह जाएगी···वैसे, अगर यह इरादा हम कर ही लें तो सवाल यह है कि कब्र किस चीज़ से खोदें ? तलवार से तो क़ब्र खोदी नही जाती, मेरे भाई ! और, धूप से तपी हुई ज़मीन है कि दो फुट की गहराई तक पत्थर की तरह कडी है ।"

यानी उसे वहाँ से भागने की ऐसी जल्दी रही कि उसने अपने

बूट तक रकाबो में मुश्किल से ही अटकाए।

वे दोनों एक बार फिर पहाडी पर बैठे और फिर किसी विचार मे डूबे-ही-डूबे प्रोखोर ने ग्रिगोरी से पूछा—"पैन्तेलेयेविच, क्या ख़याल है, क्या अभी तक इन्सान का खून इतना नही बहा कि काफी कहा जाता ?"

"काफी बहा।"

"तो, तुम सोचते हो कि यह लडाई अब जल्दी ही खत्म हो जाएगी ?"

"लडाई तो खत्म तभी होगी जब दुश्मन हमे चूर-चूर कर डालेगा।"

"क्या हँसी-खुशी से भरी जिन्दगी नसीब हुई है हमे! शैतान पर मौत टूटे! ऐसे मे तो जी करता है कि जितनी ही जल्दी दुश्मन हमें चूर-चूर करे, उतना ही अच्छा। जर्मनी की लडाई मे फौजी गोली से अपनी एक उगली उडा लेता था और उसे घर लौटने की इजाज़त मिल जाती थी। मगर, आज अपना हाथ काटकर रख दो, तब भी कोई फर्क नही पडेगा। लडाई तो लडनी ही पडेगी और भेजने वाले मोर्चे पर भेजकर ही दम लेगे···कोई निकम्मा हो, लंगड़ा हो, लूला हो, अधा हो, कोई फर्क नही पडता·· सिर्फ यह है कि उसके दो पैर हिलने-डुलने चाहिये···यही तरीका है लडाई खत्म करने का···इस तरह खत्म होगी लडाई! नेस्तनाबूद हो जाये वे सब-के-सब।" प्रोखोर ने मायूसी से कहा, सडक से घोडा मोडा, नीचे उतरा, कुछ बुदबुदाया और घोड़े का तग ढीला करने लगा।···

आधी रात होते-होते वे उस्त-मेदवेदित्स्काया के पास की झोंपडी पर पहुँचे तो गाँव की सरहद पर तैनात, तीसरी रेजीमेट की एक टुकड़ी ने उन्हे रोका। पर दूसरे ही क्षण कज्जाको ने अपने डिविजनल-कमांडर को पहचाना और कहा—"हुज़ूर, डिविज़नल-स्टाफ ने इसी गाँव मे पड़ाव डाल रखा है और कैप्टन कोपीलोव बडी ही बेताबी से आपका इन्तज़ार कर रहे है।" इसके साथ ही चौकी के बातूनी कमांडर ने पहुँचाने के ख़याल से एक कज्ज़ाक, ग्रिगोरी के साथ किया, और आखिरी बात कहता-सा बोला—"कम्यूनिस्टो ने अपने कदम

बड़ी मजबूती से जमा रखे है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच । मेरा खयाल है कि उस्त-मेदेवदित्स्काया लेने मे वक्त लग जाएगा हमे·· लेकिन, इस पर भी कौन कह सकता है कि···? सुना है कि मोरोजोन्स्काया से ब्रिटिश फौजे आ रही है । आपने कुछ सुना है इस बारे मे ?"

"नही ।" ग्रिगोरी ने अपने घोडे को आगे बढने का इशारा देते हुए कहा ।

ग्रिगोरी स्टाफ के पडाव वाली इमारत के पास पहुँचा तो उसे सभी झिलमिलियाँ पूरी तरह बन्द मिली । उसने घर खाली समझा । पर वह बरामदे मे घुसा कि लोगो के काफी जोर-जोर से बातें करने की आवाज उसके कानो मे पडी । दूसरी ओर, सोने के कमरे की छत के बडे लैम्प की रोशनी सामने पडी तो अभी-अभी बाहर के अँधेरे से आने के कारण उसकी आँखे चौंधिया गईं । साथ ही तम्बाकू की तेज़ और तीखी बास उसके नथुनो मे गडने लगी ।···

"आखिरकार लौट आए तुम !" कोपीलोव ने मेज के ऊपर उमडते नीले बादल को चीरकर बाहर आते और खुशी से खिलते हुए कहा—"वैसे तुमने बडा इन्तज़ार करवाया भाई !"

ग्रिगोरी ने सबका अभिवादन किया, टोपी और बरानकोट उतारा, मेज़ के पास पहुँचा और माथा सिकोडते हुए बोला—"सिगरेट के धुएँ से घर भरकर रख दिया है तुम लोगो ने । साँस लेना मुश्किल है । कोई एक खिडकी नही खोल सकते !"

कोपीलोव की बगल मे बैठे खारलाम्पी येरमाकोव ने मुस्कराकर जवाब दिया—"हमारी नाक तो आदी हो गई है··· हमे तो अब महसूस तक नही होता ।" इस पर ग्रिगोरी ने कोहनी से खिड़की और झिलमिली खोल दी । दूसरे ही क्षण रात की ताज़ा हवा का झोका कमरे मे बरबस घुस आया । लैम्प की लौ भडकी और ठडी पड गई ।

"वाह·· यह धुआँ बाहर निकालने का अच्छा तरीका है । तुमने इस तरह खिडकी क्यो खोल दी आखिर ?" कोपीलोव ने असतोष से कहा—"दियासलाई है किसी के पास ?··· जरा खयाल से···नक्शे के दायें स्याही-भरी दवात है ।"

लोगो ने लैम्प जलाया और खिडकी की सघ भरी। कोपीलोव जल्दी-जल्दी सारी स्थिति बयान करने लगा—"कॉमरेड मेलेखोव, इस वक्त मोर्चे की हालत यह समझो कि लाल फौजियो ने उस्त-मेदवेदित्स्काया अपने हाथो मे कर लिया है और उसे तीन तरफ से कोई चार हजार सगीनबद फौजियो से घेर रखा है। तोपो और मशीनगनो की उनके पास कमी नही है। खाइयाँ कई जगह वे खोद चुके है। दोन के किनारे के ऊँचाई के इलाके उनके कब्जे मे है। जहाँ तक उनकी अपनी बात है, वे सब पहुँच के बाहर तो नही है, लेकिन उन तक पहुँचना आसान ज़रूर ही नही है। जहाँ तक हमारी बात है, जनरल-फितशालोरोव की कमान के डिविज़न, और दो दूसरे अफसरो की एकाएक हमला करने वाली तूफानी टुकडियो के अलावा बोगातिरयोव का छठा ब्रिगेड और हमारी पहली डिवीजन भी आ गई है। लेकिन डिवीजन पूरी नही है। पैदल रेजीमेट गायब है। अब तक उस्त खोपरस्काया के पास कही बतलाया जाता है। पर, घुडसवार टुकडियाँ सभी आ गई है, हालाँकि स्क्वैड्रनो मे लोग पूरे नही है।

"मिसाल के लिए मेरी रेजीमेट के तीसरे स्क्वैड्रन मे इस वक्त सिर्फ अडतीस कज्ज़ाक है।" चौथी रेजीमेट के कमाण्डर दुदारेव ने कहा।

"पहले कितने थे ?" येरमाकोव ने पूछा।

"इक्यानवे।"

"आपने स्क्वैड्रन टूटने क्यो दिया ? आप अपने को कमाण्डर कहते हैं ?" ग्रिगोरी ने त्योरी चढाते और उँगलियो से मेज पटपटाते हुए पूछा।

"यह तो ठीक है·· लेकिन उन्हे रोककर कौन रखता ? वे तो अलग-अलग गाँवो मे बिखरे और फिर घोडो पर सवार होकर अपने गाँव-घर के लोगो से मिलने-मिलाने चल दिए। मगर, वे लोग वापस आ जायँगे। तीन तो आज ही लौट आए।"

कोपीलोव ने नक्शा ग्रिगोरी की तरफ बढाया। अपनी तर्जनी से सेनाओ की स्थिति दिखलाई और बोला—"हमने अभी तक कोई हमला नही किया है। दूसरी रेजीम्ेट कल इस इलाके के खिलाफ पैदल बढी, मगर उसे कोई कामयाबी नही मिली।"

"हमारे बहुत लोग मारे गए ?"

रेजीमेट के कमाण्डर की रिपोर्ट तो यह है कि कल हमारे छब्बीस फ़ौजी या तो मारे गए या जख्मी हो गए। वैसे अब मैं अपनी फौजो का दुश्मन की फौजो से मुकाबला करूँ तो कहना पड़ेगा कि गिनती मे हमारे फौजी ज्यादा है। लेकिन एक तो पैदल सेना की मदद के लिए हमारे पास मशीनगनें काफी नही हैं, दूसरे तोप के गोलो की सप्लाई की हालत अच्छी नही है। हथियारो और लडाई के बाकी सामान के अफसर ने मिलते ही चार सौ गोले और डेढ लाख कारतूस हमारे पास भेजने का वायदा किया है। लेकिन, बात तो यह है कि जब उसे खुद मिलेगा तब वह हमे देगा। यानी तब की तब से है। लेकिन, हमे तो अभी कल ही हमला करना है, और इसीलिए जनरल फितशालौरोव ने अपनी तरफ से हुक्म दे दिया है। उनकी तजबीज़ है कि तूफानी टुकड़ियो की मदद के लिए एक रेजीमेट अलग कर देना चाहिए। इन टुकडियो ने कल हमला बोला और इनके कितने ही फौजी खेत रहे। लेकिन, यह तो कहना ही पडेगा कि लोगो ने दुश्मन के लोहे से लोहा बजाकर रख दिया। खैर, तो फितशालौरोव का कहना है कि हमे मोर्चे का बायाँ बाजू मजबूत बनाना चाहिए और हमला यही से करना चाहिए, समझे! बात यह है कि यहाँ का इलाका ऐसा है कि इस तरफ से दो सौ से तीन सौ कदमो तक दुश्मन की कतारो मे घँसा जा सकता है। उसका ऐडजुटेट अभी-अभी ही यहाँ से गया है। पैगाम लाया था कि जनरल ने कल सवा छ· बजे हम दोनो को बुलाया है। बातचीत होगी कि लडाई की कार्रवाइयो के बीच तालमेल कैसे बिठाया जाए। वह और उसके अफसर इस वक्त बोलशोइ-शेनिन नाम के गाँव मे हैं। फिलहाल, इस वक्त तो सबसे ज़रूरी काम है, सेव्याकोवो से उसकी कुमुक आने के पहले दुश्मन को फौरन ही पीछे ढकेलना और ठेलना। दोन के दूर के इलाके मे हमारी फौजें कोई खास बहादुरी दिखा नही रही।·· चौथी डिविज़न ने खोपर पार कर ली है, लेकिन कम्यूनिस्टो ने सारी जगह लाल फौज के मज़बूत फौजियो से पाट दी है और स्टेशन को जाने वाले सभी रास्ते रोक रखे हैं। लेकिन, इसके साथ ही इसके बीच उन्होने दोन पर पीपो का एक पुल बना लिया है और वे

लडाई का सामान और रिज़र्व फौजें उस्त मेदवेदित्स्काया से जल्दी से-जल्दी हटा रहे हैं।"

"कज्जाको का कहना है कि हमारे दोस्त मुल्कों की फौजें आ रही हैं और रास्ते मे है···क्या यह बात ठीक है?"

"अफवाह है कि कई अग्रेज़ी तोपखाने और टैक चेरनीशेवस्की से इस जगह के लिए रवाना हो गए है। पर पूछा जाता है कि ये टैक दोन के उस पार से, इस पार कैसे लाए जाएँगे। मेरा खयाल है कि इस तरह की बाते सिर्फ टैको के बारे मे की जा रही है, और एक अर्से से हर तरफ चल रही है।"

कमरे मे देर तक सन्नाटा रहा।

कोपीलोव ने अपनी अफसरी, भूरी ट्यूनिक के बटन खोले, अपने भरे हुए, दाढी की खूँटियो से भरपूर गाल हाथो पर टिकाए और विचारो मे डूबे हुए, बुझी हुई सिगरेट चबाने लगा। उसकी काली, गोल आँखे थकान के कारण अधमुँदी हो गईं। रातोरात न सोने का असर खुशनुमा नाक-नक्शे और चेहरे पर साफ नज़र आया।

एक जमाने मे यह व्यक्ति गिरजे से सम्बद्ध स्कूल मे पढाता था। उन दिनो, वह इतवारो को ज़िले के व्यापारियो का मेहमान होता और उनके और उनकी पत्नियो के साथ दाँव लगाकर ताश खेलता। बजाने पर आता तो गिटार बहुत अच्छा बजाता और खुशमिज़ाज सोहबत मे चार चाँद लगाने वाला जवान माना जाता।···

फिर, उसने एक जवान अध्यापिका से शादी कर ली। उसकी ज़िन्दगी एक बँधे-बँधाए साँचे मे ढलती रही, और वह उसी प्रकार ढलती चली जाती, यानी पेशन के वक्त तक वह पढाने का काम एक ढग-से करता चला जाता, परन्तु, विश्व-युद्ध छिडा तो उसका नाम फौज मे लिख लिया गया। फिर, कैडेटो के फौजी कालेज मे उसने ट्रेनिग पाई और इसके बाद एक कज्ज़ाक रेजीमेट के साथ उसे मोर्चे पर भेज दिया गया। वैसे लडाई ने उसके चरित्र या नाक-नक्शे मे किसी तरह का कोई उलट-फेर न किया। उसके पूरे व्यक्तित्व, मधुर चेहरे, तलवार लगाने के ढग और मातहतो से बात करने के लहज़े मे हमेशा कुछ

ऐसा रहा जिससे छोटे कद के बावजूद वह लोगो को बडा ही प्यारा और बुनियादी तौर पर बातहजीब लगा ।

वैसे उसकी आवाज मे फौजियो की कमान वाली आवाज़ का ज़ोर न था ··वर्दी वह यो पहनता था, जैसे कि बोरा हो ··और, मोर्चे पर तीन साल बिताने के बाद भी उसमे फौजी रोबदाब कही से न आया था । देखने से लगता था कि सुयोग की बात है कि यह आदमी फौज मे आ गया है, और सच्चे फौजी के मुकाबले फौजी लिबास से लैस कोई हट्टा-कट्टा शहरी ही ज्यादा है ।···इस पर भी कज्ज़ाक उसका बडा आदर करते थे और कान्फ्रेसो मे वह जो कुछ कहता था, उसे बडे ध्यान से सुनते थे ।

विद्रोही कज्जाको की कमान उसके गम्भीर मस्तिष्क, सहज-स्वभाव और सच्ची बहादुरी की बडी कद्र करती थी । बहादुरी वह लडाई मे एक से अधिक बार दिखला चुका था ।

ग्रिगोरी का पूर्व चीफ ऑफ स्टॉफ, एनसिग्न-क्रूज़ीलिन नाम का एक बे-पढा-लिखा, ज़ाहिल फौजी था और चिर की लडाई मे मारा गया था । उसके बाद स्टाफ कोपीलोव ने सम्हाला और अपने कर्तव्यो का बडी ही समझ-बूझ के साथ पालन किया था । उसे अपने काम मे बडी सफलता मिली थी । इस समय वह हमले की कार्रवाइयो के नक्शे उसी ध्यान से बनाता था, जिस मनोयोग से कभी विद्यार्थियो की कापियाँ सही करता था ।···

इस पर भी ग्रिगोरी का मुँह खुलते ही और जरूरत महसूस करते ही उसने फौजी दफ्तर को उसकी अपनी किस्मत पर छोडा, घोडे पर सवार होकर रेजीमेट की कमान सम्हाली और अपने नेतृत्व मे उसे लडाई के मैदान मे ले गया ।

ग्रिगोरी ने अपने नये चीफ-ऑफ-स्टॉफ के मामले मे पहले तो अपने पहले के बने-बनाए विचारो का सहारा लिया । लेकिन, दो महीने के अन्दर-अन्दर वह उसे और अच्छी तरह जान गया । नतीजा यह कि एक दिन लडाई के बाद उससे दोटूक बात करते हुए बोला—"मैं तो तुम्हारे बारे मे खासी बुरी राय रखता था, कोपीलोव ! लेकिन, अब

समझता हूँ कि मैं गलती पर था। इसलिए चाहता हूँ कि अगर हो सके तो अब तक का मेरा व्यवहार भूल जाओ।"

कोपीलोव मुस्कराया। उसने कोई जवाब नही दिया, पर ग्रिगोरी के इस तरह अपनी गलती मान लेने पर थोडा फूल जरूर उठा।···

उसमे यश की प्यास न थी। राजनीति के मामले मे उसकी धारणाएँ निश्चित न थी। लडाई को वह 'लाज़िमी बुराई' मानता था और इसे जल्द-से-जल्द खत्म कर देना चाहता था। इसीलिए वह उस्तमेदवेदित्स्काया को हथियाने की योजनाओ पर अधिक विचार न कर रहा था। अपने परिवार के लोगो को इधर-उधर से घर बुला रहा था और खुद भी सोच रहा था कि मौका लगे तो महीना-डेढ-महीना जाकर गाँव मे बिताया जाए।

ग्रिगोरी कोपीलोव को बहुत देर तक एकटक घूरता रहा और फिर उठकर खडा हो गया। "अच्छा भाइयो और अतामानो, अब अपने-अपने क्वार्टर पर चलकर सोया जाए। उस्त-मेदवेदित्स्काया के लेने-न-लेने पर बैठकर दिमाग खपाना बिल्कुल बेकार है। यह काम जनरलों का है और वे करेंगे। हम कल फितशालौरोव के पास जाएँगे कि वह हम अक्ल के मारो को थोडी अक्ल दे। लेकिन जहाँ तक दूसरी रेजीमेट का सवाल है, मेरा तो खयाल है कि अब भी हक हासिल है। हमें रेजीमेटल कमाडर दुदारेव को नीचा ओहदा देकर, उससे तमगे, पट्टियाँ वगैरह सभी-कुछ छीन लेना चाहिए।···"

"और खीर का राशन ?" येरमाकोव ने बीच मे बात काटी।

"नही, मैं मज़ाक नही कर रहा।" ग्रिगोरी कहता गया। "हमे उसे आज ही रेजीमेटल कमाडर से स्क्वेड्रन कमाडर बना देना चाहिए, और खारलाम्पी को उसकी जगह दे देनी चाहिए। येरमाकोव, तुम फौरन ही जाकर रेजीमेट की कमान सम्हाल लो। और अगली कार्रवाई के लिए इन्तज़ार करो। कल सुबह तक तुम्हे हमारी हिदायतें मिल जायेंगी। और, कमान सम्हालने का हुक्म तुम कोपीलोव से लिखवाकर, इसी वक्त, साथ ही लेते जाओ। जहाँ तक मेरा दिमाग काम करता है, दुदारेव तो रेजीमेट शायद ही कभी सम्हाल पाए। दिमाग नाम की चीज़ तो उसे जैसे मिली ही नही, और, मुझे डर यह है कि कही वह ऐसा न करे

कि रास्ता खुल जाए और दुश्मन कज़्ज़ाक पर नये सिरे से हमला कर दें। तुम तो जानते हो, पैदल लडाई किसे कहते हैं···लोगो की जानें योही चली जाना कोई बडी बात नही है अगर कमाडर को यह पता न हो कि वह कर क्या रहा है।"

"यह बात ठीक है। मेरा भी खयाल है कि दुदारेव से यह ओहदा छीनकर उसे नीची जगह दे दी जानी चाहिए।" कोपीलोव ने ग्रिगोरी का समर्थन किया।

"लेकिन, येरमाकोव, तुम क्या इस फैसले के खिलाफ हो ?" ग्रिगोरी ने येरमाकोव के चेहरे पर असन्तोष की झलक देखकर पूछा।

"नही · ऐसी कोई बात नही · मैंने तो ऐसा कुछ कहा नही··· क्या भौहे ऊपर उठाने तक की इजाजत नही है यहाँ ?"

"यह तो और भी अच्छा है कि येरमाकोव इस तजवीज के खिलाफ नही है। फिलहाल, र्याबचिकोव इसकी घुडसवार रेजीमेट सम्हालेगा।··कोपीलोव, हुक्म लिख दो और फिर आराम कर लो। सुबह छ बजे उठकर चलेगे और इस जनरल को जरा देखेगे-समझेगे। ···इस वक्त मै चार अर्दली अपने साथ लिये जा रहा हूँ।"

कोपीलोव ने अचरज से आँखे ऊपर की—"इतने अर्दलियो की तुम्हे भला क्या जरूरत ?"

"नुमाइश करनी है। आखिरकार हम कोई छोटे-मोटे लोग तो नही हैं···हम एक डिवीज़न की कमान सम्हालते हैं।" ग्रिगोरी ने हँसकर कन्धे सीधे किये, बरानकोट लटकाया और दरवाज़े की ओर बढा।···

ग्रिगोरी ने न बूट उतारा और न बरानकोट। वह वैसे ही एक शेड के नीचे लेट रहा और घोडे की पीठ पर बिछाया जाने वाला कपडा ओढ लिया। अर्दली अहाते मे बहुत देर तक शोरगुल करते रहे। कही पास घोडे हीमते और मुँह चलाते रहे। धरती दिन की गर्मी से अब भी गर्म रही और उससे ताज़े गोबर और मिट्टी की सोधी-सोधी बास उठती रही। ग्रिगोरी ने औघानीदी के बीच अर्दलियो की आवाज और हँसी के ठहाके सुने और एक कमउम्र अर्दली क लहज़े से ही सब-कुछ समझ

लिया। अर्दली ने अपना घोडा कसा और आह भरकर बोला—"उफ़··· भाइयो···जान परेशान हो गई···अभी देख लो···यह आधी रात का वक्त है, और मुझे एक लिफाफा लेकर कही जाना है। हमारे लिए नीद और आराम दोनो ही हराम है···और तू घोडा है कि शैतान की आँत···खडा रह वैसे ही · उठा, जरा पैरा उठा, फिर देख कि मैं आकर तेरी कैसी मरम्मत करता हूँ।"

और, एक दूसरा आदमी, गहरी, भर्राई आवाज मे बुदबुदाया—"और हम तुमसे परेशान है·· तुम्हारी इस लडाई से हलाकान है। तुमने हमारे सभी अच्छे घोडे अधमरे करके रख दिये ··।" फिर, उसके स्वर मे मिन्नत घुल उठी—"थोडी-सी तम्बाकू दे दो सिगरेट के लिए···क्या कहने है·· क्या शानदार दोस्त हो तुम! भूल गये, बेलयावीन मे मैंने तुम्हे लाल फौजियो के बूट दिये थे···भूल गये न? सुअर हो तुम! तुम्हारी जगह कोई दूसरा आदमी होता तो मुझे ज़िन्दगी-भर याद रखता और एक तुम हो कि एक सिगरेट के लिए तम्बाकू नही निकलती तुमसे।"

लगाम का दहाना घोडे के मुँह मे बजा और दाँतो से लडा। घोडे ने लम्बी गहरी साँसें खीची और दुलकी चाल से उड चला। उसकी नालो की आवाज़ें पत्थर-सी कडी, खुश्क ज़मीन पर गूँजी।

"हम तुमसे परेशान हैं·· तुम्हारी इस लडाई से हलाकान हैं।" ग्रिगोरी ने मन-ही-मन दोहराया, मुस्करा उठा और फिर तुरन्त ही गहरी नीद मे डूब गया। उसने एक सपना देखा···यह सपना वह पहले भी जाने कितनी बार देख चुका था—ठूँठो से भरे भूरे खेत···खेतो मे लाल फौजियो की चलती-फिरती कतारें···पहली कतार वहाँ तक जहाँ तक नज़र जा सके ··उसके पीछे छः या सात दूसरी कतारे···मन को घोट देने वाले सन्नाटे मे पास-ही-पास आते हुए लोग···आकार मे बराबर बढती हुई छोटी आकृतियाँ···

और, फिर ये आकृतियाँ, अपनी राइफल घसीटती, कपडे के हेलमेट पहने, अपने मुँह फैलाए, तेज़ी से और करीब आती दीखी। ग्रिगोरी ने कम गहरी खाई मे लेटे-ही-लेटे अपनी राइफल का घोडा बार-बार दबाया

और गोलियाँ बरसाईं। लाल फौजी लडखडाये और मुँह के बल भहरा-भहराकर गिरे। उसने कारतूसो का नया क्लिप राइफल को सौपा और क्षण-भर को इधर-उधर नजर डाली तो कज्जाक आस-पास की खाई से उछल-उछलकर बाहर आते दीखे। इन कज्जाको के चेहरे डर से पीले लगे। ये लोग मुडे और भाग चले। ग्रिगोरी का दिल जोर-जोर से धडकने लगा। चीखा—"गोली चलाओ।·· सुअर के बच्चो···जा कहाँ रहे हो ? रुको, इस तरह भागो नही।" वैसे तो वह गला फाडकर चिल्लाया, पर उसकी आवाज इतनी धीमी रही कि कुछ सुनाई ही नही पड़ा। ग्रिगोरी बुरी तरह सहम गया, उछला और खडे होते-होते उसने अपनी ओर चुपचाप दौडते आते साँवले चेहरे वाले लाल सैनिक पर आखिरी गोली चलाई। पर निशाना चूक गया।

·· लाल सैनिक कम उम्र न था। उसके चेहरे पर गम्भीरता के साथ-साथ निर्भयता थी। वह हलके-हलके इस तरह दौड रहा था कि पैर ज़मीन से लग न रहे थे। भौहे सिकुडी हुई थी, टोपी सिरे के पिछले भाग पर टिकी हुई थी और बरानकोट के सिरे खुँसे हुए थे।

ग्रिगोरी ने दुश्मन को नजर गडाकर देखा तो उसकी निगाह उसकी चमचमाती हुई आँखो, घुँघराले, छोटे बालो वाली दाढी, पीले गालो, चौड़े बूटो, जरा नीचे झुकी हुई राइफल की नली के छोटे दहाने, और एक लय-तान के साथ उठती-गिरती काली संगीन की नोक पर पडी। वह शब्दो मे न बँध पाने वाले डर से सिर से पैर तक भर उठा। उसने अपनी राइफल का खटका दबाया पर वह तो जैसे जम गया। उसमे हरकत ही न हुई। इस पर उसने घबराकर खटका अपनी जाँघ पर दे मारा। पर नतीजा कुछ न निकला। दूसरी ओर, लाल सैनिक सिर्फ पाँच कदम के फ़ासले पर रह गया, तो ग्रिगोरी मुडा और भाग निकला। सामने पूरे-के-पूरे खेत मे जहाँ-तहाँ लाल फौजी दीख पड़े। पीछा करने वाले की लम्बी साँसें और उसके बूटो की खोखली धमक पीछे से कानो मे आई। उसने बडी कोशिश से अपने जवाब देते पैरो मे ताकत और तेज़ी भरी। आखिरकार वह एक अधउजडी कब्रगाह में पहुँचा और कूदकर गिरी हुई बाड़ पारकर धँसी हुई कब्रो, ऐंठे हुए

झाँसो और छोटी-छोटी मूर्तियो के बीच दौडने लगा। उसे लगा कि थोडी हिम्मत और, और वह खतरे से बाहर। लेकिन, इस बीच पैरो की धमक बिल्कुल पास आ गई और तेज़ हो गई। लाल फौजी की गरम साँसें ग्रिगोरी की गरदन जलाने लगी। बरानकोट के सिरे कही फँसते, अटकते और उसे अपनी ओर खीचने लगे। उसके मुँह से एक अस्फुट-सी चीख निकल गई।

और, ग्रिगोरी की आँखे खुल गईं। उमने अपने को पीठ के बल लेटा पाया। कसे बूटो मे पैर सुन्न मालूम हुए। बदन यो दर्द करने लगा जैसे कि किसी ने उसे उठा-उठाकर पटका हो। 'उफ, ऐसी-तैसी में जाए!' उसने भर्राये हुए गले से कहा, अपनी ही आवाज पर सन्तोष का अनुभव किया और अभी-अभी देखे सपने को चाहकर भी सपना न समझ पाया। फिर, उसने करवट ली, सिर तक बरानकोट खीचा और मन-ही-मन सोचने लगा—'मुझे चाहिए था कि मैं उसे पास आने देता, उसका वार बचाता, राइफल के कुदे से उस पर जवाबी हमला करता, और फिर भाग निकलता···।'

वह एक क्षण तक सपने के बारे मे सोचता रहा और खुश होता रहा कि यह सब उसने सपने मे ही तो देखा, सचमुच तो कोई खतरा सामने है नही। पर सोचने लगा—'कैसा अजब है कि सपने मे हर चीज़ असलियत से दस गुना ज्यादा खूँखार नज़र आती है। ऐसा डर तो मैंने ज़िन्दगी मे कभी जाना ही नही—खतरनाक-से-खतरनाक हालतो मे भी नही!'···

इसके साथ ही वह औघा गया, और उसने अपने सुन्न पैर आराम से फैला लिये।

: १० :

कोपीलोब ने सुबह उसे जगाया—"उठो·· वक्त हो गया···चलना चाहिये···हुक्म के हिसाब से तो छः बजे हमे वहाँ पहुँच जाना चाहिये था।"

·····चीफ-आफ-स्टाफ ने अभी-अभी दाढी बनाई, बूट साफ किए और क्रीज़ किया हुआ साफ पतलून पहना। साफ है कि

वह हडबडी मे था, क्योकि दो जगह निशान थे और गाल दाढी बनाते समय जल्दी मे कट गए थे । वैसे आम तौर से उसके व्यक्तित्व से रोब-दाब टपक रहा था । इस चीज की पहले उसमे कमी रही थी ।···

ग्रिगोरी ने उसे सिर से पैर तक देखा और सोचा—'क्या कहने है ! कैसा बना-ठना है ! हर तरह चुस्त लगना चाहता है । जनरल से मिलने जा रहा है न··'

पर कोपीलोव ने जैसे ग्रिगोरी के मन के भाव भाँप लिए । बोला—"वहाँ ढीली-ढाली शक्ल बनाकर जाना ठीक नही । मेरी बात मानो तो तुम भी ज़रा ठीक-ठाक हो लो ।"

ग्रिगोरी सीधा होते हुए बोला—"मै जैसा हूँ वैसा ही जाऊँगा । क्या कहा तुमने कि हमे छ बजे जाना चाहिए था ? इसका मतलब यह है कि हम दोनो के नाम परवाना आ ही रहा होगा—है न ?"

कोपीलोव ने हँसकर कधे झटके—"भाई, नया जमाना, नए तरीके! जनरल हमसे ओहदे मे बड़ा है । उसका हुक्म मानना हमारा फर्ज़ है । फितशालौरोव जनरल है। वे तो हमारे पास आयेंगे नही ।"

"तुम ठीक कहते हो ·हमने जो किया है, अब वही तो भरेंगे न !" ग्रिगोरो बोला और मुँह-हाथ धोने के लिए कुएँ पर चला गया ।

घर की मालकिन अन्दर दौडी आई। उसने कमर लचकाते हुए जल्दी-जल्दी एक साफ, कसीदेवाला तौलिया निकालकर ग्रिगोरी की ओर बढाया । ग्रिगोरी ने तौलिये से जोर-ज़ोर से रगडा तो चेहरा ठडे पानी के कारण ईंट-सा लाल हो उठा । वह कोपीलोव से बोला—"तुम्हारी बात अपनी जगह बिल्कुल ठीक है । पर, इन जनरलो को एक बात हमेशा-हमेशा अपने दिमाग मे रखनी चाहिए कि क्राति के बाद लोग बदले है । कह सकते हो कि उन्हे नई ज़िन्दगी मिली है । लेकिन ये अफसर आज भी उसी गज़ से नापते हैं । पर, यह चलेगा नही । मुझे तो डर है कि इनका पुराना गज़ बीच से चटखकर कही दो न हो जाए !···इन अफसरो के जोड थोड़े कडे पड़ गये हैं···इनमे थोड़ा तेल पड़ना चाहिए, वरना ये कडकडाकर टूट जाएँगे ।"···

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" कोपीलोव ने अपनी आस्तीन से

फूंककर गर्द उडाते हुए पूछा ।

"मैं कहना सिर्फ यह चाहता हूँ कि उनके काम करने के तरीके वही घिसे-पिटे हैं। मिसाल के लिए कहूँ, मैं जर्मनी की लडाई के पूरे ज़माने मे फौजी अफसर रहा हूँ और मैंने अपना ओहदा खून-पसीना एक कर कमाया है। लेकिन मै जब अफसरो के बीच होता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कि ठिठुरती सर्दी मे सिर्फ पतलून पहने झोपडी से बाहर निकल गया हूँ। उनके बरताव की खुश्की से मैं हिल-हिल उठता हूँ।" ग्रिगोरी की आँखे क्रोध से धधकने लगी । पर ग्रिगोरी, इसका अनुभव किये बिना, और ज़ोर से बोलने लगा ।

कोपीलोव ने खीझकर इधर-उधर देखा और धीरे से बोला—'इतने ज़ोर से न बोलो । अर्दली सुनेंगे ।"

"और, मैं तुमसे पूछता हूँ कि आखिर ऐसा क्यो है ?" ग्रिगोरी ने जरा धीमी आवाज मे कहा—"इसकी वजह तो वे ही है कि मैं श्वेतगार्दों की काली चिडिया बना हुआ हूँ। उनके हाथ हाथ है, पर मेरे हाथ कडे पडकर घोडे के खुरो मे बदल गये है···वे कमरे मे दाखिल होते हैं तो कायदे से, मगर मै कमरे मे घुसता हूँ तो हर चीज़ से टकराता फिरता हूँ। उनके बदन एक-से-एक साबुनो और ज़नाने क्रीम-पाउडरों से मह-मह करते है, पर मेरे बदन से घोड़े के पेशाब और पसीने की बू आती है। वे सब लिखे-पढे और आलिम है, पर मुझे चर्च स्कूल तक की सूरत देखने का मौका नही मिला। उनके लिए तो मै सिर से पैर तक बाहरी और अजनबी हूँ। यही वजह है कि सही हालत यह है। फिर जानते हो, मैं उनसे अलग होता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कि मेरे चेहरे पर मकडी का जाला तना हुआ है और बदन का हिस्सा-हिस्सा कीचड से सना हुआ है। नतीजा यह कि मैं इस गदगी को दूर करने के लिए बिलकुल बैचेन हो उठता हूँ। उसने तौलिया कुएँ के ऊपर लकडी के ढांचे पर टाँगा और टूटी कघी से बाल काढने लगा। धूप की झुलसन से अछूता उसका माथा साँवले चेहरे के मुकाबले कही गोरा लगा। वह शान्त और सधे स्वर मे बोला—"लोग यह बात समझना ही नही चाहते कि पुरानी ज़िन्दगी आज तार-तार

हो गई···घूरे पर पड़ी सड रही है । वे समझते हैं कि हम किसी और मिट्टी के बने हुए हैं, और बेपढा-लिखा, मामूली आदमी, आदमी न होकर जानवर होता है । उनका खयाल है कि मै या मेरे जैसे दूसरे लोग फ़ौजी मामले उनकी तरह समझ ही नही सकते । लेकिन सवाल यह है कि फौजो के कमाडर कौन लोग हैं ? बुदयोनी कहाँ का फौजी अफसर है ? लडाई के पहले सार्जेन्ट था, और उसने ऐसा किया कि स्टाफ के जनरलो के हाथो के तोते उड गए । गुसेलश्चिकोव से ज्यादा नाम बहादुरी के लिए कज़्ज़ाक जनरलो मे और किसी का नही । लेकिन पिछले जाडो मे पतलून समेटते हुए उस्त-खोपर्सकाया से जान छुडाकर भागना पडा उसे । और, जानते हो, उसे खदेडा किसने ? मास्को के ताले बनाने वाले ने, लाल फौज के एक रेजीमेट के एक मामूली-से कमांडर ने । बाद मे कैदी जाने कब तक उसी की बाते करते रहे । कुछ समझे ! और, अब जरा हम बेपढे-लिखे अफसरो की बात करो । क्या वक्त आने पर कज़्ज़ाको की रहनुमाई हमने गए-बीते ढग से की ? और, क्या जनरलो ने हमारी कोई बड़ी मदद की ?"

"खासी मदद की जनरलो ने ।" कोपीलोव ने बात पर ज़ोर देते हुए कहा—'खैर, हो सकता है कि उन्होने कोपीलोव की मदद की हो··· लेकिन मुझे तो उनसे किसी तरह की कोई इमदाद मिली नही, और बिना दूसरो की सलाह सुने मैंने लाल फौजियो के छक्के छुडा दिये ।"

"माना, लेकिन इससे क्या? ···अच्छा, तुम यह बताओ कि तुम फ़ौजी मामलो मे साइन्स को जगह देने मे यकीन रखते हो या नहीं ?"

"रखता हूँ···लेकिन, लड़ाई के मामले मे यही खास बात नही है, मेरे भाई !"

"तो, खास बात क्या है, पैन्तेलेयेविच ?"

"खास बात है वह मकसद जिसके लिए लोग लडते हैं ।"

"हाँ···यह एक दूसरी बात है···" कोपीलोव ने ज़रा हलके-हलके मुस्कराते हुए कहा—"यह तो है···लडाई मे मकसद तो खास चीज़ होती ही है । मगर जो जीतता है, मकसद को समझने का दावा सिर्फ वही

कर सकता है और डुग्गी पीट-पीटकर कह सकता है कि उस चीज़ मे मेरा यकीन है। यह एक सचाई है और इस सचाई की उम्र उतनी ही है, जितनी इस दुनिया की। इसलिए तुम यह साबित करने की कोशिश तो करो नही कि यह बात तुम्हारे अपने दिमाग की खोज है। वैसे मैं हर पुरानी चीज़ का हिमायती हूँ, शानदार पुराने ज़माने का हिमायती हूँ। अगर ऐसा न हो तो न मैं अपनी जगह से हिलकर दूँ, और न लडाई वगैरा मे अपना हाथ उठाकर दूँ। फिर, यह कि जो लोग हमारे साथ है, वे भी ऐसे है जो पुराने हको की हिफाजत के लिए लड रहे हैं और खिलाफ सिर उठाने वालों को हथियारो की मदद से कुचल रहे है। लोगो को इस तरह कुचलने वालो मे तुम भी हो और मैं भी शामिल हूँ। ग्रिगोरी, मैं एक अर्से से तुम्हे समझने की कोशिश करता रहा हूँ मगर समझ नही पाता।"

"अच्छा, बाद मे समझना···फिलहाल तो चलो।" ग्रिगोरी ने कहा और शेड की तरफ बढा।

घर की मालकिन, इस बीच, ग्रिगोरी की हर हरकत देखती रही थी। इसलिए ग्रिगोरी को खुश करने की कोशिश करती हुई बोली— "थोडा-सा दूध ले आऊँ?"

"शुक्रिया, माँ, मगर दूध पीने का वक्त अब मेरे पास नही। बाद मे देखा जाएगा।"

शेड के पास बैठा प्रोखोर-ज़िकोव प्याले का दही चम्मच से निकाल-निकालकर खाता नजर आया। सो ग्रिगोरी को घोडा खोलते देखा तो उसकी आँखे खुली-की-खुली रह गईं। उसने आस्तीन से अपने होठ पोछे और पूछा—"दूर जा रहे हो? मैं साथ चलूँ?"

ग्रिगोरी मन-ही-मन क्रोध से उबल पडा—"अबे, आखिर यह खिलवाड क्या कर रहा है तू? तू अपना काम नही जानता? तुझे नही पता कि मेरा घोडा कसा क्यो खडा है? कौन लायेगा घोडा खोलकर यहाँ? पेटू कही का, जब देखो तब मुँह चलाता रहता है, और, बस! किनारे कर अपना यह दही और चम्मच! सारे कानून-कायदे बेचकर खा गया!"

"लेकिन, तुम इस तरह गरम क्यो हो रहे हो ?" प्रोखोर ने काठी पर ज़रा आराम से जमते हुए, चोट खाए स्वरो मे कहा—"उबलते ही चले जा रहे हो, लेकिन इससे फायदा कुछ नही है। कहाँ के ऐसे लाट-साहब हो तुम ! यानी, लम्बे सफर के पहले जरा मुँह जुठार लिया तो गुनाह हो गया ? इस तरह आसमान सिर पर क्यो उठा रहे हो ?"

"क्योकि तू मुझसे कायदे से बात नही कर रहा, सुअर का बच्चा कही का ! तेरी मुझसे इस तरह बात करने की हिम्मत कैसे पडती है ? हम अभी-अभी जनरल से मिलने जा रहे है, अपनी इन आँखो की खैर मना · निकाल ली जायेगी। बडे अफसरो के मुँह लगने का आदी हो गया है। होश है, मै कौन हूँ और तू कौन है ? सवार हो और अपना घोडा पाँच कदम पीछे रख !" ग्रिगोरी ने फाटक से बाहर निकलते हुए हुक्म दिया। प्रोखोर और दूसरे तीन अर्दली पीछे हो लिए। ग्रिगोरी ने घोडा कोपीलोव के बराबर लाते हुए बात फिर उठाई और हँसते हुए पूछा—"अच्छा, यह बतलाओ कि तुम समझते क्या नही ? मैं तुम्हारी कुछ मदद कर दूँ ?"

ग्रिगोरी की बात के लहजे का मजाक और सवाल का ढग कोपीलोव की समझ की पकड मे नही आया। उसने मामूली ढग से जवाब दिया—"मेरी समझ मे यह नही आता कि इस पूरी बाजी मे तुम्हारा अपना मुहरा कहाँ है। एक तरफ तो तुम पुराने निजाम के लिए लडते हो, दूसरी तरफ दोटूक बात कहने के लिए माफ करना—बोलशेविको के साँचे मे ढले-ढले-से नजर आते हो !"

"मैं बोलशेविक किधर से हूँ ?" ग्रिगोरी के चेहरे पर बादल घिर आये और वह काठी पर जमे-ही-जमे हिल उठा।

"मैं यह नही कहता कि तुम बोलशेविक हो···लेकिन, बोलशेविक से मिलते-जुलते तो हो ही।"

"यह कैसे ?"

"यह ऐसे कि एक मिसाल लो···तुम अभी अफसरों और उनके रुख की बात चला रहे थे। यह बतलाओ कि तुम उनसे चाहते क्या हो ? उन अफ़सरो को भी छोड़ो, तुम मोटे तौर पर चाहते क्या हो ?" कोपीलोव

ने मधुर ढग से हँसते और अपने चाबुक से खिलवाड करते हुए पूछा। पीछे-पीछे आते और काफी जोर-शोर से बहस करते अर्दलियो को मुड-कर देखा और आवाज़ ऊँची उठाई—"तुम्हे बुरा लगता है, क्योकि वे तुम्हे अपने बराबर नही समझते·· तुम्हे बुरी निगाह से देखते हैं। लेकिन ज़रा सोचोगे तो तुम्हे लगेगा कि वे अपनी जगह बिल्कुल दुरुस्त हैं। यह सही है कि तुम एक बड़े अफसर हो। मगर, यह तो एक मौके की ही बात है कि तुम आज इस ओहदे पर हो। माफ करना, अफसरो की वर्दी पहनने पर भी हर तरफ से गँवार कज्ज़ाक लगते हो। कोई तौर-तरीका तुम्हें नही आता। बातचीत का ढग तुम नही जानते। तुममें कुछ भी तो ऐसा नही है जो पढे-लिखे आदमी मे अपने-आप होता है। मान लो कि सभी कायदे के लोगो की तरह तुम नाक रूमाल से नही पोछते, बल्कि छिगुलिया और अगूठे से पोछते हो। खाते समय हाथ जूतो पर या बालो मे पोछ लेते हो। मुँह-हाथ धोने के बाद घोडे पर बिछाये जाने वाले कपडे के इस्तेमाल मे तुम्हारा जी नही बिदकता। तुम अपने नाखून या तो दाँत से कुतर लेते हो, या तलवार के सिरे से काट लेते हो ! अब एक इससे भी बदतर मिसाल दूँ—पिछले साल कारगिन्स्काया मे मैंने देखा कि तुम एक पढी-लिखी औरत से बात करते रहे और साथ-साथ उसी के सामने खडे-खड़े पतलून के आगे के बटन बद करते रहे।"

"यानी, तुम्हारी अक्ल से अच्छा यह होता कि मैं पतलून के आगे के बटन खुले-के-खुले रहने देता ?" ग्रिगोरी ने उदास मन से मुस्कराते हुए पूछा।

दोनो के घोड़े बराबर-बराबर आगे बढते रहे कि उसने कोपीलोव और उसके मधुर चेहरे को कनखो से देखा और खीझ से भर उठा।

"बात यह नही है।" कोपीलोव अपनी बात पर बल देते हुए बोला—"तुम सिर्फ पतलून पहने पैरो मे जूते बिना डाले किसी औरत से बात ही कैसे कर सके ? तुमने तो जैकेट तक बदन पर नही डाली। वैसे ये बाते छोटी और मामूली है, लेकिन इनसे यह तो पता चलता ही है कि तुम आदमी कैसे और किस तरह के हो···कैसे समझाऊँ

तुम्हे मैं यह बात ?"

"क्यो, आसान-से-आसान ढंग से समझा दो।"

"तो, यह समझो कि ये सारे काम गँवार-से-गँवार आदमी करता है। और, फिर, तुम बातें कैसे करते हो ? हद है ! 'क्वार्टर' को 'कुआ-रटर', 'निकासी' को 'निकाशी' और 'साफ है कि' को 'शाफ है कि' कहते हो। यही नही, सभी बेपढे-लिखे लोगो की तरह तुम्हे भी बाहरी ज़बानो के बजने वाले लफ्जो का ऐसा नशा है कि बस ! तुम उन्हे वक्त-बेवक़्त रटते फिरते हो और ऐंठ-ऐंठकर बोलते हो ! स्टाफ कान्फ्रेंसो मे जब 'सधिभग,' 'प्रबध' और 'केन्द्रीयकरण' जैसे बडे-बडे लफ्ज़ इस्तेमाल किए जाते है तो तुम तारीफ से भरकर बोलने वाले की तरफ एकटक देखते रह जाते हो। मैं तो कहूँगा कि तुम्हे शायद उससे डाह तक होने लगती है।"

"अब तुम बकवास कर रहे हो।" ग्रिगोरी ने जोर से कहा और उसके चेहरे से खुशी टपकने लगी। उसने घोडे के कानो के बीच का हिस्सा थपथपाया, और अयाल के बालो मे उँगलियाँ गडाकर उसकी गरम, रेशमी खाल सहलाई। बोला—"चालू रखो···अपने कमाण्डर को रगडने मे किसी तरह की कोई कोताही न करो।"

"तुम भी खूब हो ! तुम्हें रगडने की भला मुझे क्या ज़रूरत ?" यह तो तुम्हे खुद ही समझना चाहिए कि इन सभी मामलो मे तुम्हारी कोर खासी दबती है, और फिर तुम्हे अफसोस होता है कि अफसर तुम्हारे साथ बराबरी का बरताव नही करते। जहाँ तक तौर-तरीकों और लिखाई-पढाई की बात है, तुम काठ के उल्लू हो।"

अतिम शब्द अनजाने ही कोपीलोव के मुँह से निकल गए। वह फौरन ही सिटपिटा गया, ग्रिगोरी के आपे से बाहर हो जाने की कल्पना से डरा, उसके क्रोध की भयकरता से परिचित होने के कारण उसे तेज़ी से सिर से पैर तक देख गया और फिर एकदम आश्वस्त हो उठा। ग्रिगोरी काठी पर पीछे की ओर तनते हुए चुपचाप हँसता रहा और गलमुच्छो के नीचे उसके दाँत चमकते रहे। इस पर कोपीलोव को इतना आश्चर्य हुआ और ग्रिगोरी की हँसी ऐसी सक्रामक साबित हुई

कि वह खुद भी ठठाकर हँस पड़ा। कहने लगा—"यह तो तुम हो! दूसरा कोई समझदार आदमी होता तो ऐसी लानत-मलामत पर रो देता, लेकिन तुम हो कि घोडो की तरह हिनहिनाकर सारी बात हवा मे उड़ाए दे रहे हो ··तुम्हारा राज़ मेरी समझ मे तो आता नही।"

"तो, तुम मुझे काठ का उल्लू समझते हो? ऐसा है तो तुम्हारी ऐसी-तैसी!" कोपीलोव के गम्भीर होते ही ग्रिगोरी बोला—"मुझे तुम्हारे तौर-तरीके और रस्म-रिवाज नही सीखने। बैल हाँकते वक़्त वे मेरे काम आने से रहे। अगर आसमान वाले ने मुझे काफी उम्र तक जीता रखा तो वास्ता मेरा बैलो से ही पडेगा न। उस वक्त क्या मैं हज़ार बार सलाम दागूँगा, उनकी इज्जत मे झुकूँगा और कहूँगा, 'सुनिए न मेरी बात मान लीजिए, गजे साहब!···माफ कीजिए, चितकबरे जी!··· इजाज़त दीजिए कि मैं आपका जुआ जरा सीधा कर दूँ।···भाई, जनाब-बैल-साहब, बडे ही अदब से अर्ज़ करना चाहता हूँ कि आप मेहरबानी करें और लीकें न तोडें।'·· बैलो के साथ तो रुखाई से ही पेश आना पडता है—'हे···हट···हट उधर से···अबे ओ ··आगे बढ़। तुम्हारे 'खेन्द्रीयकरन' के बारे मे बैल यही तक समझते है।"

"'खेन्द्रीयकरन' नही बल्कि 'केन्द्रीयकरण'" कोपीलोव ग्रिगोरी को सही करते हुए बोला।

"अच्छा, 'केन्द्रीकरन' सही। लेकिन, मैं तुम्हारी एक बात नही मानता।"

"वह कौनसी बात है?"

"वह यह कि मैं काठ का उल्लू हूँ। मैं तुम्हारी निगाह मे काठ का उल्लू हो सकता हूँ। पर, तुम जरा ठहरो, मुझे वक्त दो और लाल फौजियो से मिल जाने दो। फिर देखना। मैं उनकी निगाह मे सीसे से ज्यादा वज़नी ठहरूँगा और फिर तुम तौर-तरीको वाले, पढे-लिखे मुफ्तखोरो की खैरियत इसी बात मे होगी कि तुम गलती से भी मेरे हाथ न पड़ जाओ, वरना मै तुम्हारे कलेजे और अतड़ियाँ-पतडियाँ निकालकर ज़मीन पर रख दूंगा।" ग्रिगोरी ने आधी हँसी और आधी गम्भीरता से कहा। इसके बाद उसने अपने घोडे पर हाथ रखा कि वह

दुलकी उडा चला और हवा से बाते करने लगा।

इस बीच दोन के किनारे, सन्नाटे के बारीक तानो-बानो के बीच सबेरा इस तरह आया कि हलकी-से-हलकी आवाज़ ने उसे चौका दिया और गूँजो को हाथ झकझोरकर जगा-जगा दिया। मैदान मे केवल बुलबुलो और बटेरो के स्वरो का राज्य रहा, पर आस-पास के गाँवो से उभरती आवाज़े बडी-बडी फौजो के इधर-उधर आने-जाने का पता देती रही। रास्तो की लीको पर तोपगाडियो और लडाई के सामानो वाली गाडियो के पहिये खडखडाते रहे। कुओ के पास घोडे हिनहिनाते रहे। पैदल कज्जाक फौजियो के पैरो की धमक धीमी रही। मोर्चे पर खाने की चीज़ो के साथ, दूसरी जरूरी चीजे पहुँचाने वाली गैर-फौजी सवारियाँ आवाज़ करते हुए आगे बढती रही। फौजी बावर्चीखानो से जुनरी के दलिये, लॉरेल के पत्तियो से भरे डिब्बाबद गोश्त और अभी-अभी तैयार की गई रोटी की प्यारी-प्यारी-सी बास उमडती रही।

खुद उस्त-मेदवेदित्स्काया के नीचे दोनो तरफ की राइफले गोलियाँ उगल-उगलकर सवाल-जवाब करती रही। तोपो की गरज जब-तब ही खोखले ढग से गूँजती रही। पता चला कि लडाई अभी-अभी शुरू हुई है।

जनरल फितशालौरोव नाश्ता करता रहा कि सयानी उम्र के, परेशान-से ऐडजुटेंट ने सूचना दी—'पहली बागी-डिविज़न के कमाण्डर मेलेखोव और स्टाफ़ डिविज़न चीफ कोपीलोव···'

"उन्हें मेरे कमरे मे बिठा दो।" फितशालौरोव ने अडो के छिलको से भरी अपनी तश्तरी, अपने बडे-बडे, गाँठ-गँठीले हाथो से एक तरफ खिसकाते हुए कहा, इत्मीनान से गिलास का ताज़ा दूध पिया, नैपकिन की सफाई से तह की और मेज से उठ खडा हुआ।

गैर-मामूली कद और सयानी उम्र का भारी-भरकम शरीर का वह व्यक्ति, टेढे-मेढे कर गहने वाले दरवाज़े और धुँधली छोटी खिडकियो के छोटे कज्ज़ाक कमरे मे बहुत ही ज्यादा लम्बा-चौडा लगा। खोखले ढग से खाँसते और अपने बुरी तरह चुस्त वर्दी के ऊँचे कॉलर ठीक करते हुए जनरल दूसरे कमरे मे गया, कोपीलोव और ग्रिगोरी उसे

देखकर खड़े हुए तो उनके सामने अभिवादन मे झुका और अपना हाथ आगे न बढ़ाते हुए उसने उन्हें मेज़ के किनारे आकर बैठने का इशारा किया।

ग्रिगोरी, अपनी तलवार सीधी करते हुए, बडी ही सावधानी से स्कूल के कोने पर बैठ गया, और कनखी से कोपीलोव पर नज़र डालने लगा।

फ़ितशालौरोव वियना की कुर्सी पर बैठा तो वह चरमराई और उसके लम्बे पाये लचते-से लगे। उसने अपने हाथ घुटनो पर रखे और मोटी, धीमी आवाज मे बोला—"मैंने आप लागो को चन्द मसलो को हल करने के लिए यहाँ बुलाया है···बागियो की पार्टीजान-मुठभेड खत्म हो गई है···यानी अब आपकी फौजो की हैसियत एक आजाद यूनिट की नही रहेगी···वैसे सच पूछिये तो वह कभी रही भी नही··· यह बात एक दिमागी अफसाना-भर रही है, और बस! खैर, तो अब आपकी फौजें दोन की फौज मे मिला दी जाएँगी और हम पहले सोच-समझकर, नक्शा बनाकर दुश्मन पर हमला करेंगे···अब वक्त आ गया है कि आप, पहले से सोच-समझकर, नक्शा बनाकर दुश्मन पर हमला करने का राज़ समझें और बिना शर्त के अपने को ऊपरी कमान की मातहत मान ले। अब ज़रा मुझे बतलाइये कि यह हुआ क्या कि कल हमलो के वक्त आपकी पैदल रेजीमेट ने 'तूफानी बटैलियन' का साथ नही दिया? मेरे हुक्म के बावजूद, रेजीमेट ने हमला करने से आखिर इन्कार कैसे किया? भला आपकी इस रेजीमेट का कमाडर कौन है?"

"मैं हूँ।" ग्रिगोरी ने धीमे से कहा।

"तो फिर, मेहरबानी कर आप ही मेरे सवाल का जवाब दीजिये।"

"मैं तो कल तक लौटा ही नही था।"

"और, इसके पहले आप गये कहाँ थे?"

"मैं अपने गाँव गया था।"

"यानी, लडाई के दौरान कोई डिविजनल कमाडर जब चाहे तब मैदान छोडकर घर चल दे, क्यो? डिविज़न न हुई, हुल्लडबाजो की

जमात हो गई ? कितना गिर गया है आदमी ! कैसी अजीब हालत है !" जनरल की आवाज और जोर से गूँजी । बाहर एडजुटेण्ट फुस-फुसाते और एक-दूसरे को देखकर मुस्कराते हुए पजो के बल इधर-उधर टहलते रहे ।

कोपीलोव का चेहरा जर्द पड गया । लेकिन ग्रिगोरी ने जनरल का चेहरा और फूली हुई मुट्ठियाँ देखी तो वह अन्दर-ही-अन्दर गुस्से से इस तरह उबलने लगा कि सम्हालना मुश्किल हो गया ।

फितशालौरोव एकाएक फुर्ती से उछला और कुर्सी का पुट्ठा हाथो से जकडकर चीखा—"तुम फौजी लोगो की कमानें नही सम्हालते, हुल्लड़ बाज लाल-गार्दो की कमान सम्हालते हो । तुम्हारी फौज मे कज्जाक नही इन्सानियत का कोढ जमा है । जनाब मेलेखोव साहब, आपको फौजी डिविज़न का कमाडर न होकर किसी का खानसामा होना चाहिए ···खानसामा ! आपको जूते साफ करने चाहिए···समझे आप ? बतलाइए कि मेरे हुक्म की तामील आखिर क्यो नही हुई ? इसीलिए नही हुई न कि आप मीटिंग नही कर सके, आपस मे बातचीत नही कर सके ? जरा होश मे आइए । यहाँ के हम सब लोग 'कॉमरेड' नही है, और बोलशेविक हथकडे हम चलने नही देंगे । किसी सूरत से चलने नही देंगे ।"

"आप मुझ पर इस तरह चीखिए नही ।" ग्रिगोरी ने भरी हुई आवाज मे कहा और स्टूल को पैर से एक तरफ को ठेलते हुए उठ खड़ा हुआ ।

"क्या कहा आपने ?" फितशालौरोव ने उत्तेजना से हाँफते और मेज़ पर झुकते हुए फटी-सी आवाज़ मे चिल्लाकर कहा ।

"मैंने आपसे कहा कि चीखिए नही मुझ पर !" ग्रिगोरी ने ज़रा और जोर से दोहराया—"आपने हमे बुलाया था तय करने के लिए···" वह क्षण-भर को चुप हो गया, अपनी निगाहे नीची की और जनरल पर निगाह जमाये-ही-जमाये बहुत ही धीमे स्वरो में बोला—"अगर आपने मेरी तरफ उँगली भी उठाई तो मैं ठौर-की-ठौर आपके टुकड़े-टुकड़े करके रख दूँगा ।"

इस पर कमरे मे ऐसा सन्नाटा छागया कि जनरल की लम्बी-लम्बी साँसें

साफ-साफ सुन पडने लगी। मौन काफी खिंचा कि दरवाजा थोडा-सा चरमराया और एक सहमे हुए एडजुटेंट ने सँध से झाँककर देखा। फिर दरवाजा जमाकर बद कर दिया। ग्रिगोरी अपनी तलवार की मूठ पर हाथ रखे खडा रहा। कोपीलोव के घुटने काँपने लगे और उसकी निगाहे दीवार पर नाचने लगी। सहसा ही फितशालौरोव कुर्सी पर धम से ढह पडा, और बूढो की तरह खाँसते हुए बुदबुदाया—"क्या तमाशा है!" इसके बाद ग्रिगोरी की ओर देखे बिना बिल्कुल शात भाव से कहने लगा—"बैठिये, बैठ जाइए! हम दोनो ही बेदम हो गए है। फिर अब तो बात आई-गई भी हो गई। अब मेहरबानी करिए और मेरी बात सुनिए। · आप अपनी घुडसवार फौजे फौरन ही भेज दीजिए ···लेकिन, बैठिए तो·· बैठिए।"

ग्रिगोरी बैठ गया और सहसा ही पसीने से तर हुआ चेहरा अपनी आस्तीन से पोछने लगा।

"आगे सुनिए· सभी घुडसवार फौजें फौरन ही दक्षिण-पूर्व के इलाके की तरफ रवाना कर दीजिए। और बिना जरा भी वक्त खोये हमला बोल दीजिए। इसके लिए अपने दायें बाजू पर चुमाकोव की कमान से जा मिलिये।"

"मैं अपनी डिवीजन को लेकर वहाँ नही जाऊँगा।" ग्रिगोरी ने थकी-सी आवाज मे कहा, रूमाल निकालने के लिए पतलून की जेब मे हाथ डाला, नताल्या का बेल की गोटवाला रूमाल निकालकर भौहे पोंछी और अपनी बात दोहराते हुए बोला—"मैं अपनी डिवीज़न वहाँ नही ले जाऊँगा।"

"आखिर क्यो ?"

"क्योकि फौजो की नई टुकडियाँ बनाने मे बहुत वक्त लग जाएगा।"

"इस सवाल से आपको कुछ भी लेना-देना नही। कार्रवाई के पूरे नतीजे की जिम्मेदारी मुझ पर होगी।"

"इस सवाल से मुझे लेना-देना है···और पूरे नतीजे की जिम्मेदारी सिर्फ एक आप पर ही नही होगी।"

"यानी, आप मेरे हुक्म की तामील करने से इन्कार करते है ?" फितशालौरोव ने बहुत ही कोशिश से अपने को काबू मे रखते हुए भर्राए हुए गले से पूछा।

"जी हाँ।"

"अगर ऐसा है तो आप डिवीजन की कमान फौरन ही छोड दीजिए। अब मेरी समझ मे आया कि कल मेरे हुक्म पर अमल क्यो नही हुआ ?"

"अब आप चाहे जो समझे, पर मैं डिवीजन की कमान छोडूंगा नही··"

"इसके मानी क्या हुए ?"

"इसके मानी वही हुए जो मैने कहा।" ग्रिगोरी होठों-ही-होठो मुस्कराया।

"मैं आपको कमान से अलग करता हूँ।" फितशालौरोव और जोर से बोला। लेकिन ग्रिगोरी दूसरे क्षण झटके से उठ खडा।

"मैं आपका कोई मातहत नही हूँ, जनाब !"

"मेरी नही तो आप किसकी मातहत है ?"

"मैं बागी फौजो के कमाडर कुदिनोव को मातहत हूँ। और, आपसे यह सब सुनकर मुझे खासी हैरत हुई है, क्योकि इस वक्त तो आपमे और मुझमे कोई फर्क है नही। हम लोगो को बराबर हक हासिल हैं। एक डिवीज़न की कमान आपके हाथो मे है तो एक डिवीज़न की कमान मेरे हाथो मे है। इसलिए, फिलहाल बेहतर यही है कि आप मुझे आँखे न दिखलाये।···जब मै स्क्वेड्रन-कमाडर बना दिया जाऊँगा, तब दिखलाइएगा तो आपकी आँखे देख लूँगा···लेकिन तब भी"···ग्रिगोरी ने अपनी छिगुलिया उठाई और क्रोध से जलती हुई आँखो के बावजूद मुस्कराकर बोला—"तब भी आपका चिल्लाना और आँखें दिखलाना मुझसे बर्दाश्त न होगा।"

फितशालौरोव उठा और अपना कडा कॉलर ठीक करते हुए जरा झुककर बोला—"बात खत्म ! आपका जो जी चाहे सो कीजिए। मैं आपके बरताव की रिपोर्ट अभी आर्मी स्टाफ से करने जा रहा हूँ, और आपको

पूरा यकीन दिला सकता हूँ कि इसका नतीजा जल्दी ही आपको देखने को मिलेगा। हमारा मोर्चे का कोर्ट-मार्शल बडी ही चुस्ती से काम कर रहा है इन दिनो।"

ग्रिगोरी ने सारा कुछ सुना, कोपीलोव की आँखो से टपकती निराशा की ओर जरा भी ध्यान नही दिया, टोपी सिर पर औंधाई और तेजी से दरवाज़े की ओर बढा। परन्तु ड्योढी पर ठिठका और बोला—"आप जिससे चाहे, उससे रिपोर्ट करें ··इस तरह आप मुझे डरा नही पायेंगे··· मैं जल्दी से घबरा जाने वाला आदमी नही हूँ···और फिलहाल तो आप अपने हाथ मुझसे ज़रा फासले पर ही रखिये।" वह एक क्षण कुछ बिसूरता खडा रहा और फिर बोला—"क्योकि मुझे डर है कि मेरी डिवीजन के कज़्ज़ाक कही आपके पीछे न पड जाएँ ·।"

उसने ठोकर से दरवाजा खोला और अपनी तलवार लहराता, लम्बे-लम्बे डग भरता बरसाती मे आया।

उत्तेजित कोपीलोव सीढियो पर उससे आ मिला और मायूसी से हाथ मलते हुए धीमे से बोला'—'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, पेन्तेलेयेविच !"

"घोडे लाओ।" ग्रिगोरी बजती हुई आवाज़ मे चीखा और हाथ का चाबुक जैसे मसल-मसल डालने लगा।

प्रोखोर हवा की रफ्तार से सीढियो की तरफ बढा। ग्रिगोरी घोडे पर सवार होकर फाटक से निकला तो मुड़कर देखने लगा। तीन खानसामे जनरल फितशालौरोव को ऊँचे घोडे की शानदार काठी पर बिठलाने मे व्यस्त दीखे।

ग्रिगोरी और कोपीलोव कोई आधे वर्स्ट तक मुँह सिए रहे। कोपीलोव चुप रहा, क्योकि ग्रिगोरी उसे बातचीत करने की मन स्थिति मे नही लगा। साथ-साथ इस समय उससे उलझना भो खतरे से खाली नही समझ पडा। आखिरकार ग्रिगोरी चुप न रह सका और झटके से बोला—"तुम्हे इस तरह साँप क्यो सूँघ गया है ? आखिर तुम मेरे साथ आये ही क्यो ? बाद मे गवाही देने के लिए ? वहाँ तो तुम जान-बूझकर चुप्पी साधे रहे, है न ?"

"खैर, वहाँ की बात न चलाओ···वहाँ तो तुम बिल्कुल ही आपे से

बाहर हो गये थे।"

"और, तुम्हारा वह जनरल आपे से बाहर नही हुआ ?"

"मै कह सकता हूँ कि गलती उसकी भी थी। उसके बात करने का ढँग बहुत ही भद्दा था।"

"मै तो कहूँगा कि उसने बात तो की ही नही। वह तो शुरू से ही इस तरह चिल्लाता रहा, जैसे कि किसी ने उसके चूतड़ मे सुई चुभो दी हो।"

"इस पर भी तुमने कमाल ही कर दिया। अपने से बडे अफसर की हुक्म-उदूली·· सो, भी लड़ाई की हालत मे, मेरे दोस्त···"

"यह कोई बात नही। बुरा बस इतना ही हुआ कि उसने मुझ पर हमला नही किया। अगर कही वह हमला कर देता तो मैं तलवार उसके भेजे के आरपार कर देता।"

"खैर, जो भी सूरत सामने है, उसमे तुम अपनी खैरियत मनाओ।" कोपीलोव ने असन्तोष से भरकर कहा और अपना घोडा धीमा कर कदम चाल मे डाल लिया—"लगता यही है कि कानून-कायदे के मामले मे अब हमे और कस दिया जाएगा। इसलिए अच्छा हो कि तुम खिसक दो।"

दोनो घोडे, दुमो से डाँस उड़ाते और हीसते हुए अगल-बगल चलते रहे। ग्रिगोरी ने मजाक-भरी निगाह कोपीलोव पर डाली और पूछा—"तुम ऐसे सज-बजकर किसलिए आये थे ? सोचा था कि जनरल तुम्हे चाय पीने की दावत देगा ? गुमान था कि वह अपने गोरे हाथ से तुम्हारा हाथ पकडकर तुम्हे चाय की मेज तक ले जाएगा दाढी बनाई, ट्यूनिक साफ की, अपने बूट चमचमाए···मेरे देखते-देखते अपने रूमाल पर थूक-थूककर घुटने के धब्बे साफ किए।"

"अच्छा, खत्म करो बकवास।" कोपीलोव लाल हो उठा।

"और, तुम्हारी सारी मेहनत बेकार गई।" ग्रिगोरी ने खिल्ली उडाई—"यानी, चाय की दावत तो दूर, उसने तो तुमसे हाथ तक नही मिलाया।"

"यह तो कम हुआ···तुम्हारे साथ आया था—होना तो कुछ और ही चाहिये था।" कोपीलोव ने जल्दी-जल्दी कहा, और फिर आश्चर्य

और प्रसन्नता से चीखा—"वह देखो···उधर हमारे साथी नही है···दोस्त मुल्को के लोग हैं।"

छः खच्चर एक अंग्रेजी तोप सँकरी गली से उनकी ओर खीचकर लाते दीखे। तोप की बगल मे एक अंग्रेज अफसर दुमकटे, बादामी भूरे रग के घोड़े पर सवार नजर आया। सबसे आगे वाले खच्चर पर सवार आदमी के बदन पर भी अंग्रेजी पोशाक समझ पडी। लेकिन उसकी टोपी की पट्टी मे रूसी अफसरो वाली कलगी और कधे पर लेफ्टिनेट के झब्बे लगे रहे।

ग्रिगोरी से कुछ कदम दूर से ही उस अफसर ने अपने कॉर्क के हेलमेट पर दो उँगलियाँ रखी, सिर हिलाया और उससे रास्ता देने का अनुरोध किया। मगर जगह इतनी कम निकली कि कसे हुए घोड़ों को उधर से गुजरने के लिए पत्थर की दीवारो से बिल्कुल सट-सट जाना पडा।

ग्रिगोरी के गालो की खाल कॉपी, उसने अपने दाँत पीसे और अपना घोडा सीधे अफसर की ओर बढाया। अफसर ने अपनी आँखें अचरज से ऊपर की और घोडा एक किनारे कर लिया। लोग कठिनाई से उधर से निकले। उसमे भी अंग्रेज को अपना दायाँ पैर, कसे हुए चमडे के बदो मे रख लेना पडा।

तोपचियो के गिरोह का एक व्यक्ति साफ-साफ रूसी लगा। उसने गुस्से से भरकर ग्रिगोरी को सिर से पैर तक देखा। बोला—"मेरा खयाल है कि तुम एक किनारे भी हो सकते थे। क्या जरूरी है कि तुम हर जगह अपनी जहालत की नुमाइश लगाते फिरो?"

"तू अपना घोडा आगे कर और मुँह बद कर ' कुतिया के बच्चे··· वरना मैं तुझे एक तरफ कर दूंगा।" ग्रिगोरी जोर से बोला।

अफसर अपनी सीट पर उचका, मुडा और चीखा—"जरा इस बदमाश को पकड तो लो।"

मगर ग्रिगोरी अपना चाबुक हवा मे नचाते हुए अपना घोडा बहुत आराम से गली के बीच हाँकता रहा। सफाचट मूँछो वाले, थकान से चूर, गर्द और धूल से भरपूर, सभी-के-सभी जवान अफसरो ने उस पर

दुश्मनी-भरी निगाह डाली, मगर उसे रोकने की कोशिश एक ने भी नही की।

फिर, छः तोपोवाला तोपखाना मोड पर जाकर आँखो से ओझल हो गया। कोपीलोव होठ काटते हुए, अपना घोडा ग्रिगोरी के घोडे की बगल मे लाया।

"तुम गधापन कर रहे हो, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ! छोटे-छोटे बच्चो का-सा बरताव कर रहे हो।"

"क्यो, मुझे हर तरह की सीख देने का ठेका किसी ने आपको दे दिया क्या ?" ग्रिगोरी ने तड से उलटकर जवाब दिया।

कोपीलोव कधे झटकते हुए बोला—"फितशालौरोव पर तुम्हारे बरसने की बात मेरी समझ मे आती है। लेकिन उस अग्रेज ने भला तुम्हारा क्या बिगाडा था ? तुम्हे उसका लोहे का टोप पसद नही आया क्या ?"

"हाँ, यहाँ उस्त-मेदवेदित्स्काया के पास सचमुच उतना अच्छा नही लगा···उसे वह कही और पहन सकता था ··मगर, याद रखो कि जब दो कुत्ते एक-दूसरे की तरफ झपट रहे हो, तो तीसरे कुत्ते को बीच मे नही पडना चाहिए, समझे ?"

"हूँ···समझा·· यानी तुम यह नही चाहते कि बाहर के मुल्कों के लोग बीच मे पडे ? लेकिन मुझे लगता है कि गर्दन फँसी हो तो मदद कोई भी दे, अच्छी लगती है।"

"खैर, तुम खुश हो लो···मगर मैं उन्हे अपनी धरती पर कदम नही रखने दूंगा।"

"तुमने चीनियो को लाल फौजियो के साथ लडते देखा है ?"

"मान लो देखा हो, तो ?"

"तो, क्या यह मामला भी बहुत-कुछ वैसा ही नही है ? तुम जानते हो कि वे भी बाहरी हैं, और वे भी मदद कर रहे है ?"

"उसका इस बात से कोई ताल्लुक नही। चीनी तो लाल फौजियो की मदद को खुद आए।"

"और, तुम्हारा खयाल है कि इन तमाम बाकी लोगो को यहाँ

जबरदस्ती घसीटकर लाया गया है ?"

ग्रिगोरी की समझ मे न आया कि वह जवाब दे तो क्या दे ? वह दिमाग मथता, बहुत देर तक चुपचाप रहा। इसके बाद खीझ-भरी आवाज मे बोला—"तुम पढे-लिखे हमेशा एक ही तरह के होते हो। बर्फ मे कलामुडी खाते खरगोश कीतरह ऐंठते और कलामुंडी खाते हो। मुझे तुम्हारी बात तो गलत गलती है, मगर यह समझ मे नही आता कि तुम्हारी इसे काटूँ तो काटूँ कैसे ? खैर, हटाओ···मुझे बेकार को उलझाओ नही मेरा दिमाग यो भी कुछ कम परेशान नही है।"

कोपीलोव मन-ही-मन कुढकर चुप हो रहा और फिर रास्ते-भर उन दोनो मे आपस मे कोई बातचीत नही हुई। सिर्फ प्रोखोर अपना घोडा उन दोनो के बराबर लाया और उत्सुकता से भरकर पूछने लगा—"ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच, सुनो, इन कैंडेटो ने अपनी तोपो मे कौनसे जानवर जोत रखे थे ? उनके कान गधो के-से थे, मगर बाकी सारा बदन घोडो का-सा था। मुझे तो फूटी आँखो नही सुहाए। क्या कहते हैं इन्हे ? बुरा न मानो···बतला दो···शर्त बद रखी है मैने।"

फिर कोई पाँच मिनट तक प्रोखोर अपना घोडा पीछे-पीछे हाँकता रहा। पर उसे उत्तर कुछ न मिला, तो पीछे हो गया और बाकी अर्दलियो के बराबर आने पर फुसफुसाते हुए बोला—"उनके मुँह से तो बोल नही फूटता, साथियो ! शायद खुद ही सोच रहे है कि ये बेहूदे जानवर दुनिया मे आए कहाँ से ?"

: ११ :

कज्ज़ाक कम्पनियाँ चौथी बार अपनी उथली खाइयो से उभरी। पर लाल फौजियो की मशीनगनें इस तरह ताबडतोड गोलियाँ बरसाती रही कि फिर लेट गईं। दूसरी ओर बाएँ किनारे के जगल मे छिपी लाल फौजो की तोपें तडके से ही कज्ज़ाक पोज़ीशनो और दर्रों मे जमा रिज़र्वों पर बराबर आग उगलती रही।

दोन के किनारे की आसमानी ऊँचाइयो पर तोप के गोलों के टुकड़ो के दूधिया बादल पिघलते रहे और कज्ज़ाक खाइयो की टूटी

कतार से गोलियाँ सर्राटे भर-भरकर भूरी धूल के पर लगाती रही।

दोपहर होते-होते लडाई और भयानक हो गई और पछुआ हवा के झोके तोपो की गरज दूर-दूर ले जाने लगे।

ग्रिगोरी विद्रोही सेना के तोपखाने की एक चौकी पर चढ गया और दूरबीन से लडाई का रुख समझने लगा। उसने फौजी अफसरो वाली कम्पनियो को जान-माल के भारी नुकसान के बावजूद, बार-बार हमले बोलते देखा। गोलियो या तोप के गोलो की मार घनी होते ही ये अफसर नीचे लेट गए और इन्होने अपने मूड गडा लिए। पर मौका मिलते ही उठे और तेजी से दौडकर आगे जा जमे। परन्तु ज़रा और बाईं ओर, विद्रोही पैदल सेना बिल्कुल निष्क्रिय और निकम्मी लगी। इस पर ग्रिगोरी ने येरमाकोव के नाम एक पत्र लिखा और एक आदमी से उसके पास भेज दिया।

आधे घण्टे बाद येरमाकोव गुस्से से उबलता घोडा दौडाता आया, तोपो के पास नीचे उतरा, हाँफते हुए उस खास चौकी की ओर बढा, और दूर से ही हाथ चमकाते हुए बोला "कज्जाक हिलकर नही देते। वे अपनी जगह से टस-से-मस नही होगे। हम तेईस कज्जाक तो इस तरह गँवा चुके, जैसे कि वे कभी इस दुनिया मे आए ही न हो। तुमने देखा लाल फ़ौजियो ने उन्हे मशीनगनो की गोलियो से किस तरह भूनकर रख दिया?"

"अफसर आगे बढ रहे है, और तुम कहते हो कि तुम्हारे फौजी अपनी जगह से हिलने को तैयार नही है··?"

"साथ ही यह भी याद रखने की बात है कि दुश्मन के हर प्लेटून के पास एक-एक हल्की मशीनगन है और कारतूस तो इतने है कि गिनती कौन करे! लेकिन हमारे पास क्या है?"

"ये सब बहाने जरा भी नही चलेगे, अपने कज्जाको को साथ लेकर फ़ौरन धावा बोलो, वरना तुम्हारा सिर धड से अलग कर दिया जाएगा, समझे।"

येरमाकोव ने बुरी-से-बुरी गाली दी, और भागता हुआ टीले से नीचे उतरा। ग्रिगोरी ने दूसरी पैदल रेजीमेंट का नेतृत्व स्वय करने का फैसला किया और येरमाकोव के पीछे-पीछे खुद भी दौड़ चला।

पर हाथर्न की शाखों से सावधानी से ढँकी किनारे की तोप के पास उसे बैटरी-कमाडर ने रोका—"जरा आकर अँग्रेजो के हाथ का करिश्मा देखो, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ! वे लोग अभी-अभी पुल उडाने जा ही रहे हैं। आओ इस टीले के ऊपर चले चले।"

फिर दोनो ने दूरबीन से पीपे का पुल देखा। पुल लाल सेना के इजीनियरो ने दोन के इस पार से उस पार तक खीच दिया था। इस समय पुल पर गाडियो का ताँता बँधा दीखा।

कोई दस मिनट बाद पत्थर के पुल के पार के एक खड्ड से अँग्रेजी तोपो ने गोले बरसाने शुरू कर दिए और चौथे गोले के साथ पुल बीच से फट गया। गाडियो की कतार थम गई। लाल फौजी टूटी-फूटी गाडियो और मुर्दा घोडो को नदी मे झाँकने के काम मे लग गए।

इजीनियरो से भरे चार बजरे दाएँ किनारे से रवाना हुए। पर, पुल के टूटे हुए तख्तो की मरम्मत पूरी होते ही अँग्रेज़ी तोपे फिर गोले बरसाने लगी। एक गोले से पुल तक पहुँचने का बायाँ रास्ता उड गया। दूसरे से पानी की हरी दीवार पुल के ऐन ऊपर तक खिच गई और गाड़ियाँ एक बार फिर जगह-की-जगह जमी रह गईं।

"सुअर के बच्चो के हाथ निशाने के मामले मे गजब के सधे हुए हैं।" ग्रिगोरी के बैटरी कमाडर ने सराहना से भरकर कहा—"अब रात होने तक दुश्मन को पार जाने का मौका न मिलेगा। पुल तो एक लमहा भी साबित बचा रहने से रहा।"

ग्रिगोरी ने दूरबीन लगाए ही पूछा—"लेकिन तुम्हारी तोपों ने साँस क्यो खीच रखी है ? तुम्हे तो अपनी पैदल फौज के हाथ मज़बूत करने चाहिए। लाल फौजी मशीनगनो के ठिकाने यहाँ से बिलकुल साफ नज़र आ रहे है।"

"हम अगर इस वक्त अपनी पैदल फौज के हाथ मजबूत कर सकते तो हमे बडी खुशी होती, मगर हमारे पास तो एक गोला भी बाकी नही है। आखिरी गोला कोई आधे घण्टे पहले दाग दिया गया, और इसके बाद हम पूरी तरह छूँछे हो गए।"

"अगर ऐसा है तो यहाँ जमे क्यो हो ? अपनी तोपे कसो और हवा

साफ करो।"

"मैने कैडेटो से गोले मँगवाए है।"

"वे तुम्हे तोप का गोला नही देगे।" ग्रिगोरी ने जैसे फैसला दिया।

"एक बार वे इन्कार कर चुके है। पर मैने दुबारा माँग पेश की है। हो सकता है कि इस बार उन्हे रहम आ ही जाए और इन मशीनगनो को तार-तार करने के लिए वे हमे दर्जन-दो दर्जन गोले दे ही दें। कोई मज़ाक तो है नही। हमारे तेईस साथियो की जाने जा चुकी है। अभी पता नही कितनी जानें और जाएँगी। वे तो सचमुच बखिया-सी उधेड रहे हैं।"

ग्रिगोरी ने मुडकर कज्जाक खाइयो की ओर देखा तो पास के ढाल पर सूखी मिट्टी रह-रहकर उछली-सी लगी। मशीनगनो की गोलियाँ जहाँ भी गिरी, गर्द उमड चली, जैसे कि कोई अनदेखा हाथ खाइयो के ऊपर एक भूरी रेखा-सी खीच रहा हो। खाइयाँ इस सिरे से उस सिरे तक धुआँ उगलने लग, और धूल के बादल उनके ऊपर लटकने-से लगे।

ग्रिगोरी ने अग्रेजी तोपो की मार और अधिक नही देखी। वह क्षण-भर मशीनगनो और तोपो की अटूट गरज सुनता रहा, फिर ढाल से नीचे उतरा और उसने येरमाकोव को जा पकडा। बोला—"जब तक मैं हुक्म न दूँ, तुम हमला न बोलना। तोपो के बिना दुश्मन को मार भगाना मुमकिन नही है।"

"मैंने भी तो यही कहा था न ?" येरमाकोव ने अपने बिदकते घोडे की पीठ पर जमते हुए, भर्त्सना-भरे स्वर मे कहा, और आग की बौछारो के बीच बेधडक उड़ चला। ग्रिगोरी ने सब-कुछ देखा और चिन्ता से सोचने लगा—'इस शैतान की आँत ने सीधी सडक भला क्यो पकड़ी ? वे लोग मशीनगन की गोलियो से उसे भून डालेंगे। इसे तो यह चाहिए था कि यह खड्ड मे उतरता, पानी के किनारे-किनारे आगे बढता और पहाडी का चक्कर काटकर अपने साथियो से जा मिलता।'

उधर येरमाकोव हवा की रफ्तार से घोडा दौडाता खड्ड की ओर बढा, उसमे पैठा और फिर दूसरी तरफ दूर-दूर तक नजर नही आया।

'तो, बात सही ढंग से उसकी समझ मे आ गई। अब तो वह मजिल तक पहुँच ही जाएगा।' ग्रिगोरी ने चैन की साँस ली और टीले के नीचे लेटकर आराम से सिगरेट रोल करने लगा।

उसके मन मे एक अजीब तरह की अन्यमनस्कता लहरे लेने लगी—"नही, मशीनगनें इस तरह मौत बरसा रही है। ऐसे मे कज्जाको को लेकर मै नही जाऊँगा। करें, करना हो तो फौजी अफसरो की तूफानी-कम्पनियाँ हमला करे। उन्ही को उस्त-मेदवेदित्स्काया हथिया लेने दो।"

इस समय जिन्दगी मे पहली बार, लडाई मे भाग लेने से सीधे-सीधे बचने की बात उसने सोची। इस फैसले मे न तो हाथ बुजदिली का रहा, न मौत के डर का और न जिन्दगियो की बेकार बरबादी का। अभी हाल ही की तो बात है कि न उसने अपने जीवन के साथ किसी तरह की रू-रियायत बरती थी और न अपनी कमान के कज्जाको के जीवन के साथ। लेकिन इस समय सहसा ही जैसा कि कोई तार कही टूट गया। चारो ओर घटती हर घटना की निरर्थकता पहली बार उभर-कर स्पष्ट रूप से सामने आ गई। शायद इसके पीछे कोपीलोव से हुई बातचीत रही···शायद फितशालौरोव से हुई कहा-सुनी शायद दोनों ही बातो ने एक साथ उसे एकाएक अपने पजो मे जकड लिया और उसका मन इस तरह बिगाड दिया। जो भी हो, लडाई की आग से दूर-ही-दूर रहने का उसने पक्का इरादा कर लिया। कुछ मोटे-मोटे ढग से उसे यह भी लगा कि कज्जाको और बोलशेविको के बीच समझौता करना मेरे बस की बात नही है। वैसे समझौता तो मेरा ही उनसे नही हो सकता। मगर यह है कि इन लोगो को, इन फितशालौरोवो को अब मैं बचा नही सकता। ये सारे लोग आत्मा से एक है और दुश्मन है। वे मुझसे बुरी तरह नफरत करते हैं और मैं भी उन्हे इतना ही बुरा समझता हूँ।···और, पुराने विरोधाभास एक बार फिर अपने वीभत्स

रूप मे उसके सामने आ गए ।

'लड़ें···लोग लडे · मैं दूर खडा रहूँगा और तमाशा देखूँगा। फिर डिवीजन से छुटकारा मिलते ही माँग करूँगा कि मुझे पीछे की क़तारो मे भेज दिया जाए·· बहुत-कुछ देखा-सुना-सहा । बहुत हुआ··· भर पाया ।' उसने सोचा । फिर कोपीलोव और अपने बीच की बहस याद आई तो लाल सैनिको की ओर से अनजाने ही सफाई देने लगा—'चीनी लाल फौजियो के पास खाली हाथ आए। इस वक्त वे उनके कधे-से-कधे मिलाकर लडते है, और फौजियो की कुछ नही-सी तनख्वाह के बदले मे अपनी जान हथेलियो पर लिये फिरते है, और फिर तनख्वाह भी क्या है ? भला कोई क्या खरीदेगा उतनी रकम मे ? ताश पर एकाध दाव लग सकता हो तो शायद लग सकता हो ।···इस तरह यह सवाल रकम का नही किसी और चीज का है। लेकिन दूसरी तरफ हमारे दोस्त मुल्क फौजी अफसर, टैंक और तोपे भेजे चले जा रहे है। खच्चर तक भेज दिए है। वाद मे कोठी-भर रूबल माँग लेगे इसी सबके। फर्क यहाँ आता है। ··ठीक है आज शाम को इस मसले पर हम सब फिर बहस करेगे । स्टाफ के दफ्तर मे पहुँचते ही मैं उसे बुलाऊँगा, एक किनारे ले जाऊँगा और कहूँगा—"लेकिन कोपीलोव, फर्क बहुत बडा है···और तुम मुझे इस तरह बेवकूफ बनाने की कोशिश मत किया करो।"

मगर, नए सिरे से बहसा-बहसी जैसे किस्मत मे ही न निकली । उसी दिन तीसरे पहर कोपीलोव घोडे पर सवार होकर चौथी रिज़र्व रेजीमेट के पडाव की तरफ रवाना हुआ । मगर, रास्ते मे एक गोली कही से आ लगी और वह वही ढेर हो गया । ग्रिगोरी को इस मौत की सूचना दो घटे के अन्दर-अन्दर मिल गई । अगले दिन सवेरे, जनरल फिनशालौरोव ने कमान सम्हाली तो पाँचवी डिवीज़न ने उस्त-मेदवेदित्स्काया देखते-देखते ले लिया ।···

: १२ :

ग्रिगोरी की रवानगी के कोई तीन दिन बाद मीत्का-कोरशुनोव

तातारस्की ग्राया ग्रौर सैनिक दड विभाग से सम्बन्धित दो साथी फौजियों को ग्रपने साथ लाया—एक सयानी उम्र का काल्मीक तो दूसरा चालाक किस्म का, मामूली-सा नाटे कद का शराबी कज्ज़ाक। नाम सीलान्ती पेत्रोविच। मीत्का काल्मीक से नफरत-भरे ढग से बात करता, पर कज्ज़ाक के मामले मे ग्रादर बरतता।

जहाँ तक मीत्का का ग्रपना सवाल है, उसने सैनिक-दड-विभाग में रहकर दोन-सेना की कुछ यो ही-सी सेवा न की थी। जाडे मे वह सार्जेन्ट-मेजर बना दिया गया था, बाद मे ध्वजधारी बन गया था ग्रौर इस समय पूरे ग्रफसरी ठाट-बाट से गाँव ग्राया था। दोन के पार सेना के पीछे हटने के बाद वह ग्राराम से रहा मालूम होता था। उसकी, हल्के खाकी रग की ट्यूनिक कधो पर खासी तग हो गई थी। कसे हुए, ऊँचे कॉलर के ऊपर चिकनी, गुलाबी खाल दूर से दमकती थी। नीला पट्टियो वाला पतलून ऐसा चुस्त था कि चूतडो से दो हो गया मालूम होता था। ऊपरी तामझाम उसमे इतना था कि बदनसीबी से भरी क्रान्ति ग्राडे न ग्राती। वह ग्रतामान के लाइफगार्डो मे होता, महल मे रहता ग्रौर महामहिमामय सम्राट् के पावन व्यक्तित्व की रक्षा करता। लेकिन, इतना सब न हो सकने पर भी उसे ग्रपनी ज़िन्दगी से कोई शिकायत न थी। वह ग्रफसरी तक तो पहुँच ही गया था—ग्रौर उसके लिए न वह ग्रिगोरी मेलेखोव की तरह ग्रपनी जान हथेली पर लिये फिरता था ग्रौर न लडाई के मैदान मे बहादुरी दिखलाने के लिए उसने ग्रपने को लापरवाही से खतरो के मुँह मे झोका था। बात यह है कि सैनिक-दड-विभाग की नौकरी के लिए जरूरत कुछ दूसरी चीज़ो की थी, ग्रौर इन गुणो की उसमे भरमार थी। बोलशेविको के साथ या प्रभाव का जिस पर सदेह हो जाता, उसका हिसाब-किताब वह खुद करता ग्रौर इस दृष्टि से दूसरे कज्जाको पर विश्वास न करता। लडाई से पीठ दिखलाकर भागने वालो के मामले मे वह ग्रफसर ज़रा भी न बनता ग्रौर चाबुक या बेंत से उनकी खाल खुद उधेड़ देता। कैदियो से पूछताछ करने या कुछ उगलवाने के मामले मे तो उसका मुकाबला पूरी टुकडी मे कोई न कर पाता, यहाँ तक कि कमाडर खुद कधे

झटकता और कहता—"भाइयो, कहने को जो चाहे सो कहो, मगर कोरशुनोव का जवाब नही है···आदमी हातिम है।"

मीत्का मे एक विशेषता और थी। जब किसी कैदी को गोली से उड़ाना उचित न माना जाता, मगर रिहा कर देना भी वाजिब न समझा जाता, तो उसे बर्च के बेत की सजा दी जाती और यह काम मीत्का को सौप दिया जाता। वह ऐसी सफाई दिखलाता कि पचासवी चोट पर आदमी खून थूक देता और सौवे बेत के बाद कज्ज़ाक दिल की धडकन सुने बिना उसे पूरी तरह निश्चिन्त होकर बोरे मे लपेट देते और चलता कर देते। मीत्का के हाथो मे आकर एक आदमी भी बचकर निकल नही पाता। वह खुद हँसी का ठहाका लगाते हुए कहता, "जितने लाल फ़ौजियो की तकदीरो के फैसले मैने किये है, अगर उन सबके पतलून और ट्यूनिके उतार ली जाती तो पूरे-के-पूरे तातारस्की गाँव के लोगो के बदन ढक जाते।"

मीत्का के स्वभाव मे बचपन से जो निर्ममता थी उसे सैनिक-दड-विभाग मे बिना किसी रोक-टोक के पूरी तरह खुल-खेलने का उचित अवसर मिला और वह दिन-दूनी-रात-चौगनी बढी। नौकरी उसकी ऐसी रही कि उसकी मुलाकात अफसर-वर्ग के गए-बीते लोगो, यानी शराबियो, बदचलन लुटेरो, डकैत और सभी तरह के गिरे हुए लोगो से होती। वे लाल सैनिको के प्रति अटूट घृणा के नशे मे उसे जो कुछ सिखलाते वह सभी कुछ कृषक-सुलभ सरलता से सीखता और पचाता था। दूसरो के खून और दुख-तकलीफो से टूटा कमज़ोर दिल का फौजी अफसर जहाँ न जा सकता वहाँ मीत्का चला जाता, और अपनी पीली, चमचमाती आँख सिकोड़ते हुए मुश्किल-से-मुश्किल काम पूरा कर लाता।

ऐसा था मीत्का और ऐसे मीत्का को कज्ज़ाक यूनिट छोडने के बाद लेफ्टिनेंट कर्नल प्रयानिशनीकोव की टुकडी के सैनिक-दण्ड-विभाग में आसानी और ऐश-आराम से भरी जिन्दगी बिताने का मौका मिला।···

तो, यही अभिमान से चूर मीत्का गाँव आया तो बगल से गुज़रती औरतों के अभिवादन-नमन का उत्तर देना तक उसे अपनी इज्ज़त से

गिरा हुआ लगा। वह अपना घोड़ा, शान से, कदम चाल से बढ़ाता अपने घर पहुँचा। यहाँ अधजले धुएँ से काले फाटक के पास वह घोड़े की पीठ से नीचे उतरा, रास कालमीक को थमाई, तिरछे कदमो अहाते मे दाखिल हुआ और सीलान्ती के साथ घर का चक्कर काटने लगा। उसने, आग के दौरान पिघले, खिड़की के फीरोज़ी शीशे को चाबुक से छुआ और भावना से भर्राई आवाज मे बोला—"लोगों ने राख करके रख दिया। गाँव का सबसे भरा-पूरा घर था। आग लगाई हमारे गाँव के ही मीशकोशेवोइ ने। उसने बाबा को भी मार डाला। खैर, सीलान्ती-पेत्रोविच, अपने गाँव-घर लौटने पर अजीब-अजीब महसूस हुआ है मुझे।" सीलान्ती ने तड से पूछा—"कोशेवोइ खानदान का कोई आदमी जिन्दा है क्या ?"

"कोई-न-कोई तो जिन्दा होना चाहिए···लेकिन, खैर बाद में देखा जाएगा · आओ नताल्या की ससुराल चला जाए।"

सो, वे मेलेखोव-परिवार की ओर बढे तो सडक पर बोगातिर-योव की पुत्र-वधू से यो ही भेट हो गई। मीत्का ने पूछा—"मेरी माँ दोन के पार से अभी लौटी या नही ?"

"मेरा खयाल है कि अभी तो लौटी नही, मीत्री मिरोनइच !"

"मेलेखोव घर पर है ?"

"कौन, बूढे पैन्तेली ?"

"हाँ।"

"वे घर पर ही है···ग्रिगोरी के अलावा सभी लोग घर पर हैं।··· प्योत्र पिछले जाडे मे मार डाला गया। तुमने सुना ?"

मीत्का ने सिर हिलाया और घोडे को दुलकी चाल मे डाल लिया, फिर वह वीरान गली से गुजरा तो उसकी सन्तोष से भरी, बिल्ली की तरह पीली आँखो से अभी ज़रा देर पहले की उत्तेजना का किसी तरह का कोई सकेत न मिला। अन्त मे मेलेखोव का अहाता नियराया तो उसने, जैसे अपने किसी साथी को विशेष रूप से सम्बोधित न करते हुए भी, धीमी आवाज़ मे कहा—"यह है मेरा गाँव और इस तरह यह गाँव मेरी अगवानी कर रहा है। यानी हालत यह है कि मैं किसी

नाते-रिश्तेदार के यहाँ जाऊँ तब पेट भरूँ?·· खैर, कोई बात नही, फिर दिन फिरेगे ।"

दूसरी ओर अपने यहाँ शेड के नीचे, कटाई की एक मशीन की मरम्मत करते पैन्तेली प्रोकोफियेविच ने घुडसवारो को देखा और उनमे भी कोरशुनोव को पहचाना तो लपकता हुआ आया और मेहमानो के स्वागत मे बेत का फाटक खोलते हुए बोला—"आओ··· आओ···आ जाओ, भाई···हमारे यहाँ मेहमान आते है तो बडी खुशी होती है हमे···लौटने पर गाँव तुम्हारी राह मे अपनी पलके बिछा रहा है ।"

"हलो, पापा···सब-कुछ ठीक-ठाक तो है ··सभी लोग सही-सलामत तो है न ?"

"आसमान वाले का लाख-लाख शुक्र···अभी तक तो सभी कुछ ठीक-ठाक है । लेकिन, यह तो अफसरो की वर्दी है न तुम्हारे बदन पर ?"

"हाँ, सो तो है·· मगर तुमने यह क्यो मान रखा है कि सफेद झब्बे पहनने का हक सिर्फ तुम्हारे बेटो को है ?" मीत्का ने आत्म-सन्तोष से भरकर कहा और अपना लम्बा हाथ बूढे की ओर बढाया ।

"मेरे बेटे इन झब्बो के लिए कभी ऐसे बेकल नही रहे !" पैन्तेली प्रोकोफियेविच ने मुस्कराते हुए कहा और घोडो को बाँधने की जगह दिखलाने के लिए आगे बढा ।

मेहमान-नवाज इलीनीचिना ने मेहमानो को खाना खिलाया और फिर बातचीत शुरू हुई । मीत्का ने अपने परिवार का हाल चाल पूछा और चुप्पी साध गया । उसके चेहरे से न गुस्सा टपका और न अफसोस । सिर्फ मामूली ढँग से यह पूछा कि मीशा-कोशेवोइ के यहाँ कोई बाकी भी है या नही ? मालूम हुआ कि मीशा की माँ और बच्चे घर मे हैं । इस पर उसने, दूसरो की निगाह बचाकर, सीलान्ती को आँख मारी ।

फिर मेहमान जाने को खडे हुए तो पैन्तेली ने उन्हें दरवाज़े तक पहुँचाया और पूछा—"अभी रहोगे ?"

"हाँ, शायद दो-तीन दिन रहूँगा।"

"अपनी माँ से मिलोगे ?"

"देखो···"

"और इस वक्त कही दूर जा रहे हो ?"

"हूँ ··जरा यो ही गाँव मे एकाध लोगो से मिलने जा रहा हूँ··· जल्दी ही लौट आऊँगा।"

और, फिर मीत्का और उसके साथी पैन्तेली के यहाँ लौटे भी नही कि गाँव-भर मे अफवाह फैल गई—कोरशुनोव काल्मीको के साथ गाँव आया है और उसने कोशेवोइ खानदान के एक-एक आदमी को तलवार के घाट उतार दिया है।

पर यह बात पैन्तेली के कानो तक न पहुँची। वह लोहार के यहाँ गया, वहाँ से लौटा और कटाई की मशीन की मरम्मत मे फिर जुटा कि इलीनीचिना ने अन्दर से आवाज़ दी—"प्रोकोफियेविच···यहाँ आओ·· जल्दी यहाँ आओ!"

बुढिया की आवाज से साफ घबराहट छलकी। पैन्तेली हैरान होकर घर की ओर लपका।

नताल्या स्टोव के पास खडी दीखी और उसका पीला चेहरा आँसुओ से तर नज़र आया। इलीनीचिना ने आँखो से अनीकुश्का की पत्नी की तरफ इशारा किया और दबी हुई आवाज़ मे पूछा—"तुमने खबर सुनी ?"

"ग्रिगोरी को हो गया कुछ ? आसमान वाले, रहम कर·· उसका बाल बाँका न हो!" पैन्तेली के दिमाग मे एक विशेष विचार कौंध-सा गया। उसका चेहरा उतर गया और हर व्यक्ति के चुप बने रहने पर वह डर गया और एकदम उबल पडा—"मौत ले जाए तुम लोगो को·· फौरन बतलाओ न कि हुआ आखिर क्या है! खबर ग्रिगोरी के बारे मे है ?" फिर, जैसे कि अपनी चीख से निस्सहाय होकर बेंच पर ढह पडा और अपने काँपते हुए पैर सहलाने लगा।

दून्या ने फौरन ही समझा कि पापा को डर है कि हो-न-हो ग्रिगोरी के बारे मे कोई बुरी खबर आई है। वह हडबडाती हुई

बोली—"नही, पापा, बात ग्रिगोरी की नही है। मीत्का ने कोशेवोइ के घर के सभी लोगो को मार डाला है।"

"यानी मार डाला।" पैन्तेली के मन के ऊपर से बोझ-सा हट गया। पर दून्या की बात अब भी उसने पूरी तरह समझी नही। पूछा—"कोशेवोइ के घर के लोगो को मार डाला? मीत्री ने मार डाला?"

अनीकुश्का की पत्नी ही सारी खबर लेकर ग्रिगोरी के यहाँ भागी-भागी आई थी। सो, हकलाती हुई बोली—"ब · ब · ब बाबा, मैं अपने बछड़े की खोज मे कोशेवोइ के घर की बगल से निकली, तो मैंने देखा कि मीत्री के साथ दो घुडसवार अहाते मे घुसे और फिर घर मे दाखिल हुए। मैंने सोचा कि बछडा दूर नही जाएगा बछडो को चराने की पारी मेरी थी···"

"तुम्हारे बछडे की दास्तान से भला मुझे क्या लेना-देना?" पैन्तेली ने नाराज होते हुए कहा।

"तो वे लोग घर मे घुस गये।" औरत सिसकती हुई कहती गई, "और मै खडी रही कि देखूं, अब क्या होता है। मेरे मन ने कहा—इनके इरादे कुछ गडबड मालूम होते है···फिर, तो अन्दर की चीखें और मारपीट की आवाज मेरे कानो पडी। मै तो डर से जहाँ-की-तहाँ कील-सी उठी। फिर, मैंने भागना चाहा और बाढ मे आगे कदम बढाया ही कि पीछे पैरो की धमक हुई। मैंने मुडकर देखा तो मीत्का बुढिया के गले मे रस्सी डालकर उसे ज़मीन पर इस तरह घसीटता नज़र आया जैसे कि वह इन्सान न हो और महज़ कुतिया हो। फिर, मीत्का उसे घसीटकर शेड मे लाया और उस बेचारी ने मुँह तक नही खोला। हो सकता है कि इस बीच बेहोश हो गई हो। दूसरी तरफ, काल्मीक एक धन्नी पर चढ गया, मीत्का ने रस्सी का सिरा उसकी ओर फेका और चिल्लाकर कहा—'खीचो और गाँठ डालकर फदा बना लो।'··· उफ, मेरा दिल कैसा दुखा! मगर उन लोगो ने, मेरे देखते-देखते बेचारी बुढिया का काम तमाम कर दिया, उछलकर घोडो पर सवार हुए और शायद सरकारी दफ्तर की तरफ भाग गए। मेरी डर के मारे घर मे घुसने की तो हिम्मत न हुई, लेकिन मैंने खून दरवाज़े के नीचे से बह-बह-

कर सीढियो पर आते देखा। नीली छतरी वाला न करे कि यह सब ज़िन्दगी मे दुबारा देखना पडे मुझे।"

"क्या शानदार मेहमान हमारे यहाँ आये थे···!" इलीनीचिना ने चुनौती-भरी दृष्टि से अपने पति की ओर देखते हुए कहा।

पैतेली का रोम-रोम क्रोध से उबल उठा। फिर अनीकुश्का की पत्नी ने अपनी कहानी खत्म की तो होठ सिए-ही-सिए वह बाहर निकल-कर बरसाती मे आया।

थोडी देर बाद मीत्का और उसके साथी फाटक पर झलके तो पैन्तेली भचकते हुए उनकी ओर बढा और दूर से ही चीखा—"खबर-दार, घोडे अन्दर मत लाना!"

"आखिर बात क्या है?" मीत्का ने अचरज से पूछा।

"लौट जाओ, उल्टे पैरो लौट जाओ।" पैन्तेली, मीत्का के ऐन सामने पहुँचा और उसकी आँखो मे आँखे डालते हुए दृढता से बोला—"बुरा न मानना, मगर मैं नही चाहता कि तुम यहाँ ठहरो ··बेहतर यही है कि अपना रास्ता लो।"

"हूँ···।" मीत्का ने बात समझी और पीला पड गया—"यानी तुम मुझे अपने घर से बाहर निकाल रहे हो?"

"मैं नही चाहता कि तुम मेरा घर नापाक करो।" बूढे की वाणी में सकल्प तना—"और, आज के बाद फिर कभी मेरी ड्योढी के अन्दर पैर रखने की हिम्मत न करना। हम मेलेखोव खानदान के लोग खून करने वाले कातिलो से रिश्ते नही जोडा करते, समझे।"

"समझा! मगर, तुम तो बडे रहमदिल हो, पापा!"

"और, मुझे लगता है कि तुम यह भी नही जानते कि रहम कहते किसे हैं, क्योकि तुमने औरतो और बच्चो के गले मे फदा डालना शुरू कर दिया है।···उफ ··मीत्का, कैसा गलीज़ धन्धा शुरू किया है तुमने!···अगर तुम्हारे पापा मरे न होते और तुम्हे आज देखते तो सदमे से उनका कलेजा फट जाता।"

"अबे बूढ-बुढ्ढू, तू चाहता है कि मैं उन्हे प्यार से गले लगाता? उन्होने मेरे पापा को मार डाला, मेरे बाबा को तलवार के घाट उतार

दिया और मुझे चाहिए था कि मै बदले मे उन्हे मोहब्बत से चूमता··· है न ? तुम जाओ···तुम खुद जानते हो कि कहाँ ।" मीत्का ने क्रोध से आपे से बाहर होकर घोडे की रास खीची और बेत के फाटक से बाहर निकल गया ।

"इस तरह गालियाँ मत बको, मीत्का···तुम उम्र मे मेरे बेटे के बराबर हो । और, मेरे-तुम्हारे बीच तो कोई तकरार है नही·· ठडे दिल से जाओ यहाँ से ।"

पर, मीत्का का चेहरा और उतर गया और वह चाबुक से धमकाते हुए जोर से चीखा—"मुझे गुनाह करने पर मजबूर न करो । मैं तो नताल्या का मुँह देखता हूँ, वरना तुम्हे दिखलाता ··बडे आए रहम का बाज़ार लगाने·· मै खूब जानता हूँ तुम्हे । मै तुम्हारी रग-रग पहचानता हूँ । मुझे पता है कि किस तरह के आदमी हो तुम ! तुम यहाँ से भागकर दोनेत्स के पार नही गये थे···नही न ? तुम लाल फौजियो से जा मिले थे ·ठीक है न ? यह है तुम्हारी हकीकत । कुतिया के बच्चे, तुम सबको तो कोशेवोइ के खानदान के लोगो की तरह काटकर फेक देना चाहिए। चलो, साथियो ! ··खैर, लगडे, कुत्ते के बच्चे, तुझे चाहिए कि तू चौकन्ना रहे और कभी मेरे हाथो मे न पडे ! पर अगर कभी तू मेरे हाथ आ गया तो फिर तेरी खैर नही । और तेरी मेहमान-नवाजी और खातिरदारी मे हमेशा याद रखूँगा । मैने अभी थोडे वक्त पहले ही खुद अपनो के खिलाफ हाथ उठाया था ।"

पैन्तेली ने काँपते हुए हाथो से फाटक बन्द कर अन्दर से चटखनी लगा दी, भचकता हुआ अन्दर आया और नताल्या की ओर देखे बिना बोला—"मैने तुम्हारे भाई को घर से बाहर निकाल दिया ।"

नताल्या मुँह से कुछ नही बोली । पर, मन-ही-मन उसने पापा की कार्रवाई का समर्थन किया। मगर इलीनीचिना ने फौरन ही क्रॉस बनाया और खुशी से भरी आवाज मे बोली—"उस ऊपर वाले की शान हमेशा बनी रहे ! वह अब कभी इस दरवाज़े पर नही आएगा । नताल्या बेटी, मेरी इन बातो के लिए माफ करना मुझे, लेकिन तुम्हारा मीत्का एक नम्बर का बदमाश निकला है। क्या काम तलाशा है उसने ! जरा देखो

तो, दूसरे कज्ज़ाको की तरह असली फौज मे काम नही करता, फौजियों को सजा देने वालो के साथ घूमता फिरता है। और बूढी औरतो के गले मे फदा डालना और बच्चो को तलवार से काटकर फेक देना, यह क्या कज्जाको का काम है ? ये औरते और ये बच्चे, ये जिम्मेदार है ग्रीशा की हरकतो के लिए ? अगर इस तरह देखो तो ग्रीशा ने जो कुछ किया, उसके लिए लाल फौजियो को तुम्हे मुझे मीशात्का और पोल्युश्का को, यानी हम सभी को टुकडे टुकडे करके फेक देना चाहिए था। लेकिन उन लोगो ने ऐसा नही किया। उनके दिल मे रहम था। नही, मै ऐसी हरकत करने वालो का साथ देने को तैयार नही हूँ।"

"मैने भी तो अपने भाई की हिमायत मे कुछ नही कहा, माँ!" नताल्या ने कहा और रूमाल के कोने से आँसू पोछे।

·· ···मीत्का उसी दिन गाँव से चला गया। बाद मे पता चला कि वह कही कारगिन्स्काया के पास सैनिक-दड-विभाग के सदस्यो से मिला और उनके साथ दोनेत्स प्रदेश की बस्तियो को व्यवस्थित करने के लिए रवाना हो गया। इन इलाको के लोगो पर ऊपरी दोन के बागियो के दमन मे हाथ बँटाने का इल्ज़ाम था।···

परन्तु, जाने के बाद मीत्का पूरे सप्ताह गाँव-भर की बातचीत का विषय बना रहा। अधिकतर लोगो ने कोशेवोइ परिवार के लोगो की हत्या के लिए उसकी निन्दा की। लाशे चदे की रकम से दफना दी गई। कोशेवोइ का छोटा मकान बेचने की कोशिश की गई, मगर उसे लेने को कोई राजी न हुआ। हाँ, गाँव के अतामान के हुक्म पर झिलमिलियो के आर-पार तख्ते जड दिये गए। इसके बाद एक जमाने तक बच्चे उस घर के आस-पास खेलने तक मे डरते रहे और स्त्री-पुरुष उधर से निकलते समय क्रास बनाते और मृत आत्माओ की शाति के लिए प्रार्थना करते रहे।

फिर, स्तेपी की घास की कटाई का समय आया और हाल की सारी घटनाएँ भुला दी गई।

गाँव एक बार फिर मशक्कत से महकने लगा। एक बार फिर लडाई के मोर्चे की झूठी-सच्ची खबरे पर लगा लगाकर वहाँ आने लगी। जिन किसानो ने अपने काम के जानवर अब तक बचा रखे थे,

वे ग्राम काम के लिए गाडियो के साथ-साथ उन्हे भी देने मे काँखते, और माँगने वालो को पानी पी-पीकर कोसते। लगभग हर दिन बैल और घोडे खेतो से हटाने पडते और जिला-केन्द्र भेजने पडते। बूढे कटाई की मशीनो से घोड़े खोलते समय लम्बी खिचती लडाई को जी-भर गालियाँ देते। लेकिन, इससे क्या, तोप के गोले, कारतूस, काँटेदार तारो की गरारियाँ, और खाने का सामान तो गाडी से मोर्चे पर पहुँचाना जरूरी ही होता, और सो वे पहुँचाते। लेकिन, जैसे कि इस सब विद्रोह मे ऐसे शानदार दिन उगे कि लोगो के मन मे केवल एक इच्छा रह गई कि वे तैयार, रसीली घास काटे और हेगे से उठा-उठाकर गट्ठर-पर-गट्ठर बाँधे।

तो, पैन्तेली ने भी घास की कटाई की तैयारी की और दार्या पर गुस्से से एकदम उबल पड़ा। बात यह है कि वह कारतूसो को पहुँचाने के लिए बैल जोत ले गई थी और उसे जल्दी ही लौटना था। पर पूरा हफ्ता गुजर गया था और उसकी कोई खबर न मिली थी। दूसरी तरफ सधे हुए पुराने बैलो के बिना स्तेपी मे कुछ भी होना मुमकिन न था।

सच पूछिये तो पैन्तेली को दार्या को भेजना नही चाहिए था···उसे बैल सौपते समय उसका माथा ठनका भी था, क्योकि वह तो अच्छी तरह समझता था कि राग-रग मे औरत आपे मे नही रहती, फूली-फूली फिरती है और जानवरो की तो परवाह जरा नही करती। लेकिन सवाल यह है कि वह उसे न भेजता तो और भेजता किसे! दून्या भेजी नही जाती, क्योकि अजनबी कज्जाको के साथ लम्बा सफर करना कोई मजाक तो होता नही। नताल्या के बच्चे छोटे-छोटे थे, और बूढा खुद कारतूस ढोकर ले नही जाता। दूसरी तरफ दार्या ने खुशी-खुशी काम पूरा कर देने की हामी भर ली थी।

वह फार्म के काम से इसके पहले भी गाडी लेकर मिल और जाने कहाँ-कहाँ आ-जा चुकी थी और प्राय बहुत गद्गद हुई थी, क्योकि बाहर किसी तरह का कोई बधन तो रहता नही था। यानी, इस तरह हर सफ़र मे उसका जितना जी बहलता, उतना ही मज़ा आता। होता यह कि सास की रोकथाम से छुटकारा मिलता, दूसरी औरतो से गपशप करने

की छूट मिलती, और कोई टूटा हुआ कज्ज़ाक कही आ टकराता तो लगे हाथो थोडी मोहब्बत भी हो जाती। घर पर तो प्योत्र की मृत्यु के बावजूद, इलीनीचिना कही से साँस न लेती, जैसे कि आदमी के जीते-जी हज़ार घर झाँकने वाली वह औरत पति की मौत के बाद उसके प्रति वफ़ादार हो गई हो, और यह वफ़ादार रहना उसके लिए लाज़िमी हो उठा हो।

इस बार पैन्तेली जानता था कि दार्या मे बैलो की कायदे की देख-भाल होने से रही। पर, चारा कोई दूसरा न था, अतएव उसने उसे भेज दिया। लेकिन फिर पूरे सप्ताह-भर वह बहुत ही अधिक चिंतित और बेचैन रहा। घर के बूढे बैलो का तो काम तमाम समझो! उसने कई बार सोचा, रातो को चौक-चौककर जाग-जाग उठा और लम्बी आहें भरता रहा।

दार्या ग्यारहवे दिन वापस आई। पैन्तेली उसी समय खेत से घर आया था। वह अनीकुश्का की पत्नी के साथ घास काटता रहा था, और उसे दून्या के साथ छोडकर पानी और खाना वगैरह के लिए घर आया था। यहाँ परिवार के सभी लोग खाना खा रहे थे कि खिडकी के पास से गाडी खडखडाती हुई गुज़री। नताल्या भागी-भागी खिडकी के पास गई और उसने आँखो तक चेहरा ढँके दार्या को थकान से चूर, थके बैलो को हाँककर लाते देखा।

"दार्या है?" बूढे ने फँसती हुई आवाज मे पूछा। बूढे ने जो कौर मुह मे डाला था वह जल्दबाजी के कारण गले मे फँस गया था।

"हाँ," नताल्या ने उत्तर दिया।

"मुझे तो उम्मीद नही थी कि बैल अब बहुरकर आयेंगे भी! खैर नीली छतरीवाला बडा मेहरबान है। कमीनी, रडी कही की! आखिरकार इसे घर लौटने की याद आ गई!" बूढा क्रॉस बनाते और सन्तोष की साँस लेते हुए बोला।

दार्या ने बैल खोले, बावर्चीखाने मे आई, घोडे वाला कम्बल तह कर ड्योढी पर रखा और सबका अभिवादन किया।

बूढे ने आँखे नीची किये-ही-किये उसे क्रोध से देखा अभिवादन की

अनदेखी की और बोला—"बडी जल्दी घर लौट आईं ? हफ्ता-भर और मज़े कर आती ?"

"ऐसा ही था तो खुद क्यो नही चले गये ?" दार्‌या ने अपना गर्द-भरा रूमाल सिर से खोलते हुए तड से जवाब दिया ।

"इतना वक्त कहाँ लगा दिया तुमने ?" इलीनीचिना वातावरण का तनाव कम करने के विचार से बीच मे बोल पडी ।

"लोगो ने आने ही नही दिया··· मै करती क्या ?"

पैन्तेली ने अविश्वास से सिर हिलाया और पूछा—"क्रिस्तोन्या की बीवी को किसी ने नही रोका, सिर्फ तुम्ही को रोक लिया ?"

"हाँ, उसको नही रोका !" दार्‌या की आँखे क्रोध से जलने लगी—"अगर मेरी बात का यकीन न हो तो जाकर खुद पूछ आओ ।"

"मै भला पूछने क्यो चला जाऊँ ! लेकिन, आगे से तुम्हारा इस तरह कही जाना बद ! अब तो सिर्फ मौत के नाम पर ही तुम जा सकती हो कही, वैसे नही ।"

"तुम बेकार की धमकी दे रहे हो मुझे । बिलकुल बेकार की धमकी दे रहे हो । खैर, वैसे भी मैं कही नही जाऊँगी—भेजोगे तब भी कही नही जाऊँगी ।"

"बैल तो ठीक ठाक है ।" बूढे ने जरा मुलायम पडते हुए पूछा ।

"ठीकठाक हैं···तुम्हारे बैलो को कुछ नही हुआ ।" दार्‌या ने बेमन से जवाब दिया और उसका चेहरा रात के अँधियारे मे अधिक साँवला हो उठा ।

'शायद रास्ते के अपने यारो से बिछुडना पडा है इसे । इसीलिए इतनी नाराज है ।' नताल्या ने सोचा । दार्‌या और उसकी कामुकता के गदे कारनामो से उसे उस पर जितना ही रहम आता था, उतनी ही घिन छूटती थी ।···

फिर, नाश्ते के बाद पैन्तेली खेत लौटने को हुआ कि उसी समय गाँव का अतामान आ धमका ।

बोला—"तुम्हारा सफर तुम्हे मुबारक ! जरा रुको, पैन्तेली प्रोकोफियेविच···अभी कही नही जाओ !"

"फिर तो गाडी नही चाहिए ?" बूढे ने बहुत ही विनयपूर्ण स्वर मे कहा, गोकि मन-ही-मन गुस्से से उबलता रहा।

"नही, इस बार कुछ और काम है। बात यह है कि पूरी दोन-फौज के कमाडर जनरल सिदोरिन यहाँ आ रहे है। आई बात समझ मे ? मुझे अभी-अभी जिला-अतामान का फरमान मिला है कि गाँव मे एक जलसा होगा। उसमे गाँव का हर मर्द और औरत हाज़िर होगी।"

पैन्तेली चीख उठा—"कुछ अक्ल भी है उन लोगो को ! गाँव का हर आदमी इन वक्त काम मे फँसा हुआ है। ऐसे मे यहाँ जलसा कौन करेगा ? तुम्हारा यह जनरल सिरोदिन मुझे सूखी घास देगा जाडे के लिए ?"

अतामान ने शात भाव से उत्तर दिया—"तुम्हारे सामने वे उतनी ही सूखी घास डालेगे, जितनी मेरे सामने, लेकिन इससे कुछ नही। मुझे जो हुक्म दिया गया है, वही मै कर रहा हूँ। अपने ढोर मशीनो से खोलो ! हमे जनरल की शानदार अगवानी करनी चाहिये ! और हाँ, सुना है कि दोस्त-मुल्को के जनरल भी उनके साथ यहाँ आ रहे हैं ?"

पैन्तेली सोच मे डूबा क्षण-भर गाडी के पास खडा रहा। अतामान अपनी बात का भरपूर असर देखकर खुशी से खिल उठा। पूछने लगा—"तुम्हारी घोडी उधार मिल सकती है ?"

"घोडी की क्या ज़रूरत आ पडी ?"

"ऊपर वाला उन्हे जगली चूहा दे सवारी को···हुक्म आया है कि उनके लिए दो त्रोइका गाडियाँ दुरनोई की घाटी भेजी जानी चाहिए। लेकिन समझ मे नही आता कि तारान्तास-गाडियाँ और घोडे कहाँ से जुटाऊँ ? तडका होने के पहले से ही भाग-दौड कर रहा हूँ। कमीज़े पसीने से भीग चुकी है पाँच बार और घोडे अब तक मिले हैं सिर्फ चार। हर आदमी घर के बाहर है, काम मे लगा हुआ है···कोई कहे-सुने किससे ?"

इस पर पैन्तेली ने अतामान की खुशी के लिए न सिर्फ घोडी दे दी, बल्कि अपनी छोटी, कमानीदार तारान्तास तक देने की बात

अपनी तरफ से कह दी। आखिरकार कोई ऐरा-गैरा तो आ नही रहा था, कमाडर-इन-चीफ आ रहा था और विदेशी जनरल उसके साथ आ रहे थे। पैन्तेली के मन मे जनरलो के लिए सदा ही असीम आदर रहा था।

तो अतामान की दौड-धूप के परिणामस्वरूप दो त्रोइका गाडियाँ मिल गईं और सम्मानित अतिथियों के लिए दुरनोइ घाटी भेज दी गईं। फिर लोग चौक मे जमा होने शुरू हुए। कितने ही लोगो ने तो जलसे मे हाज़िर होने की हडबडी मे घास की कटाई जहाँ-की-तहाँ छोड दी।

पैन्तेली ने भी काम की चिन्ता छोड साफ कमीज और धारीदार पाजामा पहना और ग्रिगोरी से भेंट मे मिली टोपी लगाई। फिर दार्या से दून्या के लिए पानी और खाना भिजवाने की बात अपनी पत्नी से कही और भचकते हुए बाज़ार वाले चौक की तरफ बढा।

थोडी देर बाद गाँव के रास्ते पर गर्द का भारी बादल मँडराता दीखा। फिर बादल के बीच दूर धातु चमचमाती दीखी और मोटर का भोपू सुनाई पडा। मेहमान दो नई चमकती हुई गहरी नीली मोटरो मे आते नजर आए। सडक पर उछलती खाली त्रोइका गाडियाँ, घर लौटते घास काटने वालो की बगल से गुज़री। उनकी घटियाँ हौले-हौले बजती रही। ये घटियाँ, अतामान ने, इस मौके के लिए गाडियो मे खास तौर पर लगवाई थी। ··

तो सवारियो के नियराने के साथ चौक मे हलचल हुई। लोग आपस मे बाते करने और बच्चे खुशी से चहकने लगे। अतामान भीड मे इधर-उधर दौड-दौडकर, मेहमानो का रोटी और नमक से स्वागत करने के लिए गाँव के बडे-बूढो को जमा करने लगा। और पैन्तेली पर निगाह पड़ते ही, वह खुशी से खिलकर उससे आग्रह करता हुआ बोला—"ईसा के लिए, इस काम मे मेरी मदद करो। तुम तजर्बेकार आदमी हो और सभी दाव-पेंच जानते हो···ऐसे लोगो से बाते करना और उन्हे खुश रखना, तुम्हे खूब आता है। फिर तुम क्षेत्रीय प्रशासन के सदस्य हो। उस पर तुम्हारा बेटा ग्रिगोरी है।···मेहरबानी करके रोटी और नमक सँभाल लो। मै जल्दी से घबरा जाने वाला आदमी हूँ। मुझसे

यह काम होने से रहा। मेरे तो घुटने जवाब दे रहे हैं।"

"मेरे भाई, जब मैं सैनिक परिषद् मे था तो मैंने खुद नायब अतामान से चीनी-मिली चाय पी थी···" पैन्तेली ने कहना शुरू किया, लेकिन शब्द होठो पर जमकर रह गए।

इसी बीच सबसे आगे वाली मोटर कोई एक दर्जन कदम के फासले पर आकर रुकी। एक लम्बी चोचवाली टोपी और गैर-रूसी पट्टियो वाली ट्यूनिक पहने, एक सफाचट दाढी-मूँछ का शोफर कूदकर बाहर आया और उसने मोटर का दरवाजा खोला, खाकी वर्दी पहने दो फौजी अफसर गम्भीर भाव से नीचे उतरे और भीड की तरफ बढे। उन्होने सीधे पैन्तेली की तरफ कदम बढाये और वह चस्ती से अटेंशन की मुद्रा मे हो गया। उसने मन-ही-मन सादा लिवास वाले इन लोगों को जनरल, और शानदार कपडो मे सजे-बजे पीछे आने वालो को इनके दल के साथ समझा। लेकिन फिर सवाल उठा कि जनरल तो शानदार झब्बे लगाते है। वे झब्बे कहाँ है? कधे की गाँठो वाली डोरियाँ और तमगे कहाँ है? फिर ये जनरल भी कैसे जब देखने मे आम क्लर्कों से अलग कही से लगते ही नही?

बूढे ने पास आते इन मेहमानो को एकटक देखा और उसकी आँखें अधिक-से-अधिक आश्चर्य से फटती गई। सहसा ही उसका सारा भ्रम हट गया। उसने अपनी जगह अपमानित भी अनुभव किया, क्योकि उसे अपनी सारी तैयारी बेकार लगी और ये जनरल कहलाने के हक़दार नही लगे। सोचने लगा—'ऐसी-तैसी मे जाए। अगर मैं जानता कि ऐसे जनरल आएँगे यहाँ, तो ऐसे सम्हाल-सम्हालकर कपडे कभी नहीं पहनता, इनके इन्तज़ार मे इतना बेताब कभी नही होता और किसी नाक-बहनी बुढिया के हाथो की कच्ची-पक्की सेकी रोटी थाल मे रखकर इस तरह बेवकूफ की तरह खडा बिल्कुल नही होता। पैन्तेली-प्रोकोफियेविच ने दूसरो के सामने अपना मज़ाक अब तक कभी नहीं बनवाया, सो आज बन गया।'

और, सचमुच ही एक क्षण पहले उसके पीछे बच्चो ने कहकहा लगाया और उनमे से एक शैतान बच्चे ने पूरी आवाज़ से चिल्लाकर

कहा—"लडको, जरा देखो कि बूढे पैन्तेली ने आज कितनी तकलीफ उठाई है। ऐसा लगता है जैसे कि सफाई की कोशिश मे पूरे-का-पूरा ब्रश निगल गया है।"

पैन्तेली ने सोचा कि इस तरह अपनी हँसी उडवाने और अपने लँगडे पैर के साथ जब्र करने की कोई वाजिब वजह होती तो कोई बात न थी। मगर · पैन्तेली का पूरा अन्तर नफरत से उबलने लगा—"यह सारा गुनाह इसी बुज़दिल अतामान का है। यही आकर मेरा दिमाग चाट गया, मुझसे घोडी और तारान्तास ले गया और तारान्तास मे लगाने के लिए घटियो की तलाश मे जीभ लटकाए गॉव-भर की दौड लगाता फिरा।

सच तो यह है कि जो आदमी जिन्दगी मे देखने लायक कुछ नही देखता, वह मिट्टी को भी सोना समझता है और खुशी से उमडा-उमडा घूमता है। मिसाल के लिए शाही परेड को लो। उसमे आदमी तमगो से सीना मढे, सुनहरी ज़ंजीर पहने मार्च करता है। उसे देखो तो आँखे खुशी से खिल उठती है। जनरल जनरल नही, किसी देवता की मूरत-सा मालूम होता है। लेकिन, जरा काले कौओ-जैसे इन रँगरूटो को तो देखो। एक के सिर पर तो वर्दी के साथ की चोचदार टोपी तक नही है। उल्टे जाल मे ढका एक बाउलर जैसा टोप है। फिर, दाढी-मूँछ ऐसी सफाचट है कि चिराग लेकर ढूँढो तब भी एक खूँटी न मिले।"··· पैन्तेली के चेहरे पर क्रोध के बादल घिर आए और वह नफरत से थूकते-थूकते रह गया। इसी समय किसी ने उसे पीछे से धक्का दिया और गरम होकर फुसफुसाते हुए बोला—"बढो, रोटी लेकर आगे बढ़ो।"

पैन्तेली ने आगे कदम बढाया। जनरल सिदोरिन ने चारो ओर निगाह दौड़ाई और गूँजती हुई आवाज़ मे बोला—"ज़्द्रास्तविच, बडे बुज़ुर्गो!'

"आप हमेशा सेहतमद रहे, हुज़ूर!" गॉव के लोगो ने टूटे-फूटे स्वरो में एक साथ कहा।

जनरल ने नमक-रोटी बड़ी शोभा से पैन्तेली के हाथो से ली,

धन्यवाद दिया और थाल अपने एडजुटेंट की तरफ बढा दिया।

अपनी आँखो तक गरमी का हेलमेट खीचे, लम्बे कद, छरहरे बदन वाले अँग्रेज कर्नल ने भावहीन उत्सुकता से कज्ज़ाको पर नज़र डाली। बोलशेविको से युक्त दोन-इलाके के मुआइने के दौरे पर सिदोरिन के साथ यहाँ आने का आदेश उसे काकेशस मे स्थित ब्रिटिश सैनिक मिशन के प्रधान जनरल-ब्रिग्ज ने दिया था। इस समय यह कर्नल एक दुभाषिये की सहायता से एक ओर कज्ज़ाको के मन पढने की कोशिश कर रहा था, तो दूसरी ओर मोर्चे की सही स्थिति का परिचय प्राप्त कर रहा था।···

तो कहने को तो कर्नल सफर की दुश्वारियो, स्तेपी-मैदान के एक-से नज्जारो, उलटी-सीधी बातो और एक बडी सत्ता के प्रतिनिधि के नाते अपने साथ जुडी हुई ज़िम्मेदारियो के कारण लगभग टूटा-टूटा-सा रहा, तो भी अपने सम्राट् और अपने देश के हित को उसने सबसे ऊपर रखा। उसने स्थानीय वक्ता का भाषण पूरे मनोयोग से सुना और लगभग सभी कुछ समझ लिया। बात यह है कि वैसे तो उसने यह बात औरो से छिपाई थी, पर सच्चाई यह थी कि रूसी भाषा वह अच्छी तरह जानता था।···

सो, सच्चे अग्रेज़ की स्वभावगत विनय के साथ उसने स्तेपी के इन युद्ध-प्रिय सपूतो के तरह-तरह के चेहरो पर नज़र दौडाई और कज्ज़ाक लोगो को गहराई से देखने वाले हर व्यक्ति की तरह वह भी इनके जातिगत गुणो के घोलमेल से बहुत ही प्रभावित हुआ। स्लाव-मूलक, सुनहरे बालो वाले एक कज्ज़ाक की बगल मे एक पक्का मगोल खड़ा दीखा और उसकी बगल मे कौए की तरह काला एक कज्ज़ाक नज़र आया। यह कज्ज़ाक भूरे बालो वाले एक पादरी से बाते करता रहा और पादरी को देखकर ऐसा लगा जैसे कि वह सीधा बाइबिल से निकला चला आ रहा है। कोई कहता तो कर्नल बड़ी-से-बडी बाज़ी लेकर यह साबित कर देता कि अपनी छडी पर झुके पुराने डिज़ाइन का कमर तक का कोट पहने, सफेद दाढी वाले कज्ज़ाक की रगो से काकेशिया का पहाड़ी खून लहरे लेता है।

कर्नल इतिहास थोडा-बहुत जानता था। सो, कज्ज़ाकों पर नज़र दौडाते समय उसने मन-ही-मन सोचा—इन बर्बर लोगो का तो क्या, इनके नाती-पोते तक किसी नए प्लातोव की कमान मे भारत की तरफ रुख न करेगे। बोलशेविको को हरा देने के बाद रूस को गृह-युद्ध का सामना करना पडेगा और यो इसका सारा खून इस तरह पानी हो जाएगा कि एक जमाने तक दुनिया के बडे मुल्को मे इसकी गिनती तक न की जाएगी, और ब्रिटेन के पूर्वी उपनिवेश कई-कई दशको तक सुरक्षित बने रहेगे।···

कर्नल को पूरा विश्वास था कि बोलशेविक हार जाएँगे। कर्नल स्वयं तर्क-प्रिय, गम्भीर व्यक्ति था और लडाई के पहले कितने ही वर्षों तक रूस मे रह चुका था। इसलिए, इस लगभग बर्बर-से देश मे कम्यूनिज़्म के विचारो की जीत की बात तक स्वभावतया न सोच पाता था।···

उसकी निगाह जोर-जोर से बोलती औरतो की तरफ घूमी, तो बिना गर्दन मोडे उसने उनके सर्दी-गर्मी-वर्षा से सँवराए चौड़े चेहरे देखे। एक नफरत से भरी अनदेखी मुस्कान उसके भिचे होठो पर दौड़ गई।

दूसरी तरफ, नमक और रोटी देने के बाद पैन्तेली भीड़ मे मिल गया और थोडी दूर पर खडी ओइका गाडियो की ओर बढा। वह व्येशेन्स्काया के एक वक्ता की बाते सुनने को रुका नही। वक्ता व्येशेन्स्काया ज़िले के कज्जाको की तरफ से मेहमानो की राह मे पलकें बिछाता रहा।

ओइका गाडियो के घोडे झाग से नहाये नजर आए। उनके पेट गढ्ढों में धँसे समझ पडे। बूढा अपनी घोडी के पास पहुँचा और अपनी आस्तीन से उसके नथुने रगडने लगा। उसके मुँह से एक आह-सी निकल गई। उसे सारे-कुछ से इतनी मायूसी हुई कि वह बुरी तरह कोसने लगा और घोडी को खोलने के लिए फौरन ही उसे घर ले चला।

इस बीच जनरल सिदोरिन ने तातारस्की के रहने वालो के बीच भाषण देना शुरू किया और लाल सेना के पीछे के मोर्चे मे कज्ज़ाक

कारनामों की सराहना करते हुए बोला—"हम सबका मिला-जुला दुश्मन एक है, आपने उसके लोहे से लोहा बजाकर रख दिया है। देश बोलशेविको के खूंखार जुए से धीरे-धीरे छुटकारा पा रहा है। वह आपकी सेवाएं कभी भूल नही सकता। हमे पता है कि आपके इस गांव की औरतो ने इन हथियारबद मुठभेडो मे खास हिस्सा बँटाया है। हम इनका बडा आभार मानते है और इसके लिए इन्हे विशेष सम्मान देना चाहते है। जिन कज्जाक वीरागनाओ के नाम पढकर सुनाये जाएँ वे एक कदम आगे आ जाएँ।"

इस पर एक अधिकारी ने एक सूची पढकर सुनाई। पहला नाम दार्या मेलेखोव का था। बाकी नाम विद्रोह के शुरू मे खेत-रहे कज्जाको की विधवाओ के थे। इन सभी स्त्रियो ने दार्या की भाँति ही, तातारस्की मे कम्यूनिस्ट कैदियो के रक्तपात मे हिस्सा लिया था। कम्यूनिस्ट सेरदोव्स्की रेजीमेट के हथियार डाल देने के बाद हांककर तातारस्की लाए गए थे।

दार्या पैन्तेली के आदेशानुसार खेत न गई थी, बल्कि मेले-ठेले के ठाठ मे चौक मे आ गई थी। सो, अपना नाम सुनते ही दूसरी औरतो को एक ओर को ठेलती, सिर पर बँधा सफेद रूमाल ठीक करती घबराहट के कारण हलके-हलके मुस्कराती, आँखे आधी मूंदे हिम्मत से आगे आई। औरत लम्बे सफर और शामो के 'मज़े' के बावजूद देखने-सुनने में खासी लगी। धूप से अछूते पीले गालो पर प्यास से तडपती आँखो की चमक फिसलती दीखी। रँगी हुई भौंहो के बनावटी छल्लो और होठो की मुस्कराहट की तहो के पीछे से एक चुनौती और एक गुनाह-सा झाँकता लगा।

दार्या का रास्ता एक फौजी अफसर रोके खडा रहा। पर दार्या ने उसे धीरे से एक तरफ ढकेला। बोली—"एक फौजी की बेवा को रास्ता दो न!" और, फिर सीधे सिदोरिन के पास जा पहुँची। सिदोरिन ने अपने एडजुटेट के हाथो से संत-जार्ज-रिबनवाला तमगा लिया और कांपती हुई उंगली से दार्या की जैकेट के बाएँ सीने पर पिन कर दिया। इस बीच मुस्कराते हुए वह उसकी आँखो मे आँखें डाले रहा। पूछा—

"तो तुम कॉरनेट-मेलेखोव की बेवा हो···वह तो मार्च मे मारा गया था ?"

"जी हाँ।"

"अभी-अभी तुम्हे नकद इनाम भी मिलेगा—पाँच सौ रूबलो का·· यह अफसर देगा तुम्हे । · फौजी अतामान अफरीकन पैत्रोविच बोगायेव्स्की और दोन की सरकार तुम्हारी बहादुरी के लिए तुम्हे बहुत धन्यवाद देती है।···साथ ही तुम्हारे पति की मौत से तुम पर जो मुसीबत टूटी है, उसके लिए तुम्हारे साथ दिली हमदर्दी रखती है।"

दार्या ने सिदोरिन की पूरी बात न समझी। पर उसने सिर हिलाकर उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की, एडजुटेट के हाथ से रूबल लिये और चुपचाप मुस्कराकर जनरल की आँखो मे आँखे डालने लगी।

जनरल अब भी जवान था। कद मे दार्या के लगभग बराबर था।·· औरत ने उसके हलके चेहरे पर बे-रोकटोक-भरपूर निगाह डाली। 'इन्होने मेरे प्योत्र की कीमत एक जोडी बैल की कीमत से ज्यादा नही आँकी है लेकिन·· यह जनरल देखने-सुनने मे बुरा नही है ···चल जाएगा!' अपनी गँवारू धुन मे दार्या ने सोचा। सिदोरिन उसके वहाँ से जाने की बाट जोहने लगा। पर वह अब भी वही बनी रही। इस पर एडजुटेट और उसके पीछे खड़े दूसरे अफसरो ने निगाह उठाई और एक-दूसरे का ध्यान इस रगीली बेवा की तरफ खीचा। उनकी आँखे खुशी से चमकने लगी। और तो और, ब्रिटिश जनरल तक मे जान आ गई। उसने अपनी पेटी सीधी की, एक पैर के बजाय दूसरे पैर पर बल दिया और उसके गम्भीर चेहरे पर भी मुस्कान-सी दौड गई।

"मैं जा सकती हूँ ?" दार्या ने पूछा।

"हाँ, क्यो नही, जाओ···।" सिदोरिन हडबडाते हुए बोला।

दार्या ने ब्लाउज के खुले कॉलर मे भद्दे ढग से हाथ डाला, रूबल अन्दर दबाये और वापस लौट दी। भाषणो और टीमटामो से परेशान फ़ौजी अफसरो ने उसके हलके कदमोवाली चाल बडे गौर से देखी।

फिर मार्तिन शमील की पत्नी धीरे-धीरे सिदोरिन के सामने पहुँची। पर, उसके पुराने ब्लाउज़ मे तमगा पिन किया गया तो एकदम फूट पड़ी। सब-कुछ ऐसा स्वाभाविक और नारी-सुलभ रहा कि अफसरो के

चेहरो की हँसी गायब हो गई और वे सवेदना से गम्भीर हो उठे ।

सिदोरिन के चेहरे पर भी उदासी के बादल छा गए । पूछा—"तो तुम्हारा पति भी मारा गया ?"

औरत ने चेहरा दोनो हाथो से ढँक लिया और मुँह मे कुछ नही कहा । केवल सिर हिला दिया । एक कज्जाक भारी आवाज मे बोला—"इसके बच्चे इतने है कि भरने लगो तो गाडी के एक पूरे डिब्बे मे न समाये ।"

सिदोरिन अग्रेज की तरफ घमा— 'हम उन स्त्रियो को सम्मानित कर रहे है, जिन्होने बोलशेविको से लडने मे विशेष वीरता का परिचय दिया है । उनमे से कितनी ही स्त्रियो के पति आन्दोलन के आरम्भ मे ही मर गए और इन्होने उनकी मौत का बदला इस तरह लिया कि स्थानीय कम्यूनिस्टो की टुकडी-की-टुकडी का नाम-निशान मिटा दिया । जिस औरत को सबसे पहले तमगा दिया गया, उसने अपने हाथो से एक कम्यूनिस्ट कमीसार को मारा है । कमीसार अपनी बेरहमी और जुर्म के लिए मशहूर रहा है ।'

दुभाषिये ने जल्दी-जल्दी पूरी बात अग्रेजी मे कही । कर्नल ने सब-कुछ सिर झुकाए-ही-झुकाए सुना और बोला—"मै इन औरतो की हिम्मत की दाद देता हूँ । लेकिन, जनरल, कृपया यह बतलाइये कि क्या इन औरतो ने भी उन्ही परिस्थितियो मे लडाई लडी है, जिन परिस्थितियो मे मर्दो ने ?"

"जी हाँ ।" सिदोरिन ने कहा और तीसरी बेवा को आवाज दी ।

थोडी देर बाद मेहमान जिला-केन्द्र के लिए रवाना हुए और भीड हटने लगी । लोग घास काटने की हडबडाहट मे अपने-अपने खेतो की तरफ लपके । यानी यह कि जब तक जोर-जोर से भूँकते कुत्तो से घिरी मोटरें आँखो से ओझल हुई, तब तक चौक मे सिर्फ तीन बूढे बाकी बचे । वे गिरजे की बाड के पास खडे होकर आपस मे बाते करने लगे ।

एक व्यक्ति अपना हाथ नचाते हुए बोला—"क्या जमाना लगा है ? पुराने वक्त मे लडाई होती थी तो सत-जॉर्ज-क्रॉस या सत-जॉर्ज-तमगे सचमुच बडे कामो के लिए, बड़ी-से-बडी बहादुरी दिखलाने के लिए दिए

जाते थे। और, सो भी मर्दों को मिलते थे। मर्द भी कैसे कि एक-से-एक हिम्मतवर और जान की बाजी लगाने वाले! और, ऐसे मर्द भी कोई सौ-दोसौ नहीं निकलते थे। न ही मौत या शोहरत की चर्चा इस तरह की जाती थी। लेकिन, आजकल तो लोग तमगे औरतो को देने लगे है। वैसे अगर औरते कुछ बहादुरी करके भी दिखलाती तो यह ऐसा कुछ बुरा भी न होता। लेकिन, कज्जाक कैदियो को गाँव में हाँक लाए, और गाँव की औरतो ने उन मजबूर, निहत्थे लोगो को खूँटे-खूँटियाँ फेंक-फेंककर मार डाला। इसमें बहादुरी क्या है? मेरी तो समझ मे ही नही आता। नीली छतरीवाला मुझे माफ करे!"

एक दूसरे कमजोर निगाहवाले, दुबले-पतले बूढे ने पैर एक तरफ को खिसकाया, धीरे से कपड़े का तह किया हुआ खलीता जेब से निकाला और बोला—"नोवोचेरकास्क के लोग मुझे खासे दूरन्देश मालूम होते हैं। मेरा खयाल है कि उन्होने सोचा होगा कि लोगो के मन मे और जोश भरने के लिए और लडने के मामले मे उनमे और दिलचस्पी पैदा करने के लिए औरतो मे कुछ-और खिचाव और दम पैदा किया जाना चाहिए। तो, यह रहा तमगा और ये रहे ऊपर से पाँच सौ रूबल! भला कौनसी वह औरत है जो कह देगी कि नही, यह सब मुझे नही चाहिए। तमगा मिल गया और मिल गए रूबल। अब अगर कज्जाको मे ऐसे हो जो मोर्चे पर न जाना चाहे या कुछ ऐसे हो जो हाथ-पैर समेट-कर लडाई की आग से दूर-ही-दूर रहना चाहे, तो क्या ऐसा मुमकिन है? बीवियाँ कान उखाडकर रख देगी। रात मे जो चिडिया बोलती है, उसकी आवाज़ सबसे ज्यादा गूँजती है। फिर यह भी है कि हर औरत अपनी जगह सोचने लगेगी कि कुछ करूँ, शायद तमगा मुझे मिल जाए।"

"फ्योद्र, तुम बिल्कुल बेसिर-सिर पैर की बातें कर रहे हो।" तीसरे व्यक्ति ने आपत्ति की—"औरतें उस इज्ज़त की हकदार थी। उन्हे यह इज्ज़त मिली। बेचारी बेवाएँ है। रूबलों से फार्म के कामकाज मे मदद मिलेगी। तमगे उनकी बहादुरी के लिए दिये गए हैं और वे उनकी बहादुरी की कहानी कहेगे। सबसे पहले दार्या मेलेखोव ने कोतल्यारोव को दूसरी दुनिया मे भेजा और ठीक

भेजा। ऊपरवाला सबका इन्साफ करता है, मगर तुम औरतो के सिर तोहमत नही मढ सकते। अपना हाड-मास अपना ही हाड-मास होता है···"

इस तरह बूढे बहस करते रहे और तब तक करते रहे जब तक कि शाम की प्रार्थना का समय नही हो गया। फिर, तो गिरजे का घटा पहली बार बजा कि तीनो उठे, टोपियाँ उतारी, क्रॉस बनाया और बाकायदा गिरजे के अहाते मे दाखिल हुए।

१३

मेलेखोव परिवार की जिन्दगी का नकशा जिस तरह बदला, वह काफी आश्चर्यजनक रहा।

·· अभी कुछ समय पहले तक घर मे पैन्तेली प्रोकोफियेविच की तूती बोलती थी और परिवार का हर प्राणी बिना मुँह से उफ निकाले उसके हुक्म के आगे सिर झुकाता था। काम सब मिल-जुलकर करते थे, दु ख-सुख मे एक-दूसरे के साझीदार होते थे और कोई गहरी भावना सबको स्नेह के एक मजबूत, अटूट सूत्र मे पिरोती थी। परन्तु, पिछली बहार के बाद से सब-कुछ बदल गया था। सबसे पहले सीमा दून्या ने तोडी थी। अब वह पिता की आज्ञा का उल्लघन खुल्लमखुल्ला तो न करती, पर जो भी उसे करना पडता, काफी हीलाहवाली के साथ यूँ करती जैसे कि काम अपना न होकर किसी और का हो और वह मजदूरी-भर के लिए उसे कर रही हो। बाहर से वह दूसरो से काफी कटी-कटी रहती और बहुत ही कम बोलती। उसकी हँसी के, मस्ती से भरे ठहाके कभी भूले-भटके ही सुन पडते।···

ग्रिगोरी के मोर्चे के लिए रवाना होने के बाद नताल्या के भी घर के बडे-बूढो से वे सम्बन्ध न रह गए। अब वह सारा समय अपने बच्चो के साथ बिताती, केवल उनसे खुलकर बाते करती, उन्ही मे उलझी रहती, और हर समय किसी बात को लेकर मन-ही-मन चुपचाप घुटती लगती। पर, घर के दूसरे प्राणी को अपने मन के सताप का सकेत भी न मिलने देती। अपने अन्तर का बोझ अपने तक सीमित

रखती। किसी से किसी तरह की कोई शिकायत न करती।···

जहाँ तक दार्या का सम्बन्ध है, वह तो अपने नये सफर के बाद बिल्कुल ही बदल गई और अपने ससुर का पग-पग पर विरोध करने लगी। इलीनीचिना की तरफ उसने हर तरह ध्यान देना बन्द कर दिया, अकारण हर एक से तनी-तनी रहने लगी, बीमारी के बहाने घास-कटाई मे हिस्सा लेने से बचने लगी, और इस तरह व्यवहार करने लगी, जैसे कि मेलेखोव परिवार मे उसके दिन इने-गिने ही हो।

इस तरह पैन्तेली के देखते-देखते परिवार का पूरा ढाँचा टूटने लगा। होते-होते पति-पत्नी जैसे निपट एकाकी रह गए। परिवार के बधन, आशा के विपरीत, कट गए। सम्बन्धो की आग समाप्त हो गई। आम बातचीत मे खीझ और विरोध नजर आने लगा। सब लोगो का पहले की तरह, एक परिवार और एक इकाई के रूप मे खाने की मेज के किनारे जमा होना खत्म हो गया। अब ऐसा लगने लगा जैसे कि मात्र सयोग से सब लोग एक साथ बैठ जाते हो।

इस सबके मूल मे रही लडाई। पैन्तेलो ने यह बात बहुत ही साफ-साफ समझी। दून्या अपने माँ-बाप से नाराज रहने लगी। उसे लगने लगा कि अपने क्वाँरे तन-मन की पूरी शक्ति से उसने जिस एक व्यक्ति को यानी मीशा कोशेवोइ को प्यार किया, उससे विवाह कर सकने की आशा इन लोगो ने तार-तार करके रख दी। नताल्या ने अपने सरल-सादे स्वभाव के अनुरूप ही अपने मन की कुढन को अपने मन तक सीमित रखा और अकसीनिया से ग्रिगोरी के नये सिरे से उलझाव के कारण मन-ही-मन बहुत ही दुखी और सतप्त रहने लगी। मुँह उसने कभी खोला नही। पैन्तेली ने सभी-कुछ लक्ष्य किया, पर हजार कोशिशो के बाद भी घर मे पुरानी व्यवस्था नही ला सका। और वह करता भी तो करता क्या? किसी सीझे हुए बोलशेविक से अपनी बेटी को शादी करने की अनुमति कैसे दे देता? फिर अनुमति अगर दे भी देता तो उसका महत्त्व क्या होता? मीशा जान हथेली पर रखे कभी यहाँ तो कभी वहाँ मारे-मारे फिरने वाला आदमी था।

कुछ ऐसा ही ग्रिगोरी के साथ भी था। अगर उसके बदन पर

फौजी अफसर की वर्दी न होती तो पैन्तेली उसे कायदे से समझता। वह तो उसका बुखार इस तरह उतार देता कि वह अकसीनिया की ड्योढी सूंघना तक पसन्द न करता। पर लडाई ने सभी-कुछ चौपट कर दिया था और बूढा मनमाने ढग से अपना परिवार चलाने के अधिकार से वचित होकर रह गया था। लडाई ने उसे कही का नही रखा था, काम करने की पुरानी खुशी छीन ली थी, बडा बेटा हडप लिया था और परिवार मे अव्यवस्था और कटुता के बीज वो दिए थे। लडाई उसकी जिन्दगी के ऊपर से यो गुजरी थी, जैसे तूफान पके हुए गेहूँ के खेत के ऊपर से गुजरे। फर्क सिर्फ इतना था कि गेहूँ की बालें तूफान गुज़रने के बाद फिर सिर उठाकर तन जाती है, और धूप मे नहाकर चमकने लगती है। पर बूढे के सामने कमर सीधी कर उठ खडे होने की अब कोई सम्भावना न थी। उसके दिमाग और दिल ने सभी-कुछ स्वीकार कर लिया था कि हो, अब जो कुछ होना हो सो हो!···

सो, दार्या जनरल सिदोरिन के हाथ से तमगा और नकद इनाम पाकर फूली न समाई। चौक से घर आई तो खुशी से उछलती। उसकी आँखे प्रसन्नता मे चमकती रही। उसने अपना तमगा नताल्या को दिखलाया। नताल्या ने आश्चर्य से पूछा—"यह तमगा तुम्हे किस कारनामे के लिए मिला ?"

"यह मिला है इवान-अलेक्सेयेविच को मारने के लिए। कुतिया का बच्चा कही का·· नीली छतरी वाला उसकी रूह को चैन दे! और ये रूबल मिले है प्योत्र के न रहने पर दिन काटने के लिए।" और उसने दोन के नोटो का बडल बडे ही चाव से खोला।

पर, दार्या खेत पर इसके बाद भी नही गई, पैन्तेली ने उसे खाना लेकर बाहर भेजना चाहा, पर उसने साफ इन्कार कर दिया।

"मुझे घर मे ही रहने दो, पापा·· सफर से आई हूँ···सारा, बदन चूर-चूर है।"

बूढे के चेहरे पर उदासी के बादल घिर आए। इस पर दो-टूक जवाब देने की तुर्शी कम करने के लिए दार्या आधे मज़ाकिया ढग से बोली—"यह तो सचमुच गुनाह होगा कि आज के दिन भी तुम मुझे

यहाँ से कही जाने पर मजबूर करो···आज तो मुझे छुट्टी मिलनी ही चाहिए।"

"अच्छा, तो खाना मै खुद दे आऊँगा।" बूढे ने बहू से सहमत होते हुए कहा—"लेकिन, रूबलो का हिसाब-किताब क्या होगा?"

"कैसे रूबल···कैसा हिसाब किताब?" दार्या ने अचरज से आँखें ऊपर उठाई।

"मेरा मतलब है कि रूबलो का क्या करने का इरादा है तुम्हारा?"

"यह मेरा निजी मामला है···मै इसका जो चाहूँगी, सो करूँगी।"

"लेकिन···तुम करना क्या चाहती हो? रुपये तो तुम्हे प्योत्र के नाम पर मिले है न?"

"रूबल मुझे दिये गए है, और इनके बारे मे सोचना तुम्हारा काम नही है।"

"लेकिन, तुम तो इसी घर मे रहती हो न! इसी घर की तो बहू हो न?"

"और, घर की इस बहू से तुम क्या उम्मीद रखते हो, पापा? उम्मीद रखते हो कि यह सारी रकम तुम हथिया लोगे?"

"नही, पूरी रकम मैं नही चाहता·· लेकिन इसका एक हिस्सा तो हमे यानी मुझे और तुम्हारी इस सास को मिलना ही चाहिए······ आखिर प्योत्र हमारा बेटा था या नही? क्या खयाल है तुम्हारा?"

बूढे ने तो अपना दावा यो ही सामने रख दिया था। लेकिन दार्या इस पर बौखला उठी। नफरत से भरी, सधी हुई आवाज़ मे बोली—"मैं तुम्हे कुछ नही दूँगी···एक कोपेक नही दूँगी। तुम्हारा इसमे किसी तरह का कोई हिस्सा नही है···हिस्सा होता तो वे रकम तुम्हारे हाथ पर रखते। और, अपने इस हिस्से को लेकर तुम इस तरह आसमान सिर पर क्यो उठा रहे हो? तुम्हे हाथ फैलाने की कोई ज़रूरत नही। एक भी रूबल नही मिलेगा।"

इस पर पैन्तेली ने आखिरी ज़ोर लगाया—"तुम हमारे साथ रहती हो हमारे साथ खाती हो, तो हर चीज़ मे हमारा भी तो साझा

होना चाहिये। यह भी क्या कि रहे तो सब घर मे साथ, मगर हर आदमी डेढ़ दाने की अपनी खिचडी पकाए अलग ? यह मैं नही चलने दूंगा।"

पर, दार्या ने रकम हथियाने की बूढे की आखिरी कोशिश भी नाकाम कर दी। अपनी रकम अपने सीने से लगाकर रखी। बेहयाई से मुस्कराती हुई बोली—"मेरी शादी तो तुमसे हुई नही है, पापा! आज मै तुम्हारे साथ हूँ, मगर कल किसी से शादी कर यहाँ से जा सकती हूँ। फिर, यहाँ खाने की कीमत अदा करने जैसी भी कोई बात नही उठती है। मै दस साल तुम्हारे इस खानदान के लिए खटी हूँ। मैंने कभी कमर सीधी नही की है।"

"तू खटी है खुद अपने लिए, कमीनी, छिनाल कही की!" बूढा नफरत से चीखा और उसने चिल्लाकर कुछ और भी कहा। पर, दार्या उसकी बात सुनने को ठहरी नही। अपनी स्कर्ट का सिरा लहराती और झमकती बूढे के ठीक आगे से गुजरी और सोने के कमरे की ओर चल दी। मज़ाक-भरे ढग से मुस्कराती हुई फुसफुसाई—"हाथ आज़माने के लिए गलत औरत चुनी बूढे ने!"

और बातचीत यही ठप्प हो गई। सचमुच ही दार्या बूढे के रोब मे आ जाने वाली औरत न थी। उसके तेहे का उसे कोई डर न था।

पैन्तेली खेत पर जाने को तैयार हुआ, पर जाने के पहले उसने इलीनीचिना से बाते की। बोला—"दार्या पर नजर रखना तुम!"

"क्यो, उस पर नजर रखने की ऐसी क्या ज़रूरत आ पडी ?" इलीनीचिना ने आश्चर्य से पूछा।

"ज़रूरत आ पडी है···देखना, कही ऐसा न हो कि वह बोरिया-बँधना बाँधकर घर से चल दे, और कुछ हमारा माल-मता भी अपने साथ लेकर रफूचक्कर हो! मुझे लगता है कि वह अपने हाथ-पैर कुछ यो ही नही फैला रही· साफ है कि उसने कोई जवान खोज लिया है और एकाध दिन मे ही शादी हो जाएगी उसकी।"

"तुम शायद ठीक कहते हो।" बुढिया ने बूढे की हाँ-मे-हाँ मिलाई

और लम्बी आह भरी—"हर वक्त गाँव के बाहर बनी रहती है। खोखोल की तरह · किसी चीज से खुशी नही होती उसे · सब-कुछ बुरा-ही-बुरा नजर आता है उसे·· इन दिनो हम सभी से फिरट रहती है···अब तुम चाहे जो करो···उसका पैर बाहर निकल गया है, वह अब तो ड्योढी के अन्दर आता नही ·"

"और, कोई वजह भी नही है कि उसका पैर ड्योढी के अन्दर करने की कोशिश की जाए। बेवकूफ कही की, अगर वह जाना चाहे तो तुम उसे रोकना भी नही। चला जाने देना घर से · हार गए हम उसे सँभालते-सँभालते !" पैन्तेली उचककर गाडी पर चढा और बैल हाँकते हुए बोला—"वह काम से तो इस तरह दूर-दूर भागती है, जैसे कुत्ता मक्खियो से। मगर आराम तमाम चाहती है और अय्याशी मे वक्त गुजारना पसद करती है।·· आसमानवाला उसकी रूह को चैन दे · प्योत्र हमारा रहा नही, और प्योत्र नही रहा तो दार्या जैसी औरतो को हमे घर मे रखने की अब जरूरत नही है। औरत वह थोडे ही है, वह तो छुनही बीमारी है · छुतही बीमारी !"

पर, पति-पत्नी का खयाल गलत था। दार्या के तो दिमाग मे भी दूसरी शादी की बात नही थी। वह जिन्दगी तो उसकी कल्पना से भी बाहर थी। उसके दिमाग पर तो बोझ कुछ दूसरा ही था ···

दार्या दिन-भर प्रसन्नता से खिली और सबसे हिल-मिलकर बाते करने मे लगी रही। रूबलो को लेकर होनेवाले झगडे तक का उस पर जैसे कोई असर नही पडा। जाने कितनी देर तक तो वह शीशे के सामने तरह-तरह से मुडती, ऐठती और हर तरफ से तमगे को देखती रही। पाँच बार उसने कपडे बदले कि देखे, किस जेकेट पर सत जार्ज वाला रिबन सबसे ज्यादा फबता है। फिर हँसती हुई कहने लगी—"अब मुझे कुछ और क्रास जीतने चाहिये !" इसके बाद उसने इलीनीचिना को सोने के कमरे मे बुलाया, बीस-बीस रूबल के दो नोट उसके हाथ पर रखे, अपने दहकते हुए हाथो से झटके से बुढ़िया के गांठो स भरे हाथ उसके सीने पर रखे और फुसफुसाती हुई बोली—"यह है प्योत्र की रूह के चैन के लिए···यह है इसलिए कि गिरजे में

प्रार्थना करवा दो···और वहाँ लोगो को बाँटने के लिए थोडी-सी खीर तैयार कर लो !" · और औरत फूट पडी। फिर, पलकें आँसुओ से तर रही और एक क्षण बाद ही मीशात्का के ऊपर अपना रेशमी शॉल ओढाकर उससे खिलवाड़ करने लगी। साथ ही इस तरह की हँसी के ठहाके लगाने लगी, जैसे कि कभी रोई ही न हो, जैसे कि खारी आँसुओ का स्वाद जीवन मे कभी जाना ही न हो।

और दून्या खेत से लौटी तो दार्या खुशी से और खिल उठी। उसने उसे तमगे के जलसे की सारी कहानी सुनाई और गम्भीर आवाज़ से जनरल के बोलने की नकल की। फिर, नताल्या की ओर देखकर, आँख मारते हुए, शरारत से बोली—"तेरी दार्या, सत जार्ज का क्रास पाने वाली एक फौजी अफसर की बेवा जल्दी ही अफसर बन जाएगी, और फिर बूढे कज्जाको की कमाडर बना दी जाएगी।"

नताल्या बैठी, बच्चो के कपडो की मरम्मत करती, दार्या की बातें सुनती और होठो-ही-होठो मे मुस्कराती रही। पर दून्या भौचक्की रह गई और अपने हाथ बाँधकर मिन्नत-भरे लहजे मे बोली—"दार्या ·दार्या, सुनो···ईसा के लिए अपनी ये कहानियाँ बद करो, क्योकि मेरी समझ मे यह नही आता कि तुम कब मनगढन्त कहानियाँ सुनाती हो और कब सच्ची कहानियाँ कहती हो! बतलाना हो तो ज़रा ठीक-ठीक बतलाओ सब-कुछ।"

"तुम्हे मेरी बातो का यकीन नही? अगर नही तो तुम बुद्धू हो! मै तो तुम्हे सीधी-सादी बात सुना रही हूँ। सभी फौजी अफसर मोर्चे पर है। अब बूढो को फौजियो की तरह मार्च करना और पेश आना सिखलाये तो सिखलाये कौन? जरा ठहर जा, इनकी कमान मेरे हाथो मे आ जाने दे। फिर देख कि मै इन बुड्ढे-शैतानो को किस तरह सीधा करती हूँ! इस तरह उनको कमान दूँगी·· इस तरह!"

दार्या ने सास के न देखने के लिए बावर्चीखाने का दरवाजा बद किया। फिर, अपनी स्कर्ट का सिरा फुर्ती से अपनी टाँगो के बीच दबाया और पीछे का हिस्सा एक हाथ से साधा तो चमचमाती हुई पिडलियाँ लौ देने लगी। इसके बाद सोने के कमरे के चारो ओर मार्च

करते हुए दून्या के सामने आकर रुकी और भरी हुई आवाज मे कमान देती हुई बोली—"बुड्ढो · अ ट···टेशन ! अपने चेहरे ऊपर करो ··लेफ्ट···क्विक मार्च !"

दून्या से और अधिक न सम्हला और वह हाथो मे चेहरा छिपाकर जोर-जोर से हँसने लगी। नताल्या चिढकर बीच मे बोली—"उफ ··बहुत हुआ···इससे कुछ भला नही होने जाने का !"

"इससे कुछ भला नही होने जाने का ? और तुमने पूरी जिन्दगी मे कभी कुछ भला जाना भी है ? तुम्हे कुछ भला लगा भी है ? अगर मैं तुम्हे हँसाऊँ नही, तो तुम इसी घर मे सडकर रह जाओ।···"

पर दार्‌या की हँसी-खुशी का ज्वार जिस तेजी से आया, उसी तेजी से उतर गया। आधे घण्टे बाद वह अपने छोटे कमरे मे आई, तमगा सीने से नोचकर बक्से पर फेंक दिया और फिर हाथो पर गाल साधे बहुत देर तक खिडकी के पास बैठी रही। रात हुई तो वह चुपके से कही खिसक गई और फिर मुर्गे की बाँग के बाद ही लौटी।

इसके बाद उसने चार दिन तक मैदान मे जीतोड मेहनत की।

· घास की तैयारी खासी ढीली रही। काम करने वाले कम ही रहे। एक दिन मे चार एकड से ज्यादा जमीन की घास न कटी। कटी हुई घास बरसाती पानी से तर रही और इससे काम और बढ गया। ऐसी घास को धूप मे उछाल-उछालकर सुखाना पडा। फिर, पचागुर से उसे जगह-जगह इकट्ठा किया गया कि दुबारा मूसलाधार पानी बरसा, और रात से सुबह तक चलता रहा। इसके बाद आसमान खुला। मौसम सुहाना हो गया। पुरबा बहने लगी। कटाई की मशीनें फिर अपने गीत गाने लगी। घास के सँवराए ढेरो से फफूँदी की सहती-सहती-सी बास आने लगी। स्तेपी का मैदान धुध की लपेट मे आ गया और टीलों की धुँधली-धुँधली रूपरेखाएँ, घाटियो के निलछरे कटाव और दूर के तालो के नरकुल के हरे सिरे इस नीली धुध के बीच से हलके-हलके झलकने लगे।

चौथे दिन दार्‌या ने खेत से ही जिला केन्द्र जाने का मसूबा बाँधा और दोपहर के आराम के बाद सब लोग खेमे मे सुस्ताने को बैठे तो उसने

अपना इरादा सामने रखा।

पैन्तेली ने उसका मज़ाक-सा उडाते हुए, दर्द भरी आवाज़ मे पूछा—"ऐसी जल्दी क्या है ? तुम अपना जाना इतवार तक टाल नही सकती क्या ?"

"नही···मुझे कुछ काम है, और काम टल नही सकता।"

"एक दिन को नही टल सकता ?"

"नही।"

"अगर तुम्हे इतनी परेशानी है और इतना भी सब्र नही है, तो जाओ। मगर, ऐसा जरूरी काम क्या आ पड़ा ? क्या हमे नही बतला सकती ?"

"अगर तुम्हे सब-कुछ बतला दूँगी तो तुम कल के मरते आज ही मर जाओगे।"···

···दूसरे दिन ज़िला-केन्द्र से लौटने पर दार्या सीधे घर आई। सिर्फ इलीनीचिना और बच्चे नज़र आए। मीशात्का देखते ही ताई की तरफ दौडा, पर उसने उसे उदासीन भाव से एक ओर कर दिया और सास से पूछा—"माँ, नताल्या कहाँ है ?"

"नताल्या सब्जी वाले खेत मे आलू खोद रही है। क्या बात है ? बूढे ने बुलाया है उसे ? वह कही नही जायेगी···बूढा बिगडता हो तो बिगडे···कह दो कि ऐसा मैंने कहा है।"

"किसी ने नही बुलाया उसे। मुझे उससे कुछ बात कहनी थी।"

"पैदल आई हो ?"

"हाँ।"

"लोग कब तक खाली हो जाएँगे ?"

"शायद कल तक।"

"लेकिन, रुको तो···तुम उडी कहाँ जा रही हो ? यह तो बतलाए जाओ कि बरसात से घास का बहुत नुकसान तो नही हुआ ?" बुढिया ने सीढियो से नीचे उतरती दार्या से सवाल-पर-सवाल पूछ डाले।

"नही, ऐसा कोई खास नुकसान नही हुआ।···खैर, तो मैं जा रही

हूँ · मेरे पास वक्त नही है ।"

"बाग से लौटते हुए इधर से निकल जाना और बूढे के लिए एक कमीज लेती जाना । सुना कि नही ··?"

दार्‌या ने न सुनने का बहाना किया और तेजी से ढोरो वाले बाडे की ओर बढी । नदी के किनारे घाट पर पल-भर को ठिठकी, और उसने अधमुँदी आँखो से दोन के हरे फैलाव पर नजर दौडाई । लहरो के ऊपर की ताजा, नम हवा से औरत के बदन मे भुरभुरी दौड गई और उसने धीरे-धीरे बाग की तरफ कदम बढाए ।

हवा के हलके झोके दोन की लहरियो को रह-रहकर छेडते रहे । समुद्री चिल्लियाँ जहाँ-तहाँ मँडराती रही । लहरें ढलवाँ किनारे पर काफी दूर तक रेगती रही । झलाझल बकाइनी धुध मे लिपटी खडिया की पहाडियाँ धूप मे हलके-हलके चमकती रही और दूर का बरसात से धुला जगल बहार के शुरू-शुरू के दिनो की तरह नया, ताजा और हरा लगता रहा ।

ऐसे मे दार्‌या ने जूते उतारे, दुखते पैर धोये और फिर काफी देर तक किनारे, जलते पत्थर पर बैठी रही । उस समय उसने धूप से बचने के लिए आँखो पर हथेली की ओट की, समुद्री चिल्लियो के कलप से भरे स्वर सुने और पानी की नपी-तुली कलकल सुनी । सारा कुछ ऐसा सूना और वीरान लगा कि उसकी आँखे भर आईं । उस पर बे-बुलाये घर आई । मुसीबत ने दिल पर और भारी पत्थर रख दिया और अन्तर मे दर्द घोल दिया ।···

नताल्या ने अपनी पीठ जैसे-तैसे सीधी की, अपनी कुदाल टट्टी की बाड से टिकाई और दार्‌या से मिलने को लपकी ।

"मेरे पास आई हो दार्‌या ?"

"हाँ, तुम्हारे पास आई हूँ, मुसीबत मे पड गई हूँ ।"

दोनो अगल-बगल बैठ गईं । नताल्या ने सिर का रूमाल खोला, बाल ठीक किए और दार्‌या की ओर उत्सुक दृष्टि से देखा । पर पिछले कुछ दिनो मे ही,चेहरा इतना बदला समझ पडा कि वह अचरज मे पड

गई। गाल बैठ गए और सफेद पडने लगे। माथे पर गहरी झुर्रियाँ दीखी। आँखो से परेशानी और चिन्ता झाँकती मिली।

नताल्या ने हमदर्दी दिखलाते हुए पूछा—"बात क्या है, तुम्हारा चेहरा बिल्कुल काला पड गया है ?"

"मेरी जगह तुम होती तो तुम्हारा भी चेहरा इसी तरह काला पड जाता।" दार्‌या बरबस हँसी और फिर गम्भीर हो गई—"क्या अभी काम बहुत बाकी है ?"

"काम तो शाम तक खत्म हो जाएगा···मगर तुम्हे हुआ क्या है ?"

दार्‌या का गला फँसने लगा। उसने थूक निगला और जल्दी-जल्दी बोली—"बतला रही हूँ अभी बात यह है कि मै बीमार हूँ और एक गन्दी बीमारी लग गई है मुझे·· और यह तोता मैने पाला है अपना पिछले सफर के दौरान···किसी गलीज फौजी अफसर की देन है।"

"यानी, अपने मजे की कीमत अदा कर दी तुमने।" नताल्या ने डर और दुख से हाथ पीट लिए।

"हाँ, मैंने अपने मज़े की कीमत अदा की· और इस सिलसिले मे न मुझे कही कुछ कहना है, न किसी से कोई शिकवा-शिकायत है··· कमजोरी तो मेरी है·· उस सुअर के बच्चे ने मुझे बडा वरगलाया, बहुत फुसलाया—दाँत उसके उजले थे, पर आदमी अन्दर से सडा हुआ था·· और अब हाल यह है कि मैं कही की नही रही हूँ।"

"मेरी दार्‌या, लेकिन, अब·· अब क्या करोगी तुम ?" नताल्या ने फटी-फटी-सी आँखो से दार्‌या को देखा। दार्‌या नीची निगाहे किए अपने पैरो की तरफ देखती रही। फिर वह और सम्हली और सधे हुए स्वर मे बोली—"आसार तो मुझे रास्ते मे ही नजर आने लगे पहले तो मैने सोचा कि होगा यो ही·· तुम तो खुद जानती हो कि औरतो को हजार तरह की तकलीफें होती रहती है···अभी पिछली बहार के दिनो मे मैंने चावल का एक बोरा उठा लिया तो तीन हफ्ते खून जाता रहा · लेकिन खैर बाद मे मुझे लगा कि इस बार ऐसा कुछ नही है · फिर तो और ही नक्शे नज़र आने लगे · और, कल मै जिले के डॉक्टर से मिलने गई तो शर्म से ज़मीन मे गड़ गई·· लेकिन, अब तो सारा खेल खत्म

समझो···औरत बहुत बनती थी, उसे अपनी करनी का भरपूर फल मिल गया।"

"बडी शर्म की बात है·· तुम इसका इलाज कराओ, जैसे भी हो। लोग कहते है कि इस बीमारी का इलाज हो जाता है।"

"नही, मेरी बीमारी का इलाज नही हो सकता।" दार्‌या मुस्कराई और बातचीत के बीच पहली बार नजरें ऊपर उठाईं—"मुझे गरमी हो गई है, और उसका इलाज नही होता···कभी-कभी तो नाक गलकर गिर जाती है·· बुढिया अनद्रोनीखा के मामले मे यही हुआ था···तुमने कभी देखा है उसे ?"

"अब यह बतलाओ कि तुम करोगी क्या ?" नताल्या ने रुआँसे स्वर मे पूछा और उसकी आँखे भर आईं।

दार्‌या बहुत देर चुपचाप बैठी रही। उसने मकई के डठल के चारो ओर लिपटा अश्कपेचाँ-बेल का एक फूल तोडा और अपनी आँखो से लगाया। गुलाबी किनारेवाले, उस छोटे-से फूल से धूप से नहाई धरती की महक आई। दार्‌या उसे इतने गौर से इस तरह ऊबकर देखती रही, जैसे कि उसने उसे पहले कभी देखा ही न हो। फिर, उसने उसे नथुने फुलाकर सूँघा और हवा से खुश्क जमीन पर सावधानी से रख दिया। बोली—"तुम पूछ रही हो कि अब मैं क्या करूँगी ? यही बात जिले से लौटते वक्त मैं भी बराबर सोचती रही और तरह-तरह के नकशे बनाती रही। लेकिन, और कुछ नही हो सकता···मैं अपनी जान दे दूँगी· बात बुरी है, लेकिन कोई दूसरा चारा नही है। मान लो कि मैं इलाज करवा लूँ, तो उससे फर्क क्या पडेगा ? गाँव के हर आदमी को मालूम तो हो ही जाएगा। हर आदमी मेरी तरफ उँगली उठाएगा, मेरे खिलाफ बातें करेगा और मेरी हँसी उडायेगा। इस हालत मे मेरी बात भला कौन पूछेगा ? मेरा सारा हुस्न बरबाद हो जाएगा, मैं मुरझा जाऊँगी और जीते-जी मर जाऊँगी···और यह मैं नही चाहती।" और यह सारी बात उसने यो कही जैसे कि अपने-आपसे जिरह कर रही हो। उसने नताल्या के विरोध और मना करने की तरफ़ ध्यान ही नही दिया।

बराबर कहती गई—"व्येशेन्स्काया जाने के पहले मैंने सोचा था कि अगर कोई बुरी बीमारी होगी तो उसका इलाज करवा लूँगी। यही वजह है कि मैंने रूबल पापा को नही दिये। और सोचा कि डॉक्टरो को देने के काम आएँगे·· लेकिन, अब मैने अपना इरादा बदल दिया है··· मैं हर चीज से ऊब गई हूँ·· मैं अपना इलाज कराना नही चाहती।"

दार्‌या ने बहुत ही गदी मर्दानी गाली दी, थूका और हाथ के पिछले हिस्से से लम्बी बरौनियो मे उलझा आँसू पोछ डाला।

- "सोचो तो कि तुम कह क्या रही हो! तुम्हे उस ऊपर वाले से डरना चाहिए···।" नताल्या ने शात भाव से कहा।

"वह ऊपर वाला·· उससे अब मुझे किसी फायदे की उम्मीद नही · वह तो जिन्दगी-भर मेरे आडे ही आता रहा है··।" दार्‌या मुस्कराई और उस शरारत-भरी मुस्कराहट मे नताल्या को पुरानी दार्‌या की एक झलक मिली—"इन्सान यह न करे और इन्सान वह न करे हर आदमी को गुनाह का डर दिलाता है, और आसमानी फैसले के दिन की बडी-बडी बाते करता है·· लेकिन, मैं अपने-आपको जो फैसला सुनाने जा रही हूँ, इससे खूँखार और कुछ भी नही हो सकता···हर चीज से मेरा जी ऊब गया है, नताल्या! ··हर आदमी घिनौना और खतरनाक हो उठा है·· ऐसे मे अपनी ज़िन्दगी से छुटकारा पा लेना ही मेरे लिए ज्यादा आसान होगा···मेरे आगे-पीछे कोई नही है· कोई नही है जिससे मेरा दिल तड़पे···यह सभी कुछ कितना सच है!"

नताल्या ने दार्‌या को हजार तरह से समझाया और अपने फैसले पर फिर से विचार करने और आत्म-हत्या का विचार दिमाग से निकाल देने के लिए बार-बार कहा। लेकिन, दार्‌या ने पहले तो जैसे सुना ही नही। मगर, बाद मे अपने को सम्हाला और गुस्से से बात काटती हुई बोली—"खत्म भी करो बेकार की बाते, नताल्या! मै यहाँ इसलिए तो नही आई कि तुम मुझसे इस तरह की बातें और मिन्नतें करो। मैं तो तुम्हे अपनी बीमारी की खबर देने और तुमसे यह कहने आई हूँ कि आज से तुम अपने बच्चो को मेरे पास न आने देना। डॉक्टर कहते है कि यह बीमारी छूत की होती है और मैं नही चाहती कि यह किसी भी तरह

बच्चो को लग जाए। समझी बात बुद्धू कही की ? और तुम माँ को भी बतला देना ··उनसे खुद इसका जिक्र करने की हिम्मत मुझमे नही है।

लेकिन, तुम बेकार परेशान हो, मै कोई आज ही अपने गले मे फन्दा डालकर लटकने नही जा रही अभी उसके लिए बहुत वक्त है · मैं अभी जिऊँ-जागूँगी, जिन्दगी के मजे लूँगी और उसे कायदे से अलविदा कहूँगी·· तुम जानती हो कि हम लोग कैसे जीते है ? यानी, जब तक दिल खीचातानी मे नही पडता, तब तक हम अधो की तरह जीते चले जाते है मिसाल के लिए, जरा देखो कि खुद मैने कैसी जिन्दगी बिताई है · एक तरह से आँखे बिल्कुल बन्द कर जीती रही हूँ लेकिन अभी व्येशेन्स्काया से दोन के किनारे-किनारे लौट रही थी कि मुझे लगा कि अब तो सब-कुछ छोडना ही पडेगा बस, यह महसूस करते ही जैसे मेरी आँखे खुल गई—देखा तो नदी धूप मे चाँदी की लगी उसकी कल-कल करती लहरे इस तरह नाचती नजर आई कि मेरी आँखो मे चकाचौध पैदा हो गई·· मैं मुडी और मैने चारो तरफ नजर दौडाई · उफ कैसा दिल खीचा हर चीज ने ! कितनी प्यारी हर चीज लगी ! मगर, यही इसके पहले कभी नही हुआ·· " दार्या के होठो पर शर्म से भरी मुस्कान दौड़ गई और वह चुप हो रही। उसने अपनी मुट्ठियाँ भीची, गले मे फँसती सिसकी दबाई और ऊचे स्वर मे, और जोर देते हुए बोली—"रास्ते मे मुझे कई बार रुलाई आई पर मैं आँसू पी गई ·मगर गाँव के पास आई तो मैने बच्चो को नदी मे नहाते देखा और उन्हे देखते ही मेरा दिल कचोटने लगा। फिर तो मै रोई, बेवकूफ की तरह फूट-फूटकर रोई और अपने मन पर काबू पाने के लिए दो घटे तक रेत पर पडी रही। यह न सोचना मेरे लिए आसान नही है कि·· "

दार्या उठ खडी हुई और अपनी स्कर्ट झाडकर सिर का रूमाल पधे हुए ढग से ठीक करने लगी।

"मौत का खयाल आता है तो सिर्फ यह सोचकर खुशी होती है कि दूसरी दुनिया मे प्योत्र से मुलाकात फिर होगी· उससे कहूँगी—जिगर, प्योत्र-पैन्तेलेयेविच, अपनी बदचलन बीवी को फिर अपनी बाँहों मे कस लो।"

ग्रौर, फिर हमेशा की तरह, सनकियों की भाँति बोली—"लेकिन उस दुनिया मे वह मुझ पर हाथ नही उठा पाएगा ··मुझे मार नहीं सकेगा। झगडालू लोगो को वहाँ जगह नही दी जाती···ठीक है न ?··· अच्छा अलविदा, नताल्या रानी ! लेकिन, देखो माँ से मेरी बीमारी का जिक्र करना न भूलना।"

नताल्या गर्द से भरी हथेलियो से अपनी आँखे ढके बैठी रही। उसकी उँगलियो के बीच आँसू ऐसे झिलमिलाते रहे, जैसे देवदार की चैलियो के बीच राल चमकती है। पर, दार्‌या बाँस की खपच्चियो के फाटक तक पहुँचने के बाद मुडी और फिर बोली—"आज से मैं अलग तश्तरी मे खाऊँगी। माँ से कह देना, और हाँ, एक बात और—उनसे कह देना कि वे पापा से इसका जिक्र न करें, नही तो बूढा बौखलाकर मुझे घर से निकाल बाहर करेगा। अगर कही ऐसा हो गया तो डूबते को तिनके का भी सहारा न रहेगा।··· खैर इस वक्त मैं सीधे मैदान जा रही हूँ···घास काटने के लिए···दोस्विदानिया।"

: १४ :

कज्जाक अगले दिन घास काटकर मैदान से घर लौटे। पैन्तेली ने खाने के बाद घास गाडी से लादकर लाने का निश्चय किया। दून्या बैलो को पानी पिलाने के लिए नदी ले गई और इलीनीचिना और नताल्या ने जल्दी-जल्दी खाने की मेज लगाई।

दार्‌या सबके बाद आई और मेज़ के किनारे जा बैठी। इलीनीचिना ने छोटी प्लेट मे पातगोभी का शोरबा, एक चम्मच और एक टुकड़ा रोटी उसके सामने रख दी। बाकी के लिए शोरबा हमेशा की तरह, एक बडे कटोरे मे भर लिया।

पैन्तेली ने अपनी पत्नी को आश्चर्य से घूरकर देखा, दार्‌या की प्लेट की तरफ आँखो से इशारा किया और पूछा—"यह सब क्या है ? तुमने दार्‌या को शोरबा अलग से क्यो परोसा है ? क्या वह हमारी जात में शामिल नही रही ?"

"बेकार की बातो से तुम्हे क्या ? तुम अपना खाना खाओ।"

बूढे ने दार्या की तरफ मजाक-भरी निगाहो से देखा और मुस्कराया—"ठीक, अब समझा···तमगा मिल गया, इसलिए दार्या रानी को अब सबके साथ खाना पसन्द नही। · क्या बात है दार्या ? एक ही कटोरे मे सबका साथ देने मे नाक पर मक्खी भिनकती है ?"

"नही, ऐसी कोई बात नही ··नाक पर मक्खी क्यो भिनकेगी ?" दार्या ने रूखे ढँग से जवाब दिया।

"तो फिर अलग क्यो खा रही हो ?"

"मेरे गले मे दर्द है।"

"इससे क्या फर्क पडता है ?"

"मैं डॉक्टर को गला दिखलाने व्येशेन्स्काया गई थी। उसने कहा है कि तुम्हे सबसे अलग खाना चाहिये।"

"मेरा भी गला एक बार खराब हुआ था, पर मैने सबसे अलग बैठकर खाना नही खाया, और ऊपर वाले का लाख-लाख शुक्र कि किसी को कुछ नही हुआ। तो, अब तुम्हे कौनसी ऐसी नई सर्दी हुई है ?"

दार्या पीली पड गई। उसने अपने होठ हाथ से पोछे और चम्मच नीचे रख दिया। दूसरी तरफ पति की बेअक्ली पर इलीनीचिना आपे से बाहर हो गई और बूढे पर बरस पडी—"क्यो हाथ धोकर पीछे पडे हो उसके ? तुम तो हमे खाने की मेज़ पर भी चैन की साँस नही लेने देते। चीमड की तरह लिपट जाते हो कि अब जाओ तो जाओ कहाँ ?"

"लेकिन, यह सब बकवास क्या है आखिर ?" पैन्तेली चिढकर चीखा—"वैसे मुझे कोई परवाह नही·· तुम्हारा जो जी आए सो करो।"

और, बूढे ने गुस्से मे चम्मच-भर गरमागरम शोरबा मुँह मे डाल लिया। नतीजा यह कि सारा मुँह जल गया और शोरबा बाहर निकलकर दाढी-भर मे फैल गया। पैन्तेली पागलो की तरह गरज उठा—"तुम्हे खाना परोसने तक की तमीज नही · ऐसी-तैसी मे जाओ तुम सब। कोई आग मे सीधे उतारकर शोरबा किसी को परोसता है !"

"अगर तुम खाते वक्त जबान ज़रा कम चलाते तो यह नौबत न

आती।" इलीनीचिना ने पति को धीरज बँधाते हुए कहा।

पैन्तेली का चेहरा नीला पड गया और वह पातगोभी और आलू के टुकडे दाढी के बालो के बीच से बीनने लगा। इस पर दून्या ठठाकर हँस पडी। लेकिन, बाकी लोग ऐसे गम्भीर रहे कि लडकी ने भी हँसी रोकने की कोशिश की और निगाहे उधर से हटा ली।

खाने के बाद बूढा अपनी दोनो बहुओ के साथ घास की ढोआई के लिए चला। मैदान मे पैन्तेली ने पचागुर भर-भरकर घास गाड़ी मे डाली और नताल्या ने महक लेते हुए घास पैरो से दबाई। फिर वह और दार्या साथ-साथ खेत से लौटी। पैन्तेली तेज चाल से घर लौटते बैलो के साथ काफी आगे निकल गया।

···सूरज ढूह के पीछे मुँह छिपाने लगा। घास की खाली स्तेपी की, चिरायते की-सी, तीखी गध से शाम का पूरा वातावरण भर उठा। पर धीरे-धीरे गध का यह तीखापन मधुर होता गया और उसमे दिन के समय की चुभन बाकी न रही। गर्मी घटने लगी। बैल बिना हाँके आगे बढते गए। उनके पैरो से जो धूल उडी वह सडक के किनारे की भटकटैया के पौधो पर बैठ गई। इन पौधो के सिरो पर रखे सुर्ख फूलों के ताज पूरे ज़ोर-शोर से दमकते रहे। आसपास शहद की मक्खियाँ मँडराती रही। टिटिहरियाँ, एक-दूसरे को आवाज देती, उड-उडकर दूर के ताल को जाती रही।

दार्या हिलती-डुलती गाडी मे कुहनियो के सहारे पेट के बल लेट गई और बीच-बीच मे रह-रहकर नताल्या पर नजर डालने लगी। नताल्या विचारो मे खोए-ही-खोए डूबते हुए सूरज को एकटक देखने लगी। ताँबे के रँग की किरणे उसके शात निर्मल चेहरे पर उतरती रही। सहसा ही दार्या ने सोचा—'नताल्या सुखी है·· उसका आदमी है·· बच्चे है और क्या चाहिए उसे ?· घर का हर आदमी उसे मुहब्बत करता है लेकिन मैं·· मेरी दुनिया उजड चुकी है···मै आज मर जाऊँ तो मेरे नाम कोई एक आँसू भी न बहाए।' और इन विचारो के साथ ही उसके मन मे नताल्या के प्रति ईर्ष्या के भाव उग आए और किसी-न-किसी तरह उसका दिल दुखाने और उसे तकलीफ देने की

बात अचानक ही उसके दिमाग मे नाचने लगी। उसे लगा—'आखिर मायूसी और बदनसीबी मुझ पर ही चोट-पर-चोट क्यो करे ? आखिर एक अकेले मै ही यह सब क्यो सहूँ ? मै एक ही अपनी जिन्दगी की बर्बादी की बात क्यो सोचूँ ? एक मै ही इस तरह क्यो घुटूँ और घुलूँ ?'

बस, तो उसने नताल्या पर एक तेज निगाह डाली और यो बोली, जैसे कि हृदय की पूरी ईमानदारी से बात कह रही हो—"आज तुम्हारे सामने अपना एक गुनाह कबूल करना चाहती हूँ, नताल्या !"

नताल्या ने तत्क्षण कोई उत्तर नही दिया। डूबता सूरज एक जमाने पहले की याद मे रग भर रहा था। उस समय ग्रिगोरी से उसकी शादी की बात पक्की-भर हुई थी, और वह उससे मिलने उसके यहाँ आया था। लौटते समय वह उसे फाटक तक पहुँचाने उसके साथ गई थी। उस दिन डूबते सूरज ने अन्तिम लपटे छोडी थी। सूरज डूबने के बाद पश्चिम का आसमान रसभरी-सा लाल हो उठा था और कौए नरकुल मे काँव-काँव करते रहे थे। ग्रिगोरी अपने घोडे पर सवार होकर आधा मुडा था और फिर चला गया था। वह सुख-दुख से भरे आँसुओ के बीच उसे एकटक देखती और अछूती, नुकीली छातियो पर हाथ रखे दिल की तेज धडकने सुनती रही थी।···

इसीलिए दार्या ने सहसा ही मौन तोडा तो उसे अच्छा नही लगा, और उसने बेमन से पूछा—"क्या बात है, कौन-सा गुनाह कबूल करना चाहती हो तुम, ?"

"मुझसे सचमुच एक गुनाह हो गया है···तुम्हे याद है, जब ग्रिगोरी छुट्टी पर मोर्चे से घर आया था, उसी दिन शाम को मैं गाय दूहकर घर लौटी तो अकसीनिया की आवाज मेरे कानो मे पडी।··· फिर उसने मुझे दुबारा आवाज़ दी···और मैं बाहर गई तो उसने यह अँगूठी मुझे दी···दी क्या ज़बरदस्ती मेरी उँगली मे डाल दी।" दार्या ने अपनी उँगली मे पडी अँगूठी नचाई—"और, हज़ार बार मिन्नतें कर कहा कि ग्रिगोरी को ज़रा मेरे पास भेज दे···वैसे मुझे क्या था···

मैंने ग्रिगोरी से कह दिया ··सारी रात उस दिन वह···तुम्हे खयाल है, तुमसे उसने कुदिनोव के आने और उससे बाते करते रहने की बात कही थी ? वह सारा-कुछ झूठ था· सब-कुछ बहाना था, बकवास थी··· वह अकसीनिया के साथ रहा था।"

नताल्या का चेहरा जर्द पड गया और वह तिनपतिया घास का सूखा तिनका तोडती चुपचाप बैठी रही।

"नताल्या, मुझसे नाराज न हो · मुझे इसका बडा दर्द है··· इसीलिए तो मैंने यह बात तुमसे कही।" दार्या ने मीठे शब्दो मे कहा और नतालिया की आंखो मे आँखे डालने की कोशिश की।

नताल्या के आँसू गले मे फँसकर रह गए। नए सिरे से सिर पर रहने वाला मुसीबत का यह पहाड इतना अप्रत्याशित रहा और इतना कष्टकर लगा कि उसमे दार्या को जवाब देने की शक्ति बाकी न रही। वह सिर्फ दूसरी तरफ मुड गई कि उसका रंजीदा चेहरा सामने न रहे।

परन्तु गाडी गाँव मे दाखिल हुई तो दार्या ने अपने-आपसे लडते हुए मन-ही-मन सोचा—'जाने किस शैतान के बहकाए मे आकर मैंने इस तरह चोच चला दी इस पर ! अब पूरे एक महीने तक यह आँसू बहाती रहेगी। अच्छा होता कि यह बात मै इसे बतलाती ही नही। यह तो ऐसी गाय है जिसकी आँखो की पट्टी कभी खोलनी ही नही चाहिए।'

तो, अपनी चोट का असर कम करने के खयाल से बोली—"लेकिन, नताल्या, तुम इस तरह परेशान न हो ··इसमे आँसू बहाने और आहें भरने को ऐसा क्या है ? मेरे दिल पर कही पत्थर का बडा बोझ है। पर, मुझे देखो कि कभी मन मैला नही करती। और शैतान ही जाने कि सचमुच सच्चाई क्या है·· हो सकता है कि वह अकसीनिया के साथ न रहा हो और कुदिनोव से ही मिलने गया हो। मैंने कोई उसका पीछा तो किया नही। फिर, यह है कि चोर तो सिर्फ वही होता है जो रँगे होथों पकडा जाता है।"

"मैं तो समझ गई थी कि यह कहाँ गया है।" नताल्या ने शात भाव से कहा और रूमाल के सिरे से आँखें पोंछी।

"लेकिन, अगर तुम समझ गई थी, तो तुमने उससे पूछा क्यों नही ?

उफ·· कैसी निकम्मी हो तुम ! तुम्हारी जगह मै होती तो मेरे हाथ मे निकलकर तो क्या कही चला जाता वह ! मै तो उसे ऐसा नीचा दिखाती कि तबियत हलकी हो जाती ।"

"मै दहशत खा गई और मैंने सच्चाई का सामना करना नही चाहा ।···तुम्हारा खयाल है कि इतना सब सहना आसान है कुछ ?" नताल्या बोली । भावना से उसकी आवाज फँसने लगी—"हो सकता है कि तुमने प्योत्र के साथ यही सब किया हो · और, उसने सब-कुछ सह लिया हो ··पर, जब मुझे खयाल आता है कि मैंने कितने रज देखे, कितने सदमे उठाये, तो आज भी सहना मुश्किल हो उठता है ।"

"खैर, हटाओ···अब भूल जाओ यह सब ।" दार्या ने भोले-भाले ढग से सलाह दी ।

"ऐसी बाते कभी भूली नही जाती ।" नताल्या ने अजीब-सी भर्राई आवाज मे जवाब दिया ।

"मै तो भूल जाती । बेकार का तिल का ताड··· सिर-दर्द ।"

"तो, तुम अपनी बीमारी ही भूलकर दिखलाओ ।"

दार्या खुलकर हँसी—"मै तो भूल जाऊँ, पर वह कम्बख्त भूलने भी तो दे ।···अच्छा सुनो नताल्या, मैं अकसीनिया से सच्चाई मालूम करूँगी ···वह मुझे सब-कुछ बतला देगी··· बात यह है कि दुनिया मे एक भी ऐसी औरत नही है जो पी जाए और दूसरो को यह बतलाए कि उसे कौन प्यार करता है, कैसे प्यार करता है । मैं तो अपनी ही बात जानती हूँ···मेरी मिसाल तुम्हारे सामने है ।"

"मै तुम्हारी कोई मेहरबानी नही चाहती । तुम तो मुझ पर पहले ही मेहरबानी कर चुकी हो ।" नताल्या ने रुखाई से कहा—"मैं अधी नही हूँ···सब-कुछ देखती हूँ, और जानती हूँ कि यह सब तुमने मुझसे क्यो कहा । तुमने गुनाह मानने के लिए अपना गुनाह मेरे सामने नही रखा बल्कि मुझे और दुखाने के लिए यह सब किया है···"

"तुम ठीक कहती हो ।" दार्या ने आह भरते हुए अपराध स्वीकार किया—"लेकिन, तुम खुद ही फैसला करो···क्या दर्द सहने के लिए,

मुसीबतें झेलने के लिए दुनिया मे एक मैं ही बनी हूँ ?"

औरत खिसककर गाडी से नीचे आई और थकान से चूर बैलो को सम्हाल-सम्हालकर, सहारा देकर, ढाल से नीचे उतारने लगी। घर-वाली गली के मोड पर वह फिर नताल्या के पास गई और बोली—"नताल्या रानी, मैं एक बात पूछूँ तुमसे···यह बतलाओ कि तुम ग्रिगोरी को बहुत प्यार करती हो ?"

"मैं पूरे मन से उस पर कुरबान हूँ।" नताल्या ने जवाब दिया।

"यानी, तुम बहुत ही ज्यादा प्यार करती हो उसे!" दार्या आह खीचती हुई बोली—"लेकिन, मुझे कभी किसी को दिल से प्यार करने का मौका नही मिला · मैंने तो कुत्ते की तरह प्यार किया है ··अभी यहाँ मुँह मारा तो अभी वहाँ और अभी वहाँ···काश कि यह जिन्दगी दुबारा मिलती! अगर मिलती तो मै शायद और ढंग से जीकर दिखलाती·· "

गरमी का धुँधलका कितनी देर का! बस, तो फिर जल्दी ही रात हो गई। दोनो ने अँधेरे मे अहाते मे घास की टाले लगाईं और नाम को भी मुँह नही खोला।

बाद मे पैन्तेली दार्या पर चीखा तो दार्या ने उलटकर कुछ नही कहा।

· १५

दोन-सेना की मिली-जुली टुकडियाँ और ऊपरी दोन की विद्रोही सेनाएँ उस्त-मेदवेदित्स्काया से पीछे हटते दुश्मन का पूरी ताकत से पीछा करते हुए, उत्तर की ओर बढी। शाशकिन मे नवी लाल सेना की बिखरी हुई रेजीमेटो ने कज्ज़ाको को आगे बढने से रोकने की कोशिश की। पर, उनके पैर उखाड दिए गए और फिर, बिना जमकर लोहा लिए, वे लगभग जारीत्सिन स्टेशन तक पीछे हटते चले गए।

ग्रिगोरी और उसकी डिवीजन ने लडाई मे हिस्सा लिया और सुतूलोव के पैदल ब्रिगेड की बड़ी मदद की। उस पर बाजुओ से हमला कर दिया गया था।

ग्रिगोरी ने येरमाकोव की घुडसवार रेजीमेट को धावा करने का हुक्म दिया और उस रेजीमेट के फौजियो ने कोई दो सौ लाल फौजी कैदी बनाये और चार मशीनगने और लडाई के सामान से भरी ग्यारह गाड़ियाँ हथिया ली।

तीसरे पहर के बाद पहली रेजीमेट के कज्जाको के दल के साथ ग्रिगोरी शाशकिन आया। डिवीजनल-स्टाफ के मकान के बगल वाले घर में कैदियो की घनी भीड दीखी और आधे स्क्वैड्रन कज्जाक उनकी पहरेदारी करते नज़र आए। कैदियो के बदन पर सफेद सूती कमीज़ें और पैंट थे। उनके बूट और बाकी कपडे उनसे छीने जा चुके थे। सफ़ेदी के उस आम पसारे मे कही कोई इक्का-दुक्का ट्यूनिक ही वातावरण मे हरियाली घोलती थी।

"अरे, ये लोग तो कलहसो की तरह सफेद लग रहे है।" प्रोखोव-ज़िकोव ने कैदियो की तरफ इशारा करते हुए कहा। ग्रिगोरी ने घोड़े की रासें खीची और उसे एक ओर को मोडा। फिर, भीड मे येरमाकोव नजर आया तो उसे आवाज देते हुए बोला—"अपना घोडा पास लाओ न ··दूसरो की पीठो के पीछे मुँह छिपाते क्यो फिर रहे हो ?"

येरमाकोव खाँसते हुए पास आया। उसकी हलकी, काली मूँछो के नीचे और पिसे-से होठो के ऊपर खून की पपडी पडी रही। दाहिना गाल सूजा और ताजी चोटो के कारण नीला लगता रहा।···

हुआ यह था कि हमले के दौरान उसका घोडा पूरी रफ्तार से दौड़ते-दौडते लडखडा गया और गिर गया था। वह खुद काठी से फिसलकर कोई पाँच कदम तक ढेले की तरह चला गया था और फिर कटे हुए खेत की ऊँची-नीची जमीन पर एकदम जा गिरा था। इसके बाद वह और उसका घोडा दोनो ही उछलकर खडे हो गए थे और येरमाकोव एक बार फिर काठी पर जमकर बैठ गया था। उसकी टोपी गायब थी, और उसके चेहरे पर खून की धारें बह रही थी। मगर, वह हाथ में नंगी तलवार साधे, ढाल पर उमडते कज्ज़ाक घुड़सवारो को जा पकड़ने के लिए उड़ा चला जा रहा था।···

"और, भला मै मुँह क्यो छिपाऊँगा ?" उसने ग्रिगोरी के घोडे के बराबर अपना घोडा लाते हुए आश्चर्य से पूछा। उसकी आँखें अब भी लडाई की आग से रोशन और लडाई के खून से लाल लगी। पर, उसने घबराहट के कारण ग्रिगोरी की निगाह बचाई।

"बिल्ली गोश्त खाती है तो जानती है कि किसका गोश्त खा रही है! मेरे पीछे-पीछे घोडा दौडाए क्यो चले आ रहे हो ?" ग्रिगोरी ने गुस्से से पूछा।

"किस-किसके गोश्त की बात कर रहे हो ? पहेलियाँ मत बुझाओ। मेरी समझ मे कुछ नही आएगा। आज मै सिर के बल अपने घोडे के नीचे आ गिरा···"

"यह तुम्हारा काम है।" ग्रिगोरी ने चाबुक से कैदियों की तरफ इशारा किया।

येरमाकोव यो बना जैसे कि इसके पहले उसने उन कैदियो को देखा ही न हो। सो बडे ही ताज्जुब से बोला—"अरे, इन सुअर के बच्चो, इन बदमाशो ने नगा कर रखा है। लेकिन, इतना सब इन्होने किया कब ? अभी एक मिनट पहले ही तो मै इन्हे हुक्म देकर गया हूँ कि इन कैदियो को हाथ न लगाया जाए। और अब देखो ज़रा इन्हें! इनके सारे कपडे-लत्ते छीन लिये है इन्होने।"

"मेरी आँखो पर पर्दा डालने की कोशिश न करो। तुम यह ड्रामा क्यो कर रहे हो ? इनके कपडे-लत्ते छीन लेने का हुक्म तुमने दिया कि नही ?"

"क्या कह रहे हो·· अपने होश मे हो तुम, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ?"

"तुम्हे मेरे हुक्म का खयाल है ?"

"तुम्हारा मतलब, उस मामले मे ?"

"हाँ, उस मामले मे।"

"याद है·· भला याद क्यो नही होगा ? मुझे ज़बानी याद है। स्कूल से पढी शायरी की तरह ज़बानी याद है।"

ग्रिगोरी स्वाभाविक ढग से मुस्कराया और अपनी काठी पर झुकते हुए उसने येरमकोव की तलवार की पेटी थाम ली। इस बहादुर,

जीवट के कमांडर से उसे बडा स्नेह था।

"खारलाम्पी, बेकार बनो नही! तुमने यह सब क्योकर होने दिया ? कोपीलव की जगह काम करने वाला नया कर्नल इसकी रिपोर्ट कर देगा और इसके लिए जवाब और जिरह का तूफान उमडेगा तो तुम्हे जरा भी अच्छा न लगेगा।"

"मेरे देखते यह हो नही सकता था, पैन्तेलेयेविच !" येरमाकोव ने गम्भीर भाव और सरल मन से उत्तर दिया—"हमारे फौजियो के पास कपडों की कमी थी, मगर इन्हे उस्त-मेदवेदित्स्काया मे नये कपडे दिये गए थे, और इन सबने वही पहन रखे थे। इनका क्या, इनके वे कपडे तो उतर ही जाते। आगे न उतरते तो पीछे की कतारो मे पडने पर उतर जाते। अब हम क्या अपने फौजियो को इसलिए गिरफ्तार करेंगे कि उन्होने इन चूहो के कपड़े छीन लिए है? नही, ऐसा नही होगा। कही अच्छा है कि हमारे फौजी इन कपडो को इस्तेमाल करे। मैं जवाब दे लूंगा इसके लिए। मगर वे लोग मुझे बहुत ज्यादा बदल नही पाएँगे। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम मुझ पर बेकार मे न बरसो। मैं इसके बारे मे कुछ नही जानता, और मुझे कानो-कान इसकी खबर नही मिली।"

ये दोनो कैदियो के बराबर पहुँचे कि सारी बातचीत खत्म हो गई। किनारे के लोगो ने डर और उत्सुकता से घूरते हुए इन घुडसवारो के लिए राह कर दी। एक लाल-फौजी ने कमाडर के रूप मे ग्रिगोरी को पहचाना और पास आकर उसके घोडे की रकाब पर हाथ रखते हुए बोला—"साथी-कमाडर, अपने कज्जाको से कम-से-कम हमारे बरान-कोट तो दिलवा ही दे। हम पर इतनी कृपा तो करे ही। रात को ठडक पडती है और हम किस तरह नगे हैं, यह आप खुद ही देख सकते हैं।"

"मैं कुछ नही समझता···तुम तो भरी गरमी के दिनो मे भी ठड से ठिठुरने की बात करोगे।" येरमोकोव ने सख्ती से जवाब दिया और उस लाल फौजी को अपने घोड़े से धकियाते हुए ग्रिगोरी से बोला—"तुम फिक्र न करो···मैं हुक्म देकर इन सबको कुछ फटे-पुराने

'मै फिर कहता हूँ कि तुम झूठ बोल रहे हो ।"

आदमी ने अपने कन्धे झटके और मुँह से कुछ नही कहा । कर्नल ने ग्रिगोरी की ओर देखा, और कैदी की तरफ इशारा कर गर्दन हिलाते हुए बोला—"इधर आओ और तारीफ करो । शाही फौज का पुराना अफसर है, लेकिन इस वक्त, जैसा कि देख रहे हो, बोलशेविक रग मे है। रगे हाथो पकडा गया है तो हमे समझाना चाहता है कि यो ही मौके की बात है कि लाल फौजियो के साथ आ गया था। फौज से अलग किया हुआ अफसर है। दसवे दर्जे मे पढने वाली लडकी की तरह भोला-भाला बन रहा और सफेद झूठ बोल रहा है, और समझता है कि हम इसकी बात पर यकीन कर लेगे । लेकिन इसमे यह मानने की हिम्मत नही है कि यह गद्दार है और इसने अपने मुल्क के साथ गद्दारी की है । ···डरता है ··बदमाश कही का !"

आदमी ने कठिनाई से बोलते हुए कहा—"कर्नल, मैं समझता हूँ कि मुझमे तो नही है, पर तुममे काफी हिम्मत है, और तुम किसी भी कैदी की खासी किरकिरी कर सकते हो।"

"मैं कमीनो और बदमाशो से बात नही करता ।"

"लेकिन मुझे तो करनी है ।"

"होशियार मुझे मजबूर न करो, वरना मुझे तुम्हारी और ज्यादा बेइज्जती करनी पडेगी ।"

"तुम जिस ओहदे पर हो, उसे देखते हुए यह काम जरा भी मुश्किल नही···और, इससे भी बडी बात यह है कि इतना सब करके भी तुम किसी तरह का कोई खतरा मोल नही लेते ।"

ग्रिगोरी बिना मुँह खोले मेज के किनारे बैठ गया और हमदर्दी से मुस्कराते हुए कैदी की तरफ देखने लगा । कैदी का चेहरा नफरत से सफेद पड गया था । पर उसने निर्भीक भाव से जवाब दिया था ।

'कर्नल के दिमाग ठिकाने लगा दिए इसने !' ग्रिगोरी ने सन्तोष से सोचा और अन्द्रेयानोव के भरे हुए, नीले, उत्तेजना से फड़कते गालो को देखकर उसका मन डाह-मिली खुशी से भर उठा ।

ग्रिगोरी, पहली मुलाकात के बाद ही, नये चीफ-ऑफ-स्टाफ को

नापसन्द करने लगा था। अन्द्रेयानोव ऐसे अफसरो मे था जिन्होंने लडाई के जमाने मे मोर्चे की कभी शक्ल न देखी थी और जो बडे अफसरो और अपने परिवारो से सम्बद्ध बडे लोगो की खुशामद के सहारे बराबर पीछे बने रहे थे। वह भो अपनी पूरी ताकत से अपने सर्वथा सुरक्षित पद से चिपका रहा था। गृह-युद्ध के समय भी उसने मोर्चे के पार्श्व-भाग मे, नोवेचेरकास्क मे अपने लिए काम खोज लिया था और अतामान क्रासनोव के हाथो से सत्ता छिन जाने के बाद ही मजबूरन मोर्च पर गया था।

एक बार ग्रिगोरी लगातार दो रात अन्द्रेयानोव के साथ एक ही जगह रहा था। उससे खुद अन्द्रेयानोव ने कहा था—"मै परमपिता मे पूरी तरह विश्वास रखता हूँ। उसके ध्यान की बात सोचते ही मेरी आँखे भर आती है। मेरी बीवी अपने-आपमे एक अलबेली मिसाल है। उसका नाम सोफिया अलेक्सान्द्रोवना है और खुद डिप्टी-अतामान वॉन-ग्रेबी कभी उसके पीछे पागल था।"

इसके बाद अन्द्रेयानोव ने अपने मृत पिता की जागीर, कर्नल के पद तक पहुँचने के अपने अथक सघर्ष, और १६१६ मे जिन-जिन बडे लोगो के साथ शिकार किये थे, उनके बारे मे कितनी ही दिलचस्प बातें बतलाई थी।

उसने ग्रिगोरी से आगे कहा था—"मैं ह्विस्ट को सबसे अच्छा खेल, जीर की पत्तियो से बसाई कन्यक को सबसे अच्छी शराब और फौजी कमीसारियट की नौकरी को सबसे फायदेमन्द नौकरी मानता हूँ।"

कर्नल अन्द्रेयानोव 'आसपास कही भी' गोली दगने पर चौक उठता और मैदे की तकलीफ का बहाना कर घुडसवारी भी वाजिब-वाजिब ही करता। स्टाफ-हेडक्वार्टर्स मे गारद बढाने की उसे बराबर फिक्र रहती थी, और कज्जाको के लिए उसके मन मे जो नफरत थी, उस पर मुश्किल से ही पर्दा डाल पाता। उसके खयाल से १६१७ मे सभी ने गद्दारी की थी, और तभी से वह सभी नीचे ओहदेवाले अफसरो को एक तरह से घृणा करने लगा था। कहता—"केवल खानदानी लोग ही रूस को बचा सकते है।"···इस तरह वह अपने को भी खानदानी सिद्ध करता और

अपने खानदान को दोन प्रदेश का सबमे पुराना और सबसे प्रतिष्ठित परिवार बतलाता।

यानी, जरूरत से कही ज्यादा बोलना उसकी सबसे बडी कमजोरी थी। बुजुर्गियत से बोझिल, सम्हाल मे न आने वाली यह वाचालता एक खास किस्म के बातूनी और बेसमझ लोगो को ढलती उम्र मे बडा दुख देती है। बात यह है कि जिन्दगी-भर हर चीज पर आसानी से, बनावटी फैसले देते रहने के कारण इनकी आदते, यहाँ तक आते-आते काफी बिगड जाती है।

ग्रिगोरी अपनी जिन्दगी मे इस तरह के कितने ही लोगो से मिला था, और वे उसे फूटी आँखो न सुहाते थे। सो, उसने अन्द्रेयानोव को बरकाने की पूरी कोशिश की और दिन मे इसमे उसे सफलता भी मिली। पर रात होते ही अन्द्रेयानोव ने उसे खोजा और हडबडाते हुए पूछा—"पर रात मे हम लोग एक ही जगह, एक साथ रहेगे न ?" और, फिर जवाब का इन्तज़ार किये बिना आगे बोला—"दोस्त, तुम कहते हो कि पैदल हमले के मामले मे कज्जाको पर भरोसा नही करना चाहिए। पर जब मैं महामहिम के आसपास रहने वाला एक अफसर था तो···अरे, वाहर कोई है जरा ट्रक और विस्तर ले आओ! ··" फिर ग्रिगोरी लेट गया और आँखे मूँदकर, दाँत भीचकर पूरी कहानी सुनता रहा। इसके बाद उसने अनादर से अथक-वक्ता की ओर पीठ कर ली। सिर पर बरानकोट डाल लिया, और मन-ही-मन क्रोध से सोचा—'तबादिले का हुक्म पाते ही मै किसी भारी चीज से इसका सिर तोडकर रहूँगा। उसी हालत मे एकाध हफ्ते के लिए इसकी ज़बान रुके तो रुके!·· ' परन्तु, दूसरे ही क्षण अन्द्रेयानोव ने पूछा—"सो गये, स्क्वैड्रन-कमाण्डर ?"

"हाँ।" ग्रिगोरी ने निंदासी आवाज मे जवाब दिया।

"लेकिन, माफ करना ··अभी तो मेरी बात खत्म हुई नही।"·· और फिर दास्तान चालू हो गई। ग्रिगोरी ने झपकी लेते हुए सोचा—"लोगो ने यह तोता यहाँ समझ-बूझकर भेजा है। फितशालौरोव ने कुछ किया होगा। भला ऐसे सडे हुए आदमी के साथ काम कौन कर

सकता है। और फिर वह सो गया। मगर, कर्नल की भारी, गहरी आवाज बराबर बजती रही—टीन की छत पर पटापट गिरती बरसात की बूंदो की तरह।···

इसीलिए, इसमे कोई आश्चर्य नही कि ग्रिगोरी ने उस बदी लाल कमाडर को वातूनी कर्नल का मुँह इस तरह, इतनी सफाई से बद करते देखा तो उसे इतनी खुशी हुई।

अन्द्रेयानोव पूरे एक मिनट तक चुप रहा और आँखे मूंदे बैठा रहा। उसकी लम्बी-लम्बी आँखो मे लाल डोरे पड गए, और उसका मेज पर टिका, सफेद, भारी सोने की अँगूठी वाला हाथ कँपकपाने लगा। उत्तेजना से फटी-फटी-सी आवाज से बोला—"सुन बे, दोगले कुत्ते, इस तरह के सवाल-जवाब के लिए तो मैंने यहाँ बुलवाया नही। यह बात तुझे भूलनी नही चाहिए। दूसरे, तू यह नही समझना कि चाहे जो हो, इस तरह तेरी जान भी छूटेगी नही।"

"अच्छी तरह समझता हूँ।"

"गनीमत है। फिर यह कि मुझे इस बात की जरा परवाह नही कि तुम लाल फौज मे अपनी तबीयत से आए या कैसे आए। इससे कोई फर्क नही पडता। फर्क इससे जरूर पडता है कि तुमने इज्जत के बारे मे एक गलत राय बना रखी है, और तुम इस राय की वजह से सही बाते बतलाने से मुकर रहे हो।"

'साफ है कि इज्जत क्या है और क्या नही है, इसके बारे मे तुम्हारी अपनी राय है और मेरी अपनी· ···"

"यह सिर्फ इसलिए है कि तुममे इज्जत जैसी कोई चीज बाकी नही बची है· समझे!"

"और तुम मेरे साथ जिस तरह बरताव कर रहे हो, उसे देखकर मुझे शक है कि तुममे कभी भी इज्जत जैसी कोई चीज रही भी है· "

"लगता है कि तुम्हे मरने की कुछ जल्दी है।"

"मौत अगर आनी ही हो तो उसे टालने से फायदा? मुझे डराने की कोशिश न करो तुम डरा नही सकते।"

अन्द्रेयानोव ने काँपते हुए हाथो से सिगरेट केस खोला, एक सिगरेट

जलाई, जल्दी-जल्दी दो कश लिये और फिर कैदी की तरफ मुडा—"तो, तुम सवालो के जवाब देने से इन्कार करते हो ?"

"मै अपने बारे मे जो कुछ कह सकता था कह चुका।"

"ऐसी-तैसी मे जाओ ! मुझे तुम्हारी घिनौनी जिन्दगी से कुछ लेना-देना नही। मगर, मेहरबानी कर यह बतलाओ कि सेब्रयाकोव-स्टेशन से तुम्हे क्या और कितनी कुमक मिली ?"

"मैंने पहले ही कहा कि मैं नही जानता।"

"तुम जानते हो।"

"बहुत अच्छा, अगर तुम्हारी खुशी इसी मे है तो यही सही ··चलो, जानता हूँ, मगर बतलाऊँगा नही।"

"नही बतलाओगे तो मै हुक्म देकर अभी बेत से तुम्हारी खाल खिचवा लूँगा।"

"मुझे नही लगता कि ऐसा हो सकेगा।" कैदी ने बाएँ हाथ से मूँछें टेईं और बडे विश्वास के साथ मुस्कराया।

"कामीशिन्स्की-रेजीमेट ने इस लडाई मे हिस्सा लिया था ?"

"नही।"

'लेकिन तुम्हारी फौज का बायाँ बाजू घुडसवारो से घिरा हुआ था···किस रेजीमेट के लोग थे वे ?"

"छोडो भी यह बात। मै फिर कहता हूँ कि मैं ऐसे सवालो के जवाब बिल्कुल नही दूँगा।"

"तो, कुत्ते के बच्चे, चुनाव कर ले···या तो तू फौरन ही सवालो के जवाब देगा, या दस मिनट के अन्दर-अन्दर तुझे दीवार से सटाकर खडा कर दिया जाएगा, और फिर · ! बतला क्या चाहता है ?"

कैदी ने, अप्रत्याशित, जवानी से भरी, बजती हुई, तेज आवाज मे जवाब दिया—"मेरी जान ऊब गई तुझसे·· बेवकूफ कही का···कमीना ···अगर तू कही मेरे हाथ पड जाता, तो मैं तुझसे इस तरह जिरह नही करता· ·"

अन्द्रेयानोव पीला पड गया और उसने झटके से रिवाल्वर के केस की तरफ हाथ बढ़ाया। ग्रिगोरी इत्मीनान से उठा और उसे उसने हाथ

से रोका।

"चलो खत्म करो ··बहुत हुआ! तुमने खासी गपशप कर ली। काफी है। तुम दोनो ही खर-दिमाग हो तुम आपस मे किसी खास समझौते पर नही पहुँच सके लेकिन, खैर, कोई बात नही ··और, अब बात करने को और कुछ है भी नही। जहाँ तक लाल फौजी का सवाल है वह बिल्कुल ठीक करता है कि तुम्हारे सवालो के जवाब देकर अपने साथियो के साथ गद्दारी नही करता। ईश्वर कसम··· शानदार आदमी है! मुझे उससे ऐसी उम्मीद बिल्कुल नही थी।"

'लेकिन, इजाज़त दो कि मैं इसे··।" अन्द्रेयानोव गरजा और उसने रिवाल्वर का केस खोलने की बेकार कोशिश की।

"नही, मैं इजाजत नही देता।" ग्रिगोरी ने खुशी से खिलते हुए कहा, सीधे मेज तक गया और कैदी के पूरे शरीर को ढँककर खडा हो गया। "कैदी को गोली मारने का कोई मतलब नही होता। इस हैसियत के आदमी की जान लेने की बात सोचते हो, तुम्हे शर्म नही आती! आदमी निहत्था है, कैदी है, बदन पर कपडे तक नही है, और तुम उसके खिलाफ हाथ उठा रहे हो।"

"किनारे हटो! इस बदमाश ने मेरी बेइज्जती की है!" अन्द्रेयानोव ने ग्रिगोरी को तेजी से धक्का दिया और रिवाल्वर झटके से बाहर निकाला।

कैदी ने अपना चेहरा फौरन ही खिडकी की तरफ कर लिया। यो कधे झटकने लगा, जैसे कि सर्दी लग रही हो। ग्रिगोरी मुस्कराया। उसने देखा कि कर्नल ने रिवाल्वर हाथ मे लिया, साधा, फिर नली नीची की और वहाँ से हट गया।

"मैं अपने हाथ गदे नही करना चाहता" उसने फटे बाँस-जैसी आवाज मे कहा, दम लिया और अपने खुश्क होठ चाटने लगा।

ग्रिगोरी ने हँसी को रोकने की कोई चेष्टा नही की तो दूधिया दाँत चमचमाने लगे। बोला—"तुम खटका दबा देते तो भी क्या होता! जरा देखो, तुम्हारे रिवाल्वर मे गोली नही है। आज सुबह सोकर उठने पर मैने इसे मेज से उठाकर देखा था।

इसमे गोली एक भी नही थी। उस पर लगा कि सफाई शायद दो महीने से नही हुई है·· तुम अपनी निजी चीजो की कोई खास फिक्र करते नही लगते।"

अन्द्रेयानोव ने निगाहे नीची कर ली, रिवाल्वर उँगली पर नचाने लगा और मुस्कराकर बोला—"ऐसी-तैसी ··मगर, बात तुम ठीक कहते हो।"

कैप्टन सूलिन अब तक सारी बाते सुनता और रहस्यात्मक ढग से मुस्कराता रहा था। पर, अब उसने कैदी के बयान के कागज की तह की और बडे मधुर ढग से बोला—"सेम्योन-पोलीकारपोविच, मैने तुमसे हजार बार कहा कि तुम अपने हथियारो को बहुत ही लापरवाही से रखते हो। आज इस बात की एक और मिसाल सामने आई और साबित हुआ कि मैं ठीक कहता हूँ।"

अन्द्रेयानोव ने भौहे सिकोडी और चिल्लाकर आवाज दी—"ऐ · कोई है···?"

और, दो अर्दलियो के साथ गार्दो का मुखिया सामने के दरवाजे से अन्दर दाखिल हुआ। अन्द्रेयानोव ने कैदी की तरफ सिर हिलाकर इशारा किया—"ले जाओ इसे यहाँ से!"

लाल अफसर ग्रिगोरी की तरफ मुडा, मुँह से बिना कुछ बोले झुका और दरवाजे की तरफ बढा। ग्रिगोरी ने उसके होठो की हलकी-हलकी मुस्कान मे आभार की भावना पढी।

फिर, जब आदमी के पैरो की आहट तक दूर चली गई तो अन्द्रेयानोव ने ऐसा चेहरा बनाया जैसे कि बहुत थक गया हो। उसने चश्मा उतारा, साभर के चमडे से शीशे साफ किये और टूटी हुई आवाज मे बोला—"तुमने उस गलीज की बहुत ही शानदार वकालत की, गोकि यह तुम ही समझो कि तुमने किया क्या? पर, उसके सामने तुमने मेरे रिवाल्वर का जिक्र क्यो किया? मेरी बडी ही किरकिरी की।"

"यह ऐसी कोई बडी बात नही।" ग्रिगोरी ने समझौते के स्वर मे जवाब दिया।

"हो सकता है कि कोई बडी बात न हो, लेकिन फिर भी रिवॉल्वर

का जिक्र उस शक्ल मे तुम्हे करना नही चाहिए था। वैसे यह सच है कि मेरा बस चलता तो मै उसे गोली से उडा देता। घिनौना आदमी है। मैं तो तुम्हारे आने के आधे घटे पहले से उससे दिमाग लडा रहा था, और वह जिस ढग से सफेद झूठ बोलकर बचकर निकलना चाहता था, उससे हैरत होती थी। पर. फिर, जब मैने उसे पकड लिया तो उसने मुँह खोलने से ही साफ-साफ इन्कार कर दिया। बोला—'मैं फौजी अफसर हूँ, और मेरी अपनी इज्जत है। मै दुश्मन को फौजी राज़ नही दे सकता।'···मगर कुत्ते के बच्चे ने जब अपने-आपको बोलशेविको के हाथ बेचा तब इज्जत की बात नही सोची मैं तो कहता हूँ कि हम उसे और कमान के दो दूसरे लोगों को चुपचाप ठिकाने लगवा दे। जहाँ तक चीजो के सुराग पाने का सवाल है हमे उन लोगो से कुछ भी मालूम होने से रहा। वे घराऊ बदमाश है और उन्हे रास्ते पर लाया ही नही जा सकता इसलिए उन्हे जिन्दा रखना कोई मतलब रखता ही नही। क्या खयाल है ?"

"तुमने यह कैसे जाना कि वह कम्पनी-कमाडर है ?" ग्रिगोरी ने सवाल का जवाब न देकर दूसरा सवाल कर दिया।

"एक लाल फौजी ने ही उसके साथ दगा की और सब-कुछ बतला दिया।"

"मेरा तो सुझाव है कि हम कमाडरो को हाथ न लगायें और उस आदमी को गोली से मरवा दे।" ग्रिगोरी ने अन्द्रेयानोव की ओर यो देखा, जैसे कि चुनौती दी हो।

कर्नल ने अपने कधे झटके और यो मुस्कराया जैसे कि किसी ने कोई बुरा मजाक कर दिया हो। "नही लेकिन ठीक-ठीक बतलाओ कि क्या सोचते हो ?"

"मैं वही सोचता हूँ जो मैंने अभी-अभी कहा।"

"माफ करो, मगर यह बतलाओ कि हम उस आदमी को किस लिए गोली से उडवा दे ?"

"किस लिए ? रूसी फौज मे कायदे-कानूनो और निज़ाम की जगह बनाए रखने के लिए। कर्नल, अभी कल हम सोने चले तो तुमने बडी-

बडी बाते की कि कल बोलशेविको को चूर-चूर करने के बाद हम फौज मे कैसा निजाम कायम करेंगे और जवानो को लाल फौजियो की छूत से कैसे बचायेंगे! मैने तुम्हारी हर बात को ठीक बताया। तुम्हे खयाल है?" ग्रिगोरी ने मूँछो पर हाथ फेरा, कर्नल के चेहरे के बदलते हुए भाव देखे और जैसे फैसला देते हुए कहता गया—"लेकिन, तुम्ही इस वक्त क्या कह रहे हो, क्या सुझाव दे रहे हो? इस तरह तो फौज के तमाम लोग चौपट हो जायेंगे। फौजी समझेंगे कि अपने अफसरो के साथ गद्दारी करना कोई बुरी बात ही नही है। क्या अच्छा सबक देना चाहते हो तुम उन्हे! दूसरे, अगर कल हम इन लाल कमाडरो की जगह कैदी बना लिये जाये तो क्या हो? तब कैसा लगे हमे? माफी चाहता हूँ, मगर मै तुम्हारा सुझाव मानने को तैयार नही हूँ।"

"जैसा तुम्हारा मन!" अन्द्रेयानोव ने ग्रिगोरी की ओर गौर से देखते हुए, बेमन से कहा।

उसने यह तो सुन रखा था कि विद्रोही सेना के कमाडर के नैतिकता के अपने माप है, और वह अजीब-गरीब सौदे करता है, लेकिन इस पर भी इस तरह की उससे उसे कोई आशा न थी। फिर भी उसने अपनी तरफ से सिर्फ इतना कहा कि लाल फौज के कमाडरो, और उनमे भी खास तौर पर पहले के अफसरो को हमने जब भी पकडा है, उनके साथ हमेशा यही और एकसा ही बरताव किया है। इसीलिए तुम्हारी बात मुझे खासी नई-नई-सी लग रही है' फिर यह कि यह मामला तो काफी साफ है' इस मामले मे तुम्हारा रवैया मेरी समझ मे बहुत आ नही रहा।

ग्रिगोरी का चेहरा नीला पड गया। बोला—"मौका पडने पर लडाई मे हमने उन्हे तलवार के घाट उतारा है, लेकिन वैसे बिना किसी खास वजह के हमने कभी किसी को गोली से नही उडाया।"

"तो, ठीक है, हम उन्हे मोर्चे के पीछे भेज देगे।" अन्द्रेयानोव ने कमाडर की हाँ-मे-हाँ मिलाते हुए कहा—"लेकिन, अब एक दूसरा सवाल सामने है—सरातोव प्रदेश के कुछ किसान कैदियो ने हमारी फौज मे शामिल होकर लड़ने की बात कही है। जहाँ तक हमारी तीसरी पैदल

रेजीमेट का सवाल है, उसमे तीन सौ मे कम-ही-कम सगीन वाले फौजी हैं। क्या कुछ स्वयसेवक कैदियो को उस रेजीमेट मे भेजा जा सकता है ? फौज के स्टाफ के हुक्म तो इस मामले मे हमे मिल चुके हैं, और बिलकुल साफ है।"

'मै एक भी किसान को अपनी कमान मे नही लूँगा। फौजियो की कमी कज्जाको से पूरी की जानी चाहिए।" ग्रिगोरी ने दोटूक जवाब दे दिया।

पर, अन्द्रेयानोव ने उससे बहस करने की कोशिश की। बोला—"सुनो, मैं तुमसे झगड नहीं रहा, और यह समझता हूँ कि तुम डिविजन मे सिर्फ कज्जाक रखना चाहते हो। लेकिन, जरूरत की बात है, और उस वक्त हम कैदियो की तरफ से भी मुँह मोड नही सकते। स्वयसेवक सेना ने भी कैदियो को शामिल कर कुछ रेजीमेटो की ताकत बढाई है।"

'उस फौज के लोग जैसा चाहे, वैसा करे, लेकिन मै किसानो को लेने से इन्कार करता हूँ। और, बस।' ग्रिगोरीने झटके से कहा और, जरा देर बाद वह कैदियो के पीछे की कतारो मे भेजे जाने के बारे मे आदेश देने के लिए चला। जाते समय अन्द्रेयानोव उत्तेजित स्वर मे बोला—"साफ है कि हम एक साथ तरीके से काम नही कर सकते ·"

"यही बात तो मैं भी सोच रहा था।" ग्रिगोरी ने अन्यमनस्क भाव से कहा। फिर, सूलिन के मुस्कराने की तरफ ध्यान न देकर उसकी प्लेट से भेड के डबल गोश्त का एक टुकडा झटक लिया और भूख से टूटे भेडिये की तरह इस तरह दाँत गडा-गडाकर खाने लगा कि सूलियन के माथे पर दर्द के बल पड गये और उसने एक क्षण को आँखे तक मूँद ली।

× × ×

दो दिन बाद—पीछे भागती लाल सेनाओ का पीछा करने की जिम्मेदारी जनरल सालनिकोव की टुकडी ने अपने हाथो मे ले ली और ग्रिगोरी का हेडक्वार्टस से बुलावा आ गया कि फौरन ही हाजिर हो। वहाँ चीफ-ऑफ-स्टाफ, देखने मे भद्र, उम्र से सयाने, एक जनरल ने उसे दोन सेना के कमाडर का विद्रोही सेना के विघटन और पुनर्गठन से

सम्बन्धित आदेशपत्र दिखलाया और बिना भूमिका बाँधे सीधे-सीधे बोला—"लाल फौजियो के खिलाफ जो पार्टीजन-लडाई हुई, उसमे तुम्हारी कमान की डिवीजन को बडी कामयाबी मिली। लेकिन, हम अब रेजीमेट तो रेजीमेट, एक डिवीजन तक तुम्हारी कमान मे नही दे सकते। तुम्हे फौजी तालीम नही मिली, इसलिए आज के लम्बे-चौडे मोर्चे और लडाई के नये-से-नये तरीको को देखते हुए तुम शायद किसी बडी फौजी यूनिट की कमान सम्हाल नही सकते। क्या खयाल है ?"

"ठीक है," ग्रिगोरी ने जवाब दिया—"मै तो खुद भी डिवीजन की कमान से इस्तीफा देना चाहता था।"

'यह बडी ही अच्छी बात है कि तुम्हे अपने बारे मे कोई गलतफहमी नही है और तुम अपनी ताकत या अक्ल को बढा-चढाकर नही आँकते। इन दिनो यह बात अफसरो मे जरा कम-ही-कम पाई जाती है। तो, मोर्चे के कमाडर के हुक्म से तुम्हे उन्नीसवी रेजीमेट की चौथी स्क्वेड्रन का कमाडर बनाया जाता है। रेजीमेट इस वक्त यहाँ से कोई पन्द्रह वर्स्ट के फासले पर, व्याजनिकोव नाम के गाँव के पास है। आज नही तो कल तो जरूर ही रेजीमेट मे जाकर रिपोर्ट कर दो। और हाँ, तुम अपनी तरफ से कुछ कहना चाहते हो ?"

"मै चाहता हूँ कि मुझे कमीसारियट मे भेज दिया जाए।"

"यह मुमकिन नही है·· तुम्हारी जरूरत मोर्चे पर पड़ेगी।"

"दो लडाइयो मे मै घायल हो चुका हूँ और चौदह बार बमो से जख्मी हो चुका हूँ।"

"यह तो एक बिल्कुल ही दूसरी और बेमतलब बात है। तुम अभी जवान हो, हाथ-पैर दुरुस्त है। तुम अब भी लड सकते हो। जहाँ तक ज़ख्मो का सवाल है, कितने अफसर है जिन्हे ज़ख्म नही लगे ?···अब तुम जा सकते हो···खुश रहो।"

× × ×

उस्त-मेदवेदित्स्काया के हथियाए जाने के बाद विद्रोही सेना का विघटन हुआ तो ऊपरी दोन के कज्ज़ाको के मन का असन्तोष दूर करने

के लिए विद्रोह के सिलसिले मे खास बहादुरी दिखलाने वाले कुछ ग्राम कज्जाक फौजियो को नॉनकमीशन ग्रफसर ग्रौर मार्जेटो को ग्रलमबरदार बना दिया गया। साथ ही विद्रोह मे भाग लेने वालो को इनाम दिये गए ग्रौर उनके ग्रोहदे बढा दिये गए। यानी इस दृष्टि से ग्रिगोरी को छोडा नही गया। उमे कैप्टन बना दिया गया। एक खास फरमान मे लाल सेनाग्रो मे हुए युद्ध मे उसके ग्रसाधारण पराक्रम-प्रदर्शन की चर्चा की गई ग्रौर कमान की ग्रोर से उसके प्रति ग्राभार प्रकट किया गया।"

विद्रोही रेजीमेटो के विघटन का काम कुछ दिनो के ग्रन्दर-ही-ग्रन्दर पूरा हो गया। डिवीजनो ग्रौर रेजीमेटो के ग्रशिक्षित कमाडरो की जगह जनरल ग्रौर कर्नल ग्रा गये, ग्रनुभवी ग्रफसरो को स्क्वेड्रन-कमाडर बना दिया गया, तोपखाने ग्रौर स्टाफ की कमाने पूरी तरह बदल दी गई ग्रौर साधारण कज्जाक सैनिको को दोन प्रदेश की ग्रलग-ग्रलग रेजीमेटो मे भेज दिया गया। ये रेजीमेटे दोनेत्स नदी की लडाई मे बहुत हल्की पड गई थी। इनके फौजी बहुत बडी सख्या मे मारे गये थे।···

ग्रिगोरी ने दोपहर के बाद ग्रपनी डिवीजन के कज्जाको को जमा किया। उन्हे विद्रोही सेना के सघटन का समाचार दिया ग्रौर उनसे विदा लेते हुए बोला—"भाई कज्जाको, ग्रपने मन मे मेरे लिए किसी तरह का कोई कीमा न रखना। जागने से मजबूर होकर ग्राज तक हम लोग साथ रहे। लेकिन, ग्राज से तुम्हारे दुख-दर्द ग्रलग होगे ग्रौर मेरे ग्रलग। सबसे बडी बात यह है कि तुम ग्रपनी खोपडियो का पूरी तरह बचाव करना ग्रौर लाल फौजियो को उन्हे छेदने न देना। हमारी खोपडियो के ग्रन्दर भेजो की कमी हो सकती है, मगर बेवजह उनसे गोली रोकना ग्रक्ल की बात नही होगी। ग्रभी हमे भेजो की जरूरत पडेगी सोचने के लिए ग्रौर यह सोचने के लिए कि ग्रब हमारा ग्रगला कदम क्या हो।

कज्जाक टूटे हुए मन से चुपचाप सब-कुछ सुनते रहे ग्रौर ग्रौर ग्रिगोरी के चुप होते ही सब-के-सब एक साथ, बौखलाहट से भर्राई ग्रावाज मे बोलने लगे—"यानी, पुराना जमाना फिर वापस ग्रा रहा है···।"

"अब कहाँ जायेंगे हम ?"

"आम लोगो के मामले मे मनमानी-घरजानी कर रहे है, सुअर के बच्चे।"

"हम नही चाहते कि हमारे ट्रूप तोडे जाये ! आखिर कौन-सा नया निजाम कायम कर रहे है ये लोग ?"

"खैर, भाइयो, हम एक इसलिए हुए है कि आप अपनी गरदनो पर पैर रखे।"

"ये बडे-बडे लोग हमे फिर चूसेगे।"

"देखना, ये लोग हमारी हड्डी-हड्डी सीधी करके रख देगे।"

ग्रिगोरी ने लोगो के शात होने का इन्तजार किया और फिर बोला—"इस तरह गला फाडने से कोई फायदा नही। वे मौज के जमाने अब गुज़र गए जब हम हुक्मो पर बहसे और कमाडरो के खिलाफ बाते करते थे। फिलहाल, अपने-अपने क्वार्टरो मे जाओ और अपनी जबाने अपने काबू मे रखो, वरना देखते-देखते कोर्ट-मार्शलो और सज़ा देने वाली कम्पनियो के सामने पहुँचा दिए जाओगे।"

कज्ज़ाक ट्रूपो के क्रम से, उसके पास आए, उससे हाथ मिलाए और बोले—"अलबिदा, पैन्तेलेयेविच ! हमसे कुछ भूल-चूक बन पडी हो तो मन मे न रखना, माफ कर देना।"

"अजनबियो के मातहत नौकरी बजाना हमारे लिए आसान न होगा।"

"तुम्हे हम लोगो को अपने हाथो से जाने नही देना चाहिए था। तुम्हे डिविजन की कमान से इस्तीफा देना चाहिए था।"

"मेलेखोव, हमे तुम्हारी बडी याद आएगी। नये कमाण्डर तुमसे ज्यादा लिखे-पढे हो सकते हैं, मगर उससे हमारा बोझ हलका नही होगा, बोझ और बढेगा·· रोना तो यही है।"

लेकिन, स्क्वैड्रन के विदूषक, एक कज्ज़ाक ने कहा—"इनकी बातो पर यकीन न करो, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ! अगर ईमान साथ न दे तो काम अपनो के साथ करो और चाहे अजनबियो के साथ, फर्क कोई नही पड़ता।"

उस रात ग्रिगोरी येरमाकोव और दूसरे कज्जाको के साथ बैठा घर की बनी वोदका पीता रहा और अगले दिन सवेरे घोडे पर सवार होकर, प्रोखोर ज़िकोव को साथ लेकर उन्नीसवी रेजीमेट के लिए रवाना हो गया।

पर जब तक वह स्क्वैड्रन सम्हाले-सम्हाले और स्क्वैड्रन के फौजियो का कायदे से परिचय प्राप्त करे, तब तक उसे रेजीमेट के कमाण्डर का बुलावा मिल गया।

प्रात का समय होने के कारण ग्रिगोरी घोडो का मुआइना करने लगा और कमाण्डर के पास आधा घण्टा देर से पहुँचा। वह मन-ही-मन डरा कि अब अफसरो के लिए हौआ वह अफसर जी भरकर बरसेगा मुझ पर। लेकिन, उसने उसका बडे मित्रतापूर्ण ढग से स्वागत किया और पूछा—"क्यो, क्या राय है तुम्हारी अपनी स्क्वैड्रन के बारे मे ? शानदार लोग है न !" और, उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना, ग्रिगोरी को घूरते हुए कहता गया—"वैसे, दोस्त, मुझे तुम्हे एक बहुत ही दर्द की खबर देनी है···तुम्हारे घर के लोगो पर कोई मुसीबत टूटी है। कल रात व्येशेन्स्काया से तार आया है। मै तुम्हे एक महीने की छुट्टी देता हूँ·· तुम फौरन ही जाओ और सब-कुछ ठीक-ठाक करो।"

"मेहरबानी कर तार दे दीजिए मुझे।" ग्रिगोरी बुदबुदाया और उसका चेहरा एकदम ज़र्द पड गया।

उसने मुडा हुआ कागज़ लिया, खोला, पढा और मसल डाला। कागज़ इस बीच पसीने से भीग गया था।

उसने अपने को बहुत ही कठिनाई से सम्हाला और फिर जैसे-तैसे बोला—"खैर·· मुझे इसकी उम्मीद न थी। अच्छा तो, मै चला··· अलविदा !"

"देखो भाई, अपना पास लेना न भूलना।"

"नही·· शुक्रिया· नही भूलूँगा।"

वह हमेशा की तरह मजबूती से तलवार साधे विश्वास से भरे जमे हुए कदमो से बरसाती मे आया। पर, सीढियो से उतरने लगा तो अपने ही पैरो की आहट उसके लिए अनसुनी हो गई, और ऐसा अनुभव होने

लगा, जैसे कि दिल मे किसी ने सगीन चुभो दी हो ।

फिर, आखिरी सीढी पर वह लडखडा गया, तो उसने बाये हाथ से बारजा थाम लिया, और दाये हाथ से ट्यूनिक के कॉलर के बटन खोल लिए । एक क्षण तक उसकी साँसे तेज और भारी रही, पर इस बीच ही जैसे उसे दर्द का नशा हो गया । इसके बाद जब उसने जगला छोडा और छोटे फाटक के पास बँधे अपने घोडे की ओर बढना शुरू किया, तो उसके पैर मन-मन के हो गए और डगमगाने लगे ।··

: १६

दार्या से बाते करने के बाद नताल्या को कई दिन तक ऐसी यातना हुई, जैसी किसी ऐसे आदमी को होती है जो बुरा सपना तो देखता है, पर आँखे नही खोल पाता और सोता ही चला जाता है। उसने प्रोखोर जिकोव की पत्नी के यहाँ जाने के लिए एक बहाना खोजा और वहाँ जाकर जानना चाहा कि कज्जाको के पीछे हटते समय ग्रिगोरी ब्येशेन्स्काया मे किस तरह रहा और वहाँ रहा तो अकसीनिया से मिला या नही ? इस तरह औरत ने अपने पति की करतूतो की सच्चाई जाननी चाही, क्योकि दार्या की बातो पर उसे विश्वास हुआ भी था और नही भी हुआ था ।

सो, शाम होने के काफी देर बाद, वह दुनिया से बेखबर, एक टहनी नचाती ज़िकोव के अहाते की तरफ बढी । प्रोखोर की पत्नी दिन का काम खत्म कर फाटक के पास बैठी मिली ।

"कहाँ, फौजी की बीवी ?" नताल्या ज़ोर से बोली—"तुमने हमारा बछडा तो नही देखा ?"

"ऊपर वाला तुम पर रहम करे, नताल्या···नही, मैने तुम्हारा बछडा कही नही देखा ।"

"ऐसा घुमक्कड है, भाड मे जाए ! घर पर तो ठहरता ही नही । समझ मे नही आता कि कहाँ तलाश करूँ उसको ।"

"आराम कर लो···आ जाएगा ।···थोडे-से सूरजमुखी के बीज लाऊँ तुम्हारे लिए ?"

नताल्या जाकर उसके पास बैठ गई और फिर औरतो की पचायत शुरू हो गई ।

"तुम्हारे फौजी की कोई खबर आई ?" नताल्या ने पूछा ।

"बिल्कुल नही···जाने कहाँ नापैद हो गया ईसा का दुश्मन ! पर, तुम्हारे ग्रिगोरी ने कोई पैगाम भेजा ?"

"नही · वैसे ग्रीशा ने खत लिखने का वायदा किया था, मगर अभी तक चिट्ठी नही आई । लोग कहते है कि हमारी फौजे उस्त मेदवेदित्स्काया के आगे चली गई है । इसके अलावा और कुछ पता नही चला ।" नताल्या ने बातचीत का रुख बदला, हाल मे लोगो के पीछे हटकर दोन पार करने की चर्चा छेडी और बहुत ही सावधानी से पूछा—"व्येशेन्स्काया मे हमारे फौजी किस तरह रहे ? गॉव का कोई आदमी गया था वहाँ ?" मगर, प्रोखोर की औघड पत्नी ने नताल्या के आने का कारण समझ लिया, और जवाब बहुत ही रुखाई से दिए और नपे-तुले दिए ।

उसके पति ने उसे ग्रिगोरी के बारे मे सभी कुछ बतलाया था और उसकी जीभ मे खुजली भी हो रही थी, पर पति की मनाही का खयाल कर मुँह से कुछ भी निकालने मे उसका मन डरा । बोली—"देखो, मेरी बात सुन लो · अगर तुमने मेरे बताए मे से एक लफ्ज भी कही मुँह से निकाला तो तुम्हारा सिर पटरे पर रखकर कुचल डालूँगी, और जबान चिमटे से पकडकर खीच लूगी । अगर ग्रिगोरी को उसकी सुन-गुन भी मिल गई तो वह मुझे खडे-खडे मार डालेगा । मै तुमसे ऊब गई हो सकती हूँ, पर जिन्दगी से अभी नही ऊबी हूँ । समझ मे आई बात ? इसलिए मुँह बन्द ही रखना ···"

"तुम्हारे प्रोखोर ने व्येशेन्स्काया मे अकसीनिया को तो नही देखा ?" नताल्या ने अधीर होते हुए सीधे-सीधे पूछा ।

"वह उसे कहाँ और क्यो देखता ? तुम्हारा खयाल है कि उसके पास इतनी फुरसत थी ? ऊपर वाला गवाह है, मै सचमुच नही जानती और, तुम्हे मुझसे कुछ पूछना भी नही चाहिए, मिरोनोवना ! फिर मेरे बुद्धू आदमी की बात का तुम कोई भी मतलब नही लगा सकती ।

वह तो सिर्फ यह कह सकता है कि यह करो और वह करो, और बस।"

सो, नताल्या वहाँ से चली तो पहले से कही ज्यादा परेशान और चिन्तित हो उठी। लेकिन, अधकार मे रहना उसे नही रुचा, इसलिए उसने खुद अकसीनिया के पास जाने का इरादा किया।

अगल-बगल रहने के कारण इधर दोनो अक्सर ही मिलती थी। ऐसे अवसरो पर या तो वे चुपचाप एक-दूसरे को देखकर झुक लेती, या दो-चार इधर-उधर की बात कर लेती। वे दिन कभी के हवा हो गए थे जब वे एक-दूसरी से दुआ-सलाम तक न करती और देखती तो निगाहो से एक-दूसरे पर सिर्फ नफरत बरसाती।

उनके पारस्परिक विरोध की तेजी कभी की मर चुकी थी। इसीलिए नताल्या, अकसीनिया के पास गई तो उसने आशा की कि अकसीनिया उसे दरवाजे से ही खदेड नही देगी बल्कि ग्रिगोरी के बारे मे बाते चाव से करेगी। और, यही हुआ भी। नताल्या की उम्मीद बर आई।

अकसीनिया ने नताल्या को देखा तो उसे खासा ताज्जुब हुआ और इस आश्चर्य पर उसने किसी तरह का कोई पर्दा नही डाला। नताल्या को सोने के कमरे मे लिवा गई, पर्दे खीच दिए, चिराग जला दिया और पूछा—"कोई अच्छी खबर लेकर आई हो क्या ?"

"मै अच्छी खबर कौन-सी लेकर तुम्हारे पास आ सकती हूँ·· ?"

"तो सुनाओ · बुरी ही खबर सही। ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेचिव को कुछ हुआ तो नही ?"

पर, अकसीनिया के इस प्रश्न से सहज रूप मे, गहरी चिन्ता झाँकने लगी और नताल्या ने सब-कुछ देखा और समझा। एक शब्द मे यह कि अकसीनिया ने अपने-आपको, अपनी जिन्दगी के उद्देश्य को और अपने मन की शकाओ को अनजाने ही मूर्त्त रूप दे दिया। इसके बाद ग्रिगोरी से उसके सम्बन्धो को लेकर पूछताछ करने की जरूरत रही नही। परन्तु नताल्या वहाँ से टली नही और जरा देर तक मन-ही-मन सकुचाने के बाद बोली—"नही, मेरा ग्रिगोरी सही-सलामत है··

खैरियत से है···घबराने की जरूरत नही।"

"मैं घबराती नही। ऐसा तुमने क्यो सोचा ? उसके ठीक-ठाक रहने या न रहने की फिक्र तो तुम्हे होनी चाहिए। मेरी अपनी ही परेशानियाँ कौन कम है !" अकसीनिया ने सहज रूप से बात कही, पर दूसरे ही क्षण उसे अपने चेहरे की नसो मे खून उमडता लगा और वह तेजी से मेज की तरफ बढ गई। यहाँ मेहमान की तरफ पीठ किए वह बहुत देर तक खडी रही और कायदे से जलते चिराग की बत्ती मे न जाने क्या ठीक करती रही।

"तुम्हारे स्तीपान के पास से कोई खबर आई ?"

"अभी हाल मे ही तो उसने खैरियत कहला भेजी थी और प्यार कहलाया था।"

"ठीक तो है।"

"लगता तो ऐसा ही है।" अकसीनिया ने कन्धे झटके।

वह फिर अपने साथ छल न कर सकी और न अपनी भावना छिपा सकी। दूसरी ओर अपने पति के भविष्य की ओर से इतनी उदासीन लगी कि नताल्या को अपने-आप हँसी आ गई। बोली—"मै देखती हूँ कि तुम्हें स्तीपान की कोई खास फिक्र है नही। लेकिन, खैर यह तुहारा अपना मामला है। इससे मुझे कुछ भी लेना-देना नही। मै तो एक दूसरे ही काम से आई हूँ। बात यह है कि गॉव मे बडी चर्चा है कि ग्रिगोरी तुमसे मेल-जोल फिर बढा रहा है और वह जब यहाँ आता है तो तुम उससे बराबर मिलती हो। ठीक है यह ?"

"तुम तो बहुत ही सही आदमी से पूछने आई हो यह बात।"

"अकसीनिया ने मजाक बनाते हुए कहा—"मान लो, मै तुमसे पूछूँ कि सही है यह बात ?"

"असलियत से डरती हो ?"

"नही, बिल्कुल नही डरती।"

"तो फिर साफ-साफ बतला दो मुझे ताकि मै यह घुलना-घुटना खत्म करूँ। हर बात पर बौखलाती क्यो फिरूँ ?"

अकसीनिया ने अपनी आँख सिकोड़ी तो उसके माथे पर बल पडे।

रुखाई से बोली—"जो भी हो तुम मुझसे हमदर्दी की तो उम्मीद करो नही। मेरा-तुम्हारा कुछ यो है कि तुम दुखी होगी तो मै सुखी होऊँगी और मै दुखी होऊँगी तो तुम्हे सुख मिलेगा। · वजह यह है कि हम दो है मगर मोहब्बत एक ही से करती है · है न ? खैर मै तुम्हे असलियत बतलाए देती हूँ ताकि तुम कभी यह न कहो कि तुम्हे वक्त रहते हुए कुछ बतलाया नही गया। तो, यह सब सच है। लोग जो कुछ कहते है, सच ही कहते है। मैने ग्रिगोरी को फिर जीत लिया है और इस बार मै पूरी कोशिश करूँगी कि वह मेरे हाथो से निकले नही। अब यह बतलाओ कि ऐसे मे तुम क्या करोगी ? मेरे घर की खिडकियाँ तोडोगी या छुरा लेकर मुझे कत्ल करोगी ?"

नताल्या ने हाथ की टहनी को मोडकर उसमे गाँठ लगाई, उसे स्टोव की तरफ लोकाया और कृत्रिम दृढता के साथ बोली—"अब मै तुम्हारा कोई नुकसान नही करूँगी। सिर्फ ग्रिगोरी के आने की राह देखूँगी और उसके आने पर उससे दोटूक बाते करूँगी। इसके बाद देखा जाएगा कि तुम क्या करोगी और मैं क्या करूँगी। मेरे दो बच्चे है। मै उन दोनो के हको के साथ-साथ अपने हक के लिए भी अडना जानती हूँ।"

अकसीनिया मुस्कराई और बोली—"यानी, फिलहाल मैं बेधडक रह सकती हूँ ?"

नताल्या ने उसके मजाक की अनदेखी की और पास जाकर उसकी आस्तीन पकडती हुई बोली—"अकसीनिया, तुम ज़िन्दगी-भर मेरे आडे आती रही हो, लेकिन अब मै तुमसे पहले की तरह मिन्नतें न करूँगी। कभी की थी। याद है तुम्हे ? उस वक्त मै कम उम्र थी·· कम अक्ल थी ·मैने सोचा—मैं अकसीनिया को मनाऊँगी। वह मुझ पर रहम करेगी, उसका दिल पसीजेगा। वह ग्रिगोरी का दामन छोड देगी। मगर नही, इस बार यह सब नही होगा। वैसे एक बात मैं जानती हूँ कि तुम्हे उससे प्यार नही है। तुम सिर्फ आदत से मजबूर होकर उसके पीछे दौड़ती फिरती हो। तुमने कभी मेरी तरह प्यार किया है उसे ? जो भी हो, ऐसा लगता तो नही। तुमने लिस्तनित्स्की

से खिलवाड किया और किससे तुमने खेल नही किया, छिनाल कही की। औरत किसी को मोहब्बत करती है न, तो ऐसा कभी नही करती।"

अकसीनिया का चेहरा पीला पड गया और नताल्या को धक्का देते हुए वह बडे बक्से पर से उठ खडी हुई।

"इस मामले मे ग्रिगोरी ने मुझे कभी कुछ नही कहा, मगर तुम इतना भला-बुरा कह रही हो! कौन होती हो तम इस तरह बात करने वाली? खैर, ठीक है···तुम बहुत अच्छी हो। और मै बहुत बुरी हूँ··तो, तो क्या हुआ फिर?"

"बात खत्म करो· बेकार नाराज न हो· अब मै जा रही हूँ··· असलियत साफ कर देने के लिए। शुक्रिया।"

"मेरा शुक्रिया अदा करने को जरूरत नही। असलियत तो तुम्हे वैसे भी मालूम हो जाती। रुको जरा·· मै तुम्हारे साथ बाहर चलती हूँ··झिलमिलियाँ बन्द करनी है।"

बरसाती मे अकसीनिया रुकी और बोली—"मुझे इस बात की खुशी है कि हम आपस मे लडे बिना, चैन से एक-दूसरे से अलग हो रहे है। लेकिन पडोसिन, सुन लो, जहाँ तक आगे की बात है, अगर तुममे ताकत हो तो तुम ग्रिगोरी को मुझसे छीन लेना, पर अगर ताकत न हो तो बुरा न मानना। मै आसानी से उसी तरह उसे तुम्हे सौप नही सकती, जैसे कि तुम मुझे सौप नही सकती। मै अब उतनी जवान नही रही, और तुम मुझे छिनाल-विनाल चाहे जो कुछ कहो। मैं कम-से-कम दार्या तो नही ही हूँ। इन मामलो मे मैने खिलवाड जिन्दगी मे कभी नही किया। तुम्हारे बच्चे है, लेकिन मेरे लिए···" अकसीनिया की आवाज़ काफी भारी और गहरी हो उठी। दुनिया मे एक उसी की फिक्र करती हूँ मै! वह मेरी मुहब्बत की पहली और आखिरी यादगार है। लेकिन, हटाओ, उसका जिक्र अब न करे। अगर वह जीता-जागता, सही-सलामत वापस आएगा तो अपने-आप चुनाव और फैसला कर लेगा······"

···उस रात नताल्या को नीद नही आई। अगले दिन सबेरे वह

इलीनीचिना के साथ तरबूजो की बिनाई के लिए गई और काम मे अपना दर्द काफी हद तक भूल गई। बलुही, धूप मे सूखी मिट्टी पर जमे हुए हाथो से कुदाल चलाते समय उसे ग्रिगोरी और अकसीनिया की चिन्ता ने इतना नही सताया। बीच-बीच मे उसने साँस लेने, चेहरे से पसीना पोछने या एक घूँट पानी पीने को कमर सीधी की।

नीले आसमान के आर-पार हवा से तार-तार बादल लहराते और पिघलाते रहे। सूरज की किरणे झुलसती हुई धरती पर सिर पटकती रही। पूर्व की ओर से पानी-भरे बादल पास आते दीखे। हवा की लहरियो पर उतराते बादलो ने जब-जब सूरज को ढँका, नताल्या ने बिना आँखे ऊपर किये भी जैसे सब-कुछ देख लिया। उसकी पीठ हर बार क्षण-भर को ठडा उठी। उसने एक मटमैली छाया गरम, भूरी धरती और तरबूज की बेल के तानो-बानो के ऊपर तेजी से फिसलती देखी। छाया ने ढाल पर छितरे तरबूजो, गरमी से खुश्क घास की पत्तियो, हॉथर्न की झाडियो और चिडियो की बीटो से नहाई गोखरू की उदास पत्तियो पर अकसर ही अपनी चादर तान दी। लवा-पंछियो के कलष से भरे स्वर और तेज हो उठे। बुलबुलो के मधुर गीत और साफ सुन पडने लगे। घास की गरम पत्तियो से छेड-छाड करती हवा मे उतनी उमस न रही। एक बार फिर सूरज ने पश्चिम की ओर बढते हुए बादल का, आँखो को चौधाने वाला, सफेद सिरा भेद दिया और जाल से उभरकर सुनहरी रोशनी की चमचमाती, सुनहरी किरणे धरती पर बरसाने लगा। पीछे भागता बादल कही दूर, दोन के किनारे की पहाडियो की नीली चोटियो के आस-पास दुबारा धरती पर झुकने लगा। लेकिन, तरबूजो के खेतो मे दोपहर की मखमली धूप का ज्वार फिर आया, तरल धुंध काफी, क्षितिज पर नाची और उसके कारण घास से उभरती बू और तीखी हो उठी।

दोपहर के समय नताल्या चोटी के सोते से एक घडा, बर्फ-सा ठडा पानी ले आई। उसने और उसकी सास ने जी-भर प्यास बुझाई। इलीनीचिना ने रूमाल बिछाकर उस पर बडी ही सफाई से रोटी काटी, थैले से चम्मच और प्याला निकाला और अपनी जैकेट

के नीचे से दही की सँकरे मुँह की सुराही निकाली।··

सुराही धूप से बचाने के लिए वहाँ रख दी गई थी।···

पर, नताल्या ने ढग से खाया नही तो सास ने पूछा—"मैं इधर देख रही हूँ कि तुम पता नही क्यो, कुछ बदल रही हो। ··तुम्हारे और ग्रीशा के बीच कुछ झगडा-वगडा तो नही हो गया ?"

नताल्या के खुश्क होठो मे अजीब ढग की हरकत हुई—"ग्रीशा, अकसीनिया से फिर मिलने-जुलने लगा है, माँ···"

"क्या···कैसे पता तुझे ?"

"मैं कल गई थी उसके यहाँ ··"

"और, उस रडी ने बात मान ली ?"

"हाँ।"

इलीनीचिना विचारो मे डूबकर चुप हो गई। उसका झुर्रियो से भरा चेहरा गम्भीर हो उठा और होठो के सिरे झूल-से गए। फिर बोली—"हो सकता है कि यो ही बक रही हो·· मौत ले जाए उसे।"

"नही, माँ, बात सच है·· भला वह क्यो···?"

"तुमने ग्रीशा पर नजर नही रखी···।" बुढिया ने फिलहाल समस्या का समाधान निकाला—"ऐसा आदमी हो तो उस पर से तो निगाह धोखे मे भी हटानी नही चाहिए।"

"लेकिन, उस पर नजर कोई रखे तो रखे कैसे ? मैंने उसके ईमान पर भरोसा किया ··मैं क्या उसे अपने ऐप्रन के बदो मे बाँध लेती ?" नताल्या कटुता से मुस्कराई और बहुत ही धीरे से बोली—'वह कोई मीशात्का तो है नही कि उस पर बच्चो की तरह रोकथाम रखी जाए। सिर के बाल काफी सफेद हो गए हैं, मगर बीती बातें उसे भूलती नही है ·"

इलीनीचिना ने चम्मच धोये और पोछे, प्याले साफ किये, सारे बरतन थैले मे भरे और तब झटके से पूछा—"यानी, तुम्हारी मुसीबत सिर्फ इतनी है ?"

"तुम भी अजीब हो, माँ !···इतनी-सी मुसीबत आदमी की जिन्दगी को बरबाद कर देने के लिए काफी है।"

"और, तुम करना क्या चाहती हो···अब सोच क्या रही हो ?"

"मै भला कर भी क्या सकती हूँ ? बस बच्चो को लेकर मायके चली जाऊँगी। अब ग्रीशा के साथ रह नही सकती। वह ले आये अकसीनिया को और रख ले उसे घर मे·· काफी भुगत चुकी मैं।"

"मै जवान थी तो मैने भी एक बार ऐसा ही सोचा था।" इलीनीचिना ने आह भरते हुए कहा—"मेरा आदमी भी तबीयत से ऐसा ही कुत्ता था···इस बात से बेकार को इन्कार करना क्या ? मै तुम्हे बतला नही सकती कि कितना सहा मैने ! सिर्फ यह है कि अपना आदमी आसानी से छोडा नही जाता ··फिर यह कि उससे फायदा ? तुम और सोच देखो। इसी नतीजे पर पहुँचोगी। फिर, बच्चो को बाप से अलग कैसे कर सकती हो ? नही, तुम बकवास कर रही हो ··तुम्हे तो यह बात अपने दिमाग मे भी नही लानी चाहिए···मै यह सब किसी तरह होने नही दूँगी।"

"खैर, माँ, मै उसके साथ अब रहूँगी नही···तुम बेकार कोशिश न करो।"···

"बेकार कोशिश मत करो···क्या मतलब तुम्हारा ?" इलीनीचिना बिगड गई—"यानी, तुम मेरी बेटी नही हो ? तुम्हारा खयाल है कि मुझे तुम लोगो के लिए तकलीफ नही है ? और तुम मुझसे, अपनी माँ से, एक बुढिया से ऐसी बात कर रही हो ? मैंने तुमसे कह दिया कि ये सारी बाते दिमाग से निकाल दो, और बस ! फु···मैं घर छोडकर मायके चली जाऊँगी···'लेकिन, कहाँ चली जाओगी ? तुम्हारे मायके मे कौन है जो चाहता है तुम्हे ? बाप तुम्हारा रहा नही···घर तुम्हारा जलकर राख हो चुका ··तुम्हारी माँ किसी और के घर मे जा पडी है···इस पर भी तुम उसके पास जाने की सोच रही हो और मेरे पोते-पोती को अपने साथ खीच ले जाने की सोच रही हो ? नही··· बेटी, यह नही होगा। ग्रीशा को आने दो, तब उससे समझा-बूझा जाएगा। लेकिन, इस वक्त तुम इस मामले मे मुँह न खोलो···मैं मुँह खोलने नही दूँगी···और, अब आगे मैं एक लफ्ज़ सुनना नही चाहती।"

इस पर नताल्या के अन्तर मे सचित सारी वेदना बाँध तोड़कर

सिसकियो मे ढल चली। उसने एक कराह के साथ सिर का रूमाल चीर डाला, मुँह के बल खुश्क, बेरहम ज़मीन पर ढह पडी और सीना धरती से सटाकर सिसकती रही, सिसकती रही··।

इलीनीचिना होशियार और बहादुर बुढिया थी। वह अपनी जगह से टस-से-मस न हुई। ज़रा देर बाद उसने सुराही मे बचे-बचाए दही पर जैकेट लपेटी, उसे छाँव मे रखा, प्याले मे पानी डाला और नताल्या की बगल मे आ बैठी। वह जानती थी कि दर्द के ऐसे क्षणो मे शब्द काम नही आते और रो लेने से दिल हलका हो जाता है। इसलिए उसने अपने होठ सी लिए। नताल्या को जी भर रो लेने दिया और तब उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरती हुई सख्ती से बोली—"चलो ··हो चुका! सारे आँसू एक साथ न बहा दो। थोडे-से कभी और के लिए भी रख लो· लो, एक घूँट पानी पी लो!"

नताल्या शात हो गई। अब भी उसके कधे फडकते और पूरा शरीर कँपकँपाता रहा। पर सहसा ही वह उछलकर खडी हुई, उसने इली-नीचिना को धकियाकर एक ओर किया, चेहरा पूर्व की तरफ मोडा, आँसू से तर हाथ जोडे और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, सिसकियो के बीच जल्दी-जल्दी चीखी—"हे नीली छतरी वाले, उस आदमी ने मेरी रूह को सडाकर रख दिया है। अब मुझमे ताकत नही है इस तरह जीने की। हे ऊपर वाले, उसे सज़ा दो···उसको इसके लिए जी भर सज़ा दो! उसकी जान ले लो ताकि न वह और जिये, न मुझे और सताये।"

एक काला बादल पूर्व से रेंगता हुआ आगे-ही-आगे बढा। कौधा लपका और बिजली कड़की। बादलो के पहाड को भेदते हुए, दहकती बिजली ऐंठी और आसमान पर रेंगने लगी। हवा ने मर्मर करती घास की पत्तियो को पश्चिम की तरफ मोड़ा। रास्ते पर तीखी गर्द उडाई और बीजो से बोझिल सूरजमुखी के फूलो की टोपियाँ धरती पर झुका दी। उसने नताल्या के बिखरे हुए बाल उडाये, उसके चेहरे के आँसू सोखे, और उसकी कामवाली भूरी स्कर्ट का सिरा उसके पैरो मे लपेट दिया।

अधविश्वासी इलीनीचिना जाने कितनी आशकाओ से भर उठी और कई क्षणो तक खड़ी अपनी बहू को एकटक देखती रही। कड़कते

हुए काले बादल के साए मे खडी नताल्या बहुत ही अजीब और भयानक लगी ।

फिर बादल भर-भरकर घिरते चले आए । पर, आँधी-पानी के पहले जरा देर तक सन्नाटा रहा । गौरैया का शिकार करनेवाला छोटी जात का एक बाज़ तिरछे-ही-तिरछे गिरने और मायूसी से चीखने लगा । एक मूस अपने बिल के पास सीटी बजाने लगा । ऐसे मे हवा के तेज झोके ने इलीनीचिना के चेहरे पर रेत-भरी धूल उछाली और सर-सराती स्तेपी मे निकल गई । बुढिया बडी कठिनाई से खडी रह सकी । उसका चेहरा जर्द पड गया और वह आने वाले तूफान के हाहाकार के बीच पूरी आवाज से चिल्लाई—"तुम कह क्या रही हो ? नीली छतरी वाले की मदद माँग रही हो ! किसकी मौत मना रही हो तुम ?"

"नीली छतरीवाले, सजा दे···तू उसे भरपूर सजा दे !" नताल्या, शान से जमा होते बादलो पर निगाह जमाए चीखी । हवा ने बादलो के पहाड-के-पहाड खडे कर दिए और बादल बिजली की रोशनी से इस तरह चमचमाने लगे कि आँखे चौंधिया उठी ।

बिजली खुश्क कडक के साथ स्तेपी मे गिरी । इलीनीचिना डर के मारे आपे मे न रही । उसने क्रॉस बनाया, डगमगाते कदमो से नताल्या की ओर बढी और उसके कधे का सहारा ले लिया ।

"झुको···नीली छतरीवाले के कदमो मे झुको ! सुनती हो, नताल्या ?"

नताल्या ने अनदेखती आँखो से अपनी सास की तरफ देखा और मजबूर होकर घुटनो के बल बैठ गई । इलीनीचिना ने सख्ती से आदेश दिया—"उस नीले आसमान वाले से माफी माँग । भीख माँगो कि वह तेरी अरदास मजूर न करे । तूने सोचा भी है कि किसके लिए मौत माँग रही है तू ? अपने बच्चो के बाप की मौत मना रही है तू ? उफ···यह तो ऐसा गुनाह किया है कि···क्रॉस बना···सिर झुका और कह—'हे नीले आसमान वाले, मेरो बदनीयती के लिए मुझे माफ कर ! मैं गुनाहगार हूँ' ।"

नताल्या ने क्रॉस बनाया, सफेद पड़ गये होंठो से कुछ बुदबुदाकर

कहा और दाँत पीसते हुए भद्दे ढग से एक ओर को लुढक गई।

× × ×

स्तेपी बरसात की फुहारो से घुलकर ऐसा हरिया उठा, जैसे कि किसी ने जादू कर दिया हो। किसी ने दूर के ताल से ऐन दोन तक इन्द्रधनुष तान दिया। पश्चिम मे बिजली अब भी कडकनी रही। पहाडी का गदला पानी नालियों मे बहने और हरहराने लगा। पानी की झाग उगलती धाराएँ ढाल और खरबूज-तरबूज़ो के खेत पार कर नदी की ओर उमड चली। वे बरसात से झरी पत्तियाँ, जड-सहित ज़मीन से उखड आई घास और राई की बाले अपने साथ बहा ले चली। बालू-मिली बरसाती मिट्टी खरबूजो और तरबूज़ो की बेलो की नसो के चारो ओर रेंगने लगी। रास्तो पर पानी खुशी से कलकल करने और गहरी-से-गहरी लीके खरोचने लगा। दूर घाटी के सिरे पर जमा सूखा घास की टाल मे बिजली से आग लग गई तो लपटे दूर से लौ देने लगी। धुएँ की बकाइनी रेखा ऊँची उठी और क्षितिज पर तने इन्द्रधनुष की चोटी को छूने-छूने को हो गई।

इलीनीचिना और नताल्या गदी फिसलन से भरी सडक पर सावधानी से पैर रखती, अपनी स्कर्टों के सिरे ऊपर उठाती गाँव की ओर बढी। रास्ते मे इलीनीचिना बोली—"नीले आसमानवाला गवाह है कि तुम सब जवान लोग बहुत ही आसानी से हिल उठते हो। कोई मामूली-से-मामूली बात हुई कि तुम्हारा दिमाग बेकाबू और तुम आपे से बाहर। अपनी जवानी के दिनो मे जैसे मुझे जीना पडा अगर वैसे तुम्हे दिन काटने पडते तो तुम क्या करती? इतनी जिन्दगी बीतने को आई, पर ग्रीशा ने कभी तुम्हे उँगली से नही छुआ। इस पर भी तुम खुश नही हो, और दुनिया-भर की बाते करती फिरती हो! तुमने उसे छोड देना चाहा, तुम्हे दौरा पड गया और मुझे पता नही कि तुमने क्या नही किया ··तुम तो ऊपर वाले तक को इस झगडे मे खीच लाई · तो तुम मुझे सिर्फ यह बतलाओ कि अच्छा है यह सब? लेकिन, जब मै जवान थी तो मेरा यही आदमी मारते-मारते मेरी जान निकालकर रख देता था, और सो

भी बेमतलब, बिना किसी बात के। मैं मार खाने के लायक ऐसा कुछ भी तो नही करती थी। वह खुद बेजा हरकते करता और उल्टे अपना सारा गुस्सा मुझ पर उतारता। तडका होने पर, सबेरे घर लौटता। मैं चीखती-चिल्लाती, लानत-मलामत करती और वह अपनी मुट्ठियो को बरसाने की पूरी आज़ादी दे देता एक-एक महीने तक मेरा पूरा बदन लोहे की तरह नीला पडा रहता·· और इस सबके बावजूद मैं जीती रही, मैंने बच्चे पैदा किये और अपने आदमी को छोडने या घर से भाग निकलने की बात तक मैंने कभी नही सोची। मैं इस वक्त ग्रीशा की कोई तरफदारी नही कर रही। लेकिन, इतना है कि इस तरह के आदमी के साथ कम-से-कम तुम रह तो सकती ही हो। अरे, अगर वह नागिन बीच मे न होती तो ग्रीशा तो तुम्हे इतना मानता और ऐसा प्यार करता कि बस! उस औरत ने तो उस पर जादू कर रखा है···जादू!"

नताल्या बिसूरते हुए कुछ देर तक चुपचाप चलती रही, और फिर बोली—"मैं अब इस बारे मे मुँह नही खोलना चाहती, माँ! ग्रिगोरी आ जाए तब देखा जाएगा। हो सकता है कि उस वक्त मैं अपने-आप घर छोडकर चली जाऊँ या वह खुद मुझे घर मे निकाल बाहर करे। लेकिन, फिलहाल मैं कही नही जाती···जहाँ हूँ वही बनी रहूँगी।"

"यही बात तुम्हे बहुत पहले कहनी चाहिए थी।" इलीनीचिना खुशी से खिल उठी—"ऊपर वाला चाहेगा तो सब-कुछ ठीक हो जाएगा। वह तुम्हे घर से नही निकालेगा और खुद तुम्हे यह बात सोचनी नही चाहिए। वह तुम्हे और बच्चो, दोनो को ही बहुत प्यार करता है। तुम्हारा खयाल है कि वह इस तरह की बात भी दिमाग मे ला सकता है? नही, कभी नही। अकसीनया के लिए वह तुम्हे नही छोडेगा·· वह ऐसा कभी नही करेगा। और, बेटी, झगडे तो अच्छे-से-अच्छे घरो मे भी होते हैं···अब तो यह है कि वह पहले सही-सलामत घर आ जाए···"

"माँ, मैं नही चाहती कि वह मर जाए ··वह बात तो गुस्से मे मेरे मुँह से निकल गई थी। अब उसके तमाचे बार-बार मेरे चेहरे पर मत मारो···असलियत यह है कि मैं उसे अपने दिल से नही निकाल सकती,

मगर यह भी है कि जिन्दगी काटे नही कटती।"

"बेटी मेरी, तुम समझती हो कि यह बात मैं जानती नही ? मै सब-कुछ जानती हूँ। चाहती सिर्फ यह हूँ कि तुम कोई कदम जल्दबाजी या उतावली मे न उठा लो। वैसे, तुम ठीक कहती हो, इस वक्त इस बात का जिक्र छोड ही दे तो अच्छा। एक बात और, आसमानवाले के लिए, बूढे से कुछ भी न कहना। इन बातो को उससे क्या लेना-देना !"

"लेकिन एक बात मै कह दूँ, माँ · फिलहाल यह बात तो साफ नही है कि आगे मै ग्रिगोरी के साथ रहूँगी या नही रहूँगी, मगर एक बात जरूर है कि उससे बच्चे मै और नही चाहती। जो दो बच्चे सामने हैं, यही बहुत हैं। नही जानती कि इन्ही दो को लेकर कहाँ जाना पडेगा और कहां नही जाना पडेगा···मगर, मेरे पैर भारी है, माँ · "

"कब से ?"

"तीसरा महीना है।"

"तो, अब छुटकारा कैसे मिलेगा ? अब तो बच्चा होगा ही·· तुम चाहो या न चाहो।"

"लेकिन मैं तो बच्चा नही होने दूँगी।" नताल्या ने दृढ शब्दों मे कहा—"मै आज ही कापीतोनोवना के पास जाऊँगी। वह मेरी मदद करेगी·· उसने कितनी ही औरतो की मदद की है।"

"क्या कहा·· पेट गिरवाओगी तुम ? बेशर्म कही की—तेरे मुँह से यह बात निकली कैसे ?" इलीनीचिना नफरत से भरकर सडक के बीचो-बीच खडी हो गई और हाथ पीटने लगी। वह तो आगे कुछ और कहती, मगर इसी समय पीछे किसी गाडी के पहिए खडखडाए, घोड़े की टापो से कीचड उडने की आवाज आई और कोई चिल्ला-चिल्लाकर घोडे को हाँकता सुन पडा।

इलीनीचिना और नताल्या सडक से हटकर एक किनारे हो गईं और उन्होने अपनी स्कर्टें नीची कर ली। जरा देर बाद गाड़ी पास आई तो मालूम हुआ कि बूढा मेलेखोव खेत से लौट रहा है। वह पास आया तो उसने अपनी तेज, छोटे कद की घोडी की रासे खीची। बोला—"गाडी पर आ जाओ तुम दोनो, मै तुम्हे घर पहुँचा दूँगा।

कीचड मे पैर खराब करने से कोई फायदा नही ।"

'शुक्रिया अगेविच, वैसे भी कीचड मे फिसलते-फिसलते जान ऊब गई ।" इलीनीचिना ने खुशी से खिलकर कहा और सबसे पहले खुद उस लम्बी-चौडी गाडी पर सवार हो गई ।

इलीनीचिना ने खाने के बाद नताल्या से बातें करने का इरादा किया कि पेट गिरवाने की ऐसी कोई जरूरत नही । सो, तश्तरियाँ धोते समय नताल्या को समझाने को एक-से-एक तर्क सोचे और पैन्तेली तक की सहायता लेने के मसूबे बाँधे । सोचा, उससे कहूँगी कि बहू काफी दुखी और परेशान है, माना, पर उससे कहो कि वह यह बेहूदा कदम न उठाए । लेकिन, सास घर के कामो मे उलझी ही रही कि बहू तैयार हुई और चल दी ।

थोडी साँस मिलने पर इलीनीचिना ने दून्या से पूछा—"नताल्या कहाँ है ?"

"वह तो बण्डल साथ लेकर गई है कही।"

"कहाँ गई है ? क्या कहा है उसने ? कैसा बण्डल ले गई है साथ ?"

"भला यह सब मै कहाँ से जानूँ, माँ ? उसने साफ स्कर्ट पहनी, कुछ चीजे रूमाल मे बाँधी और मुँह से बिना कुछ कहे चले गई ।"

"बदनसीब लडकी ।" इलीनीचिना ने कहा, फूट-फूटकर रोने लगी और बेच पर ढह पडी। दून्या के आश्चर्य का ठिकाना न रहा ।

"क्या बात है माँ ? तुम आखिर रो क्यो रही हो ?"

"तुम अपना काम करो·· तुम्हे इससे कोई मतलब नही···लेकिन, नताल्या ने कहा क्या ? और, तुमने उसे कही जाने को तैयार होते देखा तो मुझसे कुछ क्यो नही बतलाया ?"

दून्या परेशानी से बोली—"उफ, तुम्हारा भी जवाब नही है। अजीब हो तुम । मैं कहाँ से जानती कि मुझे तुम्हे बतलाना चाहिए कि वह कही जाने को तैयार हो रही है ? वैसे अपनी माँ से मिलने को गई होगी । मगर, इतनी-सी बात पर तुम रो आखिर क्यो रही हो, यह मैं बिल्कुल नही समझी···।"

इलीनीचिना बहुत ही बेचैनी से नताल्या के लौटने की राह देखने लगी और पति की डाँट-फटकार के डर से उसने इस मामले मे उसके सामने मुँह न खोलने का फैसला किया।

सूर्यास्त के समय ढोर स्तेपी से लौटे। गर्मी का धुँधलका बहुत देर तो रहता नही, सो थोडी देर बाद खत्म हो गया। गाँव मे जहाँ-तहाँ चिराग चमकने लगे। पर नताल्या नही आई। फिर मेलेखोव-परिवार के सभी सदस्य खाने को बैठे तो इलीनीचिना ने प्याज़-पडी नमकीन लपसी परोसी। इस बीच वह चिन्ता से बिल्कुल पीली पडी रही। बूढे ने अपना चम्मच उठाया, बासी रोटी के टुकडे लपसी मे डाले और सभी की ओर उत्सुक दृष्टि से देखते हुए प्रश्न किया—"नताल्या कहाँ है। उसे खाने के लिए क्यो नही बुलाया जाता ?"

"नताल्या कही गई है ?" इलीनीचिना ने बुझी हुई आवाज मे कहा।

"कहाँ गई है ?"

"माँ से मिलने गई होगी, और फिर वही रह गई होगी।"

"उसे इतनी देर बाहर नही रहना चाहिए और यह बात खुद ही समझनी चाहिए, वह कोई बच्ची तो है नही।" पैन्तेली ने असन्तोष से कहा। खाना उसने सदा की तरह टूटकर खाया। बीच मे अपना चम्मच उलटकर रख दिया, बगल मे बैठे मीशात्का को कनखी से देखा और बोला—"बेटा, इधर मुडो ज़रा···लाओ, तुम्हारे होठ पोछ दूँ। तुम्हारी माँ को घूमने से फ़ुरसत नही है, और तुम्हारी फिक्र किसी दूसरे को है नही···" और, उसने अपने पोते के नन्हे-नन्हे कोमल, गुलाबी होठ अपनी बडी काली खुरदरी हथेली से पोछ दिए।

खाना चुपचाप खाने के बाद सभी लोग मेज से उठे तो पैन्तेली ने हुक्म-सा दिया—"बत्ती बुझा दो। घर मे तेल बहुत नही है। जो है, उसे बरबाद करने के कोई मानी नही होते।"

"दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लूँ ?" इलीनीचिना ने पूछा।

"हाँ कर लो।"

"लेकिन, अगर नताल्या आ गई तो···?"

"तो वह खटखटा लेगी, कौन जानता है, हो सकता है कि सुबह तक घूमती ही रहे। अच्छा तरीका सीखा है! 'बुढी, तूने उसे बहुत खुद-मुख्तार बना दिया है। रात मे लोगो से मिलने की बात दिमाग मे उठी है अब···मैं कल सवेरे खुद कह दूँगा उससे कि उसने दार्या के रास्ते पर कदम रखना शुरू किया है··।"

इलीनीचिना कपड़े पहने-ही-पहने लेट गई और आधे घटे तक आहे भरती और करवटे बदलती रही। फिर उठने और उठकर कापीतोनोवना के यहाँ जाने को हुई कि उसे पैरो की आहट मिली। बुढिया उस उम्र पर भी गैर-मामूली फुर्ती से उठी, तेज़ी से गलियारे मे आई और दरवाजा खोला।

नताल्या जगले का सहारा लेती, बहुत ही धीरे-धीरे सीढियो पर चढती दीखी। चाँदनी मे उसका चेहरा एकदम पीला, गाल बिल्कुल बैठे हुए, आँखें धँसी हुई और भौहे दर्द से बुनी लगी। वह हर कदम पर चोट खाए जानवर की तरह काँपी और जहाँ भी पैर रखा, वही खून का गहरा निशान छोड़ दिया।

इलीनीचिना ने, बिना कुछ कहे, नताल्या की कमर मे हाथ डाला और उसे बरसाती मे ले आई। नताल्या ने दरवाजे से पीठ टिकाई और भर्राए हुए गले से पूछा—"सब लोग सो गए? माँ, पीछे जगह-जगह खून गिरा है, जरा साफ कर दो·· "

"यह तुमने अपना हाल क्या किया है?" इलीनीचिना ने अपनी सिसकियाँ दबाते हुए, फुसफुसाते हुए कहा।

नताल्या ने मुस्कराने की कोशिश की, पर सहसा ही पीडा से उसका चेहरा बिगड गया।

"माँ, रोओ नही, वरना घर के लोग जाग जाएँगे···हाँ मुझे उस मुसीबत से छुटकारा मिल गया···और मन का बोझ उतर गया···सिर्फ यह है कि खून बहुत जा रहा है···ऐसा लगता है जैसे किसी ने चाकू से काट दिया हो·· ज़रा हाथ का सहारा देना, माँ · सिर चक्कर खा रहा है।"

इलीनीचिना ने अदर से दरवाज़ा बद किया और फिर जैसे कि

किसी अजनबी घर मे हो, बहुत देर तक अँधेरे मे टटोलने के बाद भी अदर के दरवाजे का हत्था नही ढूंढ सकी। आखिरकार पजे के बल नताल्या को बडे सोने के कमरे मे ले आई। फिर दून्या को जगाकर बाहर भेजा, दार्या को आवाज दी और लैम्प जलाया।

बावर्चीखाने वाले खुले दरवाजे से पॅन्तेली के खर्राटो की तेज आवाज आती रही। नन्ही-मुन्नी पोल्युशका बडे ही प्यारे ढग से होठ चटकारती और नीद मे जाने क्या-क्या बुदबुदाती रही। बच्चे की नीद तो बडी ही गहरी, और हर तरह के विघ्न से मुक्त होती है न।···

इस बीच इलीनीचिना तकिया झाडने और बिस्तर ठीक करने लगी तो नताल्या पास की बेंच पर बैठ गई और कमजोरी के कारण अपना सिर मेज के सिरे से टिका दिया। दून्या ने कमरे मे आना चाहा, मगर इलीनीचिना ने उसे रोक दिया। सख्ती से बोली—"बेशर्म कही की ··जा यहाँ से ··तुझे यहाँ आने और हर जाने-अनजाने मामले मे अपनी टाँग अडाने की जरूरत नही।"

दार्या ने भौहे चढाते हुए एक भीगा हुआ कपडा लिया और बरसाती मे आई। नताल्या ने बडे ही कष्ट से सिर ऊपर उठाया और बोली—"साफ चादर नीचे से हटा लो···खराब हो जाएगी···उसकी जगह पलग पर बोरे का एक टुकडा डाल दो।"

"बेकार बातें बद करो।" इलीनीचिना ने आदेश के स्वर मे कहा—"कपडे उतारो और लेट रहो।·· तबीयत बहुत गिर रही है ? थोडा पानी ले आऊँ ?"

"बेतहाशा कमजोरी महसूस हो रही है···जरा एक दूसरी कमीज और पानी ले आओ···"

नताल्या जैसे-तैसे उठी और डगमगाते कदमो से पलग की तरफ बढी। सिर्फ इस समय इलीनीचिना ने देखा कि उसकी स्कर्ट खून से तर है और उसके पैरो के चारो ओर लिपटी हुई है।

सास ने भय और आशका से भरी दृष्टि से बहू को देखा। बहू ने अपनी स्कर्ट का सिरा यो झटकारा जैसे कि पानी मे भीगती रही हो, और फिर स्कर्ट उतारने लगी।

"लेकिन, तुम तो खून मे नहा रही हो।" इलीनीचिना ने सिसकी भरते हुए कहा ।

नताल्या ने कपडे उतारकर ऑखे बद कर ली, और तेजी से, जोर-ज़ोर से साँसें लेने लगी । बुढिया ने उस पर एक भरपूर नज़र डाली, मन-ही-मन कुछ फैसला किया, बावर्चीखाने मे दाखिल हुई, बडी ही कशमकश के बाद किसी तरह पैन्तेली को जगाया और बोली—"नताल्या की तबीयत खराब है···हालत खराब है··· मरने-मरने को हो रही है··· तुम गाडी जोतो और व्येशेन्स्काया जाकर फौरन डॉक्टर को लिवा लाओ ।"

"क्या खुशखबरी सुनाई है आकर ? क्या हुआ उसे ? क्या तबियत खराब है ? उससे कहो कि रातो को जहाँ-तहाँ मँडराना बद करे ।"

बुढिया ने सक्षेप मे पूरी दास्तान सुनाई । पैन्तेली आवेश मे झटके से खडा हो गया और पतलून के बटन बद करते हुए सोने के कमरे की तरफ बढा—"उफ ··तू कमीनी ··छिनाल कही की··· कुतिया की बच्ची···यह क्या किया है तूने ? जरूरत से मजबूर हो गई बेचारी ! खैर, मैं दिमाग ठीक करता हूँ अभी·· "

"ऐसी-तैसी मे जाओ···तुम बिल्कुल पागल हो गए क्या ? वहाँ मत जाओ···वहाँ तुम्हारी कोई ज़रूरत नही···और चिल्लाओ मत । बच्चे जाग जाएगे···तुम तो अहाते मे जाकर गाडी जोतो फौरन !" इलीनीचिना ने बूढे को रोकने की कोशिश की । पर बूढे ने एक नही सुनी, सोने के कमरे के पास पहुँचा, ठोकर से दरवाज़ा भडाक से मारा और ड्योढी पर ठिठककर गरजा—"खूब काम किया है तूने ! शैतान की बच्ची कही की !"

"यहाँ न आओ, पापा, तुम ईसा के लिए यहाँ न आओ !" नताल्या पूरी ताकत से चीखी । उसने पास रखी समीज से सीना ढँक लिया ।

पैन्तेली ने जीभर गालियाँ देने के बाद अपना कोट, टोप और साज़ तलाशना शुरू किया । मगर, इस काम मे उसे इतनी देर लगी कि दून्या आपे से बाहर हो गई, बावर्चीखाने मे भागी आई और रोते हुए अपने पिता पर बरसने लगी—"तुम गाडी लेकर फौरन जाते क्यो नही ?

यहाँ क्या खखोरा-खखारी कर रहे हो ? नताल्या का दम निकल रहा है और तुम्हे एक घण्टा तैयारी मे लग रहा है! और, तुम अपने को बाप कहते हो! अगर नही जाना चाहते तो साफ-साफ कह क्यो नही देते। मैं खुद गाडी लेकर व्येशेन्स्काया चली जाऊँगी।"

"तुम बेवकूफ हो। इधर-उधर दौडती क्या फिर रही हो ? तुमसे हुक्म लेने कौन जा रहा है···यह लो···उन्ही मे से एक यह भी निकली ···अपने बाप को ही आँखे दिखला रही है, बदतमीज कही की।" पैन्तेली ने कोट लपेटा और मन-ही-मन कोसा-कासी करता अहाते में आया।···

उसके जाने के बाद घर के वातावरण का तनाव थोडा कम हुआ। दार्या ने, कुर्सियाँ और बेचे, बेरहमी से इधर-उधर हटाते हुए फर्श धोया। इलीनीचिना ने दून्या को सोने के कमरे मे आने की इजाज़त दे दी। लडकी आई और नताल्या के सिरहाने बैठकर तकिया ठीक करने और उसे पानी पिलाने लगी। इलीनीचिना बीच-बीच मे उठकर बगल के कमरे मे सोते बच्चो को भाँक आई। फिर नताल्या को एकटक देखती रही। नताल्या हथेली पर गाल टिकाए चुपचाप लेटी रही। उसका सिर बुरी तरह काँपता रहा। पसीने से तर, एक-दूसरे से उलझे हुए बाल तकिये-भर मे फैले रहे। हर आधे घण्टे पर इलीनीचिना ने उसे धीरे से उठाया, गीली चादर हटाई और साफ मलमल बिछा दी। पर नताल्या की ताकत बराबर घटती गई। आधी रात के ज़रा बाद उसने अपनी आँखे खोली और पूछा—"सवेरा जल्दी ही होगा न ?"

"अभी तो कोई निशान नजर नही आता।" बुढिया ने उसे धीरज बँधाया, पर मन-ही-मन सोचा—'इसका मतलब यह है कि अब यह बचेगी नही। डर ही रही है कि कही ऐसा न हो कि बच्चो को देख भी न पाए और दम निकल जाए।"

और, जैसे कि सास के अनुमान की पुष्टि करने के लिए ही नताल्या ने धीरे से कहा—"माँ, मीशात्का और पोल्युशका को जगा दो।"

"बेटी, बच्चो को परेशान करना क्यो चाहती हो ? आधी रात में उनकी नीद खराब करना क्यो चाहती हो ? वे तुम्हे इस हालत मे देखेंगे

तो डर जाएँगे·· रोने लगेंगे । बेकार को क्यो जगाना चाहती हो उन्हे ?"

"मै बच्चो को देखना चाहती हूँ···मेरी हालत बिगड रही है ।"

"नीले आसमान वाला रहम करे···तुम कह क्या रही हो ? ग्रिगोरी के पापा डॉक्टर को लेकर आते ही हैं···और डॉक्टर के आते ही तुम ठीक हो जाओगी···तब तक थोडा सोने की कोशिश करो, क्यो ?"

"कहाँ से सोने की कोशिश करूँ ?" नताल्या ने क्रोध-भरी आवाज़ मे जवाब दिया। इसके बाद कुछ देर तक वह कुछ नही बोली और उसकी साँस और ढग से चलने लगी। अब इलीनीचिना चुपचाप सीढियो पर निकल आई और सुबक-सुबककर रोने लगी। फिर, उषा के प्रकाश की पहली किरणे आसमान मे छिटकने तक वह वही उसी हालत मे बनी रही। इसके बाद लौटी तो उसका चेहरा लाल और रोने के कारण सूजा रहा। और, जब दरवाज़ा चरमराया तो नताल्या ने आँखे खोल दी।

"सवेरा अब जल्दी ही होगा न ?"

"उजियाला छिटकने लगा है।"

"मेरे पैर भेड की खाल से ढँक दो।"

दून्या ने भेड की खाल उसके पैरो पर डाल दी और कम्बल अगल-बगल दबा दिया। नताल्या ने उसकी ओर देखकर उसे धन्यवाद दिया, इलीनीचिना को और पास बुलाया और बोली—"माँ, आओ, मेरे पास बैठो ज़रा और दून्या, तुम दार्या को लेकर थोडी देर के लिए बाहर चली जाओ···मैं माँ से अकेले मे कुछ बाते करना चाहती हूँ। चली गईं दोनो ?" नताल्या ने आँखें मूँदे-ही-मूँदे पूछा।

"हाँ, चली गईं।"

"पापा नही लौटे अभी तक ?"

"आते ही होगे···क्यो, क्या तबीयत कुछ ज़्यादा खराब मालूम होती है ?"

"नही···कोई बात नही···माँ, मैं तुमसे कहना यह चाहती थी कि मैं जल्दी ही मर जाऊँगी। मेरा दिल कहता है। बदन से इतना खून निकल गया है कि हद है। दार्या से कहो कि स्टोव जलाए तो खूब

सारा पानी गरम कर दे···और, पानी गरम हो जाए तो तुम खुद मुझे नहला देना, मै नही चाहती कि किसी और ··"

"नताल्या, क्रॉस बनाओ, बेटी ! तुम मरने-जीने की बात क्यों कर रही हो भला ? ऊपर वाला बडा रहमदिल है। तुम अच्छी हो जाओगी।"

नताल्या ने कमज़ोर हाथो से सास को चुप रहने का संकेत दिया और बोली—"मेरी बात न काटो···बोलने मे बहुत तकलीफ होती है···फिलहाल ··मेरा सिर बुरी तरह चक्कर खा रहा है। मैने तुमसे पानी के बारे मे कह दिया न। कापीतोनोवना ने तो मेरे पहुँचने के बाद ही सब-कुछ कर दिया। लेकिन बाद मे तो बेचारी के हाथ ही उड गए ··इतना खून निकला, इतना खून निकला कि बस !···काश कि आज की सुबह जैसे-तैसे निकल जाती ! खूब सारा पानी गरम करवाना, मै चाहती हूँ कि मेरा दम निकले तो मैं बिल्कुल साफ रहूँ·· माँ, फिर मुझे किनारो पर कसीदेकारी वाली वह हरी स्कर्ट पहना देना·· ग्रीशा को मेरे बदन पर वह बहुत अच्छी लगती है · और पॉपलीन की जैकेट भी निकाल लेना ··· बक्से मे ऊपर ही रखी है, शाल के बिल्कुल नीचे, कोने मे··· हाँ, मेरे मर जाने पर चाहना तो बच्चो को मेरे मायके लोगो के पास भेज देना··· और सुनो, मेरी माँ को बुलवा लो···कहलवा दो कि फौरन ही आ जाए···आखिरी वक्त उससे रुखसत तो हो लूँ···नीचे से चादर निकाल लो···बुरी तरह तर हो गई है···"

इलीनीचिना ने पीठ को हाथ का सहारा देकर नताल्या को उठाया, खून से गीली चादर निकाली और किसी तरह दूसरी चादर बिछाई। नताल्या ने बडी कठिनाई से, बहुत ही धीरे से कहा—"मुझे करवट के बल कर दो।" और, फिर बेहोश हो गई।···

रुपहली-भूरी सुबह खिडकी से झाँकी। दून्या ने एक बाल्टी धोई और गाएँ दुहने के लिए अहाते मे आई। इलीनीचिना ने खिडकी पूरी खोल दी तो खून और पैराफिन की बास गरमी की सुबह के समीर के झोको की गहरी तरी से ताज़ा हो उठी। हवा, खिडकी के बाहर की, चेरी के पत्तियो के ओस के आँसू कही दूर उडा ले गई। चिड़ियो के पहले

गीत, गायो की डकार और चरवाहे के चाबुक की सटकार खिडकी से कमरे मे आई।

नताल्या ने आँखे खोली, अपने पीले, रक्तहीन होठ जीभ के सिरे से चाटे और पीने को पानी माँगा। अब अपने बच्चो या माँ को नही पूछा। उसके आसपास की हर चीज उसकी निगाहो से सरकने लगी और हमेशा-हमेशा के लिए सरकने लगी।

इलीनीचिना ने खिडकी बन्द की और चारपाई के पास पहुँची।

इस एक रात मे ही नताल्या कितनी बदल गई थी! अभी कल ही तो ऐसी थी जैसे सेब का पेड अपनी पूरी बहार पर···हसीन, तन्दुरुस्त और ताकत से भरपूर। पर, इस समय उसके गाल दोन के किनारे की पहाड़ी की खडिया से ज्यादा सफेद थे। नाक की नोक उभर आई थी। होठो की चमक और ताजगी खत्म हो गई थी। वे और पतले पड गये थे और दाँतो से पीछे-ही-पीछे हटते मालूम होते थे। सिर्फ आँखो की चमक ज्यो-की-त्यो थी। पर भाव उनका भी बदल गया था। अब बीच-बीच मे किसी अनजानी मजबूरी से नताल्या अपनी निलछरी पलकें उठाती, चारो ओर देखती और फिर निगाह क्षण-भर को सास पर टिका देती तो आँखो मे एक नया अजनबीपन और घबराहट लहरे लेती नजर आती।···

·· पैन्तेली सूर्योदय के समय लौटा। कई-कई रातो के जागरण और टाइफस और दूसरी बीमारियो के इलाज। अकूत परेशानी से भारी और कडवी आँखो वाले डॉक्टर ने अपना बदन सीधा किया, कूदकर गाडी से नीचे आया, सीट के नीचे से एक बडल निकाला और घर के अन्दर दाखिल हुआ। सीढियो पर उसने किरमिच की अपनी बरसाती उतारी और जगले पर झुककर बहुत देर तक हाथ साफ किये। दून्या ने उसके हाथो पर पानी डाला तो उसने नीची पलकें किये-ही-किये उसे देखा और आँख तक मारी। इसके बाद उसने कोई दस मिनट तक नताल्या को देखा, और पहले तो सबको कमरे से बाहर कर दिया।

पैन्तेली और इलीनीचिना बाहर निकलकर बावर्चीखाने की ओर बढे तो बूढ़े ने पत्नी से फुसफुसाते हुए पूछा—"क्यो, कैसी है नताल्या?"

"हालत बिगडती जा रही है···"

"यह पेट उसने अपने मन से गिरवाया ?"

"बिलकुल अपने मन से !" इलीनीचिना ने सवाल टालने की कोशिश की।

"गरम पानी लाओ···जल्दी !" डॉक्टर ने अपना सिर दरवाज़े से बाहर निकालते हुए कहा। फिर पानी गरम होता रहा कि वह बावर्चीखाने मे आ गया और बूढे के सवाल के जवाब मे हाथ हिलाते हुए बोला—"दोपहर के खाने के वक्त तक ख़त्म हो जाएगी। खून बहुत निकल गया है। कुछ नही हो सकता। ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच को पैगाम भेज दिया या नही ?"

पैन्तेली जवाब दिये बिना, बरसाती मे आया। दार्या के देखते-देखते बूढा शेड के नीचे होता हुआ कटाई की मशीन के पास पहुँचा और कटो की टाल से सिर टिकाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

डॉक्टर आधे घन्टे तक घर मे और रहा। बीच मे वह सीढियो पर बैठ गया और थोडी देर तक ऊँघता रहा। फिर जब समोवार उबलने लगा तो सोने के कमरे मे वापस जाकर उसने नताल्या को कैम्फर की सुई लगाई, बाहर आया, दूध माँगा, आती जम्हाई को टाला, पूरे दो गिलास दूध पिया और बोला—"मुझे फौरन वापस पहुँचाओ। व्येशेन्स्काया मे जाने कितने बीमार और जख्मी मेरा इन्तजार कर रहे है, और यहाँ मेरे करने को अब कुछ है नही। ऐसे मरीज के बचने की अब कोई उम्मीद नही है। वैसे मामला ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच का है। और मैं करना क्या नही चाहूँगा ! पर साफ बात यह है कि मेरे बस का अब कुछ है नही। कभी-कभी हम ऐसे मजबूर हो जाते है कि लाख चाहने पर भी कुछ नही कर सकते। हमारे पास बीमारी का ~~तो~~ इलाज है, पर मौत का कोई इलाज नही है। और तुम्हारी इस बहू के बदन से खून इतना बह गया है कि अब जीने के लिए इसमे कुछ बचा नही है···बच्चेदानी बुरी तरह फट गई है···उसमे दम बाकी नही है। मेरे खयाल से बुढिया ने लोहे के हुक से काम लिया है। हम सब नीम-हकीम खतरयेजान है, और शायद हमेशा यही बने रहेगे।"

पैन्तेली ने तारान्तास मे सूखी घास डाली और दार्या से कहा—"तुम डॉक्टर को पहुँचा आओ। और देखो, नदी पर पहुँचना तो घोडी को पानी पिलाना न भूलना।" फिर उसने डॉक्टर को फीस देनी चाही, पर उसने साफ इन्कार कर दिया—"यह आप कह क्या रहे है? आपको शर्म नही आती, पैन्तेली-प्रोकोफियेविच! आप सब अपने लोग हैं और आप मुझे रूबल दिखला रहे है! नही, अपने यह रूबल अपने पास रखिये! आपको तो इसका खयाल भी नही आना चाहिये। अगर मैं आपकी बहू को बिस्तर से उठाकर खडा कर देता तो दूसरी बात होती। मगर ऐसे मे···"

मगर सबेरे के छ बजे नताल्या की हालत बहुत अच्छी लगी। उसने मुँह-हाथ धोया, दून्या शीशा लेकर सामने खड़ी हो गई तो उसने उसमे देख-देखकर बाल बाए और चारो तरफ नज़र दौडाई। अपनो को आसपास देखकर उसकी आँखे खुशी से खिल उठी। बोली—"देखो, अब मैं पहले से कही अच्छी हूँ। वैसे मैं तो बहुत डर गई थी। मुझे लगा कि मैं तो गई···लेकिन, बच्चे अब तक सो क्यो रहे है? दून्या, ज़रा देखो तो कि अब तक जागे या नही?"

इसी बीच नताल्या की माँ, उसकी छोटी बहन एग्रीपीना के साथ आ गई और बेटी को देखते ही फूट-फूटकर रोने लगी। परन्तु नताल्या ने बार-बार खीझकर टोका—"माँ, तुम इस तरह रो क्यो रही हो? मेरी हालत अब उतनी खराब नही है ·तुम मुझे दफनाने के इरादे से तो नही आई हो न?···उफ, आखिर बतलाओ न कि तुम इस तरह रो क्यो रही हो?"

एग्रीपीना ने अपनी माँ को कुहनी मारी। लुकिनीचना ने कारण समझकर जल्दी से अपनी पलकें पोछ डाली और धीरज-भरे स्वर मे बोली—"अरे, तुम सोच क्या गईं, बेटी? मै तो रो रही थी, क्योकि मैं खासी बेअक्ल हूँ। मुन्नी! तुम्हे देखते ही मेरा दिल एकाएक भर आया। कितनी बदल गई हो तुम!"

फिर मीशात्का की आवाज और पोल्युशका की हँसी सुनते ही नताल्या के गालो पर हलकी-सी लाली दौड़ गई। बोली—"यहाँ ले

आओ दोनो को । जल्दी बुला लो । वे कपडे पीछे पहन लेंगे ।"

पोल्युशका पहले आई, दरवाज़े पर ठिठकी और अपनी नन्ही-मुन्नी मुट्ठियो से नीद-भरी आँखें मलने लगी । नताल्या ने मुस्कराते हुए कहा—"देख तेरी माँ बीमार हो गई है ··यहाँ आ जा मेरी रानी !"

पोल्युशका ने गम्भीरता से बेंचो पर बैठे बडे-बूढो को आश्चर्य से देखा, माँ के पास गई और परेशान होकर बोली—"तुमने मुझे जगाया क्यो नही ? और ये इतने सारे लोग यहाँ क्यो आए हैं ?"

"ये लोग मुझे देखने आए हैं···लेकिन, तुम्हें जगाती मैं क्यो ? तुम क्या करती ?"

"मैं तुम्हारे लिए पानी ले आती और तुम्हारे पास बैठती···"

"अच्छा अब जाओ । मुँह-हाथ धोओ, बाल बाओ, नीले आसमान वाले को सिर झुकाओ और फिर आकर यहाँ, मेरे पास बैठो ।"

"लेकिन, तुम नाश्ते के लिए तो उठोगी न ?"

"नही जानती ··शायद नही उठूँगी ।"

"अच्छा तो तुम्हारा नाश्ता मैं यहाँ ले आऊँगी···ठीक है न, माँ ?"

"बिल्कुल अपने बाप की नकल है···सिर्फ दिल उसका जैसा नही है···इसका दिल कही ज्यादा मुलायम है···" नताल्या ने हलके से मुस्कराते हुए कहा, सिर फिर तकिये पर रख लिया और कम्बल पैरो तक इस तरह खीच लिया, जैसे कि बडी ठड लग रही हो ।···

लेकिन एक घण्टे के बाद नताल्या की हालत और गिर गई । उसने बच्चो को पास बुलाया, उन्हे सीने से लगाया, उन पर रक्षा का क्रास बनाया, चूमा और अपनी माँ से बोली—"माँ, इन्हे ले जाओ यहाँ से ।"

लुकीनीचना ने बच्चो को एग्रीपीना को सौपा और अपनी बडी बेटी के पास बनी रही ।

नताल्या ने अपनी आँखें मूंद ली और जैसे कि सन्निपात की स्थिति में बोली—"यानी मैं अब उसे नही देख पाऊँगी···" और फिर जैसे कुछ याद हो आया । उसने झटके से अपना सिर ऊपर उठाया और कहने लगी—"ज़रा मीशात्का को ले आओ यहाँ ।···"

एग्रीपीना का चेहरा आँसुओ से तर हो गया। उसने लडके को कमरे मे कर दिया और खुद बावर्चीखाने मे चुपचाप सिसकती रही।

मीशात्का की आँखो मे उदासी घुली लगी। वह डरते हुए माँ के पलग की ओर बढा। पर, चेहरे के एकदम बदल जाने के कारण माँ उसे एकदम अजनबी लगी, और जैसे कि उसे मुश्किल से पहचान पाया। नताल्या ने बेटे को पास खीच लिया तो उसे उसका दिल, जाल मे फँसी गौरैया के दिल की तरह, जोर-जोर से उछलता लगा। बोली—"नीचे झुको जरा, मुन्ने बेटे! और पास आओ!"

इसके बाद उसने बच्चे के कान मे कुछ धीरे से कहा, फिर उसे पीछे हटाया। सवाल-भरी निगाहो से उसकी आँखो मे आँखे डाली, और दर्द से टूटने पर भी मुस्कराते हुए पूछा—"बेटे, भूलोगे तो नही न! कह दोगे न पापा से?"

"नही, मै नही भूलूँगा।" मीशात्का ने माँ की छिगुलिया कसकर पकडी। उसे अपनी नन्ही, गरम मुट्ठी मे क्षण-भर दबाये रहा और फिर हाथ छोड दिया। फिर, न जाने क्यो, हाथो से अपने को साधते हुए, पजो के बल पीछे हटा।

नताल्या ने उसे दरवाजे तक जाते देखा और इसके बाद चुपचाप दीवार की तरफ मुड गई।

दोपहर को उसका दम निकल गया।

: १७ :

ग्रिगोरी को मोर्चे से गाँव पहुँचने मे दो दिन लगे, और इस बीच न जाने कितने तरह के विचार उसके दिमाग मे आए, न जाने कितनी बातो का उसे खयाल आया। चलते समय उसे डर लगा कि स्तेपी के इस लम्बे-चौडे पसारे मे इस वेदना के साथ वह अकेला रह जाएगा और रह-रहकर उसे नताल्या का ही ध्यान आएगा। अतएव, उसने प्रोखोर-जिकोव को साथ ले लिया, और अपनी स्क्वैड्रन के पडाव वाले गाँव से बाहर निकलते ही लडाई की दास्तान छेड दी। पूरी कहानी सुना गया कि ऑस्ट्रियाई मोर्चे पर बारहवी रेजीमेट मे रहकर उसने

किस तरह और कितना काम किया। कैसे रूमानिया मे प्रवेश किया और कैसे जर्मनो को मुंह की दी। यानी वह बेरोक टोक बराबर बातें करता गया। इस सिलसिले मे उसने अपनी रेजीमेंट के साथियो के कई बार फँस जाने का भी ज़िक्र किया। कई बार तो वह हँसा भी ··।

ग्रिगोरी की यह वाचालता भोले-भाले प्रोखोर-जिकोव को पहले तो बहुत ही असाधारण लगी और आश्चर्य से भरकर उसने उसे कई बार कनखी से देखा। उसे लगा कि ग्रिगोरी काफी परेशान है और इस तरह बीती बाते कर उस परेशानी से छुटकारा पाना चाहता है—शायद इसीलिए जल्दी न होने पर भी कोशिश कर बातचीत खीचता जा रहा है। यही नही, ग्रिगोरी ने चेरनीगोव-अस्पताल मे अपने रहने की चर्चा की और प्रोखोर ने उसे तिरछी नज़र से देखा तो, उसे उसके सांवले गालो पर आँसू बहते नजर आए। इस पर प्रोखोर आदर के कारण कुछ कदम पीछे हो गया और कोई आधे घटे तक उसने अपना घोडा ग्रिगोरी के घोडे के पीछे रखा। इसके बाद वह फिर उसके बराबर आया और यो ही किसी विषय पर बाते करने लगा। लेकिन ग्रिगोरी ने उसमे कोई दिलचस्पी नही ली और दोपहर तक वे दोनो अगल-बगल चुपचाप मजिल तय करते रहे।

ग्रिगोरी ने जल्दी-से-जल्दी घर पहुँचने के लिए, गरमी के बावजूद घोडे को पहले तेज दुलकी मे डाला, फिर सरपट दौडाया और सिर्फ बीच-बीच मे ही रासे खीचकर कदम चाल मे आने दिया। फिर, आग बरसाती किरणो के ठीक सिर पर पडने पर ही उसने घोडा रोका, उस पर से काठी उतारी और चरने के लिए छोडा। वह खुद छाँव मे गया, चेहरा नीचे कर जमीन पर पड़ रहा और गरमी घटने तक उसी हालत मे बना रहा।

··घोडो को एक बार जई दी गई, पर ग्रिगोरी ने दाना देने के सही वक्त का कोई खास खयाल न रखा। नतीजा यह कि लम्बी मजिलो का अभ्यास होने पर भी पहले दिन की शाम तक उनके पेट धँस गए और उनकी चाल मे सुबह वाली बात न रह गई। प्रोखोर ने खीझकर सोचा—'हम घोड़ो को चौपट करने का रास्ता कायदे से अपना

रहे है। कौन सवारी करता है इस तरह ? इस शैतान के लिए तो यह तरीका भी ठीक ही है। यह अपना घोडा जबरदस्ती इस तरह दौडा रहा है तो दौडाए। यह तो जब चाहेगा, इसे दूसरा जानवर मिल जाएगा। लेकिन मुझे दूसरा घोडा कहाँ मिलेगा ? और अगर हम इसी तरह इन जानवरो को ताबडतोड भगाते रहे तो ये तो मरे समझो। उसके बाद बाकी रास्ता या तो पैदल पार करना पडेगा या कोई गाडी किराए पर लेनी पडेगी।'

अगले दिन सबेरे उससे चुप न रहा गया और वह आखिरकार ग्रिगोरी से बोला—"कोई तुम्हे इस तरह देखेगा तो यही समझेगा कि तुमने घोडा कभी रखा नही है। कौन दौडाता है घोडा इस तरह दिन-रात बिना साँस लिये ? देखो तो, जानवर थकान से किस तरह चूर हो गए है ! जो भी हो, अब शाम को इन्हे कायदे से खिलाना चाहिए।"

"बढाए चलो···घोड़ा पीछे न रहे।" ग्रिगोरी ने अन्यमनस्कता से उत्तर दिया।

"मैं तुम्हारे बराबर से नही चल सकता। मेरा घोडा अधमरा हो गया है। क्यो न थोडा-सा आराम कर ले ?"

ग्रिगोरी ने कोई उत्तर नही दिया। आधे घटे तक वे चुपचाप घोडो को दुलकी दौडाते रहे। पर उसके बाद प्रोखोर ने दृढ स्वर मे कहा—"आओ जानवरो को जरा-सी साँस दे दे। मैं इस तरह अब एक कदम आगे नही बढूँगा। सुना तुमने ?"

"चाबुक जमाओ · चाबुक।"

"लेकिन, आखिर हम कब तक चाबुक जमाते जाएँगे ? यानी जब तक कि घोडे टाँगे नही फैला देगे ?"

"बेकार ज़बान मत लडाओ।"

"रहम करो, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, रहम करो। मैं तुम्हारे मुँह लगना नही चाहता, मगर सूरत ही ऐसी हो गई है।"

"ऐसी-तैसी मे जाओ तुम। वैसे रुकना ही चाहते हो तो घोडा रोक लो और देखो कि अच्छी घास कहाँ है।"

आदमी तार लिये ग्रिगोरी की तलाश मे खोपर क्षेत्र मे सभी जिले मँझाता फिरा। इसीलिए तार देर मे मिला, और यही वजह है कि ग्रिगोरी, नताल्या के दफनाए जाने के तीन दिन बाद गाँव पहुँचा। घर पहुँचने पर वह छोटे फाटक के पास घोडे से उतरा। दून्या बाहर भागी आई और फूट-फूटकर रोने लगी। ग्रिगोरी ने उसे हृदय से लगाया और भौहे चढाकर बोला—"घोडे को जरा मजे मे फिरा दो···टसुए बहाना बन्द करो।" फिर प्रोखोर की तरफ मुडा—"तुम अपने घर जाओ···जरूरत होगी तो कहला दूँगा।"

और, इसी बीच बेटे की अगवानी के लिए मीशात्का और पोल्युशका के हाथ पकडे इलीनीचिना बाहर आ गई।

ग्रिगोरी ने झपटकर बच्चो को बाँहो मे भर लिया और काँपती हुई आवाज मे बोला—"अच्छा, अब रोओ नही। आसू पोछो, प्यारे बच्चो! तो, तुम बिना माँ के हो गए? यानी···यानी, तुम्हारी माँ हम लोगो को बीच मे छोडकर चली गई···"

परन्तु ग्रिगोरी घर मे घुसा और उसने पिता का अभिवादन किया, तो उसके भी आँसू गले मे आ-आकर फँसने लगे।

"हम नताल्या को किसी तरह बचा नही पाए।" पैन्तेली बोला और भभकता हुआ फौरन ही गलियारे मे आ गया।

इलीनीचिना, ग्रिगोरी को सोने के कमरे मे ले गई और फिर उसने पूरी कहानी सुनाई। बुढिया ने अपनी ओर से सच्चाई दबाई। पर, ग्रिगोरी ने पूछा—"आखिर पेट गिरवाने की बात उसके दिमाग मे आई ही क्यो? पता है तुम्हे?"

"हाँ पता है।"

"क्या बात थी?"

"वह एक दिन पहले तुम्हारी ·····के यहाँ गई थी और उस अकसीनिया ने उसे सब-कुछ साफ-साफ बतला दिया था।"

"ठीक, अब समझ मे आई बात।" ग्रिगोरी का चेहरा तमतमा उठा और उसकी निगाहे झुक गई।

वह कमरे के बाहर आया तो चेहरा पीला नजर आया। उम्र बढ़

गई लगी । निलछरी भौहे रह-रहकर कांपती और होठ फडकते रहे । उसने मेज के किनारे बैठकर बच्चो को घुटनो पर बिठा लिया और फिर उन्हे कितनी ही देर तक दुलारता रहा । फिर उसने अपने फौजी थैले से सफेद, गर्द से सना चीनी का एक टुकडा निकाला, हथेली पर रखकर चाकू से तोडा और अपराधी की भांति मुस्कराया।

"सिर्फ यह ला सका हूँ मै तुम्हारे लिए···इस तरह का निकम्मा बाप पाया है तुमने·· अच्छा, सुनो, भागकर अहाते मे जाओ और अपने बाबा को बुला लाओ···"

"तुम नताल्या की कब्र पर चलोगे ?" इलीनीचिना ने पूछा ।

"बाद मे···मौका मिलने पर देखा जाएगा· जो लोग यह दुनिया छोड़कर चले जाते है, वे बुरा-भला नही माना करते · मीशात्का और पोल्युशका कैसे रहते है? रोते-राते तो नही ?"

"पहले दिन तो दोनो बहुत ही रोये· खासतौर पर पोल्युशका ता बहुत ही रोई · लेकिन, अब कुछ ऐसा है जैसे कि बच्चो ने मन-ही-मन कोई फैसला कर लिया है·· वे अब हमारे सामने कभी कुछ नही कहते··· पर, अभी कल रात मैंने मीशात्का को चुपके-चुपके रोते सुना ··वैसे उसने मुंह तकिये मे छिपा रखा था, ताकि आवाज कोई न सुने··· लेकिन, मैंने तो इस पर भी सुन लिया और जाकर पूछा—'क्या बात है, मुन्ने आओ, मेरे पास लेटोगे ?' लेकिन वह बोला—'ठीक है, दादी··· कोई बात नही है ··मै शायद सपना देख रहा था ··' तुम उनसे बातें करो·· उन्हे थोडी ममता दो । कल मैंने दोनो को गलियारे मे आपस मे बाते करते सुना । पोल्युशका अपने भाई से बोली—'माँ वापस आयेगी हम लोगो के पास·· वह तो अभी बूढी नही है, और जो लोग बूढे नही होते, वे मरा नही करते ।' बच्चे है, उन्हे अक्ल ही अभी कितनी है । पर, दुखते इस तरह है जैसे कि बड़े-सयाने हो ··मेरा खयाल है कि तुम भूखे होगे···बैठ जाओ···मैं अभी कुछ पकानी हूँ तुम्हारे लिए···तुम इस तरह गुमसुम क्यो बैठे हो आखिर ?"

ग्रिगोरी सोने के कमरे मे गया और यहाँ उसके व्यवहार से ऐसा लगा जैसे कि पहली बार उसे जिन्दगी की राह मिल गई हो । उसने

ध्यान से दीवारो पर चारो तरफ नज़र दौडाई और निगाह पलग पर टिका दी। पलग पर बिस्तर कायदे मे लगा और तकिये ठीक-ठाक ढग से रखे दीखे। 'इसी पलग पर नताल्या ने दम तोडा था ''यही उसकी आवाज का तार टूटा था। ''

ग्रिगोरी ने कल्पना की ' नताल्या ने बच्चो से विदा ली, उन्हे चूमा और शायद उनके सिरो पर क्रॉस बनाया।' और, पत्नी की मौत का तार पढ़ते समय उसे जैसा लगा था, वैसा ही एक बार फिर लगा। उसके कलेजे मे जैसे किसी ने छुरा मार दिया'' कान सनसनाने लगे।

घर की छोटी से-छोटी चीज उसे नताल्या की याद दिलाने लगी। ये यादे अजर-अमर लगी और उसके मन को बुरी तरह कुरेदने लगी। उसने, न जाने क्यो, एक-एक कर सभी कमरो के चक्कर काटे, फिर बाहर निकला और दौडकर सीढियो पर चढ गया। उसके दिल का दर्द बराबर बढता गया। होते-होते माथे पर पसीना आ गया। उसने डरकर हाथो से सीना जकड लिया और सीढियो से नीचे उतरते हुए सोचा—'यह सफेद, बूढा घोडा दो-एक पहाडी ढाल तो सरपट पार कर ही चुका है।'

दून्या उसके घोडे को अहाते मे फिराती रही। अनाज की कोठी के पास जानवर ने लगाम को झटका दिया, ठिठककर जमीन पर नथुनो से हवा दौडी, गर्दन फैलाई और अपना ऊपरी होठ फडकाते हुए दॉत निकाल दिए। फिर, वह हीसा और उसने अपने आगे के पैर भद्दे ढग से मोडे। इस पर दून्या ने लगाम खीची, पर घोडे ने एक ध्यान नही दिया और जमीन पर पसरने लगा।

"इसे लोटने मत दो!" पैन्तेली अस्तबल से चीखा—"देखती नही कि उस पर काठी अभी तक कसी हुई है! तूने अभी तक उसे खोला क्यो नही? गधी कही की!"

ग्रिगोरी अब भी अपने दिल की धडकनो की आहट लेते हुए घोडे की तरफ बढा, काठी उतारी और बरबस मुस्कराते हुए दून्या से बोला—"पापा अब भी चीखते है?"

"हमेशा की आदत है।" दून्या ने जवाब मे मुस्कराते हुए कहा।

"कुछ देर और फिरा लो घोडे को, दून्या !"

"वैसे तो पसीना सूख गया है, पर तुम कहते हो तो और सही ।"

"अगर चाहता हो तो लोट लगा लेने दो इसे···रोको मत !"

"अब·· अब···भैया·· दुखी हो रहे हो तुम ?"

"और, तुमने उम्मीद क्या की थी ?" ग्रिगोरी ने रुँधे गले से कहा ।

दून्या ने दर्द से भाई का कधा चूमा, खुद भी भर आई, तेजी से मुडी और घोडे को अहाते मे ले गई ।

ग्रिगोरी अपने पिता के पास पहुँचा । वह बडी मेहनत से अस्तबल से लीद साफ कर रहा था ।

बूढा बोला—"मै तुम्हारे घोडे के लिए जगह साफ कर रहा हूँ ।"

"तुमने मुझसे क्यो नही कहा ? मै खुद ही साफ कर लेता ।"

"क्या बात कही है ! मै क्या कुछ अपाहिज हूँ ? बेटे, मै तो चकमक पत्थर की तरह हूँ । मुझमे कुछ कभी घिसता नही । अब भी थोडी बहुत दौड-भाग कर लेता हूँ । कल मैं राई की बोआई की बात सोच रहा हूँ । क्या तुम कुछ दिनो तक ठहरोगे अभी ?"

"एक महीना रहूँगा ।"

"यह तो बहुत ही अच्छा होगा । खेत चलोगे मेरे साथ ? काम में लगे रहोगे तो गम उतनी चोट नही करेगा ।'

"मैंने खुद भी यही बात सोची थी ।"

बूढे ने फावडा रखा, आस्तीन से चेहरे का पसीना पोछा और शात मन से बोला—"चलो, घर चलें । तुम थोडा-बहुत खा-पी लो । यह··· मेरा मतलब दिल का दर्द अब तुम्हे कभी नही छोडेगा···इससे कोई छुटकारा नही···और···इससे बचने मे कोई फायदा भी नही । असलियत यही है···"

इलीनीचिना ने खाने की मेज लगाई और एक साफ तौलिया ग्रिगोरी को दिया । और, फिर ग्रिगोरी ने मन-ही-मन सोचा—'इस तरह तो नताल्या सब-कुछ करती थी ।' पर, अपनी भावनाओ पर पर्दा डालने के लिए वह खाने पर टूट पडा । इस बीच बूढा वोदका की, घास से मुँह-बन्द एक सुराही तहखाने से निकालकर लाया तो ग्रिगोरी ने उसे

कृतज्ञता-भरी दृष्टि से देखा। पैन्तेली जमे हुए लहजे मे बोला—"हम लोग नताल्या के नाम पर पियेंगे···ऊपरवाला उसकी रूह को चैन बख्शे !"

दोनो ने एक-एक गिलास वोदका पी। इसके बाद बूढे ने इन्तजार किये बिना, गिलास फिर भर दिये और आह भरकर बोला—"एक साल मे घर के दो-दो लोग चले गए···मौत को हमारे खानदान से इश्क हो गया है···"

"हटाओ···ऐसी बाते इस वक्त न करो, पापा !" ग्रिगोरी बोला। उसने एक बार मे ही पूरा गिलास गले के नीचे उतार लिया, सूखी मछली का एक टुकडा धीरे-धीरे चबाना शुरू किया, और नशे का इन्तजार करने लगा कि तकलीफदेह यादो से किसी तरह जान छूटे !

"इस साल राई की फसल खूब अच्छी है और हमने बोआई भी दूसरों से कही अच्छी की है।" पैन्तेली ने डीग मारते हुए कहा। पर, ग्रिगोरी ने सहज रूप से समझ लिया कि पापा जान-बूझकर ही इस तरह बातें कर रहे है···

"लेकिन, गेहूँ का क्या हाल है ?"

"गेहूँ ? गेहूँ पाले से थोडा मारा गया, पर हालत ऐसी कोई बुरी नही है। बीच की फसल होगी। जहाँ तक कडे गेहूँ का सवाल है, दूसरो ने इससे काफी फायदा उठाया है। पर, किस्मत की बात कि हमने वह बोया ही नही। लेकिन, खैर, कोई बात नही। चारो तरफ जिस तरह की बरबादी का बोलबाला है, उसमे अनाज से ही क्या खास फर्क पड जाएगा ? अनाज हो भी तो न बेचा जा सकता है और न कोठियो मे भरकर रखा जा सकता है। लडाई के मोर्चे ने इस तरफ रुख किया नही कि लाल फौजी आए और सारे-का-सारा उठाकर ले गये ! लेकिन, तुम इसकी फिक्र न करो। इस साल भी अपने यहाँ इतना अनाज हुआ है कि दो साल तक आराम से काम चल सकता है। ऊपरवाले का लाख-लाख शुक्र कि हमारी कोठियाँ ऊपर तक भरी हुई है और अनाज और कही भी रखा है···" बूढे ने होशियारी से आख मारी और बोला—"दार्या से पूछ लो कि बरसात के दिनो के लिए कितना अनाज जमा कर

रखा है हमने ! तहखाना तुम्हारी ऊँचाई के बराबर गहरा और तुम्हारे फैले हुए हाथों की आधी चौड़ाई-भर फैलाव मे है। इस गुनाहगार ज़िन्दगी ने हमे कगाल बनाकर रख दिया है वरना हमारी हालत तो एक जमाने मे अच्छी-खासी थी।" · बूढा नशे मे हँसा, पर क्षण-भर बाद ही शान से दाढी पर हाथ फेरते हुए गम्भीर स्वर मे बोला—"हो सकता है, तुम्हे अपनी सास का खयाल आ रहा हो। इसलिए तुम्हे यह बतला दूँ कि मुझे उनका ध्यान बराबर ही रहा है, और वक्त-जरूरत पर हमने भरसक मदद भी की है। यानी उन्हे मुँह खोलने का मौका भी नही मिला कि मैंने अनाज गाडी मे ऊपर तक भरा, तोला तक नही और उनके पास पहुँचा दिया। इससे तुम्हारी नताल्या खुशी से खिल उठी···उसने सुना तो उसकी आँखो मे आँसू आ गए·· तीसरा गिलास भरूँ, बेटे ? अब हमारी हँसी खुशी को एक तुम्ही तो रह गये हो।"

'अच्छा·· भर दो !" ग्रिगोरी ने कहा और अपना गिलास आगे बढा दिया।

इसी समय मीशात्का आया और हिचकते-हिचकते मेज़ की तरफ बढा। फिर वह उचककर पिता के घुटनो पर चढ गया और भद्दे ढग से गर्दन मे हाथ डालकर उसने उसे जीभर चूमा।

"यह किसलिए बेटे ?" ग्रिगोरी ने बुरी तरह द्रवित होते हुए पूछा, लडके की आँसू-भरी आँखो मे आँखें डाली और मुँह दूसरी तरफ कर लिया ताकि उसकी साँस की वोदका की महक लडके की नाक मे जाए।

मीशात्का ने धीमे से जवाब दिया—"माँ सोने के कमरे मे पडी थी न···जब ज़िन्दा थी·· तो उन्होने मुझे अपने पास बुलाया और कहा—'पापा आयें तो उन्हे मेरी तरफ से चूमना, और उनसे कहना कि तुम दोनो को खूब प्यार करें !' उन्होने कुछ और भी कहा था, पर, वह तो मैं भूल गया ··"

ग्रिगोरी ने अपना गिलास नीचे रख दिया और खिडकी की तरफ देखने लगा। कमरे मे बहुत देर तक ऐसा सन्नाटा रहा कि आदमी का दिल सहज ही घुटने लगे।

"गिलास खाली करो न !" पैन्तेली ने धीरे से कहा।

"अब नही पिऊँगा।" ग्रिगोरी ने बेटे को घुटने से उठाया, खुद उठ खडा हुआ और तेजी से बरसाती की तरफ बढा।

"ज़रा रुको तो·· बेटे · गोश्त नही खाओगे ? उबला चूज़ा रखा है, टिकियाँ भी है।" इलीनीचिना स्टोव की तरफ लपकी, पर इस बीच ग्रिगोरी ने बाहर निकलकर दरवाज़ा भडाक से मार दिया।

फिर वह ढोरो के बाडे से अस्तबल तक बेमतलब चक्कर काटता रहा। इसके बाद घोडे पर नज़र पडी तो उसने सोचा, 'इसे नहला देना चाहिये।'

वह शेड मे आया। यहाँ उसने तैयार रखी कटाई की मशीन के पास देवदार की लकडी की चैलियाँ और लकडी के कटे हुए टुकडे देखे। पास ही एक टेढा-मेढा तख्ता ज़मीन पर पडा देखा।

'यहाँ पापा ने ताबूत तैयार किया होगा नताल्या के लिए।' उसने सोचा और तेज़ कदमो सीढियाँ पारकर घर के अन्दर चला गया।···

पैन्तेली ने अपने बेटे की ज़िद पर जल्दी-जल्दी सारी तैयारी की, कटाई की मशीन मे घोडे जोते और पानी से भरी एक पीपिया ऊपर रखी।··

रात होते ही बाप-बेटे खेत के लिए रवाना हो गए।

१८ .

ग्रिगोरी को इतना सताप न सिर्फ इसलिए हुआ कि उसे नताल्या से प्यार था और दाम्पत्य-जीवन के अपने छ वर्षों मे उसके साथ रहने का आदी हो गया था, बल्कि उसे इतना शोक इसलिए भी हुआ कि उसने उसकी मौत के लिए अपने को ज़िम्मेदार समझा। अगर नताल्या ने अपने बेईमान पति से नफरत की होती, उससे समझौता करने से इन्कार कर दिया होता, अपने बच्चो के साथ अपनी माँ के यहाँ चले जाने की धमकी पर अमल किया और वही दम तोडा होता, तो पति के दिल पर उसकी मौत का इतना बोझ न होता और पछतावे ने उसे इस तरह छेदा न होता। लेकिन उसकी माँ ने उससे कहा—"नताल्या ने

तुम्हे माफ कर दिया था। वह तुम्हे प्यार करती थी और आखिरी लमहे तक तुम्हारा नाम लेती रही थी।"

इससे उसका कष्ट और बढा, उसकी आत्मा पर भर्त्सना का बोझ और लदा और वह गुज़रे ज़माने की बातो और उसके अपने व्यवहार को एक बिल्कुल नई दृष्टि से देखने पर मजबूर हो गया।···

एक वक्त था जब उसके मन मे अपनी पत्नी के प्रति केवल उदासीन विरोध का भाव था। लेकिन इधर सब-कुछ बदल गया था और उसके मन मे उसके लिए और ही तरह की भावनाएँ उठने लगी थी। खासतौर पर बच्चो के कारण चीज़ो मे ज़मीन-आसमान का अन्तर हो गया था।

यानी, इधर बच्चो के लिए वह जो गहन पितृ-सुलभ स्नेह अनुभव करने लगा था, वह बिल्कुल नई अनुभूति थी। वैसे वह जब भी मोर्चे से थोडे वक्त के लिए घर आया, उसने सिर्फ अपना फर्ज़ समझकर, पत्नी को खुश करने के लिए बच्चो को दुलराया। लेकिन इस बीच जब भी नताल्या ने उनके प्रति ममता दिखाई उसने उसे हमेशा ही अविश्वास से भरे आश्चर्य की दृष्टि से देखा। उसकी समझ मे ही न आया कि इतने छोटे-छोटे, अपनी चीख-पुकार से आसमान को सिर पर उठाने वाले प्राणियो को कोई अपने को भूलकर इस तरह प्यार कर कैसे सकता है। यही कारण है कि बच्चे अभी माँ के दूध पर पल ही रहे थे कि उसने एक दिन रात को नताल्या का मज़ाक बनाते हुए कहा—"तुम इस तरह बौखलाकर उछलने क्यो लगती हो? बच्चे मुँह भी नही खोल पाते कि तुम उठकर खडी हो जाती हो। क्या बुरा है, ज़रा हाथ-पैर पटकने और चिल्लाने दो उन्हें। वे कोई सोने के आँसू तो बहाएँगे नही।"

और, इस वातावरण मे बच्चे भी उसकी तरफ से काफी खिचे-खिचे रहे। लेकिन उम्र के साथ उनमे पिता के प्रति लगाव बढा। उस लगाव ने पिता के हृदय मे प्यार जगाया और इस प्यार ने अपना हाथ नताल्या तक बढा दिया।

अकसीनिया से कट जाने के बाद उसने नताल्या को छोड़ देने की बात

गम्भीरता से कभी नही सोची। फिर उस औरत के दुबारा पास आने पर भी उसे कभी नही खटका कि वह उसके अपने बच्चो की माँ की जगह ले लेगी। अगर बात आती तो, वह तो दोनो के साथ रहता और उनमे से हर-एक को अलग-अलग ढंग से प्यार करता। लेकिन पत्नी नही रही तो अब वह सहसा ही अकसीनिया से कट-सा गया। उसका मन उसके प्रति क्रोध से भर उठा। उसे ऐसा लगा जैसे कि उसने अपने और उसके सम्बन्धो को भुनाकर नताल्या की जान ले ली है।

ग्रिगोरी ने खेत मे काम कर अपना गम भुलाने की भरसक कोशिश की, पर खयालो से उसकी जान नही छुटी। उसने जीतोड मेहनत कर अपने को चूर-चूर कर डाला, कटाई की मशीन पर वह घटो नही बैठा, लेकिन नताल्या का ध्यान इस पर भी उसे आता ही रहा। आपस की मिली-जुली ज़िन्दगी की छोटी-छोटी बातें और घटनाएँ उसे बराबर याद आती रही। वह अपनी स्मृति की लगाम जरा भी ढीली करता कि मुस्कराती हुई नताल्या उसके सामने आकर खडी हो जाती। उसके दिमाग मे ताज़ा हो उठता पत्नी का नाक-नक्शा, चाल-ढाल, जूडा बाँधने का ढँग, मुस्कान और आवाज़ का उतार-चढाव।···

तीसरे दिन बाप-बेटे ने जौ की कटाई शुरू की। लेकिन तीसरे दिन दोपहर को पैन्तेली ने घोडे रोके कि ग्रिगोरी कटाई की मशीन से नीचे कूद पडा और ज़मीन पर पडे तख्तो पर हेगा रखकर बोला—

"पापा, मै एकाध घटे को घर जाऊँगा ज़रा।"

"क्या बात है?"

"कुछ नही, ज़रा बच्चो को देख आऊँ।"

"ठीक है···देख आओ।" बूढे ने फौरन अनुमति दे दी, बोला—"इस बीच हम टाल लगाने का थोडा काम कर लेते हैं।"

ग्रिगोरी ने फौरन ही कटाई की मशीन से अपना घोडा खोला और उस पर सवार होकर उसे क़दम-चाल से ककडो वाले रास्ते से बडी सडक पर ले आया। उसके कानो मे शब्द गूँजते रहे—'अपने पापा से कहना कि तुम दोनो को खूब प्यार करे।' उसने अपनी आँखे मूँद ली, रासें ढीली कर दी और यादो में डूब गया। घोडा अपने मन से

चलने को आजाद हो गया।

गहरे नीले आसमान मे हवा से तितर-बितर बादल लगभग स्थिर-से लटक रहे। कौए अपने पर आधे फैलाए जहाँ-तहाँ फुदकत रहे। कुछ टालो पर इधर-उधर बैठे रहे और उनमे से सयाने अपने छोटे, अब मुश्किल से ही पर तोलने वाले बच्चो को चोच-से-चोच मिलाकर खिलाते रहे। दूसरी तरफ कटाई से खाली फैलाव के ऊपर उनकी कांव-कांव जमी हुई कराहो मे घुलती रही।

ग्रिगोरी का घोडा मनमाने ढँग से सडक के किनारे चलता और बीच-बीच मे इधर-उधर उगी तिनपतिया घास मे मुँह मारता रहा। बीच मे दो बार दूसरे घोडो की झलक पाकर वह ठिठका और हिनहिनाया। इस पर ग्रिगोरी ने अपने-आपको झकझोरा, घोडे को आगे बढाया और अनदेखती आँखो से मैदान, धूल से नहाई सडक, पीली टालो, हरे-भरे खेतो और पकी हुई जुआर पर निगाह जमाई।

और, फिर ग्रिगोरी के घर पहुँचते ही सजा-बजा क्रिस्तोन्या आ धमका। गरमी के बावजूद उसके बदन पर अंग्रेजी कपडे की ट्यूनिक और चौडी, घुडसवारी वाली बिरजिस नजर आई। खुद ऐश के एक बडे बेत का सहारा लेता हुआ अन्दर आया और ग्रिगोरी का अभिवादन करने के बाद बोला—"तुम्ही से मिलने आया हूँ। मैंने सब-कुछ सुन लिया है। तुम पर तो मुसीबत ही टूट पडी है।···यानी, नताल्या-मिरोनोवना को दफनाया जा चुका है न ?"

"तुम मोर्चे से कैसे वापस आए ?" ग्रिगोरी ने उसके प्रश्न की अनसुनी करते हुए पूछा, और खुशी से खिलकर उसके भद्दे शरीर और जरा-सा झुके हुए बदन को नीचे से ऊपर तक देखा।

"मुझे गोली लग गई थी। सो, ठीक-ठाक होने के लिए घर भेज दिया गया हूँ। दो गोलियाँ एक साथ मेरे पेट के आरपार हो गई थी। लगता है कि वे अब भी अतडियो के पास कही है··ऐसी-तैसी मे जाएँ। इसीलिए तो बेत इस्तेमाल कर रहा हूँ··"

"कहाँ यह सब हुआ ?"···

"बालाशोव के पास।"

"तो, बालाशोव ले लिया तुम लोगों ने ?"

"हमने हमला किया था···सो, बालाशोव भी ले लिया और पोवो-रीनो भी। मैं तो वही था।"

"खैर, तो अब यह बतलाओ कि इन दिनो तुम किस रेजीमेंट मे हो, और गाँव के और कौन-कौन लोग तुम्हारे साथ हैं ? बैठो··· सिगरेट पिओगे ?"

ग्रिगोरी को एक नया चेहरा देखकर और परिवार के बाहर के किसी आदमी से बाते कर बडी खुशी हुई, क्योकि उस आदमी का उसकी अपनी यातना से किसी तरह का कोई सम्बन्ध नही था। क्रिस्तोन्या ने स्थिति समझी और अपनी हमदर्दी गैर ज़रूरी मानी। इसीलिए उसने धीरे-धीरे विषय बदला और बालाशोव के लिए जाने और अपने ज़ख्मी होने की कहानी कहने लगा।

फिर, एक लम्बी-चौडी सिगरेट के कश लेता हुआ, भारी, मोटी आवाज मे बोला—"हम सूरजमुखी के पौधो के बीच से पैदल बढे। लाल फौजी अपनी मशीनगनो और तोपो से हम पर आग बरसाते रहे। मशीनगनें तो उन्होने इस्तेमाल की ही। वैसे मुझे पहचानना कोई मुश्किल तो है नही। मै चाहे जितना झुकूँ। नज़र किसी को भी दूर से ही आ सकता हूँ। यही वजह है कि उन्होने यानी गोलियो ने भी मुझे आसानी से खोज लिया और अपना निशाना बना लिया। कहने को कह सकते हैं कि पूरे कद ने खासी मदद की, वरना कही नाटा होता तो खोपडी छलनी हो जाती। पेट मे लगी, तो अन्दर की हर चीज़ जैसे खौल उठी। दोनो गोलियाँ गरम ऐसी थी, जैसे कि भट्ठी से निकली चली आ रही हो···भाड मे जाएँ ! मैंने पेट पर ठीक जगह हाथ रखा, तो वे, खाल के नीचे, आस-पास लुढकती लगी। मैंने उन्हे उँगलियो से टटोला और चल दिया। फिर सोचा—यह मज़ाक गदा है। भाड मे झोको ऐसे मज़ाक को और एक जगह जम जाओ, नही तो कोई और तेज़ गोली सनसनाती आएगी और सीने के आर-पार हो जाएगी। सो, मैं वही लेट गया और उन पर—मेरा मतलब गोलियो पर रह-रह कर हाथ रखता रहा। वे अब भी जहाँ-की-तहाँ एक-दूसरे से सटी लगी।

मैंने साँस ऊपर खीचनी शुरू की। ख़याल आया—अगर ऐसा न किया, तो गोलियाँ पेट मे धँसती चली जाएँगी—फिर—फिर क्या होगा ?··· अगर वे अतडियो के बीच जा फँसी तो डॉक्टर कैसे निकालेगा उन्हे ?··· फिर यह भी है कि उनसे मुझे कुछ आराम तो मिलेगा नही···हर आदमी के बदन के अन्दर पानी-ही-पानी होता है। और मेरे बदन के अन्दर भी पानी-ही-पानी है, इसका मतलब यह है कि गोलियाँ मेरे पेट-भर मे उतराती फिरेंगी, और मैं चलूंगा तो खम्भे मे लगे घण्टे की तरह कभी इधर को जाऊँगा तो कभी उधर को। इससे तो मेरा मामला ही गडबडा जाएगा। ·· बस तो लेटे-ही-लेटे मैंने सूरजमुखी का एक फूल तोडा और उसके लिए कुटकुटाने लगा, पर मन का डर न निकला। इस बीच हमारी फौज आगे निकल गई। खैर, तो ··जब बालाशोव लिया गया तो मैं किसी तरह वहाँ पहुँच गया। उस वक्त मै तीशान्का के अस्पताल मे था। वहाँ का डॉक्टर गौरैया की तरह ऐठू था। उसने मुझसे पूछा·· 'गोलियाँ काटकर निकाल दूं ?' पर मैं कुछ तय न कर पाया, सोचता पडा रहा और मैने सवाल के बदले सवाल कर दिया—'हुजूर, क्या ऐसा मुमकिन है कि ये गोलियाँ अन्दर-ही-अन्दर गायब हो जाएँ ?' जवाब मिला—'नही, ऐसा नही हो सकता।' उस पर मैंने मन-ही-मन इरादा किया—'तब कटवाकर इन्हे नही निकलवाऊँगा···ये सब चार सौ बीसियाँ मुझे पता हैं। इसके बाद बैरग रेजीमेट को भेज दिया जाऊँगा।'·· बस, तो मैंने डॉक्टर से कहा—'नही, कटवाकर गोलियाँ मुझे नही निकलवानी···यह तो पेट के अन्दर ही अच्छी···मैं इन्हे घर ले जाकर अपनी बीवी को दिखला दूंगा··· इनकी वजह से मुझे परेशानी नही है···इनमे कुछ वज़न थोडे ही है।' फिर तो डॉक्टर मुझ पर खूब बरसा। उसने मुझे जी भर गालियाँ दी। मगर. एक हफ्ते की बीमारी की छुट्टी देकर घर आने की इजाज़त दे दी।"

ग्रिगोरी यह कला-हीन कहानी सुनते-सुनते मुस्कराने लगा। पूछा—"किस रेजीमेट मे हो ?"

"चौथी में।"

"गाँव के और कौन-कौन लोग तुम्हारे साथ हैं ?"

"बहुत-से लोग हैं। अनीकुश्का, बेस्लेबनोव, अकीम-कोलोवीदिन,

स्योमका मीरोशनिकोव, ग्रौर तीखोन गोरबाचेव, वगैरा-वगैरा।"

"ग्रौर, हाल क्या है इन कज्जाको का ? वे किसी तरह का शिकवा-शिकायत तो नही करते ?"

"लगता है कि वे सभी फौजी ग्रफसरो से ऊब गए हैं। ऐसे सुग्रर लोग रख दिए गए है हमारे साथ कि उनके साथ काम चलाना मुश्किल है। ग्रौर, हैं भी सब-के-सब रूसी। उनमे कज्जाक एक नही है।"

ग्रौर बातें करते-करते क्रिस्तोनिया ने ग्रपनी ट्यूनिक की छोटी ग्रास्तीन खीची, उसे गौर से देखा ग्रौर ग्रपनी ग्रग्रेजी बिरजिस पर इस तरह हाथ फेरा, जैसे कि ग्रपने बदन पर ऐसे बेशकीमती कपड़े होने का उसे खुद यकीन न हो।

फिर, विचारो मे डूबते हुए बोला—"तुम जानते हो, मुझे ग्रपने पैर के लायक जूते नही मिले·· ब्रिटेन मे रहने वालो के पैर इतने बडे नही होते।···हम लोग तो गेहूँ बोते ग्रौर गेहूँ खाते हैं, मगर मुझे लगता है कि इगलैड मे हालत रूस की-सी है। वहाँ सिर्फ राई खाई जाती है। ग्रौर ग्रगर लोग राई खायेगे तो उनके पैर इतने बडे कहाँ से होगे ? उन्होने हमारी पूरी स्क्वैड्रन के लिए जूते-कपडे ग्रौर महकदार सिगरेटें दी···मगर यह है कि चीज एक ग्रच्छी नही निकली।"

"उन चीजों मे बुराई क्या है ?"

"बुराई यह है कि बाहर से देखने मे तो हर चीज ठीक लगती है, पर ग्रन्दर से चौपट होती है।" क्रिस्तोनिया मुस्कराया—"तुम्हें पता नही है, कज्जाक फिर लडाई से छुटकारा पाना चाहते हैं। इसलिए इस लडने-भिडने से कोई खास नतीजा निकलेगा नही। वे लोग खोपर के इलाके से ग्रागे बढने को तैयार नही है।"

ग्रौर इस बातचीत के बाद ही क्रिस्तोनिया जाने को हुग्रा, ग्रौ ग्रिगोरी ने उसे विदा करने के बाद मन-ही-मन फैसला किया—"मैं एक हफ्ते बाद मोर्चे पर वापस चला जाऊँगा, वरना यहाँ सदा ग्रौर घुटन से जान चली जाएगी···।"

ग्रिगोरी शाम तक घर मे रहा। इस बीच ग्रपने बचपन की या कर उसने मीशात्का को सरकडो की हवाई चक्की बना दी ग्रौर घो

के बालो से गौरैया फँसाने का जाल बुन दिया। बेटी के लिए उसने घूमने वाले पहियो की एक छोटी गाडी तैयार कर दी और उसकी छुरी तरह-तरह के अजीबोगरीब रगो से रग दी। उसने चिथडो से एक गुडिया बनाने की भी कोशिश की। लेकिन बात कुछ बनी नही, और दून्या को हाथ लगाना पडा। तब कही जाकर गुडिया तैयार हुई।

वैसे ग्रिगोरी ने बच्चो की तरफ इतना ध्यान तो अब तक कभी दिया था नही, इसलिए पहले तो बच्चो को उसके स्नेह पर विश्वास नही हुआ, परन्तु बाद मे उसके लिए पल-भर को भी उनसे अलग होना दुश्वार हो गया। सो एक दिन शाम को ग्रिगोरी खेत जाने को बाहर निकला तो मीशात्का आँखे भरकर बोला—"तुम हमेशा ऐसा ही करते हो। यानी घर आते देर नही होती कि फिर हमे छोडकर चल देते हो ··अपना जाल, अपनी हवाचक्की और अपनी गाडी सब-कुछ ले लो···हमे नही चाहिये··।"

इस पर ग्रिगोरी ने अपने बेटे के नन्हे-मुन्ने हाथ अपनी बड़ी-बडी मुट्ठियो मे कसे और बोला—"अगर तुम्हे ऐसा लगता है तो आओ समझौता हो जाए···देखो तुम हो कज्जाक, इसलिए तुम मेरे साथ घोड़े पर सवार होकर खेत चलोगे। वहाँ हम लोग जौ काटेंगे और जमा करेंगे और तुम बाबा के साथ कटाई की मशीन पर बैठोगे। घोडो को हाँकोगे और घास मे टिड्डे ढूँढोगे। तरह-तरह की चिडियाँ तुम्हे दर्रों मे नजर आयेंगी। लेकिन पोल्युशका दादी के साथ घर पर रहेगी। उसे बुरा नही मानना चाहिए। वह लडकी है न, तो उसका काम है फर्श साफ करना और दादी के लिए दोन से छोटी बाल्टी मे पानी लाना। औरतें घर के काम के लिए बनी होती हैं। तो, तुम चलोगे ?"

"हाँ···जरूर चलूँगा।" मीशात्का ने प्रसन्नता से भरकर कहा और खुशी से उसकी आँखें चमकने लगी।

"तुम कहाँ ले जा रहे हो इसे ?" इलीनीचिना ने अपनी ओर से आपत्ति की—"पता नही तुम्हारे दिमाग मे है क्या ? आखिर कहाँ सोएगा यह, और कौन वहाँ फ़िक्र करेगा इसकी ? वहाँ मैदान मे बच्चा

कही घोडो के बहुत पास चला गया तो वे दुलत्ती चलाकर इसे ढेर कर देगे। और यह भी न हुआ तो कही-न-कही कोई साँप डस लेगा इसे।" फिर दादी पोते की तरफ मुडी—"बेटे, तुम पापा को अकेले जाने दो··· तुम साथ न जाओ···यही रहो।"

लेकिन मीशात्का की आँखे क्रोध मे जलने लगी और उनमे चिन-गारियाँ फूटने लगी। बिल्कुल यही हालत गुस्सा आने पर उसके बाबा पैन्तेली की होती थी। सो लडके ने मुट्ठियाँ मीची और आँसू से भर्राए हुए गले से ऊँची आवाज मे चीखा—"दादी, चुप रहो तुम! चाहे जो हो, मैं तो जाऊँगा···। दादी की बात मत सुनो, पापा!"

ग्रिगोरी ने हँसते हुए बेटे को गोद मे उठाया और इलीनीचिना को ढाढस बँधाया—"फिक्र मत करो। मैं इसे अपने पास सुलाऊँगा। घोडे को लगाम पकडकर मैदान तक ले जाऊँगा। इसे गिरने नहीं दूँगा। बस तुम इसके कपडे तैयार कर दो। और माँ, तुम डरो नही। इसे हर तरह ठीक-ठाक रखने और सही-सलामत कल शाम तक घर वापस ले आने का ज़िम्मा मेरा है।"

इस तरह ग्रिगोरी और मीशात्का मे दोस्ती बढी·····।

इस बार ग्रिगोरी पन्द्रह दिन तक तातारस्की मे रहा और इस बीच उसने अकसीनिया को सिर्फ तीन बार देखा। सो भी देखा तो क्या, झलक पाई। अकसीनिया ने अपने गँवारू दिमाग से भी चालाकी बरती और मुलाकात हर तरह बरकाई। उसने उसकी निगाह से दूर-ही-दूर रहना बेहतर समझा, औरत की तरह आदमी की मन स्थिति का सही अनुमान लगाया और अनुभव किया कि जरा-सी भी असावधानी या असामयिक प्रेम-प्रदर्शन से वह उसका जानी दुश्मन बन सकता है और उनकी अपनी मोहब्बत पर गहरा काला बादल छा सकता है। उसने प्रतीक्षा की कि पहले खुद ग्रिगोरी उससे मुँह खोलकर बोले। और ग्रिगोरी के खुद मुँह खोलकर बोलने का क्षण आया अपनी रवानगी के एक दिन पहले।

वह अनाज से भरी गाडी हाँकता काफी देर से घर लौट रहा था कि साँझ के धुँधलके मे, स्तेपी के बिलकुल पास वाली सडक पर उसकी

नज़र अकसीनिया पर पडी। अकसीनिया ने काफी दूर से ही उसको नमन किया और हलके से मुस्कराई। मुस्कान चुनौती और अर्थ से भरी लगी। ग्रिगोरी ने नमन का जवाब नमन से दिया और मुँह सिए-ही-सिए उसकी बगल से गुज़रना उसके लिए कठिन हो गया। तो अनदेखे ढग से रासें खीचते और घोडो की चाल धीमी करते हुए पूछा—"क्या हालचाल है ?"

"सभी-कुछ ठीक-ठाक है·· शुक्रिया, ग्रिगोरी···पैन्तेलेयेविच !"

"ऐसा भी क्या है कि कभी कही नज़र ही नही आती ?"

"बात यह है कि अकसर बाहर खेतो मे ही रहना पडता है। काम बहुत है और करने वाली एक मैं हूँ।"

पर, शायद मीशात्का के गाडी मे बैठे रहने के कारण न ग्रिगोरी ने घोडे रोके और न आगे बातचीत की। कुछ दूर निकल जाने के बाद पीछे से आवाज़ आई तो वह मुडा। अकसीनिया बाड के पास खडी दीखी।

"अभी तो रहोगे न ?" औरत ने गुलबहार की पखुड़ियाँ परेशानी से नोचते हुए पूछा।

"अब तो चला-चली ही समझो। कभी भी जा सकता हूँ।"

इस पर अकसीनिया क्षण-भर को ठिठकी, जैसे कि स्पष्टत: कुछ और पूछना चाहती हो। लेकिन, किसी कारणवश पूछा उसने कुछ नही। सिर्फ हाथ हवा मे लहराया और एक बार भी मुडकर देखे बिना, जल्दी-जल्दी साझेवाले खेत की तरफ बढ गई।

: १६ :

आसमान मे बादल घिरे रहे। पानी ऐसा बरसा जैसे कि बूँदे किसी चलनी से छनकर ज़मीन पर चली आ रही हो। और फिर स्तेपी मे चारो ओर बिखरे घास-पात और काँटो की झाडी-झाड़ो से एक तरह की जोत सी-फूटने लगी।

प्रोखोर को समय से पहले ही जो गाँव से मोर्चे के लिए रवाना होना पड़ा तो उसका मन गुस्से और नफ़रत से भर उठा। वह रास्ते-

भर होठ सिए रहा और ग्रिगोरी से भी मुश्किल से ही बोला।

एक खास गाँव के पार इन्हे नज़र आए तीन घुड़सवार कज्ज़ाक। ये कज्ज़ाक एक कतार मे, घोडो को एड लगाते बडे जोश मे आपस मे बाते करते सुन पडे। इनमे सयानी उम्र के लाल दाढी और घर के बने भूरे किसानी कोटवाले एक व्यक्ति ने ग्रिगोरी को पहचाना और अपने साथियो से ज़ोर से कहा— 'लेकिन यह तो मेलेख़ोव है, भाइयो!' फिर ग्रिगोरी के बराबर आने पर उसने अपने ऊँचे, कुम्मैत घोडे की रास खीची और चिल्लाकर बोला—"सलाम ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच!"

"सलाम।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया और याद करने लगा कि इस लाल दाढी और उदास चेहरे वाले व्यक्ति को देखा है तो आखिर मैंने कहाँ देखा है? पर, याद उसे कुछ नही आया। परन्तु यह बात जल्दी ही साफ हो गई कि यह कज्ज़ाक अभी-अभी कॉरनेट बना है और आम कज्ज़ाक फौजियो से अपने को अलग रखने के लिए इसने अपने किसानी वाले मामूली कोट के कधों पर पट्टियाँ टाँक ली है।

"आप मुझे नही पहचानते?" उसने अपना घोडा ग्रिगोरी के घोडे के ठीक पास तक लाते, अपना हाथ फैलाते और ग्रिगोरी के चेहरे पर वोदका की बास मे बसी साँसें छोडते हुए पूछा। इसके साथ ही इस नए-नए अफसर का चेहरा बेवकूफी से भरे आत्म-सन्तोष से चमक उठा, उसकी छोटी-छोटी नीली आँखें खुशी से चमकने लगी और लाल मूछो के नीचे होठो पर हँसी दौड गई। ग्रिगोरी को इस सैनिक अधिकारी को इस बेहूदे किसानी कोट मे देखकर खासा मज़ा आया और अपनी मुस्कान को छिपाने की कोई भी कोशिश न करते हुए उसने जवाब दिया—"नही, मैं तुम्हे नही पहचानता। शायद पिछली मुलाकात के वक्त तुम आम फौजी थे। क्या अभी इधर कॉरनेट बनाये गए हो?"

"आपका निशाना बिलकुल ही सटीक बैठा। अभी एक हफ्ते पहले ही यह ओहदा मिला है मुझे! हमारी मुलाकात कुदिनोव की स्टाफ-मीटिंग के वक्त हुई थी मेरा खयाल है कि 'माँ मेरी दिवस'[1] के आसपास···।

---

१ ईसा की माता का दिवस-पर्व—२५ मार्च।

उस वक्त ग्रापने मुझे एक छोटी-सी मुसीबत से बचाया भी था··· ग्रापको याद ग्रा रहा है कुछ···? ऐ···त्रिफॉन···जरा धीरे ले चलो ·· मैं ग्रभी पकड लेता हूँ तुम्हे।" उसने कुछ दूर पर रुके दूसरे दोनो कज्ज़ाको से चिल्लाकर कहा।

ग्रिगोरी को बड़ी मुश्किल से इस लाल बालो वाले कॉरनेट से ग्रपनी पिछली भेट का ध्यान ग्राया। उसे उस समय के कुदिनोव के वाक्यो की भी याद ग्राई—"इसका निशाना चूकता कभी नही। यह कुलाचें भरते खरगोश को भी गोली मार सकता है···लडाई के मामले मे बिलकुल शैतान समझो इसे···स्काउट भी शानदार है ··मगर ग्रक्ल से बच्चा है बिलकुल···!" इस कॉरनेट ने विद्रोह के समय एक स्क्वैड्रन की कमान सम्हाली थी ग्रौर उस सिलसिले मे इससे कोई बहुत बडी चूक बन पडी थी। इस पर कुदिनोव ने सख्त सज़ा देनी चाही थी। लेकिन ग्रिगोरी ने बीच मे पडकर इसे माफ करवा दिया था ग्रौर वह स्क्वैड्रन-कमाडर बना रह गया था···।

"मोर्चे से ग्रा रहे हो ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"जी हाँ, नोवोखोपेरस्क से छुट्टी पर ग्रा रहा हूँ। ग्रौर ग्रपने नाते-रिश्तेदारो से मिलने के लिए कोई सौ वर्स्ट का ग़ैर-ज़रूरी चक्कर काटा है मैंने। मेरी याददाश्त बुरी नही है। ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच···! बडी मेहरबानी होगी···मेरी मामूली-सी खातिर मंजूर कर ले···इन्कार न करें। मेरे थैले मे दो बोतलें सौ फीसदी शराब की है। ग्राइये, यही खोल लिया जाए उन्हे·· क्या राय है ?"

ग्रिगोरी ने बोतलें खोले जाने का प्रस्ताव तो बिलकुल ग्रस्वीकार कर दिया, पर उस व्यक्ति की एक बोतल की भेंट स्वीकार कर ली।

"ग्रापको होना चाहिए था वहाँ। कज्ज़ाको ग्रौर ग्रफसरो को सामान से लाद दिया गया बिलकुल।" कॉरनेट ने डीग मारते हुए ऐलान किया—"मै भी था बालाशोव मे। हमने जगह ली ग्रौर फिर सीधे रेलवे की ग्रोर बढ़े तो हमें सारे रास्ते ट्रकों से भरे मिले। एक ट्रक में चीनी नज़र ग्राई, तो एक ट्रक मे वर्दियाँ ही वर्दियाँ, ग्रौर एक ट्रक में तमाम तरह-तरह की चीज़ें। कुछ कज्ज़ाक तो चालीस जोड़े तक

कपडे ले गये । और बाद मे हम गए और हमने यहूदियो को झकझोरा ···आप होते तो हँसते···हमारी स्क्वैड्रन मे यहूदियो का एक शिकारी निकला···उसने अट्ठारह घडियाँ जुटाई । इनमे दस सोने की थी । फिर, उसने कुल की-कुल अपने सीने पर यो लटका ली, जैसे कि वह उस इलाके का सबसे अमीर सौदागर हो । और अँगूठियाँ और ब्रैसलेट जितने उसके पास थे, कोई गिनना उन्हे । हर उंगली पर दो-दो या तीन-तीन···।"

ग्रिगोरी ने उस फौजी के फूले हुए थैले की ओर इशारा किया और पूछा—"और उसमे क्या भर रखा है तुमने ?"

"इसमे···इसमे सभी तरह की चीजें हैं ।"

"यानी लूट मे हिस्सा तुमने भी लिया है ?"

"इसे लूट भला क्यो कहते हैं आप···हमने किसी को लूटा-खसोटा नही···हमने तो कानूनी तरीके से जीता सब-कुछ । हमारे रेजीमेंटल-कमाडर ने कहा—'शहर ले लो···और दो दिन तक यह हर तरह तुम्हारा रहेगा···।' तो क्या मैं दूसरो से उन्नीस हूँ कुछ ? बस तो, क़ानूनी ढग से जो कुछ मेरे हाथ लग गया, मैंने ले लिया । दूसरो ने तो इससे कही बदतर किया ।"

"क्या मुबारक उँगलियाँ हैं !" ग्रिगोरी ने उस कॉरनेट को नफरत से घूरकर देखा और बोला—"तुम्हारी तरह के लोग बडी सडको के पुलो के नीचे मारे-मारे फिरते हैं···मगर तुम तो लडते नही । तुमने लड़ाई को लूटमार का वसीला बना लिया है···उफ···कमीने कही के ! एक नया धधा मिल गया है तुम्हे । लेकिन, तुम्हे खयाल नही आता कि एक-न-एक दिन तुम्हारी और तुम्हारे कमाडर की ज़िन्दा खाल खीच ला जाएगी ?"

"किसलिए ?"

"इसी सबके लिए ।"

"मगर, कौन खीचेगा खाल ?"

"तुमसे बडा अफ़सर ।"

व्यक्ति व्यंग्य से मुस्कराया और बोला—"लेकिन, उनमे कोई

किसी को कहने लायक नही है। हमने तो सिर्फ अपने थैलो या अपनी गाडियो मे चीजे भरी है, मगर उन्होने तो रेलगाडियो की रेलगाडियाँ दुनिया-भर के सामान से लाद-लादकर रवाना की है।"

"तुमने खुद देखा है उन गाडियो को ?"

"देखा है। सामान से लदी ऐसी ही एक रेलगाडी के साथ तो खुद मैं यारीज़ेन्स्काया गया हूँ। उसमे डिब्बे-के-डिब्बे भरे थे चाँदी की तश्तरियो, प्यालो और चम्मचो से। कुछ फौजी अफसर अपने घोड़े दौडाते आए और गरजकर बोले—'क्या है इन डिब्बो मे ? दिखलाओ हमे !' पर, जब मैने उन्हे बतलाया कि यह जनरल फलाँ का निजी सामान है तो वे चले गये हाथ झुलाते।"

"किस जनरल का सामान था वह ?" ग्रिगोरी ने आँखे सिकोडते और रासो के बीच बेसब्री से उगलियाँ चलाते हुए पूछा।

फौजी शरारत से मुस्कराया और बोला—"नाम तो मैं भूल गया। ···क्या था भला ? ··अरे भाई, आ न याद···! नही, उतर गया दिमाग से···खयाल नही आता ! मगर, आप बेकार ही उबल रहे है, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच ! ऊपरवाला जानता है कि सभी यही कर रहे हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, अगर दूसरे भेडिये हैं, तो मै तो मैमना हूँ सिर्फ। मैंने तो नाम-भर को माल उडाया, पर दूसरो ने तो बीच सडक मे लोगो के कपडे-लत्ते लूटे, उन्हे मादरज़ात नगा किया, और जहाँ भी यहूदी लडकियाँ हाथ लगी, उनकी ज़बरदस्ती इज़्ज़त ली। लेकिन, मैंने ऐसा कुछ नही किया। मेरी कानूनी बीवी है और क्या बीवी है ! औरत नही है, बिल्कुल स्टैलियन है !·· नही, कोई वजह नही है कि आप मुझ पर नाराज़ हो। वैसे, रुकिए, ज़रा तो बतलाइए कि आप जा कहाँ रहे हो ?"

ग्रिगोरी ने उस फौजी की तरफ़ झुककर उदास मन से विदा ली, अपने घोड़े को दुलकी मे डाला और प्रोखोर से बोला—"आओ·· बढाओ घोड़ा।"

आगे बढने पर ग्रिगोरी और प्रोखोर को एक-एक दो-दो या ज़्यादा की गिनती मे और कज़्ज़ाक मिले। सभी घोड़ो पर सवार छुट्टियों पर जाते दीखे। अक्सर बगल से गुज़री गाडियाँ। इन गाडियो को दो-दो

घोडे खीचते। इन पर लदा सामान तिरपाल या कम्बलो से ढँका और कायदे से बँधा बँधाया रहता। इनके पीछे-पीछे रहते खाकी ट्यूनिको वाले घुडसवार फौजी। वे अपनी रकाबो के बल करीब करीब खडे रहते। उनके गर्द से भरे और धूप से सँवराए चेहरो से ज़िन्दादिली और खुशी टपकती। पर ग्रिगोरी पर नज़र पडते ही वे घोडो को पूरी रफ़्तार से दौडाने लगते, सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती, हाथ, जैसे कि किसी कमान पर, टोपियो के सिरो तक उठ जाते और फिर उनके और ग्रिगोरी के बीच काफी फासला हो जाने पर ही उनके मुँह से बोल फूटता।···

ऐसे मे प्रोखोर की निगाह एक बार लूट के माल से लदी एक गाडी के साथ के घुडसवारो पर पडी। दूर से ही मज़ाक के लहजे मे बोला—"सौदागर चले आ रहे हैं।"

मगर, छुट्टी पर जाते जो भी लोग ग्रिगोरी को राह मे मिले, वे सभी लूट का माल लादे जा रहे थे, यह कहना गलत होगा।···

ग्रिगोरी एक गाँव के कुएँ पर घोडो को पानी पिलाने के लिए रुका, तो बगल के अहाते से उभरते गाने के स्वर उसके कानो मे पड़े। स्वरो के निखार, बहार और सफाई से पता चलता कि गानेवाले जवान कज़्ज़ाक है।

"लगता है, किसी फौजी को रुख्सत किया जा रहा है!" प्रोखोर ने पानी से भरी बाल्टी कुएँ से खीचते हुए कहा। पिछली शाम जो बोतल खाली हुई थी, उसने शराब की तलब जगा दी थी। इसलिए घोडो को जल्दी-जल्दी पानी पिलाते हुए प्रोखोर ने हँसते हुए तजवीज़ की—"क्या खयाल है, पैन्तेलेयेविच? हम लोग भी चलें वहाँ? शायद रास्ते के लिए एक बोतल मिल ही जाए। झोपड़ी पर छानी तो सरपत की है, मगर घर किसी अमीर आदमी का मालूम होता है।"

ग्रिगोरी राज़ी हो गया कि ठीक, चलो, देखा जाए कि जवान कज़्ज़ाक को किस तरह अलविदा कही जा रही है! बस तो, बाड से घोडे बाँधने के बाद, वह प्रोखोर के साथ अहाते मे घुसा। शेड के नीचे चार गोल नाँदो के पास, चार कसे हुए घोड़े खडे नज़र आए। एक लड़का जई लेकर खत्ती से बाहर निकला। उसने ग्रिगोरी को एक निगाह

देखा और हिनहिनाते घोडो की तरफ बढा। झोपडी के कोने से सगीत के स्वर हवा की लहरो पर लहराते आए। कोई ऊँची, गूँजती आवाज मे गाता लगा—

"राह कि उस पर कदम धरा था।

नही किसी ने··

नही किसी ने···

एक मोटी, घुआँई-सी आवाज़ ने अतिम शब्द दोहराये और फिर गाने वाले के स्वर मे अपने स्वर मिलाये। इसके बाद और लोगो ने साथ दिया। इस तरह गीत का शानदार प्रवाह चलता रहा और अपना विस्तार करता रहा। वातावरण मे उदासी घुलती रही। ग्रिगोरी ने गानेवालो के रस मे विघ्न न डालने के विचार से प्रोखोर की आस्तीन पर हाथ रखा और धीरे से बोला—"ज़रा रुको ··उनकी निगाह अभी तुम पर न पड़े···गाना खत्म हो जाने दो।"

"यहाँ कोई रुख्सत-वुख्सत नही हो रहा। येलान्स्काया के कज़्ज़ाक तो हमेशा इसी तरह गाते है। लेकिन, ये शैतान के बच्चे गा लेते हैं, यह कौन कम है!" प्रोखोर ने सराहना-से भरकर कहा, परन्तु साथ-ही-साथ क्रोध से ज़मीन पर थूका भी, जैसे कि शराब की अपनी उम्मीद उसे खाली जाती लगी हो।

दूसरी ओर, सुरीली आवाज़ ने एक खास कज़्ज़ाक की ज़िन्दगी की कहानी का अन्त स्वरो मे बुन दिया। कज़्ज़ाक ने लडाई के मैदान मे अपनी इज़्ज़त के साथ खिलवाड किया था—

राह कि उस पर कदम धरा था नही किसी ने···

और, न घोडे का साया ही कभी

वहाँ पर कही पडा था···

लेकिन, एक बार क्या हुआ कि कज़्ज़ाको की

रेजीमेट के लोग उधर से होकर निकले···

वे सब घोड़ो पर सवार थे,

और कि उनके पीछे-पीछे, सधा और मँजा हुआ भी, घोड़ा सरपट दौड़ रहा था—

उसकी रग-रग मे
बहता था खून न कोई मामूली-सा
बल्कि आग की आग रवाँ थी
और, झूलती थी बाजू से
शानदार, भडकीली काठी
और रेशमी रासें उसकी
और लगाम तक लटक रही थी···
उसके पीछे चला आ रहा था भागा कज्ज़ाक
जवानी का पुतला-सा
गला फाडकर चीख रहा था
'रुको···जरा रुक जाओ ' मेरे वफादार अलबेले घोडे ··
आज जरूरत मुझे तुम्हारी,
ऐसे मे न मुझे छोड़ो तुम···
वरना इन चेचनो का यह गुस्सा मुझको निगल जायेगा ··'

ग्रिगोरी झोपडी की पुती हुई मुडेर के पास, गीत के जादू से बँधा-सा खडा रहा। इस बीच न घोडे की हिनहिनाहट उसके कानो मे पडी और न सडक से गुज़रती गाडियो की खडखडाहट उसने सुनी।

गीत समाप्त हुआ तो एक गानेवाला खाँसा और बोला—

"यह हुआ गाना। पूरे मन से गाया हमने ! औरतो, इसके बदले मे तुम्हे फौजियो के रास्ते के लिए कुछ और देना चाहिए। जहाँ तक खाने का सवाल है, यहाँ हमने भरपेट खाया ··ईसा का लाख-लाख शुक्र··· मगर राह मे मुँह मे डालने को हमारे पास कुछ भी नही है···"

ग्रिगोरी ने सगीत का जादू काटा और टहलता हुआ नुक्कड पर आया। यहाँ दरवाजे के नीचे की आखिरी सीढी पर बैठे दीखे चार कज्ज़ाक और उनके चारो तरफ नज़र आई आसपास की औरतो और बच्चो की भीड।

ये सभी लोग आह भरते, सिसकते और रूमालो के सिरो से अपने-अपने आँसू पोछते रहे। और ग्रिगोरी सीढियो पर चढा तो लम्बे कद, काली आँखो और देव-मूर्ति-सुलभ सौन्दर्य के मुरझाये हुए ठस चेहरेवाली

एक बुढिया लम्बी-लम्बी साँसो के बीच कहती सुन पडी—"कैसा अच्छा गाते हो तुम ! कितना दर्द है तुम्हारे गाने मे, बेटो ! मेरा खयाल है कि तुम सबकी माँएँ होगी और इनमे से हर माँ लडाई के मैदान मे अपनी जिन्दगी से खेल रहे अपने बेटे की बात सोच-सोचकर घुली जा रही होगी ·· रो-रोकर अधी हुई जा रही होगी ।"

इसी बीच ग्रिगोरी ने भीड का अभिवादन किया तो बुढिया की पीली-सफेद आँखे बिजली की तरह कौंध उठी । वह सहसा ही गुस्से से भर उठी । बोली—"और, हुजूर, आप इन फूलो को मौत का रास्ता दिखलाते है ··है न ? आप इन्हे दूर-दूर ले जाते है और ले जाकर लडाई के मैदान मे कटवा देते हैं ।"

"हम खुद भी तो मारे जाते है, बूढो-माँ !" ग्रिगोरी ने भावो मे डूबे-ही-डूबे कहा ।

कज्जाको ने एक अजनबी अफसर को वहाँ देखा तो फुर्ती से उछल-कर खडे हो गए, सीढियो पर रखी तश्तरियाँ बचे-खुचे खाने-सहित एक तरफ खिसका दी, ट्यूनिके दुरुस्त कर ली और राइफलो की पट्टियाँ और अपनी पेटियाँ कस ली । वे तो राइफल कधे पर चढाए-ही-चढाए गाते रहे थे । उनमे से सबसे सयाने कज्जाक की उम्र पच्चीस साल से अधिक न थी···।

"कहाँ के हो तुम लोग ?" ग्रिगोरी ने फौजियो के ताजा, जवानी से भरे चेहरो पर नज़र दौडाते हुए पूछा ।

"हम लोग एक रेजीमेट के है ·" चपटी नाक वाले एक कज्ज़ाक ने यो ही ढीले-ढाले ढग से जवाब दिया । उसकी आँखो से मजाक टपका ।

"मेरा मतलब कि तुम पैदा कहाँ हुए थे ··रहने वाले कहाँ के हो ? यहाँ के रहनेवाले तो नही हो न ?"

"हम लोग येलान्स्काया के हैं और इस वक्त छुट्टी पर जा रहे हैं, हुजूर !"

ग्रिगोरी ने गायक को आवाज़ से पहचाना और मुस्कराते हुए पूछा—"तुम्हीं तो गा रहे थे न ?"

"जा हाँ।"

"क्या कहने हैं···तुम्हारी आवाज बहुत ही अच्छी है। मगर, तुम गा क्यो रहे थे? खुशी के लिए? नशे मे तो तुम मालूम होते नही!"

गर्द से नहाये, चौडे माथे और तमतमाए हुए साँवले गालो वाले एक लम्बे, कम-उम्र फौजी ने बुढिया की तरफ तिरछी नज़र से देखा और परेशानी से मुस्कराते हुए, सकोच के साथ उत्तर दिया—"क्या खयाल है आपका? कौन-सी खुशी हो सकती है हमे? जरूरत है कि हमसे गवा भी लेती है। इन इलाकों मे ज़िन्दगी कुछ यो ही है। लोग कायदे से खिलाते-पिलाते नही · एक टुकडा रोटी दे दी तो दे दी, और बस! इसलिए हमे गाने की सूझती है! गाना छेडते ही सभी औरतें दौडी चली आती हैं। फिर हम दर्द से भरी कोई तान छेड़ देते हैं और इस तान का औरतो के दिलो पर बडा असर पडता है। इसके बाद वे चरबी या हडिया-भर दूध या कोई दूसरी अच्छी चीज़ खाने को ला देती है···

"हम तो एक तरह के फकीर है, कैप्टन ··गाते है और खैरात जुटाते हैं!" गायक ने अपने साथियो की तरफ देखकर आँख मारते हुए कहा। आँखे परिहास से सिकुड उठी।

एक कज़्ज़ाक ने एक चिकटहा कागज़ अपनी सीने वाली जेब से निकाला और ग्रिगोरी की तरफ बढाते हुए बोला—"यह है हमारी छुट्टी का पर्चा।"

"मुझे भला इसकी क्या जरूरत?"

"शायद आपका खयाल हो कि हम भाग रहे हैं।"

'ठीक है···इसे तो मुठभेड होने पर सजा देने वाली फौजी टुकडी को दिखलाना।" ग्रिगोरी ने थोडा खीजते हुए कहा। लेकिन इस पर भी उनसे अलग होने के पहले सलाह देते हुए बोला—"तुम्हे चाहिये कि तुम रात मे मजिल तय करो और दिन मे कही-न-कही टिक रहो। यह क़ागज़ बिल्कुल बेकार है। देखना कही ऐसा न हो कि इसकी वजह से कही किसी मुसीबत मे फँस जाओ। इस पर मुहर लगी है?"

"हमारी स्क्वैड्रन के पास मुहर नही है।"

"खैर तो ख़याल रखो और काल्मीको के बेतो से अपनी खाल उधड़वाने का इरादा न हो तो मेरी सलाह पर चलो।"

गांव के बाहर, कोई तीन वर्स्ट के फासले पर, सडक के सिरे तक फैले छोटे जगल के पास ही ग्रिगोरी को फिर दो घुडसवार अपनी ओर आते दीखे। ये लोग ठिठके, एक क्षण तक घूरते रहे और फिर तेज़ी से मुडकर जगल मे घुस गये।

"लगता है कि इनके पास कागजात नही है।" प्रोखोर ने दलील देते हुए कहा—"तुमने देखा कि ये लोग किस तरह मुडे और कैसे पेडो के बीच गायब हुए? शैतान के बच्चे, ये दिन मे घुडसवारी करते ही क्यो हैं?"

फिर तो ग्रिगोरी और प्रोखोर को दिन मे कितने ही ऐसे लोग मिले, जिन्होने इन पर नजर पडते ही अपने घोडे मोडे और फिर कही छिप रहने की हडबडी मे अपने हाथ-पैर फुला लिये। होते-होते ऐसे ही एक सयानी उम्र का कज्जाक पैदल, चोरी-चोरी घर की तरफ बढता मिला। वह तो ग्रिगोरी को देखते ही सूरजमूखी के एक खेत मे धँस गया और सिरे पर खरगोश की तरह बैठ गया। ग्रिगोरी उधर से गुजरा तो प्रोखोर रकाबो के सहारे तना और चीखा—"ऐ·· देहाती··· इस तरह नही छिपा करते! तुमने सिर तो छिपा लिया है, मगर चूतड नज़र आ रहे है।"· और, फिर गरम होते हुए बोला—"सुनते हो·· बाहर आओ निकलकर···ज़रा कागज़ात तो दिखलाओ अपने!"

कज्ज़ाक उछलकर खडा हुआ और दोहरा होता हुआ सूरजमूखी के पौधो के बीच से भागा। प्रोखोर ठठाकर हँसा और उसने घोडा दौड़ाकर आदमी का पीछा करना चाहा, पर ग्रिगोरी ने उसे रोक दिया। "बेकार की बेवकूफी न करो! भाड़ मे झोको उसे! वह तो तब तक दौडता जाएगा जब तक कि बेदम होकर गिर नही पड़ेगा! हो सकता है कि डर के मारे मर तक जाये···"

"तुम बिलकुल ग़लत कह रहे हो···भेडिये के मेल से पैदा हुआ कुत्ता तक उसे पकड़ नहीं सकता। पूरे दस वर्स्ट तक वह साँस न

लेगा कही। तुमने उसे सूरजमूखी के बीच दौड़ते देखा ? पता नही कि ऐसे जमाने मे आदमी मे इतनी ताकत आती कहाँ से है ! इसके बाद प्रोखोर ने इन भागने वालो की कुछ आम बुराई की और फिर बोला—"कैसे गिरोह बनाकर, घोडो पर सवार होकर चलते हैं ! जैसे कि मटर हो, और बोरे से भरभराकर निकले चले आ रहे हों। ज़रा हालत सुधारो, पैन्तेलेयेविच, वरना मोर्चा सम्हालने को तुम्हारे और मेरे सिवाय और कोई बचेगा नही।"

फिर तो, ग्रिगोरी जितना आगे बढा, उतने ही अधिक प्रमाण दोन-सेना की अनैतिकता के मिले और तब मिले जब विद्रोहियो की कुमुक की सहायता से सेना ने उत्तरी मोर्चे पर बडी-से-बडी सफलताएँ प्राप्त की। मगर, इसके बाद सेना दुश्मन पर कोई बडा हमला करने और उसकी कलाई मरोडने की स्थिति मे ही न रही। और तो और, वह तो ऐसी भी न रही कि कोई बडा हमला हो तो उसका सामना तक कर सके।

जिन ज़िला-केन्द्रो और गाँवो मे अगले मोर्चे की रिज़र्व फौजी टुकड़ियाँ पडाव डाले रहती वहाँ अफसर बराबर शराब के नशे मे धुत मिलते। लूट के तरह्-तरह के माल से लदी मालगाडियाँ बोझ से जैसे कराहती, पर अभी तक मोर्चे के पिछले हिस्से की तरफ रवाना न हो पाती। किसी भी फौजी टुकडी मे साठ प्रतिशत से अधिक लोग न मिलते। कज़्ज़ाक बिना इजाज़त लिये छुट्टियो पर चल देते और स्तेपी का चक्कर लगानेवाली सज़ा देने वाली फौजी टुकड़ियाँ इस बाढ को किसी तरह रोक न पाती। सरातोव प्रान्त के अधिकृत गाँवो मे कज़्ज़ाक इस तरह व्यवहार करते, जैसे कि वे देश के बाहर हो और उन्होने वे इलाके जीत लिये हो। वे आम लोगो को लूटते, औरतो की ज़बरदस्ती इज़्ज़त उतारते, अनाज के भडार बरबाद कर देते और ढोरो को काटकर फेंक देते। सिर मुडे जवान और पचास साल से ऊपर की उम्र के लोग फौज मे शामिल किये जाते। आगे बढने वाली फ़ौजों मे लोग खुल्लमखुल्ला न लडने की बातें करते और वोरोनेज़ की तरफ़ बढ़ रही सेनाओं के लोग अफ़सरो का हुक्म मानने से साफ-साफ़

इन्कार कर देते। मोर्चे पर अफसरो के मारे जाने तक की अफवाहे जहाँ-तहाँ सुनाई पडती।···

ऐसे मे दोनो वक्त मिले कि ग्रिगोरी बालाशोव के पास के एक गाँव मे रात काटने को रुका। जरा ज्यादा पुरानी भर्ती के कज्जाको की चौथी रिजर्व स्क्वैड्रन और तगानरोग-रेजीमेट की इजीनियरो की एक कम्पनी वहाँ के सभी रिहायशी मकानो मे ठहरी मिली। नतीजा यह कि ग्रिगोरी को अपने लिए जगह खोजने मे काफी वक्त लगाना पडा। यो तो कई बार की तरह इस बार भी वह खेतो मे ही रात गुजार देता, पर हुआ यह कि इस बीच पानी बरसने लगा और ग्रोखोर मलेरिया के जोर से सिर से पैर तक काँपने लगा। इस तरह कोई छायादार जगह और जरूरी हो उठी।

गाँव के नुक्कड पर देवदार के पेडो से घिरे एक बडे मकान के पास तोप के गोले की शिकार एक बख्तरबन्द गाडी खडी नज़र आई। ग्रिगोरी बगल मे गुज़रा तो उसने उसके हरे बाजू पर अकित, अब तक स्पष्ट, शब्द पढे—'मौत ले जाए गोरे गलीजो को' और नीचे गाडी का नाम 'तेहा'। अहाते से बँधे घोडो की हिनहिनाहट और लोगो की बातचीत की आवाज़ कानो मे आई। घर के पीछे बाग मे अलाव दहकता और पेडो के हरे सिरो के ऊपर धुआँ लहराता नज़र आया। आग की रोशनी मे कज्ज़ाक अलाव के चारो ओर इधर-उधर आते-जाते दीखे। फूस और सुअर के बालो की जलायँध हवा मे लटकी-सी मालूम हुई।

ग्रिगोरी घोडे से उतर, घर के अन्दर गया, और लोगो से भरे नीची छतवाले कमरे मे घुसते हुए बोला—"कौन है इस घर का मालिक ?"

"मैं हूँ मालिक···क्या चाहिए आपको ?" स्टोव की टेक लगाकर बैठे, एक मोटे-से किसान ने मुडकर ग्रिगोरी की ओर देखा, लेकिन अपनी जगह से टस-से-मस न हुआ।

"हम रात बिता सकते है यहाँ ··दो आदमी है ?"

"तरबूज़ मे जैसे बीज भरे रहते हैं, वैसे ही यहाँ लोग पहले से ही भरे हुए हैं"। बेंच पर लेटे एक सयानी उम्र के कज्ज़ाक ने ज़रा सख्ती

से जवाब दिया ।

"मुझे तो कुछ नही, मगर यहाँ जगह बिल्कुल नही है।" मकान-मालिक ने क्षमा माँगते हुए कहा ।

"जगह तो हम खुद बना लेंगे···मगर बरसात मे बाहर तो नही रह सकते न !" ग्रिगोरी ने आग्रह किया—"मेरे साथ मेरा अर्दली है और वह बीमार है ।"

बेंच पर लेटा कज्ज़ाक बुदबुदाया और ज़मीन पर पैर गिराते और ग्रिगोरी की तरफ घूरकर देखते हुए, बिल्कुल दूसरे ही लहज़े मे बोला—"हुजूर, दो छोटे-छोटे कमरो में हम चौदह आदमी हैं। बाकी एक कमरा एक अंग्रेज़ अफसर ने ले रखा है और उसके साथ भी हमारा एक अफसर टिका हुआ है ।"

"शायद आप उन लोगो के साथ रह सकें।" सफेद बालो से भरी दाढीवाले एक दूसरे नॉनकमीशन अफसर ने उसके कन्धे की पट्टियो से उसका फौजी ओहदा समझा और मित्रतापूर्ण ढँग से कहा ।

"नही, मैं यही रहना पसन्द करूँगा। मुझे ज्यादा जगह की ज़रूरत नही । फर्श पर ही पड रहूँगा । मेरी वजह से यहाँ किसी को तकलीफ नही पहुँचेगी ।" ग्रिगोरी ने अपना बरानकोट उतारा, हथेली से सिर के बाल ठीक किए और मेज़ के किनारे बैठ गया। प्रोखोर घोडो के इन्तज़ाम के लिए बाहर चला गया।···

कहना न होगा कि यह सारी बातचीत बगल के कमरे मे बाकायदा सुनाई पडी, क्योंकि पाँच मिनट बाद दरवाजा खुला और एक चुस्त-सा नाटे कद का लेफ्टिनेंट बाहर आया । पूछने लगा—'आप सोने के लिए जगह तलाश कर रहे हैं ?" फिर ग्रिगोरी के कन्धे की पट्टियो पर तेजी से निगाह दौडाते हुए विनय से मुस्कराया और बोला—"आप मेरे कमरे मे क्यो नही आ जाते, स्क्वैड्रन कमाण्डर साहब ? मेरे साथ ब्रिटिश फौज के लेफ्टिनेंट कैम्पबेल भी आपको वहाँ ठहरने की दावत देते है । हमारे साथ आपको कही ज्यादा आराम रहेगा ।···मेरा नाम श्चेग्लोव है···और आपका नाम ?" उसने ग्रिगोरी से हाथ मिलाया और प्रश्न किया—"आप मोर्चे से आ रहे हैं ?···हूँ आप छुट्टी पर

आ रहे हैं। आइए, आइए, अन्दर आइए ' हमे आपके साथ से बडी खुशी होगी। आप शायद भूखे भी होगे। कुछ-न-कुछ तो होगा ही हमारे पास आपके खाने के लिए।"

लेफ्टिनेंट की बेदाग, हरी वर्दी पर सन्त जार्ज-क्रॉस झूलता रहा। उसके बूट बहुत ही होशियारी से चमकाए गए लगे। उसके सफाचट चेहरे, बने-सँवरे व्यक्तित्व और आसपास की हर चीज़ से सफाई टपकती रही। उसके बदन से उभरने वाली यूडीक्लोन की खुशबू से हवा महमह करती रही।

वह ग्रिगोरी को रास्ता देने के लिए एक ओर को हटते हुए बोला—"दरवाजा बायी तरफ है। खयाल से चलिए—रास्ते मे एक बक्सा रखा हुआ है।"

कमरे मे नज़र आया एक अंग्रेज़—गठीला, मजबूत बदन, भूरी आँखें, ऊपरी होठ के गहरे दाग पर पर्दा डालती-सी घनी, काली मूंछे।

लेफ्टिनेंट कैम्पबेल, ग्रिगोरी को देखते ही उससे मिलने को उठ खडा हुआ। रूसी लेफ्टिनेंट ने दोनो का परिचय एक-दूसरे से कराया और कुछ अंग्रेज़ी मे कहा। अंग्रेज ने ग्रिगोरी से हाथ मिलाया। अभी दुभाषिए की ओर देखते हुए कुछ शब्द कहे और उन्हे बैठने का इशारा किया।

कमरे के बीचो-बीच चार कैम्प-बेड एक कतार मे खडे दीखे। कोने मे बक्सो, किटबैगो और चमडे के सूटकेसों का अम्बार लगा मिला। एक बड़े बक्से पर दूरबीन के केस, कारतूसो के बक्से और काले कुंदे और हलके-हलके चमकने वाली, नई नलीवाली कारबाइन राइफल के साथ एक हलकी मशीनगन रखी नज़र आई। इस किस्म की मशीनगन ग्रिगोरी ने इसके पहले कभी न देखी थी।

लेफ्टिनेंट ने धीमे मधुर स्वरो मे कुछ कहा और मेहमान पर स्नेह-भरी नज़र डाली। ग्रिगोरी ने अनजानी, विदेशी भाषा तो नही समझी, पर अपने को ही पूरी बातचीत का विषय अनुभव कर थोडा-सा अटपटा ज़रूर महसूस किया। रूसी-लेफ्टिनेंट ने मुस्कराते हुए अंग्रेज

की बात सुनी और एक सूटकेस में हाथ डालते हुए बोला—"लेफ्टिनेंट कैम्पबेल का कहना है कि वे कज्ज़ाकों की बडी इज्जत करते हैं। उन्हे घुडसवार और शानदार लाजवाब सूरमा समझते है। ' आप कुछ खाना पसन्द करेंगे ? पीते है आप ? लेफ्टिनेंट कैम्पबेल कहते हैं कि एक खास खतरा बराबर बढ रहा है·· खैर···जाने क्या-क्या बकवास कर रहे हैं वे।"

लेफ्टिनेंट ने सूटकेस से कई टीन और ब्रेंडी की दो बोतलें निकालीं। फिर बक्से पर झुका। मगर, दुभाषिये का काम करता रहा—"कैम्पबेल कहते हैं कि उस्त-मेदवेदित्स्काया मे कज्ज़ाक अफसरो ने उनकी बडी खातिर की। उन्होने दोन की शराब से लबालब लम्बे-चौडे पीपे का पीपा खाली कर दिया। हर आदमी पीते-पीते लुढक गया। फिर कुछ स्कूली लडकियो के साथ खासा रंग रहा। आप जानते हैं कि अब हालत क्या है ? अब यह उस मेहमान-नवाज़ी का बदला चुकाना अपना हसीन फर्ज़ समझते हैं। शिकार आप होगे। खैर मुझे अफसोस है मगर हो क्या सकता है···आप पीते तो हैं ?"

"शुक्रिया·· पीता हूँ।" ग्रिगोरी ने सडक की गर्द और काठी के चमडे की कालिख से काले अपने हाथो पर निगाह डालते हुए कहा।

लेफ्टिनेंट ने टीन मेज़ पर रखे और उन्हें सधे हुए हाथो से चाकू से खोला।

"आप जानते हैं, इस अंग्रेज़ सुअर के बच्चे ने हलाकान कर मारा मुझे। खुद सुबह से शाम तक पीता है। ढालता ही चला जाता है। वैसे पीना-वीना मुझे बुरा नही लगता, मगर इस तरह धुआँधार पीना मेरे बस की बात नही।" उसने पहले अंग्रेज़ की ओर देखा और फिर आश्चर्यचकित ग्रिगोरी की ओर—"यह तो खाली पेट भी ताबडतोड़ पीता है।"

अंग्रेज़ लेफ्टिनेंट ने मुस्कराकर सिर हिलाया और टूटी-फूटी रूसी मे बोला—"हाँ-हाँ···हमे आपकी सेहत का जाम तो पीना ही चाहिए।"

ग्रिगोरी हँसा और उसने माथे पर झूलते बाल पीछे झटके।

उसे दोनो अफसर पसद आए। उस पर अग्रेजी अफसर की अर्थहीन मुस्कराहट और रूसी बोलने का बेहूदा तरीका तो उसे और भी प्यारा लगा।

गिलास पोछते हुए लेफ्टिनेट बोला—"पिछले दो हफ्तो से लटका रखा है साहब बहादुर ने मुझे अपने गले मे···क्या खयाल है? ये हमारे फौजियो को, हमारी दूसरी कोर को मिले टैक चलाना सिखलाते हैं, और इस सिलसिले मे मुझे इनका दुभाषिया बना दिया गया है। मै बिना अटके खटाखट अंग्रेज़ी बोलता हूँ, यही मेरे गिरने की वजह है···हमारे यहाँ के लोग भी पीते हैं, लेकिन इस तरह नही पीते। आप खुद देखिए कि कितनी बर्दाश्त है इनकी। अगर यह धीरे-धीरे पिएँ तो दिन-भर मे ब्रैडी की चार-पाँच बोतले खाली समझिए। मज़ा यह है कि नशा इन्हे कभी नही होता। इस तरह की पिलाई के बाद चाहिएगा तो कायदे से काम भी कर देगे। मैं तो हार मान गया। मेरे पेट मे कुछ गडबडी हो गई है। मैं हर दिन सोकर उठता हूँ तो मेरा दिमाग बहुत ही खराब रहता है···सारा तन-बदन शराब से इस तरह बसा रहता है कि जलते हुए चिराग के सामने बैठने मे डर लगता है···शैतान ही जाने कि यह हुआ क्या?" इस बीच उसने दो गिलास तो ऊपर तक भर दिए, मगर अपना गिलास थोडा ही भरा।

गिलास की तरफ देखते और हँसते हुए अग्रेज़ बडी ज़िन्दादिली से बातें करने लगा। रूसी लेफ्टिनेंट ने ज्यादा न पिलाने की मिन्नत के लिए, अपना हाथ सीने पर जमाए-ही-जमाए उसे जवाब दिया और जब-तब ही क्षण-भर को उसकी काली, स्नेह-भरी आँखें बेचैनी से चमक उठी।

ग्रिगोरी ने अपने मेहमान-नवाज़ मेज़बानो के गिलासो से अपना गिलास लडाया और पूरी शराब एक घूंट मे ही साफ कर गया।

'वाह!' अग्रेज ने तारीफ़ की और अपना गिलास चाटते हुए, उतनी ही नफरत से अपने दुभाषिये की ओर देखा।

इस बीच अग्रेज़,लेफ्टिनेंट के मेहनतकशो के-से बडे-बड़े हाथ मेज़ पर रखे रहे। उसकी खाल के रध्रो में जहाँ-तहाँ ग्रीज़ के निशान

दीखते रहे। खाल पेट्रोल के इस्तेमाल और पुराने दागो के कारण काफी खुरदरी लगी। परन्तु उसका चेहरा भरा हुआ, चिकना और लाल नज़र आया। यानी, उस आदमी के चेहरे और हाथो के रँग के बीच ग्रिगोरी को इतना अन्तर समझ पडा कि एक बार तो वह उसके चेहरे के ऊपर एक बनावटी मुखडे तक की बात सोच गया।

"आप मेरी जान बचा रहे हैं।" रूसी लेफ्टिनेट ने साथियो के गिलास लबालब भरते हुए कहा।

"यह साहब अकेले नही पीते ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"यही तो मुसीबत है। सबेरे तो वे अकेले पी लेते हैं, मगर शाम को इनसे गाडी अकेले नही चलती। अच्छा, तो उठाइए गिलास···"

"काफी तेज़ है शराब···" ग्रिगोरी ने चुस्की ली, लेकिन इस पर अग्रेज़ को ताज्जुब करते देखा, तो पूरा गिलास फिर एक बार मे ही खाली कर दिया।

"लेफ्टिनेट आपको विचित्र आदमी बतला रहे हैं · आपके पीने का ढँग इनको बहुत पसद है।

"आइए, आप चाहे तो हम आपस मे अपने-अपने काम की अदला-बदली कर लें।"

"मेरा पूरा यकीन है कि उस हालत मे आप पन्द्रह दिन मे इन्हे छोड़-कर भाग खडे होगे।"

"लेकिन आपका काम तो बहुत ही मजेदार है, क्यो ?"

"लेकिन मै इस मज़ेदार काम से किसी भी लमहा छुटकारा ले सकता हूँ।"

"पर मोर्चे की हालत तो उससे भी बुरी है।"

"यह भी एक मोर्चा ही है · वहाँ आप गोली या तोप के गोले के किसी टुकडे के शिकार हो सकते हैं, पर यह होना ऐसा कुछ तय नही है ··मगर यहाँ मुझे तपेदिक होना बिल्कुल तय है···टीन से कुछ फल लीजिए न···जाँघ के गोश्त का टुकडा लेगे थोडा-सा ?"

"शुक्रिया···मेरे पास भी थोडा-सा है।"

"अग्रेज इस मामले मे अच्छा होता है···वे अपने फौजियो को वैसे

नही खिलाते-पिलाते, जैसे हम खिलाते-पिलाते है ।"

"यानी हम अपने फौजियो को खिलाते-पिलाते है ? हमारी फौज अपने गाँव-गिराँव से काफी दूर रहती है ।"

"बदकिस्मती की बात है, मगर बात बिल्कुल सच है। यह खिलाने-पिलाने का तरीका ही तो है कि हमारे फौजी बहुत दूर तक पहुंच नही पाते। और यह सूरत और खास ढँग से सामने आती है। ये मौका भी देते हैं कि वे जब चाहे, जैसे चाहे लोगो को लूटें-खसोटें।"

ग्रिगोरी ने रूसी लेफ्टीनेंट को गौर से देखा और पूछा—"क्या आपको दूर जाने की उम्मीद है ?"

"हम सबका रास्ता एक ही है······आप पूछते क्यो हैं ?" लेफ्टिनेन्ट ने नही देखा, पर इसी बीच अंग्रेज़ ने बोतल उठाई और उसका गिलास ऊपर तक भर दिया।

"अब तो आपको पीना ही पडेगा।" ग्रिगोरी मुस्कराया।

"हे भगवान् !" लेफ्टिनेन्ट ने अपना गिलास देखा और उसके मुंह से आह निकल गई। गालो पर हल्की लाली दौड गई।

तीनो ने, मुंह से बिना कुछ बोले, अपने गिलास आपस मे लडाए।

"हाँ, यह ठीक है कि हम सबका रास्ता एक है, मगर रास्ते पर बढने का ढग बिल्कुल अलग है···" फिसलन से भरे आडू मे अपना कांटा गडाने की बेकार कोशिश करते और त्यौरी चढाते हुए ग्रिगोरी ने बात आगे बढाई—"नतीजा यह है कि हममे से कुछ लोग मजिल पहले पूरी करेंगे और कुछ लोग बाद मे···सारा नक्शा गाड़ियों के सफर जैसा है···"

"क्या आपका इरादा आखिर तक सफर करने का है ?"

ग्रिगोरी ने नशे का अनुभव तो किया, पर नशे मे चूर होने की हद से अब भी काफी दूर रहा। इसलिए मुस्कराते हुए बोला—"पूरे सफर के टिकट के लिए रकम कहाँ से लाऊँगा ! आपकी क्या हालत है ?"

"मेरी हालत···मेरी हालत ज़रा दूसरी है···यानी·· अगर गाड़ी न मिली तो मैं बाकी मज़िल पैदल ही तय कर डालूंगा।"

"ठीक, तो आपकी मुराद पूरी हो ! आइए, पिया जाए !"

"चलेगा नही अब ··"

अंग्रेज लेफ्टिनेन्ट ने ग्रिगोरी और दुभाषिए के गिलासो से अपना गिलास लडाया और चुपचाप पी गया। खाया लगभग कुछ नही। इस बीच उसका चेहरा ईंट की तरह लाल हो उठा, आँखे कही ज्यादा चमकने लगी और हरकतो मे जानी-समझी सुस्ती नजर आने लगी। फिर इसकी बोतल के खाली होने के पहले वह कोशिश से उठा, जमे हुए कदमो से सूटकेसो तक गया, ब्रैंडी की तीन बोतलें और निकाल लाया, होठो-ही-होठो मुस्कराया और भारी आवाज मे कुछ बोला। दुभाषिये ने कहा—"लेफ्टिनेन्ट-कैम्पबेल कहते हैं कि यह लुत्फ अभी और चलना चाहिए। शैतान ले जाए इसे!···आपकी तबियत तो ठीक है?"

"बिल्कुल ठीक है।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

"क्या बर्दाश्त है इस शख्स की! आदमी का बदन अंग्रेज का है, मगर रूह रूसी सौदागर की है। मेरा खयाल है कि मेरा चेहरा नशे से तमतमा रहा है···"

"आपको नशा-वशा कुछ नही मालूम होता।" ग्रिगोरी ने झूठ बात कही।

"सचमुच! मगर इस मामले मे तो मुझे आप कुंआरी लडकी समझिए। बिलकुल कमजोर हूँ। लेकिन, अभी तक तो अपनी जिम्मेदारियाँ अदा करने लायक हूँ···जी हाँ, अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी तरह अदा कर सकता हूँ।"···

रूसी लेफ्टिनेण्ट भरा हुआ गिलास खाली कर देने के बाद कुछ गडबडा चला था। उसकी काली आँखो मे चिकनाहट-सी आ गई थी, और पलकें रह-रहकर झपने लगी थी। चेहरे की मासपेशियाँ ढीली हो गई थी और होठ इशारे पर चलने से इन्कार करने लगे थे। चिकने गालो पर जहाँ-तहाँ बल पड गए थे। चेहरे से ऐसा लगता था, जैसे कि वह आदमी न होकर बैल हो, किसी ने अभी-अभी पचसेरा हथौड़ा उसके सिर पर दे मारा हो।

"आप तो अब भी पूरी तरह ठीक हैं। शायद आपको पीने की आदत पड गई है और अब शराब आप पर असर करती नही।" ग्रिगोरी

ने कहा। पर, अब तो खुद उस पर भी गिलास अपना रग दिखला चले थे। लेकिन, अनुभव वह यो कर रहा था, जैसे कि जाने कितनी ढालने की ताव अब भी उसमे हो।

"आप यह बात मजाक मे तो नही कह रहे है न ?" रूसी लेफ्टिनेण्ट ने खुशी से खिलते हुए कहा—"वैसे शुरू-शुरू मे तो मुझे कुछ अटपटा लग रहा था, लेकिन अब तो मैं किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार हूँ। किसी भी चीज के लिए तैयार हूँ। यो मुझे आप पसन्द आए कैप्टन साहब, आपमे कुछ है जिसके पैर मजबूत है, और जो अपने-आपमे ईमानदार है। मुझे यह बात खूब भाई है। तो आइए, अब इस पियक्कड गधे के मुल्क का जाम पी डालें। मैं जानता हूँ कि यह आदमी जानवर है, मगर उसका मुल्क ताज्जुब मे डाल देने वाला है। ब्रिटेन, लहरो पर हुकूमत करो ! हाँ, तो, फिर उठायें गिलास ? मगर एक बार मे ही पूरा गिलास खाली कर देने की नही रही !···यह जाम है आपके मुल्क की सलामती का, मिस्टर कैम्पबेल !" रूसी लेफ्टिनेण्ट ने अपना चेहरा मायूसी से सिकोड़ा, गिलास होठो से लगाया और इसके बाद घुटने के गोश्त का एक टुकडा मुंह मे डाला—"अजीब मुल्क है ब्रिटेन, स्क्वैड्रन कमाडर···आप सोच नही सकते, लेकिन मैं तो वहाँ रहा हूँ। तो, पिया जाए फिर !"

"वह मुल्क चाहे जैसा भी क्यो न हो, पर अपनी माँ, हमेशा दूसरे की माँ से ज्यादा प्यारी होती है।"

"इस बात की बहस मे इस वक्त मैं नही पडूँगा···आइए पिएँ।"

"आइए।"

"हमारे मुल्क मे बहुत-कुछ ऐसा सडा-गला है जिसे हमे आग लगाकर राख कर देना चाहिए···तलवार से तार-तार कर देना चाहिए। मगर हम मजबूर हैं और ऐसा लगता है जैसे कि हमारा मुल्क हमारा मुल्क है ही नही। भाड मे जाए। कैम्पबेल समझते है कि हम लाल फौजियो का मुकाबला नही कर सकते हैं।"

"ऐसा ?"

"जी हाँ, उनका खयाल यही है। उनकी राय हमारी फौज के बारे

मे काफी बुरी है। मगर लाल फौजियो की वे तारीफ करते हैं।"

"इन्होने लडाई मे हिस्सा लिया है ?"

"जी हाँ, लिया है। यह तो लाल फौजियो के हाथो मे आ जाने से बाल-बाल बचे। आग लगे इस ब्रैंडी को !"

"तेज़ चीज़ है···बिल्कुल स्पिरिट की तरह·· है न ?"

"बिल्कुल वैसी तो नही है । ··कैम्पबेल को घुडसवार फौजियों ने बचाया, वरना तो दुश्मनो के हाथ आ गए थे। बात जुकोव-गाँव की है। लाल फौजियो ने हमारा एक टैंक हथिया लिया···आप कुछ उदास नज़र आते है···बात क्या है ?"

"थोडे दिन हुए कि मेरी बीवी मुझे छोडकर इस दुनिया से चली गई···"

"यह तो बहुत ही बुरा हुआ···बाल-बच्चे हैं ?"

"बच्चे हैं।"

'तो, यह है आपके बच्चो की सेहत का जाम। मेरे तो बच्चे हैं नही···लेकिन शायद हैं···और ··अगर हैं तो शायद गलियो मे अखबार बेच रहे है कही···कैम्पबेल की एक माशूका है इग्लैंड मे···उसे बराबर खत लिखता है···हफ्ते मे दो बार···मेरा खयाल है कि दुनिया-भर की बकवास लिखता होगा उसे···मुझे तो करीब-करीब नफरत है इस आदमी से···जी, कुछ कहा आपने ?"

"नही, मैंने तो कुछ नही कहा। मगर, यह बतलाइए कि यह आदमी लाल फौजियो की इज्जत क्यो करता है ?"

"किसने कहा कि इज्ज़त करता है ?"

"आपने।"

"नामुमकिन है ! वह उनकी इज्जत नही करता···कर नही सकता ···आप गलती पर है। मगर मैं पूछता हूँ उससे।"

कैम्पबेल ने नशे मे चूर पीले चेहरेवाले लेफ्टिनेण्ट की बात ध्यान से सुनी, और फिर अंग्रेज़ी मे लम्बा-चौडा जवाब देना शुरू किया। पर, ग्रिगोरी ने उसकी बात बीच मे ही काट दी। पूछा—"क्या बकबक कर रहा है यह ?"

"इसने लाल फौजियो को महज पेडो की छाल के जूतो से ही टैक चलाते देखा है। भला इतना ही काफी है क्या ? कहता है कि उन्हे हराना मुमकिन नही है। बेवकूफ है। आप उसकी बात का यकीन न कीजिए।"

"क्यो न करूँ ?"

"इसलिए कि पूरी बात ही गलत है।"

"लेकिन, क्यो गलत है ?"

"यह आदमी नशे मे बेसिर-पैर की बाते कर रहा है। उन लोगो को हराना मुमकिन नही है·· आखिर क्यो मुमकिन नही है ? उनमे से कुछ का नाम-निशान मिटाया जा सकता है, और बाकी को ज़बरदस्ती गुलाम बनाया जा सकता है।···अब तक कितनी बोतले पी चुके हम ?" रूसी लेफ्टिनेण्ट जो अचानक ही मेज़ पर भहराया तो फल का एक टीन उलट गया। फिर वह कोई दस मिनट तक बाजुओ पर सिर रखे बैठा हाँफता रहा।

बाहर रात का अँधेरा घिरा रहा। बरसात की बूँदें झिलमिलियो पर अपनी उँगलियाँ चटकाती रही। ऐसे मे दूर पर कुछ गरज-सी सुनाई पडी। परन्तु, ग्रिगोरी समझ न पाया कि यह बिजली की कड़क है या तोपो की गरज ? कैम्पबेल सिगार के धुएँ मे लिपटा, ब्रैडी की चुसकियाँ लेता रहा। ग्रिगोरी ने दुभाषिये को झकझोरा और लड़खडाते हुए पैरो से खड़ा हुआ। बोला—"ज़रा पूछिए इससे कि लाल फौजियो से हम जीत क्यो नही सकते ?"

"ऐसी-तैसी मे जाओ तुम !" रूसी लेफ्टिनेण्ट गरजा।

"मैं कहता हूँ कि पूछिए उससे।"

"भाड मे जाओ ! शैतान ले जाए तुम्हे।"

"पूछिए इससे···मैं कहता हूँ।"

रूसी लेफ्टिनेण्ट, फटी-फटी-सी आँखो से एक क्षण तक ग्रिगोरी की ओर देखता रहा। फिर उसने, ध्यान से बात सुनते, कैम्पबेल से हकलाते हुए कुछ कहा और इसके बाद फिर सिर बाजुओ पर गिरा लिया। कैम्पबेल ने उसे नफरत से देखा, ग्रिगोरी की आस्तीन पर हाथ रखा और

इशारो-ही-इशारो कुछ समझाने की कोशिश की। उसने झटके से एक आड़ू की गुठली मेज़ के बीचो-बीच रखी, उसकी बगल में अपनी बड़ी हथेली जमाई और जीभ चटकाते हुए सहसा ही उसे हथेली से ढक लिया।

"बडे चालाक बनते हो न! यह बात तो मैं खुद तुम्हें बतला सकता था···" ग्रिगोरी, विचारो मे डूबते हुए मन-ही-मन बुदबुदाया। फिर डगमगाते पैरो से उसने मेहमान-नवाज़ अग्रेज़ को अपनी बाँहो मे भरा, मेज़ पर हाथ लहराया और एक कमान बनाई—"खातिर के लिए शुक्रिया! अलविदा ··मगर आप जानते हैं कि मैं क्या कहना चाहता हूँ आपसे? मैं कहना चाहता हूँ कि यहाँ आपका सिर कोई बीच से दो कर दे, इसके पहले ही जल्दी-से-जल्दी रफूचक्कर हो जाइए और अपने मुल्क को लौट जाइए। यह है ईमानदारी की बात। समझे? आपको हमारे घरेलू मामलो मे टाँग अडाने की कोई जरूरत नही साहबज़ादे! आप अपने घर लौट जाइए वरना कही ऐसा न हो कि पैर टूट जाएँ और आपको बैसाखी इस्तेमाल करनी पडे।"

लेफ्टिनेंट उठकर खडा हुआ, झुका और बेचारगी से दुभाषिये की ओर देखते और ग्रिगोरी की पीठ स्नेह से ठोकते हुए, फिर कुछ ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा।

ग्रिगोरी को दरवाजे की कुडी जैसे-तैसे मिली तो वह गिरता-पडता बरसाती मे आया। यहाँ पानी की तिरछी फुहारें उसके चेहरे पर पटापट पडने लगी। बिजली की रोशनी मे लम्बा-चौडा अहाता, गीली बाड और बगिया के पेडो की चमकदार पत्तियाँ कौंध-कौंध उठी। दूसरी ओर, सीढियाँ उतरते समय ग्रिगोरी फिसलकर गिर गया और सँभलकर उठा कि बातचीत के स्वर उसके कानों मे पडे।

'ये अफसर लोग अब तक ढाल रहे हैं?" किसी ने गलियारे मे दियासलाई जलाकर उजाला करते हुए पूछा। जवाब मे एक भर्राई हुई आवाज़ गूँजी—"वे लोग ढालते जायेंगे और तब तक ढालते जाएँगे जब तक कि गले से आवाज़ का निकलना बद न हो

जाएगा ···।"

: २० :

१९१८ की तरह इस बार भी खोपर जिले की हद पार होते ही दोन सेना का हौसला फिर पस्त हो गया और उसमे हमला करने की ताब न रह गई। ऊपरी दोन प्रदेश के कज्ज़ाक बागियो के साथ साथ खोपर प्रदेश के कितने ही कज्ज़ाको ने भी जैसे दोन के इलाके के बाहर जाकर लडना नही चाहा। दूसरी तरफ लाल सेना दुश्मनो से और जमकर लडने लगी। बात यह हुई कि इस बीच उसे ताज़ी कुमुक मिल गई और लडने को इलाका सुयोग से ऐसा मिला जहाँ लोगो की उसके साथ पूरी हमदर्दी रही। सो, कज्ज़ाक एक बार फिर आक्रमण की चिन्ता न कर, सिर्फ बचाव की बात सोचने लगे। फिर तो, श्वेत सेना की कमान अपनी तमाम चालाकी के बावजूद उनमे पहले की-सी लगन और आग न जगा सकी। वह लगन और वह आग तो जैसे उनके अपने क्षेत्र की मुठभेडो के लिए ही थी और अभी कुछ समय पहले अपना परिचय देकर कही उडनछू हो गई थी। कहने को कज्ज़ाक सेना का पलडा वर्तमान क्षेत्र मे दुश्मन के पलड़े से कही भारी था। परेशान नवीं लाल-सेना के पास थी ग्यारह हज़ार सगीनें, पाँच हज़ार तलवारें और बावन तोपें, लेकिन कज्ज़ाक फौजियो के पास थी चौदह हज़ार चार सौ सगीने, दस हज़ार छ सौ तलवारें और तिरेपन तोपें।

सबसे भयानक मुठभेड़ें किनारो पर, और खास तौर से कुबान की स्वयसेवक दक्षिणी सेना की टुकडियो के अपने इलाको मे हुईं। इस सेना के एक हिस्से ने, जनरल ब्रंगेल की कमान मे, उक्रइन मे आगे बढने मे कामयाबी पाने के साथ-ही-साथ दसवी लाल सेना को दबाकर पीछे ढकेलना शुरू कर दिया और सरातोव की दिशा मे बढते हुए विरोध और शक्ति के बावजूद शुरू कर दिया।

अट्ठाईस जुलाई को कुबान की घुडसवार सेना ने कामीशीन नगर ले लिया और बचाव करने वाले फौजियों को बहुत बडी गिनती मे क़ैद कर लिया। दसवी लाल सेना ने हमले का जवाब हमले से

दिया तो उसके पैर उखाड दिए गए। लाल सेना ने बायें बाजू पर कुबान घुडसवारो का ज़ोर बढते देखा तो सही खतरा समझा और बोरज़ेन्कोवो-लातिशेवो-क्रासनी यार-कामेन्का-बान्नोये-रेखा तक पीछे हट गई। इस समय इस सेना के पास रही १८,००० संगीनें, ८,००० तलवारें और १३२ तोपे, जबकि कुबान की स्वयंसेवक-टुकडी के पास रही ७,६०० सगीनें, १०,७५० तलवारें और ६८ तोपें। परन्तु श्वेत सेना के पास इन चीज़ो के अलावा टैंको की यूनिटो और लडाई के साथ-साथ जासूसी मे भी काम आने वाले, कितने ही हवाई जहाजो का भी बल रहा। लेकिन इस पर भी व्रैंगल के दाएँ न फ्रेंच हवाई जहाज़ आ सके और न अंग्रेजी टैंक और तोपें। वह कामीशीन के आगे न बढ सका और इस इलाके मे जो लडाई जमकर खिची उसके कारण मोर्चे का नकशा जहाँ-तहाँ से थोडा बदला।

जुलाई के अधियाते-अधियाते लाल सेनाए दक्षिणी मोर्चे के केन्द्रीय क्षेत्र पर बहुत बडे पैमा परने हमला करने की तैयारियाँ करने लगी। फिर नवी और दसवी सेना एक हो गई, और कमान शोरीन के हाथो मे आ गई। योजना बनाई गई कि रिज़र्व के लिए दो डिवीज़नें पूर्वी मोर्चे के कजान और सरातोव-रक्षा-क्षेत्रो से ली जाएँगी, पर हमला करने वाली फौजो मे टुकडियाँ मोर्चे की रिज़र्व फौजो और ५६वीं राइफल डिविज़न से आएँगी।···साथ ही यह भी सोचा गया कि आठवी सेना की टुकड़ियाँ अलग से हमला करेंगी और इस सिलसिले मे मदद दो अतिरिक्त डिविज़नो से लेंगी।···

हमले के लिए अगस्त के पहले दस दिनो का समय तय हुआ। लाल सेना की हाई कमान ने निश्चय किया कि आठवी और नवी सेनाओ के हमले के साथ ही फौजो दुश्मन को बाजुओ से घेरना शुरू करेंगी···दसवी सेना पर खास तौर पर बडी पेचीदा ज़िम्मेदारी होगी · उसे दुश्मन को दोन के बाएँ किनारे पर उलझाए रखना होगा और उत्तरी काकेशिया से आने वाली उसकी खास फौजो से उसे काट देना पडेगा···पश्चिम मे चौदहवी सेना की कुछ टुकडियाँ चैपलीनो-लोज़ोवाया-रेखा की तरफ बढ़ने का बहाना करेंगी और इस काम मे

लगी रहेगी···।

यानी, इधर नवी और दसवी सेनाओ के नए वर्गीकरण का प्रस्ताव चलता रहा कि उधर श्वेत-कमान ने हमले का मुँहतोड जवाब देने के लिए जनरल ममोनतोव की कोरो के सगठन का काम पूरा कर डाला। कमान इन कोरो की मदद से मोर्चा तोडने और लाल सेनाओ पर पीछे से पूरे जोर-शोर से हमला करने के मसूबे बाँधती रही।

व्रेंगेल की सेना को जारीत्सिन की दिशा मे मिली सफलता के कारण उसका मोर्चा बाई तरफ बढाना, दोन-सेना के पूरे मोर्चे की लम्बाई घटाना और इसके आधार पर उससे कई घुडसवार डिविजने ले लेना बिल्कुल सम्भव लगने लगा।

सात अगस्त को ६,००० तलवारें, २,८०० सगीनें और तीन चार-चार तोपो वाली बैटरियाँ उरूपिन्स्काया ज़िले मे जुटाई गईं। दस अगस्त को जनरल ममोनतोव की टुकड़ियो ने आठवी और नवी लाल सेनाओ को बीच से अलगाना चाहा और ताम्बोव की तरफ से धावा बोल दिया।

श्वेत-कमान का इरादा शुरू-शुरू मे यह था कि ममोनतोव के फौजें पीछे से लाल सेना पर हमला करें। जनरल कोनोवालोव की घुडसवार टुकड़ियाँ उनकी मदद करें। लेकिन ये टुकडियाँ जिस इलाके मे थी वहाँ ऐसी घमासान लडाई हुई कि इनका निकाला जाना बिल्कुल नामुमकिन हो गया। इससे ममोनतोव के आगे बड़ी सीमा आ खडी हुई। इसीलिए उसे हुक्म दिया गया कि पीछे से हमले के समय वह दुश्मन की कतारों के बीच दूर तक न जाए, मास्को पर हमला करने की बात खयाल मे भी न लाए, और दुश्मन के मोर्चे के पीछे की सेवाएँ और सचार-व्यवस्थाएँ आदि बर्बाद कर जल्दी-से-जल्दी प्रमुख श्वेत सेना से आ मिले। परन्तु इसके पहले ममोनतोव और कोनोवालोव को आदेश दिया गया था कि केन्द्रीय लाल सेनाओ पर बाजू और पीछे से भरपूर वार करें, फिर ज़बरदस्ती राह बनाते हुए रूस की गहराइयाँ भेदें, सोवियत-विरोधी लोगों की भरती से अपने फौजियो की गिनती बढ़ाएँ

और जैसे भी हो मास्को की तरफ बढें।

आठवी लाल सेना ने रिज़र्व फौजे बुलवा ली और इनकी सहायता से बाएँ बाज़ू पर उसे फिर से अपने पैर जमाने मे कामयाबी मिल गई। लेकिन नवी लाल सेना के दाएँ बाज़ू पर काफी गम्भीर चोट पड़ी। मुख्य हमलावर फौज के कमाडर शोरीन ने दोनो सेनाओ के बीच की खाई तो अन्दर-ही-अन्दर पाट दी, पर ममोनतोव की घुडसवार फौजो का आगे बढना उसके रोके न रुका। इस पर उसने ५६वी डिविज़न को ममोनतोव की राह रोक देने का हुक्म दिया। इस सिलसिले मे उसकी जिस बटेलियन को गाडियो पर सवार पहले से सामपुर भेज दिया गया था, उसे सामना होने पर, ममोनतोव की टुकडियो ने पूरी तरह चूर-चूर कर दिया। यही दुर्गति ३६वी राइफल-डिवीज़न के घुडसवार ब्रिगेड की हुई। इस ब्रिगेड को ताम्बोव-बालाशोव रेलवे के बचाव का काम सौपा गया था। यानी ममोनतोव की तमाम घुडसवार टुकड़ियो से लोहा लेने मे पूरे-का-पूरा ब्रिगेड थोड़े समय मे ही टूट गया।

१८ अगस्त को ममोनतोव एक लहर की तरह ताम्बोव मे दाखिल हुआ। परन्तु इससे शोरीन की फौजो के ज़ोरदार हमले में कोई अन्तर नही पडा। वैसे यह ज़रूर रहा कि उसे पूरी-की-पूरी दो पैदल डिवीज़नें ममोनतोव का बल तोडने के काम मे लगानी पडी। इसी समय दक्षिणी मोर्चे के उक्रइनी क्षेत्र पर भी आक्रमण कर दिया गया।

उत्तर और उत्तर-पूर्व मे, स्तारी-ओस्कोल से बालाशोव तक फैलने और ज़ारीत्सिन की ओर विशेष दबाव रखने वाला मोर्चा होते-होते बराबर होने लगा। इस बीच कज़्ज़ाक फौजो ने जब-तब ही हमले का जवाब हमले से दिया और हर मज़बूत मोर्चे पर दुश्मन के आगे बढने मे बाधा डाली। इसके बावजूद विरोधी सेना कई दृष्टियो से उनसे कहीं ज़ोरदार साबित हुई और कज़्ज़ाको को पीछे हटना पडा। परन्तु कज़्ज़ाक धरती पर कदम रखते ही लडने की पहले जैसी क्षमता उनमे फिर जाग उठी। लोगो का लडाई को पीठ दिखाकर भागना तेजी से कम हो गया और मध्य-दोन प्रदेश के ज़िलो से कुमुक-पर-कुमुक आने

लगी। शोरीन की सेनाएँ दोन के कज्जाक सेना के प्रदेश मे जितनी ही आगे बढी, कज्जाको का विरोध उतना ही बढा, और उन्होने दुश्मन के दाँत खट्टे करने की उतनी ही कोशिश की। गाँवो की सभाओ मे ऊपरी दोन के विद्रोही जिलो के कज्जाको ने लाम पर जाने का आम ऐलान अपनी ओर से किया, गिरजो मे प्रार्थनाओं का आयोजन करवाया और बिना समय खोए मोर्चे के लिए रवाना हो गए।

दूसरी तरफ, शोरीन की लाल सेनाएँ श्वेत सेनाओ से जूझते हुए ज्यो-ज्यो खोपर और दोन के इलाके की तरफ बढी, त्यो त्यो उन्होने जनता मे अपने प्रति अधिक-से-अधिक स्पष्ट विरोध पाया। होते-होते उनमे शुरू का जोश न रहा और उनकी आगे बढने की रफतार घट गई। इस बीच दसवी लाल सेना ने हमला करने की तैयारी पूरे ज़ोर-शोर से की। परन्तु, श्वेत कमान ने इसके पहले ही कचालिन्स्काया और कोतलुवान स्टेशन के बीच क्षेत्र मे, तीन कुबान टुकडियो और छठी अपनी पैदल डिविजन की सेना हर तरह मजबूत कर ली और हमला बोलने के मसूबे बांध लिए।

: २१ :

बारह महीनो के अन्दर-अन्दर मेलेखोव परिवार आधा रह गया। पैन्तेली ने एक दिन ठीक ही कहा कि हो-न-हो, इस घर पर ऊपरवाले की नज़र गड गई है।

यानी नताल्या की कब्र अभी पूरी तरह सूख भी न पाई कि परिवार सोने का कमरा फिर महक और अनाज के साथ उगने वाले पौधो से भर उठा। ग्रिगोरी मोर्चे से लौटा कि उसके कोई दस मिनट बाद ही दार्या ने दोन मे डूबकर अपनी जान दे दी।

शनिवार के दिन, खेत से लौटने के बाद वह दून्या के साथ नहाने गई। वहाँ बावर्चीखाने के बागीचे के नीचे दोनो ने कपडे उतारे और फिर वे दोनो बहुत देर तक मुलायम पैरो से रौंदी हुई घास पर बैठी रही।

वैसे सुबह-तडके से ही दार्या उखड़ी-उखड़ी रही थी। वह सिर-

दर्द और कमजोरी की शिकायत करती रही थी और कई बार सुबक-सुबककर रो चुकी थी। सो, नहाने के पहले दून्या ने अपने बाल इकट्ठे किए, सिर पर तिकोनिया रूमाल बाँधा और दार्या को कनखी से देखते हुए हमदर्दी से बोली—"तुम कितनी भटक गई हो, दार्या, तुम्हारे बदन की नस-नस नजर आने लगी है।"

"जल्द ही सब-कुछ ठीक हो जाएगा···"

"तुम्हारा सिर-दर्द दुरुस्त हो गया ?"

"हाँ दुरुस्त हो गया···अच्छा तो चलो···नहाया जाए···काफी देर हो चुकी है।" दार्या पहले पानी मे उतरी, डुबकी लगाई, नाक और मुँह से पानी निकालते हुए सतह पर आई और मझधार तक तैर गई। वहाँ तेज धार ने उसे अपनी लपेट मे ले लिया और आगे-ही-आगे बहाती गई।

दून्या ने दार्या को मर्दों की तरह ताकत से हाथ चलाते देखा, खुद कमर-कमर तक पानी मे पैठी, मुँह धोया और अपने सीने और धूप से सँवराई, नाजुक गोल-गोल बाँहे पानी से भिगोई। ओवनिज़ोव की दोनो बहुएँ बगलवाले बाग मे पातगोभी को पानी देती रही। उनके कानो मे दून्या की आवाज पडी। उसने हँसते हुए दार्या को आवाज दी—"लौट आओ दार्या ··कही ऐसा न हो कि कोई जर्मन मछली तुम्हे खीच ले जाए।"

दार्या मुडी, थोड़ी दूर तक तैर आई, फिर पानी के बाहर कमर तक अपना बदन उभारा, सिर के पीछे हाथ बाँधे, चीखकर कहा—"अलविदा सखियो !" और पत्थर की तरह नदी मे पैठ गई।

कोई पन्द्रह मिनट बाद उतरा हुआ चेहरा लिए, सिर्फ कमीज़ पहने दून्या घर दौडी आई और हाँफते हुए जैसे-तैसे बोली—"दार्या नदी मे डूब गई, माँ !"

फिर दूसरे दिन तक दार्या की लाश की खोज की गई। तडके तातारस्की के सबसे पुराने और अनुभवी मछुए आरखीप-पेस्कोवात्स्कोव ने अपने जाल के छ: कोने दार्या के डूबने की जगह, धार के आरपार बिछाए और बाद मे देखने गया कि जाल ठीकठाक तो है। इस बीच

दून्या-सहित कितनी ही औरतें और बच्चे किनारे आ जमा हुए। आरखीप जाल के चौथे खूंटे को झटकते-झटकते कोई साठ फुट तक निकल गया। वहाँ से उभरते उसके स्वर लोगो ने सुने—"लगता है लाश आ गई जाल मे।"

इसके बाद उसने जाल खीचना शुरू किया और गहराई मे पैठे चौथे खूंट के मामले मे बडी ही होशियारी बरती। जल्दी ही दाएँ किनारे पर सफेद-सा कुछ चमका। दोनो बूढे पानी पर झुके। नाव ने अपने अगले हिस्से से पानी काटा, और भारी लाश खीचकर ऊपर लाई गई। सभी लोगो के बदनो मे एक सिहरन-सी दौड गई। एक औरत सिसकने तक लगी। कुछ दूर पर खडे क्रिस्तोनिया ने बच्चो से चिल्लाकर कहा, "अच्छा, अब तुम लोग भागो यहाँ से!" दून्या ने आँसुओ के बीच आरखीप को नाव के अगले हिस्से पर खडे होते, और उसे सधे हुए हाथो से खेकर किनारे की तरफ लाते देखा। आखिरकार नाव एक आवाज़ के साथ खडिया वाले साफ किनारे पर आ लगी।

नाव मे दार्‌या अपने बेजान पैर सिकोड़े पडी हुई थी। उसका गाल गीले तल से सटा हुआ था। शरीर अभी-अभी नीला पडना शुरू हुआ था और माँस मे कटियो के गहरे छेद साफ-साफ नज़र आ रहे थे। वह शायद नहाने से पहले लेनिन का गेटिस उतारना भूल गई थी। सो, घुटने के नीचे, पतली, साँवली पिंडली पर, इसी गेटिस के पास ताज़ी खरोच से ज़रा-जरा खून निकल रहा था। किसी कटिया की नोक ने पैर पर अपना दाँत गडाकर एक टेढी लकीर-सी बना दी थी।

तो, सबसे पहले दून्या पास गई और उसने उधडी हुई सिलाईवाले एक बोरे से उसका बदन ढँक दिया। पैन्तेली ने देखते-देखते अपना पतलून चढाया और पानी मे हिलकर नाव खीचकर किनारे के ऊपर लाने लगा। एकाध मिनट बाद एक गाडी वहाँ आ पहुँची और उस पर रखकर दार्‌या की लाश घर ले आई गई।

दून्या ने अपने मन से डर और घिन की भावना निकाल फेंकी और दोन की गहरी धार की ठंडक से अब तक बर्फ-सी ठडी लाश को धोने में माँ का हाँथ बँटाया। दार्‌या का थोड़ा-थोडा सूजा हुआ चेहरा

कुछ अनजाना और अजीव अजीब-सा लगा। पूरे एक दिन पानी मे रहने के कारण बुझी हुई आँखे कुछ चमकती-सी मालूम हुई। बालू के रुपहले कण बालो मे चमके और सेवार के हरे, गील तार गालो से चिपके दीखे। बेच से नीचे झूलते, फैले हुए हाथो की बेचारगी के अन्दाज मे ऐसी दिल हिला देने वाली राहत नजर आई कि उन पर नजर डालते ही दून्या हडबडाकर पीछे हट गई, स्तम्भित हो उठी और एकदम डर गई। इस मुर्दा औरत और जिन्दगी को प्यार करने वाली उस हँसती, इठलाती दार्या के बीच उसे कुछ भी एकसा न लगा। इसके बाद बहुत समय तक दून्या को जब भी दार्या के पत्थर-से सीने और पेट का लिसलिसापन और कमानी से हाथ-पैरो का कडापन याद आया, वह सिर से पैर तक काँप उठी और उसने उसे भुलाने की भरपूर कोशिश की। उसके मन मे आशका घर कर गई कि रात को वह मुझे सपनो मे दिखलाई पडेगी। इसलिए एक सप्ताह तक वह इलीनीचिना के साथ सोई और हर दिन पलग पर लेटने से पहले उसने प्रभु से बडी-बडी मिन्नत की—"ओ नीली छतरीवाले ··मुझे उससे बचा·· उसे मेरे सपनो मे आने से रोक!"

अगर ओबनिजोव की पतोहुओ ने दार्या की 'सखियो अलविदा' की चीख न सुनी होती तो किसी को कानो-कान खबर भी न होती और दार्या दफना दी जाती। लेकिन अब तो आत्म-हत्या के इरादे का पता देने वाली इस चीख की चर्चा होते-होते पादरी विसेरिओन तक पहुँची और उसने दृढ स्वर मे फतवा दिया कि खुदकशी करनेवाली इस औरत का अतिम सस्कार मैं तो करवाने से रहा। इस पर पैन्तेली बौखला उठा—'क्या मतलब? तुम इस तरह इन्कार क्यो करते हो? इसका बपतिस्मा नही हुआ था क्या?"

"मैं खुदकशी करनेवालो के अतिम सस्कार नही करवाया करता। कानून इसकी इजाजत नही देता।"

"तो, तुम्हारे खयाल से किस तरह दफनाया जाए इसे? कुत्तो की तरह?···"

"यानी, तुम जहाँ चाहो और जैसे चाहो उसे दफना दो···सिर्फ

कब्रगाह मे दफना नही सकते··· वहाँ तो सच्चे ईसाइयो को ही जगह मिलती है।"

"देखो, थोडा रहम करो हम पर।" पैन्तेली ने गिडगिडाकर मिन्नत की—"हमारे खानदान की इज्जत ऐसी अब तक कभी नही उछली।"

"मै कुछ नही कर सकता, पैन्तेली, मै कुछ नही कर सकता· ·मैं तुम्हे गिरजे और प्रभु का सच्चा सेवक समझता हूँ · तुम्हारी मिसाल किसी के सामने रख सकता हूँ। पर इस मामले मे कुछ नही कर सकता। बात बडे पादरी तक पहुँच जाएगी और तब मेरी अपनी जान के लाले पड जाएँगे।" पादरी अपनी बात पर जमा रहा।

बात बडे अपमान की थी। पैन्तेली ने उस सुअर दिमाग वाले पादरी को समझाने-बुझाने की हर तरह कोशिश की, और ज्यादा रकम देने की बात कही और सो भी खरे जारशाही रूबलो मे अदा करने का वायदा किया। उसने उसे एक साल का एक मेमना तक भेंट किया। लेकिन पादरी किसी तरह न पसीजा तो पैन्तेली ने धमकियो का सहारा लिया।

"मैं दार्या को कब्रगाह के बाहर दफन नही करूँगा। वह कही मुझे पडी तो मिल नही गई है। मेरे अपने बेटे की बीवी है! उसका आदमी फौजी अफसर था। लडाई के मैदान मे लाल फौजियो से लोहा लेते-लेते खेत रहा था, और खुद उसे सत-जार्ज मैडल दिया गया था, और तुम उसी के बारे मे मुझसे बे-सिर-पैर की बाते करते हो! नही पादरी, यह नही चलेगा। तुम उसे दफन कराओगे और जैसे मैं कहता हूँ, वैसे दफन कराओगे। फिलहाल उसकी लाश सोने के कमरे मे पडी रहेगी। मैं फौरन ही ज़िला अतामान को सारी इत्तिला दिए देता हूँ। वह खुद तुमसे बातें कर लेगा।"

पैन्तेली विदा का एक शब्द कहे बिना पादरी के घर से बाहर निकल आया और तेहे मे उसने दरवाज़ा भड़ाक से दे मारा। लेकिन, धमकी ने अपना असर दिखलाया। आधे घटे बाद पादरी ने एक आदमी भेजा और कहलवाया कि मैं अतिम प्रार्थना के लिए अभी-अभी

आता हूँ···।

दार्या को कब्रगाह मे वाजिब तौर पर प्योत्र की बगल मे दफना दिया गया।

कब्र खोदी गई तो जगह खुद पैन्तेली को बहुत रुची। फावडे से जमीन खोदते समय उसने चारो तरफ नजर दौड़ाई और मन-ही-मन सोचा—इससे बेहतर जगह मेरे लिए दूसरी हो नहीं सकती, और न इसके बाद किसी दूसरी जगह की बात सोचनी ही चाहिए।

प्योत्र की कब्र पर अभी-अभी उगे देवदार की कोमल-कोमल टहनियाँ हवा मे सरसरा रही थी। शरद् ने अपने आने का संकेत देते हुए उसकी ऊपर की पत्तियो को पीले रग से नहला दिया था, जैसे कि यह रग जिन्दगी की खिजा का गहरा रग हो। बछडो ने टूटी बाड और कब्रो के बीच की जगह रौद-रौदकर एक रास्ता-सा बना दिया था। हवाचक्की को जाने वाली पगडडी बाड की बगल से जाती थी। आसपास के मैपल, देवदार और बबूल के पेड मरने वालो के नाते-रिश्तेदारो के मेहनती हाथो ने लगाए थे। वे अपनी ताजगी और हरियाली से हर आने वाले का स्वागत करते थे। उनके चारो तरफ तरह-तरह की लताओ की बाड थी, देर से फूलने वाली सरसो के फूलो की बहार थी, और जई की बालो का पसारा था। क्रास एक सिरे से दूसरे सिरे तक अश्कपेचा-बेल को अपनी बाँहो मे लपेटे खडे थे। जगह सचमुच तबीयत खुश कर देनेवाली थी···

सो, बूढे ने कब्र खोदते समय बीच-बीच मे फावडा जमीन पर फेका और नम, चिकनी मिट्टी वाली धरती पर बैठकर धुआ उडाया और मौत के बारे मे जाने क्या-क्या सोचा। लेकिन अभी, वह समय दूर था जब बडे-बूढे एक बार फिर अपने घरो मे चैन से दम तोड सकते, और अपने पिताओ और उनके पिताओ की बगल मे चिर-विश्राम कर सकते···

दार्या के मरने के बाद मेलेखोव परिवार मे और वीरानगी छा गई। परिवार के लोगो ने गाडी भर-भरकर अनाज ढोया और उसकी ओसाई की। खरबूजे वाले खेत से खूब खरबूजे तोडे। हर दिन ही

ग्रिगोरी के समाचार की प्रतीक्षा की, पर मोर्चे पर जाने के बाद उसकी तरफ से किसी तरह की कोई खबर न आई। इलीनीचिना का दिल दुखा और उसने एक से अधिक बार भरकर कहा—"शैतान कही का, अपने बच्चो तक की खोज-खबर नही लेता। बीवी मर गई है न, तो अब भला हम सबकी उसे क्या परवाह!"

इसके बाद कुछ ऐसा हुआ कि मोर्चे से अधिक-से-अधिक कज्जाक छुट्टी बिताने घर आने लगे। फिर अफवाहे उडने लगी—बालाशोव के मोर्चे पर कज्जाक हार गए है। वे पानी की आड मे अपने सिर छिपाते और जाडे तक सिर्फ अपना बचाव करने के खयाल से दोन की तरफ लौटे आ रहे हैं।···लेकिन जाडे मे क्या होगा, इस मामले मे मोर्चे के लोग कोई राज़दारी न बरतते और साफ-साफ कहते—"दोन के सामने ही लाल फौजी हमे ऐन समन्दर तक पीछे खदेडकर दम लेगे।"

पैन्तेली प्राय. अनाज की ओसाई मे व्यस्त रहा और दोन प्रदेश मे हवा की तरह सनसनाती अफवाओ की तरफ ध्यान देता न लगा। पर, चारो तरफ घटती घटनाओ से अछूता वह न रह सका। फिर, उसने मोर्चे के और नियराने की बात सुनी तो जैसे बौखला उठा। वह इलीनीचिना और दून्या पर और भी अधिक चीखने लगा, और भी ज्यादा चिडचिडा हो उठा।

अब वह अकसर ही फार्म के काम की कोई-न-कोई चीज़ लेकर बनाने बैठता तो चीज़ हाथ लगाते ही चौपट हो जाती थी। इस पर वह उसे एक ओर फेंक देता और थू-थू करते, और गालियाँ बकते हुए खलिहान की ओर चल पडता कि वहाँ शायद मन बदले।

दून्या तो कई बार ऐसी बौखलाहटो की चश्मदीद गवाह रही।

पैन्तेली एक दिन जुआ लेकर बैठा और मरम्मत करने लगा। मगर काम मनमाना नही उतरा तो उसने क्या किया कि मारे तेहे के बेवजह कुल्हाडी उठाई और जुए के टुकडे-टुकडे करके रख दिये। ऐसा ही घोडे के पट्टे की मरम्मत करते समय भी हुआ।

एक दिन शाम को आग के पास बैठे-बैठे उसने मोम का एक टुकड़ा ऐंठा और पट्टे के फटे हुए गद्दे को सीने लगा। पर शायद सूत

सडा हुआ था या शायद बूढे का चित्त जरूरत से ज्यादा परेशान था। नतीजा यह कि सून दो बार बराबर टूट-टूट गया। बस, फिर क्या था, आओ तो जाओ कहाँ! वह गालियों की बौछार करते हुए झटके से उठ खडा हुआ, स्टूल को ठोकर मारकर स्टोव की तरफ रवाना कर दिया और कुत्ते की तरह गुर्राते हुए पट्टे के चमडे के गद्दे को दाँत से चीरने लगा। इसके बाद उसने पट्टा फर्श पर लोका दिया और मुर्गे की तरह उछल-उछलकर उसे पैरो से रौंदने लगा। आज जल्दी सोने चली गई इलीनीचिना ने शोर-गुल सुना तो दहशत मे उठकर पलग पर बैठ गई। लेकिन, जब सारी बात समझ मे आई और सारा तूफान देखा तो उस पर लानतें बरसाती हुई बोली—"ऐसी-तैसी मे जाओ, पागल हो गए हो? सचमुच सठिया गए हो? इस पट्टे ने भला तुम्हारा क्या बिगाडा है?"

पैन्तेली ने क्रोध से जलती आँखो से पत्नी को घूरकर देखा और गरजा—"तू मुँह बन्द कर···गधी कही की!" इसके बाद उसने फटे हुए पट्टे का एक हिस्सा उठाया और फेंककर बुढिया को मारा।

दून्या का हँसी से पेट फटने लगा। वह गोली की तरह उडती हुई बरसाती मे निकल गई। पर बूढा थोडी देर बाद शात हो गया। अब उसने गाली-गलौज के लिए पत्नी से माफी माँगी और बदकिस्मत पट्टे के फटे हुए टुकडो की तरफ देख-देखकर सिर खुजलाना और सोचना शुरू किया कि इनका किसी तरह का कोई इस्तेमाल भी हो सकता है क्या, और हो सकता है तो क्या हो सकता है?

पैन्तेली को उन्माद के ऐसे दौरे अकसर आए और इलीनीचिना ने होते-होते आडे आने का एक दूसरा तरीका निकाल लिया। पति ने ज्यो ही कभी गालियों की बौछार शुरू की और घर की कोई चीज़ पटकी-फोडी, पत्नी ने बहुत ही विनय के साथ, पर जोर से कहा—"तोड डालो···इसे, चूर-चूर कर दो इसे, प्रोकोफियेविच! मैं और तुम यानी हम दोनो रकम जुटाकर यह चीज़ फिर खरीद लेंगे।" यही नही, इलीनीचिना ने कई बार तो इस पटक-फोड मे पैन्तेली का हाथ तक बँटाया। इसके बाद पैन्तेली हमेशा ही तुरन्त शात हो गया, फटी-फटी-

सी आँखो से एकाध मिनट अपनी पत्नी को एकटक देखता रहा, फिर जेब मे हाथ डालकर तम्बाकू की अपनी थैली निकाली और हैरान होकर किसी सूने कोने मैं बैठ गया और अपने मन को शात करने लगा। ऐसे अवसरो पर उसने सदा ही ऐसे तेहे के लिए मन-ही-मन अपने को कोसा और चीज के नुकसान के लिए पछतावे के लिए हाथ मले।

एक बार तीन महीने का एक सुअर बाड मे घुस आया और उसके गुस्से का शिकार हो गया। पैन्तेली ने डडे से उसकी कमर तोड दी और उसे हलालने के बाद नाखून से उसके बाल नोचने लगा। लेकिन, पाँच मिनट बाद ही उसकी निगाह अपनी बीवी की त्यौरियो पर पडी कि जैसे उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और उसे खुश करने की कोशिश करते हुए बोला—"तुम्हे तो पता है कि यह सुअर का बच्चा महज मुसीबत की जड था, और कुछ नही। और, मर तो वह वैसे भी जाता। इस मौसम मे हर साल सुअर ताऊन के शिकार हो जाते है। अगर कही ऐसा हो जाता तब तो हमारे हाथ कुछ भी न आता। अब कम-से कम गोश्त तो हमे खाने को मिल ही सकता है। बताओ, बात ठीक है कि नही ? लेकिन, तुम बिजली गिरानेवाले बादल की तरह क्यों देख रही हो आखिर ? मै तो कहता हूँ कि एक नही, तीन-तीन मौते आए उस सुअर के बच्चे को! फिर, वह पूरा सुअर था भी तो नही। नाम-भर को सुअर था! उसे मारने के लिए डडे तक की तो जरूरत पडी नही। था वह ऐसा कि कोई उस पर थूक-भर देता तो वह मर जाता। फिर, वह जगह-जगह अपना थूथुन पता नही क्यो घुसेडता फिरता था! आलू के कोई चालीस पौधे जड से उखाडकर फेंक दिए उसने।"

"अगर वह आलू के कुल-के-कुल पौधे उखाड फेकता तो भी गिनती तीस से आगे न पहुँचती।" इलीनीचिना ने शात भाव से जैसे उसकी बात सही कर दी।

"हो सकता है कि तुम्हारी बात ठीक ही हो! मगर कुल गिनती चालीस होती तो वह तो चालीस के चालीसो को बरबाद कर डालता न! सुअर था ही ऐसा। हम तो बच गए उस दुश्मन से!"

पैन्तेली ने बिना सोचे-समझे कहा ।

× × ×

अपने पिता के लाम पर जाने के बाद बच्चे जहाँ-तहाँ भटकने लगे। इलीनीचिना घर के काम-काज मे लगे रहने के कारण उनकी ओर काफी ध्यान न दे सकी । सो मन-मुताबिक वे घटो-घटो बगिया के किसी सिरे पर या खलिहान मे खेलते रहने लगे । मीशात्का एक दिन दोपहर के खाने के बाद गायब हुआ तो दिन-ढले घर लौटा । दादी ने पूछा तो बोला—"कुछ नही, मै दूसरे लडको के साथ दोन के किनारे खेलता रहा ।" पर, पोल्युशका ने सारा राज़ खोल दिया—"यह झूठ बोल रहा है, दादी ! यह तो अकसीनिया चाची के यहां गया था ।"

इलीनीचिना को इस बात से जितना ही बुरा लगा, उतना ही ताज्जुब हुआ । पूछा—"लेकिन, तुझे कैसे पता ?"

"मैने खुद उसे अकसीनिया चाची के यहाँ से बाड पर इधर आते देखा है ।"

"तो, वही गया था न तू, मीशात्का ? बोल···बोल···तेरा चेहरा इस तरह लाल क्यो हो रहा है ?"

मीशात्का ने दादी की आँखो मे सीधी आँखें डाली । जवाब दिया—"हाँ, मैं तुमसे झूठ बोल रहा था, दादी ! मै दोन के किनारे नही गया था···अकसीनिया चाची के यहाँ था ।"

"तू क्यो गया था वहाँ ?"

"अकसीनिया चाची ने मुझे बुलाया और मै चला गया ।"

"तो, तूने यह क्यो कहा कि तू लडको के साथ था ?"

इस पर मीशात्का एक क्षण तक तो चुप रहा । फिर उसने भोलेपन से निगाहे ऊपर उठाईं और फुसफुसाते हुए बोला—"मै डरा कि तुम बिगडोगी···"

"मैं भला क्यों बिगडूँगी तुझसे ? नही···लेकिन, अकसीनिया ने क्यो बुलाया था तुझे ? क्या करता रहा तू वहाँ ?"

"कुछ नही चाची ने मुझे देखा तो पुकारकर बोली—'यहाँ

आओ !' और, बस मैं चला गया। अकसीनिया चाची ने मुझे घर के अन्दर ले जाकर कुर्सी पर बिठाया···"

"फिर ?" इलीनीचिना ने अपनी बढती हुई उत्तेजना पर पर्दा डालने की कोशिश करते हुए बेसब्री से पूछा।

"फिर, मुझे टिकियाँ खाने को दी और फिर यह दिया।" मीशात्का ने चीनी का एक टुकडा जेब से निकाला, घमड से दिखलाया और फिर जेब मे रख लिया।

"लेकिन, उसने तुमसे कहा क्या ? पूछा कुछ ?"

"मुझसे कहा··· मै अकेली रहती हूँ···तुम जब मन करे तब चले आया करो। मै तुम्हे अच्छी-अच्छी चीजें खाने को दूँगी···लेकिन, यह बात किसी से बतलाना मन—दादी से कहोगे तो बिगडेगी वे।"

"यह कहा उसने ?" इलीनीचिना ने दबी हुई उत्तेजना के कारण हाँफते हुए कहा—"ठीक ··और तुमसे पूछा कुछ ?"

"हाँ।"

"क्या पूछा तुमसे ? बतला दो साफ-साफ ··डरो नही, बेटे !"

"फिर, अकसीनिया चाची ने पूछा कि मुझे पापा की याद आती है या नही ? मैंने कहा आती है। फिर उन्होने पूछा कि वे कब घर आएगे और क्या खबर है उनकी ? मैंने कहा—मैं कुछ नही जानता। वे तो लाम पर है।···इसके बाद उन्होने मुझे अपने घुटनो पर बिठा लिया और परियो की एक कहानी सुनाई।" मीशात्का की आँखे खुशी से चमकने लगी—"कहानी बडी अच्छी थी। कहानी जिसके बारे मे थी, उसका नाम था वान्या। उसे हस अपने पखो पर चढाकर ले गए थे। चाची ने 'बाबा-यागा'[१] नाम की चुड़ैल के बारे मे भी बतलाया था।"

इस तरह मीशात्का ने सब-कुछ कबूला तो इलीनीचिना ने अपने होठ भीच लिए। आखिर मे सख्ती से बोली—"देखो बेटा, अब न जाना वहाँ और न अकसीनिया कुछ दे तो लेना, वरना कही बाबा ने सुन लिया तो बेंत से तेरी खाल उधेडकर रख देगे। अब न जाना वहाँ, सुना, बेटे !"

लेकिन इस मनाही के बावजूद मीशात्का दो दिन बाद फिर

१. छँटी हुई, बडी उम्र की औरत।

अकसीनिया के यहाँ जा पहुँचा। इलीनीचिना ने मीशात्का की कमीज़ का निकल गया हिस्सा कायदे से रफ किया और कॉलर मे सीप का छोटा-सा नया बटन लगा देखा तो तुरन्त ही सब-कुछ भाँप गई। उसे लगा कि दून्या तो दिन-भर खलिहान के काम मे लगी रही है, उसे वक्त कहाँ मिला होगा···हो न हो, यह सब-कुछ अकसीनिया ने ही किया है। सो उसने लडके को फटकारते हुए पूछा—"तू फिर पहुँच गया अकसीनिया के यहाँ ?"

"हाँ, गया था।" मीशात्का ने घबराहट मे उगल दिया और बोला—"अब नही जाऊँगा, दादी ! इस बार माफ कर दो !"

इलीनीचिना ने मन-ही-मन तय किया—मैं सीधे अकसीनिया से बात करूँगी और उससे साफ-साफ कह दूँगी कि देख, बच्चे को न तो मिठाइयो से फुसला और न कहानियो से परचा।···इस औरत ने नताल्या की जान ले ली और अपना रास्ता साफ कर लिया···अब ग्रिगोरी को नए सिरे से फँसाने के लिए बच्चो को हिला रही है। कैसी नागिन है ! अपना आदमी सही-सलामत है, मगर इस पर भी मेरे बेटे की बहू बनने के सपने देख रही है। खैर, इन कोशिशो से होना-जाना कुछ नही है। फिर, ऐसे तूफान के बाद ग्रिगोरी ही भला उसे क्यों कबूल करेगा ?···

माँ की पैनी और डाही निगाहो से यह बात अनदेखी न रही थी कि ग्रिगोरी जब घर पर था तो अकसीनिया से मिलना उसने जान-बूझकर बरकाया था। इसका कारण उसने समझना चाहा तो लगा कि ग्रिगोरी लोगो की लानत-मलामत के डर से उतना नही बिदका, जितना अपनी बीवी की मौत का मुजरिम उसी को समझकर वह उससे कटा। इस तरह इलीनीचिना ने अपने-आपसे कहा—"नताल्या की मौत से ग्रिगोरी और अकसीनिया के बीच हमेशा-हमेशा को एक दीवार खडी हो गई है और अब ऐसे मे अकसीनिया इस घर में बहू बनकर तो क्या ही आएगी।"···

सो उसी दिन शाम को वह अकसीनिया से दोन के घाट पर मिली और बोली—"इधर आओ···जरा मेरी बात सुनो···मुझे कुछ कहना है

तुमसे···।"

अकसीनिया ने शात भाव से बाल्टियो की बहगी नीचे रख दी और अभिवादन करते हुए इलीनीचिना की ओर बढी । इलीनीचिना ने उसके खूबसूरत चेहरे पर नज़र डालते हुए कहना शुरू किया—"सुनो अकसीनिया, तुम दूसरो के बच्चे हथियाने मे क्यो लगी हुई हो ? मीशात्का को अपने यहाँ बुला-बुलाकर उसे परचाना क्यो चाहती हो ? किसने कहा तुमसे कि तुम उसकी कमीज ठीक कर दो और उसे चीजे दिया करो ? आखिर तुम्हारे दिमाग मे है क्या ? तुम्हारा खयाल है कि उस बच्चे की माँ नही रही तो उसकी फिक्र करनेवाला कोई नही बचा ? यानी, तुम्हारे बिना हमारा काम चलेगा नही ? तुम्हारे पास रूह नाम की कोई चीज़ है या नही ? तुमने आँखो की सारी शर्म धोकर पी ली है क्या ?"

"लेकिन मैने तुम्हारा बिगाडा क्या है ? तुम इस तरह बिगड क्यो रही हो, दादी ?" अकसीनिया ने क्रोध मे आते हुए कहा ।

"क्या मतलब है···यानी अभी यह भी है कि तुमने बिगाडा क्या है ? तुम्हे नताल्या के बच्चे को हाथ लगाने का क्या हक है, जब तुमने खुद उसे मौत के मुँह मे ढकेला ?"

"ऐसा तुम कैसे कह सकती हो, दादी ? ज़रा होश की बातें करो। किसने ढकेला उसे मौत के मुँह मे ? उसने तो अपनी जान आप दी ।"

"और उसकी जड मे तुम नही रही ?"

"मुझे उसके बारे मे कुछ भी पता नही ।"

"लेकिन मुझे तो है ।" इलीनीचिना आपे से बाहर होते हुए चीखी।

"चिल्ला मत, बुढिया · मैं कोई तेरी बहू नही हूँ कि तेरी आँखें देखूँगी । आँखे दिखलाने को मेरा आदमी ही बहुत है ।"

"मैं तुम्हारी नस-नस समझती हूँ । मै तो यह भी जानती हूँ कि तुम मसूबे क्या बाँध रही हो । तुम मेरी बहू नही हो, लेकिन चाहती हो कि हो जाओ । पहले तुम्हारा इरादा बच्चो को अपने हाथ मे ले लेने का है और फिर ग्रीशा को अपनी मुट्ठी मे कर लेने का । ठीक है न ?"

"नही, तुम्हारे बेटे की बीवी बनने का मेरा कोई इरादा नही । तेरा दिमाग़ खराब है क्या, बुढिया ? मेरा अपना आदमी अभीजि न्दा है ।"

"यही तो सारा रोना है कि तुम अपने जिन्दा आदमी को छोडकर एक दूसरे आदमी के गले बँधना चाहती हो।"

अकसीनिया का चेहरा एकदम उतर गया। बोली—"मेरी समझ मे नही आता कि तुम क्यो हाथ धोकर मेरे पीछे पडी हुई हो, और क्यो इस तरह कोसाकासी कर रही हो! मैंने कभी किसी के गले मे बंधना नही चाहा, और न आज चाहती हूँ। जहाँ तक तुम्हारे पोते के साथ मेरी ममता का सवाल है, इसमे भला बुराई क्या है? तुम्हे अच्छी तरह पता है कि मेरी अपनी कोई आस-औलाद नही है, इसलिए दूसरो के बच्चो को देखकर मुझे खुशी होती है, और इसी नाते मैने बच्चे को बुला लिया था। और चीजो के नाम पर मैंने उसे एक चीनी का टुकडा ही तो दिया···इसी को तुम चीजे कहती हो? फिर चीजे मै उसे देने भी क्यो लगी? नीले आसमानवाला ही जाने कि तुम क्या बक-बका रही हो।"

"मीशात्का की माँ जब तक जिन्दा थी, तब तक तुमने उसे कभी अपने यहाँ नही बुलाया। लेकिन उसकी आँखे मुँदते ही तुम्हारे दिल मे उसके बच्चे के लिए ममता फूट पडी!"

"नताल्या थी तब भी वह जब-तब मेरे यहाँ आता था।" अकसीनिया ने हलके-से मुस्कराए बिना कहा।

"झूठ मत बोल, बेशर्म, रण्डी कही की!"

"तुम पहले उससे पूछ लो, तब मुझे जो चाहो सो कहो।"

"खैर अब तक कैसा क्या था, इसमे मैं नहीं पडती। लेकिन आज कहती हूँ कि अब उस बच्चे को अपने यहाँ बुलाने की हिम्मत न करना। और यह बात तो अपने दिल से निकाल ही दो कि इस तरह तुम ग्रिगोरी का मन जीत लोगी। तुम उसकी बीवी कभी नही बन सकती, मेरी यह बात याद रखना!"

अकसीनिया का चेहरा गुस्से से ऐंठ उठा। भर्राए गले से बोली—"ज़बान बद कर···वह मुझे बीवी बनाना चाहेगा तो तुझसे पूछने नही जाएगा · फिर, दूसरो के मामले मे टाँग अडाने की आदत छोड!"

इलीनीचिना ने जवाब मे कुछ और कहना चाहा, पर अकसीनिया

चुपचाप मुडी, अपनी बाल्टियो की बहँगी के पास आई, कराह के साथ बहँगी कधे पर रखी, और पानी छलकाती तेजी से अपने रास्ते पर बढ चली।···

इस घटना के बाद मेलेखोव परिवार का कोई भी सदस्य जब भी आते-जाते राह मे अकसीनिया को मिल जाता वह उसका अभिवादन तक न करती और अकूत स्वाभिमान से नाक फुलाती चुपचाप वगल से निकल जाती। लेकिन मीशात्का जब भी कही अकेला नजर आता, वह कातर भाव से चारो तरफ निगाहे दौडाती और किसी को आसपास न देखती तो भागी-भागी उसके पास पहुँचती, झुकती, बच्चो को सीने से चिपटा लेती, एक साथ हँसते और रोते हुए, उसकी धूप से काली भौहें और ग्रिगोरी की-सी उदासी से भरी, काली, नन्ही-नन्ही आँखे चूमती और अस्फुट स्वर मे धीरे से कहती—"मेरे नन्हे-मुन्ने ग्रिगोरिएविच! मेरे राजा बेटे! मैं तुम्हारे लिए किस तरह कलपती रही हूँ! तुम्हारी अकसीनिया चाची बेवकूफ है ··उफ, कितनी बेवकूफ है!" और फिर बहुत देर तक उसके होठो पर मुस्कान थिरकती रहती, और उसकी आँसुओ से डबडबाई आँखे इस तरह खुशी से चमकती रहती, जैसे कि अभी वह कम उम्र, जवान लडकी हो!

···अगस्त के अन्त मे पैन्तेली को फौज मे बुला लिया गया, और उसके साथ ही हथियार सम्हालने लायक तातारस्की के सभी कज्जाक लाम पर चले गए। गाँव मे मर्दों के नाम पर बाकी रह गए, सिर्फ लडाई के जख्मी, नाबालिग बच्चे और अपाहिज बूढे। लूले-लगडे या अपगु लोग तक डॉक्टरी कमीशन के बाद ही इस तरह लहर से बच सके।···

पैन्तेली को गाँव के अतामान का आदेश मिला तो उसने जल्दी-जल्दी अपनी बूढी पत्नी, अपने पोते-पोती और अपनी बेटी से बिदा ली। वह कराहते हुए घुटने तोडकर जमीन पर बैठा, दो बार धरती पर शीश झुकाया और देव-मूर्तियो के सामने क्रॉस बनाते हुए बोला—"अलविदा, अजीजो! लगता है, अब दुबारा हम एक-दूसरे को देख न पाएँगे। आखिरी वक्त आ गया है! तुम लोगो को मेरा हुक्म है कि रात को अनाज ओसाना, दिन को अनाज ओसाना, और बरसात शुरू होने के पहले

पहले यह काम खत्म कर लेना। जरूरत पड़े तो कोई मजदूर रख लेना। फिर अगर खिजाँ के वक्त तक मैं न आऊँ तो मेरे बिना ही काम चलाना। खिजाँ के खेत ताकत-भर जोतना और उनमे राई बो देना। कम से-कम दो एकड मे तो राई बोना ही और बीबी, तुम अपने दिमाग पर सुस्ती मत छाने देना। काम कायदे से चलाना। हाथ-पैर चलाती रहना। ग्रिगोरी और मैं यानी हम दोनो लौटें और चाहे न लौटे, अनाज की तो तुम्हे जरूरत पडेगी ही, और सबसे ज्यादा पडेगी। लडाई लडाई है, मगर रोटी भी एक ऐसी चीज है कि न हो तो जिन्दगी काटे नही कटती। ··अच्छा, ऊपरवाला तुम सबके सिरो पर हिफाजत का हाथ रखे!"

इलीनीचिना चौक तक अपने पति के साथ गई, उसे क्रिस्तोनिया के साथ भचक भचककर तेजी से गाडी की ओर बढते आखिरी बार देखा, एप्रन के सिरे से अपनी सूजी हुई आँखे पोछी और फिर, एक बार भी मुडकर देखे बिना घर को लौट दी।

खलिहान मे गेहूँ का अध-ओसाया अम्बार लगा था, स्टोव पर दूध रखा था और बच्चो ने सुबह से कुछ न खाया था, इसलिए इलीनीचिना राह मे कही न रुकी। बगल से औरते गुजरीं तो उसने चुपचाप नमन-भर कर लिया, बातचीत किसी तरह की कोई न की। फिर जब एक परिचिता ने हमदर्दी से पूछा कि अपने सूरमा को रुखसत कर आई, तो सिर्फ सिर-भर हिला दिया कि हाँ।···

कई दिन बाद, एक दिन तडके इलीनीचिना ने गाये दुहकर उन्हे बाहर निकाला और अहाते मे लौटने लगी कि उसे एक गरज-सी सुनाई दी। उसने मुडकर देखा तो आसमान मे कही कोई बादल नजर न आया। पर गरज जरा देर बाद फिर हुई।

"यह गाना तुमने सुना, इलीनीचिना ?" बूढे चरवाहे ने इधर-उधर की गायो को हाँककर एक जगह जमा करते हुए पूछा।

"कैसा गाना ?"

"कैसा गाना·· अरे, वही धीमे-धीमे सुनाई पडनेवाला।"

"सुना तो, पर समझ मे न आया कि आखिर यह है क्या ?"

"समझ जाओगी ··जल्दी ही समझ जाओगी···वह उधर से आकर जब यहाँ इस गाँव पर चोट करेगा, तो तुम्हारी भी समझ मे आ जाएगा ·· फौरन ही आ जाएगा। यह तोप का धमाका था वे लोग हमारे बड़े-बूढो की हड्डी-पसली चूरा किए दे रहे है···"

इलीनीचिना ने क्रॉस बनाया और बेत के छोटे फाटक मे चुपचाप दाखिल हो गई।

फिर तो, तोपो के धड़ाके चार दिन तक बराबर होते रहे। वे रात-ढले और दिन-ढले खास तौर पर जोर से सुनाई पड़ते। लेकिन हवा उत्तर-पूर्व की ओर मे बहती तो दूर की घमासान लड़ाई का शोर-गुल दिन मे भी सुन पड़ता। ऐसे मे खलिहान का काम क्षण-भर को रुक जाता। औरते क्रॉस बनाने लगती, लम्बी-लम्बी आहे भरने लगती और अपनो की याद कर ईश्वर से प्रार्थनाएँ करने लगती। लेकिन इसके बाद ही पत्थर के रोलर फिर गड़गड़ाने लगते, लड़के घोड़ो और बैलो को फिर तेजी से हाँकने लगते और कभी न हराई जा सकनेवाली मशक्कत फिर अपने अधिकार अपने हाथो मे ले लेती।

· अगस्त के अंतिम दिन आश्चर्यजनक रूप से सुहाने और खुश्क रहे। हवा भूसे का गर्दा गाँव-भर मे उड़ाती फिरी। राई के भूसे की सोंधी-सोंधी महक हर जगह लटकी-सी रही, और धूप की बेरहमी के बावजूद जर्रे जर्रे से आनेवाली खिजाँ का सकेत मिलने लगा। मुरझाया हुआ पेड़की के रग का चिरायता कुछ-कुछ सफेद दीखने लगा। दोन के पार देवदारुओ के सिरे पीले पड़ गए। बगीचो मे खिजाँ के सेबो से उभरनेवाली महक और तेज़ हो उठी। दूर का क्षितिज और साफ हो उठा, और जाड़ा बिताने के लिए कही और जाने वाले पछियो के पहले दल कटे हुए खेतो मे नजर आने लगे।

फौजी सामान से भरी मालगाड़ियाँ पूर्व की ओर पश्चिम से हेत-मान की बड़ी सड़क पर लुढक-लुढककर पार जाने के लिए दोन की ओर बढने लगी। दोन के किनारे बसे गाँवो मे शरणार्थी आने लगे। उनमे से कुछ ने बतलाया कि कज्जाक लड़ते हुए पीछे हट रहे है, मगर कुछ ने कहा कि कज्जाक जान बूझकर पीछे हट रहे है, ताकि उसी झोक में

लाल फौजी भी पीछे चलते चले आएँ और फिर वे उन्हे घेरकर तल-वार के घाट उतार दे।

इस पर तातारस्की के कुछ लोग भी लडने की तैयारी करने लगे। वे अपने बैलो और घोडो को खूब खिलाते और रात होने पर अनाज और कीमती माल-मते से भरे सन्दूक खाइयो मे गाडते।··

फिर तोपो के शात पड जानेवाले धड़ाके पाँच सितम्बर को नए सिरे से और जोर से गूँजे और इस बार कही साफ सुनाई पडे। डर और दहशत बढी। लडाई, दोन के पार तातारस्की के उत्तर-पूर्व मे, कोई चालीस वर्स्ट के फासले पर चलने लगी। अगले दिन तोपो के धडाको ने पश्चिम को भी हिला दिया। मोर्चा बराबर नदी की ओर खिचता गया।

इलीनीचिना ने ज्यादातर लोगो के गाँव छोडकर जाने की तैयारी की बात सुनी तो दून्या से बोली—"चलो, हम भी अपनी तैयारी कर। पर वह परेशान हो गई और असमजस मे पड गई। उसकी समझ मे न आया कि फार्म और घर का आखिर क्या किया जाए ? बुढिया दुविधा मे पड गई कि औरो की तरह ही सब-कुछ छोड-छाडकर चल दे या घर पर ही बनी रहे ? पैन्तेली ने जाते समय ओसाई की और ढोरो की तो बात की थी, लेकिन यह बिल्कुल न बतलाया था कि लडाई तातारस्की तक खिच आए तो क्या हो!

आखिरकार इलीनीचिना ने निश्चय किया—दून्या और बच्चो को सारी कीमती चीजो के साथ गाँव के किसी आदमी को सहेज दूँगी, यहाँ से कही और भेज दूँगी और खुद घर पर ही बनी रहूँगी। और फिर लाल फौजियो के घुस आने पर भी यही बनी रहूँगी।

···१७ सितम्बर की रात को पैन्तेली एकाएक घर आया। पर कजान्स्काया जिला-केन्द्र के पास की किसी जगह मे गाँव तक पैदल आने के कारण थकान से चूर-चूर और खीझा-खीझा लगा। मगर, आधे घटे के आराम के बाद वह खाने की मेज़ के किनारे आकर बैठा तो उसका खाना देखकर इलीनीचिना को जीवन का एक नया ही अनुभव हुआ। पैन्तेली ने पातगोभी का कोई आधी बाल्टी शोरबा देखते-देखते साफ

कर दिया और फिर जुआर की लपसी पर टूटा। बुढिया ने ताज्जुब से हाथ पीट लिए।

"हे नीली छतरीवाले !···कितना खा रहे हो तुम, प्रोकोफियेविच ! लगता है, जैसे कि तीन दिन के भूखे हो !"

"अच्छा, तो तुम्हारा खयाल है कि मैंने कुछ खाया भी है···बेवकूफ कही की। पिछले तीन दिनो से तो एक बूंद पानी तक मुँह मे नही गया।"

"तो फौजियो को वे लोग खाना नही देते क्या ?"

"शैतान उन्हे भी वैसा ही खाना दे जैसा फौजियो को लडते वक्त देते है।" पैन्तेली ने बिल्ली की तरह घुर्राते हुए जवाब दिया—"जो कुछ तुम्हारे हाथ लग जाए, खा-पीकर खत्म कर दो ! ··पर चोरी करना मैने अभी तक सीखा नही। फिर जवान करें यह सब ! उनके पास रूह जैसी कोई चीज बची नही। इस गुनहगार लडाई ने उन्हे ऐसा उठाईगीरा बना दिया है कि मैने देखा तो मुझे तो बहुत ही गहरा धक्का लगा। लेकिन बाद मे मैने अपने दिमाग का बोझ उतार दिया। वे तो जो कुछ देखते है, हडप लेते है, और उसे खीच ले जाते है · यह लडाई नही है, बल्कि यह तो ऊपर वाले के इशारे पर ढहने वाली कयामत है।"

"तुम्हे एक साथ इतना खाना नही चाहिए था। कही कुछ हो न जाए। जरा देखो तो कैसे फूल गए हो, बिलकुल मकडे की तरह।"

"जबान बद कर ! थोडा-सा दूध ला दे···घर के बडे-से-बडे बरतन मे ऊपर तक भरकर।"

इलीनीचिना ने अपने भूख से टूटे पति की हालत देखी तो उसकी आँखें भर आईं। आखिरकार जब पैन्तेली ने तश्तरी छोडकर पीठ सीधी की तो पूछा—"अब तो नही जाना है ?"

"देखा जाएगा।" बूढे ने बात टाली।

"मेरा खयाल है कि बडे अफसरो ने तुम सब बड़े-बूढो को घर आने की इजाजत दे दी है···है न ?"

"उन्होने किसी को घर लौटने की इजाज़त नही दी है। और

इजाजत वे दे भी कैसे सकते है, जब लाल फौजी दोन की तरफ बढे चले आ रहे है? मै तो उड आया यो ही।"

"लेकिन इस तरह उड आने के लिए जवाबदेही नही करनी पडेगी तुम्हे ?"

"अगर पकडा जाऊँगा तो जरूर करनी पडेगी।"

"तो, क्या तुम अपने को छिपाकर रखोगे ?"

"और, तुमने क्या सोचा था कि मै लोगो के यहाँ मेहमानियाँ खाता फिरूँगा या चौक मे नाचता-गाता फिरूँगा ? उफ, काठ की उल्लू ही रही तुम !" पैन्तेली ने गुस्से से जमीन पर थूका, लेकिन बुढिया अपना तार छेडती ही रही—"यानी, अभी दुख-दर्द जैसे हमने कुछ कम उठाए है, जो अब तुम्हारी गिरफ्तारी भी आँखो से देखनी पडेगी·· "

"खैर, जेल मे दिन काटना राइफल लेकर पूरा स्तेपी मैदान मँझाले फिरने से कही बेहतर होगा।" पैन्तेली ने थकान से भरे स्वर मे कहा—"मै अब कोई जवान तो रखा ही नही हूँ कि एक-एक दिन मे चालीस-चालीस वर्स्ट तय करता फिरूँ, खाइयाँ खोदता फिरूँ, डबल-मार्च कर दुश्मन पर हमला बोलता फिरूँ और सिर झुकाकर गोलियाँ बचाते हुए जमीन पर रेगता फिरूँ।·· एक गोली क्रिवाया रेचका के मेरे एक साथी के कधे की हड्डी मे ऐसी लगी कि उसने एक बार पैर तक नही पटका। इन सारी चीजोमे कोई बहुत मजा नही रखा है।"

बूढा अपनी राइफल और कारतूसो की थैली लेकर बाहर गया और उसे भूसे के शेड मे छिपा आया। पर जब बुढिया ने कोट के बारे मे पूछा तो यो ही से ढग से, जरा सकोच से बोला—"मैने पहन-पहनकर फाड डाला, और जो ठीक-ठीक पूछो त मैने फेक दिया। बात यह है कि शुमिलिन्स्क के पार दुश्मनो ने ऐसा दबाया कि जिसके पास जो था उसने वही फेक दिया और पागल की तरह भाग निकला। ऐसे मे कोटो की फिक्र कौन करता ! कुछ लोगो के पास भेडो की खाले थी। उन्होने तो वे खाले तक फेंक दी। ऐसी हालत मे कोट तुम्हारे दिमाग मे क्यो नाच रहा है ? फिर, अगर वह किसी लायक होता तो भी और बात थी···वह तो किसी फकीर तक को देने लायक नही रह गया था···।"

वास्तव मे कोट ठीक-ठाक और अच्छा था, पर बूढे का स्वभाव था कि जो कुछ किसी भी स्थिति मे उसे त्यागना पडता था, वह उसके लिए अच्छा न रह जाता था। यही कारण है कि उसने कोट के सिल-सिले मे इस तरह की बाते की। इलीनीचिना ने बूढे की तबीयत की जानकारी के कारण कोट की अच्छाई-बुराई के बारे मे आगे कुछ नही कहा।

···फिर रात को परिवार के सदस्यो की अपनी परिषद् बैठी और उसमे निश्चित हुआ कि जमीन-जायदाद की हिफाजत और अनाज की गडाई के लिए पैन्तेली और इलीनीचिना आखिरी लमहेत क गाँव मे ही रहेगे। पर दून्या घर के सामान के बक्स गाडी पर लादकर नाते-रिश्ते-दारो के पास लातिशेव या चिर चली जाएगी।

लेकिन योजना पर पूरी तरह अमल हो नही पाया। अगले दिन सवेरे दून्या को रुखसत कर दिया गया। पर दोपहर होते-होते ही काल्मीक-कज्जाको की सजा देने वाली फौजी टुकडी, घोडो पर सवार, तातारस्की आ धमकी। शायद गॉव के किसी कज्जाक ने पैन्तेली को घर जाते देख लिया था, क्योकि आने के एक घण्टे बाद ही काल्मीक कज्जाक मेलेखोव के अहाते मे नजर आए। पैन्तेली, घुडसवारो को देखते ही गैर-मामूली फुर्ती और तेजी से हाथो और घुटनो के बल ऊँची-से-ऊँची जगह पर चढ गया। इलीनीचिना मेहमानो की अगवानी के लिए निकलकर बाहर आई।

"कहाँ है तेरा बुड्ढा ?" सार्जेंट-मेजर की पट्टियो वाले, एक गठीले बदन और सयानी उम्र के काल्मीक ने घोडे से उतरते और बुढिया को धक्का देकर बेत के छोटे फाटक से अन्दर दाखिल होते हुए पूछा।

"मोर्चे पर है और कहाँ होगा भला ?" इलीनीचिना ने मोटे ढग से जवाब दिया।

"घर मे ले चल हमे·· हम तलाशी लेगे।"

"किसलिए ?"

"बूढे की तलाश के लिए···उफ, शर्म नही आती तुझे···ऐसी और इतनी सयानी होकर झूठ बोलती है ?" एक जवान-से सार्जेंट ने

इलीनीचिना का सिर झकझोर दिया और अपने सेट हुए दाँत पीसे।

"इस तरह दाँत मत पीसो, समझे! मैने कहा कि पैन्तेली घर पर नही है·· इसका मतलब है कि वह घर पर नही है।"

"बेकार की बात बद कर, घर मे ले चल हमे ··और अगर तू नहीं ले चलेगी, तो हम खुद घर के अन्दर घुस जाएँगे।" नाराज़ काल्मीक ने सख्ती से कहा और अपने आगे की ओर मुडे पैरो से लम्बे-लम्बे डग भरता बरसाती की ओर बढा।

और, फिर फौजियो ने कमरो की पूरी तलाशी ली और इसके बाद अपनी बोली मे कुछ कहा। इस पर उनमे से दो आदमी पीछे के अहाते की ओर बढे और नाटे कद, चेचक के दाग वाले, साँवले, लगभग काले चेहरे और बैठी हुई नाक के काल्मीक ने अपनी चौडी, धारीदार शारोवारी उतारी और बरसाती मे आया। इलीनीचिना ने खुले दरवाजे से देखा कि वह आदमी कूदा, उसने उछलकर धन्नियाँ पकडी और अपने को ऊपर खीचा। पाँच मिनट बाद ही वह कूदकर नीचे आया और उसके पीछे-पीछे सावधानी से नीचे कूदा, आहे भरता, धूल से नहाया, मकडी का जाला अपनी दाढी मे उलझाए पैन्तेली। उसने बुढिया को दाँत भीचे खडा देखा तो बोला—"आखिरकार इन लोगो ने ढूँढ ही लिया मुझे! मौत ले जाए इन्हें। लगता है कि किसी-न-किसी ने बतलाया है··"

तो, पैन्तेली को पहरे मे, कारगिन्स्काया के ज़िला केन्द्र मे ले जाया गया। यहाँ बाद मे उसका कोर्ट मार्शल हुआ। इलीनीचिना घर पर थोडी-बहुत रोई। पर इसी समय तोपो के धडाके और मशीनगनो की आवाज दोन के पार से नए सिरे से साफ सुन पडी तो वह खत्ती मे गई कि कम-से-कम थोडा अनाज तो छिपा दे।

· २२ ·

चौदह गिरफ्तार भागने वालो को कोर्ट-मार्शल के दिन गिनने पडे। कोर्ट-मार्शल मे बहुत वक्त नही लगा। फैसले बेरहमी से किये गए। अदालत के प्रधान सयानी उम्र के कैप्टन ने हर अपराधी से नाम,

रेजीमेट और रेजीमेट से गायब रहने का समय पूछा, फिर अदालत के दूसरे सदस्यो यानी एक हाथ वाले एक लेफ्टिनेण्ट और आराम की जिन्दगी पर पले, दाढी से मढे, फूले गालो वाले सार्जेन्ट से धीरे-धीरे कुछ बाते की और अपना फैसला सुना दिया। ज्यादातर भगोडो को बर्चे के बेत लगाए जाने की सजा दी गई और काल्मीको ने इस काम के लिए निश्चित एक सूने घर मे सजा को अमल मे बदला। 'इस समय १९१८ की तरह खुले आम बेत लगाना सम्भव न था, क्योकि हर दिन ही लडाकू दोन सेना के सदस्य फौज से भाग खडे होते थे। बीमारी खासी फैल गई थी'।

सो, अदालत मे पेश किए जाने वालो मे पैन्तेली का नम्बर छठा रहा। वह परेशानी से भरा, पीला चेहरा लिये जजो की मेज के सामने हाथ गिराकर आ खडा हुआ।

"तुम्हारा कुल नाम?" कैप्टन ने अपराधी की ओर देखे बिना पूछा।

"मेलेखोव, हुजूर!"

"तुम्हारा नाम, पिता का नाम पूरा पता?"

"मेरा नाम पैन्तेली···बाप का नाम प्रोकोफी· पूरा नाम पैन्तेली-प्रोकोफियेविच—हुजूर?"

कैप्टन ने आँखे सामने के कागजो से ऊपर उठाई और बूढे को एकटक देखा, पूछा—"कहाँ के हो?"

"व्येशेन्स्काया जिले के तातारस्की गाँव का हूँ, हुजूर!"

"तुम स्क्वैड्रन कमाडर ग्रिगोरी मेलेखोव के पिता तो नही हो?"

"हूँ, हुजूर!" पैन्तेली के बदन मे फौरन ही नई जान आ गई। उसे ऐसा लगा जैसे कि बर्चे का बेत उसके बूढे शरीर से दूर खिचता जा रहा है।

"अच्छा यह बताओ कि तुम्हे अपनी हरकत पर शर्म नही आती?" कैप्टन ने दिल तक छेड देने वाली अपनी निगाहे पैन्तेली के बैठे हुए चेहरे पर जमाए-ही-जमाए पूछा।

इस पर बूढ़े ने सारे कानून-कायदे तोड़ते हुए अपना बायाँ हाथ

अपने बाएँ सीने पर रखा और रुआँसी आवाज मे बोला—"कैप्टन बहादुर···सरकार···मुझे मौका दीजिए कि मैं ऊपर वाले से जिन्दगी-भर आपके लिए दुआ माँग सकूँ ! मुझे बेंत की सजा न दीजिए। मेरे दो बेटे थे···दोनो शादीशुदा, पर बड़ा लाल फौजियो से लडते हुए लडाई मे मारा गया···मेरे छोटे-छोटे पोते-पोती है·· क्या जरूरी है कि मेरे जैसे टूटे हुए बूढे को भी बेंत लगाए जाएँ ?"

"हमे तो फौज के बूढो और जवानो दोनो को ही राह पर लाना है। तुम्हारा खयाल था कि तुम फौज से भाग खडे होगे तो तुम्हे क्रॉस इनाम मे दिए जाएँगे ?" एक हाथ वाला लेफ्टिनेट बीच मे बोला। उसके होठो के सिरे फडकने लगे।

"क्रॉस भला क्यो चाहूँगा मै···? मुझे मेरी रेजीमेट में वापस भेज दीजिए···अब मै सच्चाई और ईमानदारी से अपना फर्ज अदा करूँगा ··मैं खुद नही जानता कि फौज से क्यो भागा···लगता है कि कोई शैतान मेरे सिर पर सवार हो गया।" फिर पैन्तेली अपने अन-ओसाए अनाज, अपने लँगडे पैर और बुरी हालत मे पडे अपने फार्म के गाने गा चला। परन्तु, कैप्टन ने हाथ के एक इशारे से उसे शात कर दिया और फिर लेफ्टिनेन्ट की तरफ झुककर उसके कानो मे कुछ फुसफुसाने लगा। इस पर लेफ्टिनेन्ट ने सिर हिलाया, तो कैप्टन पैन्तेली की ओर मुडा—"ठीक ! तो तुम्हे जो कहना था, तुम कह चुके न ? मैं तुम्हारे बेटे को जानता हूँ, और मुझे ताज्जुब है कि उसका बाप ऐसा है। तो, फौज से कब भागे तुम ? · एक हफ्ता पहले ? यानी तुम क्या चाहते हो कि लाल फौजी तुम्हारा गाँव हथिया ले और तुम्हारी खाल उधेडकर रख दे ? जवान कज्जाको के सामने यही मिसाल रखना चाहते हो तुम ? तो, कानून के मुताबिक तो हम लोगो को तुम्हे बेत लगाए जाने की सजा देनी चाहिए, लेकिन तुम्हारा बेटा अफसर है और हम उसकी इज्जत करते है, इसलिए तुम्हे बेइज्जती से बचाना चाहते हैं। तुम नॉन-कमीशन अफसर रहे हो ?

"जी, हुजूर !"

"क्या थे तुम ?"

"कारपोरल, हुजूर !"

"तुम्हे उस ओहदे से हटाकर मामूली फौजी किया जाता है।" कैप्टन ने निगाह ऊपर की और कडाई से आदेश दिया—"फौरन जाओ अपनी रेजीमेट मे रिपोर्ट करो और अपने स्क्वैड्रन कमाडर को इत्तिला दो कि कोर्ट मार्शल ने अपना फैसला देकर तुमसे कारपोरल का ओहदा छीन लिया है। इस लडाई या पहले की किसी लडाई मे किसी तरह का कोई इनाम मिला है तुम्हे ··? अच्छा, जाओ यहाँ से।"

पैन्तेली खुशी से फूला न समाया। उसने गिरजे के सामने खडे होकर क्रॉस बनाया और पहाडियाँ पार कर हवा की रफ्तार से घर की ओर उड चला। राह मे घास का मैदान भचक-भचककर पार करते समय उसने सोचा—'खैर इस बार अपने को छिपाकर दिखला दूँगा मैं और इस तरह छिपा दूँगा कि शैतान भी हाथ मलकर रह जाएंगे। भेजे, चाहे तो काल्मीको की तीन स्क्वैड्रने भेज दें · अब की इन्हे मेरा पता मिलने से रहा।'

स्तेपी के मैदान मे उसे खयाल आया कि आते-जाते घुडसवारो की निगाह बचाने के खयाल से उसे सडक-सडक चलना चाहिए।

'अगर सडक-सडक न चलूँगा तो लोग अदबदाकर सोचेंगे कि मैं फौज से भागकर आ रहा हूँ। फिर कही फौजियो से टक्कर हो गई तो इस बार बिना बहस-जिरह के वे बेत से मेरी पीठ तोडकर रख देगे।' जुते खेत छोडकर केले के पेडो से भरे एक वीरान रास्ते पर आते हुए उसने मन-ही-मन कहा और जाने क्यो अब उसे ऐसा लगने लगा जैसे कि फौज से वह पहले कभी नही भागा।

पैन्तेली ज्यो-ज्यो दोन की ओर बढा, त्यो-त्यो शरणार्थियो की गाडियाँ उसे राह मे दीखी। बसत मे लोगो के लडाई को पीठ दिखाकर पीछे भागने के समय जो दृश्य नजर आए थे, वे एक बार फिर सामने लगे। घरेलू चीजो से भरी गाडियाँ और मार्च के सिलसिले मे बढते घुड़सवार फौजियो मे डकारते मवेशी हर ओर फैले मिले। भेडो के रेबड धूल के बादल उडाते रहे। पहियो की चरमराहट, घोडो की हिनहिनाहट, इन्सानी चीखो, अनगिनत टापो की टपाटप, भेडो की

मे-मे और बच्चो की रुलाई से पूरा स्तेपी मैदान भरा रहा। उसकी शाति का तार रह-रहकर टूटता रहा और वातावरण मे हलचल पैदा करने वाली आवाजे रह-रहकर उभरती रही।

"कहाँ जा रहे हो, दादा? लौट आओ ··लाल फौजे हमारे ऐन पीछे है।" बगल से गुजरती गाडी मे बैठे एक कज्जाक ने कहा। उसके सिर मे पट्टी बँधी हुई थी।

"तुम अपने रास्ते जाओ। कहाँ है लाल फौजी?" पैन्तेली बेहद घबरा गया और ठिठक रहा।

"लाल फौजी दोन की दूसरी तरफ है। व्येशेन्स्काया के पास पहुँचते ही है। क्या तुम उनके हाथो सौप रहे हो अपने को?"

पैन्तेली ने अपने और लाल फौजियो के बीच नदी के दोन की बात सुनी तो उसे नए सिरे से ढाढस बँधा और उसने अपना सफर बराबर जारी रखा। शाम होते-होते वह तातारस्की के पास पहुँच गया। पर पहाडी से उतरते समय चारो ओर निगाह दौडाई तो गाँव को एकदम बीरान पाकर उसके अचरज का ठिकाना न रहा। गली-सडक पर कही कोई परिंदा पर भरता न समझ पडा। घरो की झिलमिलियाँ बन्द रही और उनमे सन्नाटा उमड़ता रहा। न कही किसी इन्सान की आवाज सुन पडी और न कही किसी जानवर की। मगर नीचे नदी के किनारे जरूर कुछ जिन्दगी नजर आई, पैन्तेली ने वहाँ के हथियारबन्द कज्जाको को आसानी से पहचान लिया। वे बजरे घसीट-घसीटकर गाँव मे ले जाते लगे। अनुमान लगा कि तातारस्की के कुल-के-कुल लोग जगह छोडकर चले गए है। पैन्तेली किनारे की गली मे मुडकर अपने घर की ओर बढा। इलीनीचिना और पोता-पोती बावर्चीखाने मे बैठे मिले।

"अरे बाबा आ गए···बाबा" मीशात्का खुशी से चिल्ला पड़ा और उसने बूढे के गले मे हाथ डाल दिए।

इलीनीचिना की आँखे खुशी से भर आईं। आँसुओ के बीच बोली—"मुझे नही उम्मीद थी कि तुम्हे दुबारा देख भी सकूँगी। अब प्रोकोफिएविच, तुम जैसा चाहो करो, पर मै यहाँ एक लमहा भी

रहने को तैयार नही। हर चीज़ जलकर राख होनी हो तो हो जाए, पर छूँछे घर की पहरेदारी मुझसे होने से रही। गाँव के करीब-करीब सभी लोग यहाँ से कभी के चले गए है, मगर मैं हूँ कि बच्चो को लिये बेवकूफ की तरह जहाँ-की-तहाँ बैठी हूँ। मै तो कहती हूँ कि तुम फौरन ही घोडी गाडी मे जोतो और हम जहाँ सीग समाएँ, वहाँ चले चलें। तुम्हे छोड दिया उन अफसरो ने ?"

"हाँ।"

"बिल्कुल ?"

"हाँ, बिल्कुल ही समझो जब तक कि दुबारा उनके हाथ न पड जाऊँ।"

"लेकिन तुम्हारा यहाँ छिपा रह सकना मुमकिन नही। आज सबेरे सामने के किनारे से लाल फौजियो ने गोली चलाना शुरू किया तो हालत बहुत ही नाजुक हो गई। मैने बच्चो को पूरा वक्त तहखाने मे रखा। पर फिलहाल वे अपनी जगह नही है। उन्हे पीछे ठेल दिया गया है। पर यहाँ कुछ कज्जाक दूध माँगने आए और उन्होने हमे फौरन ही यहाँ से चले जाने की सलाह दी।"

"कज्जाक आए ? कही अपने गाँव के तो नही ?" पैन्तेली ने खिडकी के चौखटे मे लगी गोली के निशान को गौर से देखते हुए जरा दिलचस्पी से पूछा।

"नही · वे लोग यहाँ के नही थे · खोपर के थे ··मेरा ख़याल है।"

"अगर ऐसा है तो हमे गाँव छोड ही देना चाहिए।" पैन्तेली ने आह भरकर कहा।

तीसरे पहर के काफी बाद पैन्तेली ने कडो के अम्बार मे जगह की, उसमे गेहूँ के सात बोरे लुढकाए, उसे होशियारी से भरा और उसके ऊपर कडे पाट दिए। फिर साँझ का धुँधलका होते ही उसने घोडी गाडी मे जोती, भेड की खालो के दो कोट, एक बोरा आटा, जई और एक भेड उस पर लादी, दोनो गाये पीछे बाँधी और इलीनीचिना और बच्चो को बोरो पर बिठाते हुए बोला—"अच्छा तो अब ऊपरवाले के सहारे छोड़ दे अपने को हम।"

पैन्तेली ने गाडी ग्रहाते के बाहर निकाली, रासे अपनी बूढी पत्नी के हाथो मे दी और पहाडी तक गाडी की बगल-बगल पैदल चलता रहा। इस बीच वह रह-रहकर नाक छिनकता और कोट की आस्तीन से अपने आँसू पोछता रहा।

२३

१८ सितम्बर को, तीस वर्स्ट की मंजिल मारकर कमाण्डर शोरीन की कमान मे नवी लाल फौज की अगली टुकड़ियाँ दोन के किनारे पहुँची। १८ सितम्बर को सवेरे लाल फौजो के तोपखानो ने मेदवेदित्सा के बहाने से कजान्स्काया जिले के पूरे इलाके तक आग बरसानी शुरू कर दी। फिर थोडी गोलाबारी के बाद पैदल सेना ने बाएँ किनारे के गाँवो और बुकानोव्स्काया, येलान्स्काया और व्येशेन्स्काया के जिला-केन्द्रो पर अधिकार कर लिया। दिन समाप्त होते-होते बाएँ किनारे के एक सौ पचास वर्स्ट के क्षेत्र से श्वेत सेना साफ हो गई। कज्जाक-स्क्वैड्रन पीछे हटकर पहले से तैयार मोर्चो पर पहुँच गए। नदी पार करने के सभी साधन उनके अपने अधिकार मे रहे, पर व्येशेन्स्काया का पुल लाल फौजो के हाथो मे जाते-जाते बचा। वैसे कज्जाको ने काफी पहले से पुल के चारो ओर पुआल जमा कर रखा था और तख्ते मिट्टी के तेल से भिगो रखे थे कि पीछे हटते समय उसमे आग लगा देगे। और अब वे आग लगाने जा ही रहे थे कि दूत घोडा दौडाता आया और खबर लाया कि ३७वी रेजीमेट की एक स्क्वैड्रन पेरेवोजनी गाँव से पीछे हटकर व्येशेन्स्काया के पुल की ओर बढ रही है। इस पर, लाल पैदल सेना के दाखिल होते-होते, कज्जाक टुकडी वहाँ पहुँच गई और मशीनगनो की गोलियो की मार के बावजूद उसने पीछे से आग लगा दी। इसमे उसके अपने दस से ज्यादा फौजी मारे गए और जख्मी हुए, और इतने ही घोडे खत्म हो गए।

नवी लाल सेना की बाईसवी और तेईसवी रेजीमेटो ने दोन के किनारे के जो गाँव ले लिए थे, उन्हे सितम्बर के अन्त तक अपने अधिकार मे बना रखा।···विरोधी सेनाओ को बीच से बाँटने वाली नदी

उन दिनो दो सौ गज से ज्यादा चौडी न थी, और कही-कहीं तो उसकी चौडाई ज्यादा-से-ज्यादा सत्तर गज थी। ऐसे मे लाल फौजियो ने कहीं भी उसे पार करने की कोई कोशिश पूरे जोर से न की। कही-कही कटान के इस पार से उस पार जाने की चेष्टा की, पर हर जगह उन्हे पीछे ठेल दिया गया।

पूरे दो सप्ताह तक मोर्चे के पूरे इलाके मे तोपो और छोटे हथियारो से आग बरसती रही। कज्जाक ऊँचाइयो पर बने रहे और दुश्मन की दोन की तरफ बढने की दिन की हर कोशिश बेकार करते रहे। मगर इस इलाके के दूसरे स्क्वैड्रनो मे प्राय बूढे और सत्रह से उन्नीस साल के बीच कम उम्र लोग रहे, इसलिए, अपनी कमजोरी के कारण न उन्होने अपने-आप दोन पार करने का यत्न किया और न बाएँ किनारे से हमला कर लाल सेनाओ को पीछे खदेडा।

पहले दिन पीछे हटकर दाएँ किनारे पर पहुँचने के बाद से ही कज्जाको ने लाल सेना के अधिकारवाले गाँवो के जलकर राख हो जाने की आशा बराबर की। पर यह देखकर उनके ताज्जुब का ठिकाना न रहा कि बाएँ किनारे के एक गाँव से भी धुआँ न उठा। यही नही, रात को जो गाँववाले उनके पास आए, उन्होने बतलाया कि लाल फौज के लोग न सिर्फ यह कि किसी की किसी चीज को हाथ तक नही लगा रहे, बल्कि यह भी कि जो कुछ वे खाते है उसकी खासी कीमत अदा करते है, और तरबूज तक खाने पर इसी उदारता का परिचय देते है। इससे कज्जाक जितने ही असमजस मे पडे, उतना ही आश्चर्य भी हुआ। उन्हे लगा कि बगावत के बाद तो लाल फौजियो को विद्रोहियो के गाँवो और जिला केन्द्रो को धूल मे मिला देना चाहिए था, पीछे रह गई, लगभग पचास प्रतिशत पुरुषोवाली आबादी को बेरहमी से नेस्तनाबूद कर देना चाहिए था। परन्तु इसके उल्टे सूचना उन्हे यह मिली कि उन्होने किसी भी शान्तिप्रिय व्यक्ति को उँगली से नही छुआ और हर चीज से यह लगा कि बदला लेने का तो उनका किसी तरह का कोई इरादा ही नही है।

१६ तारीख की रात को व्येशेन्स्काया के सामने के पडाववाले

'खोपर के कज्जाको ने दुश्मन के इस विचित्र व्यवहार की गहराई मे जाने का फैसला किया। तुरही की-सी तेज आवाजवाले एक कज्जाक ने मुँह के दोनो ओर हाथ बाँधे और चीखकर कहा—"हे, घडो-सी लाल तोद-वालो, तुम हमारे घर जला क्यो नही रहे ? तुम्हारे बीच जोड के लोग है क्या ? नही है तो इधर आओ, हम तुम्हारे साथ कर दे कुछ ऐसे लोग।"

एक ऊँची आवाज ने अधकार भेदा और जवाब दिया—"तुम हमे मिले नही, वरना तुम्हारे घरो के साथ हम तुम्हे भी भूनकर रख देते।"

"गरीब हो तुम लोग ··है न ? आग जलाने तक को कुछ नही है तुम्हारे पास।" कज्जाक उत्तर मे चिल्लाया।

और शान्त, खिले हुए स्वर वापस आए—"इधर आ जरा, श्वेत दोगले, फिर देखे कि हम तेरे पतलूनो के अन्दर कैसे अँगारे रख देते है कि जिन्दगी-भर मजा मिलता रहे तुझे।"

चौकियो के बीच गालियो के सवाल-जवाब हुए, दो-चार-दस बार गोलियाँ चली और फिर सन्नाटा छा गया।

अक्तूबर के आरम्भ मे कजान्स्काया-पावलोन्स्क क्षेत्र मे केन्द्रित दो फौजी कोरो की दोन सेना की मुख्य सेनाओ ने हमला बोल दिया। ८,००० सगीनो और ६,००० से अधिक तलवारो की तीसरी दोन-सेना-कोर ने ५६वी लाल सेना डिविजन को पीछे खदेड दिया और बडी ही सफलता से पूर्व की ओर बढना शुरू किया। जल्दी ही जनरल कोनोवा-लोव की दूसरी सेना की कोर ने भी दोन नदी पार की। इस कोर मे खास तौर पर घुडसवार टुकडियाँ रही और उन्होने दुश्मन की पक्तियो मे धँसकर उस पर ताबडतोड कई चोटे की। दूसरी ओर अब तक रिजर्व मे रखी गई २१वी लाल पैदल डिवीजन को मैदान मे लाया गया। इस डिवीजन ने तीसरी दोन-सेना-कोर का आगे बढना रोका और कुछ समय तक उसे इसमे बडी कामयाबी भी मिली। पर बाद मे दोनो सेनाओ ने मिल-जुलकर ऐसा दबाव डाला कि उसे मजबूर होकर पीछे हट जाना पडा। १४ अक्तूबर की भयानक लड़ाई मे दूसरी फौजी कोर ने, १४वी लाल पैदल डिवीजन को करीब-करीब काटकर फेक दिया।

फिर एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर लाल फौजो को बाएँ किनारे के क्षेत्र से निकालकर व्येशेन्स्काया तक खदेड दिया गया। इसके बाद दोन सेना की दोनो कोरे नवी लाल सेना को बराबर पीछे-ही-पीछे ठेलती रही।

लगभग इसी समय जनरल कोनोवालोव की दूसरी फौजी कोर की तरह ही, क्लेत्स्काया-जिले मे स्थित पहली दोन सैनिक टुकडी ने भी नदी पार की।

इस तरह नवी लाल सेना की बाई बाजू की डिवीज़नो के घिर जाने का खतरा पैदा हुआ तो दक्षिण-पूर्वी मोर्चे के कमाडर ने अपनी फौजो को इकोर्त्स नदी के मुहाने से कुमील्जेन्स्काया तक फैली रेखा तक पीछे हट जाने का आदेश दिया। लेकिन नवी लाल सेना के पैर यहाँ भी जमे नही रह सके। आम फौजी भर्ती के सिलसिले मे ऊबडखाबड ढग से सगठित कई कज्जाक स्क्वैड्रनो ने दाहिने किनारे की ओर से नदी पार की और दूसरी ओर दोन फौजी कोरो की नियमित टुकडियो मे शामिल होकर लाल सेनाओ को निरन्तर उत्तर की ओर पीछे ठेलते रहे। फलस्वरूप २९ अक्तूबर तक श्वेत सेनाओ ने फिलनोवो और पोवोरीनो स्टेशन और नोवोखोपरस्क नगर ले लिया। किन्तु दोन सेना की अक्तूबर की महान् सफलताओ के बावजूद कज्जाको मे वह आत्म-विश्वास न जग सका जिसने वसन्त मे उन्हे प्रेरणा दी थी, और जिसके सहारे वे प्रान्त की उत्तरी सीमा तक विजय-पर-विजय प्राप्त करते चले गये थे। सो मोर्चे की अगली पक्ति के अधिकाश सैनिको ने अपनी उप-लब्धि को अस्थायी समझा और सोचा कि जाडे के बाद इस तरह आगे बढते रहना मुमकिन नही होगा।

फिर दक्षिणी मोर्चे की स्थिति सहसा ही एकदम बदल गई। ओरेल क्रोमी मोर्चे की आम लडाई मे स्वयसेवक सेना की हार और वोरोनेज़ क्षेत्र मे बुदयोननी की घुडसवार सेना के शानदार कार-नामो ने लडाई के नतीजे का फैसला कर दिया। नवम्बर मे स्वय-सेवक-सेना को दक्षिण की तरफ पीछे हटना पडा। इस तरह दोन सेना का बायाँ पक्ष दुश्मन के वार के लिए बिल्कुल सामने आ गया और अत मे उसे भी पीछे हट जाना पडा।

: २४ :

पैन्तेली ढाई महीने तक लातीशेव गाँव मे अपने परिवार के साथ सही-सलामत रहा। लेकिन, लाल सेनाओ के दोन से पीछे हट जाने की खबर पाते ही वह लौट पडा।

·· तातारस्की से कोई पाँच वर्स्ट पहले वह एक सकल्प के साथ अपनी गाडी से उतरकर नीचे आया और बोला—"यह पैदल चाल अब अपनी बर्दाश्त के बाहर है और इन हरामजादी गायो के साथ गाडी दौडाना मुमकिन नही है। दून्या, बैल रोको और गायें अपनी गाडी से बाँध लो। कौन जाने हो सकता है कि घर अब तक जलकर राख हो चुका हो!"

बस, जो मन की बेसब्री से परेशान होकर उसने बच्चे अपनी गाडी से उठाकर दून्या की बडी गाडी मे बिठाये। इनके साथ ही सारा फालतू सामान उसमे रखा और अपनी हलकी गाडी ऊँची-नीची सडक पर दौडा चला। फिर तो पहले वर्स्ट का फासला तय करने मे ही घोडी पसीने-पसीने हो गई। उसके मालिक ने इतनी बेरहमी उसके साथ आज तक कभी न बरती थी। वह उसकी पीठ पर चाबुक पर चाबुक जमाता रहा। चाबुक क्षण-भर को भी उसने हाथ से नीचे रखा ही नही।

"तुम घोडी की जान लेकर छोडोगे! ऐसे पागलो की तरह गाडी क्यो दौडा रहे थे आखिर?" इलीनीचिना चीखी। इस बीच गाडी के डडे उसने कसकर थाम लिए और हिचकोलो के कारण उसके माथे की नसे दर्द से तन गई। "जो भी हो, तुम तो मेरी कब्र पर आँसू बहाने आओगी नही? · तू ··तू घोडी की बच्ची, पसीने से भीग रही है ·· क्यो? मै अभी निकालता हूँ तेरा पसीना! कौन जाने घर की जगह सिर्फ खडहर मिले हमे?" पैन्तेली ने दाँत पीसते हुए कहा।

परन्तु उसकी आशका निराधार निकली। घर ज्यो-का-त्यो खडा मिला। वैसे हालत जरूर खराब थी। सभी खिडकियाँ टूट गई थी, दरवाजे कब्जो से अलग हो गए, और दीवारें गोलियो से छेदही हो गई थी। अहाते की हर चीज से बेपरवाही और वीरानी टपक रही थी। अस्तबल का कोना तोप के गोले से झड गया था। दूसरे तोप के गोले से दीवार के पास सँध हो गई थी। इससे चौखटा चूर-चूर हो गया और

कुएँ का लकडी का साँचा बीच से दो हो गया था। जिस लडाई से पैन्तेली भाग खडा हुआ था वह खुद उसके घर मे घुस आई थी और बरबादी के रूप मे अपने घिनौने निशान छोड गई थी। लेकिन इससे कही ज्यादा नुकसान, तातारस्की मे पडाव डालने वाले खोपर के कज्जाको ने फार्म को पहुँचाया था। मवेशियो के अहाते मे बाडे उखाड फेकी थी और आदमी के कद के बराबर गहरी खाइयाँ खोद डाली थी। ऊपर का काम बचाने के लिए खत्ती की एक दीवार ढहा दी थी और उसके लडकी के तख्ते अपनी खाइयो के किनारे-किनारे लगा लिए थे। मशीनगन के लिए एक आड बनाने की खातिर पत्थर की दीवार के पत्थर निकालकर फेक दिए थे। सूखी घास की टाल आधी कर दी थी और घास बडी लापरवाही से अपने घोडो को खिला दी थी। बेंत की बाडो मे आग लगा दी थी, और बाहर के बावर्चीखाने का स्टोव किसी काम का न छोडा था।

सो घर और घर के बाहर की चीजो को जो पैन्तेली ने देखा तो अपना सिर थाम लिया। नुकसानो को नुकसान न मानने की हमेशा की आदत ने इस समय उसका दामन छोड दिया। इस बार उसके मुँह मे बिलकुल न निकला कि हटाओ भी···ऐसा नुकसान भी क्या हुआ है···तिनके के बराबर समझो···खत्ती न तो कोई मामूली कोट थी, और न उसके बनाने मे कोई छोटी रकम खर्च हुई थी।

"ऐसा लगता है जैसे कि खत्ती अपने यहाँ कभी थी ही नही।" इलीनीचिना ने आह भरकर कहा।

"खत्ती कोई ऐसी न थी···" पैन्तेली ने जल्दी-जल्दी कहा, पर वाक्य पूरा न कर सका। उसने अपना हाथ हवा मे लहराया और खलिहान मे चला गया।

घर की दीवारो मे गोलियो और तोपो के गोलो के निशान चेहरे के चेचक के दागो-से लगे। लगा कि दीवारो की किसी ने किसी तरह की कोई परवाह नही की। हवा कमरे मे सरसराती रही और मेजो और बेंचो पर परत-की-परत गर्द जमी रही। जर्रे-जर्रे ने जैसे चिल्लाकर कहा कि अब नए सिरे से सब-कुछ ठीक ठाक करने मे वक्त लगेगा।

पैन्तेली दूसरे दिन ही घोडे पर सवार होकर व्येशेस्काया चला गया और थोडी मुसीबत उठाकर अपने डॉक्टर-मित्र से एक सर्टिफिकेट ले आया कि कज्जाक पैन्तेली-प्रोकोफियेविच मेलेखोव पैर की तकलीफ की वजह से चल-फिर नही सकता और उसे बाकायदा इलाज की जरूरत है। बस तो दुबारा मोर्चे पर जाने से उसकी जान छूट गई। उसने यह सर्टिफिकेट अतामान को दिखलाया और गॉव के प्रशासको के पास गया तो मामले पर मुहर मारने के लिए हाथ के बेत पर और जोर दिया। और एक-एक पैर से पारी-पारी भचका।···

सेनाओ के पीछे हटने के अभियान के बाद कज्जाक जब तातारस्की लौटे तो उन्हे ऐसी तवालत उठानी पडी और ऐसी परेशानी का सामना करना पडा कि अब तक की जिन्दगी की सारी तवालते और परेशानियाँ हल्की पड गई। खोपर के कज्जाको ने उनकी सारी चीजे इस तरह इधर-उधर फेक दी थी कि लोग उन्हे अहाते-अहाते घूम-घूमकर पहचानते फिरे। वे अपनी गायो की तलाश मे स्तेपी मे जहॉ-तहॉ भटकते फिरे। मालूम हुआ कि गोलाबारी के तीसरे दिन ही तीनसौ भेडो का रेबड का रेबड गॉव के ऊपरी सिरे से गायब हो गया। गडरिये के अनुसार, तोप का एक गोला चरती हुई भेडो के झुंड के सामने गिरा। उसके गिरते ही भेडे डरकर दुमे उठाती हुई स्तेपी मे भागी और जाने कहॉ लापता हो गई। फिर वीरान गॉव के लोगो के लौटने के एक सप्ताह बाद वे चालीस वर्स्ट के फासले पर मिली। पर उन्हे हॉककर गॉव लाया गया और छॉटा गया तो आधी भेडे बाहर की निकली और तातारस्की की पचास से ज्यादा भेडे गायब मिली। बोगातिरयोव-परिवार की सिलाई की मशीन मेलेखाव के बाग मे पाई गई। पैन्तेली की खत्ती की टीन की चादर अनीकुश्का के खलिहान मे पडी मिली। यही हालत पास-पडोस के हर गॉव मे नजर आई। फिर बहुत समय तक दोन के किनारे के इलाको के पास-दूर के गॉवो के लोग तातारस्की आते रहे और पूछते रहे—"तुमने हमारी गाय तो नही देखी? रग लाल था ··माथे पर एक जगह के बाल गायब थे·· बायॉ सीग थोडा टूटा हुआ था।···हमारा बछडा कही घूमते-फिरते आपके गॉव मे तो

नही आ गया ? एक साल का था ।"

और कोई सन्देह नही कि एक नही, जाने कितने एक-एक साल के बछडे कज्जाक स्क्वैड्रनो के कडाहो और बावर्चीखानो मे उबाल डाले गए थे, मगर उनके मालिको ने आशा नही छोडी, और वे एकदम निराश हो जाने की स्थिति तक स्तेपी के मैदान मे उन्हे ढूँढते रहे—मारे-मारे फिरते रहे ।

पैन्तेली ने फौज की झझट से छुटकारा पाने के बाद बाहर की इमारतें ठीक-ठाक की और बाडे दुरुस्त की । खलिहान मे अन ओसाये अनाज के अम्बार लगे रहे और भूख से टूटी चुहियाँ उनके बीच दौड लगाती रही । पर बूढे ने ओसाई के काम मे हाथ नही लगाया । वैसे वह हाथ लगाता तो लगाता भी कैसे, जबकि फार्म मे बाड तक नही थी, खत्ती की नीव तक गायब थी, और फार्म की हर चीज पर बरबादी के हाथो के काले निशान थे ! फिर यह भी कि खिजाँ आई तो सुहाना मौसम अपने साथ लाई । ऐसे मे ओसाई की ऐसी हडबडी भी भला क्या होती !

दून्या और इलीनीचिना ने दीवारो पर फिर से पलस्तर चढाया, पूरे घर की पुताई की और कामचलाऊ बाड खडी करने और दूसरे कामो मे पैन्तेली का हाथ बँटाया । उन्होने जाने कहाँ से शीशा हासिल कर लिया । खिडकियाँ नए सिरे से चमका डाली और गरमी का बावर्चीखाना और कुएँ की सफाई का काम पूरा कर डाला । बूढा खुद कुएँ मे उतरा और नीचे गहराई मे सर्दी खा गया । फिर एक सप्ताह तक खाँसता और छीकता फिरा । पूरे सात दिन उसकी कमीज पसीने से नहाती रही । पर एक बार मे ही घर की बनी वोद्का की दो बोतलें साफ करते ही और गरम स्टोव के ऊपर थोडी देर तक लेटते ही सारी बीमारी यो उडनछू हो गई जैसे कि किसी ने जादू कर दिया हो ।

परन्तु ग्रिगोरी की कोई खोज-खबर अब भी नही मिली । केवल अक्तूबर के अन्त मे ही पैन्तेली को पता लगा कि वह बिलकुल ठीक है और अपनी रेजीमेट के साथ कही वोरोनेज-प्रात मे है । यह सूचना भी सुयोग से ही मिली, गाँव से होकर गुजरने वाले ग्रिगोरी की रेजीमेट के

एक जख्मी कज्जाक से। बूढा खुशी से खिल उठा और इसी उमग मे लाल मिर्च-मिली वोदका की दवा की आखिरी बोतल ढाल गया। बाद मे दिन-भर बकबकाता रहा और जवान मुर्गे की तरह ऐंठा-ऐंठा फिरता रहा। उसने बगल से होकर निकलने वाले हर व्यक्ति को रोका और बोला—"तुमने खबर सुनी ? हमारे ग्रिगोरी ने वोरोनेज ले लिया। हमने तो यहाँ तक सुना है कि उसका ओहदा बढा दिया गया है, और इस वक्त एक डिवीजन या शायद एक कोर की-कोर की कमान उसके हाथो मे है। ऐसा फौजी तो दूर-दूर तक ढूँढे नही मिलेगा। यह बात तो तुम खुद भी जानते हो······" इस तरह बुड्ढा अपना राग अलापता रहा और जरूरी समझता रहा कि दूसरे भी उसके मन की इस खुशी मे हिस्सा बँटाएँ ··।

"बेटा तुम्हारा सूरमा है·· सूरमा !" गाँव वाले बोले।

पैन्तेली ने खुशी से आँख मारी—"और, सूरमा भला वह होता कैसे नही ? आखिर बेटा किसका है ! मै कोई डीग नही मारता · लेकिन, अपनी जवानी के जमाने मे उससे किसी तरह उन्नीस नही था। यह तो मेरा पैर है कि आडे आता है, वरना मैं तो आज भी उसे अपने से आगे निकलने न दूँ। पूरी डिविजन न सही, पर एक स्क्वैड्रन तो मै सम्हाल ही सकता हूँ। अरे, अगर मोर्चे पर मेरे जैसे बूढो की गिनती ज्यादा होती तो हमने मास्को जाने कब का लेकर दिखला दिया होता। लेकिन फिलहाल तो हम सही वक्त के इन्तजार मे हैं·· ये किसान तो हमारी सम्हाल मे आते ही नही "

उस दिन पैन्तेली ने जिस अतिम व्यक्ति से बातें की, वह बेस्खलेबनोव रहा। वह पैन्तेली के अहाते की बगल से निकला तो बूढे ने बिना चूके उसे टोका—"ए · ठहरो जरा, फिलिप-अगेविच ! क्या हालचाल है ? इधर आओ न, थोड़ी गपशप हो जाए।"

बेस्खलेबनोव पास आया और उसने पैन्तेली का अभिवादन किया। पैन्तेली ने पूछा—"मेरे ग्रीशा के कारनामे सुने तुमने ?"

"क्यो, ऐसा क्या किया उसने ?"

"अरे, उसे एक पूरी-की-पूरी डिविजन की कमान सौप दी गई

है · यानी एक पूरी डिविजन उसकी मातहत है।"

"एक पूरी डिविजन ?"

"हॉ, एक पूरी डिविजन !"

"सचमुच ?"

"सचमुच · और, किसी ऐरे-गैरे को तो कमान इस वक्त लोग सौप नही देगे ··है कि नही ?"

"हॉ, सो तो है।"

पैन्तेली ने अपने साथी के चेहरे पर निगाह टिका दी और अपने प्रिय विषय को लेकर बात खीच चला—"मेरे बेटा है एक और उसने सभी को ताज्जुब मे डाल रखा है। इतने क्रास मिले है उसे कि पूरा एक बक्सा भर जाए ! अब भला क्या कहोगे तुम ? और, लडका कई बार जख्मी हुआ है·· एक बार तो तोप के गोले का भी शिकार हो चुका है। मै कहता हूँ कि उसकी जगह कोई दूसरा होता तो कभी का दुनिया छोडकर चल दिया होता। मगर, वह है कि उसका बाल भी बॉका नही हुआ। सब-कुछ यो गुजर गया जैसे बत्तख की पीठ से पानी गुजर जाए। नही, भाई, दोन के इलाके से सच्चे कज्जाको का नाम अभी नही मिटा।"

"यह तो तुम ठीक कहते हो, लेकिन पता नही क्यो, इनसे कोई खास फायदा मालूम नही होता।" कोई खास बातूनी न होने पर भी, बेस्खलेबनोव ने विचारो मे डूबते हुए कहा।

"यह बात कैसे कह सकते हो तुम ? जरा सोचो कि इन्ही लोगो ने लाल फौजियो को कहाँ तक ठेल दिया है···उन्होने उन्हे ऐन वोरोनेज तक खदेड़ दिया है, और अब तो वे लोग मास्को के करीब पहुँच रहे है।"

"वह तो वे लोग एक जमाने से पहुँचते रहे है···"

"हथेली पर तो सरसो उगाई जाती नही, फिलिप अगेविच ! फिर, तुम्हे यह भी समझना चाहिए कि लडाई मे जल्दी मे कभी कुछ नही किया जाता। जल्दी का काम शैतान का होता है। हर काम धीरे-धीरे किया जाता है नकशो के मुताबिक···तमाम तरह की चीजो को सामने रखकर। रूस मे किसानो की गिनती उतनी ही है जितनी कि टिड्डो

या पतिगो की, मगर हम कज्जाक भला गिनती मे कितने है ? बस, मुट्ठी-भर ही तो है न !"

"यह सब सही है, मगर लगता यह है कि हमारे फौजी बहुत वक्त तक अपने पैर जमाए रह नही सकेगे। जाडे तक मेहमानो को फिर आया समझो। लोग कहते तो ऐसा ही है।"

"हाँ, अगर वे मास्को इस वक्त, जल्दी से ले नही लेंगे तो लाल फौजी यहाँ फिर आ जाएँगे। जहाँ तक इसका सवाल है, तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है।"

"लेकिन, तुम्हारा खयाल है कि मास्को वे लोग ले लेंगे ?"

"ले लेना चाहिए। वैसे जैसी ऊपर वाले की मर्जी। हमारे फौजी इस मामले मे भला क्या कर सकते है ! एक-एक कज्जाक लाम पर चला गया है, यानी बारह की बारहो कज्जाक कोरें वहाँ है। अब भी मास्को नही लेते बनेगा क्या ?"

"कौन क्या कह सकता है ! और तुम्हारा क्या हाल है ? लडाई से छुटकारा मिल गया क्या ?"

"यह टूटी टाँग लेकर क्या करूँगा मै ! पैर की यही मुसीबत न होती तो मैं दिखलाता कि दुश्मन से लोहा कैसे लिया जाता है ! हम बूढे लोग जुम्बिश नही खाते कही से ! बडे मजबूत है।"

"और, यही जुम्बिश न खाने वाले मजबूत बूढे लाल फौजो से घबराकर इस तरह सिरो पर पैर रखकर भागे कि एक के भी पास एक भेड की खाल नही बची। लोग नग-धडग हो गए और हर चीज उतारकर फेक दी। कहते है कि स्तेपी का पूरा मैदान भेडो की खालो से पीला हो गया और फूलो के गलीचे-सा लगने लगा।"

पैन्तेली ने बेस्खलेबनोव को कनखी से देखा और रुखाई से बोला—"मेरे खयाल से तो यह सब झूठ है। हो सकता है कि कुछ लोगो ने अपना बोझ हलका करने के लिए कुछ चीजें उठाकर फेक दी हो, लेकिन इसी बात को लोग सौ गुना बढा-चढाकर क्यो पेश करते है ? कोई बहुत बडी चीज है—कोट या भेड की खाल ही सही। जिन्दगी इससे कही कीमती है। मैं पूछता हूँ, तुम्ही बतलाओ, है कि नही ?

इसके अलावा यह भी है कि हर बूढा पूरे ताम-झाम के साथ कायदे से भाग भी तो नही सकता। इस बेहूदी लडाई मे आदमी के पैर बोर-जोई कुतिया के पैरो की तरह फुर्तीले होने चाहिए। मगर, अब मेरी ही मिसाल लो···ऐसे पैर भला कहाँ मिलेगे मुझे? और, इसे लेकर तुम इतने परेशान क्यो हो, फिलिप अगेविच ?··ऊपरवाला मुझे माफ करे··मगर मैं पूछता हूँ कि उनका ऐसा इस्तेमाल भी क्या है किसी के पास···मेरा मतलब, भेड की खालो का? सवाल भेडो की खालो या कोट तक का नही है, सवाल है दुश्मन को मुँह की देने का। है कि नही? अच्छा, अलविदा···हम बातो मे उलझ गए और मेरा काम सारा पडा हुआ है। अरे हाँ, तुम्हारा बछडा मिल गया? अभी भी तलाश जारी है? कोई खबर कही से मिली? मेरा तो खयाल है कि खोपर के लोग गटक गए उसे···हड्डियाँ फँसे उनके गलो मे!·· लेकिन, तुम लडाई की फिक्र न करो। हमारे फौजी उन किसानो को दबाकर दम लेगे!" और पैन्तेली अकड़ता हुआ सीढियो की ओर भचक चला।

परन्तु, साफ है कि 'किसानो को दबाना' इतना आसान न था। आखिरी हमले मे भी कज्जाको की जान-माल का नुकसान न हुआ हो, ऐसा नही था। एक घण्टे बाद ही पैन्तेली को ऐसा दुखद समाचार मिला कि उसकी खुशी का सारा नशा हिरन हो गया।

वह कुएँ के ऊपर का लकडी का साँचा बनाने मे लगा रहा कि एक औरत के रोने और विलाप करने की आवाज उसके कानो मे पडी। फिर, आवाज और पास आई तो हाथ की कुल्हाडी नीचे रखते हुए पैन्तेली दून्या से बोला—"दौडकर जा और देखकर आ कि कौन मर गया है।"

दून्या ने जल्दी ही लौटकर बतलाया कि तीन कज्जाको की लाशें ऊपरी दोन के मोर्चे से गाँव आई हैं—मरने वालो मे एक है अनीकुश्का, दूसरा क्रिस्तोन्या और तीसरा गाँव के नुक्कड का सत्रह साल का एक लडका।

पैन्तेली खबर सुनते ही जैसे गूँगा हो उठा। उसने अपनी टोपी

सिर से उतारी और क्रॉस बनाया। कहने लगा—"ऊपर वाला उसे अपनी बाँहो मे ले ले! क्या शानदार कज्जाक था वह!" उसे क्रिस्तोन्या की मौत से बडा धक्का लगा। याद आया कि अभी हाल मे ही तो वह उसके साथ तातारस्की से मोर्चे पर गया था···

फिर, उससे काम करते न बना। अनीकुश्का की पत्नी इस तरह चीख-चीखकर रोती रही, जैसे कि कोई उसे हलाल कर रहा हो। उसके दर्द से पैन्तेली का हृदय सहज ही भर आया। फिर, इस हृदय-विदारक क्रदन से छुटकारा पाने के लिए वह घर मे चला आया और उसने दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। सोने के कमरे मे दून्या इलीनीचिना को हाँफते-हाँफते सारी कहानी सुनाती मिली—"मैने देखा माँ·· माँ · मैने देखा न, तो अनीकुश्का का सिर कही नजर ही नही आया, चिपचिपा-सा एक लोदा दीखा सिर की जगह, और बस! उफ·· देखने मे सब-कुछ ऐसा खौफनाक था कि कुछ न पूछो। और, जानती हो, गँधा ऐसा रहा था कि एक वर्स्ट दूर से ही बू आने लगे। पता नही, लोग उसे घर क्यो ले आए। लेकिन क्रिस्तोन्या गाडी के ऐन किनारे, पीठ के बल पडा हुआ था·· पैर बरानकोट के बाहर झूल रहे थे ·देखने मे ऐसा साफ-सुथरा और ऐसा सफेद ऐसा सफेद लग रहा था, जैसे कि बर्फ का बना हो। सिर्फ दाईं आँख के नीचे एक छेद था·· बस यही, कोपेक सिक्के के बराबर · और, कान के पीछे खून जमा हुआ था।"

पैन्तेली ने भयानक ढग से थूका, बाहर निकलकर अहाते मे आया, कुल्हाडी के साथ एक डाँड उठाया और भचकते हुए दोन की ओर बढ चला। रास्ते मे गरमी के बावर्चीखाने के पास मीशात्का खेलता दीखा तो उसने चिल्लाकर उसे आवाज दी और बोला—"अपनी दादी से कह देना·· मै ब्रशवुड झाडी की लकडी काटने के लिए पार जा रहा हूँ · सुनते हो · अरे, सुनते हो बेटे ?·· "

दोन के पार, जगल मे शरद की शाति का साम्राज्य था। उसकी अपनी एक शान थी। चिनार के पेडो से एक सरसराहट के साथ पत्तियाँ झर रही थी। कँटीली झाडियाँ आग की लपट मे लिपटी मालूम हो रही थी और उनकी इनी-गिनी पत्तियो के बीच लाल-बेरी के फल आग की

जीभो की तरह चमक रहे थे। शाहबलूत की गली हुई छाल की सडायध पूरे जगल मे भर रही थी। बिलबेरी की घनी झाडी ने जैसे जमीन को उलझा रखा था और उनकी रेंगती हुई शाखो के जाल के नीचे बेरियो के हलके नीले गुच्छे बडी ही कला से धूप से मुँह छिपाकर दुबके हुए थे। छाया मे मुर्दा घास पर अब तक ओस के मोती थे और इसी ओस के कारण मकडो का जाला जैसे चाँदी का बना लग रहा था। सिर्फ कठफोडवे की एक कायदे मे बँधी ' खटखट और गाने वाले खास पक्षियो की चहचहाहट से सन्नाटे का तार टूट रहा था।···

ऐसे जगल के मौन सौन्दर्य से पैन्तेली को बडी राहत मिली। यहाँ झाडियो पर उसने कदम रखे और गिरी हुई गीली पत्तियाँ चरमराई तो वह अपने-आपसे बोला—"यह है जिन्दगी·· इसे कहते है जिन्दगी! अभी थोडे वक्त पहले इनमे जान थी और आज इनकी कब्र सज रही है। कैसा शानदार कज्जाक दुनिया से उठ गया है! अभी कल की तो बात है कि वह हमारे यहाँ आया और हमने दार्या को जाल डालकर नदी से निकाला तो वह किनारे पर खडा रहा। उफ·· क्रिस्तोन्या! यानी, दुश्मन की एक गोली तुम्हारे इन्तजार मे भी थी। और अनीकुश्का·· कैसा खुशमिजाज आदमी था! उसे शराब ढालने और हँसी के ठहाके लगाने से कितना प्यार था और आज वह सिर्फ एक मुर्दा है। और कुछ नही! · पैन्तेली को दून्या के वर्णन का ध्यान आया और उसके दिमाग की आँखो के आगे एकदम आ गया अनीकुश्का का मुस्कराता हुआ बिना गलमुच्छो वाला, झटका हुआ चेहरा। उसे किसी तरह यकीन न हुआ कि वही आदमी आज बेजान पडा है और उसका सिर पिचनी हो गया है। फिर, बेस्खलेबनोव और अपनी बातों का खयाल आया तो उसे बडी ही ग्लानि हुई। उसने अपने ऊपर बडी लानत बरसाई—"ग्रिगोरी को लेकर मैने जो बे-सिर-पैर की हाँकी है, वह एक गुनाह है और उससे मैने ऊपर वाले को नाराज किया है। हो सकता है कि गोलियो से छलनी होकर ग्रिगोरी खुद भी इस वक्त कही पडा हो। अगर कही ऐसा हो गया तो हम बुड्ढो की देखरेख और फिक्र भला कौन करेगा!"

इसी समय झाडी के नीचे से एक भूरा, जगली मुर्गा बाहर आया तो पैन्तेली चौक गया। उसने पता नही क्यो, उस छोटे-से पछी की तिरछी, तेज उडान बडे गौर से देखी और फिर आगे बढ गया। ताल के पास उसे जगली झाडी के कुछ झुरमुट बडे पसद आए और वह उन्हे काटने मे जुट गया। उस समय उसने हर तरह का खयाल बचाया। एक साल मे ही उसके इतने सगे-सम्बन्धी और इष्टमित्र ईश्वर को प्यारे हो गए थे कि कल्पना-मात्र से उसे घबराहट होती थी। सारी दुनिया बदरग और काले पर्दे से ढँकी लगने लगती थी।

"मुझे यह झाडी तो काटनी ही चाहिए। बडी ही अच्छी झाडी है। उसकी बाड बहुत ही बढिया बनेगी।" अपने दुखद विचारो से छुटकारा पाने के लिए वह अपने-आपसे जोर-जोर से बाते करने लगा।

फिर काफी मेहनत कर चुका तो उसने जैकेट उतारी, झाडी की कटी हुई लकडी के ढेर पर बैठ गया और मुरझाई पत्तियो की तीखी गध से साँसे बरसाते हुए बहुत देर तक देखता रहा, नीली-धुध के सागर मे डूबा क्षितिज और अतिम लौ देते, शरद के सोने से मढे झाड। पास ही नजर आया मेपल का एक पौधा। उसके रूप ने जैसे शब्दो मे बँधने से इन्कार कर दिया। पौधा जड से सिरे तक पूरा-का-पूरा, शरद की चिलकन-भरी धूप मे जगमगाता रहा और बैजनी पत्तियो से लदी उसकी शाखें यो फैली रही जैसे कि कोई पौराणिक चिडियाघर ती से उडने के लिए अपने पर तोल रही हो।

पैन्तेली बैठा बहुत देर तक यह सभी कुछ सराहता रहा। पर, सहसा ही उसकी निगाह पास के ताल पर पडी तो झलाझल पानी मे तैरती बडी-बडी कार्प-मछलियो की पीठे सतह के इतने पास नजर आई कि उनके पर और तेजी से फडफडाती दुमे तक बिलकुल साफ दीख पडी। गिनती मे वे कोई आठ लगी। मछलियाँ जब-तब ही जलकुम्भी की हरी परतो के नीचे गायब हो जाती, फिर तैरकर साफ धारा मे निकल आती और बेत से टूटकर गिरी, पानी मे डूबती पत्तियो पर फुदकती फिरती।···

पैन्तेली को लगा कि वर्षाहीन शरद के इस छिछले तालाब से इस

मछलियो को पकडना कोई बहुत दुश्वार न होगा । सो, थोडी दौड-धूप के बाद उसने पास के दूसरे ताल के नजदीक पडा, बिना तल्ले का एक बोरा ढूँढ निकाला, कार्पोवाले ताल को लौटा, पतलून उतारा, कराहते और ठड से गनगनाते हुए पानी मे हिला और बोरे का निचला हिस्सा ताल के तल से जमा दिया । फिर रह-रहकर अन्दर हाथ डालकर उसने देखा कि पानी की बौछार करती, बुलबुले छोडती, कोई जोरदार मछली फँसी भी या नही । और सचमुच ही उसकी मेहनत बेकार नही गई । दस-दस पौड के वजन की तीन कार्पें उसके हाथ आखिरकार लग गई । परन्तु इसके बाद ठड से उसके लगडे पैर को तकलीफ पहुँचने लगी और शिकार फिर आगे न चला । इस पर भी, दिन-भर की मशक्कत का फल उसे कुछ कम न मिला था । हर एक की किस्मत मे तीस पौड वजन की ऐसी तीन मछलियो का शिकार नही होता ! उस पर यह कि मछली के शिकार से उसका चित्र बदल गया था, और मन की उदासी कट गई थी ।···

अब उसने और मछलियाँ पकडने के लिए दुबारा आने की बात सोची और चिन्ता से चारो ओर नजर दौडाई कि मोटी सुनहरी, सुअर-सी मछलियाँ किनारे पर रखते उसे कोई देख तो नही रहा । सो, उसने शिकार का बोरा कायदे से हर ओर से मोडा, उसे जैसे-तैसे कंधे पर लटकाया, झाडी की लकडी का गट्ठर उठाया और जल्दी-जल्दी नदी की तरफ क़दम बढाये ।

घर पहुँचा तो उसने सन्तोष से मुस्कराते हुए इलीनीचिना को अपने शानदार शिकार की पूरी कहानी सुनाई और एक बार फिर कार्पो के लाल ताम्बे के रग की तारीफ़ की, पर इलीनीचिना ने उसकी खुशी मे कोई हिस्सा नही बँटाया । कारण यह कि वह लाशो को देखकर अभी-अभी लौटी थी । उसका मन दुखी और चेहरा आँसुओ से तर था ।

पूछा—"अनीकुश्का को देखने जाओगे तुम ?"

"नही, मैं नही जाऊँगा । मैने कोई मुर्दा कभी देखा नही क्या ? पहले ही इतनी लाशे देखी है कि अब जिन्दगी-भर देखने की जरूरत नही ।"

"ऐसा नही···तुम्हे जाना चाहिए ··दूसरे लोग भला क्या कहेगे। कहेगे कि तुमसे इतना भी न हुआ कि आखिरी बार उन्हे देख तो आते !"

"उफ···ईसा के लिए मुझे मेरे हाल पर छोड दो ! वह मेरे बच्चों का कोई मुँहबोला बाप तो था नही कि मै उसे देखता फिरूँ !" बूढे ने गुस्से से तमककर जवाब दिया।

और वह सचमुच ही अन्त्येष्टि तक मे सम्मिलित नही हुआ। तडके ही नाव लेकर चला गया और फिर सारे दिन जगल मे बना रहा। वहाँ गिरजे के घटे की टन-टन उसके कानो मे पडी तो टोपी उतारने और क्रॉस बनाने को बरबस उसका जी हुआ। लेकिन इसी समय उसे पादरी पर गुस्सा आ गया—"इतनी देर तक घटे टनटनाने की ऐसी भला क्या जरूरत थी ! घटा बजाता और राग खत्म करता ! यह क्या कि एक घटे तक टन-टन किये चला जा रहा है ! और इस टन-टन से भी कोई फायदा ? इससे सिर्फ यह होता है कि लोगो के दिल टीसते हैं और उन्हे जरूरत से ज्यादा मौत का खयाल आता है। वैसे खिजाँ मे तो यो भी हर चीज मौत का नाम दोहराती है क्या पेडो से झर-झर झरते पात, क्या नीलम के आसमान मे उडते और गला फाडकर चिल्लाते कलहंस और क्या घास की मुँह लटकाए उदास पत्तियाँ !···"

और दुख के आघातो से बचने की तमाम कोशिशो के बावजूद जल्दी ही बूढे दिल पर एक नई चोट पडी। एक दिन खाने के बाद दून्या ने खिडकी से बाहर नजर दौडाई और बोली—

"लोग एक-दूसरे आदमी को मोर्चे से लिये चले आ रहे है। पीछे एक कसा हुआ घोडा बँधा है और गाडी बहुत धीरे-धीरे आ रही है··· एक आदमी के हाथो मे गाडी के घोडो की रासे है और एक दूसरे आदमी की लाश बरानकोट से ढकी पडी है · हाँकनेवाले की पीठ इस तरफ है, इसलिए कह नही सकती कि वह इस गाँव का है या किसी दूसरे गाँव का !···" दून्या ने निगाह गडाई और उसके गाल लिनेन से भी ज्यादा सफेद हो उठे—"वही है···वही है !" उसने अस्पष्ट ढग से, धीरे से कहा और अचानक ही उसके मुँह से चीख निकल गई—"ग्रीशा को ला रहे

है लोग···घोडा उसी का है।" ··और लडकी रोती-चिल्लाती बरसाती की तरफ दौडी।

इलीनीचिना ने अपनी आँखे हथेलियो से ढँक ली और बहुत देर तक मेज के किनारे बैठी रही। पैन्तेली जैसे-तैसे बेच से उठा और अबे की तरह हाथ से टटोलते हुए दरवाजे की तरफ बढा।

प्रोखोर-जिकोव ने फाटक खोला, सीढियो से दौडकर उतरती दून्या पर निगाह डाला और उदास स्वर मे बोला—"लो, एक मेहमान आया तुम्हारे यहाँ · तुम लोग हमारे आने की उम्मीद तो नही कर रहे थे न !"

"मेरे प्यारे भैया, मेरे दुलारे भैया !" दून्या हाथ मलते हुए कराही।

प्रोखोर ने आँसुओ से भीगी दून्या और सीढी पर अवाक् खडे पैन्तेली को देखा तो बोला—"घबराने की ऐसी कोई बात नही ·· ग्रिगोरी जीता-जागता है · सिर्फ टायफस का शिकार हो गया है।"

पैन्तेली ने दरवाजे की चौखट की टेक लगा ली। दून्या उसकी तरफ देखकर खुशी से चीखी— 'ग्रिगोरी जिन्दा है ·भैया मेरा जिन्दा है ! सुनते हो, सिर्फ बीमार है, इसलिए घर लाया गया है। जाओ और जाकर माँ को बतला दो ! अरे, तुम इस तरह पत्थर बने वहाँ खडे क्यों हो ?"

पैन्तेली ने डगमगाते हुए एकाध कदम बढाए और फिर सीढियो पर ढह पडा। दून्या माँ को ढाढस बँधाने के लिए आँधी की रफतार से उसकी बगल से गुजरी। प्रोखोर ने गाडी सीढियो के पास रोकी और पैन्तेली से बोला—"तुम इस तरह वहाँ बैठे क्यो हो ? जाकर एक कम्बल लाओ तो इसे अन्दर ले चला जाए।"

परन्तु, बूढा ज्यो-का-त्यो, जहाँ-का-तहाँ बैठा रहा। उसके मुँह से एक बोल न फूटा। आँखो से आँसू जारी रहे, पर चेहरा बिल्कुल गम्भीर बना रहा। एक भी माँसपेशी मे कही एक हरकत न हुई। दो बार उसने क्रॉस बनाने के लिए हाथ उठाया, पर माथे तक ले न जा सका तो गिरा लिया। उसके गले मे जैसे कुछ अटकता और गडगडाता रहा।

प्रोखोर ने हमदर्दी से कहा—"तुम जरूरत से ज्यादा सहम गए हो !

आखिर मैंने पहले से किसी से तुम्हे इत्तिला क्यो नही भिजवा दी ? मै बेवकूफ हूँ, बिल्कुल बेवकूफ हूँ·· अब इस बात मे किसी तरह का कोई शक रहा ही नही । खैर, अब तो उठो, प्रोकोफियेविच ! बीमार को तो अन्दर ले ही चलना है। कम्बल कहॉ है ? या, कहो तो यों ही अन्दर ले चले इसे ।"

"रुको जरा ।" पैन्तेली ने भर्राए हुए गले से कहा—"मेरे पैर जवाब देते मालूम होते है मै तो समझा कि मर गया यह ! ऊपरवाला बडा मेहरबान है · मुझे उम्मीद नही थी···" उसने अपनी पुरानी कमीज के गले के बटन नोचकर तोड डाले, कॉलर झटके से खोल लिया और मुँह फैलाकर लम्बी सॉस ली ।

"उठो उठो · प्रोकोफियेविच !" प्रोखोर ने जल्दी की—"इसे अन्दर ले चलने को हम ही है या कोई और भी है अन्दर ?"

पैन्तेली बडी मुश्किल से उठा, सीढियो से उतरा और बरानकोट फेककर बेहोश ग्रिगोरी पर झुका । उसके गले मे फिर कुछ अटका, लेकिन उसकी चिन्ता न कर वह प्रोखोर की ओर मुडा—"तुम पैर पकड लो · हम इसे अन्दर लिये चलते है ।"

फिर वे दोनो ग्रिगोरी को सोने के कमरे मे ले आए । यहाँ उन्होने उसके जूते-कपडे उतारे और उसे पलग पर लिटा दिया । इसी समय बावर्चीखाने से दून्या की चिन्ता से भरी आवाज आई—"पापा ! जल्दी यहाँ आओ ! देखो, माँ कैसी हो रही है !"

इलीनीचिना बावर्चीखाने के फर्श पर पडी रही । दून्या घुटनो के बल, उसकी बगल मे बैठी उसके राख के रग के चेहरे पर पानी छिड-कती रही । पैन्तेली ने आते ही कहा—"दौडकर जा और बुढिया कपी-तोनोवना को बुला ला · जल्दी कर ! वह बदन मे खून पहुँचाना जानती है । उससे अपनी माँ का सारा हाल बतलाना और कहना कि खून पहुँ-चाने की सारी चीजे अपने साथ लेती आए !"

लेकिन, दून्या के हाथ पीले होने की उम्र थी । वह गाँव के बीच से नगे सिर तो निकल नही सकती थी, इसलिए उसने एक तरफ से एक रूमाल खींचा, सिर मे बाँधते हुए लपकी और जाते-जाते बोली—

"बच्चे ऐसे डर गऐ है कि जान ही नही निकली है···हे नीली छतरी-वाले, एक दिन मे इतना तूफान, इतनी मुसीबतें! ··पापा, जरा बच्चो को देखना, मै अभी-अभी आई ।"

शायद दून्या का बस चलता तो वह ठिठककर शीशे मे एक नजर अपने को देख लेती । लेकिन, इस बीच सम्हल गए पैन्तेली ने उसे ऐसी कडी नजर से देखा कि वह सिर पर पॉव रख बावर्चीखाने से भागी और छोटे फाटक से बाहर निकलते ही उसकी निगाह अकसीनिया पर पडी । उसका चेहरा ऐसा सफेद लगा, जैसे कि नसो मे कही एक बूंद खून न हो । औरत बेत की बाड से टिकी खडी रही और उसके हाथ बेजान-से झूलते रहे । धुँधलाई, काली आँखो मे आँसू तो एक न झलका, लेकिन उनमे इतनी यातना और ऐसा मौन आग्रह लहरे लेता लगा कि दून्या एक क्षण को ठिठक गई और स्वय अपने को आश्चर्य मे डालते हुए, न चाहने पर भी बोली—"वह जिन्दा है···सिर्फ टायफस हो गया है ।"

फिर लडकी अपनी नाजुक, उछलती हुई छातियो को दबाते हुए, किनारे की गली मे पूरी रफ्तार से दौड चली । इस बीच परेशान औरतें हर तरफ से मेलेखोव के अहाते मे मुड चली । सबके देखते-देखते अकसीनिया बेत के फाटक के पास से धीरे-धीरे हटी, फिर सहसा ही तेज कदम बढाए, सिर झुकाया और चेहरा अपने हाथो से ढँक लिया ।

. २५ :

ग्रिगोरी फिर एक महीने मे ठीक हो गया । वह नवम्वर के अन्त मे पहली बार अपने बिस्तरे से उठा और डगमगाते कदमो से कमरे के इस पार आकर खिडकी के सहारे खडा हो गया । इस समय हड्डी-हड्डी रह जाने के कारण लम्बा और बहुत ही दुबला-पतला लगा ।

धरती और फूस की छानियो पर नए बर्फ के फूल चमके और अपनी चाँदी से आँखो मे चकाचौध पैदा करने लगे । किनारे की गली मे स्लेजो की लीकें नजर आने लगी । बाडो और पेडो ने पाले के निलछरे पर लगा लिए और यह पर ढलते सूरज की धूप मे इन्द्रधनुषी रग बनाने लगे ।

ग्रिगोरी अपनी लकडी-सी उँगलियो से मूँछो पर हाथ फेरता विचारों मे डूबा रहा और खिडकी से बाहर देख-देखकर मुस्कराता रहा। इस समय कोई उसे देखता तो सोचता कि इतना शानदार जाडा इसने शायद पहले कभी नही देखा। उसे हर चीज गैर-मामूली और ताज़गी से भरी लगी। हर चीज से एक नया अर्थ उभरता दीखा, जैसे कि बीमारी से उसकी आँखो की तेज़ी बढ गई। उसे आसपास जाने क्या-क्या नया नजर आने लगा और पुरानी चीज़ो मे जाने कैसे-कैसे नए उलटफेर समझ पडने लगे।

वह अपने स्वभाव के प्रतिकूल और आशा के विपरीत गाँव और फार्म की छोटी-से-छोटी घटना मे दिलचस्पी लेने लगा। उसकी जिन्दगी से सम्बन्धित हर बात का एक नया और गुप्त महत्त्व हो उठा, और हर चीज उसे अपनी ओर खीचने लगी। इस तरह उसके सामने जो एक नई दून्या आई, उसे वह थोडे आश्चर्य से भरकर देखता। चेहरे को सख्ती, आँखो की पाशविकता और होठो के कोनो की भयानकता की जगह उसकी हर गतिविधि मे एक कोमलता नज़र आती और उसके होठो पर बच्चो की-सी मुस्कान थिरकती रहती। वह अब-तब ही बचपन से सामने रहने वाली घर की कोई चीज उठा लेता और भौहे सिकोड-कर उसे यो देखना, जैसे कि वह खुद कोई अजनबी हो, किसी दूर देश से आया हो और उस चीज को उसने पहली बार देखा हो।

ऐसे-ही इलीनीचिना ने उसे एक दिन एक चर्खे की लाट को हर तरफ़ से परखते देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पर वह ज्यो ही कमरे मे घुसी, ग्रिगोरी कुछ लज्जित सा होकर लाट को एक तरफ रखकर दूर चला गया।

दून्या उसके हड्डी-हड्डी दुबले-पतले शरीर को देखती तो उसे बरबस हँसी आ जाती। वह केवल अन्दर के कपडो मे कमरे मे टहलता, अपना फिसलता पाजामा एक हाथ से साधे रहता, कमर झुकाए रहता। और चलता तो पतले पैर डगमगाने लगते। बैठता तो उसे गिर पडने का डर बना रहता और इसीलिए वह किसी-न-किसी चीज को हाथ मे जकड़े रहता। बीमारी के दौरान काफी बढ़ गए उसके काले बाल हर

दिन गिरते जाते। हमेशा माथे पर झूलने वाला घुंघराले बालो का छल्ला बराबर हलका पडता जाता। ·

एक दिन उसने दून्या की सहायता से अपना सिर मूडा। पर जब उसने अपना चेहरा अपनी बहन की तरफ मोडा तो उस्तरा लडकी के हाथ से छूटकर जमीन पर जा गिरा, उसने अपना पेट थाम लिया और पलग पर गिरकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई।

ग्रिगोरी ने उसे जीभर हँस लेने का पूरा मौका दिया। पर आखिर मे उससे और न रुका गया और उसने कमजोर काँपती हुई आवाज़ मे कहा—"जरा सम्हलो और अपनी हद मे रहो। ऐसा न हो कि बाद मे तुम्हे शर्म उठानी पडे। अब लडकी नही बल्कि पूरी औरत हो तुम·· पता है तुम्हें·· !" उसकी आवाज से खीझ टपकी।

"ओह·· भैया·· मेरे प्यारे भैया·· अच्छा हो कि मै चली जाऊँ यहाँ से। मुझमे अब हँसने की ताकत बाकी नही है। अरे तुम जरा देखो तो कि लगने कैसे हो ! खेत मे खडे कौओ को डराने वाले काकभगोडा लगते हो बिलकुल !" दून्या ने यह शब्द जैसे-तैसे हँसी के बीच कहा।

"मै देखना चाहता हूँ कि टाइफस के बाद खुद तुम कैसी लगती हो ! अच्छा उठाओ उस्तरा · बहुत हुआ।"

इलीनीचिना ने बेटे का पक्ष लिया और जरा परेशानी से बोली—"लेकिन तू इस तरह हिनहिना भला क्यो रही है ? तू बिलकुल बेवकूफ है, दून्या !"

"लेकिन माँ, जरा देखो तो कि भैया लगते कैसे है ?" दून्या ने अपने आँसू पोछते हुए कहा—"कैसा ऊँचा-नीचा, काला और तरबूज़ की तरह गोल सिर है इनका · उफ ··मै और नही !"

ग्रिगोरी ने कहा—"जरा शीशा तो देना मुझे !" फिर उसने शीशे के उस छोटे टुकडे मे आँख गडाकर देखा तो बिना आवाज़ किए, खुद भी बहुत देर तक हँसता रहा।

इलीनीचिना ने असन्तोष से कहा—"मगर तुमने अपना सिर मूड़ क्यो डाला, बेटे ? जैसा था वैसा ही रहने देते तो अच्छा होता !"

"यानी गजा हो जाना तुम इससे बेहतर समझती हो ?"

"खैर छोडो · मगर इस तरह तो तुम बहुत ही भद्दे लगते हो।"

"उफ लेकिन तुम भी हद करती हो!" ग्रिगोरी ने अपने ब्रश से साबुन मे झाग उठाते हुए गुस्से से कहा।

अब बाहर न जा सकने के कारण वह अधिकाश समय बच्चो के साथ ही काटता। उनसे हर तरह की, हर चीज के बारे मे बाते करता, मगर नताल्या का जिक्र जान-बूझकर बरकाता। परन्तु पोल्युशका ने एक दिन पूछ ही तो लिया—"पापा, अब ममी लौटकर हमारे पास नही आयेगी?"

"नही मुन्नी, लोग वहाँ से आया नही करते।"

"कहाँ से·· कब्रगाह से?"

"बेटी, जो लोग मर जाते है न, वे फिर लौटकर नही आते।"

"लेकिन ममी क्या बिलकुल मर गई?"

"और क्या! मर तो गई ही है।"

"लेकिन मैने सोचा कि शायद उन्हे हमारी याद आए और वे आ जाएँ" पोल्युशका ने बहुत धीरे से कहा।

"बेटी, ममी की बात ही न करो · यही अच्छा है।" ग्रिगोरी ने रूखे ढग से कहा।

"लेकिन बात कैसे न करूँ, याद जो आती है। लेकिन मरनेवाले लोगो से मिलने-जुलने, उन्हे देखने नही आते? थोडी देर को भी नही आते? कभी नही आते?"

"नही, बिलकुल नही आते। अच्छा अब जाओ और मीशात्का के साथ खेलो।" और···ग्रिगोरी ने मुँह फेर लिया। साफ है कि बीमारी ने उसकी इच्छा शक्ति समाप्त कर दी थी। सो उसकी आँखे भर आई तो बच्चो से आँसू छिपाने के लिए वह शीशे से चेहरा सटाकर बहुत देर तक खिडकी के पास खडा रहा।

ग्रिगोरी बच्चो से लडाई का जिक्र करना बिलकुल पसन्द न करता। पर मीशात्का दुनिया की हर चीज से ज्यादा दिलचस्पी लडाई मे लेता और अकसर ही पिता पर सवालो की बौछार कर देता—"लोग किस तरह लडे? लाल फौजी कैसे थे? उन्हे किस चीज से मारा गया?

और क्यो मारा गया ?···" ऐसे मे ग्रिगोरी का चेहरा धुँधला उठता। वह खीझकर कहता—"फिर वही पुराना राग छेड दिया ? यह·· यह लडाई तुम्हारे दिमाग मे हमेशा ही क्यो नाचती रहती है ? आओ बात करें कि गरमी आएगी तो हम दोनो कैसे चलेगे और कैसे ताल मे कटियो से मछलियाँ फँसाएँगे ! मै तुम्हारे लिए कटिया बना दूँ ? जरा बाहर निकलकर अहाते मे जाने लायक हो जाऊँ तो घोडे के बालो से तुम्हारे लिए एक बेसी बना दूँगा।"

यानी मीशात्का जब भी लडाई की चर्चा छेडता ग्रिगोरी अन्दर-ही-अन्दर शर्म से भर उठता। बच्चे के भोले-भाले सहज प्रश्नो के उत्तर उसे ढूँढे न मिलते·· और कौन कह सकता है कि क्यो नही मिलते ? शायद उसने खुद इन सवालो के जवाब कभी नही पाए थे।···पर मीशात्का से छुटकारा पाना आसान न होता। पिता मछली के शिकार की बाते करता तो वह बडे ध्यान से सुनता लगता, मगर फिर जल्दी ही एक नया सवाल कर देता—"पापा, तुमने लडाई मे मारा है किसी को ?"

"अच्छा देख, मुझे परेशान करना बन्द कर · समझा !"

"पापा, लडाई मे जब तुम लोगो को मारते हो तो डर लगता है ? और लोग मारे जाते है तो खून बहता है ? बहुत सारा खून बहता है ? मुर्गी के बच्चे या भेड के खून से ज्यादा खून बहता है ?"

"मैंने कहा न कि तुम इस तरह की बाते बन्द करो।"

मीशात्का क्षण-भर को चुप रहता, लेकिन इसके बाद ही कुछ सोचते हुए फिर पूछ बैठता—"बाबा ने एक बार एक भेड मारी थी· मगर मै नही डरा···हो सकता है कि थोडा-बहुत डर लगा हो, लेकिन मै सचमुच डरा नही।"

इस पर इलीनीचिना गुस्से से कहती—"इसे हटाओ यहाँ से·· बडा होकर यह दूसरा जल्लाद निकलेगा·· लोगो को सिर्फ मारता ही फिरेगा। जब देखो तब लडाई की ही बाते करता रहता है, जैसे कि बात करने को और कुछ इसके पास है ही नही। भला किसी ने सुना है कभी कि इतना नन्हा-सा बच्चा और इस ज़ालिम लडाई की बात

करे ? इधर आ···ले यह पैनकेक···इससे थोडी देर तो तेरा मुँह बन्द रहेगा ही ।"

पर, उगने वाले हर नए दिन ने उन लोगो को लडाई की याद दिलाई । कज्जाक मोर्चे से लौटे, ग्रिगोरी को देखने आए और उन्होने उसे बतलाया कि ओरेल की लडाई मे कैसे कामयाबी नही मिली, कैसे बुदयोन्नी की घुडसवार फौज ने जनरल श्कूरो और ममोन्तोव की सारी ताकत तार तार कर दी, और कैसे सभी मोर्चो से फौजे पीछे हट रही हैं । बोले —"ग्रिबानोव्स्काया की लडाई मे दो कज्जाक और मारे गए है । जेरासिम-अख्वात्किन जख्मी हालत मे घर ले आए गए है और दिमीत्री गोलोश्चोकोव टाइफस से मर गए है ।"

ग्रिगोरी दोनो लड़ाइयो मे काम आए अपने गाँव के कज्जाको की गिनती करने लगा तो तातारस्की मे ऐसा एक भी घर न निकला जिसका कोई-न-कोई प्राणी लाम पर मौत का शिकार न हुआ हो ।···

ग्रिगोरी अभी घर से बाहर निकलने के लायक भी न हुआ कि गाँव का अतामान, जिला अतामान का आदेश लेकर आया । आदेश था कि स्क्वैड्रन कमाडर मेलेखोव फौरन ही डॉक्टरी कमीशन के आगे पेश हो और अपनी डॉक्टरी फिर करवाए ।

इस पर ग्रिगोरी क्रोध से बोला—"जवाब लिख दीजिए कि मुझे याद दिलाने की जरूरत नही । चलने-फिरने लायक होते ही मै खुद ही लौट जाऊँगा ।···"

फिर, मोर्चा बरावर दोन के पास आता गया । गाँव मे हटकर और पीछे चले जाने की बाते नए सिरे से होने लगी । थोडे समय बाद क्षेत्रीय अतामान का एक फरमान बाजार मे पढकर सुनाया गया कि सभी वयस्क कज्जाक हटकर पीछे जाने वालो मे शामिल रहे ।

पैन्तेली चौक से घर आया और ग्रिगोरी से फरमान का जिक्र कर बोला—"अब क्या करेगे हम लोग ?"

ग्रिगोरी ने कधे झटके—"हम कर ही क्या सकते है ? हमे पीछे हटना पडेगा । इस हुक्म के बिना भी हर आदमी यहाँ से चला जाएगा ।"

"मैं तो तुम्हारी और अपनी बात कर रहा हूँ—हम साथ चलेंगे

या क्या होगा ?"

"हम साथ नही चल सकते। एकाध दिन में मै घोडे पर सवार होकर व्येशेन्स्काया चला जाऊँगा। उधर से गुज़रने वाली फौजो का अता-पता करूँगा और एक-न-एक रेजीमेंट के साथ हो लूँगा। लेकिन तुम बेघरबार होकर भागोगे या तुम्हारा इरादा फ़ौज मे शामिल होने का है ?"

"ऊपर वाला बचाए।" पैन्तेली ने घबराकर कहा—"उस हालत मे तो मै बुड्ढे बेस्खलेबनोव के साथ चला जाऊँगा। अभी उसी दिन तो उसने मुझे साथ चलने की दावत दी थी। आदमी लडाई-वडाई पसद नही करता और उसके पास घोडा भी अच्छा है। सो, हम अपने दोनो घोडे गाडी मे जोत लेगे और चल देगे। इस तरह अपनी घोडी की थोडी चरबी भी कम हो जाएगी। सुअर की तरह खाती रही है, और खडे-खडे लातें चलाती रही है, और बस।"

ग्रिगोरी ने प्रस्ताव का पूरे हृदय से समर्थन किया—"तो, ठीक··· तुम उसके साथ चले जाओ·· लेकिन इसके पहले अपना रास्ता तय कर लो, क्योकि हो सकता है कि बिल्कुल वही रास्ता मुझे भी लेना पडे।"

उसने अपने फील्ड-केस से दक्षिणी रूस का एक नक्शा निकाला, बूढे का रास्ता तय किया और एक कागज पर राह के सारे गाँवो के नाम लिखने लगा। लेकिन पैन्तेली इस बीच बडे अदब से नक्शे को देखता-समझता रहा। बोला—"छोडो, गाँवो के नाम इस तरह न लिखो। वैसे ये चीजें तुम मुझसे कही अच्छी तरह समझते हो। फिर नक्शा कोई मामूली चीज नही होता। वह झूठ कभी नही बोलता और राह सीधी दिखलाता है। लेकिन अगर सडक मुआफिक न पडी तो हम करेंगे क्या ? तुमने कहा कि पहले हम कारगिन्स्काया से होकर निकलें, ठीक उधर की सडक कही सीधी है, लेकिन इस पर भी चक्कर तो लगाना ही पडेगा।"

"लेकिन, आखिर क्यो ?"

"क्योकि मेरा एक चचेरा भाई लातिशेव मे रहता है और वहाँ

मुझे अपने लिए खाना और घोडे के लिए दाना मिल सकता है। यों अगर मैं अजनबियो के साथ टिकूँगा तो मुझे अपने खाने का इन्तज़ाम आप करना पडेगा। फिर, तुम कहते हो कि मैं अस्ताखोव गाँव का रास्ता लूँ। सडक वह भी सीधी है, मैं जानता हूँ। पर मैं मालाखोवस्की से होकर जाऊँगा। वहाँ भी मेरे दूर के नाते-रिश्तेदार रहते हैं और वहाँ अपनी सूखी घास न खिलाकर, मै दूसरो की सूखी घास घोडे को आराम से खिला सकता हूँ। देखो न, सूखी घास की टाल-की-टाल तो साथ ले जाना मुमकिन है नही। और किसी अनजाने इलाके मे यह भी हो सकता है कि ऐसे पाना तो क्या, खरीदने जाओ तो भी सूखी घास कही न मिले।"

"लेकिन दोन के दूसरे किनारे पर तुम्हारे कोई नाते-रिश्तेदार नही है क्या ?" ग्रिगोरी ने शरारत से पूछा।

"है तो।"

"तो, मेरा खयाल है कि तुम उस तरफ भी जाओगे ?"

"बेकार बकवास न करो।" पैन्तेली गरम हो उठा—"काम की बात करो, बेकार मजाक न बनाओ। क्या वक्त चुना है मजाक करने का अपने खानदान मे एक ही आदमी दिमागदार निकला है।"

"तो तमाम नाते-रिश्तेदारो के यहाँ चक्कर काटते फिरने की आपको कोई जरूरत नही। लडाई के दौरान लोग पीछे हटते है तो पीछे हटते है। तमाम रिश्तेदारो से मिलते नही फिरते। यह कोई कार्नीवाल का मौका तो है नही।"

"खैर, तुम मुझे तरीके न समझाओ ··यह सब मैं तुम्हारे बिना भी जानता हूँ।"

"अगर जानते हो तो जाओ, जिधर से जाना चाहते हो, जाओ।"

"मुझे अपने नक्शो के हिसाब से हाँकने से कोई फायदा नही होगा। सिर्फ एक मगपाई-चिडिया ही ऐसी होती है जो सीधे उडती है·· यह कहावत तुमने सुनी है या नही ? सीधे तो मै जाने कहाँ निकल जाऊँ! शायद वहाँ निकल जाऊँ जहाँ जाडे मे कही सडकें ही नजर न आती हो। तो ऐसी बकवास करते समय तुम्हारा दिमाग भी ठिकाने था या

नही ? और, तुम कहते हो कि तुमने एक डिविजन की कमान सम्हाली है।"

ग्रिगोरी अपने पिता के साथ बहुत देर तक उलझा रहा। फिर उसने अपने व्यवहार पर दुबारा विचार किया तो बूढे की बातो मे उसे बडा सार लगा। उसे मानते हुए बोला—"पापा, नाराज न हो। मैं तुम्हे अपने मन के रास्ते से जाने को मजबूर न करूँगा। तुम जिस रास्ते चाहो, उस रास्ते जाना। मै दोनेत्स के उस पार तुम्हे ढूँढने की कोशिश करूँगा।"

"यही बात तुम्हे बहुत पहले कहनी चाहिए थी।" पैन्तेली खुश हो उठा। "तुम दुनिया-भर के नक्शे और रास्ते सुझाते फिरते हो, लेकिन एक बात तुम्हारी समझ मे यह नही आती कि नक्शा एक चीज है और मंजिल तय करना बिलकुल दूसरी चीज। घोडे वहाँ नही जा सकते जहाँ दाने-चारे का इन्तजाम न हो।··"

बूढा ग्रिगोरी की बीमारी की हालत मे भी अपने सफर का इन्तजाम करता रहा था। उसने घोडो को गैर-मामूली परवाह से खिलाया-पिलाया था, स्लेज की मरम्मत की थी, नए फेल्ट-बूट बनने को दे दिए थे, गीली सडको पर पानी बचाने के लिए खुद चमडे के तल्ले दिए थे और काफी पहले से जई बोरो मे भरकर रख ली थी। यानी गाँव से हटकर पीछे जाने की तैयारी भी उसने घर के सच्चे मालिक की तरह की थी और रास्ते की जरूरत की हर चीज ठीक-ठाक कर ली थी। कुल्हाडी, हथआरा, छेनी, जूतो की मरम्मत के औजार, सूत के तल्ले, कीलें, हथौडा, फीतो की लच्छी, रस्सियाँ, घोडे की नाले और सभी कुछ तिरपाल मे होशियारी से बँधा रखा था और किसी क्षण स्लेज मे जमाया जा सकता था। उसने तो एक इस्पात की तराजू और बाट साथ ले जाने की बात की और जब इलीनीचिना ने इसका कारण पूछा तो उसकी भर्त्सना करते हुए बोला—"बुढिया, तू जितनी कोशिश अक्लमन्द बनने की करती है, उतनी ही बेवकूफ होती जाती है। तेरा मतलब है कि ऐसे आसान सवाल का जवाब तू खूद नही सोच सकती ? यानी, रास्ते मे मुझे कुट्टी या घास खरीदते वक्त उसे तोलने की जरूरत पडेगी या नही ? सूखी

घास लोग गज से नापकर बेचते है क्या ?"

"लेकिन, लोगो के पास अपने बाट नही होते ?" इलीनीचिना ने ताज्जुब से पूछा ।

"किसी को क्या मालूम कि कैसे बाट होगे उनके पास ?" पैन्तेली ने क्रोध और खीझ से कहा—"हो सकता है कि हम जैसो को ठगने के लिए उन्होने झूठे बाट रख छोडे हो । बात यह है । मै जानता हूँ कि उधर किस-किस तरह के लोग बसते है। तीस पौड सामान देते है, और छत्तीस पौड के दाम वसूलते है । फिर, अगर हर पडाव पर ऐसे ही घाटे का खतरा हो तो इस्पात का अपना बटखरा मै क्यो न ले जाऊँ अपने साथ ? इसके बोझ से हम दबकर मर तो जाएँगे नही। और यहाँ का काम तो बिना इसके भी चल सकता है। इसकी भला तुम्हे यहाँ ऐसी क्या जरूरत ? अगर फौज यहाँ आएगी तो सूखी घास बिना तोले ही लेगी । सवाल उनके सामने सिर्फ गाडी पर लादकर ले जाने का होगा । बिना सीग के उन शैतानो को देखा है मैंने । मै उन्हे अच्छी तरह जानता हूँ ।"

और तो और, बसन्त मे गाडी की खरीद मे रकम न बरबाद करने के ख़याल से पहले तो उसने स्लेज पर एक छोटी-सी गाडी तक लाद ले जाने का इरादा किया । लेकिन बाद मे कुछ सद्बुद्धि उपजी तो यह खयाल छोड दिया । ·

फिर, ग्रिगोरी ने भी अपने जाने की तैयारी शुरू की । उसने अपनी मॉजर राइफल की सफाई की और तलवार ठीक-ठाक की। नीरोग होने के एक सप्ताह बाद वह अपना घोडा देखने गया और उसके चमकते हुए पुट्ठे देखकर उसने सन्तोष की साँस ली । उसे लगा कि बुड्ढे ने अपनी ही घोडी की नही, बल्कि उसके घोडे की भी परवाह की है। वह बडी कठिनाई से आराम-पसद घोडे पर सवार हुआ और उसे काफी दौडाकर घर लौटा तो उसने अकसीनिया की खिडकी मे किसी को छोटा-सा सफेद रूमाल हिलाते देखा या शायद उसे ऐसा लगा कि उसने देखा ।···

गाँव की एक सभा मे तातारस्की के सभी मर्दों ने एक निश्चित

दिन गाँव छोड देने का निश्चय किया और फिर दो दिन तक औरतें अपने कज्जाको के सफर के लिए तरह-तरह की चीज़े पकाती और बनाती रही। रवानगी की तारीख बारह दिसम्बर तय हुई। ग्यारह की रात को पैन्तेली ने सूखी घास और जई स्लेज मे रखी। अगले दिन सबेरे तडका होते ही भेड की खाल का अपना बरानकोट पहना, पेटी कसकर बाँधी, गाडी हाँकने के काम के चमडे के लम्बे-चौडे दस्ताने पेटी मे खोसे, ईश्वर की प्रार्थना की और परिवार के लोगो से बिदा ली।

जल्दी ही गाँव से पहाडी तक सामान से लदी गाडियो का ताँता बँध गया। औरते मिले-जुले चरागाह तक आईं, बहुत देर तक रूमाल हिला-हिलाकर अपने घर के मर्दो को रुखसत करती रही। लेकिन फिर धीमी-धीमी हवा चलने लगी और बर्फीली धुध के कारण न तो धीरे-धीरे पहाडी पर चढती गाड़ियाँ नज़र आईं और न उनकी अगल-बगल आगे बढते कज्जाक। ··

व्येशेन्स्काया के लिए रवाना होने से पहले ग्रिगोरी एक बार अकसीनिया से मिला। वह गाँव मे चिराग जलने के बाद उसके यहा गया तो अकसीनिया कताई करती मिली और अनीकुश्का की विधवा बगल मे बैठी मोज़े बुनती और कहानी कहती दीखी। ग्रिगोरी ने किसी और को भी वहाँ देखा तो रूखी आवाज मे अकसीनिया से बोला—"जरा बाहर आना, तुमसे कुछ काम है।"

बरसाती मे उसने औरत के कधे पर हाथ रखा और पूछा—"हम लोग पीछे हट रहे है मेरे साथ चलोगी तुम ?" अकसीनिया कुछ देर तक चुप रहकर जवाब सोचती रही। फिर, शात भाव से बोली—"लेकिन फार्म का क्या होगा और घर का क्या होगा ?"

"यह सब किसी दूसरे को सौप दो · हमे पीछे तो हटना ही है।"

"लेकिन कब ?"

अकसीनिया अँधेरे मे मुस्कराई और बोली—"तुम्हे याद है, मैने एक बार तुमसे कहा था कि मै तुम्हारे साथ दुनिया के दूसरे सिरे तक जा सकती हूँ ? और, मै तो अब भी वही हूँ। तुम्हारे लिए मेरे दिल मे सच्ची मोहब्बत है। मै चलूँगी और एक बार पीछे मुडकर न देखूँगी।

तो, कल किस वक्त तुम्हारा इन्तजार करूँ ?"

"शाम को ··और बहुत सामान साथ मत लेना · कपडे··· ज्यादा-से-ज्यादा खाने की चीजे, और बस ! फिलहाल, मै चला··· अलविदा !"

"अलविदा···लेकिन तुम अन्दर चलो न···वह तो अभी-अभी चली जाएगी। एक जमाने से तुम्हे देखा नही मैने, मेरे राजा···मेरे ग्रीशा ! मै तो सोचने लगी थी कि तुम · लेकिन नही, मैं नही कहूँगी।"

"नही, मैं अन्दर नही चलूँगा। मुझे अभी-अभी व्येशेन्स्काया जाना है · अलविदा·· कल मेरी राह देखना।"

ग्रिगोरी बाहर आया और उसने छोटा फाटक पार किया। पर, अकसीनिया मुस्कराती और अपने सुलगते गालो को हथेलियो से रगडती बरसाती मे जहाँ-की-तहाँ खडी रही। ·

व्येशेन्स्काया मे क्षेत्रीय कार्यालयो, क्षेत्रीय सगठनो और कमीसारियट-स्टोरो के हटाए जाने का काम कभी से शुरू हो गया था। ·

ग्रिगोरी ने क्षेत्रीय अतामान के दफ्तर मे मोर्चे की स्थिति के बारे मे पूछाताछ की, तो एडजुटेट का काम करने वाले एक नये रगरूट ने कहा—"लाल फौजे अलेक्सेयेव्स्काया के बिलकुल पास तक आ गई है। पता नही कि हमारी कौनसी फौजे व्येशेन्स्काया होकर गुजरेंगी। गुजरेंगी भी या नही, यह भी नही मालूम। आप खुद देख सकते है कि कोई कुछ नही जानता · हर आदमी यहाँ से निकल भागने की हडबडी मे है·· मेरी सलाह मानिए तो यहाँ अपनी रेजीमेट की तलाश न कीजिए, बल्कि अपने घोडे पर मिलेरोवो चले जाइए। वहाँ आपको आसानी से पता लग जाएगा कि वह इस वक्त कहाँ है। वैसे हर हालत मे आपकी रेजीमेट भी पीछे हटेगी और रेलवे लाइन के किनारे-किनारे पीछे हटेगी।·· दुश्मन को क्या दोन पर रोका जा सकेगा ? व्येशेन्स्काया तो बिना किसी मुकाबले के दुश्मन के हाथ लग जाएगा···इतना तो तय है !"···

ग्रिगोरी काफी रात गए घर लौटा। इलीनीचिना ने उसके लिए खाना तैयार करते हुए कहा—"तुम्हारा वह प्रोखोर आया था। कह

गया है कि फिर आएगा, लेकिन तब से अब तक तो आया नही है ।"

ग्रिगोरी इस खबर से खुश हो उठा । उसने जल्दी-जल्दी खाना खाया और फिर प्रोखोर के यहाँ गया । प्रोखोर ने उसका उदास मन से मुस्कराते हुए स्वागत किया और बोला—"मै तो सोच रहा था कि तुम व्येशेन्स्काया से ही सीधे पीछे हटने वालो के साथ हो लिए ।"

"तुम कहाँ से फूट पडे यहाँ ?" ग्रिगोरी ने हँसते और अपने वफा-दार अर्दली के कधे पर हाथ मारते हुए कहा ।

"मोर्चे से ही आया हूँ ।"

"उड दिए वहाँ से ?"

"क्यो, ऐसा किस लिए सोचा तुमने ? मेरे किस्म का फौजी इस तरह पीठ दिखाकर भाग भी सकता है क्या ? मै आया हूँ मगर मेरी तरफ कोई उँगली नही उठा सकता । बात यह है कि तुम्हारे बिना गर्म इलाको को जाने का मेरा जी हुआ नही । गुनाह हम लोगो ने साथ-साथ कमाए है तो आखिरी फैसला सुनने के लिए भी हम लोग साथ-ही-साथ चलेगे । हमारे साथ कोई बडी पचायत तो है नही, तुम जानते हो !"

"· हाँ, सो तो मै जानता हूँ पर यह बताओ कि उन लोगो ने तुम्हे रेजीमेट से आने कैसे दिया ?"

"वह तो खासी लम्बी दास्तान है । बाद मे बतलाऊँगा तुम्हे ।" प्रोखोर ने बात टाली और खिन्न हो उठा ।

"रेजीमेट है कहाँ ?"

"शैतान ही जाने कि रेजीमेट इस वक्त कहाँ है ।"

"तो कब से रेजीमेट से बाहर हो तुम ?"

"कोई दो हफ्ते से ।"

"यानी तब से अब तक कहाँ रहे ?"

"ऊपर वाला जानता है कि क्या मुसीबत हो तुम भी !" प्रोखोर ने असन्तोष से कहा और अपनी पत्नी की ओर कनखी से देखा—"कहाँ रहे· कैसे रहे ··क्यो रहे···फिलहाल जहाँ भी रहा हूँ इस वक्त वहाँ नहीं हूँ · मैंने कहा न कि मैं तुम्हे सब-कुछ बतला दूँगा·· इसके माने

है कि बतला दूँगा· ए बीवी थोडी-बहुत शराब घर मे है कही ? अपने कमांडिग अफसर से मिला हूँ तो इसकी थोडी खातिर तो करनी ही चाहिये · गरज यह कि पीने को कुछ है ?···तो, भागकर ·· जाओ · कुछ-न-कुछ लेकर आओ·· और खयाल रखो कि हवा की तरह ही आओ । तुम्हारा आदमी बाहर क्या रहा, तुमने सारे फौजी कानून-कायदे घोटकर पी लिए · हाथ से बेहाथ हो गई हो तुम···"

"मगर, तुम इस तरह बलबलाए क्यो जा रहे हो ?" पत्नी ने मुस्कराते हुए पूछा—"मुझ पर बहुत चीखो-चिल्लाओ नही । तुम यहाँ के असली मालिक नही हो । बारह महीनो मे कही मुश्किल से दो दिन रहते हो तुम यहाँ ।"

"अरे बाबा, मुझ पर हर आदमी चिल्लाता है, मगर मै तुम्हारे सिवाय और किसी पर नही चिल्लाता। रुक जाओ, थोडा इन्तजार करो·· मैं जरा जनरल बन जाऊँ फिर देखना कि मै दूसरो पर किस तरह गरजता हूँ । लेकिन इस बीच तुम सब्र से काम लो और हँसो ·· जल्दी से अपनी वर्दी चढाओ और एक-दो-तीन··· ।"

और पत्नी बाहर जाने के कपडे पहनकर चली गई तो प्रोखोर ने ग्रिगोरी को भर्त्सना-भरी दृष्टि से देखा। बोला—"तुम्हे समझ ज़रा भी नही है, पंतेलेयेविच ! मैं औरत के सामने तो तुमसे हर बात बतला नही सकता और तुम हो कि अपना कैसे, क्या-क्या, कहाँ दबाए जा रहे हो । खैर पहले तो यह बतलाओ कि टाइफस ने छोड दिया तुम्हे ?"

"हाँ, अब ठीक हूँ ··अब तुम अपने बारे मे सब-कुछ बतला जाओ ! तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो···अन्दर-ही-अन्दर घोट रहे हो कुछ· उगलो उसे ! किस उलझन मे फँस गये तुम ? किस तरह भागे तुम ?"

"जो कुछ हुआ वह तो भागने से भी बेहतर रहा ।·· हुआ यह कि तुम्हे घर पहुँचाने के बाद मै रेजीमेंट को लौटा तो मुझे तुम्हारी स्क्वैड्रन के तीसरे ट्रूप मे भेजा गया । लेकिन लडने के मामले मे तो मैं सिकन्दर हूँ ही, उस पर मुझे दो लड़ाइयो मे हिस्सा लेना पडा तो मैने

सोचा—अब अपनी जिन्दगी खत्म ही समझो ! प्रोखोर म्याँ, सिर छिपाने को जगह ढूँढो कही···वरना तुम्हारा काम तमाम हुआ ! फिर तकदीर की बात कि लाल फौजियो ने हमे एकदम दबा दिया और लडाई ऐसी घमासान हुई कि हमारा दम मारना मुश्किल हो गया। उन्होने जहाँ भी मोर्चा भेदा, हमे पीछे ठेला। जहाँ भी जरा-सी भी डगमगाहट देखी हमारी रेजीमेट को पीछे ढकेला-पीसा। नतीजा यह कि एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर हमारी स्क्वैड्रन के ग्यारह कज्जाक इस तरह दुनिया से उठ गए, जैसे कि किसी गाय ने उन्हे अपनी जीभ से चाट लिया हो। तो मै सचमुच ऊब गया और पूरी हालत से सचमुच घबरा उठा।" प्रोखोर ने सिगरेट जलाई, थैली ग्रिगोरी की ओर बढाई और इत्मीनान से बोला—"फिर ऐसा हुआ कि जासूसी की गश्त के लिए मुझे कही लीस्की के पास जाना पडा। इसके लिए भेजे गये हम तीन, और रास्ते मे हम तीनो ने अपनी आँखे पूरी तरह खुली रखी। रास्ते मे हमारे घोडे हलकी दुलकी चाल से एक टीले पर चढे कि हमारी निगाह एक सोते से बाहर आते और किनारे पर हाथ रखते एक लाल फौजी पर पडी। हम अपने घोडे दौडाकर पास पहुँचे तो वह चिल्लाकर बोला—'कज्जाको, मै तो तुम्हारी तरफ हूँ। मुझ पर अपनी तलवार का पानी न आजमाना। मै तो तुममे से एक हूँ।" लेकिन मैं उसकी चपेट मे आते-आते बचा, क्योंकि पता नही क्यो मैं गरम हो उठा और उसके बिल्कुल पास पहुँचकर बोला—'सुअर के बच्चे, तुमने जब एक बार लडने का फैसला किया तो अब तुम्हे हथियार नही डालने चाहिए। तुम कमीन हो··सुअर हो ! देखते नही कि आज अगर हमारे पैर किसी तरह जमे हुए है तो उसके लिए हमे अपने खून की आखिरी बूँद तक देनी पड रही है ? और यहाँ तुम हथियार डाल रहे हो जैसे कि कुमुक ला रहे हो हमारे लिए।' और इसके साथ ही मैंने अपनी तलवार की म्यान उसकी पीठ के आर-पार जमा दी। फिर मेरे दूसरे साथियो ने भी उससे यही कहा—'इस तरह हर कदम पर रग बदल-बदलकर लडने से फायदा ? अगर तुम्हारी तरह तुम्हारे सभी साथी एक साथ हमसे आ मिलते तो

लडाई कभी की खत्म हो गई होती।'···लेकिन·· ग्रिगोरी, मै भला कैसे समझता कि जिस गिरगिट से हम बाते कर रहे हैं, वह अफसर है! इस पर भी निकला वह वही। मैने उस पर अपनी तलवार की म्यान जमाई तो उसका चेहरा पीला पड गया। शात भाव से बोला—'मैं अफसर हूँ। तुम्हारी हिम्मत कि तुम मुझ पर हाथ छोडो! एक अर्से पहले मै हुस्सारो[1] के साथ था और फौजी भर्ती के सिलसिले मे लाल सेनाओ के हाथ पड गया था। तुम मुझे अपने कमाडर के पास ले चलो। वहाँ मै सब-कुछ बतलाऊँगा।'·· इस पर हमने कहा—'अच्छा अपने कागजात दो हमे!' मगर उसने ऐंठ से जवाब दिया—'मैं तुमसे बात नही करना चाहता···मुझे अपने कमाडर के पास ले चलो!'

"लेकिन, यह सारा किस्सा तुम अपनी बीवी के सामने सुनाना क्यो नही चाहते थे?" ग्रिगोरी ने आश्चर्य से पूछा।

प्रोखोर ने जवाब दिया—"इस 'क्यो, के जवाब तक अभी कहाँ आया मैं! देखो, बात बीच मे न काटो। तो, हमने उसे स्क्वैड्रन मे ले जाने का फैसला किया और यही बेवकूफी हो गई। हमे उसे जहाँ-का-तहाँ तलवार के घाट उतार देना चाहिए था और खेल खतम कर देना चाहिये था। लेकिन, हम उसे अपने साथ ले गए और एक दिन बाद वह हमारे स्क्वैड्रन का कमाडर बना दिया गया। क्या शानदार खातिर हुई उसकी! फिर बैंड बजना शुरू हुआ। एकाध दिन बाद उसने मुझे बुलाया और बोला—'तो, तुम एक मिले-जुले, न बँट सकने वाल रूस के लिए लड रहे हो· है न सुअर के बच्चे? मुझे कैदी बनाते वक्त क्या कहा था तुमने? याद है तुम्हे?' मैने अपनी जान जैसे-तैसे छुडानी चाही, मगर उसने कोई रहम न दिखाया और मेरी तलवार की म्यान और अपनी पीठ की याद आते ही सिर से पैर तक काँप उठा। कहने लगा—'तुझे पता है कि मै हुस्सार रेजीमेट का कैप्टन हूँ और एक बडे घर का लडका हूँ· और तू·· तू गँवार है·· उजड्ड

---

१ हलके हथियारों वाले घुडसवार फौजी।



देहाती है·· तूने मुझ पर हाथ उठाया ?'·· उसने मुझे एक बार बुलाया, दो बार बुलाया, मगर रहम दिखलाने का तो नाम तक न लिया। उसने ट्रुप कमाडर को बुलवाकर मुझे एक बाहरी चौकी पर भेजने और बिना पारी के रखवाली पर तैनात कर देने का हुक्म दिया। साथ ही मेरे सिर बेगार पर बेगार यो मारी जैसे किसी बाल्टी से मटर पर मटर निकलती चली आए। यानी यह कि सुअर के बच्चे ने मेरी जिन्दगी हराम कर दी। और, मेरी ही नही, बल्कि जासूसी की गश्त के वक्त के मेरे दोनो साथियो के साथ भी उसने ऐसा ही बरताव किया। उन दोनो ने भरसक सब-कुछ कहा, लेकिन एक दिन मुझसे बोले—'आओ इसे मिल-जुलकर खत्म कर दें, वरना हम तो जीने लायक रह ही न जाएँगे।' लेकिन मेरी रूह ने उसके कत्ल की गवाही न दी, इसलिए मैने सभी कुछ रेजीमेटल-कमाडर को बतला देने का फैसला किया। बात यह है कि कैदी बनाते वक्त तो मैं उसे मार सकता था, मगर उसके बाद मेरा हाथ उसके खिलाफ किसी भी तरह उठ न सकता था। मेरी बीवी चूजे की गर्दन हलालती है तो मेरी आँखे सिकुड उठती है ··यह तो एक इन्सान की जान लेने की बात थी!"

"लेकिन आखिरकार तुमने उसे मार डाला न ?" ग्रिगोरी फिर बीच मे बोला।

"जरा रुको न · तुम्हे धीरे-धीरे सभी मालूम हो जाएगा। तो, मै रेजीमेटल-कमाडर के पास गया और मैंने उसे सब-कुछ बतलाया। पर, जवाब मे वह सिर्फ हँसा और बोला—'एक बार तुम उस पर हाथ उठा चुके हो तो अब परेशान होने की ऐसी कोई बात नही, जिकोव ! वह कानून-कायदे के मामले मे बहुत ही सही आदमी है। वैसे भी अच्छा और ईमानदार है।' उसके बाद मै वहाँ से चला आया, पर मैने मन-ही-मन सोचा—तुम चाहो तो क्रॉस की जगह उस ईमानदार और अच्छे आदमी को अपने गले मे लटका लो, मगर मै उसके स्क्वैड्रन मे अब काम करने से रहा। फिर, मैने किसी दूसरे स्क्वैड्रन मे भेजे जाने की बात की। मगर, इसका भी कोई नतीजा न निकला

तो मैंने बिल्कुल ही निकल भागने का इरादा किया। पर, कहना एक बात है और करना दूसरी बात।

फिर, एक हफ्ते के आराम के लिए हमे पीछे भेज दिया गया और एक हफ्ते के बाद उस शैतान के बच्चे ने आकर फिर मुझे हलाकान कर मारा। मैने अपने-आपसे कहा—'अब रास्ता सिर्फ एक है कि किसी बुरी बीमारी वाली औरत को ढूंढ लो और हलकी बीमारी वाली ड्यूटी ले लो। इस बीच लोग पीछे हटने लगेंगे और सब-कुछ दब-दबा जाएगा।' सो, मैने कुछ ऐसा किया जैसा जिन्दगी मे कभी न किया था। मैं पीछे दौड-दौडकर देखने लगा कि बुरी-से-बुरी औरत कौन नजर आती है। लेकिन कैसे क्या होता? किसी औरत के चेहरे पर तो लिखा होता नही कि उसे यह बीमारी है। यानी, सवाल उठा कि अब करूँ तो करूँ क्या?" प्रोखोर ने पूरी ताकत से थूका और आहट ली कि पत्नी आ तो नही रही है?

ग्रिगोरी ने मुस्कान छिपाने के लिए अपने मुँह पर हाथ रख लिया और उसकी आँखे चमकने लगी। हँसते हुए बोला—"तो फिर तुम्हे कोई बीमार औरत मिली?"

प्रोखोर ने आँसू-भरी आँखो से उसे घूरकर देखा। निगाहो से ऐसी शाति और उदासी टपकी जैसे कि वह कोई बूढा कुत्ता हो, जिसके दिन लद चुके हो। बोला—"तुम्हारा खयाल है कि ऐसी औरत ढूँढ निकालना कोई बहुत आसान है? वैसे तुम्हे जिस चीज की गरज न हो, वह हर कदम पर नजर आती है, मगर उस वक्त मै गला फाडकर चिल्लाता तो भी कोई फायदा न होता।"

ग्रिगोरी आधा मुडते हुए, अन्दर-ही-अन्दर हँसा, फिर चेहरे से हाथ हटाया और फँसती आवाज मे बोला—"ईसा के लिए मुझे तकलीफ न दो। तुम तो यह बतलाओ कि आखिर मे कोई औरत तुम्हे मिली भी या नही?"

"तुम्हे तो मजाक की बात लगेगी ही!" प्रोखोर आहत स्वर मे बोला—"दूसरो की मुसीबतो पर जो हँसते है, वे सिर्फ बेवकूफ होते है। कम-से-कम मै तो यही सोचता हूँ।"

"लेकिन मैं तुम्हारा मजाक नही बना रहा···खैर, तो फिर हुआ क्या ?"

"तो मैने यह किया कि जिस जगह ठहरा हुआ था, उसके मालिक की बेटी पर डोरे डालने लगा। औरत थी बिनब्याही, ऐसे ही कम-ज्यादा कोई चालीस साल की। चेहरा मुहासो से भरा हुआ था और ऐसी लगती थी कि···कुछ न पूछो···ऊपर वाला हमे बचाए ऐसी तमाम औरतो से! पडोसियो से मालूम हुआ कि इधर वह डॉक्टरों के पास दौडती भी रही है। मैने सोचा—'हो-न-हो, यह तो बीमारी दे ही देगी मुझे!' बस, मैं नए मुर्गे की तरह उसके आस-पास मँडराने लगा, और उसे खुश करने के लिए तमाम तरह की बातें करने और कहने लगा। वैसे इतनी बातें मुझे आ कहाँ से गईं, मुझे खुद पता नही!" प्रोखोर अपराधी की भाँति मुस्कराया और सारी घटना याद कर कुछ खिल भी उठा—"मैने उससे शादी का वायदा किया और हर तरह की बकवास की···आखिरकार मेरी जीत हो गई और बात गुनाह तक आ गई। इसी वक्त वह एकाएक उठकर चलने और फूट-फूटकर रोने लगी। मैने उसे चुप करने की कोशिश की। कहा—'तुम्हे कोई अच्छी-बुरी बीमारी है क्या? लेकिन, इससे क्या··· कोई बात नही···ऐसा होगा तब तो और भी अच्छा होगा।' लेकिन मै खुद ही डर गया। मुझे लगा—रात का वक्त है, कही किसी ने हमारी आवाज सुन ली, और वह कुट्टी के इस शेड मे चला आया तो?···इसीलिए मै उससे बोला—'ईसा के लिए चीखो नही यों अगर तुम्हे कोई बीमारी हो तो भी डरो नही। मैं तुम्हे इतनी मोहब्बत करता हूँ कि मै हर अजाम के लिए तैयार हूँ।' मगर, वह बोली—'मेरे प्यारे प्रोशेका, मुझे किसी तरह की कोई बीमारी नही है। लेकिन मै ईमानदार लडकी हूँ। यही वजह है कि डरती हूँ।'··· ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, मानो और चाहे न मानो, पर उसकी यह बात सुनते ही मेरा सारा बदन बर्फ हो गया और सिर से पैर तक पसीने से नहा उठा। मुझे लगा कि हे ईसा, यह क्या हुआ! यह तो तिनके का आखिरी सहारा भी गया!···फिर तो मै उस पर बरस पड़ा···

अगर ऐसा है तो तुम डॉक्टरो के पास दौड-दौडकर क्यो जाती रही हो ? ऐसा मौका क्यो देती रही हो कि लोग तुम्हारे बारे मे गलत रायें बनाये ?'···औरत बोली—'डॉक्टरो के पास तो मै आती रही हूँ चेहरे की सफाई के लिए कोई मरहम लेने की खातिर !'···इस पर मैने अपना सिर थाम लिया और उससे बोला—'उठ जा यहां से, फौरन चली जा·· मौत ले जाए तुझे···घिनौनी चुडैल कही की। मै तुझे बिल्कुल नही चाहता और तुझसे शादी मै हरगिज नही करूँगा !"

प्रोखोर ने और जोर से थूका और जरा रुक-रुककर बोला—"और इस तरह मेरी सारी मेहनत बेकार चली गई। फिर मै लौटा और सामान समेट-समाटकर रातो-रात दूसरे क्वार्टर मे चला गया। इसके बाद जवानो ने इशारा किया और एक खास खिडकी से मुझे मनमानी नेमत मिल गई। इसके लिए इस बार मैने सीधे-सीधे काम की बात की। पूछा—'बीमार हो तुम ?' जवाब मिला—'हाँ, थोडी-बहुत हूँ तो !' मैंने कहा—'मुझे तुम्हारी बीमारी का साया भी नही चाहिए !' ' बस, मैंने उसे बीस रूबल का एक नोट दिया, अपनी दिक्कत बताई और अगले दिन अपनी शेखी बघराते हुए हलकी ड्यूटी पर चालू हो गया। और, वहाँ से सीध घर चला आया।"

"तुम अपना घोडा साथ नही लाए ?"

"घोडा नही लाए ? अरे, अपने घोडे पर आया हूँ, और उसे पूरी रफतार से इस तरह दौडाता लाया हूँ, जैसे कि लडाई के मैदान मे हूँ। साथियो ने मेरा घोडा वहाँ भेज दिया था, जहाँ मै बीमारी की छुट्टी बिता रहा था। लेकिन यह कोई बडी बात नही है। तुम तो मुझे अब यह बतलाओ कि बीवी से क्या कहूँ ! तैसे तुम कहो तो मै मुसीबत टालूँ और तुम्हारे साथ रात बिताने के लिए चला चलूँ···क्या खयाल है ?"

"नही···बिल्कुल नही। तुम रात अपने घर मे ही बिताओ। कह देना कि तुम जख्मी हो। कही पट्टी-वट्टी बँधी है ?"

"लडाई के मैदानवाली पट्टी बँधी है अब तक।"

"तो, बस, उसी से फयदा उठाओ।"

"लेकिन, औरत मेरा यकीन नही करेगी।" प्रोखोर ने निराशा से कहा। परन्तु इस पर भी उठा, अपनी काठी के थैले मे कुछ खखोरा-खखारी कर सोने के कमरे मे घुसा और वहाँ से फुसफुसाते हुए बोला—"अगर इस बीच औरत आ जाए तो उसे बातो मे लगा रखना, मैं अभी-अभी आया।"

दूसरी तरफ, अपनी सिगरेट रोल करते हुए ग्रिगोरी अपनी रवानगी की योजना बनाने लगा—"स्लेज में दोनो ही घोडे जोत लिए जाएँगे और शाम को गाँव से रवाना हुआ जाएगा। उस वक्त गाँववाले अकसीनिया को मेरे साथ देख न पाएँगे, हालाँकि बात मालूम तो उन्हे हो ही जाएगी।"

"मगर, स्क्वैड्रन कमाडर की बात तो मैने पूरी की ही नही।" प्रोखोर लगडाता हुआ सोने के कमरे से निकला और मेज के किनारे आ बैठा—"मेरे बीमार होकर चले आने के तीन दिन बाद हमारे साथियो ने उसे मार डाला।"

"सचमुच !"

"ऊपरवाला गवाह है···लोगो ने लड़ाई के वक्त उसकी पीठ मे गोली मार दी और वह इस दुनिया से कूच कर गया।"

"स्क्वैड्रन के अफसरो ने गोली मारनेवाले को पकडा नही ?" ग्रिगोरी ने तातारस्की छोड़ने के खयालों मे डूबे-ही-डूबे पूछा।

"गोली मारनेवाले की तलाश की बात ही कहाँ उठती है ! सारे-के-सारे लोग इस तरह पीछे हटे कि किसी को किसी की बात सोचने का मौका ही नही मिला।···लेकिन, वह मेरी बीवी नाम की मादा जाकर मर कहाँ गई। पीने का बडा जी कर रहा है···तुम कब यहाँ से जाने की बात सोच रहे हो ?"

"कल।"

"एक दिन और नही टाल सकते तुम ?"

"किसलिए ?"

"जरा अपने जुएँ निकाल लेता···अपने साथ जुओ को भी घुड़सवारी कराने मे कुछ मजा नही।"

"जुएँ रास्ते मे बीन लेना। यह टालमटोल का वक़्त नही है। लाल फौज इस वक्त जहाँ है, वहाँ से उसे व्येशेन्स्काया पहुँचने मे दो दिन लगेगे।"

"तो सुबह रवाना हो रहे है हम लोग ?"

"नही, रात को चलेगे। बात कारगिन्स्काया तक पहुँचने की है। रात वही काटेंगे।"

"लेकिन लाल फौजियो के हाथ तो नही आएँगे हम लोग ?"

"जो भी हो, हर सूरत मे रवाना होने को तैयार रहना चाहिए।··· मेरा खयाल था···मैने सोचा था कि अकसीनिया अस्ताखोव को भी अपने साथ ले चलूँगा। तुम्हे कोई एतराज तो नही न ?"

"इससे भला मुझे क्या लेना-देना ? तुम चाहो तो एक के बजाय दो-दो अकसीनियाएँ अपने साथ ले चलो !···वैसे मुश्किल घोड़ो की होगी।"

"अकसीनिया बहुत भारी नही है।"

"औरतो के साथ सफर करना बेहूदा लगता है···भला यह नई मुसीबत तुम क्यो पालना चाहते हो ? जैसे कि उसके बिना भी कुछ कम तूफानो का सामना करना पड़ेगा हमे !" प्रोखोर ने दूसरी तरफ देखकर आह भरी—"मैं जनता था कि तुम उसे अपने गले मे हिलगाए फिरोगे। हमेशा एक बीवी चाहिए तुम्हे अपने साथ ! उफ ·····ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच···"

"इससे तुम्हारा कोई ताल्लुक नही।" ग्रिगोरी ने उदासीन भाव से कहा—"मगर, यह बात अपनी बीवी के सामने मत बडबडा देना कही !"

"मैंने उसके सामने कभी कुछ उगला है क्या ? तुम्हे चाहिए कि तुम जरा और कायदे से जानो ! मगर अकसीनिया अपना घर किस पर छोडेगी ?"

इसी समय बरसाती की सीढियो पर आहट हुई और प्रोखोर की पत्नी आ गई। उसके फूले हुए, भूरे रूमाल पर बर्फ के दाने चमचमाने लगे।

"बर्फ तेजी से गिर रही है क्या ?" प्रोखोर ने गिलास अलमारी से निकाले और तब खयाल आने पर पूछा—"कुछ लाई भी हो तुम ?"

पत्नी के गाल गहरे गुलाबी लगे। उसने सीने के पीछे से दो भाप छोडती बोतले निकाली और मेज पर जमा दी।

"यानी एक बोतल हमे रास्ते मे काम देगी।" प्रोखोर ने प्रसन्नता से भरकर कहा, वोदका की महक ली और बोला—"अव्वल दर्जे की है। और, तेज ऐसी है कि लुत्फ आ जाए !"

ग्रिगोरी ने छोटे-छोटे गिलास भर-भरकर वोदका ढाली, फिर थकान का बहाना किया और अपने घर चला आया।

: २६ :

"यानी, लडाई तो खत्म हो गई। लाल फौजी हमे इतने जोर से ठेल रहे है कि अब हम पीछे ही हटते जाएँगे।" प्रोखोर ने स्लेज पहाडी के ऊपर की तरफ हाँकते हुए कहा।···

नीचे तातारस्की का गाँव निलहरी धुध मे लिपटा पडा रहा। सूरज क्षितिज के बर्फानी बैजनी हँसिए की धार के नीचे उतर गया। स्लेज के नीचे बर्फ चरमराती रही। दोनो घोड़े कदम चाल से आगे बढते रहे। ग्रिगोरी स्लेज के पिछले हिस्से मे आराम से लेटा रहा। कधे काठियो से टिके रहे। अकसीनिया बगल मे बैठी रही। बदन पर फर की गोटवाली भेड की खाल की जैकेट रही। सिर के सफेद, फूले हुए रूमाल के नीचे काली आँखे खुशी से चमकती रही और लौ देती रही। ग्रिगोरी की तिरछी निगाह रह-रहकर जमती रही। उसके तुषार के कारण हलके गुलाबी गालो पर, उसकी काली घनी भौहो पर और उसकी बरौनियो की लम्बी कमानो के नीचे के निलहरे सफेद रग पर। अकसीनिया अपने चारो ओर के वातावरण को बडी ही उत्सुकता से पीती रही। बर्फ के लबादे से ढँके स्तेपी के मैदान को, चाल की रगड से चिकनी सड़क को और दूर के क्षितिज की धुध को नजर गडा-गडाकर देखती। गाँव-घर से पहली बार बाहर निकली थी, इसलिए उसे हर चीज नई और असाधारण लगी और सहज रूप से अपनी ओर खीचती रही। पर, वह बीच-

बीच मे अपनी पलके झुका लेती, आँख की बरौनियो पर जमी ओस की सहती-सहती गुदगुदी महसूस करती और कुछ सोच-सोचकर मुस्कराने लगती। उसे लगता कि एक जमाने तक दिल और दिमाग को जकड रखने वाला सपना आखिरकार सच बना और एकाएक सच बना। अब मै अपने ग्रिगोरी के साथ तातारस्की से अपनी पैदाइश के घिनौने जिले से बहुत दूर जा रही हूँ ··कही बहुत दूर जा रही हूँ। इस गाँव मे, इस ज़िले मे कितना सहा है मैने ! आधी जिन्दगी दिल मसोस-मसोसकर, बिना प्यार के भी एक आदमी के साथ रहकर गुज़ार दी है। वहाँ के जर्रे-ज़र्रे ने जो यादे उभारी है, उनसे दिल मे घुन-सा लगता रहा है।···

इसके साथ ही वह अपनी बगल मे बैठे ग्रिगोरी को अपनी पूरी चेतना से सहेजती और मुस्कराती रही। उसे भूले से भी खयाल न आया कि कल के इस सुख के लिए उसने आज कितनी कीमत अदा की है। यह आने वाला कल स्तेपी प्रदेश के क्षितिज की भाँति ही धुंध की घनी परत मे लिपटा रहा और दूर से इशारा कर उसे बराबर अपने पास बुलाता रहा। •

सहसा ही प्रोखोर मुडा तो उसने अकसीनिया के लाल, पाले से सूजे होठो पर काँपती हुई मुस्कान देखी और दर्द से भरी आवाज़ मे बोला—"तो···तो तुम दाँत क्या निकाल रही हो ? अपने को नई-ब्याहता समझ रही हो। तुम्हे अपने घर से दूर जाने मे बडी खुशी महसूस हो रही है।"

"और, तुम्हारा खयाल है कि नही हो रही है ?" अकसीनिया ने बजती हुई आवाज मे पूछा।

"क्या बडा कारनामा है जिस पर तुम खुश हो रही हो ! ··औरत, तू है बेवकूफ अभी तक तो यही पता नही कि यह सफर खत्म कहाँ और कैसे होगा, इसलिए इतनी जल्दी खुशी से न फूल ! फिलहाल, अपने दाँत होंठो के अन्दर ही रख।"

"आनेवाला कल गुजरे हुए कल से बेहतर ही होगा, बदतर तो होगा नही।"

"तुम दोनो को देखता हूँ तो मुझे तो जैसे कोई बीमारी घेरने लगती

है·· " प्रोखोर ने घोडो की पीठ पर जोर से चाबुक जमाया ।

"तो हमे मत देखो, मुड जाओ और अपने होठो पर ताला लगा लो !" अकसीनिया ने हँसते हुए सलाह दी ।

"यानी फिर बेवकूफी की बात कर दी तुमने ? यानी मैं समन्दर के किनारे तक अपने होठ सिये रहूँ ? क्या शानदार बात कही है तुमने ?"

"तो तुम्हे बीमारी आखिर क्यो घेर रही है ?"

"तू आखिर थोडा-सा चुप नही हो सकती । पराए आदमी के साथ उड आई है, शैतान ही जाने कि कहाँ जा रही है, और ऊपर से जबान लडाती है !···अच्छा मान लो कि उसी वक्त स्तेपान कही से लौट आया और उसने तुम्हे गायब देखा तब क्या होगा ?"

अकसीनिया बोली—"एक बात बतलाऊँ · प्रोखोर···देखो, तुम्हे शहर के अन्देशे से दुबला नही होना चाहिए···वरना क्या होगा कि कही तुम भी किस्मत की लपेट मे आ जाओगे···समझे !"

"मै तुम्हारे अन्देशे से दुर्बला नही हो रहा । तुम इस तरह मुझे आँखें मत दिखलाओ । जैसा और जो मुझे लगे । मै कहने को आजाद हूँ·· है कि नही···? क्या तुम्हारा खयाल है कि मै सिर्फ कोचवान हूँ और मेरी बात के लिए सिर्फ घोडे बने हैं ? यह एक और बढिया बात हुई ! अब तुम चाहो तो बिगडो और चाहो तो खुश हो···जो तुम्हारा जी चाहे सो करो, अकसीनिया ! मगर, तुम्हारी खबर तो एक लपलपाये बेंत से ली जानी चाहिए और हुक्म ऊपर से दिया जाना चाहिए कि देखो, आँसू आँख से एक न निकले । और किस्मत-विस्मत का डर मुझे मत दिखलाओ ! मैं जहाँ जाता हूँ, अपनी किस्मत अपने साथ ले जाता हूँ । खास साँचे मे ढली है मेरी किस्मत ! कहने को खुलकर नही गाती, मगर आँखे लगने भी नही देती·· ! और तुम शैतान की आँतो···तुम हर सूरत को हँसने-खेलने की चीज समझने की कोशिश करते हो··· तुम्हारे कानो के पर्दों मे किसी चीज से झनझनाहट पैदा नही होती ।"

ग्रिगोरी मुस्कराते हुए पूरी बातचीत सुनता रहा । फिर दोनो को शात करने की कोशिश करते हुए बोला—"अभी गाँव के बाहर भी हम

मुश्किल से ही निकल पाए है···तुम दोनो आपस की यह तू-तू मैं-मै बन्द करो। बडा लम्बा रास्ता सामने पडा है। अपने मन की निकालने का तुम्हे पूरा मौका मिलेगा।···और तुम अकसीनिया के पीछे हाथ धोकर क्यो पड गए हो, प्रोखोर ?"

प्रोखोर ने जरा रुखाई से जवाब दिया—"मैं इसके हाथ धोकर पीछे पड गया हूँ, क्योकि मै चाहता हूँ कि यह मेरी हर बात काटे नही। मुझे तो इस वक्त ऐसा लग रहा है कि दुनिया मे औरत से बुरी कोई चीज़ नही है। पूरी बिच्छूबूटी समझो। तुम्हे पता है मेरे भाई, कि बनानेवाले के नमूने मे सबसे गई-बीती चीज औरत मानी गई है। अगर मेरा बस चले तो दुनिया मे औरत का नाम-निशान न रह जाए। इस वक्त ऐसा दिमाग खराब हो रहा है मेरा ! और तुम यह खीसें क्यो बा रहे हो? सिर्फ बेवकूफ दूसरो की मुसीबतो की हँसी उड़ाते है।···अच्छा जरा रासे सम्हालो···मै थोडी देर को उतरूँगा।"

प्रोखोर स्लेज से नीचे उतरा, कुछ देर तक पैदल चला। फिर स्लेज मे आराम से आ जमा और शात हो गया ···।

तीनो ने रात कारगिन्स्काया मे बिताई और दूसरे दिन सवेरे नाश्ते के बाद फिर रवाना हो गए। रात होते-होते वे तातारस्की से कोई चालीस वर्स्ट दूर पहुँच गए।

रास्ते मे शरणार्थियो से भरी गाडियो का काफिले-का-काफिला दक्षिण की ओर बढता मिला। मोरोज़ोव्स्की के पास उन्हे पहले कज्जाक-ट्रूप दीख पड़े। तीस-तीस चालीस-चालीस घुडसवारो के स्क्वैड्रन बगल से गुजरे। उनके पीछे आई उनकी मालगाडियाँ। मगर, ग्रिगोरी, अकसीनिया और प्रोखोर जितना आगे बढे रात गुजारने के लिए जगह खोजना उतना ही मुश्किल होता गया। शाम होते-होते गाँवो के ठहरने लायक सभी स्थान ठसाठस भर गए और उनकी तो कौन कहे घोडो तक के खड़े होने की गुजाइश कही नजर न आई। तावरीदा के एक जिले मे ग्रिगोरी दर-दर दस्तक देता फिरा, मगर सारी कोशिश बेकार गई। सोने का ठिकाना कही न हुआ और उन्हे मजबूर एक शेड मे रात गुज़ारनी पड़ी। बर्फानी अधड़ के कारण उनके कपडे बुरी तरह भीग

गए और वे जमकर बिलकुल पत्थर हो गए। पूरी रात पलक झँपी तक नही। सिर्फ तडका होने के जरा पहले उन्होने अहाते मे फूस का अलाव लगाया तो उन्हे थोडी गरमी मिली।

सबेरे अकसीनिया ने सकुचते-सकुचते कहा—"ग्रीशा, हम आज के दिन यहाँ रह ले···क्या खयाल है? रात को ठड की वजह से नीद बिलकुल नही आई। अच्छा हो कि दिन मे थोडा आराम कर लिया जाए।"

ग्रिगोरी राजी हो गया, और बडी कठिनाई के बाद उसने कही से एक खाली कोना खोज निकाला···। सुबह दूसरे शरणार्थी तो आगे बढ गए, पर सौ घायल लोगो और टायफस के मरीजों के साथ मोर्चे का एक चल-अस्पताल दिन मे भी गाँव मे बना रहा।

एक छोटे कमरे मे दस कज़्ज़ाक गदे कच्चे फर्श पर सोते रहे। प्रोखोर घोडे वाला कपडा और खाने का बोरा लाया, दरवाज़े के पास फर्श पर थोडा फूस बिछाया, एक सोते हुए बूढे कज़्ज़ाक को टाँग पकड-कर एक ओर को घसीटा और रूखे पर स्नेह-भरे स्वर मे अकसीनिया से बोला—"लेट जाओ यहाँ···तुम तो इतनी थकी लगती हो कि इन्सान ही नजर नही आती···।"

रात भीगते-भीगते गाँव फिर लोगो से ठसाठस भर गया। रात-भर किनारे की गलियो मे अलाव जलते रहे और जगह लोगो की चीख-पुकार, घोडो की हिनहिनाहट और स्लेजो की रगड की आवाज से गूँजती रही। फिर तडका होने पर उजाला भी कायदे से न हो पाया कि ग्रिगोरी ने प्रोखोर को जगाया और फुसफुसाकर कहा—"उठो और घोडे जोतो···चलना है अब!"

'इतनी जल्दी क्यो चलोगे?" प्रोखोर ने जम्हाई लेते हुए कहा।

"मैंने जो कहा तुमने सुना···?"

प्रोखोर ने काठी से सिर उठाया तो दूर की तोपो की गडगडाहट उसके कानो मे पड़ी।

तीनो ने हाथ-मुँह धोया और सुअर के गोश्त की चर्बी का नाश्ता कर अहाते मे आए तो वहाँ आवाजाही शुरू होती नजर आई। स्लेजो

की कतारो के आस-पास लोगो की चहल-पहल नजर आई। ऐसे मे तडके के अँधेरे मे एक भर्राई हुई आवाज हवा मे बजी—"नही तुम खुद दफन करना इनको। छ लोगो के लिए कब्र खोदने मे हमारा आधा दिन निकल जाएगा···।"

"इन्हे दफन करना हमारा काम है?" एक दूसरी आवाज़ ने शात भाव से उक्रइनी मे जवाब दिया।

"सो तो तुम करोगे ही।" भर्राए हुए स्वरवाला व्यक्ति चीखा—"न दफन करना चाहते हो तो पडा सडने दो इन्हे, यही इसी अहाते मे! इस काम से मुझे कुछ लेना-देना नही।"

"मगर सुनो डॉक्टर, अगर यहाँ मरने वाले तमाम बेघरबार लोगो को हम दफन करने लगे तो हम तो इसी भर के हो जाएँगे। यह काम तुम खुद नहीं कर लोगे?"

"भाड मे जा तू···उल्लू का पट्ठा कही का! चाहता है कि तेरे लिए मैं अपना पूरा अस्पताल लाल फौजियो को सौप दूँ?"

ग्रिगोरी ने अपनी स्लेज से सडक के बीचों-बीच खडी दूसरी स्लेजो का चक्कर काटते हुए कहा—"मुर्दों को कोई नही पूछता···।"

"ज़िन्दो की फिक्र कोई नही करता। मुर्दों की कौन कहे!" प्रोखोर ने जवाब दिया।

दोन के उत्तरी ज़िलो के सभी लोग दक्षिण की ओर उमड चले। बेघरबार लोगो के माल-असबाब से लदी गाड़ियाँ ज़ारीत्सिन से लिखाया जाने वाली रेलवे लाइन से मानीच पहुँचने लगी। ग्रिगोरी ने पहले सात दिन हर पडाव पर तातारस्की गाँव के लोगो को पूछा, पर रास्ते के किसी गाँव मे उसे अपने यहाँ का कोई कज़्ज़ाक नही मिला। साफ है कि पैन्तेली और उसके साथ के लोग उक्रइनी बस्तियो को बचाते हुए बाएँ-ही-बाएँ गए थे, और कज़्ज़ाक गाँवो के बीच से होते हुए ओबलिव्स्काया की तरफ बढे थे ···।

ग्रिगोरी को सिर्फ तेरहवे दिन उनका कुछ अता-पता मिला। रात को पड़ाव डालने पर उसे यो ही मालूम हुआ कि व्येशेन्स्काया का एक

कज्जाक बगल की झोपडी मे टायफस का शिकार है। ग्रिगोरी ने जानना चाहा कि वह ग्रादमी ग्राखिर है कहाँ का ! सो वह गया ग्रौर नीची छतवाले छोटे कमरे मे उसे बूढा ग्रोबनिज़ोव फर्श पर पडा दीखा। उसने बतलाया—"तातारस्की के बेघरबार लोग ग्रभी दो दिन पहले ही यहाँ से गये है। उनमे से कितनो को टायफस हो गया है ग्रौर दो ग्रादमी तो रास्ते मे ही मर गए है। मुझे वे मेरे कहने से यहाँ छोड गए है।

"ग्रब ग्रगर मै ग्रच्छा हो गया ग्रौर लाल कॉमरेडो ने मुझ पर रहम कर मेरी जान बख्श दी तो किसी तरह घर लौट जाऊँगा। ग्रगर ग्रच्छा नही हो सका तो यही मर जाऊँगा। मौत ग्रगर ग्रानी है तो ग्राए···कहाँ ग्राती है इससे कोई फर्क नही पडता·· वह कुछ भी साथ लाती हो, कोई मिठाई लेकर तो साथ ग्राती नही।" ग्रिगोरी के ग्रलविदा कहते समय बूढे ने कहा। ग्रिगोरी ने उसे ग्रपने पिता के विषय मे पूछा तो बोला—"मुझे उनकी कोई खबर नही क्योकि मै ग्राखिरी स्लेज मे था। वैसे मालाखोव्स्की गाँव के बाद मे मैने उन्हे देखा नही···"

ग्रगले पडाव पर ठिकाने के मामले मे किस्मत ने ग्रिगोरी का कुछ ज्यादा साथ दिया। पहले मकान मे घुसते ही उसे वेरखने-चिर्संकोये गाँव के कुछ परिचित कज्जाक मिल गए। उन्होने उसके लिए जगह कर दी ग्रौर उसने ग्रपने ग्रौर ग्रपने साथ के लोगो के लिए स्टोव के पास सुविधा कर ली। पन्द्रह कज्जाक पीपो मे भरी मछलियो की तरह वहाँ पडे दीखे। इनमे तीन टाइफस के बीमार मिले ग्रौर एक पाले का शिकार नज़र ग्राया। कज्जाको ने सुग्रर की चर्बी से थोड़ी-सी लपसी बनाई ग्रौर ग्रिगोरी प्रोखोर ग्रौर ग्रकसीनिया को भी खाने की दावत दी। लेकिन ग्रकसीनिया ने लपसी मे हाथ लगाने से इन्कार कर दिया।

"क्यो, तुम्हे भूख नही है क्या ?" प्रोखोर ने पूछा। पिछले कुछ दिनो मे उसका व्यवहार इस ग्रौरत के प्रति काफ़ी बदल गया था ग्रौर ग्रब वह उससे बात करता था तो रूखे ढग से मगर हमदर्दी के साथ करता था।

"मेरी तबीयत ठीक नही है।" ग्रकसीनिया ने ग्रपना रूमाल सिर पर डाला ग्रौर बाहर ग्रहाते मे निकल गई।

प्रोखोर ने ग्रिगोरी से पूछा—"अकसीनिया कही बीमार तो नही पड गई ?"

"कौन जाने कि क्या बात है।" ग्रिगोरी ने हाथ की लपसी की प्लेट नीचे रखी और उसके पीछे-पीछे बाहर आया। अकसीनिया उसे हाथ से सीना जकडे, सीढियो के पास खडी मिली। उसने उसके गले मे हाथ डाला और चिन्ता से पूछा—"क्या बात है, रानी ?"

"मेरी तबीयत ठीक नही है···सिर भी दर्द कर रहा है।"

"तो झोपड़ी में चलो और लेट रहो।"

"तुम चलो, मैं अभी आई।"

उसकी आवाज मोटी और बेसुरी लगी। हरकतो मे सुस्ती घुली नजर आई। वह गरमी से दम घोटने वाले कमरे मे घुसी तो ग्रिगोरी ने उसे बहुत गौर से देखा। उसके गाल तमतमाए लगे और आँखें जलती हुई। ग्रिगोरी का दिल बैठने लगा कि यह तो सचमुच बीमार हो गई। उसे पिछले दिन की बदन की कँपकँपी और मितली की उसकी शिकायत का ध्यान आया। साथ ही यह भी याद आया कि आज सबेरे जब वह सोकर जागी तो उसे इतना पसीना आ रहा था और घुंघराले बाल गरदन मे यो चिपके हुए थे जैसे कि वह अभी-अभी नहाकर उठी हो। फिर अकसीनिया सोती रही थी और वह उसे देखता रहा था। उसके आराम मे खलल डालने के डर से उसे जगाने तक की हिम्मत उसकी न पडी थी।···

अकसीनिया ने सफर की सारी दुश्वारियाँ बड़ी बहादुरी से सही थी। एक से अधिक बार तो उसने खुद प्रोखोर का दिल बढाया था। प्रोखोर जब-तब ही कहने लगता था—"शैतान ही जाने कि क्यो होती है यह लड़ाई और किसके दिमाग की उपज है यह ! बस यह है कि दिन मे गाडी पर सवार चलते जाओ···चलते जाओ।·· रात हो तो कही टिकने तक को ठौर न पाओ···फिर यह भी तो पता नही कि यह तूफान चलेगा कब तक।"

लेकिन उस दिन अकसीनिया मे वह ताजगी और वह बात नजर न आई। फिर दोनो सोए तो ग्रिगोरी को ऐसा लगा जैसे कि वह

रही हो। सो, धीरे से पूछा—"क्या बात है ?"

"तय है कि मै बीमार हो गई हूँ···अब क्या होगा ? अब तुम छोड दोगे मुझे ?"

"कुछ नही·· पागल हो तुम। मैं तुम्हे छोड क्यो दूँगा ? रोओ मत···शायद तुम्हे रास्ते मे सर्दी लग गई है और अपनी तरफ से तुम कुछ डर गई हो।"

"ग्रीशा मेरे, टाइफस हो गया है मुझे।"

"बेकार बकवास न करो। टाइफस का कही कोई निशान नजर नही आता। तुम्हारा सिर बिल्कुल ठडा है—तुम्हे टाइफस कहाँ से हो जाएगा ?" ग्रिगोरी ने उसे तसल्ली बँधाई। लेकिन मन-ही-मन वह सच्चाई समझता रहा और चिन्ता करता रहा कि अगर यह बिल्कुल पड़ गई तो क्या होगा ?

"उफ···इस तरह गाडी पर चलते जाना बडा ही दुश्वार है।" अकसीनिया ने ग्रिगोरी से बिल्कुल सटकर धीरे से कहा। "जरा देखो तो कि हर रात क्वार्टरो मे कितने आदमी आकर एक साथ भर जाते हैं। ऐसे मे जुएँ तो खा डालेगी, ग्रीशा! मर्दो के सामने रहने की वजह से मुझे अपनी सफाई का मौका ही नही मिलता।···कल मैं शैड मे गई और वहाँ मैंने कपडे उतारे तो मुझे अपनी कमीज मे इतनी जुएँ नजर आईं कि कुछ न पूछो। हे नीली छतरीवाले! जुओ की ऐसी भरमार तो मैंने जिन्दगी मे पहले कभी देखी ही नही। अब भी जब खयाल आता है तो जी मिचलाने लगता है, और कुछ भी खाने को मन नही करता।·· लेकिन तुमने देखा था कि जो बूढा कल बेंच पर लेटा हुआ था, उसके कपडो मे कितनी जुएँ थी ? कोट-भर मे रेंग रही थी।"

"छोडो उनका खयाल, क्या चीज मिली है तुम्हे दिलचस्पी लेने को! जुएँ सिर्फ जुएँ ही होती है और कुछ नही। और, लडाई मे हिस्सा लेते वक्त कोई उनकी गिनती नही करता।" ग्रिगोरी ने जरा खीझ से कहा।

"मेरे तो बदन-भर मे खुजली हो रही है।"

"तुम्हारे क्या हर एक के बदन में खुजली हो रही है। लेकिन इस

वक्त इस मामले मे हो भी क्या सकता है ? चलती चलो। येकातेरीनोदार पहुँचने पर जमकर सफाई की जाएगी।"

"लेकिन साफ कपडे तो हम पहन ही नही सकते।" अकसीनिया ने आह भरकर कहा—"ये जुएँ तो हम सबको खा जाएँगी, ग्रीशा!"

"अच्छा अब तुम सो जाओ। कल सुबह तडके ही चल देना है।"

मगर ग्रिगोरी को घण्टो नीद नही आई, और अकसीनिया की भी पलकें नही झँपी। अपना मुँह भेड की खाल से ढककर वह कई बार अन्दर-ही-अन्दर सिसक-सिसककर रोई। फिर बहुत देर तक करवटें बदलती रही और आहे भरती रही। उसे औंघाई सिर्फ तब आई जब ग्रिगोरी उसकी ओर मुड गया और उसने उसके गले मे बाँहे डाल ली। पर रात मे किसी ने दरवाजा जोर-जोर से खटखटाया तो ग्रिगोरी की आँख खुल गई। कोई बाहर दरवाज़ा पीटता और चीखता सुन पडा—"ऐ, कोई है ·· दरवाज़ा खोलो, वरना इसे तोड डालेंगे हम। घोडे बेचकर सो रहे हो··· शैतान के बच्चो!"

घर का मालिक एक कज्जाक था—उम्र से सयाना, स्वभाव से गम्भीर। सो, वह उठकर बरसाती में आया और बोला—"कौन हो ? क्या चाहते हो ? अगर रात बिताने को जगह की तलाश कर रहे हो, तो अन्दर आने से कोई फायदा नही। लोग ठसाठस भरे हुए हैं। करवटें बदलने की गुँजाइश नही है।"

"दरवाजा खोलो, मैं कहता हूँ तुमसे।" फिर बाहर से ज़ोर की आवाज आई और दूसरे ही क्षण आधे दर्जन कज्ज़ाक दरवाज़ा तोडकर सामने के कमरे मे घुस आए।

"कौन लोग ठहरे हुए है यहाँ ?" उनमे से एक ने पूछा। पूछने वाला पाले के कारण लोहे की तरह काला लगा और उसके जमे हुए होठ मुश्किल से हिलते दीखे।

"यहाँ बेघरबार लोग ठहरे हुए हैं—लेकिन, तुम लोग कौन हो ?"

पर, सवाल का जवाब दिए बिना एक कज्जाक सोने के कमरे मे पहुँच गया और चिल्लाने लगा—"ऐ···सुनते हो तुम लोग···बड़े

आराम से टाँगे फैलाए पडे हो। उठो···उठकर बैठो। जल्दी करो, वरना हम तुम्हे कायदे से झकझोरकर उठा देंगे।"

"कौन हो तुम ··चीख रहे हो इस तरह ?" ग्रिगोरी ने भर्राई आवाज से पूछा और उठ बैठा।

"मै अभी बतलाता हूँ तुम्हे कि मै कौन हूँ।" कज्जाक ग्रिगोरी की तरफ बढा और पैराफीन के छोटे लैम्प की मद्धिम रोशनी मे उसकी पिस्तौल की नली चमकी।

"काफी तेज मालूम होते हो तुम···" ग्रिगोरी ने इत्मीनान से कहा—"खैर, जरा देखें तो तुम्हारा यह खिलौना।" और फुर्ती से कज्जाक की कलाई अपने हाथ से जकड़कर इस तरह ऐंठी कि आदमी के मुँह से कराह निकल गई और उसने अपनी उँगलियाँ ढीली कर दी। पिस्तौल खट से जमीन पर गिर गई। ग्रिगोरी ने कज्जाक को एक ओर को ढकेला, बिजली की रफ्तार से पिस्तौल उठाकर अपनी जेब मे रखी और शान्त भाव से बोला—"अब आओ, कुछ बातचीत हो जाए। किस रेजीमेट के हो तुम ? तुम्हारे जैसे तेज कितने आदमी है इस रेजीमेट मे ?"

कज्जाक अपने आश्चर्य की भावना से उभरते हुए चीखा—"साथियो, इधर आना जरा।"

ग्रिगोरी दरवाजे के पास पहुँचा, ड्योढी के पास रुका और चौखट से टिकते हुए बोला—"मै १९वी दोन रेजीमेट का कमाडर हूँ··· जरा चुप रहो और इस तरह चीखना बन्द करो। कौन कुत्ते की तरह भोक रहा है उधर ? खैर, मेरे कज्जाक साथियो, यह तूफान तुम लोगो ने क्या मचा रखा है ? किसको झकझोरने जा रहे हो तुम ? किसने तुम्हे दिया इतना और ऐसा हक ? क्विक मार्च···चलो यहाँ से।"

"और, तुम इस तरह बलबला क्यो रहे हो ?" एक कज्जाक चिल्लाया—"हमने बड़े-बड़े स्क्वैड्रन कमाडर देखे है। हम क्या रात अहाते मे काटेंगे ? यहाँ का हर आदमी बाहर निकल जाए। हमे हुक्म है कि हम हर बेघरबार आदमी को यहाँ से बाहर निकाल दे··· समझे ? और, तुम इस तरह गड़बड़ी कर रहे हो। हमारा पाला तुम्हारे

जैसे सैकडो लोगो से पहले भी पडा है।"

ग्रिगोरी सीधे बोलने वाले के पास जा धमका, भिंचे हुए होठो से बोला—"नही, मेरा जैसा आदमी तुमने पहले कभी नही देखा होगा। तुम चाहते हो कि तुम्हारे जैसे बेवकूफ को बीच से दो कर दूँ मै? अभी करके रख दूँगा। पीछे मत हो! यह पिस्तौल मेरी नही है। यह तो मैंने तुम्हारे एक साथी से छीनी है। लाओ लौटा दो मुझे यह ·· और फौरन एक-दो-तीन हो जाओ यहाँ से, वरना इस पर उतर आया तो तुम्हारे बदन पर खाल नही बचेगी।" उसने धीरे से उस कज्जाक को मोडा और धक्का दे दिया।

"मैं इसे खाने-भर को दूँ?" एक लम्बे-चौड़े कज्ज़ाक ने अपना चेहरा ऊँट के बाल के टोपे से ढके-ही-ढके कुछ सोचते हुए कहा। वह ग्रिगोरी के पीछे खडा उसे गौर से देखने लगा, और एक पैर से दूसरे का सहारा लेते समय उसके चमडे के तल्लेवाले किरमिच के बूट चरमराए।

ग्रिगोरी अपने आपे मे न रहा और उसकी ओर मुडकर मुट्ठियाँ भीच ली। लेकिन कज्जाक ने अपना हाथ उठा दिया और मिन्नत के लहजे मे बोला—"मेरी बात सुनिए हुजूर, या जो कहिए, मैं आपको कहूँ। ज़रा ठहरिए, मुझ पर मुट्ठी न चलाइए। हम किसी तरह का कोई झगड़ा किया नही चाहते। लेकिन आज के इस ज़माने मे कज्ज़ाको को इस तरह धक्का न दीजिए। १६१७ की तरह बुरा वक्त एक बार फिर आ रहा है। अगर किसी 'मरता क्या न करता' वाले आदमी से आप टकरा गए, तो वह बीच से दो नही, पॉच टुकड़े कर देगा आपके। यह तो देखने से ही साफ है कि आपमे दम खासा है और आपकी बात से यह समझते देर नही लगती है कि कज्जाक आप भी हैं। इसलिए, आप जरा सोच-समझकर मुँह खोलिए, वरना बेकार की मुसीबत मोल लीजिएगा।"

ग्रिगोरी ने जिस आदमी से पिस्तौल जबदरस्ती छीनी थी वह बिगडते हुए बोला—"वहाँ खडे-खडे तकरीर ही मत झाडते रहो। आओ हम दूसरा दरवाजा देखें।" फिर ग्रिगोरी की बगल से गुजरा तो उसे कनखी

से देखते हुए बोला—"हम तुम्हे परेशान नही करना चाहते अफसर। वैसे तो हम तुम्हारा बपतिस्मा कर सकते है।"

ग्रिगोरी ने नफरत से होठ सिकोडे और जवाब दिया—'खुद मेरा बपतिस्मा करोगे तुम ? जाओ-जाओ यहाँ से, वरना तुम्हारा पतलून नीचे आ रहेगा। यानी यह काम भी कर लेते हो तुम ? खैरियत यही समझो कि तुम्हारी पिस्तौल लौटा दी मैने · तुम्हारे जैसे हातिम को तो पिस्तौल नही, भेडो के बाल ठीक करने का धन्धा रखना चाहिए अपने पास।"

"आओ साथियो···इससे कहो कि अपनी ऐसी-तैसी मे जाए! कीचड मे ढेला ही क्यो फेको कि कपडो पर छीटे पड़ें!" बातचीत मे हिस्सा न लेने वाले एक दूसरे कज्ज़ाक ने हँसते हुए कहा।

कज्ज़ाक ठड से अपने जूते खट-खट करते, गालियाँ बकते बाहर जाने को मुडे। ग्रिगोरी मकान-मालिक से सख्त आवाज मे बोला—"यह दरवाजा अब दुबारा न खोलना ·· वैसे अगर ये लोग दुबारा कोई गडबडी करे तो मुझे जगाना।"

इसी बीच वेरखने-चिर्सकोए के कज्जाक इस शोरगुल से जाग गए, और लेटे-लेटे आपस मे धीरे-धीरे बाते करने लगे। एक सयानी उम्र का कज्जाक आह भरते हुए बोला—"कायदा-कानून, अदब लिहाज़ तो जैसे दुनिया से उठ ही गया। लोग अफसर से यो बात करते है जैसे कि वह कोई ऐरा-गैरा हो। पुराने जमाने मे ऐसा कहाँ मुमकिन था! इतने मे ही दलेल बोल दी जाती कि दम निकल जाता।"

"बात ? बात क्या है ? तुमने देखा नही कि वे लोग तो हाथापाई के लिए तैयार थे ? तुमने उस ऊट के टोपे वाले चिनार के ठूँठ की बातें सुनी थी ? कहने लगा—'मै इसे खाने-भर को दूँ ?' कैसे गुडे हो गए है ये तमाम लोग!"

"तुमने उन्हे इतनी आसानी से निकल कैसे जाने दिया, ग्रिगोरी-पैन्तलेयेविच ?" एक कज्जाक ने पूछा।

ग्रिगोरी ने स्नेह-भरे ढग से मुस्कराते हुए बात सुनी, और अपने बरानकोट से अपने को ढकते हुए बोला—"हटाओ भी, तुम्हे उनसे क्या

लेना-देना ? वे साफ निकल गए और आमतौर से किसी की सुनेंगे भी नही। गिरोह बनाकर इधर-उधर घूमते-फिरते हैं। कोई उनके ऊपर है नही। अब कौन फैसला करे उनका और कौन कमाण्डर बने उनका ? जो आदमी अपने को उनसे इक्कीस साबित करे, वही उनका कमाण्डर। मेरा खयाल नही है कि उनकी पूरी टुकडी मे एक भी अफसर बाकी बच रहा है। मैने तो स्क्वैड्रन की स्क्वैड्रन देखी है ऐसी···यतीमो के झुड लगे है बिलकुल···खैर चलो, सोया जाए।"

अकसीनिया, ग्रिगोरी से धीरे से बोली—"लेकिन तुम उनके पास दौडकर क्यो पहुँच गए, ग्रीशा ? ईसा के लिए, ऐसे लोगो से मत भिड जाया करो ! जगली है···तुम्हे मार डाल सकते है।"

"तुम सो जाओ, अकसीनिया ! कल सवेरे जल्दी उठना है। अब तुम्हारी तबीयत कैसी है ? पहले से अच्छी है न ?"

"वैसी ही है।"

"सिर मे दर्द अब भी है ?"

"हाँ है···मुझे तो लगता है कि अब मैं उठकर ही नही दूँगी···।"

ग्रिगोरी ने उसके माथे पर हाथ रखा और आह भरते हुए बोला—"माथा भट्ठी की तरह जल रहा है। खैर छोडो···फिक्र मत करो। तन्दुरुस्त औरत हो। सब-कुछ ठीक हो जाएगा।"

अकसीनिया ने कोई जवाब नही दिया। प्यास से उसका तालू सूखता रहा। उसने बावर्चीखाने मे जाकर कई बार गरम-गरम पानी पिया और सर्दी और मिचली को दबाते हुए घोडे के कपडे पर लेट रही।

रात मे चार टोलियाँ और भी सोने की जगह खोजती आईं। उन्होने अपनी राइफलो के कुन्दो से दरवाज़ा खटखटाया, खिडकी की झिलमिलियाँ खोली, खिडकियाँ खटखटाईं और गईं तभी जब मकान-मालिक ने ग्रिगोरी के कहने पर चिल्लाकर कहा—"चले जाओ यहाँ से···यहाँ ब्रिगेड के हैडक्वार्टर्स के लोग हैं।"

सुबह प्रोखोर और ग्रिगोरी ने घोडे जोते। अकसीनिया ने जैसे-तैसे बाहर के कपडे पहने और निकलकर अहाते मे आई।

इस समय पूर्व मे सूरज उगता रहा। चिमनियो से भूरा धुआँ

उमडकर नीले आसमान मे घुलता रहा। ऊपर उडता एक गुलाबी बादल नीचे के सूरज के प्रकाश से दमक उठा। बाडो और शेडो की छतो पर पाले की परत-पर-परत जमी दीखी। घोडो के बदन से भाप उठती रही।

ग्रिगोरी ने मदद देकर अकसीनिया को स्लेज मे बिठाया। बोला—"तुम लेट जाओ···ज्यादा आराम मिलेगा।" अकसीनिया ने सिर हिलाया, ग्रिगोरी के पैर ढक देने पर उसकी ओर आभार से भरकर देखा और फिर आँखे मूँद ली।···

दोपहर को खास सडक से कोई दो वर्स्ट के फासले पर जब स्लेज रुकी तो अकसीनिया उतरकर नीचे न आ सकी। ग्रिगोरी उसे हाथ पकडकर घर के अन्दर ले गया, मकान-मालकिन के बिस्तर तैयार कर देने पर उसने उसे पलग पर लिटा दिया और अकसीनिया के पीले चेहरे को देखते हुए बोला—"तबीयत बहुत खराब है, मेरी रानी ?"

अकसीनिया ने बरबस आँखे खोली, धुधलाई पलको से उसकी ओर देखा और फिर यों पड रही, जैसे कि आधा होश न रहा हो। ग्रिगोरी ने काँपते हाथो से सिर से रूमाल हटाया। औरत के गाल बर्फ-से ठडे लगे, मगर माथा जलता रहा। कनपटियो पर जमे हुए बर्फ के दाने पसीने की शानदार बूदो मे घुल-मिल गए।

शाम होते-होते वह पूरी तरह अचेतन हो गई। लेकिन इस स्थिति के एक क्षण पहले उसने धीरे से पानी माँगा—"थोडा-सा पानी दे दो·· नही तो पिघली हुई बर्फ ही दे दो।" और फिर, एक क्षण मौन रहने के बाद बोली—"ग्रीशा को बुला दो जरा।"

"मैं हूँ न यहाँ···क्या चाहिए तुम्हे अकसीनिया रानी ?" ग्रिगोरी ने उसका हाथ अपने हाथ मे लिया और उसे भद्दे ढग से सहलाता रहा।

"मुझे छोडकर चले मत जाना, मेरे राजा !"

"मैं तुम्हे छोडकर कही नही जाऊँगा···तुम क्यो सोचती हो कि मैं तुम्हे छोड़कर चला जाऊँगा।"

"अजनबी जगह है···यहाँ मत छोडना मझे··· यहाँ तो मैं मर

जाऊँगी।"

प्रोखोर ने पानी दिया। अकसीनिया ने बहुत ललककर ताँबे के मग के सिरे पर खुश्क होठ जमाए, थोडा-सा पानी पिया और कराह के साथ सिर दुबारा तकिए पर रख लिया। फिर, पाँच मिनट के अन्दर वह जाने क्या-क्या बकने लगी कि समझना मुश्किल हो गया। फिर भी सिरहाने बैठे ग्रिगोरी ने थोडे-से शब्द समझ ही लिए—"मुझे मुँह-हाथ धोना है·· थोडा-सा नीला···जल्दी।" फिर उसके अस्पष्ट शब्द फुस-फुसाहट मे बदल गए, तो प्रोखोर ने सिर हिलाया और ग्रिगोरी की भर्त्सना करते हुए बोला—"मैंने कहा था कि इसे इस बार साथ न ले चलो···अब क्या किया जाए? सजा है यह···ऊपर वाला जानता है कि सजा है यह! हम लोग रात क्या यही बिताएँगे?··· तुम बहरे हो गए या कुछ और हो गया है तुम्हे? मै पूछता हूँ कि रात मे हम यही रहेगे क्या?"

ग्रिगोरी ने कोई जवाब नही दिया। वह गुडी-मुडी बना बैठा रहा और उसने क्षण-भर को भी अकसीनिया के चेहरे पर से निगाह नही हटाई। मेहमान-नवाज, दया-मायावाली मकान-मालकिन ने आँखो से अकसीनिया की तरफ इशारा किया और प्रोखोर से धीरे से पूछा—"यह इसकी बीवी है? बाल-बच्चे है?"

"हाँ, बीवी है···बाल-बच्चे भी है·· बाकी सब-कुछ है···किस्मत-भर साथ नही है।" प्रोखोर ने बुदबुदाकर जवाब दिया।

ग्रिगोरी अहाते मे आया और स्लेज पर बैठकर सिगरेट-पर-सिगरेट फूंकता रहा। सोचता रहा—'अकसीनिया को यही, इसी गाँव मे छोडना पड़ेगा। इसे आगे ले चलने का मतलब मौत को दावत देना होगा।'

पूरी तस्वीर उसकी आँखो के आगे साफ हो उठी। वह उठकर अन्दर गया और अकसीनिया के पलग के पास जा बैठा। प्रोखोर ने फिर पूछा—"रात हम यही बिताएँगे न?"

"हाँ···और, शायद कल भी यही रहेगे।"

थोडी देर बाद ही घर का मालिक आ गया। आदमी का कद

छोटा था। आँखें चालाकी से भरी और तेज थी। एक पैर घुटने से कटा हुआ था।

सो, अपना लकडी का पैर खट-खट करता, भचकता वह मेज के पास आया, बाहर के कपडे उतारे, प्रोखोर को कनखी से देखा और बोला—"सो, आसमान वाले ने मेहमान भेज दिए है हमारे यहाँ ?··· कहाँ के है आप लोग ?" और, जवाब का इन्तजार किए बिना, पत्नी को हुक्म देते हुए बोला—"जल्दी करो···मुझे जो कुछ हो, खाने को दो। पेट मे चूहे कूद रहे है।"

फिर वह खाने पर टूट पड़ा और बहुत देर तक खाता रहा। उस बीच उसका चकमक दीदा कभी प्रोखोर पर जा टिका तो कभी अक-सीनिया के जड-से शरीर पर। ग्रिगोरी ने सोने के कमरे से बाहर आकर उसका अभिवादन किया। मकान-मालिक ने जवाब मे सिर हिलाया—"पीछे हट रहे है ?"

"हाँ।"

"तो, लडाई से जी भर गया, सरकार ?"

"थोडा-बहुत भर ही गया।"

"यह कौन है···बीवी है, आपकी ?" अकसीनिया की ओर देखते हुए सिर हिलाकर उसने पूछा।

"हाँ।"

"तुमने इस औरत को पलग पर क्यो सजा दिया है ? अब हम लोग कहाँ सोएँगे ?" मकान-मालिक असन्तोष से अपनी पत्नी की ओर मुड़ा।

"औरत बीमार है, वान्या···मैं क्या करती मुझे रहम आ गया।"

"रहम आ गया ! सब पर रहम करना तो मुमकिन भी नही है। फिर, कितने लोग है जो गुजर रहे है इधर से। यहाँ तो मेला हो जाएगा, हुजूर !"

ग्रिगोरी मेजबान और उसकी बीवी की ओर मुडा और हाथ सीने पर रखते हुए बोला तो उसकी आवाज में आग्रह तो क्या, मिन्नत तक घुल उठी। बोला—"आप भले लोग हैं। मैं मुसीबत मे पड गया हूँ। ईसा के लिए मेरी मदद करें। अगर हम इसे अपने साथ आगे ले जाएँगे

तो यह मर जाएगी। हम छोड देना चाहते है। मेहरबानी कर इसे यहीं रहने दे। देख-रेख के लिए आप जितना चाहेगे, मैं आपको दूँगा। और जिन्दगी-भर आपका एहसान नही भूलूंगा · और कुछ न कहे इतना रहम करें मुझ पर।"

इस पर पहले तो मकान-मालिक ने साफ इन्कार कर दिया। बोला—"बीमार की तीमारदारी के लिए वक्त हमारे पास कहाँ! फिर, इसके लिए जगह भी तो नही है यहाँ।" लेकिन खाना खाने के बाद आखिरकार बोला—"खैर···यह तो है ही, किसी की देख-रेख कोई बिना कुछ लिए-दिए तो करेगा नही···है कि नही? मगर, आप हमे इस काम के लिए देगे कितना? कितना दे सकते है आप?"

ग्रिगोरी ने पूरी रकम अपनी जेब से निकाल ली और मकान-मालिक की तरफ बढा दी। किसान ने ढीले-ढाले ढग से दोन सरकार के नोटो का बडल लिया, उगलियो पर थूककर गिना और पूछा—"ज़ार के नोट नही है आपके पास?"

"नही।"

"तो, केरेंस्की के रूबल है? ये नोट तो खतरे से खाली नही है।"

"मेरे पास केरेंस्की के नोट नही है···यो आप कहे तो मैं अपना घोडा छोड दूँ?"

आदमी ने कुछ देर तक सोचा और फिर विचारो मे डूबे-डूबे ही बोला—"नही, घोड़ा नही चाहिए। वैसे तो हम किसानो की निगाहो मे घोडे की खास कीमत होती है, मगर आजकल के तूफानी दिनो मे इससे हमे कोई फायदा नही। अगर श्वेत फौजी न लेगे, तो लाल फौजी हमसे इसे छीन लेगे और हमारे हाथ कुछ न लगेगा। मेरे पास एक बेकाम घोडी है, पर इसे भी लोग न छोड़ेगे और देखते-देखते अहाते से हाँक ले जाएँगे।" फिर वह चुप हो गया और कुछ देर सोचने के बाद जैसे अपनी सफाई देते हुए बोला—"यह न समझिएगा कि मैं कजूस हूँ···ऊपरवाला बचाए कजूसी से! हुज़ूर आपकी बीवी एक महीना क्या, इसके बाद भी यहाँ रह सकती है, हमारा कोई नुकसान नही। लेकिन, इसे कभी यह देना होगा, कभी वह देना होगा। रोटी, दूध और अडा वगैरा तो

चाहिए ही, और इस सबमे रकम लगती है···है कि नही ? फिर इसके कपडे धुलने चाहिए, खुद इसके नहाने-धोने का इन्तजाम होना चाहिए। और दुनिया-भर की दूसरी चीजें चाहिए। · मेरी बीवी के पास घर और फार्म का काम रहता है। लेकिन उसे यह सब छोड-छाडकर इसकी देख रेख करनी होगी। यह सब-कुछ बहुत आसान नही है, इसलिए रकम देने का बुरा न मानिए और हो सके तो इसमे कुछ और जोड दीजिए। मैं अपाहिज आदमी ठहरा। मेरा एक पैर गायब है। आप खुद ही देख सकते है। मुझसे तो घर को किसी तरह की कोई आमदनी होती नही। हम तो ऊपरवाला जिन्हे यहाँ भेज देता है, उनके सहारे रहते है, और रोटी खाकर और क्वास पीकर जिन्दगी बसर करते है ·"

ग्रिगोरी क्रोध से अन्दर-ही-अन्दर उबलते हुए बोला—"मै तो किसी भी बात का बुरा नही मानता, मेहरबान! जहाँ तक रकम का सवाल है, मैंने अपने पास का एक-एक रूबल आपको दे दिया। मेरा बिना रूबलो के भी काम चल सकता है। अब आप मुझसे और क्या चाहते है?"

"तो, आपने अपने पास का एक-एक रूबल दे दिया मुझे ?" आदमी अविश्वास से हँसा—"आपकी तनख्वाह तो इतनी होगी कि आप चाहे तो अपने घोडे की काठीवाला थैला भर ले नोटो से!"

ग्रिगोरी का चेहरा पीला पड गया। बोला—"आप सीधे-सीधे बतलाइए कि इस बीमार को आप अपने यहाँ रखेंगे या नही ?"

"नही· अगर आप इस तरह हिसाब-किताब करेंगे तो हम इसे यहाँ भला क्यो रखेगे!" आदमी चोट खाई आवाज मे बोला—"यह सब-कुछ इतना आसान तो है नही···आप तो खुद ही जानते है।···एक फौजी अफसर की बीवी है · साथ तमाम पचायत है···पडोसी जानने से तो रहेगे नही। उस पर लाल फौजी दरवाजे पर दस्तक दे रहे है ··उन्हे मालूम हो जाएगा तो वे हमारे गले पड जायेगे। नही, आप इसे यहाँ से ले जाएँ। मगर, पूछ देखें, शायद कोई और पडोसी इसे अपने पास रखने को राजी हो जाए!" और, कलख के साथ उसने रूबल ग्रिगोरी को थमा दिए, तम्बाकू की थैली निकाली और अपने लिए एक सिगरेट रोल

करने लगा ।

ग्रिगोरी ने अपना बरानकोट पहना और प्रोखोर से बोला—"तुम अकसीनिया के पास रहो···मै जाता हूँ और जाकर कोई और ठिकाना तय करता हूँ ।"

फिर, वह दरवाजे की कुडी खोलने लगा कि मालिक ने उसे रोका। बोला—"जरा ठहरिए···हुजूर ! ऐसी जल्दी क्या है ? आपका खयाल है कि इस बीमार औरत के लिए मेरे दिल मे कोई दर्द नही ? मुझे उसके लिए बहुत अफसोस है । इसके अलावा, मैं खुद फौज मे रहा हूँ, और आपकी जगह और ओहदे के लिए मेरे दिल मे बडी इज्जत है ।···लेकिन आप इस रकम के साथ कुछ और नही जोड सकते क्या ?"

इस पर प्रोखोर अपने ऊपर नियत्रण न रख सका और नफरत से उसका चेहरा नीला हो उठा । गरजा—"अबे लँगडे, इसमे हम और क्या बढा सकते हैं ? तेरे रग-ढग तो ऐसे हैं कि तेरा दूसरा पैर भी काट दिया जाना चाहिए । ग्रिगोरी-पैन्तेलियेविच, जरा मैं इसका बुखार उतार दूँ । फिर हम अकसीनिया को स्लेज मे बैठा लेंगे और आगे चलेंगे । मौत ले जाए इस शैतान के बच्चे को !"

मकान-मालिक ने बिना बीच में बोले प्रोखोर की पूरी बात सुनी और फिर बोला—"कोई वजह नही कि आप मेरी इज्जत उतारें । यह तो सौदा तय करने की बात है ताकि आप भी खुश रहे और मैं भी खुश रहूँ । इसमे गुस्से से उबलने और लडने-झगडने की ऐसी कोई बात नही ।···तुम इस तरह बौखला क्यो रहे हो, कज्जाक ? तुम्हारा खयाल है कि मैं और रूबल चाहता हूँ ? इसका तो मुझे खयाल भी नही आया । ···मेरा मतलब था कि शायद हुजूर के पास कोई फालतू राइफल या रिवॉल्वर हो और वह आप हमे दे सके । आपके लिए उसकी कोई ऐसी खास कीमत नही, लेकिन आज की इन मुसीबतो मे हमारे लिए वह बहुत बडी चीज होगी···हमे तो अपने घर तक की रखवाली के लिए हथियार चाहिए । इसीलिए मैंने वह बात कही थी । बस, तो आप रूबल मुझे लौटा दे और एक राइफल ऊपर से दे दें और सौदा खत्म। फिर हाथ मिलाकर जहाँ जाना हो चले जाइए और अपनी बीवी को पूरे

इत्मीनान से यहाँ छोड जाइए। हम उसे अपने घर का ही आदमी समझेंगे। उसकी पूरी देखरेख करेंगे, हर तरह फिक्र रखेगे। मै कसम लेकर आपको इस बात का यकीन दिला सकता हूँ।"

ग्रिगोरी ने प्रोखोर की तरफ देखा और शात भाव से बोला—"मेरी राइफल और कारतूस इसे दे दो ··और फिर चलकर स्लेज जोतो।··· अकसीनिया यही रहेगी···ऊपरवाला गवाह है कि उसे साथ ले चलना मौत को दावत देना होगा।"

: २७ :

आगे आनेवाले दिन नीरस और वीरान हो उठे। ग्रिगोरी ने अकसीनियाको उस गाँव मे क्या छोडा, उसे किसी चीज में किसी तरह की कोई दिलचस्पी ही न रही। हर दिन सवेरे वह स्लेज पर सवार होता और बर्फ से मढे, स्तेपी मैदान मे आगे-ही-आगे बढता चला जाता। हर दिन शाम को वह ठहरने की कोई-न-कोई जगह खोजता पड रहता और सो जाता। इसी तरह दिन-पर-दिन बीतते गए। इस बीच मोर्चा बराबर, एकसी गति से दक्षिण की ओर बढता रहा। पर, ग्रिगोरी के मन मे उसके बारे मे कुछ भी जानने की उत्सुकता न रही। उसने अनुभव किया कि सच्चाई और ईमानदारी से दुश्मन से लोहा लेने का ज़माना लद गया···कज़्ज़ाकों मे अब अपने ही जिलो का बचाव करने की ख्वाहिश नही रही···हर चीज से साफ है कि गोरी फौजें अब अपना आखिरी दम लगा रही है···और जैसे दोन के इलाके मे वे लाल फौजों का आगे बढ़ना रोक नही सकी, वैसे ही कुबान के इलाके मे भी अब वे अपने कदम जमा न सकेंगी···

लडाई खात्मे पर आने लगी। अन्त तेजी से यो पास आता रहा, जैसे कि ऐसा ही होना लाजिमी हो। कुबान के कज्जाक हज़ारों की सख्या मे मोर्चा छोड-छोडकर अपने-अपने गाँव-घरो की ओर उमड़ चले। दोन के कज़्ज़ाक तार-तार कर दिए गए। स्वयसेवक सेना के सदस्यो की रगो का खून लडाई और टायफ़स ने सोख लिया और उनकी शक्ति यो भी एक-चौथाई रह गई। इसलिए सफलता के पंखो पर सवार लाल

सेना की बाढ को सम्हालना और रोकना उनके बस की बात न रही। शरणार्थियो के बीच अफवाहे सुन पडने लगी कि जनरल देनीकिन ने कुबान रादा के सदस्यो को जैसे गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया है, उससे लोगो मे नफरत दिन-दूनी, रात-चौगुनी बढती जा रही है। ·· कहा गया कि कुबान मे स्वयसेवक सेना के खिलाफ बगावत के बीज बोए जा रहे है और बिना किसी तरह की बाधा डाले सोवियत सेना को काकेशस का रास्ता देने के लिए लाल सेना के सदस्यो से बातचीत चल रही है। ··यह भी बार-बार सुनाई पडा कि कुबान और तेरेक के लोग दोन के कज्जाको और स्वयंसेवक सेना के जानी दुश्मन हो गए है और दोन डिवीज़न और कुबान की कज्ज़ाक पैदल फौज के बीच मुठभेड़ कभी की हो चुकी है।···

ग्रिगोरी जहाँ भी ठहरा उसने आसपास के हर आदमी की बातचीत बडे ही ध्यान से सुनी और श्वेत सेनाओ की अन्तिम और अनिवार्य पराजय मे उसका विश्वास बराबर बढता गया। लेकिन इस पर भी उसे कई बार आशा बँधी कि फूट की शिकार चरित्र की दृष्टि से टूटी हुई और आपस मे एक-दूसरे को फूटी आँखो न सुहानेवाली गोरी फौजें शायद इस मुसीबत के धक्के से मजबूर होकर एक हो जाएँ, नए सिरे से दुश्मन के लोहे से लोहा बजाएँ और लाल फौजो की फतहो को हार मे बदलकर उन्हे पीछे ठेल दें···! लेकिन रोस्तोव के समर्पण के बाद उसकी यह उम्मीद टूट गई और उसने लोगो की इस तरह की बातो पर यकीन करना बन्द कर दिया कि बताइस्क की घमासान लडाई के बाद लाल फौजे पीछे हटने लगी है···।

ग्रिगोरी अपने निकम्मेपन से ऊब उठा और उसने किसी-न-किसी फौजी टुकडी मे शामिल हो जाना चाहा। लेकिन यह बात सुनते ही प्रोखोर ने उसका पूरी शक्ति से विरोध किया। घृणा से भरकर बोला—

"तुम्हारा दिमाग बिलकुल खराब हो गया है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच! उस दोज़ख मे हम अपनी टाँगें कहाँ लटकाते फिरेगे? ऊँट एक खास करवट बैठ चुका है, यह बात तो तुम भी साफ-साफ देख सकते हो। इसलिए अब हम अपनी जानें बेकार मे क्यो दे? वैसे भी यह बतलाओ

कि क्या हम दो आदमी ही कौन-सी ज़मीन उलट देगे ? हमे कोई लडाई मे तो जबरदस्ती झोक रहा नही है। ऐसे मे हमे तो जल्दी-से-जल्दी मुसीबत के रास्ते से हट जाना चाहिए। और तुम हो कि यह बकवास तुम्हारे दिमाग मे आ रही है। नही, बस सयाने लोगो की तरह तुम भी अब जल्दी-से-जल्दी पीछे हटो। तुम और मै यानी हम दोनो पिछले पाँच वर्षों मे काफी लडाई देख चुके···लडाई मे हिस्सा ले चुके। इसीलिए एक बार अपनी जान छुडाई थी मैने कि दुबारा फिर मोर्चे के नाम पर ज़िबह कर दिया जाऊँ! शुक्रिया! बडी मेहरबानी है तुम्हारी! मै तो इस लडाई से इतना ऊब गया हूँ कि इसका खयाल आते ही हौलदिली होने लगती है। तुम चाहते हो तो हो जाओ शामिल किसी फौजी टुकडी मे। जहाँ तक मेरा सवाल है मै तो तुम्हारे साथ जाने से रहा। ऐसी नौबत आएगी तो मै अस्पताल चला जाऊँगा। बहुत हुआ।"

ग्रिगोरी बहुत देर तक चुप रहा। फिर बोला—"ठीक है, जैसा तुम कहो। फिलहाल हम यहाँ से कुबान चलेगे, और वहाँ जैसा कुछ होगा, देखा जाएगा।"

फिर प्रोखोर ने अपने खास तरीको का परिचय दिया। जहाँ भी आबादी वाली जगह रास्ते मे नज़र आई उसने डॉक्टर की खोज की और तमाम सूखी-गीली दवाएँ ले आया। लेकिन अपनी बीमारी को खत्म करने की उसमे कोई विशेष इच्छा न दीखी और उसने एक पाउडर खाने के बाद बाकी सभी दवाएँ बर्फ पर फेककर पैरो से रौंद दी। ग्रिगोरी ने इस नाटक का कारण पूछा तो बोला—"मै पूरी तरह ठीक होना नही चाहता, सिर्फ बीमारी को बढने से रोकना चाहता हूँ। ऐसा रहेगा तो मौका पडने पर कभी भी अपनी डॉक्टरी करा लूँगा और फौज मे वापस भेजे जाने से बच जाऊँगा···।"

बीच मे किसी गाँव मे एक दुनियादार कज्ज़ाक ने उसकी बीमारी जानी तो उसे बत्तखो के पैरो से तैयार किया गया सत लेने की सलाह दी। इसके बाद प्रोखोर जिस नए गाँव मे पहुँचा उसने सामने आने वाले पहले आदमी से पूछा—"सुनो, इस गाँव मे लोग बत्तखे रखते है ?" इस पर आदमी अकसर ही ताज्जुब मे पड गया और बोला—"आसपास

कही पानी नही है, इसलिए यहाँ बत्तख रखने का सवाल ही नही उठता···।" बस फिर क्या था, प्रोखोर नफरत से फुफकार उठा—"तुम लोग भी इन्सान कहते हो अपने को! तुम्हारी भी कोई जिन्दगी है! मेरा खयाल है कि तुमने जिन्दगी मे कभी बत्तख की आवाज तक न सुनी होगी! स्तेपी मे रहने वाले काठ के उल्लू हो तुम लोग!···" फिर ग्रिगोरी की तरफ मुडा, "कोई पादरी गुजर गया मालूम होती है हमारे रास्ते से। तकदीर साथ दे नही रही। यहाँ बत्तखें होती तो मै मुँहमाँगी कीमत अदा कर एक बत्तख खरीद लेता, या ऐसे न मिलती तो उसे उड़ा देता। फिर·· फिर तो मेरा हिसाब-किताब बिलकुल ठीक हो जाता। इधर बीमारी कुछ ज्यादा परेशान करने लगी है। पहले तो रास्ते मे पलकें भी न झपा पाने के बावजूद मैं इसे बराबर टालता रहा। मगर अब तो जैसे उसी की सजा मिल रही है। स्लेज मे बैठने मे भी तकलीफ होती है।"

पर ग्रिगोरी से हमदर्दी का एक शब्द न सुनकर वह चुप हो गया और घटो होठ सिए-ही-सिए स्लेज हाँकता रहा।

इस तरह एक जगह से दूसरी और दूसरी से तीसरी जगह जाते-जाते जो दिन बीते वे बहुत ही लम्बे और थकान से भरे लगे। लेकिन जाड़े की राते तो उनसे भी आगे निकल गईं, और काटे नही कटती लगी, पर ग्रिगोरी को अपने अतीत और वर्तमान के विषय मे सोचने के लिए सहज ही बडा समय मिला। वह कई-कई घटो तक अपनी अजीबो-गरीब उल्टी-सीधी जिन्दगी को लेकर उलझता और पुरानी यादें ताज़ा करता रहा। वह मन को घोटने वाले स्तेपी की बर्फ पर निगाहे जमाये स्लेज मे बैठा होता या लोगो से ठसाठस भरे किसी कमरे मे आँखे बन्द कर दाँत भीचकर लेटा होता, तो उसे या तो एक छोटे-से अनजाने गाँव मे पीछे छूट गई, बेहोश अकसीनिया का ध्यान आता या तातारस्की मे रह गए अपने घर के लोगो का खयाल आता। दोन क्षेत्र मे सोवियत-शासन की स्थापना के समाचार से वह एकदम चिंतित हो उठता और बार-बार अपने-आपसे पूछता—"मेरी वजह से लाल फौजी मेरी माँ या दून्या को सताएँगे तो नही?···" फिर वह अपने मन को धीरज

बँधाता और बार-बार राह मे सुनी बाते दोहराता कि लाल सेना बड़े ही कायदे से मार्च करती है और जिन कज्जाक ज़िलो पर उसका हक हो जाता है, वहाँ के लोगो के साथ बहुत ही अच्छा बरताव करती है। धीरे-धीरे उसका मन हलका हो उठता और अपने व्यवहार के लिए अपनी माँ के जिम्मेदार ठहराए जाने की बात उसे अकल्पनीय, पाशविक और बिलकुल अनुचित लगने लगती। फिर जब उसे बच्चो की याद आती तो उसका दिल क्षण-भर को कचोट उठता, और लगता कि हो-न-हो, उन्हे भी टायफस हो जाएगा। लेकिन बच्चो के लिए इतना मोह होने पर भी वह अनुभव करता कि नताल्या की मौत ने जितना झकझोरा उतना अब कोई भी दूसरा सदमा उसे झकझोर नही सकता···।

घोडो को थोडा आराम देने के ख़याल से ग्रिगोरी और प्रोख़ोर चार दिन तक साल्स की एक झोपडी मे रहे। इस बीच एक से अधिक बार उन्होने आगे के कार्यक्रम पर विचार किया। इसके पहले उनके वहाँ पहुँचते ही प्रोख़ोर ने पूछा—"हमारी फौजे कुबान मे मोर्चे सम्हालेंगी या काकेशिया चली जाएँगी ? क्या ख़याल है तुम्हारा ?"

"मैं नही जानता·· मगर इससे तुम्हारे लिए क्या फर्क पडेगा ?"

"क्या शानदार बात कही है ! अरे फर्क क्यो नही पडेगा···? ज़रूर पडेगा। इस रफतार से तो लाल फौजी हमे हाँककर कही-का-कही, शायद तुर्कों की रियासत के किसी हिस्से मे पहुँचा देंगे···और तब···"

"मैं देवीकिन नही हूँ। मुझसे न पूछो कि वे हमे हाँककर कहाँ पहुँचा देंगे और कहाँ नही।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

मै तो यह सवाल तुमसे इसलिए पूछ रहा हूँ कि मैने एक अफवाह सुनी है। अफवाह यह है कि कुबान नदी पर वे अपने बचाव के लिए फिर कदम जमाएँगे और बसन्त आने पर घर के लिए रवाना होगे।"

"कौन बचाव के लिए कदम जमाएगा ?" ग्रिगोरी ने मज़ाक बनाते हुए पूछा।

"···वही अपने कज्ज़ाक और कैडेट···और कौन ?"

"बकवास कर रहे हो तुम ! देखते नही कि चारो तरफ हो क्या रहा है ? हर आदमी जल्दी-से-जल्दी खिसक निकलने की कोशिश मे

है। ऐसे मे बचाव के लिए कदम भला कौन जमाएगा ?"

"साहबजादे, यह सब तो मै अच्छी तरह देख रहा हूँ, और समझ भी रहा हूँ। मगर इस पर भी यकीन नही जमता।" प्रोखोर ने आह भरी—"मगर मान लो कि सवाल सामने आ जाए जहाज़ मे बैठकर किसी दूसरे मुल्क को जाने का और वहाँ केकडे की तरह रेगने का, तो क्या फैसला करोगे तुम ? जाओगे ?"

"पहले तुम बतलाओ कि तुम क्या करोगे ?"

"मेरी हालत तो यह है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम जहाँ भी जाओगे मै जाऊँगा। सभी लोग जाने लगेगे तो एक अकेला मैं ही तो छोड नही दिया जाऊँगा···?"

"बिलकुल यही बात मै सोच रहा था। भेडो के बाडे मे एक बार घुस-भर जाओ फिर तो जो हाल दूसरी भेडो का वही तुम्हारा !"

"भेडो की क्या ? उनके पास दिमाग तो होता नही। वे तो कही भी जा सकती है। नही, यह बेकार बात है। बात अक्ल की करो।"

"अच्छा, बेकार सिर न धुनो। वहाँ पहुँचेगे तो देखी जाएगी। यही से मुसीबतो का हिसाब-किताब क्यो करना चाहते हो ?"

"ठीक ऐसा ही सही···अब तुमसे मै कुछ नही पूछूँगा।" प्रोखोर ने ग्रिगोरी के प्रस्ताव का समर्थन किया।

लेकिन अगले दिन वे घोडो को लेने गए तो उसने बातचीत फिर शुरू की। "तुमने हरे फौजियो के बारे मे सुना कुछ ?" एक हेगे को देखने का बहाना करते हुए उसने यो ही पूछा।

"हाँ···क्या खबर है उनके बारे मे ?"

"मगर यह हरे फौजी उग कहाँ से आए ? किसकी तरफ है वे ?"

"लाल फौजो की तरफ।"

"लेकिन उनको हरा क्यो कहा जाता है ?"

"शैतान ही जाने। शायद इसलिए कि वे जगल मे छिपे रहते हैं।"

"क्या खयाल है ? हम दोनो उनकी फौजो मे शामिल हो जाएँ ?" प्रोखोर ने बहुत देर तक सोचने के बाद सकुचते हुए कहा।

"मेरी तो ऐसी कोई खास तबीयत नही।"

"लेकिन हरे फौजियो का साथ देने के अलावा जल्दी घर पहुँचने का कोई दूसरा रास्ता ही नही है क्या ? मेरे लिए सभी बराबर हैं। शैतान के बच्चे हरे हो, नीले हो, अडे की तरह पीले हो···बस मैं तो एक बात चाहता हूँ कि वे लडाई के खिलाफ हो और फौजियों को घर जाने की इजाजत दे दे···।"

"तो, थोडा इन्तज़ार करो···शायद आगे-पीछे ऐसा कुछ मुमकिन हो ही जाए।" ग्रिगोरी ने सलाह-सी दी।

जनवरी के अन्त मे एक दिन धुध छाई रही और बर्फ बाकायदा गलती रही कि ग्रिगोरी और प्रोखोर बेलयाग्लिना नाम के गाँव मे पहुँचे। वहाँ कोई पन्द्रह हज़ार शरणार्थियो की भीड नजर आई और उनमें से आधे टाइफस के रोगी मिले। कज्जाक छोटे अग्रेज़ी ओवरकोट, छोटी भेड की खालें और लम्बे काकेशियाई कोट पहने गलियो मे जहाँ-तहाँ ठहरने की जगह खोजते दीखे। घुडसवार और स्लेजे सभी दिशाओं में आती-जाती रही। हर अहाते मे नाँदो के पास दर्जनो हड्डी-हड्डी रह गए घोडे खड़े पुआल चबाते रहे। सडको और किनारे की गलियो मे स्लेजें, फौजी गाडियाँ और लडाई के सामान से भरे बक्से अपनी रक्षा अपने-आप करते रहे।···सडको से गुज़रते समय प्रोखोर ने बाड से बँधे एक कुम्मैत घोडे को बहुत गौर से देखा और बोला—"अरे यह तो अन्द्रेइ का घोडा मालूम होता है। इसका मतलब यह है कि हमारी तातारस्की के लोग यहाँ है···।" इसके साथ ही वह स्लेज से नीचे कूद पड़ा और पता लगाने के लिए सामने के घर मे घुस गया।

कुछ ही क्षणों बाद प्रोखोर का चचेरा भाई और पडोसी अन्द्रेइ-तोपोलस्कोव अपना बरानकोट कन्धे पर लटकाए झोपडी से बाहर आया, प्रोखोर के साथ गम्भीर भाव से स्लेज की ओर बढा और अपना कालिख से सना हाथ ग्रिगोरी की तरफ बढाया।

ग्रिगोरी ने पूछा—"गाँव के और लोग भी है तुम्हारे साथ ?"

"हम सब साथ ही दुख-सुख झेल रहे है।"

"खैर, सफर कैसा रहा ?"

"हर आम सफर की तरह···जहाँ भी रात को पड़ाव डाला वही

अपने साथ के कुछ लोगो और घोडो को छोड़ना पडा···।"

"मेरे पापा तो ठीक-ठाक और सही-सलामत है ?"

तोपोल्स्कोव ने ग्रिगोरी को नजर गडाकर देखा और आह भरकर बोला—"बहुत बुरी खबर है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच···बहुत बुरी खबर है···अपने पापा की रूह के लिए ऊपर वाले से मिन्नत करो—वे कल शाम को आसमान वाले को प्यारे हो गए···कल शाम को मर गए···"

"दफन कर दिया गया ?" ग्रिगोरी ने पूछा। वह पीला पड गया।

"मैं नही जानता···तब से मै उधर गया नही···मै तुम्हे घर दिखला दूंगा ··दायाँ पकडे चले जाओ···नुक्कड से चौथा मकान है··· दाईं तरफ।"

प्रोखोर ने घोडे हाँके और फिर टीन की चादर की छत वाले बडे मकान के बाहर, बाड के पास घोडे रोके। लेकिन तोपोल्स्कोव ने स्लेज अहाते मे ले जाने की सलाह दी।

"यहाँ भी काफी लोग है···कोई बीस···लेकिन तुम्हे जगह कहीं-न-कही मिल जाएगी।" उसने स्लेज से कूदकर फाटक खोलते हुए कहा।

सबसे पहले ग्रिगोरी उस तवे से तचते कमरे मे घुसा, तो गाँव के अपने जान-पहचानी उसे लेटे या एक-दूसरे से सटकर फर्श पर बैठे मिले। कुछ जूतो या घोडो के साजो की मरम्मत करते दीखे। पैन्तेली के साथ आने वाले बेस्खलेबनोव-सहित तीन आदमी मेज पर शोरबा खाते नजर आए। ग्रिगोरी को देखते ही कज्ज़ाक उठ खडे हुए और उसके अभिवादन के उत्तर मे उन्होने उसका एक साथ अभिवादन किया।

"मेरे पापा कहाँ है ?" उसने भेड की खाल की अपनी टोपी उतारते और कमरे के चारो ओर निगाह दौडाते हुए कहा।

"पैन्तेली प्रोकोफियेविच···नही रहे !" बेस्खलेबनोव ने शात भाव से जवाब दिया। उसने हाथ का चम्मच नीचे रख दिया। मुँह कोट की आस्तीन से पोछा और क्रॉस बनाया। "वे कल रात गुजर गए···ऊपरवाला उन्हे अपने रहम के साए मे रखे !"

"मुझे पता है···उन्हे दफन कर दिया गया ?"

"अभी नही। हम आज उन्हे दफन करने वाले थे, पर अभी तक उनकी लाश यही है। सोने के कमरे मे रखी है। वहाँ काफी तरी है। इस तरफ···" बेस्खलेबनोव ने बगल के कमरे का दरवाजा खोला और जैसे कि क्षमा माँगते हुए बोला—"कज्ज़ाको ने एक ही कमरे मे रहना नही चाहा···बडी बदबू है···फिर यहाँ वैसे भी बेहतर है··· यह कमरा गरम नही रखा गया है।"

लम्बे-चौडे कमरे मे हर तरफ से सनई के बीज और चुहियो की गध उठती मिली। एक बेंच पर आटे और मक्खन के पीपे रखे दीखे। पैन्तेली-प्रोकोफियेविच का शव कमरे के बीचो-बीच घोडे वाले कपडे पर रखा नजर आया। ग्रिगोरी ने बेस्खलेबनोव को खीचकर एक तरफ किया और कमरे मे जाकर अपने पिता के पास खडा हो गया।

बेस्खलेबनोव ने धीमे स्वर मे कहा—"तुम्हारे पापा दो हफ्ते बीमार रहे। लौटते वक़्त मेचेत्का मे उन्हे टायफस हो गया और यही उनकी आँखे हमेशा-हमेशा के लिए मुँद गईं···यह है हमारी जिन्दगी!"

ग्रिगोरी ने झुककर अपने पिता के चेहरे पर निगाह गडाई। चेहरा बीमारी के कारण काफी बदला हुआ, अजीब और अनपहचाना-सा लगा।·· पैन्तेली के पीले, बैठे हुए गालो पर सफेद दाढी उग आई थी। मूंछ चेहरे पर झूल आई थी। आँखें अधमुंदी थी और आँखो की चमक खत्म हो गई थी। बूढे के निचले जबड़े के चारो तरफ लाल रूमाल बँधा हुआ था और रूमाल की लाली के कारण उसकी दाढी के घुंघराले बाल और भी सफेद और रुपहले लग रहे थे।

अपने पिता का चेहरा एक बार जी-भर देख लेने और उस मनोहर छवि को सदा-सदा के लिए अपने अन्तर मे अकित कर लेने के लिए ग्रिगोरी झुका, तो भय और घिन से सिर से पैर तक काँप उठा। पैन्तेली के सफ़ेद, मोम-से चेहरे, आँखो के गढ़ो और बैठे हुए गालो पर जुएँ-ही-जुएँ रेगती रही। उन्होने उसके चेहरे पर एक जीता-

जागता, चलता-फिरता पर्दा-सा डाल रखा। वे दाढी मे जमा रही, बरौनियो मे चलती-फिरती रही और लम्बी, नीली जैकेट के कडे कॉलर की पट्टी के पास बहुत बडी गिनती मे घिरी रही।

ग्रिगोरी ने दो दूसरे कज्जाको की सहायता से जमी हुई, लोहे-सी कडी चिकनी जमीन गदालो से खोदकर एक कब्र तैयार की। प्रोखोर ने लकडी के टुकडो से एक खुरदरा-सा ताबूत बनाया। फिर दिन ढलते-ढलते उन्होने पैन्तेली को बाहर निकाला और स्तावरोपोल की धरती को सौप दिया। और, एक घटे बाद, गॉव मे दीये टिमटिमाए कि ग्रिगोरी स्लेज पर सवार होकर बेलयाग्लिना से बाहर निकला और नोवोपोकरोव्स्काया की दिशा मे बढ चला।

मगर, कोरेनोव्स्की गॉव मे वह खुद बीमार हो गया। प्रोखोर ने आधा दिन किसी डॉक्टर की तलाश की। तब कही उसकी मुलाकात नशे मे अधमस्त फौजी सर्जन से हुई। वह भी बडी मुश्किल से झोपडी तक आने को राजी हुआ। उसने अपना बरानकोट उतारे बिना ही ग्रिगोरी की डॉक्टरी परीक्षा की, नब्ज देखी और विश्वास के साथ बोला—"टायफस है·· मेरी सलाह मानिए, कैप्टन, तो आगे बढने का खयाल छोड दीजिए, वरना रास्ते मे ही खत्म हो जाइयेगा।"

"यानी यही रुकूं और लाल फौजियो का इन्तजार करूं?" ग्रिगोरी मुस्कराया।

"खैर···अभी तो वे लोग यहाँ से काफी दूर है।"

"लेकिन, इससे क्या, आज दूर है; कल पास आ जाएँगे।"

"इस बात मे मुझे कोई शक नही। लेकिन, आपके लिए ज्यादा अच्छा यही होगा कि आप यही बने रहे। आगे बढकर मौत का सामना करने और यहाँ बने रहकर लाल फौजियो का इन्तज़ार करने के बीच अगर मुझे एक का चुनाव करना हो तो मैं तो दूसरा फैसला ही मानूं।"

"नही, जैसे भी होगा, मै यहाॅ से चला जाऊँगा।" ग्रिगोरी ने हठ से कहा और अपनी ट्यूनिक पहनी—"कुछ दवा दे दे आप··· देंगे न?"

कि हमारे पास कोई और काम नही है। मैं तो एक बीमार पादरी को लिये जा रहा हूँ···साफ है कि लाल फौजियो की और उसकी पटकी आपस मे बैठने से रही···"

लेकिन ज्यादातर घुडसवारो ने हँसकर उसे कुछ बुरा-भला कहा और अपने घोडे आगे बढा दिए। वैसे कुछ ऐसे भी निकले जो ठिठके जिन्होने उसे घूरकर देखा और उसका खासा अपमान किया। बोले—"यानी बेवकूफ दोन से भी पीछे हट रहे है? तुम्हारे ज़िले के सब लोग तुम्हारे जैसे ही है क्या?"

···कुबान का एक कज्जाक अपने गिरोह से पिछड गया था। प्रोखोर ने देखा तो उसे भी रोकना चाहा, और उससे भी दो-चार बाते करनी चाही। पर वह एकदम बिगड गया, आपे से बाहर हो गया, और उसने उसके चेहरे पर भरपूर चाबुक जमाना चाहा। मगर प्रोखोर उछलकर खडा हो गया और नीचे से कारबाइन बन्दूक खीचकर उसने उसके घुटनो पर टिका दी। कुबान का कज्जाक भद्दी-भद्दी गालियाँ देता, अपना घोडा दौडाता भागा। प्रोखोर ने हँसी के ठहाके लगाते हुए चिल्लाकर कहा—"यह कोई जारीत्सिन तो है नही कि तू मकई के खेत मे छिप रहेगा। गधा कही का···उल्लू का पट्ठा। ज़रा लौटकर आ तो बतला दूँ तुझे। अबे अपना चारजामा तो समेट ले वरना कीचड़ मे लथडता फिरेगा। भाग दिया···मुर्गी के बच्चो से पाला पड़ा होगा अब तक। हिजडा कही का। मेरे पास कोई कारतूस गन्दा करने को नही है वरना तुझे अभी उड़ा देता। तेरा चाबुक गिर गया··· सुनता है बे?"

प्रोखोर अकेलेपन और बेकारी से आधा सनक गया और अपने ढँग से दिलबहलाव का सरजाम करने लगा।···

ग्रिगोरी बीमारी के पहले दिन से ही जैसे किसी स्वप्न-देश मे आ रहा। बीच-बीच मे कई बार बेहोश हुआ और फिर होश मे आ गया। एक बार बहुत देर तक अचेतन रहने के बाद होश मे आया तो प्रोखोर उसके ऊपर झुका, और उसकी धुँधलाई आँखो मे हमदर्दी से आँखे डालते हुए बोला—"अभी तक ज़िन्दा हो तुम?"

धीरे-धीरे वह अन्धकार की गहन परतो मे खो गया और आसपास की हर चीज़ो से बेखबर हो गया।·· चीख-चिल्लाहट और शोर-गुल से भरी दुनिया कही पीछे छूट गई।···

२८

फिर, अबिन्स्काया नाम के गॉव तक ग्रिगोरी को केवल एक घटना याद बनी रही।·· एक दिन घुप अन्धेरी रात मे, हड्डी-हड्डी जमा देने वाली सर्दी ने उसे झकझोरकर जगा दिया। सडक पर आगे-आगे कई गाड़ियाँ जाती लगी। लोगो की आवाजो और पहियों की मिली-जुली खडखड़ाहट से गाडियो का काफिला काफी लम्बा प्रतीत हुआ।···

ग्रिगोरी की गाडी काफिले के बीच मे रही और घोड़े कदम चाल से आगे बढते रहे। प्रोखोर ने बीच-बीच मे जबान चटकाई, घोड़े को हाँका और चाबुक नचाया। ग्रिगोरी ने चमडे के चाबुक की सनसनाहट सुनी और महसूस किया कि घोडो ने जुए पर जोर दिया। इससे राह के इक्के-दुक्के पेड बज उठे और गाडी और जोर से दौडने लगी। बहुत बार बीच का बाँस सामने की गाडी के पिछले हिस्से से टकरा गया।

ग्रिगोरी ने बडी कोशिश से भेड़ की खाल के सिरे खीचकर अपना बदन पूरी तरह ढँका और पीठ के बल लेट गया।

काले आसमान मे हवा भारी-भारी बादलो को दक्षिण की ओर लुढकाने लगी। केवल कभी-कभी ही बादलो की किसी छोटी सध से कही कोई सितारा आग की चिनगारी की तरह लौ दे उठा। इसके बाद फिर घटाटोप अँधेरे ने मैदान पर अपनी चादर डाल दी, उदास हवा टेलीग्राफ के तारो के बीच घूम-घूमकर सीटियाँ बजाने लगी और पानी की बूँदें, पानीदार मोतियो की तरह झमाझम बरसने लगी।

घुड़सवारो की एक कतार सड़क के दाहिने किनारे से आगे बढती रही। ग्रिगोरी ने कज्ज़ाक घोडो के साजो की चिर-परिचित, स्वर-लय-तान मे बँधी झनझनाहट सुनी। साथ ही घोडो के अनगिन खुरो की छप-छप भी उसके कानो मे पडी। इस तरह कम-से-कम दो स्क्वैड्रन

उधर से गुजरे, पर खुर दलदल से उसी तरह लडते रहे। लगा कि हो-न-हो सड़क के किनारे एक पूरी-की-पूरी रेजीमेट घोडो पर सवार चली जा रही है।···

सहसा ही किसी गानेवाले का स्वर, सुनसान मैदान के ऊपर, चिडिया की तरह पर तोलने लगा—

अरे, नदी के तीर पर
कामीशिन्का तीर पर···
हरे मैदान मे—
सरातोव के स्तेपी मे···
शानदार उस स्तेपी मे···
मेरे भाई रहते थे···

कई सौ स्वर हवा मे गूंजे और गाने के साथ कोई बड़ी ही खूबसूरती से नाचने लगा। फिर मोटी आवाजे बुझी, पर वह बजता हुआ स्वर इसके बाद भी कही अँधेरे मे अपने पर फडफडाता और दिल को रह-रहकर कुरेदता रहा। इस बीच गायक ने अगली पँक्तियाँ छेड़ दी—

रहते वे कज्जाक थे···
जैसे दुनिया मे रहते है···
लोग कि जिनको अपनी आज़ादी प्यारी है···
दोन और ख्रिबेन और याइक के वे कज्जाक सभी···

ग्रिगोरी के अन्तर पर किसी चीज़ ने जैसे भरपूर हथौड़ा जमाया। उसके गले मे आँसू लटकने लगे और बदन बुरी तरह काँपने लगा। वह बडी ही उत्सुकता से गायक के फिर से स्वर छेडने की राह देखने लगा। और जब फिर तान छिड़ी तो उसने बहुत ही धीमे स्वरो मे गीत के अगले शब्द जैसे गाने वाले को याद दिलाए। उसे तो वे बचपन से याद थे—

नाम कि उनके अतामान का येरमाक था—
बेटा तिमोफी का था वह—
और, कैप्टन उनका लावरेती का बेटा···
था अस्ताशका नाम का।

गायक के मुंह से पहले शब्द उभरते ही गाड़ियो मे सवार कज्ज़ाकों ने अपनी बातचीत खत्म कर दी, गाडियाँ चलाने वालो ने घोडो को हाँकना बन्द कर दिया और हज़ार गाडियो के उस काफिले के आसपास ऐसा सन्नाटा हो गया कि बस। गायक ने पक्तियो के वर्ण-वर्ण मे स्पष्ट स्वर भरे तो गाड़ियो के पहियो की आवाज और घोडो के कदमो की कीचड मे छप-छप-भर बाकी रह गई। युगो-युगो की सीमा चीरकर अजर-अमर रहने वाले उस पुरातन गीत का पूरे स्तेपी में जैसे साम्राज्य स्थापित हो गया। गीत मे सीधे-सादे शब्दो मे बतलाया गया था कि कैसे किन्ही कज्ज़ाको के पुरखो ने कभी ज़ारशाही सेनाओ को तार-तार कर दिया था, हाथ की बनाई नावो पर सवार होकर दोन और वोल्गा मे जारो के जहाजो को बार-बार लूटा था, व्यापारियो, राव-रईसों और गवर्नरो को चूसा था और दूर के साइबेरिया को अपने कदमो पर झुकाकर छोड़ दिया था। और आज उन्ही कज्ज़ाको के हाड-माँस, यह लोग रूस के लोगो से मुँह की खाकर, हारकर शर्मनाक ढँग से पीछे भाग रहे थे।···

वे सभी जोरदार गाने की हर पँक्ति साँस खीचकर सुनते रहे। फिर रेजीमेट आगे निकल गई और गानेवाले शरणार्थियो को पीछे छोड़ गए। लेकिन, इसके बाद भी गाडियो के आसपास ऐसा मौन रहा जैसे कि किसी ने पूरी तरह जादू कर दिया हो। इस बीच न किसी के मुँह से आवाज फूटी और न कोई थकान से चूर किसी घोडे पर चीखा-चिल्लाया। दूर से गानो के स्वर हवा की लहरो पर बह-बहकर पीछे आते रहे और बढी हुई दोन की तरह दूर-दूर तक अपने हाथ पसारते रहे—

> और, दिमागो मे उनके बस एक खयाल था
> गरमी बीत जाएगा,
> रीतेगी उसकी यह गरमी भी तो···
> फिर आएगी जाड़ा सर्दी, ठिठुरन लेकर
> अरे, भाइयो, अब सवाल है
> जाड़ा कहाँ बिताएँगे हम ?

माना याइक पर सवार हो जाएँगे हम,
लेकिन लम्बी मजिल तय करना भी बस की बात नही है
अगर वोल्गा फिरे मँझाते
तो चोरो मे शामिल हमको सभी करेंगे
अगर कज़ान शहर को जाएँ
तो डर बडा जार का होगा ··
जार जुल्म का पुतला-सा है···
वह इवान-वैसिलेइच जो है !···

···फिर गायको के स्वर दूरी मे खो गए। लेकिन प्रमुख गायक की आवाज रह-रहकर बजती, गूँजती और डूबती और फिर ऊपर उतराती रही। सारे-के-सारे कज्जाक भावो मे डूबे हुए बिना मुँह खोले, उसकी गहराइयो मे डुबकियाँ लगाते रहे।···

और, ग्रिगोरी भी जैसे किसी सपने से जागा तो उसने अपने को गरमाहट से भरे कमरे मे पाया। उसने आँखें मूँदे-ही-मूँदे, पलग की साफ चादर की ताज़गी हाथ-पैर के जोड-जोड़ मे महसूस की। दवा की तेज़ी नथुनो मे पैठने लगी। पहले तो उसने अपने को अस्पताल मे समझा पर फिर अपनी राय बदली। बगल के कमरे से मर्दों की हँसी के ठहाके, तश्तरियो की झनाझनाहट और शराब के नशे से बसी आवाज़ें आईं। एक जानी-पहचानी, भारी आवाज़ मे कोई बोला—"और, तुम भी कुछ कम चघड आदमी नही हो! तुम हमारी रेजीमेट का पता चला लेते तो तुम्हारी अपनी मदद हो जाती। खैर···गिलास खाली करो! तुम शैतान की आँत, अब इस तरह क्या झीक रहे हो!"

नशे मे धुत प्रोखोर रुआँसा हो गया। बोला—"ऊपर वाला गवाह है···मैं भला कहाँ से जानता! तुम्हारा खयाल है कि उसकी तीमारदारी करना मेरे लिए कुछ आसान रहा? मैंने उसे घूँट-घूँट पानी पिलाया, खुद चबाकर उसके मुँह मे खाने की चीज़े दी, जैसे कि वह कोई नन्हा-सा बच्चा हो···उसे दूध पिलाया···सच कह रहा हूँ···ईसा देखने वाला है···हाँ, मैंने रोटी खुद चबा-चबाकर उसके मुँह मे ही डाली ···ऊपरवाला झूठ न बुलवाए···मैने यह सब किया।···मैंने अपनी

कटार की नोक से उसकी भिंची हुई दाँती खोली···एक बार तो ऐसा भी हुआ कि पिलाते वक्त दूध उसके गले मे अटक गया और वह मरते-मरते बचा···जरा सोचो तो···"

"तुमने कल नहलाया था उसे ?"

"हाँ, नहलाया···उसके बाल सुलझाए ··और दूध पर जेब का हर कोपेक खर्च कर दिया।·· मुझे अपनी गाँठ की रकम निकल जाने का कोई कलख नही · मुझे जरा-भर परवाह नही। लेकिन उसका खाना खुद चबाना और फिर उसे खिलाना·· उफ, कुछ न पूछो! तुम्हारा खयाल है कि यो ही हो गया इतना सब ? ऐसा कही भूल से कह भी न देना, वरना तुम्हारे ओहदे-वोहदे को एक न सेठूँगा और तुम्हे वह भरपूर हाथ जमाऊँगा कि तुम भी याद रखो।"

फिर, प्रोखोर, खारलाम्पी, येरमाकोव, प्योत्र-बोगातिरयोव और प्लातोन-र्याबचिकोव, ग्रिगोरी के कमरे मे आए। प्योत्र-बोगातिरयाव की कराकुल की फर-टोपी खोपडी के पिछले हिस्से पर औंधी रही और उसका चेहरा चुकन्दर की तरह लाल दीखा।

"यह तो आँखे खोले हुए है!" येरमाकोव ने पागलो की तरह चीख-कर कहा और डगमगाते कदमो से ग्रिगोरी के बिस्तर की तरफ बढा।

मोटा-तगडा प्लातोन र्याबचिकोव बोतल हिलाते और रोते हुए बोला—"ग्रीशा प्यारे, तुम्हे याद है, चिर के किनारे हम लोगो ने वक़्त कितनी हँसी-खुशी से बिताया था और कैसे लडे थे हम! वह खुशी कहाँ चली गई हमारी ? ये जनरल कैसा खिलवाड कर रहे है हमारे साथ, और हमारी फौज को इन्होने क्या-से-क्या बनाकर छोड़ दिया है! ऐसी-तैसी मे जाएँ ये लोग! नई जिन्दगी हुई तुम्हारी· है न ? यह लो, पिओ इसे···फौरन ही तबीयत कही अच्छी महसूस करोगे! खालिस शराब है!"

"तो आखिरकार हमने तुम्हे ढूँढ ही निकाला!" येरमाकोव ने धीरे से कहा। उसकी आँखें खुशी से चमक उठी। फिर वह ढह पड़ा तो ग्रिगोरी का बिस्तर उसके बोझ से दब-सा गया।

"कहाँ है हम लोग ?" ग्रिगोरी ने धीमे स्वर मे पूछा और बडी

कठिनाई से कज्जाको के जाने-पहचाने चेहरे पर निगाह डाली ।

"हम लोगो ने येकेतेरिनोदार ले लिया है । अब हम लोग जल्दी ही और पीछे हटेगे । पिओ ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच···पिओ इसको । मेरे यार आसमानवाले के नाम पर किसी तरह उठकर खडे हो जाओ ! तुम्हारा इस तरह पडा रहना मुझसे नही देखा जाता ।" र्याबचिकोव ग्रिगोरी के पैरो पर गिर पडा । लेकिन बोगातिरयोव और साथियो से कही अधिक गम्भीर लगा । चुपचाप मुस्कराता रहा । उसने ग्रिगोरी को पेटी पकड़कर हलके से उठाया और सावधानी से फर्श पर लिटा दिया ।

"बोतल ले लो इसके हाथ से ··सारी शराब बिखरा देगा !" नशे मे चूर येरमाकोव ने घबराकर कहा और खिलखिलाकर हँसते हुए ग्रिगोरी की तरफ मुडकर बोला—"तुम जानते हो कि कैसे पी रहे है हम लोग ? शराब की एक बूंद को भी तरस रहे थे कि किसी दूसरे का माल हाथ लग गया और हमारे जश्न मन चले । हुआ यह कि हमने चाहा कि लाल फौजियो के हाथ न लगे, इसलिए हमने खुद शराब का एक गोदाम लूट लिया । और क्या-क्या माल हाथ लगा·· तुम यकीन नही करोगे ! ···हमने रायफल से गोली चलाकर एक टकी मे सूराख किया तो शराब ऐसे बह चली, जैसे बम्बे की टोटी से पानी बहे । फिर तो हमने टकी गोलियो से छलनी कर दी, और एक-एक आदमी एक-एक सूराख से टोपी, बाल्टी या फ्लास्क सटाकर जम गया । कुछ लोगो ने तो अजुली-अजुली वही खड़े-खडे ढाल ली ।· हमने गोदाम के दो रखवालो को काटकर फेक दिया, शराब हथिया ली और फिर तो मजा आ गया !··· मेरे देखते-देखते एक कज्जाक टकी के ऊपर चढ गया और उसने घोड़े की बाल्टी डालकर ऊपर से शराब निकालने की कोशिश की । लेकिन वह खुद ही गिर गया और गोते लगाने लगा। शराब जो उमडी तो ककरीट के फर्श पर हमारे घुटनो-घुटनों तक भर गई । कज्जाक उसमे हिल-हिलकर झुक-झुककर नीचे से उठा-उठाकर पीने लगे , और पी पीकर वही-के-वही गिरने लगे ।···नज्जारा अजीब था, लेकिन तुम होते तो तुम्हे भी हँसी आए बिना न रहती ! हमे और ज्यादा की क्या जरूरत ···हमने पाँच बाल्टी भर शराब का एक पीपा लुढका लिया और हमारे

लिए काफी हो गया ! हमने कहा, जी भर पियो, मेरे भाई ! दोन के इलाके के लोगो के दिन भी जैसे-तैसे फिर ही गए, प्लातोन तो डूबते-डूबते बचा ! लोगो ने इसे ढकेल दिया और फिर इसे रौदकर रख दिया। उसने दो बार मुँह भर-भरकर गटकने की कोशिश की, मगर वह भी नाक से बाहर निकल-निकल आने लगी···मैं जाने कैसे-कैसे इसे खीच-खाँचकर वहाँ से बाहर लाया···"

हर कज्जाक के बदन से शराब, प्याज और तम्बाकू का भभका उठता रहा। ग्रिगोरी का जी मिचलाने और सिर चक्कर खाने लगा। कमज़ोर होने के बावजूद वह मुस्कराया और उसने आखे मूंद ली।

फिर एक सप्ताह तक वह येकेतेरिनोदार मे बोगातिरयोव के एक परिचित डॉक्टर के घर मे पडा रहा। उसके स्वास्थ्य मे धीरे-धीरे सुधार होता रहा। इसके बाद प्रोखोर के शब्दो मे वह 'दुरुस्त होने लगा', और पीछे हटने का सिलसिला शुरू होने के बाद पहली बार अबिन्स्काया नाम के गाँव मे घोडे की पीठ पर सवार हुआ।

नोवोरोस्सिइस्क खाली किया जा रहा था। स्टीमर रूसी धन से भरे थैलो, जमीदारो, जनरलो के परिवारो और प्रभावशाली राजनीतिज्ञो को तुर्की पहुँचा रहे थे। सभी घाटो पर जहाजो पर माल दिन-रात लादा जा रहा था। कैडेट दल बनाकर जहाजी कुलियो का काम कर रहे थे और फौजी साज-सामान और शरणार्थी-रईसो के ट्रक और बक्से स्टीमरो के मालखानो मे भर रहे थे। ··

दोन और कुबान के कज्जाक पिछड गए थे। स्वयसेवक सेना आगे निकल आई थी, और सबसे पहले नोवोरोस्सिइस्क पहुँची थी। सेना के सभी लोग जहाजो पर जमा हो गए थे। स्टाफ ने दूरदर्शिता से काम लेकर 'दि एम्परर ऑफ इडिया' नाम के ब्रिटिश जहाज़ मे शरण ग्रहण कर ली थी। जहाज़ ने पहले से खाडी मे लगर डाला। लडाई तोन्नेलवाया के पास हो रही थी। शहर की सड़को पर दसियो हजार शरणार्थियो की भीड़ थी। फौजें बराबर चली आ रही थी, घाटो पर हर तरफ लोग ही लोग उमड रहे थे। छुट्टा-घोडे, हजारो के दल मे, नोवोरोस्सिइस्क के चारो ओर की पहाड़ियो के चूने वाले ढालो पर जहाँ-तहाँ भटक रहे

थे । बन्दरगाह के आस-पास की गलियो मे घोडो की काठियो, लडाई के साज-सामान और फौजी स्टोर की चीजो के अम्बार लगे हुए थे । यह सभी सामान लोग छोड-छाडकर चले गए थे । शहर मे अफवाह थी कि सिर्फ स्वयसेवक-सेना की टुकडियाँ ही जहाजो का इस्तेमाल कर सकेगी—दोन और कुबान की कज्जाक टुकड़ियो को ज़बरदस्ती पैदल मार्च करा कर जॉर्जिया भेजा जाएगा ।···

ऐसे मे १९२० की २५ मार्च के दिन सवेरे ग्रिगोरी और र्याबचिकोव घाट पर यह जानने के लिए पहुँचे कि दूसरी-दोन-कोर के फौजियो को जहाजो मे जगह मिलेगी या नही ? इसी के एक दिन पहले शाम को कज्ज़ाको ने उडा दिया था कि देनीकिन ने एक नया फरमान जारी किया है, और इस फरमान के मुताबिक अपने-अपने घोडे और साज-सामान बचा रखने वाले सभी कज्ज़ाको को क्रीमिया बैरग कर दिया जाएगा ।

पूरा घाट साल्स्क-प्रदेश के कालमीको का अखाडा नजर आया । वे अपने घोडो और ऊँटो के साथ लकडी की झोपड़ियाँ तक मानीच और साल से समुद्र तक ले आए थे ।···

सो, ग्रिगोरी और र्याबचिकोव के नथुने भेडो की चरबी से भर गए । वे लोगो को धकियाते हुए, घाट पर एक किनारे खड़े, एक बडे माल-जहाज़ के गैंगवे की तरफ बढे । मारकोव-डिविज़न के अफसरों का एक रक्षक गैंगवे की पहरेदारी करता दीखा । दोन-सेना के कज्ज़ाक-तोपची, जहाज़ मे जगह पाने के इन्तज़ार मे पास ही खड़े मिले । जहाज़ के पिछले हिस्से मे खाकी तिरपालो से ढकी तोपें भरी नज़र आईं। भीड़ को कोहनियाते हुए ग्रिगोरी ने एक तेज़-से, काली मूँछ वाले सार्जेंट से पूछा—"ये सब किस तोपखाने के लोग है, दोस्त ?"

सार्जेंट ने ग्रिगोरी को कनखी से देखा और लापरवाही से जवाब दिया—"छत्तीसवी रेजीमेट के !"

"कमाण्डर इसके कारगिन है ?"

"हाँ ।"

"लोगो को जहाज़ पर सवार कराने का काम किसके ज़िम्मे है ?"

"उस आदमी के ज़िम्मे है ··वह जो रेलिंग के पास खडा है··· शायद कोई कर्नल या ऐसा ही कुछ है।"

र्‌याबचिकोव ने ग्रिगोरी की आस्तीन खींची और गुस्से से बोला— "इन्हे झोको भाड मे आओ, यहाँ से चले। तुम्हारा खयाल है कि इस जमघट से कोई मतलब हल हो सकेगा ! इन्हे तो हमारी जरूरत लडाई के वक्त थी, अब इन्हे हमसे क्या लेना-देना···!"

सार्जेंट मुस्कराया और एक कतार मे खडे तोपचियो की तरफ देख-कर आँख मारी —"बडी किस्मतवाले हो, यार · ये लोग तो अफसरो को नही छोडते !"

इतने मे लोगो को जहाज़ पर चढाने का जिम्मेदार अफसर फुर्ती से गैंगवे से नीचे आया। उसके पीछे तेजी से उतरा एक गजा अफसर। उसने अपने फर-कोट के बटन खोल रखे, सील मछली की खाल की टोपी सीने से चिपका रखी और कुछ कहा। पर, उसके पसीने से तर चेहरे और कमजोर निगाहो वाली आँखो मे ऐसी जिद रही कि कर्नल मुडा और चीखा—"मैंने एक बार कह दिया तुमसे ! मुझे परेशान न करो, वरना मै हुक्म देकर तुम्हे जहाज से बाहर निकलवा दूँगा। तुम्हारा दिमाग खराब है। यह तुम्हारा कूडा-कबाड कहाँ रख सकते है हम ? अधे हो तुम ? देख तो रहे हो कि हालत क्या है ! उफ जाओ यहाँ से···नीली छतरी वाले के लिए, जाओ यहाँ से और तुम्हारा जी करे तो जनरल देनीकिन से शिकायत कर दो ! मैंने कहा कि मै कुछ नही कर सकता···इसका मतलब है कि मै कुछ नही कर सकता। तुम रूसी तो समझते हो न ?"

कर्नल इस हठधर्मी अफसर से पिंड छुडाने के लिए मुडा और ग्रिगोरी की बगल से गुजरा। ग्रिगोरी उसका रास्ता रोककर खडा हो गया और अपनी टोपी की चोच पर हाथ रखते हुए खीझ से बोला— "अफ़सर उम्मीद करे कि उन्हे इस जहाज मे जगह मिल जाएगी ?"

"नही, इस जहाज मे नही···इसमे बिलकुल गुजाइश नही है।"

"लेकिन फिर, दूसरा जहाज कौन-सा मिलेगा ?"

"यह आप लोगो को हटाने का इन्तजाम करने वाले लोगो से

मालूम कीजिए।"

"हम वहाँ हो आए है, लेकिन वहाँ भी कोई कुछ नही जानता।"

"खैर, तो मैं भी कुछ नही जानता···मुझे निकलने दीजिए।"

"लेकिन आप ३६वी बैटरी को तो जहाज मे जगह दे रहे हैं··· हमारे लिए ही गुजाइश भला क्यो नही है?"

"मुझे निकलने दीजिए, मैंने कहा न? मै इत्तिला देने वाला दफ्तर तो नही हूँ न!" कर्नल ने ग्रिगोरी को धकियाकर एक ओर करने की कोशिश की, मगर उसने दोनो पैर कसकर जमा लिए और फिर उसकी आँखो मे निलहरी चिनगारियाँ दहकने और बुझने लगी।

"यानी अब आपको हमारी जरूरत नही रही? लेकिन इससे पहले आपको हमारी दरकार थी··है न? अपना हाथ दूर कीजिए···आप मुझे इस तरह हटा नही पाएँगे।"

कर्नल ने ग्रिगोरी की आँखो मे गहराई से आँखें डाली और मुडकर देखा। गैंगवे के पास राइफले अडाकर खडे मारकोव के लोग उमडती भीड के जोर को सम्हालने मे असमर्थ लगे। ग्रिगोरी को सिर से पैर तक देखते हुए कर्नल ने हारकर पूछा—"किस रेजीमेट के है आप?"

"मैं उन्नीसवी दोन-रेजीमेट का हूँ··बाकी लोग दूसरी रेजीमेट के है।"

"आप लोग गिनती मे कुल कितने है?"

"दस।"

"मैं कुछ नही कर सकता··गुजाइश बिलकुल नही है।"

र्याबचिकोव ने ग्रिगोरी के नथुने क्रोध से फूलते देखे। ग्रिगोरी उस कर्नल से धीमे से बोला—"खिलवाड कर रहा है तू कुत्ते के बच्चे! हमे फौरन जहाज पर चढने की इजाजत दे, नही तो·।"

'ग्रीशा देखते-देखते इस कर्नल के टुकडे-टुकडे करके रख देगा।' र्याबचिकोव ने क्रोध और सन्तोष से मन-ही-मन सोचा। पर, इसी समय उसने कर्नल की हिफाजत के लिए, मारकोव के दो फौजियो को अपनी बन्दूको के कुन्दो से भीड चीरकर आगे बढते देखा, तो ग्रिगोरी की आस्तीन पर हाथ रखते हुए बोला—"इन लोगो से उलझो मत,

ग्रिगोरी···आओ···चलो चलें···।"

"तुम बेवकूफ हो ··और अपनी इस बदतमीजी के लिए जवाब देना पडेगा तुम्हे !" कर्नल ने कहा। उसका चेहरा एकदम पीला पड गया। वह मारकोव के फौजियों की तरफ मुडा और ग्रिगोरी की ओर इशारा करके बोला—"जरा इस मिरगी के मरीज का इलाज करो। यहाँ की बदअमनी खत्म करो···जैसे भी हो। मुझे कमाडेंट से जरूरी काम है और लोग है कि मेरी राह रोककर तमाम उलटी-सीधी बाते कर रहे है।" वह तेजी से ग्रिगोरी की बगल से निकल गया।

लम्बे कद, कायदे से तराशी मूंछो और गहरी-नीली ट्यूनिक के कन्धो पर लेफ्टिनेन्ट की पट्टियो वाला, मारकोव रेजीमेट का एक अफसर ग्रिगोरी के पास आया और बोला—"क्या चाहते हो? गडबडी क्यो कर रहे हो?"

"स्टीमर मे जगह चाहता हूँ और बस !"

"तुम्हारी रेजीमेट कहाँ है?"

"नही जानता।"

"अपने कागजात दिखलाओ।"

फूले हुए गालो और बिना कमानी के चश्मे वाले एक दूसरे कम-उम्र फौजी ने जोश मे भरी, भारी आवाज मे कहा—"इन्हे गारद के कमरे मे ले चलना चाहिए···यही बेहतर होगा···वक्त खराब न करो, वीसोत्स्की !"

लेफ्टिनेन्ट ने ग्रिगोरी के कागजात सावधानी से पढे और लौटाते हुए बोला—"आप अपनी रेजीमेट तलाशिए।···मेरी सलाह मानिए तो यहाँ से दफा हो जाइये और लोगो को जहाज पर चढाने के काम मे टाँग न अडाइए।" लेफ्टिनेन्ट ने अपने होठ सिकोडे, र्याबचिकोव को तिरछी निगाह से देखा और ग्रिगोरी के कान के पास मुँह लाकर धीरे से बोला—"सुनिए·· आप ३६वी बैटरी के कमाडर से बातें कर लीजिए। यानी, उन फौजियो के साथ खड़े हो जाइए···जहाज़ मे जगह हो जाएगी।"

र्याबचिकोव ने लेफ्टिनेन्ट की फुसफुसाहट सुन ली और खुशी से

खिलते हुए बोला—"तुम कारगिन के पास जाओ···मै दौडकर दूसरे साथियो को लिये आता हूँ···तुम्हारे किटबैग के अलावा और भी कुछ लाना है क्या ?"

"हम लोग साथ चलेगे ।" ग्रिगोरी ने तटस्थ भाव से कहा । दोनो लौटे तो उन्हे राह मे सेम्योनोव्स्की गाँव का एक परिचित कज़्ज़ाक मिला । वह तिरपाल से ढँकी रोटियो से भरी गाडी घाट को लिये जा रहा था ।

र्याबचिकोव ने आवाज लगाई—"हलो फियोद्र···कहाँ जा रहे हो ?"

"ओह ··प्लातोन···ग्रिगोरी पैन्तेलेयेचिव ··प्रीवियत[1] ! मैं अपनी रेजीमेट के रास्ते के लिए रोटियाँ लिये जा रहा हूँ । बडी दिक्कत से तैयार हुई है । वैसे ये रोटियाँ न होती तो सफर मे सिर्फ लपसी से काम चलाना पडता ।"

ग्रिगोरी ने गाडी के पास पहुँचकर पूछा—"तुम्हारी ये रोटियाँ तोल की है या गिनती की ?"

"कौन आसमान से उतरकर गिनती करता इनकी ! ··क्यो, तुम्हे रोटियाँ चाहिए क्या ?"

"हाँ ।"

"तो, ले लो ।"

"कितनी ले लूँ ?"

"जितनी ले जा सको···यहाँ कोई कमी थोडे ही है ।"

इस पर ग्रिगोरी रोटी पर रोटी निकालने लगा तो र्याबचिकोव के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । फिर, उत्सुकता सीमा मे न रही तो आखिरकार पूछा—"इतनी रोटियो का क्या अचार डालोगे तुम ?"

"ज़रूरत है ।" ग्रिगोरी ने रुखाई से जवाब दिया ।

उसने उस आदमी से दो बोरियाँ माँगी, रोटियाँ उनमे भरी, उसे धन्यवाद देने के बाद उससे विदा ली और र्याबचिकोव को आदेश

---

१. अभिवादन ।

दिया—"एक बोरी मै उठाता हूँ · दूसरी तुम उठा लो···हम इन्हे ले चलेगे।"

"यही जाडा बिताने का खयाल है क्या ?" बोरी कन्धे पर लादते हुए र्याबचिकोव ने हँसकर कहा।

"मैंने ये रोटियाँ अपने लिए नही ली है।"

"फिर किसके लिए ली है ?"

"ये मेरे घोडे के लिए है।"

र्याबचिकोव ने सफाई से बोरी नीचे रख दी और ताज्जुब से पूछा—"मजाक कर रहे हो क्या ?"

"नही, सचमुच ये रोटियाँ मैने घोडे के लिए ली है।"

"तो, तो···तुम्हारा इरादा क्या है, पैन्तेलेयेविच ? तुम पीछे रह जाना चाहते हो क्या ? क्या बात है ?"

"तुमने बिल्कुल ठीक समझा। अब बोरी उठाओ और चलो। घोडे को तो खाने को कुछ-न-कुछ चाहिए ही। घोड़ा बडे काम की चीज़ है। पैदल आदमी कहाँ-कहाँ जाएगा ?"

फिर, ठहरने के ठिकाने तक र्याबचिकोव ने नाम को भी मुँह नही खोला। वह केवल कराहता और बोरी को एक कधे पर रखता रहा। परन्तु घर के फाटक पर पहुँचने पर उसने पूछा—"दूसरे साथियो से इन रोटियो का ज़िक्र करोगे या नही ?" फिर, जबाब का इन्तज़ार किए बिना, उदास होकर बोला—"खयाल तो तुम्हारा ठीक है···मगर हम लोगो के बारे मे भी कुछ सोचा ?"

"अपना इन्तज़ाम तो लोगो को आप करना चाहिए।" ग्रिगोरी ने थोडे अभिमान और अन्यमनस्कता से कहा—"अगर वे हमे ठहरने की जगह न दें तो न दें···कोई ज़रूरत नही···हम उन्हे अपने गले मे लटकाए रहना क्यो चाहेगे ? हम वहाँ न जाएँगे और कही और तकदीर आजमाएँगे। बढो···आगे बढो···तुम वहाँ फाटक मे जमे क्यो खड़े हो ?"

तुम्हारी बात किसी को भी जहाँ-का-तहाँ कील देने को काफी है।·· क्या बात है ? तुमने मुझे अच्छा सबक दिया है, ग्रीशा ! उँगली के पोर को छूकर चारोखाने चित कर दिया। यही तो मै कहूँ कि इतनी

रोटियो का भला यह क्या करेगा ? अब यह है कि दूसरे कज़्ज़ाकों को मालूम होगा तो तूफान मच जाएगा।"

"खैर···तुम अपनी बात करो···यह बतलाओ कि तुम मेरे साथ ठहरोगे या नही ?"

"क्या ?" र्याबचिकोव एकदम चौक उठा।

"एक बार फिर सोच लो।"

"इसमे सोचने को क्या है ! मैं चला···अभी मौका है···कारगिन की बैटरी के साथ चिपक जाऊँगा और यहाँ से निकल जाऊँगा।"

"पीछे पछताओगे।"

"सचमुच यह खयाल है तुम्हारा ? खैर···अपनी खोपडी को मैं ज्यादा कीमती समझता हूँ, मेरे भाई ! मैं नही चाहता कि लाल फौजी अपनी तलवारें मेरी गर्दन पर आजमाएँ।"

"तुम्हे एक बार और सोचना चाहिए, प्लातोन ! इस वक्त जो हालत है···"

"मै सारी हालत पूरी तरह समझता हूँ, और इसके बाद भी फौरन ही जा रहा हूँ यहाँ से।"

"खैर ··जैसा चाहो वैसा करो ··मैं तुमसे बहस नही करूँगा।" ग्रिगोरी ने नाराज़ होकर कहा और बरसाती की पत्थर की सीढ़ियो पर चढ़ा।···

येरमाकोव, प्रोखोर और बोगातिरयोव आदि सभी घर से गायब मिले। उम्र से सयानी और पीठ से कुबडी, घर की आर्मीनियाई मालकिन ने बतलाया कि वे लोग कही गए है···जल्दी ही आने होगे।

ग्रिगोरी ने एक रोटी के बडे-बडे टुकडे काटे और अस्तबल की ओर बढा। वहाँ उसने टुकडो के दो हिस्से किए। एक हिस्सा अपने घोडे को खिलाया और दूसरा हिस्सा प्रोखोर के घोडे को। फिर उसने पानी लाने के लिए बाल्टी उठाई कि र्याबचिकोव अस्तबल के दरवाज़े पर आया। उसने अपने बरानकोट के अन्दर रोटी के बडे-बडे टुकडे छिपा रखे। दूसरी तरफ अपने मालिक की महक पाते ही उसका घोड़ा हल्के से हीसा। ग्रिगोरी मुस्कराने लगा। र्याबचिकोव बिना कुछ बोले बगल

से गुजरा और रोटी के टुकडे नाँद मे उछालते हुए बोला—"इस तरह दाँत मत निकालो। आखिर मुझे भी तो अपने घोड़े को खिलाना चाहिए। तुम्हारा खयाल है कि मै यहाँ से खुशी-खुशी चला जाऊँगा ? इसके लिए मुझे आप अपनी गर्दन पकडकर अपने को उस कमबख्त स्टीमर तक दौड़ाना पड़ेगा। वहाँ कोई दूसरा रास्ता मेरे सामने न रहेगा। सच पूछो तो डर मुझे घोडे की तरह हाँक रहा है···मेरे पास सिर तो एक ही है न ? आसमान वाला न करे कि यह गायब हो जाए, वरना मिकायलमास पहुँचने तक दूसरा तो उग नही आएगा।"

दूसरी तरफ प्रोखोर और बाकी लोग शाम होने के करीब लौटे। और, जब लौटे तो येरमाकोव के हाथ मे शराब की एक बडी बोतल दीखी, और प्रोखोर का किटबैग गाढे पीले द्रव के मुहरबन्द फ्लास्को से भरा मिला।

प्रोखोर अपनी बोतल की तरफ इशारा करते हुए काफी ऐंठा और बोला—"आज की कमाई खासी शानदार रही। सारी रात के लिए काफी समझो···हुआ यह कि हमे इत्तफाक से योही मिल गया एक डॉक्टर। कहने लगा—'घाट के एक गोदाम से दवादारू की कुछ चीज़े निकालने मे जरा हमारी मदद कर दो'···यानी हम घाट पर गये। हमने देखा कि जहाज़ी मजदूरो ने काम करने से इन्कार कर दिया है, और सिर्फ कैडेट गोदाम से माल खीच-खीचकर ला रहे है। बस ये तो भी कैडेटो के साथ शामिल हो गए। डॉक्टर ने हमारी मेहनत के बदले मे हमे खालिस शराब दी और प्रोखोर ने ये फ्लास्क बट्टेखाते में उडा दिए। ऊपर वाला जानता है···मैं मज़ाक जरा भी नही कर रहा हूँ।"

"लेकिन, उनमें है क्या ?" र्याबचिकोव से उत्सुकता से पूछा।

"यह चीज़ तो खालिस शराब से भी ज्यादा खालिस है, भाई मेरे !" प्रोखोर ने फ्लास्क हिलाए और रोशनी के सामने किए, तो गहरे रग के शीशे के अन्दर कोई गाढा तरल पदार्थ चमका। वह आत्म-सन्तोष की लम्बी साँस लेते हुए बोला—"यानी यह है बाहर के मुल्क की एक ऐसी शराब जो बहुत ही मुश्किल से मिलती है और आदमी का सारा दुख-दर्द छू-मन्तर कर देती है। इसीलिए तो अँग्रेज़ी जानने

वाला एक कैडेट मुझसे बोला—'हम स्टीमर पर सवार होने के बाद इसे पीएँगे, जी हल्का करेंगे, 'मेरा प्यारा-प्यारा' देश छेड़ेगे और ऐन क्रीमिया तक ढालेंगे। फ्लास्क समुन्दर मे फेंक देगे।"

"जल्दी भागो और किनारे पहुँचो···उन लोगो ने तुम्हारे लिए जहाज़ रोक रखा है·· तुम्हारे बिना उनसे जाते ही नही बन रहा है···कह रहे है कहाँ है हमारा सूरमाओ का सूरमा···प्रोखोर ज़िकोव ? उसके बिना जहाज़ बन्दरगाह से हिल नही सकता।" र्याबचिकोव ने मज़ाक बनाते हुए कहा। फिर धुएँ से पीली पड़ी उँगली से ग्रिगोरी की तरफ इशारा कर बोला—"ग्रिगोरी का और मेरा इरादा बदल गया है, यानी अब हम दोनो फिलहाल नही जाएँगे।"

"सचमुच !" प्रोखोर के मुँह से कराह निकल गई और आश्चर्य ने ऐसा बौखलाया कि एक फ्लास्क हाथ से गिरते-गिरते बचा।

"क्या है यह सब ? तुम्हारे दिमाग मे आखिर है क्या ?" येरमाकोव ने भौहे चढ़ाते और ग्रिगोरी की तरफ एकटक देखते हुए पूछा।

"हमने यहाँ से जाने का खयाल छोड दिया है।"

"लेकिन आखिर क्यो ?"

"क्योकि हमारे लिए जहाज़ मे जगह नही है।"

"जहाज़ मे जगह आज न सही, कल तो होगी।" बोगातिरयोव ने विश्वास के साथ कहा।

"किनारे गये हो तुम ?"

"क्यो, क्या हुआ ?"

"मेरा मतलब तुमने वहाँ की हालत देखी है ?"

"हाँ देखी है, तो फिर ?"

"फिर·· फिर। अगर तुमने वहाँ की हालत देखी है तो कहने को क्या रह जाता है ? वे सिर्फ मुझे और र्याबचिकोव को लेने को तैयार थे। इस पर भी एक स्वयसेवक बोला—'आप कारगिन-बैटरी के लोगो के साथ खडे हो जाएँ, वरना जगह न मिलेगी।' "

"अभी जहाज़ पर सवार नही हुए उसके लोग···मेरा मतलब है बैटरी के लोग ?" बोगातिरयोव ने जल्दी-जल्दी पूछा। जवाब मे उसे

बतलाया गया कि लोग खड़े है और जहाज पर चढने के इन्तज़ार मे है। बस, तो वह खुद भी वहाँ पहुँचने के लिए तैयार हो गया। उसने अपना लिनेन, फालतू शरोवारी और ट्यूनिक किटबैग मे रखी, थोडी रोटी ली और सबसे विदा लेने लगा।

"कहाँ जा रहे हो, प्योत्र ?" येरमाकोव अपनी ओर से बोला— "पार्टी को इस तरह तोडकर जाना बेकार है।" बोगातिरयोव ने कोई जवाब दिए बिना, हाथ आगे बढ़ाया, दरवाजे के पास एक बार और ठिठका और बोला—"ठीक-ठाक रहना! अगर ऊपर वाले ने चाहा तो फिर मुलाकात होगी।" और वह दौड चला।

उसके जाने के बाद कमरे मे सन्नाटा हो गया। सन्नाटा जैसे काटने लगा। येरमाकोव बावर्चीखाने मे गया, मालकिन से चार गिलास ले आया और उनमें शराब भर दी। फिर उसने ठडे पानी से भरी ताम्बे की चायदानी मेज़ पर रखी, सूअर की चर्बी काटी, मुँह सिए-ही-सिए मेज़ के किनारे बैठा, उस पर कुहनियाँ टिकाईं। कुछ देर तक उदास मन से अपने पैरो पर निगाह टिकाए रहा, और सीधे चायदानी की टोटी से थोडा-सा पानी पीने के बाद भर्राई आवाज मे बोला—"पानी से हमेशा पैराफीन की-सी बू क्यो आती है ?"

कोई कुछ नही बोला। र्याबचिकोव भाप छोडती तलवार को साफ कपडे से पोछने लगा, ग्रिगोरी अपने थैलो मे कुछ खँखोरने लगा, और प्रोखोर खिडकी से पहाड़ियो के वीरान ढालो पर दृष्टि दौडाने लगा। ढालो पर जहाँ-तहाँ ही घोडे नजर आते रहे।

"आओ·· मेज के किनारे आकर बैठो···थोडा पिया जाए।" और येरमाकोव ने, दूसरे की राह देखे बिना, एक गिलास शराब एक झटके मे गटक ली और फिर थोड़ा सा पानी पिया। इसके बाद सूअर के गोश्त का एक टुकडा चबाते हुए, खुशी से खिली हुई आँखो से ग्रिगोरी की ओर देखकर बोला—"ये लाल कॉमरेड हमे काटकर तो नही फेक देंगे न ?" ग्रिगोरी बोला—"वे हम सबको तलवार के घाट नही उतार पाएँगे· हज़ार से ज्यादा लोग तो यहाँ फिर भी रह ही जायेगे।"

"मुझे सबसे क्या लेना-देना ?" येरमाकोव हँसा—"मुझे तो फिक्र

अपनी खाल बचाने की है।"

और, जब काफी ढल चुकी तो बातचीत ने और मजेदार मोड ले लिया। लेकिन जरा देर बाद ही, आशा के विपरीत, बोगातिरयोव लौट आया। उसकी भौहे चढी रही और चेहरा ठडक से नीला लगा। उसने नए-से अंग्रेज़ी बरानकोटो की गॉठ-की-गाँठ जमीन पर फेंकी और चुपचाप अपना कोट उतारने लगा।

"लौट आए···तुम्हारा लौटना मुबारक !" प्रोखोर ने अभिवादन मे झुकते हुए व्यग्य से कहा।

बोगातिरयोव ने उस पर गुस्से से भरी नज़र डाली और आह भर-कर बोला—"अब अगर देनीकिन के कुल-के-कुल फौजी और ये तमाम-के-तमाम दोगले आकर मेरे सामने घुटने टेकें, तो भी मैं न जाऊँ! मैं कतार मे खड़ा रहा, ठड से जमकर बर्फ हो गया और सारी मेहनत बेकार। लोग ऐन मेरे पास आकर रुके और मेरे आगे के दो आदमियो मे से एक को ले लिया, दूसरे को छोड दिया। बैटरी के आधे लोग किनारे छूट गए है। क्या कहोगे तुम इसे ?"

"इस किस्म के लोगो के साथ इसी तरह का बरताव करते हैं वे लोग।" येरमाकोव हँसते-हँसते लोटपोट हो गया और बोतल से शराब छलकाते हुए उसने बोगातिरयोव के लिए एक गिलास ऊपर तक भर दिया—"लो, अपने कलख का जाम पियो। शायद उनका इन्तज़ार है कि आयेंगे और आकर तुम्हे ले जाएँगे, क्यो ? देखो···खिड़की से झाँक-कर देखो। खुद जनरल रैंगेल चला आ रहा है तुम्हे बुलाने के लिए··· आ रहा है न ?"

बोगातिरयोव ने बात का जवाब दिए बिना शराब की भरपूर चुस्की ली और मज़ाक करने-कराने को तैयार न लगा।

अब तक येरमाकोव और र्याबचिकोव दोनो के आधे होश नशे के हाथो मे आ गए थे। उन्होने उस आरमीनियाई बुढिया को इतनी पिलायी, इतनी पिलायी कि एक बूँद भी पीने की ताब उसमे न रही। फिर दोनो कही-न-कही से अकारदीयन बजाने वाले को लाने की बाते करने लगे।

बोगातिरयोव बोला—"अच्छा हो कि तुम स्टेशन चले जाओ····

किराए की ले आओ·· वहाँ गाडी-भर वर्दियाँ मारी-मारी फिर रही है।"

"तुम्हारी इन वर्दियो का हमे भला क्या करना ?" येरमाकोव चीखा—"तुम जो बरानकोट लाए हो, वे ही हमारे लिए काफी है··· और, बाकी वर्दियो का होगा ही क्या ? लाल फौजी तो जो कुछ फालतू देखेंगे, वही उतार ले जाएँगे।···अबे प्योत्र नाम के ताजी कुत्ते, हमने लाल फौजियो से जा मिलने का फैसला किया है···समझ मे आई बात ? हम कज्ज़ाक है या कुछ और है ? अगर लाल फौजी हमे जीता-जागता रहने देगे तो हम उनकी खिदमत करेगे। हम दोन के कज्जाक है। हमारी रगो मे कज्जाको का खालिस खून बहता है। हमारा काम लड़ना है ? तुम्हे पता है कि मै तलवार किस शान से चलाता हूँ। दुश्मन को यो काटकर रख देता हूँ, जैसे कोई पातगोभी के टुकड़े करके रख दे ! खडा हो जा और देख···मैं दिखला दूँ तुझे अपना हाथ ! क्यो, कमजोरी कुछ ज्यादा महसूस हो रही है क्या ? किसी को तलवार के घाट उतरना चाहिए···फिर हमे इसकी परवाह नही कि तलवार के घाट कौन उतरता है···क्यो मेलेखोव, मेरी बात ठीक है न ?"

"ज़बान बन्द करो।" ग्रिगोरी ने थकान से भरे स्वर मे जवाब दिया।

येरमाकोव ने लाल-सुर्ख आखे झपकाते हुए बक्स पर पडी अपनी तलवार की तरफ हाथ बढाया। मगर, बोगातिरयोव ने हँसते हुए उसे एक तरफ़ को ढकेल दिया और बोला—"सूरमा अनीका, आपे के बाहर न हो, वरना देखते-देखते दिमाग ठडा कर दूँगा—नशे को सम्हाल मे रखो, और यह न भूलो कि अफसर हो तुम।"

"मैं अपने कन्धे की पट्टियो के साथ-साथ अपनी अफ़सरी का भी इस्तीफा दे दूँगा। इस वक़्त इस अफसरी की मुझे उतनी ही दरकार है, जितनी रस्सी के फदे की सूअर को। बेकार इसकी याद न दिलाओ फिलहाल ! कहो तो मै तुम्हे तकलीफ से बचा दूँ और तुम्हारे कधे की पट्टियाँ काटकर तुम्हे नज़र कर दू·· क्यो ?·· पोत्र···मेरे जिगर· रुको ज़रा···अभी एक झटके मे तुम्हारी ये पट्टियाँ कन्धे से अलग

करता हूँ।"

"अभी नही ··अभी बडा वक्त पडा है इसके लिए।" बोगातिर-योव ने अपने बेकाबू दोस्त को दूर ढकेलते हुए हँसकर कहा।

इस तरह वे लोग सुबह-तडके तक शराब ढालते रहे। शाम को ही बाकी कज्जाक भी आ गए थे। उनमे से एक के पास अकारदीयन था। सो, येरमाकोव तब तक कज्जाक-नृत्य करता रहा, जब तक कि जमीन पर ढह नही पडा। फिर साथी उसे घसीटकर एक किनारे ले गए तो पैर फैलाकर और सिर भद्दे ढग से पीछे की तरफ झुलाकर वह वही नगे फर्श पर सो गया।

हगामा बराबर चलता रहा।

एक सयानी उम्र का अजनबी कज्जाक पीते-पीते नशे मे धुत हो गया तो सिसकियाँ भरते हुए बोला—"कभी हमारे यहाँ ऐसे ऊँचे बैल थे कि आदमी का हाथ उनके सीगो तक न पहुँचता था। घोडे हमारे यहाँ क्या थे, शेर थे! मगर अब क्या बचा है उसी फार्म मे? बची है सिर्फ एक खौरही कुतिया। और वह भी जल्दी ही मर जाएगी, क्योकि उसके खाने को कुछ भी नही है।"

लेकिन फटा-पुराना सरकाशियन कोट पहने कुबान के एक कज्जाक ने अकारदीयन-वादक को नौर्सकाया-नाच की धुन निकालने को कहा और हाथ नचा-नचाकर उचक-उचककर कमरे-भर मे इस तरह थिरकता फिरा कि क्या कहिए! उसके पैरो को देखकर ग्रिगोरी को ऐसा लगा जैसे कि उसके बूटो के तल्ले उस कटे-फटे गदे फर्श से लग ही नही रहे।···

आधी रात होते-होते एक कज्जाक जाने कहाँ से दो बडे सँकरे मुँह वाले घडे ले आया। उनके बाहर एक तरफ अधमले, बदरग लेबिल लगे दीखे, कागो पर मुहर नजर आई और उसके चेरी से लाल मोम से सीसे के बडे-बडे मार्क लटके लगे। घडो'मे शायद एक-एक बाल्टी शराब थी। प्रोखोर ने एक घडा उठाया और बडी मेहनत से लेबिल के विदेशी शब्द पढ़ने की कोशिश की। इस बीच येरमाकोव सोकर जाग उठा। उसने घडा प्रोखोर के हाथ से छीनकर नीचे रख

दिया, अपनी तलवार म्यान से खींचकर तिरछे वार से घडे की गर्दन उड़ा दी और चिल्लाया—"लाओ अपने-अपने गिलास !"

गाढी, अलबेली महकवाली, तेज शराब कुछ ही क्षणो मे बँट गई। र्याबचिकोव ने मजे मे आकर बार-बार जीभ चटकाई और बुदबुदाते हुए बोला—"यह शराब नही है। यह तो आसमानी नेमत है।··· मरने के ठीक पहले पीने की चीज है। फिर पीना भी इसे सिर्फ उन लोगो को चाहिए जिन्होने जिन्दगी मे कभी ताश न खेला हो, तम्बाकू की महक न जानी हो और औरत के बदन को हाथ तक न लगाया हो !···यानी, यह समझो कि यह मामूली लोगो के लिए नही, पादरियो जैसे पाक-साफ लोगो के लिए बनी है।"

इसी समय प्रोखोर को अपनी किटबैग मे पडी दवाई वाली शराब के फ्लास्को का ध्यान आया और वह एकदम चिल्लाया—"रुको··· प्लातोन···मेरे पास इससे अच्छी शराब है · गोदाम से जो चीज मैं लाया हूँ, उसके सामने यह कूडा है अभी देता हूँ यह शराब···उसमे महकदार शहद का मजा है···और हो सकता है कि पीने मे इससे भी बेहतर लगे · यह पादरियो वाली शराब नही है मेरे भाई, यह तो ज़ारो के पीने की शराब है·· एक जमाने मे जार पीते थे इसे··· और आज किस्मत से यह हमारे हाथ लग गई है।" वह डीग मारते-मारते एक फ्लास्क खोलने लगा।

शराब के मामले मे हमेशा तैयार र्याबचिकोव ने उस गाढे द्रव का गिलास-का-गिलास एक साँस मे ही गले के नीचे उतार लिया। इसके साथ ही उसका चेहरा पीला पड गया और आँखे फटी-फटी-सी रह गईं।

"यह शराब नही है ··यह तो कारबोलिक है।" वह भर्राए गले से चीखा। उसने गिलास के बचे-खुचे द्रव का कुल्ला प्रोखोर की कमीज़ पर कर दिया और लडखडाते हुए गलियारे की ओर दौडा।

"झूठ बोलता है, गधा। यह तो अग्रेजी शराब है। अच्छी-से-अच्छी किस्म की ! इसकी बात का यकीन न करो, भाइयो !" प्रोखोर दूसरी आवाजों को दबाने की कोशिश मे चिल्लाया। साथ ही उस

द्रव से गिलास भरा और गटक गया। फिर क्या था, देखते-देखते उसका चेहरा र्‌याबचिकोव के चेहरे से भी ज्यादा पीला पड़ गया।

"क्यो, क्या बात है ?" येरमाकोव ने नथुने फुलाते और प्रोखोर की धुंधलाई आँखो-मे-आँखे डालते हुए पूछा—"जार के पीने की शराब है न ? तेज मीठी ? अब बोल शैतान कही का·· वरना यही फ्लास्क तेरे सिर पर तोड डालूँगा !"

प्रोखोर को बड़ी तकलीफ हुई, पर वह बोला कुछ नही। उसने सिर हिलाया, हिचकियो पर हिचकियाँ लेते हुए झटके से उठकर खडा हुआ, और र्‌याबचिकोव के पीछे लपक चला। येरमाकोव के पेट मे हँसते-हँसते बल पडने लगे। उसने ग्रिगोरी की तरफ देखकर आँख मारी और बाहर निकलकर अहाते मे आया। पर, एकाध मिनट बाद ही इस तरह ठठाकर हँसता हुआ लौटा कि बाकी आवाज़े उन ठहाको में डूब गई।

"आखिर हुआ क्या ?" ग्रिगोरी ने खीझते हुए पूछा—"तुम इस तरह हिनहिना क्यो रहे हो बुद्धू कही के ?"

"अरे प्यारे, ज़रा जाओ और देखो कि दोनो किस तरह जमीन पर लोट लगा रहे है। तुम्हे पता है कि शराब के धोखे मे क्या पिया उन्होने ?"

"क्या था ?"

"जुओ को मारने की कोई अंग्रेज़ी दवा थी।"

"झूठ बात है।"

"ऊपर वाला गवाह है जो मै गलत कह रहा हूँ। गोदाम मे मैंने भी इस चीज को पहले-पहल शराब ही समझा था। पर मैंने डॉक्टर से पूछा—'यह क्या चीज है, डॉक्टर ?'···वह बोला—'दवा है।···' मैने कहा—'कही तमाम दुख-दर्दों की एक दवा तो नही है यह ? शराब है क्या ?' उसने जवाब दिया—'शराब का नाम न लो··· यह तो जुओ को मारने का एक तरह का लोशन है—किसी दोस्त मुल्क ने भेजा है·· बाहरी इस्तेमाल की चीज है—पीने-पिलाने की नही ?"

"बेवकूफ हो तुम, अगर तुम्हे यह बात पता थी, तो तुमने उन लोगो को रोका क्यो नही· ·?" ग्रिगोरी गरम हो गया।

"शैतानो को हथियार डालने के पहले अपनी सफाई कर लेने दो। मै नही समझता कि इससे कोई भी मर जाएगा।" येरमाकोव ने हँसी के अपने आँसू पोछे और जरा दूसरी तरह बोला—"एक बात और भी है कि अब जब पीने बैठेंगे ये लोग तो जरा समझ-बूझकर पिएँगे···अब तक तो इनके साथ पीना नामुमकिन रहा है···ऐसे धुआँधार पीने वालो को तो सबक मिलना ही चाहिए था। खैर, तो हम-तुम शराब चालू रखेंगे या अब थोडा रुकेंगे ? मेरा तो खयाल है कि पी-पाकर खत्म ही किया जाए !"

···फिर दिन निकलने के जरा पहले ग्रिगोरी सीढी पर आया, काँपती उँगलियो से अपने लिए सिगरेट रोल की और धुध के बीच नम दीवार से पीठ सटाकर खडा हो गया।

घर के अन्दर नशे मे धुत लोगो की चीख-पुकारो, अकारदीयन की सिसकियो और सीटियो की लम्बी खीचो ने आसमान सिर पर उठा रखा। अपनी धुन मे मस्त नर्तक अपनी एडियो के सहारे नाचते रहे और थकने का जैसे उन्होने नाम ही नही लिया। लेकिन दूसरी ओर खाडी से किसी स्टीमर के भोपू की आवाज आती रही। घाटो पर शोरगुल कभी-कभी ठोस गरज का रूप लेता रहा और बीच-बीच मे रह-रहकर गूँजती रही तेज़ कमानें, घोडो की हीसें और इजिनो की सीटियाँ। रेलवे-लाइन के किनारे-किनारे कही लडाई चलती रही, तोपो के मिले-जुले धडाके होते रहे और धड़ाको के बीच मशीनगनो की खडाखड सुनाई पडती रही। सहसा ही पहाड के एक दर्रे के ऊपर एक रॉकेट ने आसमान की ऊँचाइयो को दहकाया, और चारो तरफ रोशनी छिटकाई। कुछ क्षणो तक पहाडो की कुबडी चोटियाँ हरे प्रकाश मे लौ देती रहीं। इसके बाद दक्षिण की बसती रात के अँधेरे ने फिर पहाडो को घेर लिया और तोपों की गरज ने और ज़ोर पकड़ लिया।

: २६ ·

समुद्र की तरफ से ठडी, खारी और भारी हवा के झोके आते रहे और विचित्र अनजाने देशो की महक अपने साथ किनारे तक लाते रहे। लेकिन समुद्र-तटवर्त्ती उस बेजान, सूखे के शिकार नगर मे कज्जाको को न सिर्फ हवा, बल्कि हर चीज पराई और बिरानी लगी। वे जहाज पर जगह पाने के इन्तजार मे, भीड लगाए, घाट पर खड़े रहे। हरी, झाग से नहाई लहरें आ-आकर किनारे पर उमडती रही। ठड से ठिठुरते सूरज की किरणें बादलो से झाँक-झाँककर धरती को देखती रही। ब्रिटिश और फ्रेंच बममार-जहाज़ एक तरफ खडे धुआँ देते रहे। एक लडाकू जहाज का सफद, डरावना पेदा पानी के ऊपर उतराता रहा और उसके ऊपर यहाँ से वहाँ तक धुएँ की चादर तनी रही। घाटो में हर तरफ सन्नाटा किसी अपशकुन-सा मँडराता रहा। अभी-अभी जहाँ एक मालजहाज़ ने लगर डाल रखा था, वहाँ गैंगवे से जल्दी-जल्दी लुकाई गई चीजे पानी पर लहरती रही। इनमे रही अफसरो के घोडो की काठियाँ, सूटकेस, कपड़े, भेड़ की खाल के कोट, लाल फ्लश के गद्दोवाली कुर्सियाँ और लकडी के दूसरे सामान।

सो, सुबह तडके ही, ग्रिगोरी घोडे पर सवार होकर घाट पहुँचा। यहाँ अपना घोडा प्रोखोर को सौपने के बाद वह बहुत देर तक भीड मे घूम-घूमकर जान-पहचानियो की तलाश करता, और लोगो की चिन्ता से भरी तरह-तरह की बातें सुनता रहा। सहसा ही उसने सयानी उम्र के, एक रिटायर्ड कर्नल को देखा। कर्नल हवा की रफ्तार से गैंगवे पर पहुँचा। ··उसे आखिरी जहाज़ मे भी जगह देने से इन्कार कर दिया गया था।···

इस छोटे कद के, पचायती कर्नल के गालो पर खरोच के निशान थे और थैलियो-सी आँखो में आँसू की बूँदें थी। इसने अभी कुछ मिनट पहले ही गारद के अफसर को तलवार वाली पेटी पकडकर घसीटा था, कुछ फुसफुसाकर कहा था, और गदे रूमाल से तम्बाकू के धुएँ से काली अपनी मूँछें और काँपते हुए होठ पोछे थे। फिर, सहसा ही वह अपने-आपमे आता लगा था।···परन्तु, इस घटना के

एक क्षण बाद ही किसी तेज उंगलियो वाले कज्जाक ने चम-चम करते 'ब्रार्उनिग को उसके खूंखार पजो से दूर खीचा था, और उसे पैर पकड कर, अफसरो वाले हल्के-भूरे बरानकोट सहित, बक्सो के अम्बार पर ढकेल दिया था।···

और, फिर गैगवे के चारो ओर लोगो का रेला और जोरो से उमड पडा था। घाटो पर गुत्थमगुत्था मच गई थी और कुछ शरणार्थियो की भर्राई हुई आवाजो ने तूफान खडा कर दिया था।··

फिर आखिरी स्टीमर ने घाट छोडा तो औरतो की सिसकियो, बौखलाहट से भरी चीख-पुकारो और कोसा-कासियो से पूरा वातावरण भर उठा। मगर जहाज़ के भोपू की गूँज बुझ भी न पाई कि लोमडी की खाल की टोपी वाला एक जवान कज्जाक पानी मे कूद पडा और, तैरते हुए स्टीमर की ओर बढने लगा।

"यानी, इन्तजार करते नही बना!" एक कज्ज़ाक आह भरकर बोला।

ग्रिगोरी के पास खडे एक दूसरे कज्जाक ने अपनी तरफ से कहा—"साफ है कि पीछे छूट जाना इसके लिए खतरे से खाली नही है···लगता है कि लाल फौजियो को इसने खासा नुकसान पहुँचाया है······"

ग्रिगोरी दाँत भीचकर तैरते काल्मीक को घूरता रहा। काल्मीक के हाथो की हरकत ज्यो-ज्यो धीमी हुई, त्यो-त्यो उसके कधे पानी मे हिले। उसका बरानकोट पानी से भीगकर भारी हो उठा और उसे नीचे की तरफ खीचने लगा। सहसा ही एक लहर ने लोमडी की खालवाली उसकी लाल टोपी सिर से हटाकर अलग कर दी।

"यह पानी मे डूबकर रहेगा!" लम्बा काकेशियाई कोट पहने किसी बूढ़े ने हमदर्दी से कहा।

ग्रिगोरी तेजी से मुडा और अपने घोड़े की तरफ बढा। उसने प्रोखोर को र्‌याबचिकोव और बोगातिरयोब से काफी गरम होकर बातें करते देखा। इस बीच वे दोनो भी घोड़ो पर सवार होकर वहाँ आ गए थे।···

र्याबचिकोव, ग्रिगोरी को देखते ही, काठी पर घूमा, बेसब्री से घोडे को एड लगाई और चिल्लाकर बोला—"जल्दी करो, पैन्तेलेयेविच !" ·· फिर, ग्रिगोरी के पास आने की राह देखे बिना चीखा—"आओ, हम लोग वक्त रहते पीछे हट चलें। हमने कोई आधी स्क्वैड्रन कज्जाक जमा कर लिए है और हम पहले ग्लेदजिक और फिर वहाँ से जॉर्जिया जाने की बात सोच रहे है। तुम्हारा इरादा क्या है ?"

ग्रिगोरी, हाथ अपने बरानकोट की जेबो मे डाले, बेमनलब भीड़ लगानेवाले कज्जाको को चुपचाप एक ओर करता, उन तीनो की तरफ बढा।

"अच्छा, तो तुम हमारे साथ चल रहे हो या नही ?" र्याबचिकोव ने अपना घोडा ग्रिगोरी के पास लाते हुए आग्रह से पूछा।

"नही, मै नही चलूँगा।"

"एक कज्जाक फौजी कमांडर भी हमारे साथ चल रहा है। उसे इच-इच रास्ता पता है और वह हमे आँख मूंदकर तिफलिस तक ले जा सकता है। चलो ग्रीशा, साथ चलो ! वहाँ से हम जाकर तुर्कों से मिल जाएँगे। क्या कहते हो तुम ? आखिर हमे अपने को, जैसे भी हो, बचाना ही है। सारा खेल अब खत्म होने-होने को हो रहा है, लेकिन तुम तो जैसे अधमरी मछली हो रहे हो।"

"नही, मैं नही चलूँगा।" ग्रिगोरी ने घोडे की रासे प्रोखोर से ली और घोडे की पीठ पर यो सवार हुआ जैसे कि कोई बूढा हो—"मैं नही जाऊँगा—कोई फायदा नही। फिर वैसे भी काफी देर हो चुकी है··· समझे !"

र्याबचिकोव ने मायूसी और गुस्से से चारो ओर निगाह दौडाई और अपनी तलवार की अफसरीवाली गाँठ तोड गिराई।

इस बीच पहाडियो की तरफ से लाल फौजियो की कतारें उमड़ चली और सीमेट के एक करखाने के पास मशीनगने एकदम खडखडाने लगी। बख्तरबन्द गाडियो से लोगो की कतारो पर गोलियाँ बरसने लगी। तोप का पहला गोला एक हवाचक्की के पास आकर गिरा।

"चलो, क्वार्टर चलो···साथियो···बिल्कुल मेरे पीछे-पीछे चले

ग्राम्रो !" ग्रिगोरी ने तनते हुए ग्रादेश दिया। उसमे सहसा ही जैसे नई जान ग्रा गई। लेकिन, र्याबचिकोव ने लपककर ग्रिगोरी के घोडे की लगाम थाम ली ग्रौर भयभीत स्वर मे चीखा—"यहाँ से जाग्रो मत ! फिलहाल, यही बने रहो ·ग्ररे भाई, मरना हो तो साथ ही मरो ·साथ मरना भी उतना नही खलता।"

"उफ·· शैतान कही के· चलो· बढो ग्रागे ! मौत का जिक्र क्यो करते हो ? क्या बेकार की बकबक है यह ?" ग्रौर, क्रोध से पागल ग्रिगोरी तो ग्रागे कुछ ग्रौर भी कहता, मगर समुद्र की तरफ से ग्राती गरज मे उसकी ग्रावाज डूब गई।

'एम्पायर ग्रॉफ इडिया' नाम का जहाज खाडी से बाहर हो गया था, ग्रौर उसने वहाँ से ग्रपनी बारह इच के दहानोवाली तोपो से गोलो की बौछार कर दी थी।···

जहाज ने खाडी से बाहर जानेवाले सभी स्टीमरो को ढक लिया। लाल ग्रौर हरी सेना की नगर के बाहरी हिस्सो की तरफ बढती कनारो को जमीन से पाट दिया, ग्रौर फिर लाल तोपखानो को निशाना बनाने के लिए ग्रपनी तोपो के दहाने दर्रे की चोटी की तरफ मोड दिए। ब्रिटिश तोपो के गोले घाट पर जमा कज्जाको के सिरो के ऊपर से उडने लगे। ·

ऐसे मे बोगातिरयोव का घोडा कूल्हे के बल बैठ गया तो उसने उसकी लगाम पूरे जोर से खीची ग्रौर गोलाबारी के तूफान के बीच चिल्लाकर बोला—'भाई जान, ब्रिटिश तोपो की जबान काफी तेज है। लेकिन, वे ग्रपनी सारी ग्राग सिर्फ बरबाद कर रही है, ग्रौर कुछ नही। सिवाय गरज से ग्रासमान सिर पर उठाने के ग्रौर क्या कर पा रही है वे !"

"गरजने दो ब्रिटिश तोपो को ! हमारे लिए इससे कोई फर्क नही पडता।" ग्रिगोरी ने मुस्कराते हुए ग्रपना घोडा ललकारा ग्रौर गली मे मुड दिया। नुक्कड पर खडे छ घुडसवार, नगी तलवारें लपलपाते, ग्रपने घोडे उछालते उसकी ग्रोर लपके।

सबमे ग्रागेवाले घुडसवार के सीने पर खूनी लाल रग का रिबन चमका।

भाग ८

· १ ·

पिछले दो दिन दक्षिणी गरम हवा बहती रही थी ''खेतो की बची-खुची बर्फ गलती गई वसन्त की झाग उगलती छोटी-छोटी धाराओ का कल-निनाद थिर हो गया'''स्तेपी के नाले-नालियाँ और छोटी-मोटी नदियाँ शात हो गईं। ·

पर, तीसरे दिन तडके हवा थम गई और मैदान के पसारे पर धुध के भारी-भरकम बादल उतर आए। पिछले साल की फेदर घास के झुरमुटो पर नमी की चाँदी मढ गई। ढूह, खड्ड, गिरजो के घटो के ऊपर की मेहराबे, और पिरामिड-चिनारो के नुकीले ताज अभेद्य, दूधिया धुँधलके मे डूब गए।'''दोन के चौडे स्तेपी मैदान मे वसन्त आ गया।

उस दिन सवेरे की घडियाँ धुध मे नहाई रही कि बीमरी से उठने के बाद पहली बार अकसीनिया बाहर निकलकर बरसाती मे आई और बहुत देर तक वसन्ती हवा की ताजगी और नशीली मिठास से अपनी साँसे सीचती रही। फिर वह टहलते-टहलते बगिया तक जा पहुँची और हाथ की बाल्टी नीचे रखकर कुएँ की जगत पर बैठ गई।

अकसीनिया को दुनिया एकदम नई-नई सी लगी ''बहुत ही शानदार किसी ताज़े जादू से भरी। उसका मन तरह-तरह की भावनाओं से भर उठा और आँखें मन के सकेत पर चमकने लगी। उसने बच्चो की तरह स्कर्ट का सिरा अपनी उँगलियो मे लपेटते हुए आसपास की हर चीज को आँख भर-भरकर देखा। क्या धुध की चादर मे लिपटी दूरी,

क्या गली हुई बर्फ के पानी मे किल्लोल करते बगीचे के सेब के पेड़, क्या गीली बाड़े और क्या गहरे पानी से लबालब लीकोवाली आगे की सडक सभी कुछ उसे इतना सुन्दर लगा कि कल्पना जवाब दे गई। हर चीज़ मे तरह-तरह के रगो के कोमल फूल खिलने लगे, और ऐसा अनुभव हुआ, जैसे कि धूप का किरीट उनके चारो ओर जगमग कर रहा हो।···

धुध के बीच से झाँकते आसमान के एक झलाझल टुकडे ने अपने शीतल नीलम से अकसीनिया की आँखो मे चकाचौंध पैदा कर दी। सडते हुए तिनको और बर्फ से खाली काली मिट्टी से उठती गध उसे इतनी जानी-पहचानी और प्यारी लगी कि उसकी साँसो की लम्बाई बढ गई और उसके होठो के सिरो पर मुस्कराहट थिरकने लगी। इसी बीच कही दूर गाती बुलबुल के सरल-सहज स्वर कानो मे पडे तो उसके मन मे अनजाने ही एक उदासी-घुली गाँव-घर की दूरी खटकी, दिल की धडकन तेज हुई और दो छोटे-छोटे आँसू पलको से ढुलक पडे।···

फिर, उसे लगा कि एक जिन्दगी है जो मुझसे रूठकर फिर मेरे पास आ गई है। बस, तो सोच-विचार त्यागकर वह जिन्दगी के नए उल्लास में डूब गई। उसमे अदम्य इच्छा जागी कि वह हर चीज़ को अपने हाथो से छुए, हर चीज़ को अपनी आँखो से देखे। उसके मन ने कहा—नमी से सँवराई-खडी कुरान्त की झाडी पर हाथ रखकर देख···पीले-गुलाबी, मखमली फूलो से भरे सेब की शाख़ से गाल सटाकर खडी हो जा··· गिरी हुई बाडो को पार कर···सारे रास्तो से दूर दलदल के बीच हिल ···और चौडे खड्ड के पार वहाँ पहुँच जहाँ खेत धुँधलाई दूरी मे खो रहे हैं और जहाँ जाडे की फसल मे हरियाली की परियाँ जगमगा रही हैं।···

कई दिन तक अकसीनिया को किसी भी क्षण ग्रिगोरी के आने की आशा रही। पर, फिर घर के मालिक के यहाँ जो पास-पडोस के लोग आए, उन्होने बतलाया कि लडाई अब भी चल रही है। कितने ही कज्ज़ाक जहाज़ों मे बैठकर नोवोरोस्सिइस्क से क्रीमिया चले गए है और जो बाक़ी रह गए हैं वे या तो लाल सेना से जा मिले है या उन्हे खानो

मे भेज दिया गया है·

सो, सप्ताह खत्म होते न-होते अकसीनिया ने घर लौटने का पक्का इरादा कर लिया, और मौके की बात कि सफर के लिए उसे एक साथी भी जल्दी ही मिल गया।

हुआ यह कि एक दिन शाम को नाटे कद का एक बूढा कुबडा बिना दरवाजा खटखटाए, घर मे घुस आया। अन्दर आने पर झुककर अभिवादन तो उसने किया, पर मुँह से कुछ नही बोला और धूल से नहाए अपने अंग्रेज़ी बरानकोट के बटन खोलने लगा।···कोट की सारी सीवन जहाँ-तहाँ से उधडी दीखी और उसके बदन पर वह बोरे-सा झूलता मालूम पडा।

घर के मालिक ने 'मान-न-मान, मैं तेरा मेहमान' के प्रतीक उस आदमी को आश्चर्य से घूरकर देखा। बोला—"भले आदमी, दुआ-सलाम कुछ नही···और उम्मीद शायद यह कर रहे होगे कि यहाँ तुम्हे आराम से ठहरने को जगह मिल जाएगी ?"

बूढे ने फुर्ती से अपना बरानकोट उतारा, ड्योढी पर झटका, सावधानी से हुक पर टाँगा, फिर अपनी छोटी, सफेद दाढी पर हाथ फेरा और बोला—"माफ करना, मेरे भाई ! लेकिन इस जमाने मे कैसे काम करना चाहिए, यह मैंने खूब सीख लिया है·· सीखा है कि पहले अपने कपडे उतारो और फिर किसी भी मकानवाले से मकान मे ठहरने की बात करो, नही तो घर मे घुस नही पाओगे···इन दिनो ऐसा गँवारपन फैल गया है कि कोई किसी मेहमान को देखकर खुश नही होता "

"लेकिन हम तुम्हे रखेंगे क्या ? देखो न, यहाँ तो भीड पहले से ही लगी हुई है।" मकान-मालिक ने जरा और मुलायम पड़ते हुए कहा।

"मुझे उतनी ही जगह चाहिए, जितनी किसी कुत्ते को ··मैं तो यही दरवाजे के पास पैर सिकोडकर पड़ा रहूँगा और सो जाऊँगा।"

"लेकिन तुम हो कौन, बाबा ? सोवियत लोगो के पास से भागकर आए हो क्या ?" मालकिन ने उत्सुकता से पूछा।

बकबकिया बूढे ने दरवाजे के पास एडियो के बल बैठते हुए जवाब दिया—"तुमने बिलकुल ठीक समझा···मैं उन्ही लोगो के पास से

भागकर आ रहा हूँ···मैं दौडता रहा···दौडता रहा, यानी समन्दर तक दौडता चलता आया हूँ। चुपचाप दुबारा लौटा जा रहा हूँ, दौडते-दौडते चूर हो गया हूँ···।"

"यह सब तो हुआ ··लेकिन तुम हो कौन ? कहॉ के हो ?" घर के मालिक ने अपना सवाल दोहराया।

बूढे ने दर्जी वाली एक जोड कैंचियॉ जेब से निकाली, उन्हे बार-बार उलटा-पलटा और उसी तरह मुस्कराते हुए बोला—"यह रहा मेरा पासपोर्ट···इसी के सहारे इतना फासला तय कर नोवोरोस्सिइस्क तक आ सका हूँ। लेकिन मेरा घर यहाँ से अभी दूर है···यानी व्येशेन्स्काया जिले के दूसरी तरफ है···और समन्दर के खारे पानी का जायका लेने के बाद अब वही वापस जा रहा हूँ।"

"मै भी व्येशेन्स्काया की हूँ, बाबा !" अकसीनिया खुशी से खिलते हुए बोली।

"सचमुच !" बूढे ने आश्चर्य से कहा—"कही भी अपने देश-गाँव की किसी बहू-बेटी से मुलाकात हो जाए तो बड़ी खुशी होती है। वैसे आजकल ताज्जुब इस पर भी नही होता। हम तो यहूदियो की तरह पूरी दुनिया मे फैले हुए है। कुबान मे हालत यह थी कि कोई किसी कुत्ते को लकडी खीचकर मारता तो वह दोन के किसी-न-किसी कज्जाक को लगती। जहॉ देखो वही कज्जाक कि इनसे जान छुडाना मुश्किल। और मजा यह कि दोन के जितने कज्जाक वहाँ इस तरह नजर आए, उनसे कही ज्यादा जमीन के नीचे मौत से मुँह ढाँके पडे रहे। मेरे अज़ीजो, फौज के इस तरह पीछे हटने के दौरान, मैने क्या-क्या नही देखा ! तुम सोच नही सकते कि लोग किस तरह तकलीफे उठा रहे है, मुसीबते झेल रहे है। अभी दो दिन पहले की बात है कि मैं ऐसे ही किसी स्टेशन के मुसाफिरखाने मे बैठा था और मेरी बगल मे बैठी थी किसी शरीफ घर की एक चश्मे वाली औरत। औरत चश्मे के अन्दर से जुएँ देख रही थी और जुओ की फौजो की फौजे उसके बदन पर मार्च कर रही थी। वह उँगलियों से जुएँ बीन-बीनकर फेंक रही थी, और यो मुँह बना रही थी जैसे कि जगली सेब दाँतो के नीचे आ गया हो।

उस पर यह कि वह जितनी जुएँ पकड-पकडकर मारती थी, उसके माथे पर उतने ही बल पडते जाते थे। ऐसा लगता था जैसे कि औरत अभी दोहरी हुई और अभी मरी। और दूसरी तरफ हट्टे-कट्टे लोग दूसरे लोगो को तलवार के घाट उतार देते है और उनके चेहरे पर शिकन तक नही आती। वे उधर से निगाहे तक नही मोडते। ऐसे ही एक 'सिकन्दर' को मैंने देखा। उसने तीन कालमीको को काटकर फेंक दिया, तलवार अपने घोड़े की अयाल से पोंछी, सिगरेट निकालकर जलाई, अपना घोडा मेरे पास लाया और बोला—"ऐसे आँखे फाड-फाडकर क्या देख रहे हो, बाबा? चाहते हो कि तुम्हारे भी बीच से दो टुकडे कर दूँ?' मैंने जवाब दिया—'ऊपर वाला मुझे बचाए! अगर तुम मेरा सिर धड से अलग कर दोगे तो मै रोटी कैसे खाऊँगा? ··'आदमी हँसा और घोडे को उडा ले चला।"

"चाहे जो कहो, मगर इन्सान का हाथ आज इन्सान के मामले मे इतना साफ हो चुका है कि उसे उसके मारने मे कुछ नही लगता ··· जुएँ मारने मे तो कुछ लगता भी है। बगावत के इस जमाने मे इन्सान तो ऐसा सस्ता हो गया है कि बस!" घर के मालिक ने संक्षेप मे कहा।

"यह सच है।" मेहमान ने मेज़बान की हाँ-मे-हाँ मिलाई—"आदमी जानवर तो होता नही ··जानवर ही आसानी से हर चीज़ के आदी हो सकते है···इसीलिए मैंने उस औरत से पूछा—'कौन है आप? देखने से किसी मामूली घर की तो मालूम होती नही।'···उसने मुझे देखा और चेहरा आँसुओ से तर करते हुए बोली—'मैं जनरल ग्रेचीखिन की बीवी हूँ।'···मैने मन-ही-मन कहा—'खैर···तुम मेजर की बीवी हो और चाहे जनरल की, लेकिन जुएँ तुम्हारे बदन मे वैसी ही है जैसे कि किसी खौरही बिल्ली के बदन मे।'···और, फिर मैं उससे बोला—'माफ कीजिए, मेम साहब · लेकिन अगर आप इन रेंगते हुए कीडो को इसी रफ्तार से मारती रही तो माँ-मेरी की दावत के दिन तक तो आपको साँस मिलेगी नही · फिर, आपके सारे-के-सारे नाखून टूट जाएँगे, सो अलग से! अरे, इन सबको एक बार में मसल डालिए।'

···औरत ने पूछा—'लेकिन यह मुमकिन कैसे है ?'···मैने कहा—'अपने कपडे उतारकर किसी कडी जमीन पर फैला दीजिए और फिर उन पर बोतल फिरा-फिराकर जुओ का काम तमाम कर दीजिए।' ··फिर क्या था, मैने देखा कि जनरल की बीवी अपनी जगह से उठी, भागकर पानी के हौज के पीछे गई और अपने कपडे उतारकर उन पर हरे काँच की बोतल इस तरह फिराने लगी जैसे कि जिन्दगी-भर यही करती रही हो। मैने मन-ही-मन कहा—'नीली छतरीवाले के यहाँ किसी चीज की कमी नही···हर चीज की कसरत है। उसने इन कीडो को बडे घरो के लोगो पर भी छोड दिया है कि हमेशा मेहनतकशो का ही खून न चूसते रहो, जरा इनके खून का भी मजा लो। ऊपर वाला कोई ऐसा-वैसा थोडे ही है। वह अपना काम खूब जानता है और कभी-कभी लोगो पर रहम कर ऐसे फैसले करता है कि उससे बेहतर कुछ और दिमाग मे ही नही आता'···।"

दर्जी बेरोकटोक बकता गया और घर के मालिक और मालकिन को अपनी बात मे पूरी तरह दिलचस्पी लेते देखकर बोला—"बतलाने को तो मेरे पास तमाम दिलचस्प बातें है, पर फिर देखा जाएगा···इस वक्त थकान बहुत है··· और बडी नीद आ रही है।"

सो, खाने के बाद सोने की तैयारी करते समय अकसीनिया से बोला—"तो, तुम यहाँ अभी और ठहरने की बात सोच रही हो क्या ?"

"नही, मै घर लौटने की बात सोच रही हूँ, बाबा !"

"तो, मेरे साथ ही चलो···हम दोनो के लिए ही अच्छा रहेगा।"

अकसीनिया बडी प्रसन्नता से राजी हो गई और अगले दिन घर के मालिक और मालकिन से विदा लेने के बाद दोनो नोवोमिखाइलोव्स्की नाम के उस वीरान गॉव से रवाना हो गए।···

बारहवे दिन, रात भीगने के बाद वे मिल्युतिन्स्काया नाम के गाँव मे पहुँचे, और उन्होने एक बड़े, देखने मे खाते-पीते परिवार के घर मे ठहरने की अनुमति मॉगी। अगले दिन अकसीनिया के साथ के बूढे ने एक सप्ताह तक वही ठहरकर सुस्ता लेने और अपने कटे हुए, खून से तर पैरो को ठीक-ठाक कर लेने का फैसला किया। आगे बढना उसे

दुश्वार लगा। फिर यह हुआ कि उस बडे घर मे उसके लिए कुछ काम निकल आया, और अपना धधा नए सिरे से शुरू करने को उत्सुक वह बूढा तडपड खिडकी के पास आराम से जम गया। यानी उसने ताँबे की कमानियो वाला अपना चश्मा नाक पर चढा लिया, और तेज़ी से कपडा काटने लगा।

फिर, अकसीनिया वहाँ से जाने को हुई तो उस बूढे मसखरे ने उसके सिर पर क्रॉस बनाया और आशा के विपरीत उसकी आँखो मे एकाध आँसू भी आ गए। लेकिन उन्हे फौरन ही पोछते हुए, हमेशा की तरह, हँसकर बोला—

"ग़रज़ खुद तो किसी की माँ नही बनती, पर लोगो को लोगो से जोड ज़रूर देती है।·· तुम अकेली जा रही हो, मेरा दिल बहुत दुख रहा है···लेकिन···हो कुछ नही सकता·· बेटी, तुम्हे अकेले ही जाना पडेगा, क्योकि तुम्हारा रहबर लँगडा हो गया है और ज़रूरत इसकी है कि कोई जौ की रोटी पका-पकाकर खुद उसे खिलाए··· फिर, यह भी है कि सत्तर साल की इस उम्र मे तुम्हारे साथ काफी घुडदौड कर चुका मै···मगर कही मेरी बूढी बीवी से मुलाकात हो जाए तो कह देना कि तुम्हारा बुड्ढा ठीक-ठाक है···सही-सलामत है। दूरमार तोप के दहाने के सामने रह चुकने के बावजूद ज़िन्दा है, रास्ते मे शरीफो के लिए कुछ आजामे-पजामे सीने लगा है···किसी भी दिन वापस आ सकता है। ··कहना, बूढा बुद्धू है···मोर्चे से पीछे हट आया है, और घर लौट रहा है···और दुबारा स्टोव के ऊपर चढकर बैठने के लिए तड़फ रहा है···"

···अकसीनिया को रास्ते मे कई दिन लग गए। बोकोव्स्काया मे उसे उधर ही जाती गाडी मिल गई, तो वह उस पर सवार होकर तातारस्की आ गई। शाम ढलते-ढलते अहाते मे दाखिल हुई और उसने ग्रिगोरी के घर पर नज़र डाली तो एक सिसकी गले मे घुटकर रह गई। औरत वीरान बावर्चीखाने मे आकर फूटकर रोई। इस तरह एक अर्से का दिल का बोझ उतारने के बाद नदी से पानी लाई, स्टोव जलाया और मेज़ के किनारे हाथ लटकाकर बैठ गई। फिर विचारो मे ऐसी खोई कि

दरवाजे के चरमराने और इलीनीचिना के अन्दर आने का उसे पता ही न चला। हाँ, ग्रिगोरी की माँ को देखकर उसका ख़यालो का तार जरूर टूटा। बुढिया शात भाव से बोली—"प्रीवियत[1] पडोसिन···बहुत दिन बाहर रही ···।"

अकसीनिया ने घबराहट से उसकी ओर देखा और एकदम उठकर खडी हो गई।

"लेकिन तुम इस तरह मुझे घूर क्यो रही हो ? कुछ बोलती क्यों नही ? कोई बुरी ख़बर तो नही लाई ?" इलीनीचिना धीरे-धीरे मेज के पास आकर बेच के सिरे पर बैठ गई। पर, उसकी निगाह प्रश्न बनी अकसीनिया के चेहरे पर उसी तरह गडी रही।

"बुरी ख़बर क्यो होगी मेरे पास ? तुम्हारे यहाँ आने की उम्मीद तो थी नही · और, तुम आईं तो आहट भी नही मिली, इसलिए तुम्हे देखकर थोडा-सा चौक-सी गई थी मैं···और बस !" अकसीनिया ने खीझते हुए कहा।

"तुम तो बहुत ही दुबली हो गई हो·· हड्डियाँ-भर बदन पर रह गई है।"

"मुझे टायफस हो गया था।"

"और हमारा ग्रिगोरी·· कैसा है ? उसे कहाँ छोडा तुमने ? जीता-जागता तो है न ?"

अकसीनिया ने सक्षेप मे ग्रिगोरी की पूरी जानकारी शब्दो मे बाँध दी। इलीनीचिना ने बीच मे एक शब्द नही कहा। बात पूरी होने पर पूछा—"तुमसे जब वह अलग हुआ तो बीमार तो नही था न ?"

"नही···बिलकुल बीमार नही था।"

"और, उसके बाद तुम्हे उसके बारे मे कुछ पता नही चला ?"

"नही।"

इलीनीचिना ने चैन की साँस ली। "ख़ैर···इस खुशख़बरी के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया···यहाँ गाँव मे तो जाने क्या-क्या कहा जा रहा है

१. अभिवादन।

उसके लिए !"

"क्या-क्या कहा जा रहा है ?" अकसीनिया ने बहुत ही धीरे से पूछा ।

"उफ···किस तरह बकवास करते है लोग ! · उनकी बेसिर-पैर की बाते सुनकर कान पर हाथ रख लेना पडता है· जहाँ तक उधर से आने वालो का सवाल है, इतने गाँव वालो मे सिर्फ एक बेस्खलेबनोव वापस आया है · उसने येकेतेरिनोदार मे ग्रिगोरी को अपनी आँखो से बीमार देखा है · बाकी किसी की बात का मुझे यकीन नही ।"

"लेकिन, लोगो ने बतलाया क्या-क्या है, दादी ?"

"सुना कि सीनगिन गाँव के एक कज्ज़ाक ने कहा कि ग्रिगोरी को लाल फौजियो ने नोवोरोस्सिइस्क मे मार डाला है । सो· माँ का दिल कैसे मानता ! इतनी लम्बी मजिल तय कर सीनगिन गई और उस खास कज्जाक से मिली । वह बिलकुल नकार गया । बोला—मैंने न तो ग्रिगोरी को देखा है और न ही उसके बारे मे कुछ सुना है ।··· फिर एक दूसरी अफवाह सुनी कि उसे जेल मे डाल दिया गया और वहाँ वह टाइफस से मर गया ।"

इलीनीचिना ने पलकें झुका ली और फिर बहुत देर तक अपने बडे-बडे गाँठ-गँठीले हाथ चुपचाप देखती रही । औरत के चेहरे और चेहरे की झूलती खाल से शान्ति टपकती रही । उसके दोनो होठ भिचे रहे । पर सहसा ही उसके साँवले गालो पर लाली दौड गई और पलकें फड-फडाने लगी । उसने अकसीनिया पर धधकती हुई नजर डाली और भर्राए हुए गले से बोली—"मै इस बात पर ज़रा भी यकीन नही करती···कर नही सकती । हो नही सकता कि मेरा आखिरी बेटा भी कोई मुझसे लूटकर ले जाए·· वह नीली छतरीवाला किस जुर्म की ऐसी सजा देगा मुझे ! अब मुझे थोडे दिन और जीना है·· मेरे दिन तो अब इने-गिने हैं···और, कौन कम सदमे उठाए हैं अब तक जो यह नया पहाड गिरेगा मेरे सिर पर ! ग्रीशा सही-सलामत है । मेरे दिल को कभी कुछ ऐसा-वैसा लगा ही नही, इसलिए मेरे कलेजे का टुकडा ··मेरा बेटा अभी ज़िंदा है ।"

अकसीनिया कुछ नही बोली । सिर्फ मुँह मोड लिया । इसके बाद बावर्चीखाने मे बहुत देर तक सन्नाटा रहा । अचानक ही हवा ने बरसाती वाला दरवाजा झटके से खोल दिया तो दोन के किनारे के दूर के चिनारो के बीच बाढ का पानी लहरे लेता दीखा और पानी के आरपार जगली कलहस एक-दूसरे को चिंता से आवाजे लगाते सुन पडे ।

अकसीनिया ने उठकर दरवाजा बद कर दिया और स्टोव के सहारे खडी हो गई । जरा देर बाद सधे हुए स्वर मे बोली—"ग्रिगोरी को लेकर मन मैला न करो, दादी·· दुनिया की कोई बीमारी ऐसे आदमी को तोड नही सकती· वह तो लोहा है बिलकुल ! उस तरह के लोग मरते नही । हम रवाना हुए तो हाथ ठड से जमे जा रहे थे, मगर उसने रास्ते-भर एक बार भी दस्ताना नही पहना ।"

"उसे बच्चो की भी याद आती है कभी ?" इलीनीचिना ने बुझे मन से पूछा ।

"वह बच्चो की और तुम्हारी, दोनो की ही याद अक्सर करता है·· बच्चे ठीक-ठाक तो है न ?"

"बच्चे ठीक-ठाक है ··उन्हे क्या तकलीफ हो सकती है ? हाँ, हमारा पैन्तेली-प्रोकोफियेविच जरूर नही रहा···हम बिलकुल अकेले रह गए···"

अकसीनिया ने क्रॉस बनाया, और बुढिया ने जिस स्थिर मन से अपने पति के मरने की बात कही, उसे देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा ।

इलीनीचिना मेज पर हाथ टेककर उठी । बोली—"मैं यहाँ तुमसे बैठी बातें करती रही और वह देखो···वहाँ अहाते मे अँधेरा उतर आया ।"

"जरा और बैठो न, दादी !"

"नही, दून्या घर मे अकेली है···अब मुझे जाना चाहिए ।" बुढिया ने अपने सिर का रूमाल ठीक करते हुए कहा । बावर्चीखाने मे चारो तरफ नजर दौडाई और त्यौरियाँ चढाते हुए बोली—"तुम्हारा स्टोव धुआँ दे रहा है·· तुम्हे चाहिए था कि कही गई थी तो इतने वक्त के लिए किसी और को यहाँ टिका जाती···अच्छा· मैं चली·· अलविदा !"

फिर दरवाजे की कुडी पर हाथ रखा तो बिना गर्दन मोड़े बोली—

"घर ठीक ठाक कर लेना तो आना हमारे यहाँ भी·· जरूर आना··· शायद इस बीच तुम्हे ग्रिगोरी की कुछ खोज-खबर मिल जाए ··मिल जाए तो हमे भी बतला देना।"

और उस दिन से अकसीनिया और ग्रिगोरी के परिवार के लोगो के बीच के सम्बन्ध एकदम बदल गए, जैसे कि ग्रिगोरी के जीवन की चिन्ता उन्हे एक-दूसरे के पास ले आई और अपनापे के सूत्र मे बाँध गई।

अगले दिन सवेरे दून्या की नज़र अहाते में खडी अकसीनिया पर पडी तो उसने उसे आवाज़ दी, खुद बाड तक बढ गई, उसके गल-बहियाँ डाल ली और प्यारे ढग से मुस्कराते हुए सहज भाव से बोली—"उफ·· तुम कितनी दुबली हो गई हो, अकसीनिया! माँस तो हड्डियो पर बचा ही नही!"

"ऐसी ऊबडखाबड़ जिन्दगी हो तो आदमी दुबला न होगा तो और क्या होगा!" अकसीनिया जवाब मे मुस्कराई और दून्या के गालो पर भरपूर जवानी और हुस्न के गुलाब खिलते देखकर उसे उससे मन-ही-मन ईर्ष्या हुई।

लडकी ने जाने क्यो आवाज धीमी कर ली। पूछा—'माँ कल आई थी तुम्हारे पास ?"

"हाँ, आई थी।"

"तो, तुमसे ग्रिगोरी के बारे में भी कुछ पूछा था उन्होने ?"

"हाँ।"

"और रोई-धोई तो नही ?"

"बिलकुल नही···बुढिया बडे ही मजबूत दिल की है।"

फिर विश्वास-भरी दृष्टि से अकसीनिया की ओर देखती हुई दून्या बोली—"अच्छा होता कि थोडा रो लेती···मन हल्का हो जाता···तुम जानती हो, अकसीनिया, इस जाडे मे तो वे जैसी अजीब हो गई हैं वैसी पहले कभी थी ही नही···उन्होने पापा की मौत की खबर सुनी तो मैं एकदम डर गई···मुझे लगा कि इनका कलेजा फट जाएगा··· लेकिन, उन्होने आँख मे एक आँसू नही आने दिया। सिर्फ बोली—

'ऊपरवाला तुम्हारे पापा को अपनी बाँहो मे ले···उन्हे दुनिया की दुख-मुसीबत से छुटकारा मिल गया है···।' और रात होने तक किसी से कुछ नही बोली । मैंने उनसे तमाम तरह की बातें करनी चाही, पर उन्होने मुझे साफ टाल दिया और मुँह नही खोला । ऐसा मन कलपा मेरा कि कुछ न पूछो ! पर शाम को मैं ढोर बाँधकर अहाते से आई तो पूछा—'माँ, खाने को कुछ बनेगा या नही ?···' सिर्फ तब अपने दिल से गम का पत्थर हटाकर उन्होने बोलना शुरू किया···।' दून्या ने लम्बी आह भरी, और ऊपर देखते हुए पूछा—"हमारा ग्रिगोरी मर गया क्या ?"

"मै नही जानती, दून्या !"

दून्या ने उसे प्रश्न-भरी, तिरछी दृष्टि से देखा और उसके मुँह से और लम्बी आह निकल गई—"माँ तो बस भैया के लिए तडपती रहती है । जब ग्रिगोरी का नाम लेती है तो उसे अपना सबसे छोटा बेटा कहती है और सपने मे भी उसके दुनिया से उठ जाने की बात नही सोचती·· लेकिन जानती हो अकसीनिया, अगर उन्हे मालूम हो जाए कि वह सचमुच मर गया, तो सदमे से उनका दम निकल जाएगा । अब एक वही तो है उनकी जिन्दगी का सहारा । एक उसी उम्मीद के सहारे तो वे जीती है । अब तो जैसे बच्चो तक की उनको दरकार नही·· फिर, खुद उनका अपना दिल भी तो किसी काम मे नही लगता···देखो न, एक साल के अन्दर-अन्दर घर के चार चार आदमी चल बसे है·· ।"

अकसीनिया सवेदना से भर उठी । उसने बाड पर झुककर दून्या को अपनी बॉहो मे भरा और उसे बहुत ही प्यार से चूमा । "माँ को किसी-न-किसी काम मे बझाये रहो दून्या ··जैसे भी हो, उनका गम थोडा गलत करो ।"

"किस काम मे बझाएगा कोई उन्हे ?" दून्या ने रूमाल के कोने से ऑखे पोछी । बोली—"तुम आओ कभी हमारे यहाँ और उनसे थोडी इधर-उधर की बातें करो । शायद इस तरह थोडा बहल···आखिर हम लोगो से इस तरह कटी-कटी क्यो रहती हो तुम ?"

"मैं आऊँगी···ज़रूर आऊँगी···यकीन मानो ।"

"मुझे कल खेत जाना है। अनीकुश्का की बेवा के साथ जुताई की बात है। थोडा-सा गेहूँ बोने का इरादा है। कुछ बोने बाने का खयाल तुम्हारा भी है ?"

"मैं तो खूब बोआई करूँगी।" अकसीनिया ने उदासी से कहा—"मेरे पास बोने को है। दूसरे बोआई करने से फायदा ! एक अकेली हूँ·· मुझे ज्यादा कुछ नही चाहिए·· जैसे-तैसे काम चल ही जाएगा।"

"स्तीपान की कोई खबर मिली ?"

"नही···कोई खबर नही मिली।" अकसीनिया ने तटस्थ मन से कहा और अपने शब्दो पर स्वय आश्चर्य करने लगी। "मुझे उसकी ऐसी कोई खास फिक्र भी नही है।" जाने कैसे, आशा के विपरीत, सच्चाई मुँह से निकल गई और औरत अचकचा गई। फिर, अपनी परेशानी पर पर्दा डालते हुए जल्दी-जल्दी बोली—"अच्छा चलूँ···दून्या, घर मे सभी कुछ उल्टा-सीधा पडा है···सफाई अलग से करनी है।"

दून्या ऐसी बनी जैसे किअ कसीनिया के मन की परेशानी पर उसकी नजर पडी ही नही। दूसरी तरफ देखते हुए बोली—"सुनो तो···मैं तो तुमसे यह पूछना चाहती थी कि तुम हमारे काम मे थोडा हाथ बँट लोगी ? मिट्टी सूख जाएगी और फिर हम कुछ न कर पाएँगे। कज्ज़ाक गाँव मे दो बचे है और वे भी लॅगडे है।"

अकसोनिया ने भरसक मदद करने का वचन दे दिया। दून्या तैयारी करने को चल पडी और फिर पूरे दिन अगली सुबह के काम का सरजाम करती रही। उसने अनीकुश्का की बीवी की मदद से बीज छाने, पटेले की मरम्मत की, गाडी के पहियो को तेल दिया और बोआई करने वाला यत्र ठीक-ठाक किया। शाम को उसने बोआई वाला थोडा-सा अनाज रूमाल मे बाँधा, कब्रगाह ले गई और प्योत्र, नताल्या और दार्‌या की कब्रो पर छिटक आई कि अगले दिन चिडियाँ उड-उडकर वहाँ आएँ, फुदक-फुदककर चहचहाये और उसका भाई और दोनो भाभियाँ मरने के बाद भी खुशी से भर-भर उठें।

भोले-भाले मन की भोली-भाली कल्पना···क्या कहिए !

केवल तडका होने के एक घटा पहले दोन के किनारो पर एक तरह का सन्नाटा बरसा। जगल मे भरा बाढ का पानी धीरे-धीरे कल-कल करता, चिनारो के पीले हरे तनो को चारो ओर से धोता और शाहबलूत के पानी मे डूबे सिरो को रह-रहकर झकझोरता रहा। झीलें ऊपर तक लबालब रही और पानी के अन्दर की सेवार लहरियो के हाथो झुक-झुककर, सरसर-सरसर करती रही। बाढ के शिकार खेतो के तग कोनो मे जहाँ पानी किसी जादू से बँधा-सा रहा और जहाँ झुटपुटे के सितारे धरती पर उतर-उतर आए, वहाँ ध्रुवप्रदेशीय हस हलके-हलके कीके, मुर्गाबियो के निंदासे नर फुसफुसाए, और कही और जाकर बसेरा जमाने वाली बत्तखो के रुपहले स्वर कभी-कभी हवा मे बजे। दिन दूनी रात चौगुनी मोटाती किसी मछली ने अकसर ही अँधेरे मे पानी की बौछार की, कोई कँपकँपाती लहर झलाझल पानी की सतह पर दूर तक लोटती चली गई और कोई चिडिया कहीं चौककर चीख-चीख उठी। फिर, दोन-किनारे के मैदान ने सन्नाटो की चादर मे दुबारा मुह छिपा लिया। लेकिन, तडका होते ही पहाडियो की खडियावाली चोटियो पर गुलाबी दौडी कि मद-मद पवन चलने लगा और नदी की धारा पर बिछलते ही तेज़ हो उठा। नदी के किनारे सात-सात फुट ऊँची लहरे जमा हो गईं, जगल मे पानी ठाठें मारने लगा और पेड हवा मे झूम-झूमकर हाँफ-हाँफ उठे। इसके बाद पूरे दिन हवा सर्राटे भरती रही और उसने केवल रात भीगने पर दम लिया। और, फिर यह मौसम बराबर कई-कई दिन तक चलता रहा।

पूरे मैदान पर बकाइनी-धुध का पर्दा पडा रहा। फिर मिट्टी सूख गई, घास की बाढ रुक गई, और शरद की जुताई वाले खेतो मे दरारे पड गईं। धरती हर घटे ज्यादा-से-ज्यादा खुश्क होती गई।···

ऐसे मे तातारस्की के खेतो मे शायद ही कोई कही नजर आया। गाँव मे इने-गिने सफेद दाढी वाले लोग ही दीख पडे। जो कज्ज़ाक लौटे वे या तो पाले के मारे बीमार रहे या हाथ-पैर से अपाहिज रहे। नतीजा यह कि खेतो मे काम करती मिली या तो औरतें या कम उम्र लोग। हवा खाली गाँव मे गर्द उडाती फिरी। उसने घरो की

झिलमिलियाँ खडकाईं और शेडो की छानियो के फूँस मे जाने क्या खँखोरती फिरी।

"इस साल हमे रोटी मयस्सर होने से रही।" गाँव के बड़े-बूढों ने कहा—"खेतो मे औरतें-ही-औरतें काम कर रही है···इस पर भी सिर्फ हर तीसरे घर की तरफ से बोआई की जा रही है···और, इससे बडा दर्द यह है कि धरती बाँझ हो चुकी है···उससे किसी तरह की उम्मीद करना बेकार है।···"

यानी, दून्या और दूसरी औरते दो दिन बोआई कर चुकी तो दिन ढले के वक्त अकसीनिया बैलो को हाँककर ताल पर लाई। बाँध पर ओबनीजोव का दस साल का लडका एक ज़ीन कसे घोडे की लगाम थामे खडा दीखा। घोडा अपने होठ चलाता रहा और अपने मखमली, भूरे नथुनो से रह-रहकर बूदे बरसाता रहा। दूसरी तरफ, लडका सूखी मिट्टी के ढेले फेंक-फेंककर पानी मे भँवरों पर भँवरें बुनता रहा और उन्हें देख-देखकर खुश होता रहा।

"कहाँ जा रहे हो वान्या ?" अकसीनिया ने पूछा।

"मैं माँ के लिए खाना लेकर आया हूँ।"

"अच्छा···तो, गाँव की कोई नई खबर है तुम्हारे पास ?"

"नही···कुछ नही है। सिर्फ इतना है कि जेरासिम-बाबा ने कल रात एक शानदार कार्प फँसाई और फ्योद्र-मेलनीकोव वापस आ गया।"

लडके ने पजे के बल खड़े होकर घोडे के मुह में लगाम पहनाई और उचककर फुर्ती से काठी पर बैठ गया। फिर, समझदार किसान की तरह पहले तो उसने घोडे को कदम चाल मे डाला, पर कुछ दूर पहुँचने पर उसने मुडकर अकसीनिया को देखा और जानवर को तेज़ी से दौडा चला। उसकी कमीज़ का पिछला हिस्सा हवा से फूलकर गुब्बारे की तरह फडफडाता रहा।

उधर बाँध पर बैल पानी पीने लगे तो अकसीनिया वही पसर गई और फिर उसने गाँव को लौटने का फैसला किया। सोचा—'मेल-नीकोव फौजी कज्ज़ाक है। उसे ग्रिगोरी के बारे मे कुछ-न-कुछ पता

जरूर होगा ।'· फिर, बैलो को हाँककर खेमे तक ले जाने के बाद दून्या से बोली—"मै जरा गाँव जा रही हूँ कल सवेरे फिर आ जाऊँगी ।"

"कोई काम है ?"

"हाँ ।"

और, वह अगले दिन सवेरे जब लौट कर आई तो दून्या बैलो को जोतती मिली । अकसीनिया तटस्थ मन से एक टहनी झुलाती रही, पर उसकी भौहे तनी रही और उसके होठ भावावेश से भिचे रहे ।

"फ्योद्र-मेलनीकोव गाँव आया है । मै उससे मिली थी । कहता है कि ग्रिगोरी के बारे मे उसे कुछ पता नही ।" उसने नपे तुले शब्दो मे कहा और एडियो के बल मुडकर बोआई के यत्र की ओर बढी ।

और, बोआई के बाद अकसीनिया ने खुद अपने फार्म पर काम शुरू किया । उसने खरबूज़ो वाली जमीन मे तरबूज बोए, दीवारो पर पलस्तर चढाया, घर की पुताई की, और बचे-खुचे फूँस से शेड पर अच्छी-से-अच्छी छानी डाली । इस तरह व्यस्तता मे दिन-पर-दिन गुज़रते गए, पर मन ग्रिगोरी के लिए रह-रहकर बराबर उडता रहा । वह स्तीपान के खयाल तक से कतराई और जाने क्यो उसे लगा कि अब वह कभी नही लौटेगा । इस पर भी जब भी कोई कज्ज़ाक गाँव आया, उसने पहला सवाल स्तीपान के बारे मे ही किया । पूछा—"तुमने मेरे स्तीपान को भी कही देखा ?"·· इसके बाद उसने गोलमोल ढग से ग्रिगोरी के बारे मे पूछताछ की ।

वैसे गाँव के हर आदमी को उन दोनो के सम्बन्धो की जानकारी थी, इसलिए गाँव की पचायती औरतो ने भी उनके बारे मे इधर-उधर की बाते करना बद कर दिया था । लेकिन, अकसीनिया किसी के भी सामने अपना मन खोलकर रख देने मे सदा ही शरमाई और जब भी किसी चुप्पा फौजी ने गाँव लौटने पर ग्रिगोरी का कोई ज़िक्र नही किया तो उसने बडे सकोच के साथ, आँखे सिकोडते हुए पूछा—"लेकिन, तुम्हारी मुलाकात अपने पडोसी ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच से तो कही नही हुई ? उसकी माँ को बड़ी फिक्र है···बेचारी गम में घुली

जा रही है · ''

पर, सच्चाई यह थी कि नोवोरोस्सिइस्क मे दोन सेना के हथियार डाल देने के बाद न तो किसी ने कही स्तीपान को देखा था और न ग्रिगोरी को। पर, जून के अंत मे स्तीपान की रेजीमेट का एक कज्ज़ाक, अपने गॉव को लौटते समय, रास्ते मे अकसीनिया से मिलने आया। कहने लगा—''स्तीपान क्रीमिया चला गया···मैं सच कह रहा हूँ तुमसे ! ··जहाज पर सवार होते तो मैंने उसे अपनी आँखो से देखा है। हॉ, उससे बात करने का मौका जरूर नही मिला। भीड वहाँ ऐसी थी कि लोग एक-दूसरे के ऊपर चढे जा रहे थे।''

फिर, जब अकसीनिया ने ग्रिगोरी की बात पूछी तो फौजी ने टालने की कोशिश ज्यादा की। बोला—''मैंने उसे घाट पर देखा था·· कधे पर पट्टियाँ नजर आई थी···लेकिन, उसके बाद फिर कही उससे मुलाकात ही नही हुई···लाल फौजी तमाम अफसरो को मास्को ले गए है · कोई नही जानता कि इस वक्त वह कहाँ है ·''

परन्तु, इसके एक सप्ताह बाद ही प्रोखोर जिकोव तातारस्की आया। वह जख्मी था और मिलेरोवो स्टेशन से गाडी पर लादकर लाया गया था।

अकसीनिया ने खबर सुनी तो गाय के थन से हाथ हटा लिया, बछडा छोड दिया और खुद रास्ते मे सिर पर रूमाल बाँधती हुई प्रोखोर के अहाते की ओर, दौडती-सी लपकी। बीच मे खयाल आया—प्रोखोर राज समझ लेगा···खैर उसे तो समझना ही चाहिए। लेकिन—अगर कही उसने बताया कि ग्रिगोरी मर गया···तब·· तब क्या करूँगी मैं· और, हर बढते कदम के साथ औरत के मन की आशका बढती गई और हाथ कलेजे को दबाते गए···

प्रोखोर उसे देखकर मुस्कराया और अपना कटा हुआ हाथ पीठ के पीछे कर, उसे बडे स्नेह से सोने के कमरे मे ले आया। बोला—''कहो, अकसीनिया···प्रीवियत···तुम्हे जीता-जागता देखकर कितना खुश हूँ मै ! हमने तो समझा कि तुम उस छोटे गाँव मे ही चल बसी · उफ·· किस तरह लेटी थी तुम वहाँ···कैसी खराब थीं

तुम्हारी तबीयत ! और, इसके बाद कैसे हसीन हो उठते हैं तुम्हारे जैसे लोग· मेरा मतलब है, टाइफस के बाद ! लेकिन ज़रा देखो कि पोलो ने कैसी पच्चीकारी की है मेरी ! मौत ले जाए उन्हे !" प्रोखोर ने अपनी खाकी ट्यूनिक की आस्तीन मे लगी गाँठ दिखलाई—"मेरी बीवी ने देखा तो इस तरह धाडे मार-मारकर रोई कि क्या कहो ! मगर, मैंने उससे कहा—इस तरह ढरका क्यो बहा रही हो···बिल्कुल बेवकूफ हो तुम ! लोग ऐसे भी तो होते है जिनके सिर धड से अलग हो जाते है, पर जो मुँह से उफ करके नही देते ! वैसे भी हाथ ऐसी चीज भी क्या है ! असली हाथ की जगह लकडी का हाथ आसानी से लगाया जा सकता है। इस पर मजा यह है कि लकडी का हाथ हो तो न सर्दी का डर, न कटने का खतरा। बेकार खून बहने का सवाल ही नही उठता। बुरी बात सिर्फ यह है कि एक हाथ से काम लेना अभी तक मुझे आया नही। मुसीबत यह है कि पतलून के बटन बद नही कर सकता। कीएव से यहाँ तक बटन खुले-के-खुले ही रहे आए। बडी शर्म आई। इसलिए, कुछ कही गडबड लगे तो तुम भी माफ करना। अरे, आओ···बैठो···मेरी मेहमानी कबूल करो, और मेरी बीवी जब तक आए, तब तक कुछ गपशप करो। मैने ईसा की उस दुश्मन को वोदका लेने को भेजा है। यानी, कहाँ तो एक हाथ लिए आदमी घर आया है, और कहाँ उसकी सेहत का जाम पीने के लिए भी घर मे कुछ है ही नही ! आदमी कही चले जाएँ तो तुम तमाम औरतें यो ही रहती हो। मैं तुम लोगो को खूब जानता हूँ··· तुम लोग दुमदार शैतान हो, और तुम्हारी दुमे हमेशा गीली रहती है।"

"जरा यह तो बतलाओ कि······"

"मैं जानता हूँ · सब-कुछ बतलाऊँगा तुम्हे।···उसने कहा है कि मै उसकी तरफ से तुम्हारे सामने इस तरह झुकूँ।" प्रोखोर मजाक करते हुए झुका, और आँखे ऊपर की तो ताज्जुब से बोला—"क्या कहने है··· यह खूब है। बेवकूफ हुई हो···रो क्यो रही हो ? तुम सब औरते एक मिट्टी की बनी होती हो। यानी, आदमी मारा जाए तो रोओ और

सही-सलामत घर ग्रा जाए तो रोग्रो। पोछो···ग्रांसू पोछो।·
नोवोरोस्सिइस्क मे हम दोनो कॉमरेड बुदयोन्नी की चौदहवी घुडसवार टुकडी मे शामिल हो गए। ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ने कम्पनी की—मेरा मतलब है कि स्क्वेड्रन की—कमान सम्हाली। मै तो ग्रर्दली मे रहा ही. फिर मार्च करते हुए हम कीएव पहुँचे। यानी, लडकी, हमने उन पोलों को छटी का दूध याद करा दिया। राह मे ग्रिगोरी बोला—'मैं जर्मनो को मार चुका हूँ ··तरह-तरह के ग्रॉस्ट्रियनो पर भी तलवार ग्राज़मा चुका हूँ मै नही समझता कि पोलो की खोपडियाँ कुछ खास तरह की बनी होती है ··मेरा खयाल है कि रूसियो के मुकाबले उन्हे काटकर फेक देना कुछ ज्यादा ही ग्रासान होगा···क्यो, क्या खयाल है तुम्हारा ?' ग्रौर मेरी तरफ देखकर उसने ग्रांख मारी ग्रौर हँसा। लाल फौज मे शरीक होते ही तो वह जैसे बिल्कुल बदल गया। हर वक्त खुश नजर ग्राने लगा ग्रौर ग्राख्ता की तरह चमाचम करने लगा। लेकिन फिर ऐसा लगा कि ग्रापस मे खटपट हुए बिना रहेगी नही।·· एक दिन मैंने मजाक मे कहा—'बहुत हुग्रा ग्रब जरा रुककर सुस्ता लेना चाहिए माई-बाप कॉमरेड मेलेखोव साहब।'···इस पर वह ग्राँखे नचाता हुग्रा बोला—'खत्म करो इस तरह का मजाक···वरना ग्रच्छा न होगा।'···ग्रौर उसी दिन शाम को उसने मुझे किसी काम से भेजा तो जाने कौन-सा भूत मेरी जबान पर बैठ गया कि मैने फिर उसे माई-बाप ग्रौर जाने क्या-क्या कह दिया···उफ इस पर उसने ग्रपनी मॉजर-बन्दूक उठा ली। चेहरा बिल्कुल सफेद पड गया ग्रौर भेडिए के दाँतो की तरह दाँत निकल ग्राए। दाँतो की कम-से-कम एक फौजी टुकडी ही उसके मुँह मे · मै तो घोडे के पेट के नीचे जा दुबका ग्रौर फिर जान बचाकर निकल भागा···शैतान के हाथो मरते-मरते बचा उस दिन।"

"शायद छुट्टी मे घर ग्राएगा।"···ग्रकसीनिया ने ग्रटकते-ग्रटकते कहा।

"इसका खयाल दिमाग से निकालो। ग्रब तो वह तब तक उन लोगो के साथ रहेगा जब तक कि उसके सारे पिछले गुनाह धुल नही जाएँगे। ग्रौर यह वह करके दम लेगा। बेवकूफी कुछ मुश्किल तो होती नही।

एक बार एक हमले के वक्त वह हमे एक छोटे कस्बे के ऐन करीब तक ले गया और मेरे देखते-देखते उसने वहाँ के चार उल्लानो को काटकर फेंक दिया ··बॅयहत्या तो वह बचपन का है, सो उसने दोनो तरफ से मजा चखाया उन्हे ··लडाई के बाद, पूरी रेजीमेट के सामने खुद बुदयोन्नी ने उससे हाथ मिलाया और उसका और पूरी रेजीमेट का शुक्रिया अदा किया···ये कारनामे है इन दिनो तुम्हारे पैन्तेलेयेविच के।"

अकसीनिया की आँखे अचरज से चौधिया उठी · अपने आपे मे न रही। होश उसे आया सिर्फ ग्रिगोरी के फाटक पर। दून्या बरसाती मे दूध दुहती दीखी और सिर झुकाए-ही-झुकाए बोली—"खमीर लेने आई हो ? मैने पहुँचा देने का वायदा किया था, पर बात दिमाग से ही उतर गई।" परन्तु अकसीनिया की गीली आँखो और खुशी से चमकते चेहरे पर नजर पडते ही वह सब-कुछ समझ गई।

अकसीनिया ने अपना आग-सा भभकता चेहरा दून्या के कन्धे पर टिका दिया और खुशी से हाँफकर, फुसफुसाती हुई बोली—"ग्रिगोरी सही-सलामत है ··बिल्कुल ठीक है···सबको याद किया है ··जाओ ·· जाओ···और माँ से बतला दो ।"

: २ :

तातारस्की के जो कज्जाक श्वेत सेनाओ के साथ पीछे हटे, उनमे से कोई तीस गरमी तक लौट आए। लौटनेवालो मे ज्यादातर रहे बूढे और सयानी उम्र के फौजी। यानी बीमारो और जख्मी लोगो के अलावा गाँव मे जवान नजर ही न आए। जवानों मे से कुछ तो लाल सेना मे रहे। बाकी रैंगेल-रेजीमेटो मे शामिल होकर क्रीमिया मे वक्त गुजारते और दोन के क्षेत्र पर नए सिरे से धावा बोलने की तैयारी करते रहे।

यो समझिए कि जो लोग गए उनमे से आधे से ज्यादा कज्जाको को तातारस्की की मिट्टी दुबारा देखने को न मिली। कुछ टाइफस से मर गए, कुछ कुबान की आखिरी मुठभेड मे खेत रहे। कुछ मानीच के पार स्तेपी मे जमकर बर्फ हो गए। दो को पार्टीजानो ने कैद किया तो फिर उनकी हवा भी न मिली। सक्षेप मे यह कि गाँव के जाने कितने

कज्जाक गायब हो गए । औरतो की जिन्दगी दूभर हो गई । वे दिन-भर परेशानी और फिक्र से घुलती रहती, राह मे पलके बिछाए रहती । फिर शाम होती और वे चरागाहो से लौटती गायो को सडक से बाडों मे हाँकने जाती तो आँखो पर हथेलियाँ रखकर काफी तक दूर-दूर तक निगाहे दौडाती रहती । सोचती कौन जाने, शायद शाम की इस बकाइनी धुध को चीरता कोई मुसाफिर इधर आता ही हो कि देर आयद, दुरुस्त आयद !···

और कोई कज्जाक बीमारी से टूटा, जुओ की सेना लिये, शरीर के नाम पर गिनती के हाड सहेजे, किसी दिन गाँव लौटता तो उसके घर मे खुशियो का ठिकाना न रहता । हर तरफ चहल-पहल नजर आने लगती । गर्द और धूल से काले फौजी के लिए पानी गरम किया जाता । बच्चे अपने पिता का मुँह जोहने मे एक-दूसरे से होड करते और उसकी हर हरकत आँखे फाड-फाडकर देखते । घर की मालकिन यानी उसकी पत्नी प्रसन्नता से आधी पागल हो जाती, दौड-दौडकर खाने की मेज़ सजाती और सन्दूक से धुला हुआ जाँघिया निकालने को दौडती । लेकिन कपडा जाने कब का बदला उससे लेता कि फटा निकलता, और औरत उसकी मरम्मत करने बैठती तो काँपती हुई उँगलियो से सुई मे तागा न डाला जाता । सुख के ऐसे अवसर पर, दूर से ही मालिक को पहचान लेने और उसका हाथ चाटते हुए ड्योढी तक चले आने वाले अहाते के कुत्ते तक को घर मे बेरोकटोक आ जाने दिया जाता । प्लेटें-प्याले तोड़ देने, दूध बिखेर देने या ऐसी ही दूसरी गलतियाँ कर देने पर भी बच्चे बेदाग छूट जाते, और उन्हे डाँट तक न पडती । फिर, वह फौजी साफ कपडे भी न बदल पाता कि दूर-पास की तमाम औरते घर मे आ जमा होती, उससे अपने सगे-सम्बन्धियो की कुशल-क्षेम पूछती, और उसका हर शब्द उत्कठा और आशका से भरकर सुनती । जरा देर बाद उनमे से कोई औरत निकलकर अहाते मे आ जाती, और आँसुओ से तर चेहरा हथेलियो से ढँककर यो कदम बढाती, जैसे कि अधी हो और रास्ता न टिपता हो । फिर, किसी छोटे घर मे कोई औरत अपने विधवापन पर विलाप करती और पतली आवाजो में बच्चे उसका साथ देते ।

इस तरह तातारस्की के एक घर मे सुख आता तो दूसरे घरो के लिए दुख-दर्द अपने साथ लाता।···

वह कज्जाक दाढी बनाता और मूँछे तराशता तो उसकी उम्र जैसे घट जाती। फिर अगले दिन वह तडके उठता, फार्म का चक्कर लगाता और देखता कि कौन काम कहाँ एकदम जरूरी है। इसके बाद किसी शेड में या छायादार जगह मे रदा सरसराता या कुल्हाडी खटखट करती तो जैसे नगाडे की चोट पर कहती कि काम के दीवाने, मजबूत, मर्दाने हाथो-वाला आदमी एक बार फिर अहाते मे आया है। लेकिन, जिस परिवार को पिता या पति के मरने की खबर मिलती वहाँ अटूट सन्नाटा और वीरानगी बरसती। पत्नी सदमे से गुमसुम होकर पड रहती और बच्चे उसे चारो ओर से घेरे रहते यतीम बच्चे रातो-रात जैसे कि बूढे हो उठते।

इलीनीचिना जब भी किसी कज्जाक की वापसी की खबर सुनती, कहती—"लेकिन, मेरा ग्रिगोरी आखिर कब घर आएगा? दूसरे कज्जाक गाँव चले आ रहे है, मगर वह है कि उसका कुछ पता ही नही चलता।"

"जवान कज्जाको को कोई नही आने देता···यह मामूली-सी बात तुम्हारी समझ मे क्यो नही आती, माँ?" दून्या खीझ से जवाब देती।

'जवान कज्जाको को नही आने देते? मगर फिर, तीखोन-जिरा-सिमोव को कैसे आने दिया? वह तो ग्रीशा से भी छोटा है।"

"पर, वह तो जख्मी है, माँ!"

"जख्मी है · फु" इलीनीचिना आपत्ति करती—"मैंने कल उसे लुहारखाने के बाहर देखा·· वह तो ऐसे उछल-उछलकर चल रहा था, जैसे कि परेड कर रहा हो। जख्मी लोग इस तरह नही चलते।"

"वह जख्मी हो गया था, पर अब तो ठीक हो रहा है।"

"मगर, हमारा ग्रिगोरी हजार बार जख्मी नही हुआ क्या? उसके तो बदन-भर मे निशान-ही-निशान है ··तुम्हारे खयाल से उसे ठीक-ठाक होने की जरूरत नही है?"

दून्या अपनी माँ को समझाने की भरसक कोशिश करती कि फिल-

हाल ग्रिगोरी का इन्तजार करना बिल्कुल बेकार है। पर, इलीनीचिना से कुछ भी कहना मुश्किल हो जाता। वह बेटी को डाँट देती—"चुप कर, बेवकूफ कही की। मै तुझसे कुछ कम नही जानती-समझती। अभी तू मुझे समझाने लायक नही हुई है। आखिर मैं तेरी माँ हूँ··· मेरा कहना है कि ग्रीशा को घर आना चाहिए ··इसके मतलब है कि वह घर आएगा और जरूर आएगा···मैं तुझसे दिमाग लडाना नही चाहती।"

बुढिया बडी बेसब्री से बेटे का इन्तजार करती और जब-तब उसका नाम भी लेती रहती। मीशात्का जब भी उसकी बात न मानता, वह उसे धमकाती—"बन्दर कही का···रुक जा···ज़रा आने दे अपने बाप को···मै उससे तेरी शिकायत करूँगी, और वह कायदे से तेरे कान गरम करेगा।"

इलीनीचिना जब भी खिडकी से देखती और उधर से गुजरती किसी भी गाडी मे कोई कज्जाक घर आता दीखता, तो वह कहती—"देखो, वह भी गाँव लौट आया, मगर हमारे ग्रिगोरी को तो जैसे किसी ने हमेशा-हमेशा के लिए कोठरी मे बन्द कर रखा है।···"

बुढिया ने जिन्दगी-भर तम्बाकू को हाथ न लगाया था, और सिगरेट बगैरा पीनेवालो को उसने हमेशा बावर्चीखाने से बाहर निकाल दिया था, पर इस माने मे भी उसमे अब खासा रद्दोबदल नजर आता। अकसर ही दून्या से कहती—"जा, और ज़रा प्रोखोर को बुला ला·· आकर यहाँ बैठे, एक सिगरेट पिए···यहाँ से मुर्दानगी की बू तो निकले। वैसे तो ग्रीशा के आने पर ही अब यह घर कज्ज़ाको के घर-सा लगेगा।"

इलीनीच्चिना हर दिन फालतू खाना पका लेती और खाने के बाद पातगोभी का शोरबा बटलोई मे भरकर स्टोव पर रख देती। दून्या इसका कारण पूछती तो ताज्जुब से आँखें फैलाकर कहती—"क्यो, शोरबा क्यो नही रखना चाहिए मुझे ? अरे, मेरा ग्रीशा अगर कही से घर आ जाएगा तो उसे फौरन ही खाने को कुछ-न-कुछ तो गरम तैयार मिलेगा। यह न रहेगा तो जब तक कोई चीज पकाई जाएगी तब तक

उसे भूखा रहना पडेगा !···"

ऐसे-ही-ऐसे एक दिन दून्या खरबूज के खेत से लौटी तो उसे बावर्चीख़ाने की कील मे भाई का पुराना कोट और बदरग, लाल पट्टीवाली चोचदार टोपी लटकी नजर आई। उसने माँ की तरफ प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो माँ ने करुणा से अधिक अपराध की-सी भावना से मुस्कराते हुए कहा—"ये चीजे मैने बक्से से निकाल ली है, दून्या! अहाते से अन्दर आकर इन्हे देखती हूँ तो घर कुछ ज्यादा घर-सा लगता है··· लगता है जैसे कि ग्रीशा लौट आया है···"

दून्या ग्रिगोरी से सम्बन्धित इन बे-सिर-पैर की बातो से आखिरकार ऊब गई और ज्यादा बर्दाश्त न हुआ तो एक दिन माँ पर बरस पडी—"माँ, हमेशा एक ही चीज के बारे मे बातें करते-करते तुम थकती नही ! तुम्हारी बकबक से जान हलाकान हो गई। जब देखो तब ग्रीशा ···ग्रीशा···ग्रीशा, और बस !"

'अपने बेटे के बारे मे बातें करने से भला क्यो थकूँगी मैं ? जरा रुको, तुम्हारे बच्चे हो जाएँ·· तब पता चलेगा तुम्हे···" इलीनीचिना ने शान्त भाव से जवाब दिया, ग्रिगोरी की टोपी और कोट अपने कमरे मे ले गई, और फिर कई दिन तक बेटे का नाम उसकी जबान पर नही आया। पर, घास की तैयारी के थोडा पहले दून्या से बोली—"मैं ग्रीशा का नाम लेती हूँ तो चिढती है तू···पर, उसके बिना हम जिएँगे कैसे··· खुद तेरे दिमाग से वह उतरा है कभी, बुद्धू कही की ! अब घास काटने का वक्त आ रहा है, लेकिन घर मे कोई ऐसा नही है जो और कुछ न करे तो हँसिए की धार तो तेज कर दे !···जरा देख कि घर की हर चीज़ किस तरह चौपट हो रही है और हमारे साधे कुछ भी नही सध रहा है···अरे, मालिक बाहर रहता है तो घर का ज़र्रा-जर्रा रोता है उसके लिए।"

दून्या कुछ नही बोली। उसने फौरन ही समझ लिया कि माँ खेती-बारी के मसलो से परेशान नही, बल्कि ये तो सिर्फ बहाने है। इनके सहारे वे ग्रिगोरी की चर्चा कर अपने दिल का बोझ हल्का करती हैं।···फिर, बेटे के लिए इलीनीचिना की कलप और भी बढ गई और

उसके छिपाए यह राज छिपा नही। एक दिन शाम को उसने खाने से इन्कार कर दिया तो दून्या ने पूछा—"क्यो, तबियत तो ठीक है माँ ?"

जवाब मिला—"मैं बूढी हूँ·· मेरा दिल कचोटता है ग्रीशा के लिए·· अब तो मन ऐसा उचाट रहता है कि किसी चीज से नही बहलता·· दुनिया काटने लगी है जैसे !"

लेकिन, उस परिवार के अहाते का मालिक बनकर ग्रिगोरी नही आया·· आया कोई और !

घास की कटाई के जरा पहले मीशा कोशेवोइ मोर्चे से लौटा। रात उसने दूर के रिश्तेदारो के यहाँ बिताई। अगले दिन सवेरे मेलेखोव-परिवार से मिलने आया। इलीनीचिना खाना पकाने मे लगी रही कि हलके से दरवाजा खटखटाने और कोई जवाब न पाने के बाद वह बावर्चीखाने मे दाखिल हुआ और टोपी उतारकर मुस्कराते हुए बोला—"कहो···इलीनीचिना चाची·· तुम्हे मेरे आने की उम्मीद तो नही थी न ?"

"प्रीवियत···मगर तुम कौन हो मेरे कि मुझे तुम्हारे आने की उम्मीद हो ?" इलीनीचिना ने कोशेवोइ के चेहरे की तरफ नफरत से देखते हुए, रुखाई से कहा।

मीशा इस स्वागत से जरा भी परेशान न हुआ और बोला—"आखिरकार हम एक-दूसरे के जान-पहचानी तो हैं ही !"

"हाँ, बस, जान-पहचानी ही है।"

"और, इतना मेरे यहाँ आने के लिए काफी है। मै यहाँ छाकर रहने तो आ नही रहा।"

"ऐसी खुशी का दिन मेरी किस्मत मे न हो तभी अच्छा !" इलीनोचिना ने कहा और आगन्तुक की परवाह न कर फिर से खाना पकाने मे लग गई।

मीशा ने उसके शब्दो की अनसुनी कर, बावर्चीखाने मे चारो तरफ नजर दौडाई और बोला—"मैं तो आया कि चलूँ, देख आऊँ, तुम लोग सही-सलामत और ठीक-ठाक तो हो, एक साल से ज्यादा हुआ यहाँ आए।"

"हमे ऐसी कोई याद भी नही ग्राई तुम्हारी !" इलीनीचिना ने बरतन कोयलो पर एक जगह से दूसरी जगह रखते हुए, तुनककर कहा ।

इस बीच दून्या सोने के कमरे मे अपने बाल ठीक करती रही । मीशा की आवाज़ कानो मे पडी तो उसका चेहरा पीला पड गया और उसने हाथ पीट लिए । हिलने की हिम्मत न हुई । वही बेंच पर बैठ गई और पूरी बातचीत कान लगाकर सुनने लगी । इस बीच कभी उसके गालो पर लाली दौड गई तो कभी नाक के ऊपर, छोटी-छोटी सफेद लकीरें खिच गई । उधर मीशा, बावर्चीखाने मे, पहले तो जोर-ज़ोर से चहलकदमी करता रहा, पर बाद मे बैठ गया । कुर्सी चरमरा उठी । उसने सिगरेट निकाली और दियासलाई जलाई । तम्बाकू की महक सोने के कमरे मे उड आई ।

"सुना कि पैन्तेली मर गया ?"

"हाँ ··"

"और, ग्रिगोरी ?"

इलीनीचिना कुछ देर तक चुप रही और फिर न चाहते हुए भी बोली—"ग्रीशा लाल फौजियो के साथ है और उसकी टोपी पर भी वैसा ही सितारा है जैसा तुम्हारी टोपी पर·· "

"यह तो उसकी टोपी पर कभी का लग जाना चाहिए था ।"

"अपना काम वह जाने ।"

और, मीशा की आवाज मे उत्सुकता घुल उठी । पूछा—"और, येवदोकिया-पैन्तेलेयेवना कहाँ है ?"

"कपडे बदल रही है···तुम बहुत तड़के आ गए···शरीफ लोग इतने सबेरे किसी के यहाँ नही जाया करते ।"

"कभी-कभी मजबूरी से भी गलत काम करने पडते है·· मैं दून्या से मिलना चाहता था और इसीलिए इस तरह आ गया । इसमे 'इस वक्त' और 'उस वक्त' का फैसला मै क्यो करने बैठता ?"

"उफ···मिखाइल···मुझे बेकार गुस्सा न दिलाओ ।"

"मैं तुम्हें गुस्सा कैसे दिला रहा हूँ, चाची ?"

"इसी सबसे।"

"किस इसी सबसे ?"

'यानी अपनी इस बातचीत से।"

दून्या ने मीशा की लम्बी आह सुनी तो फिर अधिक सहन न हुआ। वह उछलकर खडी हुई, अपनी स्कर्ट ठीक की और बावर्चीखाने मे आई। मीशा खिडकी के पास बैठा दीखा, और उसके हाथ की सिगरेट खत्म होती नजर आई। वह इतना दुबला-पतला और जर्द था कि मुश्किल से ही पहचान मे आया। परन्तु दून्या को देखते ही उसकी आँखें खुशी से चमक उठी और उसके चेहरे पर हल्की लाली दौड गई। तेज़ी से उठते हुए भर्राए गले से बोला—"अच्छा···तुम आ गईं···'दोब्रए-ऊत्रा' (गुड-मॉर्निंग)।"

"दोब्रए-ऊत्रा' दून्या ने बहुत ही धीरे से जवाब दिया।

इलीनीचिना ने बेटी को सिर से पैर तक देखते हुए हुक्म दिया—"जाकर पानी ले आ··"

और, दून्या चली गई तो मीशा बड़े धैर्य से उसके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। चुप वह भी रहा, पर आखिरकार सिगरेट के सिरे को उँगलियो से मसलता हुआ बोला—"तुम मुझसे इस तरह नाराज़ क्यो हो, चाची ? मैंने तुम्हारा कुछ नुकसान किया है या क्या बात है ?"

इलीनीचिना इस तरह एकदम मुडी, जैसे कि बिच्छू ने डक मार दिया हो। बोली—"तुम यहाँ आते हो तो तुम्हारी रूह तुम्हे कचोटती नही ? आँखो की शर्म बिल्कुल ही धोकर पी गए हो, तुम ? फिर, मुझसे इस तरह के सवाल करने का तुम्हारा हिम्राव भी होता है ! कातिल हो तुम !"

"कातिल कैसे हूँ मैं ?"

"पक्के कातिल हो, असली ! प्योत्र को आखिर किसने मारा ? तुम्ही ने न ?"

"हाँ।"

"ठीक···तो, उसके बाद फिर रह क्या जाता है ? और, अब तुम

यहाँ आते हो हम लोगो से मिलने···और इस तरह आकर बैठते हो जैसे कि···।" इलीनीचिना की आवाज़ फँस गई और वह चुप हो गई। फिर, अपने को साधती हुई बोली—"मै उसकी माँ ही तो हूँ न ? तुम कुछ और समझते हो ?···तुम मुझसे आँखे किस दिल से मिलाते हो···कैसे हिम्मत पडती है तुम्हारी ?"

मीशा का चेहरा पीला पड गया। इस विषय के उभरकर सामने आने की तो उसे आशा भी थी। सो, खीझ के कारण अटकते हुए बोला—"ऐसी कोई वजह नही है कि तुमसे आँखे मिलाने मे शर्म आए मुझे। मान लो कि मै प्योत्र के हाथ आ जाता, तो प्योत्र क्या करता ? तुम्हारा ख़याल है कि वह मुझे चूमता ? वह मुझे मार डालता। हम इन पहाडियो पर नाच-नाचकर एक-दूसरे को चूमने के लिए जमा हुए थे क्या ? किया क्या जाए, लडाई होती ही इसलिए है।"

"और, कोरशुनोव को किस लिए मारा था ? चुपचाप ज़िन्दगी बिताने वाले बूढो को मारना भी लडाई का ही एक हिस्सा है क्या ?"

"क्यो नही है लडाई का ही एक हिस्सा ?" मीशा ने आश्चर्य से कहा—"बेशक यह भी लडाई है ! मै चुपचाप जिन्दगी बिताने वाले इन बूढो को खूब जानता हूँ। ये चुपचाप जिन्दगी बिताने वाले बूढे अपने पतलून हाथो से थामे अपने-अपने घरो के अन्दर बैठे रहते है, मगर नुकसान मोर्चे के लोगो से ज्यादा पहुँचाते है। बातूनी ग्रीश्का जैसे बूढो ने ही तो कज्ज़ाको को हमारे खिलाफ उकसाया और उभारा। इन्ही की बदौलत तो यह सारी लडाई छिडी। किसने बगावत की हमारे ख़िलाफ ! इन्ही लोगो ने···इन्ही चुपचाप जिन्दगी बितानेवाले लोगो ने। और, तुम हो कि कातिल मुझे कहती हो ! पहले तो मै किसी मेमने या सूअर को भी मार न पाता था और न ही आज मार पाऊँगा। दूसरे लोग हैं जो जानवरो को हलाल कर देते है। मै तो ऐसे मौको पर अपने कान बद कर लेता हूँ और आँखे मूँद लेता हूँ · ज्यादातर तो हट जाता हूँ ऐसी जगह से !"

"मगर हमारे रिश्तेदार···"

"तुम और तुम्हारे रिश्तेदार ··" मीशा ने गुस्से से बीच मे ही

बात काट दी—"तुम्हारे उस रिश्तेदार से हमे उतना ही फायदा पहुँचा, जितना बकरे से किसी को दूध मिलता है। हाँ, नुकसान उसने खासा पहुँचाया। मैंने उसे बाहर निकल आने को कहा, मगर वह बाहर नही आया तो ठौर-की-ठौर ढेर कर दिया गया। मुझे बडा गुस्सा आता है इन पर···इन बूढे शैतानो पर! मैं गुस्से मे न हूँ तो किसी बकरी के बच्चे पर भी हाथ नही उठा सकता···मगर, माफ करना, तुम्हारे रिश्तेदार जैसो की बात हो तो, गिनती किए बिना, गाजर-मूली की तरह काटता जा सकता हूँ। मेरे हाथ वैसे बेकार है, मगर ऐसे दुश्मनो के मामले मे ऐसे सधे हुए है कि कुछ न पूछो!"

"तुम्हारी पत्थरदिली ने ही तुम्हे हड्डी-हड्डी बनाकर छोड दिया है।" बुढिया ने जहर उगला—"मेरा खयाल है कि तुम्हारी रूह काट रही है तुम्हे?"

"मै नहीं मानता यह बात!" मीशा मुलायम पडते हुए मुस्कराया—"उस बूढे बक्की जैसे लोगो के लिए मेरी रूह मुझे नही कोसती··· मुझे तो बुखार ने तोड दिया, वरना मै तो, माँ ··।"

"मुझे माँ न कहो!" इलीनीचिना गरम हो उठी—"तुम किसी कुतिया को माँ कहकर पुकारो!"

"देखो, मेरी माँ को कुतिया न कहो।" मीशा ने गम्भीर होते और क्रोध से आँखे तरेरते हुए कहा—"अपनी हद मे रहो···हद से बाहर हो जाओगी तो मुझसे बर्दाश्त न होगा···लेकिन, एक बात तुमसे मैं जरूर कहना चाहता हूँ, चाची, और, वह यह कि तुम्हे प्योत्र को लेकर मुझसे बिगडना नही चाहिए। उसने मुँहमाँगी मुराद पाई।"

"तुम कातिल हो···कातिल! निकल जाओ यहाँ से···तुम्हे देखने से मेरी आँखो मे दर्द होता है।" इलीनीचिना ने कडाई से कहा।

मीशा ने एक दूसरी सिगरेट जलाई और शात भाव से पूछा—"अच्छा, तुम्हारे एक दूसरे रिश्तेदार का नाम लूँ, यानी मीत्का-कोरशुनोव का जिक्र करूँ·· क्या राय है तुम्हारी, वह कातिल नही है? और, खुद तुम्हारा ग्रिगोरी क्या है? अपने दुलारे बेटे के मामले मे तुम्हारा मुँह तो शायद ही खुले ··मगर वह असली कातिल है और

इस बात मे जर्रा बराबर झूठ नही है।"

"बकवास बद करो।"

"बकवास करने की आदत तो मैने जाने कब की छोड़ दी! लेकिन बतलाओ न कि क्या है तुम्हारा ग्रिगोरी ? हमारे कितने आदमियो को उसने दुनिया से रुख्सत कर दिया, तुम्हे पता है ? असली बात यह है! अगर तुम लडाई मे हिस्सा लेने वाले हर आदमी को इसी नाम से पुकारना चाहोगी तो मैं कहूँगा कि हम सब कातिल है! सवाल तो यह है कि हम किसे मारते है और क्यो मारते है"···मीशा ने जोर देकर कहा।

इलीनीचिना चुप हो गई, पर मेहमान को वहाँ से हटने का नाम भी लेते न देखा तो सख्ती से बोली—"अच्छा, बहुत हुआ! मेरे पास तुमसे बात करने को वक्त नही है। बेहतर हो कि तुम जाओ अपने घर!"

"मेरा कोई एक घर थोडे ही है···मेरे घर उतने ही हैं, जितने कि किसी खरगोश के पास सोने के कमरे!"

यानी, मीशा ऐसी बातो से डरने और ऐसी लानत-मलामतो से घबरानेवाला कहाँ था! मन से इतना कमजोर कहाँ था कि एक क्रुद्ध बुढिया के अपमानजनक वाक्यो से डगमगा जाता। वह दून्या के मन के प्यार को समझता था, उसके दिल मे अपनी जगह जानता था, और इसीलिए उस बुढ़िया-सहित उसे किसी चीज की कोई परवाह न थी।···

अगले दिन वह फिर दून्या के यहाँ आया और उसने इलीनीचिना का अभिवादन यो किया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। इसके बाद खिडकी के पास बैठ गया और दून्या का चलना-फिरना, उठना-बैठना, सब-कुछ गौर से देखने लगा।

इलीनीचिना ने भी अभिवादन के जवाब मे कुछ नही कहा और बरस ऊपर से पडी—"तुम बहुत ज्यादा आते हो हमारे यहाँ!"

दून्या का चेहरा तमतमा उठा। उसने क्रोध से जलती नजर अपनी माँ पर डाली और फिर, बिना कुछ बोले, आँखें नीची कर ली। मीशा बदले में मुस्करा उठा। बोला—"मै तुमसे मिलने नही आता चाची इलीनीचिना···तुम्हे डरने की कोई ज़रूरत नही।"

"तुम्हारे हक मे बेहतर यही होगा कि तुम इधर का रास्ता ही बिल्कुल छोड़ दो, निकाल दो दिमाग से !"

"मगर, यहाँ नही आऊँगा तो और कहाँ जाऊँगा मैं ?" मीशा ने गम्भीर होते हुए पूछा—"तुम्हारे अजीज़ मीत्का की मेहरबानी से दुनिया मे अकेला रह गया हूँ, और मैं कोई भेडिया तो हूँ नही कि झोपडी मे अकेले पडा रहूँ ! चाची, तुम्हे अच्छा लगे और चाहे बुरा, मगर मैं तो यहाँ आऊँगा और बराबर आऊँगा।" उसने कहा और पैर फैलाकर आराम से बैठ गया।

इलीनीचिना ने उसे बहुत ही घूरकर देखा। लेकिन, आम तरीके से घर से निकाल बाहर कर देना बहुत आसान न लगा। आदमी के भारी-भरकम शरीर, सिर साधने के ढग और होठो के जमाव ने चिल्ला-चिल्ला कर चुगली खाई कि आदमी जिद्दी और अडियल है। ··

लेकिन, फिर वह चला गया तो इलीनीचिना ने बच्चो को अहाते में भेज दिया और दून्या की ओर मुडकर बोली—"देख, उससे कह दे कि वह दुबारा यहाँ कदम न रखे, समझी ?"

दून्या ने बिना पलक झपकाए अपनी माँ की ओर देखा तो उसकी आँखे मेलेखोव-परिवार के हर आदमी की आँखो की तरह ही क्रोध से जलने लगी। लडको ने आँखें आक्रोश से सिकोडी और जैसे हर शब्द दाँत से काटते हुए बोली—"नही···ऐसा नही होगा···वह यहाँ आएगा और ज़रूर आएगा···तुम उसे रोक नही सकती। वह ज़रूर आएगा।" और, अपने को सम्हालने मे असमर्थ पाकर उसने अपना मुँह हाथो से ढक लिया और दौडती हुई बाहर बरसाती मे निकल गई।

इलीनीचिना खिडकी के पास बैठी बहुत देर हाँफती, चुपचाप सिर हिलाती और अनदेखती आँखो से दूर स्तेपी को देखती रही। उसकी निगाह सचमुच वहाँ जमी रहीं, जहाँ धूप के साए मे खडे चिर।यते के पौधो की गोट ज़मीन को असमान से अलग करती रही।

···इसके बाद माँ और बेटी मे बोलचाल न हुई कि शाम से ज़रा पहले दोन के किनारे की सब्जियो की एक क्यारी मे, गिरी हुई बाड के पास दोनो चुपचाप बैठी दीखी। सहसा ही मीशा आया और

दून्या के हाथ से फावडा लेते हुए बोला—'ये गड्ढे तो बहुत ही कम गहरे है···हवा का एक भी तेज झोका आया कि तुम्हारी यह बाड उडी।" और, इतना कहकर वह खुद गड्ढे गहराने लगा। फिर बाड जमाई, खम्भे साधे और चला गया।

अगले दिन सबेरे उसने दो नए हेगे और एक पचागुर का हत्था लाकर मेलेखोव परिवार की बरसाती मे खड़ा कर दिया और इलीनीचिना का अभिवादन करने के बाद काम की बात करते हुए बोला—"चरागाह की घास काटने का इरादा नही है क्या? और लोग कभी के दोन के पार पहुँच गए?"

इलीनीचिना कुछ नही बोली। उसकी जगह दून्या बोली—"नदी के पार जाने को कुछ नही है हमारे यहाँ···पतझर के दिनो से हमारी नाव छानी मे पडी है और उसका हर तख्ता सूखकर ऐंठ गया है।"

"तुम्हे बहार के वक्त उसे पानी मे डाल देना चाहिए था।" मीशा ने भर्त्सना-सी की। "इसके छेद बन्द कर दिए जाएँ, क्या खयाल है? नाव के बिना तो काम चलेगा नही··"

दून्या ने आजिजी से अपनी माँ की तरफ देखा और सोचा कि माँ कुछ कहेगी। पर इलीनीचिना बाकायदा गारा सानती रही और यो बनी रही जैसे कि उस बातचीत का उससे कोई सम्बन्ध ही न हो।

"नाव खीचने को थोडी-सी रस्सी होगी घर मे?" मीशा ने होठों-ही-होठो मुस्कराते हुए पूछा।

दून्या मालखाने मे गई और दोनो हाथो मे भरकर पटुआ ले आई। अब मीशा ने दोपहर के खाने के समय तक नाव ठीक-ठाक कर दी और बावर्चीखाने मे आकर बोला—"लो, नाव मैंने नदी मे उतार दी है···अब वह पानी सोखेगी···मगर उसे किसी पेड के तने से बाँध दो, वरना कोई लेकर चलता बनेगा।" फिर, उसने पूछा—"क्यो चाची, घास की कटाई कैसी चल रही है? कहो तो हाथ बँटा दूँ··· इस समय वैसे भी खाली हूँ।"

"उससे पूछो।" इलीनीचिना ने दून्या की ओर देखकर सिर हिलाया।

"मैं तो घर की मालकिन से पूछ रहा हूँ···"

"कौन कहेगा कि इस घर की मालकिन मैं हूँ!"

दून्या फूट पडी और सोने के कमरे मे भाग गई।

"ठीक···तो मैं हाथ बटाऊँगा।" मीशा ने अपनी ओर से फैसला दिया—"बढईगीरी के औजार कहाँ रखे हैं? एक नया हेगा बना दूँ·· यहाँ के पुराने हेगे बेकार लगते है मुझे!"

और, वह शेड मे चला गया और सीटी बजाते हुए हेगे के लिए दाँते तैयार करने लगा। नन्हा-मुन्ना मीशात्का नाच-नाचकर आग्रह से उसकी आँखो मे आँखें डालने लगा। बोला—"मीशा-चाचा, एक छोटा-सा हेगा बना दो···कोई नही बनाता मेरे लिए। हेगा बनाना न दादी जानती है और न बूआ। तुम्ही बना सकते हो। बहुत अच्छा बनाते हो तुम।"

"मैं बना दूँगा तुम्हारे लिए, मीशात्का···ऊपर वाले की कसम, जरूर बना दूँगा, मगर जरा दूर हटकर खडे हो···ऐसा न हो कि लकडी उछलकर तुम्हारी आँख मे गिर-गिरा जाए।" कोशेवोइ ने हँसते हुए कहा और आश्चर्य से सोचने लगा—'उफ, लडका कितना मिलता है अपने बाप से! पुराने साँचे की असली नई नकल है! वैसी ही आँखे है·· वैसी ही भौहे है और वैसे ही गोल होठ है···ग्रिगोरी का कमाल ही है यह!'

और, मीशा छोटा हेगा बनाने लगा, पर काम पूरा भी न कर पाया कि उसके होठ नीले पड गए और उसका पीला, तमतमाया हुआ चेहरा एकदम उतर गया। उसने सीटी बद कर दी, हाथ का चाकू नीचे रख दिया और अपने कधे यो सिकोडे जैसे ठड लग रही हो।

मीशात्का से बोला—"मिखाइल-ग्रिगोरिच, जरा मुझे कोई बोरा या ऐसी ही कोई दूसरी चीज ला दो···थोड़ा लेटना चाहता हूँ।"

"लेकिन क्यो?" बच्चे ने उत्सुकता से पूछा।

"मै बीमार होना चाहता हूँ।"

"लेकिन, क्यों?"

"उफ, तू तो बर्रे की तरह पीछे पड जाता है ··क्यो क्या, मेरे

बीमार होने का वक्त आ गया है, और बस, जा···जाकर जल्दी से ले आ कुछ।"

"लेकिन, मेरा हेगा नही बनाओगे ?"

"बाद मे बना दूँगा।"

मीशा का बदन सिर से पैर तक कँपकँपाने लगा और उसके दाँत कटकटाने लगे। इस बीच बच्चा बोरा ले आया तो वह उस पर पड रहा और फिर टोपी उतारकर उसने अपना चेहरा उससे ढक लिया।

"तुम सचमुच बीमार हो गए हो क्या ?" मीशात्का ने निराशा-भरे स्वर मे पूछा।

"हाँ भाई, तबीयत खराब हो गई है।"

"लेकिन, तुम काँप क्यो रहे हो ?"

"बुखार आ गया है।"

"पर तुम्हारे दाँत क्यो बज रहे हैं ?"

मीशा ने टोपी के नीचे से एक आँख से परेशान मीशात्का को देखा, हल्के से मुस्कराया और सवालो के जवाब देना बद कर दिया। मीशात्का घबराहट से उसे घूरता रहा और फिर घर के अन्दर भाग गया। बोला—"दादी···दादी···मीशा चाचा छानी मे पडे हैं ··सारा बदन काँप रहा है और दाँत कटाकट बज रहे है।"

इलीनीचिना ने खिडकी से बाहर नजर दौडाई, मेज के पास गई और जाने क्या सोचती रही। बच्चा उसकी आस्तीन से सटते हुए बेसब्री से बोला—"तुम कुछ बोलती क्यो नही, दादी ?"

इलीनीचिना उसकी ओर मुडी और दृढता से बोली—"मुन्ने, कम्बल ले ले और ईसा के उस दुश्मन को ओढने के लिए दे आ। जूडी आ गई है, इसीलिए काँप रहा है · जूडी एक तरह की बीमारी होती है ··कम्बल उठ जाएगा तुझसे ?" वह फिर खिडकी के पास गई, अहाते को एकटक देखती रही और जल्दी-जल्दी बोली—"ठहर ठहर ज़रा···कम्बल की कोई ज़रूरत नही है।"

इस बीच दून्या ने कोशेवोइ को भेड की अपनी खाल से ढक दिया और उस पर झुककर कुछ कहने लगी। फिर, दौरा खत्म हो गया तो

मीशा दिन-भर घास-कटाई की तैयारी करता रहा। साफ है कि जूडी ने उसे झकझोरकर रख दिया। उसकी हर हरकत से कमज़ोरी टपक रही थी। फिर भी उसने मीशात्का के लिए छोटा-सा हेगा बना ही दिया।

शाम को इलीनीचिना ने खाना पकाया, बच्चो को लाकर मेज के किनारे बैठाया और दून्या की तरफ देखे बिना बोली—"जा और बुला ला उसे खाने को·· क्या नाम है उसका·· "

दून्या गई और बुला लाई तो वह बिना क्रॉस बनाए मेज़ के किनारे आ बैठा। उसका बदन थकान से गठरी बना रहा। पीले चेहरे पर छिटकी पसीने की बूंदो से थकान टपकती रही और खाने के लिए चम्मच मुँह तक ले जाते समय उसका हाथ काँप गया। उसने बीच-बीच मे चारो तरफ देखते हुए जैसे-तैसे, बेमन से थोडा-बहुत खाया। परन्तु, यह देखकर इलीनीचिना के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि जब भी उस 'कातिल' की निगाह मीशात्का पर पडी, उसकी आँखे खुशी से चमकने लगी, उनसे ममता और प्यार की चिनगारियाँ फूटने लगी और होठो के सिरो पर मुस्कान थिरकने लगी। फिर, उसने अपनी निगाह उधर से हटा ली और अन्यमनस्कता का बादल एक बार फिर उसके चेहरे पर उतर आया।

इलीनीचिना ने उसकी निगाहे बचाकर बार-बार देखा तो बीमारी के कारण वह उसे बहुत ही दुबला और कमजोर लगा। भूरी गर्द-भरी ट्यूनिक के नीचे से गले की हड्डियाँ झाँकती रहो। कधे दबे-से रहे, हड्ड उभरे-से दीखे और बच्चो की-सी पतली गर्दन मे टेंटुआ बडा ही भद्दा लगा। यानी, इलीनीचिना ने उस कातिल के लचे हुए बदन और मोम-से चेहरे को जितना ही अधिक देखा, उसका मन अन्दर-ही-अन्दर उतना ही अधिक कलपा, जैसे कि कोई खुद उसके कलेजे के टुकडे-टुकडे किए डाल रहा हो। फिर, जिस व्यक्ति को वह इतनी घृणा करती थी · उसके लिए उसके अन्तर मे सहसा ही एक अयाचित करुणा उभरी। यह ऐसी मातृ-सुलभ करुणा रही जो मजबूत-से-मज़बूत औरत को भी लचा ही देती है। और, इलीनीचिना इस नई भावना को किसी तरह दबा न पाई। उसने तश्तरी भर दूध मीशा

की तरफ खिसकाया और बोली—"पी लो···उस नीली छतरी वाले के लिए पी लो···तुम इतने कमजोर दीखते हो कि मेरा तो जी घबराता है·· दूल्हा बनने के सपने देख रहे हो···कैसे शानदार लगोगे उस वक्त !"

: ३ :

गाँव के लोग कोशेवोइ और दून्या के बारे मे कानाफूसी करने लगे। एक दिन घाट के पास एक औरत यो ही दून्या से मिली तो साफ-साफ हँसी उडाते हुए बोली—"मिखाइल को मजदूरी पर रख लिया है क्या ? जब देखो तब अहाते मे ही नजर आता है !"

इस पर दून्या ने घर लौटकर माँ से बडी आरजू-मिन्नत की और उसे बडा मनाया कि वह उसे मीशा से शादी करने की अनुमति दे दे। पर, बुढिया ने एक हठ पकडा कि पकडा। बोली—"तुम चाहे जितना कहो···मैं तुम्हे उससे शादी करने की इजाजत हरगिज नही दूँगी ·· मेरा दिल तुम्हे दुआएँ कभी नही देगा।"

लडकी ने कोई और रास्ता न देखा तो अपनी चीज-बस्त बटोरने लगी। बोली—"ठीक है···मैं जाकर, बिना शादी के ही, उसके साथ रहूँगी।" अब तो बुढ़िया के हाथो के तोते उड गए और मजबूरन उसे अपना इरादा बदलना पडा। घबराकर कहने लगी—"जरा होश की बाते कर ! इन बच्चो को अकेले कैसे सम्हालूँगी मैं ? तू चाहती है कि हम सब मर जाएँ ?"

"यह तो तुम अच्छी तरह समझ सकती हो, माँ ! लेकिन, मै गाँव-भर की हँसी का निशाना नही बन सकती।" दून्या ने अपनी क्वाँरी उम्र की चीजे बक्से से बाहर फेंकते हुए शात भाव से कहा।

इलीनीचिना होठ फडफडाते हुए मौन खडी रही। फिर बहुत देर बाद देव-मूर्तियोवाले कोने की ओर यों बढी, जैसे कि पैर मन-मन-भर के हो उठे हो। वहाँ देवताओ के सामने झुकते हुए फुसफुसाई—"खैर बेटी·· जो तेरा मन कहे, वही कर···अगर यही तेरे दिमाग मे है तो यही सही···ऊपर वाला तेरे सिर पर मदद का हाथ रखे···"

दून्या खुशी से खिल उठी और हवा की तेजी से झुकी। माँ ने आशीश दी और काँपती हुई आवाज मे बोली—"मेरी मरहूम माँ ने इसी देवता से दुआ दिलाई थी मुझे···आह···काश कि तेरे पापा तुझे देखते इस वक्त···याद है, एक बार उन्होने क्या कहा था तेरे होने वाले आदमी के बारे मे नीली छतरी वाला ही जानता है कि फिलहाल क्या गुजर रही है मुझ पर···" बुढिया मुडकर बाहर बरसाती मे चली गई।

उसके बाद मीशा ने बडी कोशिश की और उसे तरह-तरह से समझाया-मनाया, पर लडकी ने जिद पकडी सो पकडी, और एक ही रट लगाए रही कि शादी होगी तो गिरजे मे ही होगी। आखिरकार हज़ार दाँत पीसने के बाद भी, मीशा को उसकी बात माननी पडी। उसने मन-ही-मन दुनिया की हर चीज को पानी पी-पीकर कोसा और ब्याह की तैयारी यो की, जैसे कोई फाँसी का फदा गले मे डालने को तैयार हो। फिर वह दिन भी आया। फादर-विसेरियान ने गिरजे मे रात को चुपचाप सारा सस्कार पूरा करा दिया, तरुण दम्पती को बधाई दी और उपदेश देते हुए बोला—"सोवियत-कॉमरेड-जवान, देखा तुमने, जिन्दगी किस तरह करवटें बदलती है। पारसाल तुमने अपने हाथ से मेरे घर मे आग लगाई, उसे आग की लपटो के हवाले कर दिया, और आज मैने कराई है तो तुम्हारी शादी हुई है। कहा है न कि कुएँ मे कभी न थूको, तुम्हे प्यास लग सकती है, और उसके पानी की जरूरत पड सकती है। खैर, छोडो···मुझे खुशी है और दिली खुशी है कि तुम सही रास्ते पर आ लगे हो और तुमने ईसा का गिरजा अपना लिया है।"

मीशा को आखिरी ठोकर लगी। वैसे भी वह अपने मन की कमजोरी पर बहुत लज्जित और अपने-आपसे बहुत नाराज था। पर, अब उससे बिल्कुल न रहा गया तो उसने जलती हुई नज़र से पादरी को देखा और दून्या को बचाते हुए धीरे से बोला—"अबे लम्बी अयाल के शैतान, किस्मतवर था कि उस वक्त गाँव से भाग निकला, वरना तेरे घर के साथ तुझे भी जलाकर राख कर दिया होता मैने! बात

तेरी समझ मे आई या नही ?"

मीशा की इस आकस्मिक चोट से पादरी आश्चर्य से अवाक् रह गया और पलकें झपकाते हुए उसे एकटक देखता रहा। पर वह अपनी जवान बीवी की आस्तीन को कसकर थामते हुए सख्ती से बोला—"आओ चलें!" और, अपने फौजी बूट बजाता हुआ दरवाजे की ओर बढा।

शादी बहुत ही खुश्क रही। न वोदका का कोई दौर चला, और न गाने हवा मे गूँजे। इस अवसर पर best man की भूमिका अदा करने वाले प्रोखोर-जिकोव ने अगले दिन अकसीनिया से उसकी शिकायत की और जमीन पर बार-बार थूकते हुए बोला—"पूछो मत, कैसी शानदार शादी रही! गिरजे मे मिखाइल ने पादरी को जाने क्या कह दिया कि उसके जबडे उखडकर गिरने-गिरने को हो गए और बाल-बाल बचे! और, जानती हो कि खाने को हमे क्या मिला? तन्दूरी-फाख्ता और दही·· और बस! काश कि शैतान के बच्चो ने वोदका की दो-चार बूंदें ही दे दी होती! अरे, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच होता तो देखता कि उसकी बहन की शादी किस तरह हुई। अरे, वह होता तो अपना सिर थामकर बैठ जाता! नही, अकसीनिया, बहुत हुआ·· अब मैं इन नए छोकरे-छोकरियो की शादी मे कभी न जाऊँगा। मैं तो कहता हूँ कि उससे ज्यादा हँसी-खुशी तो कुत्ते की शादी के मौके पर देखी जाती है···वे कम-से-कम एक-दूसरे के बाल तो नोचते हैं और इस नाते कुछ चीख-पुकार और कुछ शोर-शराबा तो होता है। लेकिन, इन कम्बख्तो की शादी मे न शराब पीने को मिली और न हाथापाई देखने को मिली। इन गुनाहगारो पर और गुनाह चढे! शादी के बाद मेरा दिमाग तो ऐसा खराब हुआ कि रात-भर नीद नही आई। और सबेरे तक सारा बदन यो खुर-खुर करता रहा, जैसे किसी ने कमीज के नीचे मुट्ठी-भर पिस्सू डाल दिए हो·"

कोशेवोइ मेलेखोव-परिवार मे आकर जमा कि फिर दिनों-दिन चीज़ो की शक्लें बदलती गईं। उसने देखते-देखते बाड ठीक-ठाक की, गाड़ी मे लाद-लादकर घास खलिहान मे पहुँचाई, उसकी टालें लगाईं

और टालो के ऊपर सफाई से छप्पर डाले। बोआई का वक्त आया तो उसने एक नया चबूतरा बनाया, बोआई की मशीन मे पाल लगाए, ओसाई के लिए मेहनत से जमीन साफ की, ओसाई की पुरानी मशीन ठीक की और घोडे की काठी की मरम्मत की। यही नही, उसने मन-ही-मन बैलो की जोडी बदलने के मसूबे बाँधे और कई बार दून्या से कहा—"सुनो, हमे एक घोड़ा खरीदना चाहिए···इन बैलो की जोडी को हाँको तो ऐसा लगता है कि खेतो के बजाय किसी को दफन करने के लिए कब्रगाह चले जा रहे है।"

ऐसे-ही-ऐसे गोदाम मे उसके हाथ सफेद और नीले रग का एक टीन लग गया तो उसने घर की, उम्र से सफेद सारी झिलमिलियाँ रग डालने का फैसला किया और रग डाला। बस तो, मेलोखोव-परिवार का मकान जवान हो उठा और अपने पहले दिन के नीले चौखटों की याद दिलाने लगा।

मीशा बडा ही मेहनती किसान साबित हुआ और बुखार के बावजूद उसने क्षण-भर को भी काम की चीजें हाथ से नीचे नही रखी। दून्या ने उसका हर काम मे भरसक हाथ बँटाया।

फिर, दाम्पत्य जीवन के कुछ दिनो के अन्दर-ही-अन्दर उसका हुस्न निखर उठा और उसके कधे और कूल्हे चौडा उठे। उसके आँखो, चाल-ढाल और बाल बाँधने के ढग तक मे एक नयापन झलकने लगा। उसकी चाल का अब तक का भद्दापन, तबीयत का बचपन और चंचलपन पर लगाकर जाने कहाँ उड गया। अब वह प्रतिक्षण मुस्कराती, स्थिर-चित्त से अपने पति के चेहरे को निहारती, और अपने चारो ओर घटती हर चीज से पूरी तरह बेखबर रहती।·· जवानी की खुशी के पास आँखें होती भी तो नही।···

पर इलीनीचिना इधर जिस अकेलेपन की शिकार हो गई थी, वह दिनो-दिन बढती गई। जिस घर मे उसने पूरी जिन्दगी गुजार दी थी, वही अब वह अपने को गैर-जरूरी पाने लगी। दून्या और मीशा यो मेहनत करते रहे जैसे कि किसी नई जगह वे कोई नया बसेरा तैयार कर रहे हो। वे इलीनीचिना से कुछ भी न पूछते और फार्म मे

कुछ नया जोडना-घटाना चाहते तो उसकी रज़ामन्दी जरूरी न समझते। यही नही, वे बुढिया से बात करते तो मोह के दो शब्द भी उनकी ज़बान पर न आते। मेज पर खाना खाने को बैठते तो उससे इधर-उधर की बाते करते रहते।

नतीजा यह हुआ कि रह गई एक अकेली बुढिया और रह गए उसके मन को कचोटने वाले उदासी से भरे विचार। वह बेटी की खुशी को अपनी खुशी न मान पाई। घर मे एक अजनबी का रहना उसे बराबर खुला और उस नए आदमी को यानी अपने दामाद को वह अपना कभी न समझ पाई। खुद जिन्दगी उसके लिए एक बोझ बन गई। एक साल के अन्दर इतने सारे अपनो के धरती से उठ जाने और स्वय जिए जाने के कारण वह जैसे टूट गई। सचमुच ऐसी बूढी हो गई कि उसे देखकर सहज ही दया आने लगी। अब तक इतना दुख भोगने की वजह से अब उसमे और सहने की शक्ति न बची। ऊपर से मन मे दहशत बनी रहने लगी कि मौत ने घर का दरवाज़ा देख लिया है तो अभी क्या है, अभी तो जाने कितनी बार वह डेरा डालेगी यहाँ! दून्या के मामले मे मन से समझौता कर लेने के बाद अब केवल एक हसरत उसे दिन-रात सताने लगी कि ग्रिगोरी आए, वह उसके बच्चे उसे सौप दे और फिर हमेशा-हमेशा को आँखें मूंद ले·· इतनी जीतोड जिन्दगी बिताने के बाद अब तो आराम का उसका अधिकार भी था···

गरमी के दिन अनन्त रूप से खिचते रहे। सूरज दमकता रहा और ताप बढता गया। परन्तु इलीनीचिना के मन मे उष्णता भरने मे वह भी अपने को असमर्थ पाने लगा। वह घटो, आस-पास की हर चीज़ से बेख़बर धूप से भरी सीढियो पर बैठी रहती, और पहले की तरह घर मे इधर-उधर, फुर्ती-से दौड-धूप करती कभी न दीखती। कुछ करने-धरने का उसका मन ही न होता। सब-कुछ उसे बेकार, गैर-जरूरी और नकली-नकली-सा लगता। वैसे अब पहले की-सी ताकत भी बदन मे उसे महसूस न होती। अकसर मशक्कत के घट्टो से भरे हाथ वह देखती और सोचती—'खैर, मेरे यह हाथ अपने

हिस्से का काम कर चुके ··अब तो दम लेना ही चाहिए·· अपनी ज़िन्दगी मैं जी चुकी···बहुत जी चुकी · अब तो सिर्फ अपने ग्रीशा को अपनी आँखो से एक बार और देख लूँ और ··बस···।'

सो, अपनी पुरानी तेजी और स्फूर्ति का अनुभव उसे एक ही बार और हुआ, वह भी थोडी ही देर को। एक दिन व्येशेन्स्काया से लौटते समय प्रोखोर वहाँ आया और दूर से ही चीखा— 'कुछ खिला-पिला रही हो इलीनीचिना दादी ? तुम्हारे बेटे की चिट्ठी लाया हूँ मैं।"

बुढिया पीली पड गई और सदा की भाँति इस बार भी, किसी अशुभ समाचार के बिना वह उस पत्र की भी कल्पना न कर पाई। पर प्रोखोर ने चिट्ठी पढकर सुनाई तो इसमे आधे से ज्यादा कज्ज़ाक और घर के प्राणियो के लिए प्यार-दुलार की बाते निकली और अन्त मे यह खबर सुनने को मिली कि पतझर के समय गाँव आने की कोशिश करूँगा। ··इलीनीचिना प्रसन्नता से अवाक् रह गई और गुडियो के-से आँसू पलको से बह-बहकर गाल की झुर्रियो मे आ अटकने लगे। उसने अपना सिर झुकाया और अपनी आस्तीन और खुरदरी हथेली से उन्हे पोछा। पर, आँसू कि जैसे रुकना उन्होने जाना ही नही। ऐप्रन पर टपाटप यो झरने लगे जैसे कि मूसलाधार पानी बरस रहा हो।

पर, प्रोखोर को सिर्फ औरतो का रोना पसद न था, बल्कि वह तो उसे किसी तरह सुहाता ही न था। इसीलिए क्रोध से त्योरी चढाते हुए बोला—"क्या गत तुमने अपनी बना ली है, दादी ? तुम्हारी जैसी औरतो की आँखो मे जाने कितना पानी बेकार होता है ! तुम्हे तो रोने के बजाय खुश होना चाहिए।···अच्छा···मैं तो चला···अलविदा ! तुम्हे इस शक्ल मे देखना मेरे लिए कोई बहुत खुशी की बात नही।"

इलीनीचिना ने आँखे पोछी और उसे रोका—"तुम इतनी अच्छी खबर लेकर आए हो तो तुम्हे इस तरह कैसे जाने दे सकती हूँ मैं ? जरा ठहरो·· कुछ थोडा-सा खा-पी लो।" बुढिया ने बक्से से, बहुत दिनो की रखी एक बोतल निकाली।

प्रोखोर ने बैठकर अपनी मूँछो पर हाथ फेरा और पूछा—"तो इतनी प्यारी खबर के नाम पर मेरे साथ एक घूंट पियोगी नही तुम ?"

मगर इसके साथ ही चिन्ता से न जाने किस ज़बान से मुँह से यह बात निकल गई—"अब भी वह साथ ही बैठ जाएगी और बोतल है कि उसमे होठ भिगोने-भर को भी वोदका नही है···"

परन्तु इलीनीचिना ने इन्कार कर दिया। उसने चिट्ठी मोडी और देवमूर्ति वाली टॉड के ऊपर रख दी। लेकिन दूसरे ही क्षण कुछ सोचा। एक क्षण तक उसे हाथो मे लिये रही और फिर अपने सीने से लगाकर उसे ऐप्रन के अन्दर रख लिया।

दून्या खेत से लौटी तो उसने पत्र बार-बार पढा। आखिर मुस्कराई और आह भरकर बोली—"उफ···काश कि वह जल्दी आ जाता···तुम तो पहले जैसी बिल्कुल ही नही रही हो, माँ!"

इलीनीचिना ने पत्र बेटी से लिया, फिर अपने सीने मे दुबकाकर रखा और मुस्कराकर खुशी से चमकती हुई आँखो से बेटी की ओर देखती हुई बोली—"मै तो अब इतनी अनचाही हो गई हूँ कि मुझे देखकर कुत्ते तक नही भोकते। लेकिन मेरा सबसे छोटा बेटा है जिसने अपनी माँ को याद किया है। कैसी चिट्ठी लिखी है उसने! लिखा है मैं तुम्हारे कदमो मे झुकता हूँ माँ! बच्चो की भी याद की उसने··· तुम्हारा जिक्र करना भी तो नही भूला है, दून्या! ··लेकिन, तुम हँस किस बात पर रही हो? ··तुम बेवकूफ हो···बिल्कुल बेवकूफ हो।"

"माँ, अब क्या हँस भी नही सकती मैं? लेकिन तुम जा कहाँ रही हो?"

"मैं आलू की खुदाई करने के लिए बाग जा रही हूँ।"

"मैं खुद यह काम कल कर लूँगी···तुम कही न जाओ। कहाँ तो तुम तबीयत खराब होने की बात करती रहती हो, और कहाँ तुमने अपने लिए काम भी ढूँढ लिया!"

"नही, मैं जाऊँगी···मैं बहुत खुश हूँ और थोडी देर बिल्कुल अकेली रहना चाहती हूँ।" इलीनीचिना ने बात सीधे-सीधे मान ली और जवान औरतो की तरह तेज़ी से रूमाल सिर मे बाँधा।

रास्ते में अकसीनिया को देखने को रुकी, तो पहले तो शोभा के

खयाल से इधर-उधर की बातें करती रही, बाद मे पत्र निकाला और बोली--"मेरे बेटे ने चिट्ठी भेजी है अपनी माँ का कलेजा ठडा कर दिया है·· छुट्टी मे घर आने को लिखा है···लो, पढो और मुझे भी सुनाओ ' एक बार और सुन लूँ।"

इसके बाद अकसीनिया को अकसर ही वह पत्र इलीनीचिना को पढकर सुनाना पडा। बुढिया जब-तब ही शाम को आ धमकी, रूमाल मे लिपटा पीला लिफाफा सावधानी से निकाला और आह भरकर बोली—"पढो इसे अकसीनिया···आज दिल पर कुछ बोझ-सा है। मैंने सपने मे बचपन का अपना ग्रीशा देखा···बिलकुल उस शक्ल मे सामने आया जिस शक्ल मे पढने को जाता था।"

फिर होते-होते वक्त के हाथो पत्र के शब्द धुँधले हो चले और दो-चार तो पढने मे भी नही आने लगे। लेकिन इससे अकसीनिया के लिए कोई अन्तर न पडा, क्योकि बार-बार पढकर सुनाने के कारण पूरी-की-पूरी चिट्ठी उसे लगभग ज़बानी याद हो गई। नतीजा यह कि कागज़ चिंदी-चिंदी हो गया तो भी पहली पक्ति से अंतिम पक्ति तक अविकल सुना देने मे किसी तरह की कोई कठिनाई कभी अनुभव न हुई।

पर, पत्र आने के पन्द्रह दिन बाद इलीनीचिना की तबीयत काफी खराब हो गई। दून्या खलिहान मे बझी रही और बुढिया ने उसे काम से काटना उचित न समझा। पर, खाना पकाना उसके लिए अकेले मुमकिन न रहा तो एक दिन बेटी से बोली—"आज मुझसे उठा नही जा रहा घर का कामकाज तुम अकेले ही देख लो।"

"क्यो, तबीयत कुछ ज्यादा खराब हो गई है, माँ ?"

इलीनीचिना ने अपनी समीज की सिलवटे दूर करते हुए आँखें नीची किए-ही-किए जवाब दिया—"बदन का जोड-जोड जवाब दे रहा है, जैसे कि अन्दर-ही-अन्दर कोई सब-कुछ चूर-चूर किए डाल रहा हो। जब मै जवान थी तो तुम्हारे पापा अक्सर बौखला उठते थे और मुझ पर इस्पाती मुट्ठियाँ बरसाने लगते थे·· फिर मै हफ्तो ऐसे पडी रहती थी, जैसे कि बदन मे जान ही नही रह गई हो। बिल्कुल वैसा ही लग रहा है इस वक्त भी·· बदन की हड्डी-हड्डी टूटती मालूम हो रही है।"

"मिखाइल को डॉक्टर के लिए भेजूँ ?"

"क्या जरूरत है डॉक्टर की ? उठ ही जाऊँगी जैसे-तैसे !" और दूसरे दिन वह सचमुच उठी और निकलकर ग्रहाते मे ग्राई । पर, शाम होते-होते फिर जाकर पलग पर लेट रही । उसका चेहरा थोडा सूज गया, और आँखो के नीचे पानी नजर आने लगा । रात को कई बार उसने तकियो की टेक लगाकर हाथो के सहारे उठने की कोशिश की और लम्बी-लम्बी साँसें लेने लगी । अक्सर साँस मुश्किल से आई । लेकिन, फिर साँस बदस्तूर आने लगी और वह पीठ के बल आराम से लेट गई । यही नही, बिस्तर से उठी भी और कई दिन उसने शाति से बिताए । मगर, पूरी दुनिया जैसे उससे अलग-थलग रही और उसने हर तरह अकेले रहना चाहा । ऐसे मे अकसीनिया आई तो उसने उसके सवालो के जवाब बहुत उलटे-सीधे दिए और चली गई तो जैसे सचमुच चैन की साँस ली । बच्चे बाहर खेलते रहे और दून्या ने उसे आकर अपनी बातो से हलाकान किया तो उसने बडी ही प्रसन्नता और सतोष का अनुभव किया, जैसे कि उसे किसी की हमदर्दी या सान्त्वना की आवश्यकता ही न रही, जैसे कि जिन्दगी का एक-एक क्षण दोहराना ही उसका एक काम हो गया । वह घण्टो, बिना हिले-डुले, आँखें मूँदे पडी रही और अपनी सूजी हुई उँगलियो से रह-रहकर कम्बल की सलवटें समेटती रही । गुजरे हुए वर्ष-माह-दिन आए और उसकी निगाहो के आगे से गुज़र गए ।

अचरज ही समझिए कि बुढिया की इतनी लम्बी जिन्दगी इतनी छोटी और बेचारा हो उठी, उसे इस तरह सताने और घोटने लगी और याद उसके एक बडे हिस्से से कतराने लगी । पर जाने क्यो उसकी सारी स्मृति और सारे विचार मात्र ग्रिगोरी के चारो तरफ चक्कर काटने लगे । शायद इसलिए कि लड़ाई के इन सारे वर्षों मे वह उसके लिए चिंतित रही थी, क्षण-भर को भी उसे उसकी चिंता से छुटकारा न मिला था और उसकी ज़िन्दगी का एक सहारा वही था·· शायद इसलिए कि बेटे और पति की कसक मे वक़्त के साथ वह टीस न रह गई थी, वे उसे अब कभी-कभी याद आते थे और उसे अपने और उनके बीच धुँधलाई

धुध का एक सागर ठाठें मारता लगता था···

अपनी जवानी के दिन, अपनी शादी के लमहे याद आए तो जैसे उसने उन्हे टोका कि नही, मुझे तुम्हारी जरूरत नही···ये मील के पत्थर है जो बहुत पीछे छूट गए है और इनसे अब न मुझे खुशी होती है, न चैन मिलता है।·· जब भी अतीत सामने आकर खडा हुआ, वह गम्भीर और अविचलित रही। पर, अपना 'नन्हा-मुन्ना' जब भी कल्पना मे आया, चित्र की एक-एक रेखा स्पष्ट हो उठी। इसके साथ ही हर बार उसके दिल की धडकने तेज़ हो गईं, गले मे कुछ आकर अटक-अटक गया। चेहरा सफेद पड गया और वह काफी देर तक बेहोश पड़ी रही। पर होश आते ही फिर अपने छोटे बेटे की बात सोचने लगी और उसे भुलाए न भूली।

एक दिन वह अपने सोने के कमरे मे पडी रही कि बाहर दोपहर का सूरज दमका। आसमान के दायें सिरे पर सफेद बादल हवा के कधो पर चढकर, आँखो मे चकाचौध पैदा करने वाले नीलम के सागर की लहरो पर शान से तैरने लगे। दम घोटने वाले सन्नाटे का तार निंदासी टिड्डियो की सर-सर से टूटने लगा। बाहर, खिडकी के ऐन नीचे घर की नीव से सटी घास अब तक हरी दीखी और यही टिड्डियाँ अपना अड्डा जमाए रही। इलीनीचिना ने उनका अनन्त सगीत सुना, कमरे के अन्दर घँस आई घास की बास से अपनी साँस खीची और क्षण-भर को एक सपना उसकी पलको पर उतर आया। सपने मे उसने देखा अगस्त की धूप मे तपता स्तेपी का मैदान, गेहूँ की सुनहरी खूँटियाँ और पेड़की के रग की धुध मे नहाया, चमचमाता नीला आसमान।···

उसने साफ-साफ देखे चिरायते के पौधो से पटे मैदान के बीच चरते बैल, गाडी और गाडी के ऊपर तनी कनात। उसने स्पष्ट सुने टिड्डियो के सर्राटे और अनुभव की चिरायते की तेज़, तीखी महक·· देखा तो खुद अपने को पाया हसीन, जवान ··बदन कि हर तरफ से भरा हुआ ·· गई पडान की तरफ तो नीचे की खूँटियो ने पौलियाँ पकड़-पकड ली, हवा ने स्कर्ट से सटे ब्लाउज का पसीना सुखा दिया और गर्दन जैसे झुलसा-झुलसा दी। गाल धूप से तमतमा उठे और दिमाग की नसो मे उमडते खून

के कारण कान सनसनाने लगे। एक हाथ से उसने दूध से भरी, भारी छातियाँ साधी, बच्चे की सिसकियाँ सुनकर कदम तेज किए और आगे बढते-बढते ब्लाउज के बटन खोले।···

उसने गाडी के नीचे लटकते झूले से साँवले ग्रीशा को उठाया तो गरमी से खुश्क होंठ काँपे और उन पर मुस्कान दौड गई। माँ ने क्रॉस के पसीने से तर तागे को दाँत से एक तरफ करते हुए जल्दी-जल्दी छाती बच्चे के मुँह मे दी और भिंचे दाँतो के बीच से बोली—"मेरे राजा·· मेरे नन्हे-मुन्ने बेटे · मेरे हुस्न ··तेरी माँ ने तुझे भूख से तलझा डाला···" ग्रीशा ने अब भी सुबकते हुए दूध पीना शुरू किया और अपने छोटे-छोटे दात छाती की घुडी मे गड़ाए दि। और पास ही खडा, काली मूँछो वाला जवान-पिता हँसिए पर धार धरता दीखा। माँ ने झुकी पलको से उसकी मुस्कान देखी। गरमी के कारण साँस लेना दूभर लगा और पसीना भौहो से बह-बहकर, बूँद-बूँद कर गालो पर आने लगा।· ·और उसके देखते-देखते रोशनी मद्धिम हुई···फिर और मद्धिम हुई·· फिर और मद्धिम हुई।···

बुढिया का सपना टूटा। उसने आँसुओं से नहाए चेहरे पर हाथ फेरा और फिर जड-सी बनी पडी रही। बीच-बीच मे उसकी साँस फँस-फँस गई और जब-तब ही उसे दिखलाई पडने पर भी कुछ भी न दीखा, जैसे कि देखने की ताकत किसी ने छीन ली हो।

उस दिन रात गए दून्या और उसका पति सोने को चले गए तो बुढिया बची-खुची ताकत जुटाकर उठी और अहाते मे आई।

उधर अकसीनिया अपनी गाय की तलाश मे बाहर गई थी। गाय दूसरी गायो से अलग होकर इधर-उधर हो गई थी। सो, वह लौटी तो उसने इलीनीचिना को धीरे-धीरे, डगमगाते कदमो से खलिहान की ओर बढते देखा, तो अचरज मे पडकर सोचने लगी—'बीमार तो है, यह वहाँ क्या करने चली जा रही है ?' फिर, चोरी-चोरी मेलेखोव-परिवार के खलिहान के पास की बाड़ की ओर बढी और वहाँ पहुँचकर अन्दर झाँककर देखा।

आसमान से पूनो का चाँद धरती पर चाँदी बरसाता रहा और हवा

स्तेपी की ओर से बह-बहकर आती रही। पुआल की एक टाल की घनी छाया नगी, पत्थर के रोलर से बराबर की गई जमीन पर पड़ती रही। इलीनीचिना दोनो हाथो से बाड का सहारा लिये स्तेपी मे दूर-दूर तक नज़र दौडाती रही। मैदान मे घास काटने वालो के अलाव की आग दूर के छोटे-से सितारे-सी लौ देती रही, और यह सितारा जैसे कि पहुँच के बाहर लगा। इलीनीचिना के सूजे हुए चेहरे पर निलहरी चाँदनी की भरपूर छूट दीखी और सफेद बालो की लट काले शॉल से बाहर झाँकती नज़र आई।

बुढिया बहुत देर तक सँवराते स्तेपी को एकटक देखती रही और फिर ग्रीशा को इस तरह धीरे से आवाज़ देने लगी, जैसे कि वह कहीं आसपास ही हो—"ग्रीशा-बेटे!···मेरे दुलारे बेटे!"

फिर एक क्षण तक चुप रहने के बाद, एक दूसरी खोखली नीची आवाज़ मे बोली—"मेरे हाड़-माँस ··मेरी रगो के खून!"

अकसीनिया टीस और आशका की अवर्णनीय भावना से काँप उठी, बाड़ से पीछे हटी और अपने घर की ओर चल दी।

उस रात इलीनीचिना ने समझ लिया कि अब दिन करीब हैं··· मौत सिरहाने खडी है। ··दूसरे दिन तडके उसने ग्रिगोरी की कमीज़ बक्से से निकाली और तह कर अपने तकिए के नीचे रख ली। साथ ही उसने कब्र के दूसरे कपड़े और चलती बिरिया पहनाई जाने वाली कमीज़ भी सहेजकर धर दी।

सबेरा होने पर सदा की तरह ही दून्या माँ के कमरे मे गई तो इलीनीचिना ने ग्रिगोरी की कमीज़ तकिये के नीचे से सावधानी से निकाली और बिना कुछ बोले, चुपचाप उसकी तरफ बढा दी।

दून्या ने आश्चर्य से पूछा—"यह क्या है?"

बहुत ही धीमी आवाज़ मे जवाब मिला—"ग्रीशा की कमीज़ है··· अपने आदमी को दे दो···कह दो कि इसे पहन ले···पुरानी कमीज़ पसीने से गल गई होगी।"

दून्या ने माँ की काली समीज़, कमीज़ और बुने हुए कपड़े के स्लीपर यानी आखिरी सफर की सभी चीज़ें पास ही रखी देखी

और उसका चेहरा पीला पड गया ।

'ये तमाम चीजे तुमने क्यो जमा कर रखी हैं, माँ ? ईसा के लिए इन्हे हटा दो यहाँ से ! ऊपर वाला रहम करे···अभी तुम्हे मरने को बहुत दिन है !"

"नही, मेरा वक्त आ गया है बेटी !" इलीनीचिना फुसफुसाई—"मेरी पारी आ गई है बच्चो की फिक्र रखना···ग्रिगोरी के आने तक उनकी पूरी देखरेख करना ··मुझे साफ नजर आ रहा है कि मैं उस वक़्त तक चलने से रही ! ··अरे नही, उस वक्त तक मै जी नही सकती·· "

दून्या से आँसू छिपाने के लिए इलीनीचिना ने मुँह दीवार की तरफ कर लिया और चेहरा रूमाल से ढक लिया ।···

और फिर तीन दिन बाद उसने शरीर छोड दिया । उसकी हम-उम्र औरतो ने उसे नहलाया, कब्र के कपडे पहनाए और सोने के कमरे की मेज पर लिटा दिया । शाम को अकसीनिया मृतात्मा को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने आई तो बुढिया को पहचानना कठिन हो गया —कहाँ वह गर्वीली बहादुर इलीनीचिना और कहाँ यह छोटे कद की बुढिया ! अकसीनिया ने उसकी ठडी पीली भौह चूमी तो बालो की वही अक्खड लटे सफेद रूमाल के नीचे से झाँकने लगी । छोटे गोल कानो के सीप जवान औरत के-से मालूम हुए । ··

अकसीनिया दून्या से पूछकर बच्चो को अपने घर ले आई । वे इस नई मौत से ऐसे डरे रहे कि उनके मुँह से बोल न फूटा, और अकसीनिया ने खाना खिलाकर साथ सुलाया तो दोनो उसकी दोनो बगल चिपट गए । इससे उसे बडा ही अजीब-अजीब लगा और अपने मन के राजा ग्रिगोरी की याद हो आई, पर अपने मन को दूसरी तरफ कर वह उन्हे बहलाने के लिए और दादी की याद भुलाने के लिए अपने बचपन की परियो की कहानियाँ सुनाने लगी । मजबूर यतीम वान्युश्का की कहानी उसने धीरे-धीरे यो कही जैसे कि साथ-हो-साथ गा भी रही हो—

"सुनो·· सुनो, हम राजा सुनो—
कैसे उजले पंख तुम्हारे !—

मुझे इनके सहारे ले चलो ।
दूर ··बहुत दूर···
वहाँ जहाँ मेरा देश है···
मेरा बडा दुलारा देश है···

और कहानी खत्म भी न हुई कि बच्चो की पलको पर नीद उतर आई। मीशात्का एक किनारे होकर कन्धे पर चेहरा टेककर सो गया। अकसीनिया ने बच्चे का सिर सहारे से सीधा कर दिया। सहसा ही किसी ने उसका दिल अपने हाथो मे लेकर इस तरह ऐंठा कि उसका गला रुँध गया। फिर वह इस तरह फूट-फूटकर रोई कि सिर से पैर तक सारा बदन सिहर-सिहर उठा। लेकिन अपने आँसू पोछने के लिए भी वह नही हिली, क्योकि ग्रिगोरी के बच्चे उसकी बाँहो मे थे, और उसके हिलने-डुलने से उनकी नीद टूट जाने का डर था···

४.

इलीनीचिना की मौत के बाद मीशा घर का पूरा मालिक बन गया। ऐसे मे स्वभावतया उसे और मेहनत करनी चाहिए थी। फ़ार्म को नए ढग से सँवारना चाहिए था, उसे बढाना चाहिए था, पर ऐसा हुआ नही, उलटे मीशा की दिलचस्पी दिन-ब-दिन घटती गई। अब तो वह शाम होते ही बरसाती मे निकल जाता और रात के तीसरे पहर तक वही बैठा धुआँ उडाता रहता—किसी सोच-विचार मे डूबा रहता। होते-होते पति का यह परिवर्तन दून्या से भी अनदेखा न रहा। अकसर तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और वह मन-ही-मन विस्मय मे पड गई—'यह आखिर हुआ क्या? अभी थोडे ही दिनो पहले की बात तो है कि काम करता था तो इसे तन-बदन की सुध न रहती थी। मगर अब तो यह जब-तब ही, एकाएक बिना किसी खास वजह के हाथ की कुल्हाड़ी या रदा ज़मीन पर रख देता है, और आराम करने लगता है!···'

फिर जाडे की राई की बोआई शुरू हुई, तो भी यही हुआ। मीशा खेत के एक-दो चक्कर लगाने के बाद बैल रोक देता। अपने लिए

सिगरेट रोल करता और फिर जुती हुई ज़मीनपर बैठ कर बहुत-बहुत देर तक कश खीचता रहता। रह-रह कर उसके माथे पर बल पडते रहते।

पर उत्तराधिकार मे अपने पिता की व्यवहारबुद्धि पाने वाली दून्या अकसर ही चिंतित हो उठती। सोचती—'आदमी कुछ चला नही··· लगता है कि या तो यह बीमार है, या अब हाथ-पैर हिलाना नही चाहता ···ऐसे आदमी से शादी की है कि मुसीबत ही नजर आती है! मैं और आस-पास के दूसरे लोग इसके लिए जैसे अजनबी हो उठे हैं। आधे दिन धुआँ उडाता है···आधे दिन इधर-उधर मटरगश्ती करता है···पूरा दिन गायब···काम मे हाथ लगाने की नौबत ही नही आती। तो मुझे इसे परेशान तो नही करना चाहिए। पर घुमा-फिरा-कर बात जरूर करनी चाहिए कि अगर तुमने इसी तरह मेहनत की तो घर की जरूरते तो पूरी होने से रही।'

बस तो एक दिन बडे ही नपे-तुले ढग से दून्या ने उससे पूछा—"मीशा, तुम तो अब बिलकुल दूसरे ही नजर आते हो ··बुखार कुछ ज्यादा हलाकान कर रहा है क्या ?"

"बुखार···बुखार से क्या मतलब ? बुखार के अलावा भी तो हजार बीमारियाँ यहाँ जान को लगने को हैं!" मीशा ने तुनककर जवाब दिया। बैल सनकारे और बोआई के यन्त्र के पीछे-पीछे चल पडा।

दून्या ने आगे और कुछ कहना-सुनना उचित न समझा। उसे लगा कि अपने आदमी को हुक्म देना औरत का काम नही। और बात वही खत्म हो गई।

पर लड़की का निशाना ठीक न बैठा था। मीशा के पहले की तरह खटकर काम करने के आड़े आती थी उसके मन की एक कचोट। कचोट दिनो-दिन बढती गई थी और अपने ही गाँव मे इतनी जल्दी जम जाना उसे हर वक्त खलने लगा था।···बहुत जल्दी खेती-बारी मे लग गया···बडी हडबडी से काम लिया मैंने! वह झुँझलाकर सोचता, और क्षेत्रीय समाचारपत्रों मे लडाई की रिपोर्टें पढने के बाद या लाल सेना से अलग किये गए कज्ज़ाको की कहानियाँ किसी भी दिन शाम को सुनने के बाद एकदम खीझ उठता।

लेकिन खास परेशानी उसे होती गाँव वालो का रवैया देखकर। उनमे से कुछ खुल्लमखुल्ला कहते—'सोवियत सरकार जाडा ग्राते-ग्राते खत्म समझो! रैंगेल तावरिया से ग्रागे बढ चुका है और माखनो के साथ रोस्तोव के पास तक ग्रा पहुँचा है···दोस्त मुल्को ने नोवोरोस्सि-इस्क मे भारी फौज जमा दी है।"···सक्षेप मे यह कि गाँव मे एक-से-एक अफवाहे उडती रहती। कन्सेंट्रेशन कैम्पो या खानो से लौटे हुए कज्ज़ाक गरमी के घर के खानो से मोटे नजर ग्राते। वे खासे लिए-दिए रहते, रात को घर की बनी वोदका पीते, मनमाने विषयो पर बातें करते और मीशा से मिलते तो बनावटी तटस्थ भाव के साथ पूछते—"कोशेवोइ, तुम तो ग्रखबार पढते हो। जरा रैंगेल के बारे मे बतलाग्रो कुछ। वे लोग जल्दी ही उसका खात्मा कर देंगे क्या ? और यह बात सच है या महज़ गप है कि दोस्त मुल्को के लोग हमे फिर ताबडतोड दबा रहे हैं ?···"

ऐसे मे एक बार इतवार के दिन शाम को ग्राया प्रोखोर।· मीशा ग्रभी-ग्रभी खेत से लौटा था और बरसाती के पास खडा हाथ-मुँह धो रहा था। दून्या घडे से उसके हाथ पर पानी डाल रही थी और ग्रपने पति की पतली, धूप से सँवराई गर्दन पर निगाह डालते हुए मोह से मुस्करा रही थी।

सो प्रोखोर पति-पत्नी का ग्रभिवादन कर बरसाती की नीचे वाली ग्राखिरी सीढी पर बैठ गया। एक क्षण बाद पूछा—"ग्रिगोरी पैन्तेलेये-विच ने कोई चिट्ठी लिखी·· कोई खबर भेजी इधर ?"

दून्या बोली—"नही·· कोई चिट्ठी नही ग्राई।"

"तुम उसकी फिक्र मे क्यो दुबले हुए जा रहे हो ?" मीशा ने मुँह-हाथ पोछते हुए प्रोखोर की ग्राँखो में ग्राँखें डाली। होठो पर गम्भीरता बनी रही।

प्रोखोर ने ग्राह भरी और ग्रपनी ग्रास्तीन ठीक की—"हाँ, हो रहा हूँ·· इसमे कोई शक नही कि मैं उसकी फिक्र मे दुबला हो रहा हूँ··· ग्राखिर एक जमाने तक हम फौज मे एक साथ रहे है ··।"

"और ग्रब कुछ और करने की बात सोच रहे हो·· है न ?"

"और क्या ?"

"अरे यही उसकी खिदमत !"

"नही···अब उसकी खिदमत क्या करूँगा ! वे दिन तो चले गए !"

"मैने सोचा कि शायद अब भी उसके इन्तजार मे हो कि तुम्हे फिर उसकी खिदमत का मौका मिले।" मीशा अब भी बिना मुस्कराए कहता गया—"फिर सोवियत सरकार से लड़ने का मौका मिले ··।"

'देखो मुझसे इस तरह बात न करो।" मिखाइल प्रोखोर ने चिढते हुए कहा।

"क्यो न करूँ आखिर ? गॉव मे इधर-उधर तमाम तरह की बातें सुनता हूँ।"

"तुमने मेरे मुँह से कभी कुछ सुना है ? कहाँ क्या सुन लिया तुमने ?"

"तुमने तो कुछ नही कहा, लेकिन तुम्हारी और ग्रिगोरी की तरह ही तो तमाम लोग है जो 'अपने लोगो' की राह देख रहे है।"

"नही, मैं किन्ही लोगो की राह नही देख रहा। मेरे लिए उनसे कोई फर्क नही पडता।"

"गुनाह तो यही है कि उनसे तुम्हारे लिए कोई फर्क नही पडता। आओ अन्दर आओ···नाराज न हो···मै तो यो ही हँसी कर रहा था।"

प्रोखोर बेमन से सीढियो पर चढा और ड्योढी पार करते हुए बोला—"तुम्हारी हँसी की बातो मे मेरे भाई हँसने को कुछ नही है··· जो गुजर गया, उसे भूलना ही चाहिए···मैने तो बीती बातो की कीमत अदा की है।"

"लेकिन सारी-की-सारी बीती बातें भुलाई नही जा सकती।" मीशा ने मेज के किनारे बैठते हुए सख्ती से कहा—"खैर छोडो···आओ, खाना खा लो।"

"शुक्रिया···सचमुच सारी बीती बाते भुलाई नही जा सकती। मिसाल के तौर पर मेरा एक हाथ जाता रहा है, और इस हादिसे को भूलने मे मुझे बडी ही खुशी होगी···लेकिन इसे भूलना मुमकिन नही है· बात दिमाग मे रह-रहकर ताजी होती रहती है।"

दून्या ने मेज लगाते-लगाते मीशा की तरफ देखे बिना कहा—"तुम्हारा ख़याल है कि गोरे फौजियो के साथ जो भी रह चुका है, उसे माफी मिल ही नही सकती ?"

"क्या ? और तुम्हारा क्या ख़याल है ?"

"मेरा ख़याल···मैं तो सोचती हूँ कि जो बीती बाते कुरेदता है, उसकी आँखे निकाल ली जाती है·· ऐसा ही तो कहते है लोग।"

"बाइबिल मे ऐसा लिखा होगा।" मीशा ने अन्यमनस्क भाव से कहा—"मेरे दिमाग से तो आदमी जो कुछ करता है, उसे उसके लिए जवाबदेह होना पडता है।"

"सरकार तो ऐसा कुछ कहती नही।" दून्या ने शात मन से कहा। उसने एक दूसरे कज्जाक के सामने मीशा से उलझना ठीक न समझा, पर अन्दर-ही-अन्दर उससे ख़ासी चिढी रही। उसे लगा कि प्रोख़ोर से इसने बेतुका मजाक किया है और मेरे भाई के साथ खुल्लमखुल्ला दुश्मनी दिखलाई है।

पर मीशा बोला—"सरकार तुमसे कुछ नही कहती। तुमसे वह कहेगी भी क्या ! पर गोरी फौज मे काम करने वाले हर आदमी को सोवियत कानून को जवाब देना ही पड़ेगा···।"

"यानी अपने काम के लिए मुझे भी जवाब देना पड़ेगा ?"

"तुम्हे क्यो जवाब देना पडेगा ! तुम तो भेड हो · चरागाह मे चरते रहे और फिर अपने बाडे मे वापस आ गए ! अर्दलियो से कौन क्या पूछेगा ? लेकिन लौटने पर ग्रिगोरी को लोहे के चने चबाने पडेगे। हम उससे पूछेगे कि बगावत क्यो हुई, कैसे हुई, किसने कराई, ख़ुद उसका इसमे कितना हाथ रहा ?"

"और यह सवाल कौन करेगा···तुम ?" दही का प्याला मेज़ पर रखते-रखते दून्या की आँखे कौध-सी उठी।

"हाँ, पूछने वालो मे मैं भी शामिल रहूँगा।" मीशा ने बिना आवेश मे आए जवाब दिया।

"तुम्हारा यह काम नही···तुम्हारे बिना भी सवाल-जवाब करने वालो की कमी न होगी। जहाँ तक ग्रिगोरी का सवाल है, वह माफी

का हकदार हो गया है···उसने लाल फौज का साथ दिया है।"

दून्या की आवाज़ कांपने लगी और वह ऐप्रन की झालर उँगलियों मे उलझाते हुए मेज़ के किनारे बैठ गई। पर मीशा ने जैसे कि अपनी पत्नी की परेशानी देखी ही नही। बिना डगमगाए कहता गया—"मैं भी दो-एक सवाल कर लूँगा· 'दिलचस्पी रहेगी···जहाँ तक बात माफी की है, वह तो हम लोगो को देखना-समझना पडेगा· 'फिर से सोचना पडेगा कि माफी किस हद तक दी जा सकती है·· उसने हमारा काफी खून बहाया है। तराजू पर तोलकर देखना पडेगा कि खून इस तरफ का भारी पडता है या उस तरफ का ··।"

इस तरह शादी के बाद पहली बार मीशा और दून्या के सम्बन्धो के बीच कोई दरार पडी, और बावर्चीखाने मे ऐसा सन्नाटा हो गया, जो रह-रहकर खटकने लगा। मीशा बीच-बीच मे तौलिए से होठ पोछते हुए चुपचाप दही खाता रहा। प्रोखोर सिगरेट पीता और दून्या को घूरता रहा। फिर उसने खेती-बारी के किस्से छेड दिए और इसके बाद कोई आधे घटे तक वहाँ और रहा। चलते-चलते बोला—"किरील-ग्रोमोव लौट आया है···तुम लोगो ने सुना ?"

"नही सुना · लेकिन वह लौटा कहाँ से है ?"

'लाल फौज से वह भी पहली घुडसवार फौज मे था।"

"यह वही आदमी है जिसने ममोनतोव की मातहती मे काम किया है ?"

"हाँ वही है।"

"बडा भारी सूरमा रहा है वह तो !" मीशा मज़ाक बनाते हुए हंसा।

"हाँ लूटपाट के मामले मे सूरमा ही रहा है। ऐसा कोई मौका कही नजर नही आया कि वह फौरन तैयार !"

"लोग कहते है कि उसने बिना किसी तरह की रू-रियायत के कैदियो को गाजर-मूली की तरह काटकर फेक दिया है और उन्हे मौत के घाट उतार दिया है सिर्फ बूटो-जैसी चीज़ के लिए।"

"सुनते तो ऐसा ही है।" प्रोखोर ने बात पर मुहर मारी।

"और माफ उसे भी कर देना चाहिए···क्यो ?" मीशा ने धीरे से कहा—"परमपिता ने अपने दुश्मनो को माफ कर दिया और हमसे भी ऐसा ही करने को कहा·· है न ?"

"इस सवाल का जवाब उतना आसान नही है···लेकिन तुम उसके मामले मे करोगे क्या ?"

"खैर देखा जाएगा · इस मामले मे भी जो कुछ जरूरी होगा मैं करूँगा ही।" मीशा ने अपनी आँखें सिकोड़ी—"मैं तो वह करूँगा कि इसके बाद वह दुनिया छोड देगा ··साथ ही यह भी है कि हज़ार चाहकर भी सजा से बच न पाएगा·· व्येशेन्स्काया मे दोन चेका[1] है· ·उसके लोग इसके गले मे प्यार से बाँहे डालेगे · "

प्रोखोर मुस्कराया और बोला—"कहावत ठीक ही है कि सिर्फ पोढे लोग ही ऊँट का कूबड बराबर कर सकते हैं। वह तो लाल फौज से भी लूटपाट करके ही लौटा होगा। उसकी बीवी मेरी बीवी से डून की ले रही थी कि मेरा आदमी एक जनाना कोट, जाने कितने जोडे कपडे और जाने कितनी चीजे लाया है। आदमी मस्लाक-ब्रिगेड मे था और वहाँ से घर आया है। मैं तो सोचता हूँ कि भागकर आया होगा, क्योकि हथियार साथ है।"

मीशा ने पूछा—"कौनसे हथियार ?"

'अरे एक कारबाइन, एक पिस्तौल और जाने क्या-क्या !"

"सोवियत मे उसने अपना नाम दर्ज कराया या नही, तुम्हे पता है ?"

प्रोखोर हँसा और उसने हाथ हिलाया—"उसे तो रस्सी से घसीटकर भी वहाँ ले जाना मुमकिन नही। मै सोचता हूँ कि भागा हुआ है वह और आज नही तो कल घर से खिसक जाएगा। अब यह किरील है जो लडाई मे अपने और कुछ हाथ दिखलाना चाहता है। लेकिन तुम मेरे बारे मे गलत सोचते हो। नही भाई, मै अपने हिस्से की लडाई लड़ चुका···इस तरह के दिल-बहलाव से मेरा जी पूरी तरह भर चुका।"

फिर प्रोखोर जल्दी ही चला गया। इसके बाद मीशा भी घर से

१· १९१७ से १९२२ के बीच रूसी पुलिस का गुप्तचर विभाग।

बाहर आया। दून्या ने बच्चो को खिलाया-पिलाया और बिस्तर लगाए कि पति लौटा। उसके हाथ मे बोरी मे लिपटा कुछ दीखा।

"कहाँ गये थे भला तुम ?" दून्या ने नाराज होते हुए पूछा।

"अपना दहेज़ उगाहने गया था।" मीशा मज़े से मुस्कराया, बोरा खोलकर एक राइफल, कारतूसो की एक थैली, एक पिस्तौल और दो हथबम बेंच पर रखे, और एक तश्तरी मे थोडा-सा पैराफीन बडी ही सावधानी से उँडेला।

"यह सब कहाँ से आ गया ?" दून्या ने भौहो से हथियारो की तरफ इशारा किया।

"ये हथियार मेरे है ··मोर्चे से साथ लाया था।"

"लेकिन, तुमने अब तक कहाँ छिपा रखा था इन्हे ?"

"जाने दो इस बात को, चाहे जहाँ भी रहे हो, इतना है कि इनकी खासी फिक्र की गई है।"

"बात समझ मे नही आई ·तुम्हे तो अपनी चीजे अपने पास रखने का शौक है फिर तुमने इनका जिक्र भी कभी नही किया···यानी अपनी बीवी से भी चोरी ?"

मीशा ने बरबस, लापरवाही से मुस्कराते हुए बीवी को मनाने की कोशिश की। बोला—"तुमसे जिक्र करने को इसमे भला क्या था ? यह औरतो का काम नही। इन्हे यही रहने दो। अब इनका तुम्हारे पास रहना ऐसा कुछ खराब नही है बीवी।"

"पर इन्हे यहाँ क्यो ले आए हो तुम ? तुम तो अब कानून का इतना खयाल रखने लगे हो ··सभी-कुछ जानते हो यह काम क्या गैर-कानूनी नही है ? क्या इसके लिए तुम्हे जवाब देना नही पडेगा ?"

"तुम बेवकूफ हो। किरील ग्रोमोव जब ये हथियार लेकर गाँव आया है तो उसने सोवियत सरकार के लिए खतरा पैदा किया है। लेकिन, मै जब इन्हे यहाँ लाया हूँ तो मैने सोवियत सरकार की हिफाजत की बात सोची है। आई बात समझ मे ? किसे जवाब देना पडेगा—मुझे ? तुम जाने क्या बक-बका रही हो। जाओ और जाकर सो रहो।"

उसने अपनी बुद्धि से ठीक ही सोचा कि गोरी फौज के लोग हथियार लेकर लौट सकते है। ऐसी हालत मे मुझे तैयार रहना चाहिए।··· सो, उसने बडी मेहनत से राइफल और पिस्तौल साफ की और दूसरे दिन उजाला होते ही व्येशेन्स्काया जाने का सरजाम करने लगा।

दून्या ने थैले मे खाना रखते समय नाराज होकर कहा—"तुम जाने क्यो मुझसे कुछ-न-कुछ छिपाए रहते हो हमेशा ! कम-से-कम यह तो बतला दो कि कब तक के लिए जा रहे हो, और क्यो जा रहे हो ? इसी को जिन्दगी कहते हो तुम ? जब मन चाहा तब चल दिए और कुछ भी बतलाने के नाम पर गोल। तुम मेरे अपने आदमी हो या मेरी कमीज के महज़ कोई बटन हो ?"

"मै व्येशेन्स्काया जा रहा हूँ, फौजी कमीशन के सामने पेश होने। और क्या जानना चाहती हो तुम ? बाकी सब-कुछ लौटूंगा तो बतला दूंगा।"

और अपना थैला बगल मे दबाकर मीशा दोन के किनारे आया। नाव पर सवार हुआ और नाव को तेजी से दूसरे किनारे की तरफ खे चला।

व्येशेन्स्काया पहुँचा तो डॉक्टरी के बाद डॉक्टर ने रुखाई से कहा— 'मेरे प्यारे कामरेड, तुम लाल सेना मे शामिल होने के लायक नही। मलेरिया ने तुम्हे कही का नही छोडा है। अच्छा हो कि तुम इलाज करा लो, वरना हालत और खराब हो जाएगी। लाल सेना को तुम्हारे जैसे लोगो की ज़रूरत नही है।"

"फिर, और कैसे लोगो की ज़रूरत है ? मैं दो साल फौज में रह चुका हूँ और अब मेरी जरूरत नही है कैसे हो सकता है ऐसा ?"

"सबसे बडी और जरूरी बात यह है कि हम जिन लोगो को लें, वे हर तरह ठीक-ठाक और तन्दुरुस्त हो। तुम पहले ठीक हो जाओ, फिर देखा जाएगा· यह नुस्खा लेते जाओ· ·दवाखाने से कुनैन मिल जाएगी तुम्हे।"

"समझा।" कोशेवोइ ने कमीज यो पहनी जैसे कि किसी आलसी

घोडे के गले मे पट्टा डाल रहा हो। लगा कि सिर उसमे जाएगा ही नहीं। पतलून के बटन उसने सडक पर आकर बन्द किए और सीधा पार्टी की क्षेत्रीय कमेटी के दफ्तर की ओर बढा।

और, फिर गाँव की क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष बनकर गाँव लौटा। घर पहुँचने पर, पत्नी से जल्दी-जल्दी बोला—"समझी, अब देखा जाएगा।"

"क्या मतलब ?" दून्या ने अचरज से पूछा।

"वही जो पहले था।"

"पहले आखिर क्या था ?"

"मैं सदर बन गया हूँ। अब बात समझ मे आई।"

दून्या ने खीझ से अपने हाथ पीट लिए और कुछ कहने को हुई। परन्तु मीशा उसकी बात सुनने को रुका ही नही। शीशे के सामने खड़े होकर अपनी बदरग, खाकी ट्यूनिक की पेटी ठीक की और सोवियत के दफ्तर के लिए रवाना हुआ।

बूढा मिखेयेव जाडे मे क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष नियुक्त हुआ था और तब से अब तक वही इस पद पर रहा था। वह कुछ कम-ही-कम देखता और सुनता था और अपनी जिम्मेदारियो के कारण काफी परेशान रहता था। इसलिए जब मीशा कोशेवोइ ने उससे अपनी नियुक्ति की बात कही तो वह बहुत ही खुश हुआ।

"ये रहे कागजात ·और यह रही गाँव की मुहर—सम्हालो इन्हें, ईसा के नाम पर सहेजो।" उसने क्रास बनाते और हाथ मलते हुए, स्वाभाविक प्रसन्नता से कहा—"मैं सत्तर का हुआ। और जिन्दगी-भर मैंने कभी कोई ओहदा सम्हाला नही। अब बुढापे मे यह जिम्मेदारी गले पड गई थी·· यह सब तो तुम्हारे जैसे जवान लोगो के लिए है···मुझसे भला काम भी क्या हो सकता है ? न मैं ठीक उसे सुन सकता हूँ, न ही अच्छी तरह से देख सकता हूँ। मेरा तो वक्त यह है कि ऊपर वाले की याद करता अपने इने-गिने दिन जैसे-तैसे गुज़ार देता—मगर उन लोगो को जाने क्या सूझी कि उन्होने मुझे सदर बना दिया·· "

मीशा ने ज़िला क्रान्तिकारी समिति के आदेशो और आज्ञाओं पर

सरसरी नज़र डाली और पूछा—"सेक्रेटरी कहाँ है ?"

'क्या ?"

"अरे मैंने पूछा कि सेक्रेटरी कहाँ है ?"

"सेक्रेटरी ? वह राई की बोआई कर रहा है। हफ्ते मे सिर्फ एक बार आता है यहाँ···मौन ले जाए उसे !" कभी-कभी जिले से कोई कागज़ आ जाता है और उससे पढवाना ज़रूरी हो जाता है, मगर गाँव-भर मे जाल डलवाने पर भी वह हाथ नही आता। नतीजा यह कि कागज़ कई-कई दिन तक ज्यो-का-त्यो पडा रहता है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तो लिखना-पढना नाम-भर को जानता हूँ·· बिल्कुल नाम-भर को। जैसे-तैसे दस्तखत-भर बना लेता हूँ। काम सिर्फ एक कर सकता हूँ और वह यह है कि मुहर मार लेता हूँ।"

कोशेवोइ ने क्रान्तिकारी समिति की काली दीवारें देखी तो उसकी भौंहे तन गईं। दीवारो पर जहाँ-तहाँ खरोंचे नज़र आईं और उन पर बाबा आदम के ज़माने का सिर्फ एक पर्चा चिपका दीखा। पर्चा भी मक्खियो की कारीगरी से भरा समझ पडा।

बूढे मिखेयेव को इस ज़िम्मेदारी से छुटकारा पाने पर ऐसी खुशी हुई कि कोशेवोइ की फटे कपडे मे लिपटी मुहर सहेजते समय वह हँसी तक कर बैठा। बोला—"यह है गाँव की पूरी मिलकियत। नकद रकम सौंपने को कुछ नही है, और सोवियत हुकूमत के इस जमाने मे भला अतामान की यादगार को लोग वैसे भी कोई खास अच्छी निगाह से नही देखते। कहो तो अपनी पुरानी बात मै तुम्हे नजर करूँ।" और, पोपले मुँह से मुस्कराते हुए उसने ऐश का अपना बेत मीशा की ओर बढाया। बेत का हत्था इस्तेमाल से चमकता लगा।

लेकिन कोशेवोइ को हँसी अच्छी न लगी। उसने उस कमरे पर एक बार फिर निगाह डालो और त्यौरी चढाते हुए आह भरकर बोला, "तुमसे सब-कुछ मिल गया। तुमने यहाँ की हर चीज़ सौंप दी बाबा··· मान लिया, मगर अब तुम यहाँ से फौरन नौ-दो-ग्यारह हो जाओ।" उसने आँखो से दरवाज़े की तरफ इशारा किया।

उसके बाद वह मेज़ के किनारे आकर बैठ गया और बहुत देर

तक वही बैठा दाँत पीसता रहा। सोचता रहा—पिछले दिन मैंने कैसे गधेपन मे बिताए है। जहाँ-तहाँ जमीन खुरचता फिरा हूँ, और सिर उठाकर एक बार भी आहट नही ली है कि आसपास आखिर हो क्या रहा है। किसी चीज को कायदे से कान नही दिया है।

उसे अपने साथ-साथ हर चीज पर बडा गुस्सा आया। वह अपनी जगह से उठा, ट्यूनिक ठीक की, दूर आँख गडाई और दाँत भीचे-ही-भीचे बोला—"हाँ बरखुरदारो, तुम्हे·· तुम्हे दिखलाऊँगा मैं कि क्या होती है, सोवियत सरकार।"

"उसने दरवाजा बन्द किया। जजीर लगाई और चौक पारकर घर की ओर बढा। रास्ते मे गिरजे के पास उसकी भेट ओबनिजोव के लडके से हुई, लापरवाही से उसकी तरफ देखकर सिर हिलाया और बगल से गुजर गया। पर, सहसा ही इसे कुछ खयाल आया तो मुडा और चिल्लाकर बोला—"ए अन्द्रेयुश्का रुको जरा···सुनो तुमसे कुछ काम है।"

वह भूरे बालो वाला शर्मीला लडका, बिना कुछ बोले, लौट आया। मीशा ने उसकी तरफ यो हाथ बढाया जैसे कि वह बच्चा न होकर बडा, सयाना मर्द हो। बोला—"कहाँ जा रहे थे? गाँव के उस नुक्कड की तरफ घूमने जा रहे हो? सुनो, तुम तो उच्च आरम्भिक पाठशाला मे जाते रहे हो, ··जाते रहे हो न? बहुत अच्छा। दफ्तर का काम-धाम जानते हो कुछ?"

"दफ्तर का किस तरह का काम?"

"अरे, यही छोटा-मोटा मामूली काम···जैसे यह कि दफ्तर मे जो कुछ आया उसे सहेज लिया। और जो कुछ भेजना जरूरी हुआ, उसे बाहर भेज दिया।"

"मै समझा नही कामरेड कोशेवोइ!"

"अरे भाई, दफ्तर मे कागज आते है इनके बारे मे कुछ जानते-समझते हो तुम? पता है कुछ कागज बाहर भेजने के होते है और कुछ दूसरे काम आते है।" मीशा ने अपनी उँगलियाँ ऐंठी और जवाब का इन्तजार किए बिना दृढता से कहा—"नही जानते हो तो कोई बात

नही। जल्दी ही सीख जाओगे। अब गाँव की क्रान्तिकारी समिति का सदर मै हूँ ·और तुम पढे-लिखे लडके हो—तुम्हे मै सेक्रेटरी बनाता हूँ। दफ्तर जाओ और वहाँ की सारी चीजे सहेजो। मेज पर पडी है। मैं अभी आता हूँ।·· समझे ?"

"कॉमरेड कोशेवोइ !"

मीशा ने हाथ झटका और अधीरता से बोला—"बाकी बाते बाद मे होगी। फिलहाल जाओ और अपना काम सम्हालो !" और, वह नपे-तुले कदम रखते हुए आगे चल दिया।

घर पहुँचने पर उसने नया पतलून पहना, पिस्तौल जेब मे डाली और शीशे के सामने खडा होकर कुछ देर तक टोपी जमाता रहा। फिर दून्या से बोला—"मै काम से कही जा रहा हूँ। जल्दी ही लौटूँगा। कोई सदर के नाम पर मुझे पूछे तो बतला देना।"

अध्यक्ष बनते ही मीशा मे कुछ परिवर्तन आवश्यक हो गए। वह ज़रा धीरे-धीरे यो चलने लगा, गोया कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो। परन्तु, उसकी यह चाल ऐसी अस्वाभाविक लगी कि कुछ गाँव के लोग उसे देखते ही ठिठक गए और मुस्करा-मुस्कराकर, घूर-घूरकर देखने लगे। प्रोखोर-जिकोव उसे सडक पर देखते ही आदर से पीछे हटकर बाड के पास पहुँच गया और पूछने लगा—"मगर, यह सब है क्या, मिखाइल ? काम के दिन तुमने ऐसे शानदार कपडे पहन रखे है और सडक पर यो चल रहे हो, जैसे परेड कर रहे हो। आखिर बात क्या है ? दुबारा शादी करने तो नही जा रहे ?"

"ऐसा ही कुछ समझो।" मीशा ने जरा मर्यादा से होंठ सिकोडते हुए कहा।

और, ग्रोमोव के फाटक के पास उसने थैली निकालने के लिए पतलून की जेब मे हाथ डाला और लम्बे-चौडे अहाते मे फैली इमारतो और घर की खिडकियो पर तेज निगाह डाली।

किरील ग्रोमोव की माँ, पशुओ को खिलाने के लिए कद्दू के टुकडे लिये बरसाती से निकलती दीखी। मीशा ने बडे आदर से उसका अभिवादन किया और सीढियो की ओर बढा।

"किरील घर पर है, चाची ?"

"हाँ, घर मे है···सीधे अन्दर चले जाओ।" बुढिया ने उसे रास्ता देने के लिए एक तरफ हटते हुए कहा।

मीशा अँधेरी बरसाती मे घुसा और थोडे उजाले मे दरवाज़े का हत्था टटोलने लगा।

सफाचट दाढी-मूँछ वाले किरील ने सोने के कमरे का दरवाज़ा खोला और उसे देखते ही एक कदम पीछे हट गया। थोडा नशे मे नज़र आया। उसने मीशा पर सिर से पैर तक एक निगाह डाली और थोडी परेशानी से बोला—"लो भई एक फौजी और हाजिर! अन्दर आ जाओ, कोशेवोइ···आओ ··बैठो। मेरी मेहमानी कबूल करो। हम लोग पी रहे थे···यही थोडी-सी पी रहे थे ··।"

"एक मेहमान-नवाज़ी हज़ार पकवानो की कमी पूरी करती है," मीशा ने मेज के चारो तरफ बैठे मेहमानो को देखते हुए घर के मालिक से हाथ मिलाया।

मीशा को लगा कि वह बेवक्त आया है। मिखाइल के लिए बिलकुल अनजाने, चौडे कन्धो वाले एक कज्ज़ाक ने कोने पर बैठे-ही-बैठे किरील को तेज, प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा और अपना गिलास झटके से दूर खिसका दिया। मीशा को देखते ही दूसरी तरफ बैठे कोरशुनोव के एक सम्बन्धी सेम्योन अख्वात्किन के माथे पर बल पड गए और उसने अपनी आँखें इधर से हटा ली।

किरील ने मीशा से बैठने का आग्रह किया। मीशा बोला—"शुक्रिया ·।"

"लेकिन, बैठो न ऐसा क्यो करते हो कि हमे बुरा लगे? थोडा पिओ न!'

मीशा मेज के किनारे बैठ गया और अपने मेज़बान के हाथो से घर की बनी वोदका का गिलास लेते हुए सिर हिलाकर बोला—"मैं तुम्हारे घर लौटने के नाम पर जाम उठाता हूँ, किरील—इवानोविच!"

"शुक्रिया···तुम्हे फौज से लौटे बहुत वक्त हुआ क्या ?"

"बहुत वक्त हुआ···मैंने तो इस बीच अपना घर भी बसा लिया।"

"यानी, घर बसा लिया और शादी कर ली ··क्या कहते हैं ? मगर इस तरह मुंह क्यो बना रहे हो ? गिलास खाली करो न !"

"मुझे अब और नही चाहिए···तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।"

"भई, यह ज्यादती है । नही चलेगी । आज काम की बात मैं नहीं कर सकता । इस वक्त तो दोस्तो के साथ जश्न मना रहा हूँ । अगर कोई काम हो तो कल फिर चले आना ।"

मीशा मेज़ से उठा और शांत मन से मुस्कराते हुए बोला—"काम तो जरा-सा है, मगर टाला नही जा सकता । एक मिनट के लिए जरा बाहर आओ न !"

किरील अपनी मूँछो पर हाथ फेरते हुए एक क्षण तक चुप रहा और फिर उठ खडा हुआ ।

"यही कर लो बात ·जमी हुई महफिल क्यो उखाडते हो ?"

"नही, बाहर ही आओ ।" मीशा ने धीरे से पर आग्रह के साथ कहा ।

"चले जाओ न बाहर···बेकार की बहस क्यो कर रहे हो ?" चौडे कन्धों वाले अजनबी कज्ज़ाक ने कहा ।

किरील मीशा को लेकर, बावर्चीखाने की तरफ बढा और स्टोव के पास कुछ पकाने मे व्यस्त अपनी पत्नी से बुदबुदाकर बोला—"ज़रा यहाँ से बाहर चली जाओ, कतेरीना !"···फिर, बेंच पर बैठते हुए रूखे ढग से बोला—"बतलाओ, बात क्या है ?"

"कितने दिन हुए तुम्हे लौटे ?"

"क्यो, क्या मामला है ?"

"मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हे यहाँ आए कितने दिन हुए ?"

"चौथा दिन है···मेरे खयाल से ।"

"और अभी तक क्रातिकारी समिति के दफ्तर नही गये तुम ?"

"नहीं, अभी तक तो नही गया ।"

"और, व्येशेन्स्काया मे फौजी कमीशन के सामने पेश होने जा रहे हो तुम ?"

"तुम कहना क्या चाहते हो ? जिस काम से आए हो, वह

बतलाओ न !"

"मैं काम की ही बात तो कर रहा हूँ।"

"अगर ऐसा है तो ऐसी-तैसी मे जाओ। आखिर तुम हो क्या कि मै तुम्हे हजार सवालो के जवाब देता फिरूँ ?"

"मैं क्रातिकारी समिति का सदर हूँ···अपनी रेजीमेट के कागज़ात दिखलाओ जरा।"

"तो यह बात है।" किरील ने कहा और सहसा ही मीशा को गम्भीर दृष्टि से देखते हुए बोला—"यानी मतलब तुम्हारा यह है ?"

"हाँ ··ठीक समझा तुमने। अपने कागजात दे दो मुझे।"

"मै आज उन्हे सोवियत के दफ्तर मे ले आऊँगा।"

"नही···अभी दिखलाओ···फौरन।"

"कही बाँधकर डाल दिए है मैने।"

"डाल दिए है कही, तो खोज लो।"

"नही, फिलहाल मै उन्हे ढूँढने से रहा। घर जाओ मिखाइल··· बेकार का तमाशा न करो यहाँ।"

"नही तमाशा तो छोटा-सा दिखलाऊँगा तुम्हे मैं।" मीशा ने दाहिना हाथ जेब मे डाला—"कोट पहनो अपना।"

"छोडो भी, मिखाइल···और अपना भला चेतो तो अपना हाथ मेरे बदन से दूर ही रखो।"

"चलो मेरे साथ···मै कहता हूँ।"

"कहाँ चलूँ ?"

"क्रातिकारी समिति के दफ्तर···।"

"मेरी तो ऐसी कोई खास ख्वाहिश नही।" किरील पीला पड गया, पर मुस्कराते हुए बोला।

मीशा थोडा बाये कटा, जेब से पिस्तौल निकालते हुए खटके पर उँगली रख ली और धीरे से बोला—"चलते हो या नही ?"

किरील, बिना कुछ बोले, सोने के कमरे की तरफ बढा तो मीशा रास्ते मे अडकर खड़ा हो गया और आँखो से बरसाती के दरवाज़े की तरफ इशारा करने लगा।

"साथियो !" किरील बनावटी तटस्थता ओढते हुए चिल्लाया—"मैं तो गिरफ्तार-सा हो गया हूँ···वोदका मेरे बिना ही खत्म कर लेना।"

इसी समय सोने के कमरे का दरवाज़ा भडाक से बोला और अख्वात्किन ड्योढी की ओर लपका। लेकिन पिस्तौल अपनी तरफ तनी देखकर दरवाज़े के पीछे छिप गया।

"चलो।" मीशा ने किरील को आदेश दिया।

किरील ऐंठते हुए धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढा, एक उछाल मे ही बरसाती पार की, दरवाज़ा भडाक से बन्द किया। उछलते हुए सीढियाँ पार की और अहाता पार करने के बाद दोहरा होकर बगिया की तरफ भागा। मीशा ने उसे दो बार गोलियाँ मारी, पर वार खाली गए। फिर, पैर फैलाकर, पिस्तौल की नली टेढ़े-मेढे बाएँ हाथ की कुहनी के आरपार जमाकर निशाना साधा। तीसरी गोली लगते ही किरील डगमगाता लगा, पर चोट पर काबू पाने के बाद उछलकर हलके से बाड पर चढ गया मीशा। बरसाती से निकलकर दौड़ा। इसी समय पीछे के मकान से धाँय से राइफल दगी। गोली ने शेड की सफेद दीवार की चिकनी मिट्टी उधेडी तो सामने आवाज़ हुई और पत्थर के भूरे टुकड़े मैदान-भर मे बिखर गए।

किरील तेज़ी से दौडा। उसका झुका हुआ शरीर सेब के पेडो की हरी पत्तियो के बीच कौंधा। मीशा छलाँग मारकर बाड़ पर चढा, लेकिन गिर पडा। फिर, वही पडे-पड़े उसने भागने वाले पर दो बार फ़ायर किया और मुड़कर घर की तरफ चेहरा कर लिया। बाहर का दरवाज़ा खुला दीखा और किरील की माँ सीढियों पर खडी, आँखो पर हथेली की ओट कर बगिया मे निगाह दौडाती नज़र आई।

'मुझे बात करने के बजाय उसे ठौर-की-ठौर गोली मार देनी चाहिए थी।' मीशा ने सोचा, कई मिनट तक घर की तरफ एकटक देखता रहा और, मशीन की तरह, नपे-तुले ढग से घुटनो की धूल झाड़ने लगा। इसके बाद उठा, शरीर पर बल देते हुए चढ़कर बाड़ पार की और पिस्तौल की नली नीचे कर घर लौट गया।

५ :

ग्रोमोव तो उडा ही, अख्वात्किन के साथ ग्रोमोव के कमरे का वह अजीबो-गरीब कज्जाक भी गाँव से उड दिया। रात को दो दूसरे कज्जाक भी गायब हो गए। सहसा ही व्येशेन्स्काया से दोन-चेका[1] की एक छोटी टुकडी के लोगो ने कज्जाको को गिरफ्तार किया, और बिना कागजात के रेजीमेंटो से भागकर घर आने वाले चार लोगो को व्येशेन्स्काया की पेनल-कम्पनी के पास भेज दिया।

कोशेवोइ पूरे दिन क्रातिकारी समिति के कार्यालय के कमरे मे बैठा रहता और सिर्फ शाम को घर लौटता। वह हमेशा भरी हुई राइफल सिरहाने रखता, पिस्तौल तकिए के नीचे दबा लेता, और बिना कपडे उतारे सोने को लेट जाता।

सो, किरील वाली घटना के तीसरे दिन दून्या से बोला—"आओ, चलो, बरसाती मे सोएँ।"

"आखिर क्यो ?" दून्या ने आश्चर्य से पूछा।

"वे लोग खिडकी से गोली चला सकते है। पलग खिडकी से सटा हुआ है।"

दून्या, बिना एक शब्द कहे, पलग चुपचाप बरसाती मे ले आई। पर, दूसरे दिन शाम को बोली—"जरा यह बतलाओ कि हम लोग कब तक जाल मे फँसे खरगोशो की तरह रहते रहेगे ? जाडा आ रहा है और क्या उस वक्त भी हम बरसाती मे ही बसेरा जमाए रहेगे ?"

"जाडा अभी दूर है, पर इस बीच तो हमे इसी तरह यही रहना होगा।"

"और यह इस बीच कब तक चलेगा ?"

"जब तक कि मैं किरील को ठिकाने न लगा दूँगा।"

"तुम्हारा खयाल है कि वह तुम्हारे हाथ आसानी से आ जाने देगा अपने को ?"

"किसी-न-किसी दिन तो हाथ आ ही जाएगा।" मीशा ने विश्वास

---

१ रूसी पुलिस का गुप्तचर विभाग, १६१७-१६२२।

के साथ उत्तर दिया।

लेकिन उसकी बात गलत निकली। किरील ग्रोमोव और उसके साथी दोन के किनारे के इलाके मे कही दूर जा छिपे। फिर अराजकतावादी माखनो के ज़िले के पास तक आ पहुँचने की खबर पाकर वे दूसरे किनारे को लौटे और क्रास्नोकुत्स्काया की बस्ती मे चले गए। यहाँ अफवाहे कानो मे पडी कि माखनो की टुकडी वहाँ कभी की पहुँच चुकी है। किरील ने रात तातारस्की मे बिताई तो सुयोग से उसकी भेट सडक पर प्रोखोर-ज़िकोव से हो गई। बोला—"कोशेवोइ को मेरा प्रीवियत कहना और कहना कि मै जल्दी ही वापस आकर उसका बदला चुका दूँगा।"

अगले दिन सवेरे प्रोखोर ने मीशा-कोशेवोइ को किरील से अपनी मुलाकात की बात बताई और पूरी बातचीत सुनाई।

प्रोखोर की बात सुनने के बाद मीशा बोला—"बहुत ठीक, आने दो। एक बार वह बच निकला। लेकिन दूसरी बार नही बचेगा। मैं तो उसका शुक्रगुजार हूँ कि उसने मुझे सबक दे दिया है और मैं जान गया हूँ कि उसकी तरह के लोगो के साथ किस तरह का बरताव किया जाना चाहिए।"

वास्तव मे माखनो अपनी टोली के साथ ऊपरी दोन के क्षेत्र मे पहुँच गया था और उसका सामना करने के लिए व्येशेन्स्काया से जो बटेलियन भेजी गई थी, उसने उसे कोनकोव के पास मामूली लडाई मे तार-तार कर दिया था। पर वह केन्द्रीय क्षेत्र की तरफ बढने के बजाय मिलेरोवो स्टेशन की तरफ बढा था और उत्तर से रेलवे लाइन पार कर स्तारोबेल्स्क की दिशा मे पीछे हट गया था। श्वेत गारद के सबसे ज्यादा काम करने वाले कज्ज़ाक उससे जा मिले थे। पर अधिकाश घर पर बने रहकर देखते रहे थे कि देखे, होता क्या है!

कोशेवोइ इस बीच, हर वक्त जमीन से कान लगाए रहा और गाँव मे आसपास घटने वाली हर घटना को गौर से देखता-समझता रहा। लेकिन तातारस्की के जीवन मे कोई विशेष उल्लास बाकी न रहा। कज्ज़ाको को जहाँ जो कमियाँ दिखाई देती, उनके लिए वे

सोवियत सरकार को पानी पी-पीकर कोसते। स्थानीय सहकारी समिति द्वारा हाल मे खोली गई छोटी दूकान मे जैसे कुछ भी न रहता। साबुन, चीनी, नमक, पैराफीन, दियासलाई, गाडी के धुरे मे लगाने की ग्रीज वग़ैरा रोजमर्रा की जरूरत की चीजे वहाँ मिलती ही नही। उनकी जगह खाली अलमारियो मे कीमती सिगरेटो के पैकेट और लोहे के इने-गिने बरतन रखे दीखते। इन चीजो को महीनो-महीनो कोई न पूछता।

गाँव वाले पैराफीन की जगह पिघला हुआ मक्खन और पिघली चर्बी इस्तेमाल करते। कारखानो मे तैयार तम्बाकू की जगह घर की उगाई तम्बाकू ले ली जाती। दियासलाइयो की जगह चकमक पत्थरो और लुहारो के बने मामूली लाइटरो से आग जलाई जाती। जल्दी आग पकडने के लायक बनाने के लिए लकडी सूरजमुखी के डठलो के घोल मे उबाली जाती, लेकिन इस पर भी बात न बनती। मीशा क्रान्तिकारी समिति के दफतर से लौटते समय कई बार धुआँ उडाने वालो को नुक्कड मे जमा देखता। वे चकमक पत्थरो से चिनगारी पैदा करने मे जुटे रहते और होठो-ही-होठो गालियाँ बकते रहते। कई बार फुसफुसाकर कहते—"सोवियत सरकार, जरा आग दे न!" आखिरकार उनमे से किसी एक की कोशिश से सूखी चैली पर चिनगारी गिर पडती, और वह थोडा-बहुत आग पकड लेती तो सभी उस पर टूट पडते। फिर अपनी-अपनी सिगरेट जलाने के बाद वे जमीन पर उकडूँ बैठ जाते और एक दूसरे को तरह-तरह की खबरें सुनाने लगते।

इन सारी चीजो के साथ सिगरेट बनाने के लिए किसी तरह का कागज भी कही न मिलता। फलत: कज्जाकों ने पहले तो गिरजे के रजिस्टरो के कागज़ से सिगरेटे बनाई और फिर घर की हर चीज के कागज मे सिगरेट रोल कर डाली। यानी बच्चो की पुरानी स्कूली किताबो और बूढो की धार्मिक पुस्तको तक की खैर न रही।

अकसर ही मेलेखोव-परिवार के अहाते का चक्कर लगाने वाले प्रोखोर-जिकोव ने मिखाइल से एक-एक कागज वसूल लिया और भरे गले से बोला—"मेरी बीवी के खानदानी सन्दूक के ढक्कन मे पुराने

यह अखबार के कागज-ही-कागज मढे हुए थे। पर मैंने उन्हे चीरकर सिगरेटे बना डाली। हमारे घर मे 'नया करार'[1] की एक जिल्द थी··· तुम तो जानते हो कि मजहबी किताब है यह। लेकिन मैंने उसे भी फूँक दिया और 'पुराना करार'[2] को भी सिगरेटो मे फूँक दिया। बुरी बात तो यह है कि इन सन्तो ने करार[3] बहुत लिखे नही। · इसके अलावा मेरी बीवी के पास एक रजिस्टर था और उसमे उसने सभी ज़िन्दा और मुर्दा रिश्तेदारो के नाम लिख छोडे थे। मगर मैंने उसे भी नही छोडा। अब क्या पातगोभी के पत्तो और पोदीने की पत्तियो को कागज की तरह इस्तेमाल करूँ ? नही मिखाइल, तुम जो चाहे सो कहो, मगर एक अखबार तो दे दो। मैं बिना सिगरेट पिए रह नही सकता। जर्मन मोर्चे के ज़माने मे तो मैंने कई बार रोटी का अपना राशन दे दिया और एक औंस तम्बाकू ले ली।·· "

उस बार शरद मे तातारस्की की ज़िन्दगी की साँसें जैसे और पतली पड गईं। ग्रीज़ इस तरह नापैद हो गई कि गाडियाँ सडको पर से गुजरी तो उनके पहिए बुरी तरह चरमराए। चमडे की काठियाँ और जूते तक चिकनाहट की कमी से चिमड गए। पर सबसे ज्यादा कमी खली नमक की। तातारस्की के लोग अक्सर व्येशेन्स्काया गये और एक-एक खाई-पी मोटी भेड के बदले सिर्फ पाँच-पाच पौड नमक लेकर सोवियत सरकार को कोसते लौट आए। इस गुनहगार नमक ने मिखाइल के लिए बडी मुसीबत खडी कर दी। एक दिन बूढो की टोली सोवियत के दफतर आई। टोली के लोगो ने अध्यक्ष को टोपियाँ उतारकर, आदर से अभिवादन किया और बेंचो पर बैठ गए।

एक बोला—"गाँव मे नमक नही है, सदर साहब।"

"अब साहब-वाहब कोई नही रहा।" मीशा ने वक्ता को सही किया।

"माफी चाहता हूँ···आदत पड़ गई है, इसीलिए मुँह से निकल

१ न्यू टेस्टामेंट।

२. ओल्ड टेस्टामेंट।

३. टेस्टामेंट।

जाता है···खैर कहने का मतलब यह कि साहबों के बिना तो जिन्दगी चल सकती है, पर नमक के बिना नही चल सकती ।"

"अच्छा तो बुजुर्गो, यह बतलाओ कि तुम सब चाहते क्या हो ?"

"सदर, तुम्हे जैसे भी हो, गाँव के लिए नमक तो मँगाना ही चाहिए···बैलगाडियो के सहारे मानीच मे जाकर यहाँ नमक लाना मुमकिन नही है ।"

"मैं क्षेत्रीय दफतर को इस मामले मे लिख चुका हूँ । उम्मीद है कि वे लोग जल्दी ही यहाँ थोडा-बहुत नमक भेजने का इन्तजाम करेंगे ।"

"लेकिन चिडियाँ खेत चुग ही जाएँगी तो पछताने से क्या होगा ?" एक बूढा फर्श पर निगाह गडाते हुए बोला।

मीशा क्रोध से लाल हो उठा और मेज़ के पास से उठकर अपनी जेबे उलटता हुआ बोला—"मेरे पास तो नमक है नही···देखते हो न ? मैं अपने-आप तो नमक लिये फिरता नही और फूंक मारकर पैदा भी नही कर सकता···समझे न ?"

"तो आखिर आएगा कहाँ से यह नमक ?" चुमाकोव नाम के एक काने बूढे ने एक क्षण चुप रहकर चारो तरफ आश्चर्य से दृष्टि दौडाते हुए कहा—"पुराने जमाने मे पिछली सरकार की हुकूमत मे अम्बार लगा रहता था हर जगह···लेकिन आज देखने को नही मिलता ।"

"हमारी सरकार से इसका कोई मतलब नही ।" मीशा ने शान्त होते हुए कहा—"अगर कोई सरकार इसके लिए कसूरवार है तो तुम्हारी पिछली सरकार है । उस सरकार के लोग ही हैं जिन्होने इतनी बरबादी की है कि नमक लाने को आज गाडियाँ तक नही है । सभी रेलवे लाइने टूटी हुई है । ट्रक भी किसी काम के लायक नही हैं ।"

फिर मीशा ने कितनी ही देर तक उन बूढो को समझाया कि फौजो के पीछे हटते समय श्वेत गार्दो ने किस तरह राज्य की सम्पत्ति बरवाद की, किस तरह फैक्ट्रियाँ उडा दी और कैसे गोदामो मे आग लगा दी । इस वर्णन मे कुछ हिस्सा तो लडाई के जमाने मे उसके अपने आँखो देखे अनुभव का रहा, इससे अधिक सुनी-सुनाई बातो का रहा और बाकी इन लोगों के मन से सोवियत सरकार का विरोध दूर करने

के लिए उसने अपनी कल्पना से गढ लिया । यही नही, उसने कुछ देर तक सोचा और अपनी सरकार की वकालत के लिए, उसे लाछना से बचाने के लिए, कितनी ही ज़ोरदार कहानियाँ बुन ली। बोला—"ऐसा कुछ बुरा न होगा अगर मैं तुम लोगो को इन सूअर के बच्चो के बारे मे एक बात बतलाऊँ···सूअर तो वे हैं ही, इसलिए मेरे सूअर के बच्चे कहने से उनमे कुछ घटे-बढेगा नही · पर इस बात से हम सबका फायदा ज़रूर होगा। ··तुम्हारा खयाल है कि इन बुर्जुआ लोगो के पास अक्ल की कोई कमी है ? नही·· ऐसा नही है·· वे बेवकूफ नही हैं। यानी इन लोगो ने रूस-भर से हज़ारो पौड नमक और चीनी इकट्ठी की, उसे क्रीमिया ले गए और वहाँ जहाज़ो पर लादकर बिक्री के लिए बाहर के मुल्को को भेज दिया।" उसकी आँखे चमकने लगी।

"और, गाडी के धुरे मे लगाने की ग्रीज भी वे गाडियो पर लादकर कही ले गए ?" काने चुमाकोव ने अविश्वास से पूछा।

"तुम्हारा खयाल है कि तुम्हारे लिए ग्रीज़ यहाँ छोड दिया है उन्होने ? बाबा, तुम सोचते हो कि उन्हे तुम्हारी और मेहनतकश लोगो की कोई जरूरत है ? ग्रीज खरीदने वाले भी ढूँढ लिए होगे उन्होने। अरे उनका बस चलता तो लोगो को भूखा मारने के लिए वे तो सब-कुछ गाडियो मे भरकर यहाँ से ले जाते।"

"खैर, यह तो ठीक है।" एक बूढे ने मीशा की बात से सहमत होते हुए कहा—"ये रईस होते ही ऐसे हैं···आखिरी ज़र्रा तक छोडना नही चाहते। आदमी जितना दौलतमन्द होता है, उनता ही लालची होता है। यह बात तो हम लोग बाबा आदम के जमाने से जानते है। व्येशेन्स्काया में एक ऐसा सौदागर था कि पहली बार फौज पीछे हटी तो उसने हर चीज़ गाडियो पर लाद ली और तागे की रील तक अपने साथ ले गया। अरे लाल फौजी दरवाजे तक आ गए, मगर उसने अहाते से बाहर निकलने का नाम तक नही लिया। भेड की खाल मे सजा-बजा इधर-उधर दौड-दौडकर दीवारो से कीले निकालता रहा। बोला—'ऐसी-तैसी मे जाएँ ये लोग·· मै नाम को एक कील तक न छोडूँगा इनके लिए।' इसलिए कोई ताज्जुब नही कि वे लोग ग्रीज भी अपने साथ ले गए हो।"

"यह सब तो ठीक है, मगर नमक के बिना हमारा काम कैसे चलेगा ?" मकसायेव ने अन्त मे शान्त स्वर मे पूछा ।

मीशा ने सावधानी बरतते हुए सलाह दी—"हमारे कामगार नमक खोदेंगे, मगर इस बीच तुम लोग अपनी गाडियाँ मानीच भेज दो ।"

"लोग गाडियाँ लेकर वहाँ जाना नही चाहते । काल्मीक बहुत परेशान करते हैं । वे झीलो पर हमे नमक लेने नही देते और हमारे बैल ले जाते है ऊपर से । हमारा एक जान-पहचानी गया तो सिर्फ चाबुक हाथ मे लेकर लौटा । हुआ यह कि एक दिन रात मे तीन हथियारबन्द सवार घोडो पर सवार होकर आए, उसके बैल हाँक ले गए और उसके गले की तरफ इशारा करते हुए बोले—'मुँह न खुले वरना तुम्हारी जान की खैर नही ।' यह होता है वहाँ जाने का मतलब !"

"आज इन्तजार करना पडेगा हमे ।" चुमाकोव आह भरकर बोला ।

मीशा ने इन बूढो को तो जैसे-तैसे समझा लिया । पर इसी नमक के कारण घर पर उसके और दून्या के बीच खासी कहा-सुनी हो गई । वैसे भी उन दोनो के बीच काफी पहले से मनमुटाव चल रहा था और इसकी शुरुआत हुई थी तब, जब प्रोखोर के सामने मीशा ने ग्रिगोरी को कुछ कहा था । वह छोटी-सी तकरार अभी तक हरी थी । सो, एक दिन खाते समय मीशा बोला—"तुम्हारा शोरबा नमकीन नही है, मालकिन ! अगर घर में न हो तो पीठ से झाड लो थोडा-सा··· समझी !"

'तुम्हारी इस सरकार की हुकूमत में फिलहाल तो किसी के भी यहाँ काफ़ी नमक होने से रहा । तुम्हे पता है कि कितना नमक रह गया है घर मे ?"

"कितना रह गया है ?"

"बस, दो मुट्ठी ।"

"हालत पतली है ।" मीशा ने लम्बी साँस खीची ।

दून्या फटकार बरसाती हुई बोली—"और लोग तो गरमी मे

मानीच गये और नमक ले आए, मगर तुम्हे तो इसके बारे मे सोचने तक की फुर्सत नही मिली।"

"किस चीज को गाडी मे जोतकर चला जाता मानीच ? शादी के पहले साल तुम्हे जोतना तो कुछ जमता नही · और, जहाँ तक बैलो का सवाल है ··"

"मज़ाक फिर करना···बिना नमक का खाना खाते वक्त तुम्ही को मज़ाक सूझ सकता है।"

"तुम आखिर मुझसे चाहती क्या हो ? कहाँ से ले आऊँ नमक मैं ? तुम औरतें भी खूब ही होती हो कि डकार से नमक पैदा कर दो, मगर कर दो। लेकिन, नमक अगर है नही तो थुक्का-फज़ीहत करोगी तुम ?"

"दूसरे लोग बैलगाडियाँ लेकर मानीच गये और आज उनके यहाँ न नमक की कमी है, और न किसी और चीज की कमी है। मगर हम हैं कि सीठा खाना चबा रहे है।"

"किसी तरह काम चला लो, दून्या ! जल्दी ही नमक भेजने का इन्तज़ाम करेंगे लोग ! हमारे पास क्या ऐसा टोटा है ?"

"नही, तुम्हारे पास तो हर चीज की खत्तियाँ भरी है।"

"तुम्हारे पास, मानी ?"

"तुम कम्युनिस्टो के पास।"

"अच्छा हम कम्युनिस्ट है तो तुम क्या हो फिर ?"

"मैं जो हूँ सो तो तुम देख ही रहे हो। तुम तो गाल-भर बजाते रहे हो—'हमारे पास हर चीज होगी···खूब होगी·· सब लोग एक ही हालत मे जिएँगे···और आराम से जिएँगे···' यही है तुम्हारा आराम से जीना कि शोरबे मे डालने को नमक तक नही है ?"

मीशा ने चौकते हुए, पत्नी को घूरकर देखा और पीला पड़ गया—"यह सब क्या है ? दून्या, क्या कह रही हो तुम ? इस तरह तुम्हारी जबान से निकलता कैसे है ?"

लेकिन, दून्या को मौका मिल गया था। वह भी गुस्से और नफरत से ज़र्द पड गई और आवाज़ ऊँची कर चीखती हुई बोली—"अच्छा तो यह बतलाओ कि ऐसे कैसे जिएगा कोई ? इस तरह आँखे क्या दिखला

रहे हो ? जनाब सदर साहब, आपको पता है कि नमक की कमी से लोगों के मसूड़े सूज रहे है ? लोग उसके लिए नेचायेव-ढूह तक जाते हैं, खारी मिट्टी खोदते है, और इस मिट्टी को शोरबे मे डालते है।"

"ठीक है, लेकिन बहुत चीखो मत···अच्छा तो आगे ?"

दून्या ने हाथ पीट लिए—"आगे और क्या चाहते हो तुम ?"

"लेकिन, हमे तो किसी तरह काम चलाना ही है· आखिर अब तक चलाया है कि नही ?"

"तो तुम चलाओ किसी तरह काम···"

"मै तो चला ही लूंगा···मगर तुम ··। मेलेखोव खानदान की हो न···खून कहाँ जाएगा ! वही रग ला रहा है इस वक्त।"

"खून से तुम्हारा मतलब ?"

"मतलब यह है कि तुम्हारे खानदान ने हमेशा इन्कलाब को पीठ दिखलाई है और वही खून तुम्हारी रगो मे भी दौड रहा है।" मीशा ने सधे हुए स्वर मे कहा और मेज से उठ गया। उसकी आँखे फर्श पर गड गईं और होठ काँपने लगे। पत्नी की ओर देखे बिना बोला—"अगर दुबारा तुम्हारे मुँह से इस तरह की बात निकली तो तुम अलग और मे अलग· समझी ! तुम्हारी बातो से दोस्ती नही, दुश्मनी टपकती है·· दोस्त नही दुश्मन हो तुम !"

इस पर दून्या कुछ कहने को हुई, पर मीशा ने त्यौरी चढाकर उसकी ओर देखा और मुट्ठी उठाई। भारी आवाज से बोला—"जबान बद कर !"

दून्या ने बिना किसी झिझक के पति को घूरकर देखा और एक क्षण के बाद, शात स्वर मे प्रसन्नता से भरकर बोली—"खैर···हटाओ··· यह भी कोई बात हुई· हम नमक के बिना भी काम चला लेंगे।" इसके बाद वह ज़रा देर चुप रही और फिर मीशा की मनभावन मुस्कान होठो पर सजाती हुई बोली—"नाराज न हो मीशा ! अगर तुम हर छोटी-मोटी बात पर हम औरतो से बिगड़ने लगे तो हो लिया···फिर तो, तुम्हे इसी से छुट्टी न मिलेगी कभी ! अरे, मेरी-जैसी बुद्धू औरत से तुम कुछ उम्मीद ही क्यो करते हो ?···अच्छा यह

बतलाओ कि उबले फल ले आऊँ तुम्हारे लिए या दही लोगे ?"

दून्या कम-उम्र होने के बावजूद काफी दुनियादार थी। उसे अच्छी तरह पता था कि कब अपनी बात पर अडा जाए और कब पीछे हटकर समझौता कर लिया जाए।

और फिर, पन्द्रह दिन बाद ग्रिगोरी का एक पत्र आया। उसने लिखा—"मैं रैंगेल के मोर्चे पर जख्मी हो गया हूँ। अच्छा होते ही शायद फौज से छुट्टी मिल जाएगी।" दून्या ने मीशा को सब-कुछ बतलाया और पूछा—"मीशा, ग्रिगोरी घर आ जाएगा तो कैसे-क्या करेंगे हम लोग ?"

"हम अपनी झोपडी मे चले चलेंगे···वह यहाँ रहेगा··बस, ज़मीन-जायदाद मे साझा रहेगा।"

"वैसे भी हम साथ नही रह सकते·· मुझे तो लगता है कि वह अकसीनिया को ले आएगा यहाँ।"

"अगर रह सकते तो भी मैं तुम्हारे भाई के साथ एक ही मकान मे कभी न रहता।" मीशा ने तडपकर उत्तर दिया।

दून्या ने आश्चर्य से भरकर आँखे ऊपर की, "भला ऐसा क्यो, मीशा ?"

"इस क्यो का जवाब तो तुम खुद भी अच्छी तरह जानती हो।"

"शायद इसलिए कि उसने गोरे गारदो का साथ दिया है ?"

"बिल्कुल ठीक समझा तुमने !"

"यानी आज तुम उसे कितना नापसंद करते हो, और एक ज़माना था कि तुम दोनो कितने दोस्त थे !"

दून्या चरखा कातने लगी और चरखा एक लय-तान के साथ अपने गीत गुनगुनाने लगा। पर, अचानक ही सूत टूट गया, तो दून्या ने चक्के पर हथेली रखी, सूत के दोनो सिरे एक साथ ऐंठे और पति की ओर देखे बिना पूछा—"क्यो मीशा, ग्रिगोरी आएगा तो कज्ज़ाको की उसकी नौकरी का क्या होगा ?"

"उस पर मुकदमा चलेगा···अदालत बैठेगी।"

"लेकिन, क्या सज़ा दी जाएगी उसे ?"

"यह मैं कैसे बतला सकता हूँ·· मै कोई जज तो हूँ नही।"

"उसे गोली से तो नही उडा दिया जाएगा ?"

मीशा ने पलग पर सोते मीशात्का और पोल्युशका पर एक निग डाली, उनकी साँसो की आहट ली और आवाज़ नीची करते हुए बोला—"उडाया जा सकता है।"

दून्या ने आगे कुछ और नही पूछा और अगले दिन गाय दुहने के बाद अकसीनिया के यहाँ गई।

अकसीनिया ने लोहे के बर्तन मे पानी भरकर कोयलो पर रखा और हाथ से सीना दबाया। दून्या ने उसका तमतमाया चेहरा देखा तो बोली—"खुशी से फूली न समाओ ! मेरा आदमी कहता है कि मुकदमा चलेगा तो उसकी जान आसानी से न छूटेगी। क्या सजा मिलेगी उसे, यह ऊपर वाला ही जाने !"

अकसीनिया की आँसू-भरी, लौ देती आँखो मे एक क्षण के लिए आशका और भय घुल उठा। पर, फिर अपनी मुस्कान को ज्यो-का-त्यो सहेजते हुए झटके से पूछा—"लेकिन, आखिर किसलिए ?"

"बगावत के लिए·· हर बात के लिए···"

"बकवास है ! उस पर मुकदमा-वुकदमा कुछ नही चलेगा। तुम्हारा मिखाइल इस मामले मे कुछ नही जानता। सिर्फ बनता बहुत है, जैसे कि दुनिया की हर बात जानता है।"

"शायद न चले मुकदमा।" दून्या यह कहकर पल-भर को शांत हो गई और फिर मुँह से निकलती आह दबाती हुई बोली—"मीशा ग्रिगोरी से बहुत ही नाराज़ है और इस बात का मेरे दिल पर पत्थर-सा धरा रहता है। मै तुम्हे बतला नही सकती कि कितना बोझ रहता है मेरे मन पर ! ग्रिगोरी के लिए जी बहुत ही दुखी रहता है। दुबारा जख्मी हो गया है···उसकी जिन्दगी तो जैसे तार-तार होकर रह गई है।"

"खैर, आने तो दो उसे, हम लोग बच्चो को साथ लेकर कही छिप रहेंगे।" अकसीनिया ने परेशानी से कहा।

पता नही क्यो, उसने सिर का रूमाल खोला, फिर सिर पर बाँधा

श्रौर बेच के बर्तन यो ही इधर से उठाकर उधर श्रौर उधर से हटाकर इधर रखने लगी। उसके मन मे जो तूफान उठा, वह जैसे सम्हाल में ही न ग्राया। दून्या ने देखा कि वह बेच पर बैठी तो उसके हाथ काँपते रहे श्रौर वह अपने पुराने, फटे-पुराने ऐप्रन की धुटनो की सिलवटें बराबर करती रही।

दून्या के गले मे जैसे कोई चीज़ आकर अटक गई। उसका जी चाहा कि वह कही चली जाए श्रौर फूट-फूटकर रोए। शात भाव से बोली—"ग्रिगोरी वापस आ रहा है···पर देखो कि माँ को उसे दुबारा देखना बदा न था·· अच्छा, मैं चली···मुझे स्टोव जलाना है।"

गलियारे मे अकसीनिया ने दून्या की गर्दन मशीन की तरह चूम ली। इसके बाद लपककर उसका हाथ अपने हाथ मे लिया श्रौर उस पर भी होठ रख दिए।

"खुश हो तुम?" दून्या ने दबी हुई, काँपती आवाज़ मे पूछा।

"हाँ·· खुश हूँ·· थोड़ी खुश तो ज़रूर हूँ।" अकसीनिया ने हँसते हुए जवाब दिया श्रौर अपने पलको के छलछलाते आँसुओ पर मुस्कान का पर्दा डाल दिया।

: ६ :

ग्रिगोरी को लाल सेना के विघटित सेनापति के रूप मे मिलेरोवो स्टेशन पर गाडी श्रौर घोडो की व्यवस्था मिली। उसने घर के रास्ते मे हर उक्रइनी बस्ती मे घोडे बदले श्रौर वह उसी दिन ऊपरी दोन की सीमा मे पहुँच गया। लेकिन पहले कज़्ज़ाक गाँव मे प्रवेश करते ही, लाल सेना से अभी-अभी लौटा एक युवक क्रातिकारी समिति का अध्यक्ष उससे बोला—"कॉमरेड कमाण्डर, आपको बैलो से काम चलाना पड़ेगा···हमारे यहाँ गाँव-भर मे घोड़ा एक है श्रौर उसका भी एक पैर बेकार है। बात यह है कि फौज के पीछे हटते वक्त सभी घोडे कुबान मे छूट गए।"

"शायद उस एक घोडे से ही मेरा काम चल जाए।" ग्रिगोरी ने मेज़ पर उँगलियाँ बजाते श्रौर अध्यक्ष की खुशी से चमकती आँखो

मे आँखें डालते हुए कहा।

"वह घोडा आप लेगे तो कभी भी अपने गाँव न पहुँच पाएँगे··· एक हफ्ते के बाद भी रास्ते मे ही नजर आएँगे·· लेकिन फिक्र न करें ·· हमारे यहाँ बैल एक-से-एक अच्छे है···तेज चलते है · और बैलगाडी तो यो भी व्येशेन्स्काया जाएगी···टेलीफोन के थोडे-से तार वहाँ भेजने है···लडाई के दौरान यहाँ फँसे रह गए थे।···यानी बैलगाडी से जाएँगे तो फिर आपको सवारी अदलने-बदलने की जरूरत न पड़ेगी···आप ऐन दरवाजे तक पहुँचा दिए जाएँगे।·· "

फिर अध्यक्ष ने अपनी बाईं आँख दबाई और आँख मारकर मुस्कराते हुए बोला—"हम आपकी गाडी के लिए अच्छे-से-अच्छे बैल देंगे, और गाडी हाँकने के लिए एक जवान बेवा साथ कर देगे। हमारे यहाँ एक औरत है, जो बहुत ही गरम है···इतनी गरम है कि दूसरी उस तरह की ढूँढे नही मिलेगी। यानी उसके साथ आपको पता भी नही चलेगा और आप घर पहुँच जाएँगे···मैं खुद फौज मे रहा हूँ, इसलिए सब जानता हूँ कि फौजी को क्या चाहिए और क्या नही।"

ग्रिगोरी ने बार-बार सोचा और मन-ही-मन तय किया—'उधर जाने वाली किसी भी गाडी का इन्तजार करना बेकार होगा और पैदल जाना मुमकिन नही है। रास्ता लम्बा है, इसलिए चलो बैलगाडी ही सही।'

और फिर गाडी एक घटे के अन्दर-अन्दर आ गई। पुरानी गाडी के पहिये बुरी तरह चरमराते रहे। पीछे का ढाँचा टूटा दीखा और लापरवाही से लदी सूखी घास के लच्छे जहाँ-तहाँ झूलते नज़र आए। ···'यह है लडाई का करिश्मा!' ग्रिगोरी ने सवारी देखकर सोचा।

गाडीवान औरत चाबुक नचाती, बैलों की बगल-बगल पैदल आई। औरत का बदन खबसूरत था और वह खुद काफी सुन्दर। पर भारी-भारी छातियाँ कद के हिसाब से निकलती हुई थी और हुस्न को जैसे बिगाडती थी। गोल ठोडी पर तिरछा-सा दाग था, और इस दाग से उसकी उम्र बढती थी। चेहरा गुलाबी भूरा था और नाक की हड्डी के पास ज्वार के बीजों-सी सुनहरी चित्तियाँ थी।···

औरत ने अपना रूमाल ठीक करते हुए आँखे सिकोडी, ग्रिगोरी को सिर से पैर तक देखा और पूछा—"तुम्हे ले चलना है मुझे ?"

ग्रिगोरी सीढी से उठा और उसने अपना बरानकोट कन्धे पर डाला। बोला—"हाँ मै ही चलूँगा···तार लाद लिए तुमने ?"

"आखिर तुम क्या सोचते हो कि क्या हूँ मैं ?" कज्ज़ाक औरत बजती हुई आवाज मे चिल्ला पडी—"ये लोग हर दिन मुझे कही-न-कही भेज देते है। और मेरे लिए कोई-न-कोई काम निकाल लेते हैं। आखिर इन लोगो ने समझा क्या है मुझे ? लादना हो तो खुद लादें तार, वरना मैं गाडी खाली ले जाऊँगी।"

इस पर भी उसने तार की गरारियाँ घसीटकर गाडी पर लादी। अध्यक्ष से जोर-ज़ोर से जाने क्या-क्या कहा-सुना और बीच-बीच मे ग्रिगोरी को कनखी से देखा। अध्यक्ष हँसा और उसने उस जवान औरत को यो देखा जैसे कि उसकी तारीफ करते थक न रहा हो। बीच-बीच मे ग्रिगोरी को आँख मारी, जैसे कि कह रहा हो—'देखा आपने, ऐसी औरतें है हमारे यहाँ ! कहा नही था मैंने आपसे ?'

गाँव के पार भूरा बदरग स्तेपी यहाँ से दूर वहाँ तक फैला रहा और पतझर का नाम दोहराता रहा। सडक के पार के जुते हुए खेतो से धुएँ का मटमैला-भूरा रिबन हवा मे लहराता रहा। हलवाहे झाड-झखाड़ और चरागाह की सूखी घास वगैरा जलाते रहे। नतीजा यह कि धुएँ की बू से ग्रिगोरी के दिमाग मे पुरानी यादें हरी हो गई और उसका मन कुरेदने लगी। उसे लगा कि पतझर के दिनो मे सुनसान स्तेपी मे कभी वह भी खेत जोतता था। रात होने पर आसमान के अँधेरे से नहाते शून्य मे चमचमाते हुए सितारो को एकटक देखता रहता था, क्षितिज मे उडते कलहसो की कीकें सुनता रहता था।···

वह गाड़ी मे बैठे-ही-बैठे खिसका, सूखी घास की तरफ बढा और गाड़ीवान औरत को देखने लगा। बोला—"खूबसूरत औरत हो तुम··· क्या उम्र है तुम्हारी ?"

"ऐसी ही कोई साठ साल।" उसने सिर्फ आँखो-ही-आँखो मुस्कराते हुए शोखी से जवाब दिया।

"नही, मज़ाक न करो···ठीक-ठीक बतलाओ।"

"बीस साल की हूँ···"

"और बेवा हो?"

"हाँ···"

"तुम्हारा आदमी कैसे मरा?"

"उसे मार डाला गया···"

"अभी हाल मे?"

"नही, दो साल पहले···"

"बगावत के वक्त?"

"नही, बाद मे···पतझर के दिनो मे···"

"लेकिन उसके बाद अब तुम्हारा काम कैसे चलता है?"

"अरे काम का क्या, वह तो किसी तरह चल ही जाता है।"

"अकेलापन खलता नही तुम्हे?"

औरत ने उसे गौर से देखा और मुस्कान छिपाने के लिए होठो पर रूमाल खीच लिया। इसके साथ ही उसकी आवाज और भारी हो गई और उसमे एक नयापन आ गया। बोली—"आदमी काम मे बझा रहे तो अकेला-दुकेला कुछ भी नही लगता।"

"लेकिन आदमी के बिना जिन्दगी वीरान और सूनी नही लगती?"

"नही, मैं अपनी सास के साथ रहती हूँ और खेत मे काम इतना रहता है कि सिर उठाने का मौका नही मिलता।"

"पर आदमी के बिना तुम्हारा काम कैसे चलता है?"

औरत ने अपना चेहरा उसकी ओर मोड़ा। उसके गालो पर लाली छिटक गई और आँखो मे चिनगारियाँ फूटने और बुझने लगी—"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"मतलब तो मेरा साफ ही है।"

उसने अपना रूमाल होठो से हटाया और जमुहाई लेती हुई बोली—"नेमत की इस जिन्दगी मे कोई कमी नही है। दुनिया मे हज़ारो लोग ऐसे हैं जो दूसरों की खुशी के लिए सभी कुछ कर देते हैं।" वह एक क्षण रुकी और फिर कहने लगी—"अपने आदमी के साथ

ज़िन्दगी का मजा लेने का कोई खास मौका नही मिला मुझे। हम लोग सिर्फ एक महीने तक साथ रहे और फिर उसे लडाई मे खीच लिया गया।···मेरा तो काम उसके बिना भी चल ही जाता है···अब तो कुछ आसानी है···जवान कज़्ज़ाक गाँव मे लौट आए हैं ··पहले जरा मुश्किल थी···हे···गजे···हे ··ट···ट···तो फौजी जी, यह है मेरी ज़िन्दगी··· समझ गए न तुम !"

ग्रिगोरी ने आगे कुछ नही कहा···उसका मन ही न हुआ, ऐसी घुटन महसूस हुई उसे···उसे तो बात शुरू करने के लिए ही पछतावा होने लगा।

ऊँचे, अच्छी खिलाई-पिलाई वाले बैल उसी शान और नपे-तुले कदमो से चलते रहे। उनमे से एक का बायाँ सीग कभी टूट गया था। और फिर माथे के आर-पार उग आया था।···

ग्रिगोरी कुहनी टेककर आधी आँखें मूँदकर गाडी मे लेट गया और याद करने लगा कि बचपन मे और फिर बाद मे बडे होने पर उसका कैसे-कैसे बैलो से पाला पडा। उन सभी के रग, देह और स्वभाव अलग-अलग थे। सीग तक एक के दूसरे से न मिलते थे। एक बार उसके पास एक ऐसा बैल था जिसका सीग इस बैल के सीग की तरह ही कटा और मुडा हुआ था। जानवर बडा ही बिगडैल और चालाक था। सदा अपनी लाल-लाल आँखे नचाते हुए, कनखी से देखता, पीछे से आदमी के पास आने पर लात चलाने की कोशिश करता, और रातो को ढोरो के साथ चरने को छोड दिए जाने पर या तो भागकर घर आ जाता या इससे भी बुरा काम करता कि जगल या दूर घाटियो मे जा छिपता। फिर ग्रिगोरी उसकी तलाश मे घोडे पर सवार होकर दिन-दिन-भर पूरे-का-पूरा स्तेपी मँझाता फिरता और जब पूरी तरह निराश हो जाता तो सहसा ही किसी दर्रे के तल मे किसी अभेद्य कँटीली झाडी मे या किसी सघन जगली सेब के पेड के नीचे खडा मिल जाता। वह टूटे सीग वाला शैतान गर्दन गरियावन से बाहर निकाल लेता। रात को ढोरो के बाडे के फाटक की आड हटा देता, बाहर निकल जाता, तैरकर दोन पार कर लेता और चरागाह मे

घूमता फिरता। इस तरह ग्रिगोरी को बहुत ही तकलीफ देता और तरह-तरह से परेशान करता।···

सो उसने औरत से पूछा—"कैसा है यह टूटे सीग वाला बैल?··· बिगड़ैल तो नही है न?"

"नही···लेकिन क्यो···यह सवाल कहाँ से उठ गया?"

"कुछ नही, सिर्फ यो ही पूछ लिया·· थोडी दिलचस्पी हुई।"

"सिर्फ बडे काम का लफ्ज है···आदमी के पास और कुछ कहने को न हो, तो इससे बडी मदद मिलती है।"

ग्रिगोरी फिर चुप हो रहा। गुजरे हुए जमाने, शाति से भरे उन वर्षो, उस समय के कामकाज और लडाई से किसी तरह का कोई सम्बन्ध न रखने वाली हर चीज के बारे मे सोचना उसे बहुत ही प्यारा लगा। बात यह है कि इन सात वर्षों मे वह लडाई से इस बुरी तरह ऊब गया था कि कुछ न पूछिए। फलत· लडाई या उससे जुडी हुई किसी भी घटना का ध्यान आते ही उसका जी मिचलाने लगता था और खीझ से उसके हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे।

लडाई से उसका जी भर गया था और उसने उससे छुटकारा ले लिया था। आखिरकार अब वह घर लौट रहा था, नये सिरे से गाँव-घर के काम मे लगने और अपने बच्चो और अकसीनिया के साथ चैन से रहने। मोर्चे पर ही उसने फैसला कर लिया था—बच्चो को पालने और हमेशा पास रहने के लिए अकसीनिया को बुलाकर अपने साथ रखने का। उसे लगा कि इस कहानी का भी अन्त होना ही चाहिए, और जब अन्त होना ही है तो जितनी जल्दी हो जाए, उतना ही अच्छा···।

उस समय वह कल्पना करने लगा कि घर पहुँचने पर इस तरह मैं ट्यूनिक और बूट उतारूँगा, इस तरह चौडे पजे के सेडिल पहनूँगा, इस तरह सफेद ऊनी मौजे में पतलून के पाँयचे खोसूँगा और ऊनी जैकेट पर घर का बुना कोट डालकर इस तरह खेत मे जाऊँगा।···उसने सोचा, हल के हत्थे थामकर नम लीको के किनारे-किनारे चलने मे बडा मज़ा आएगा···नथुने टूटती मिट्टी की ताज़ी सोधी बास और हल की फाल से कटी घास की तीखी गध से भर उठेंगे···अरे और जगह की तो मिट्टी

और घास की महक तक कुछ दूसरे ही ढंग की होती है···पोलैंड, उक्रइन और क्रीमिया मे कितनी ही बार मैंने चिरायते का डठल लेकर हथेली में मला और सूँघा तो मन ने नफरत से कहा—'नहीं' यह महक अपने यहाँ के चिरायते की महक-सी नही है···बिलकुल ही अलग है···'

पर, गाडीवान औरत तो उसके इन विचारो मे हिस्सा बँटा नही पाई। बेचारी को चुप्पी काटने लगी और उसका मन बात करने को मचलने लगा। उसने बैलो को हाँकना बन्द कर दिया, आराम से जमकर बैठ गई और चाबुक से खिलवाड करते हुए ग्रिगोरी के गम्भीर चेहरे और अधमुँदी आँखो को गौर से देखने लगी। अन्दर-ही-अन्दर बोली—'आदमी की उम्र ऐसी कुछ ज्यादा नही है। हालाँकि बाल सफेद हैं··· पर, आदमी अपने-आपमे कुछ अजीब ही है। हर वक्त आँखे सिकोड़े रहता है। आखिर इसके माथे पर बल क्यो पडे रहते हैं? कोई देखे तो समझे कि थकान से इस तरह चूर है, जैसे कोई घोडा समझकर इसे गाडी मे जोतता रहा है।···लगता है कि अपने जमाने मे काफी भोगना पडा है इसे! ··लेकिन, आदमी देखने-सुनने मे बुरा ज़रा भी नही है ··सिर्फ यह है कि सिर के साथ-साथ मूँछो के भी काफी बाल सफेद है···इतना न हो तो सोना-ही-सोना है ··पर, यह इतना सोचता क्यो है? पहले तो लगा कि आदमी खुशमिज़ाज है और कुछ हँसी-खुशी की बातें करेगा, पर वह तो चुप हो गया ··और मुँह भी खोला तो जाने क्यो बैल के बारे मे पूछताछ करने लगा। इसे यह पता नही कि किस चीज़ के बारे मे बात करे और किस चीज़ के बारे मे न करे? पर, हो सकता है कि आदमी तबीयत से शर्मीला हो ··वैसे लगता तो नही · आँखो मे एक तरह की सख्ती है·· नही, कज्जाक शानदार है···सिर्फ़ जाने क्यो अजीब-अजीब है थोडा-सा! तो, सिए रह अपने होठ, कुबडा-शैतान कही का! मुझे बड़ी ज़रूरत पडी है तेरी! मैं भी अपनी ज़बान पर ताला लगाए रह सकती हूँ।···घर जाकर बीवी से मिलने की बेचैनी है! · खैर, यह चाहता है तो यही सही···लगाए रहे चुप···इससे बडा भला होगा तेरा!"

औरत गाड़ी के बाजू से टिक गई और धीरे-धीरे गाने लगी। दिन

का पहला पहर अब भी अपनी बहार पर रहा। सडक की पहरेदारी करती, पिछले साल की भटकटैया की परछाईं ने जैसे कि बार-बार दोहराया—अभी क्या है, दोपहर के बाद देखना, मेरी परछाईं चौगुनी से भी ज्यादा नज़र आएगी।

स्तेपी का पूरा-का-पूरा मैदान इस तरह गुमसुम रहा, इस तरह सुन्न रहा, जैसे कि किसी ने जादू से बाँध दिया हो। धूप मे मामूली गरमी महसूस हुई। हवा के हलके झोके सूखी हुई, ललछरी-भूरी घास की पत्तियो को बिना आवाज किए, हलके-हलके हिलाते-डुलाते रहे। न कही चिडिया की चहचहाहट सुनाई पडी और न कही जगली चूहे की सीटी। पीलेपन की झाईं मारते नीले आसमान मे न कही कोई चील उड़ती दीखी और न कही कोई बाज़। केवल एक छाया सडक के आर-पार फिसली और जब तक ग्रिगोरी सिर उठाकर देखे, तब तक राख के रग का मटमैला सारग जोर-जोर से पख मारता उधर से उड-कर दूर के एक ढूह पर जा बैठा। वहाँ एक खड्ड का साया दूर की बकाइनी उदासियो मे घुलता रहा।···

ऐसे गहरे उदास सन्नाटे का अनुभव ग्रिगोरी को इसके पहले सिर्फ पतझर के बाद के दिनो मे हुआ। उस समय उसे अकसर ऐसा लगा था जैसे कि मोथा-घास का जो पौधा हवा की चपेट मे आया, वह सूखी घास के ऊपर सरसराता चला गया और फिर स्तेपी को पार करता चला गया दूर—बहुत दूर।···

सडक कही खत्म होती ही नजर न आई। वह चक्कर लगाकर ढाल के ऊपर चढी, किसी दर्रे मे उतरी, और फिर किसी पठार की चोटी पर चढ गई। और, ऐसे मे वही वीरान स्तेपी हर तरफ पसरा दीखता रहा और चरागाहे इस तरह फैली लगती रही जैसे कि इनका कही अत ही न हो।

सहसा ही ग्रिगोरी ने ढाल पर मैपल का एक झुरमुट देखा तो उसकी आँखे खुशी से चमक उठी। पहले पाले से ऐंठी उसकी पत्तियाँ चमकती रही और उनका रग झुटपुटे के वक्त का-सा जामनी लगता रहा। ऐसा लगा जैसे कि किसी ने किसी पड़ाव के अलाव के ठण्डे पड़ते

अंगारे उन पर छिड़क दिए हों। ··

"तुम्हारा नाम क्या है, भले आदमी ?" गाड़ीवान औरत ने ग्रिगोरी के कंधे को चाबुक से धीरे से छूते हुए पूछा।

वह चौंककर उसकी तरफ मुड़ गया। पर, वह किसी और तरफ देखने लगी। ग्रिगोरी बोला—"मेरा नाम है, ग्रिगोरी···और तुम्हारा ?"

'मेरा नाम क्या···जिस नाम से चाहो पुकार लो।"

"चाहे जिस नाम से चाहो पुकार लो, के मानी क्या ? तुम बतलाती क्यों नहीं ?"

"मैं तो इस चुप्पी से थक गई। चुप्पी साधे-साधे आधा दिन गुज़र गया···मेरा मुँह सूखने लगा है···पर, तुम इतने उदास-उदास-से क्यों हो, ग्रीशा ?"

"मगर, जश्न मनाने को भी क्या है ?"

"क्यों नहीं है ··घर जा रहे हो···तुम्हें तो खुश होना चाहिए।"

"मेरी हँसी-खुशी के दिन निकल गए।"

"हँसी-खुशी के दिन निकल गए ! यानी, बूढ़े हो गए तुम ! पर, इतनी कम उम्र में भी तुम्हारे बाल इस तरह सफेद क्यों हो गए हैं ?"

"यानी, तुम तो सभी कुछ जानना चाहती हो···कह सकती हो कि ऐसे आराम की ज़िन्दगी मैंने अब तक बिताई है कि वक्त के पहले ही बूढ़ा हो गया हूँ।"

"ग्रीशा, तुम्हारी बीवी है ?"

"हाँ, है···और, मेरी सलाह मानो तो तुम भी जल्दी ही दूसरा आदमी तलाश लो।"

"आखिर क्यों ?"

"इसलिए कि तुम खिलाड़ी तबीयत से कुछ ज्यादा हो !"

"तो, क्या यह कोई बहुत बुरी बात है ?"

"हाँ, बहुत बुरी बात भी साबित हो सकती है···एक बार एक तुम्हारी ही तरह की खिलाड़ी औरत से मेरी मुलाकात हुई···उसका आदमी भी मर चुका था···सो, वह मज़े लेती रही, लेती रही, मगर फिर उसकी नाक कटकर गिरने को हो गई।"

"उफ···हद है !" औरत ने इस प्रकार बनकर कहा जैसे कि सहज ही आशंकित हो उठी हो···पर, फिर तुरन्त ही व्यावहारिक ढग से बोली—"बेवा औरत की ज़िन्दगी होती ही ऐसी है। मैं तो कहती हूँ कि भेडिए का डर हो तो जगल मे जाओ ही क्यो !"

ग्रिगोरी ने उस पर निगाह डाली तो वह दाँत भीचकर अन्दर-ही-अन्दर हँसती दीखी। उसका झूलता हुआ ऊपरी होठ फडकता रहा और झुकी हुई आँखे शरारत से चमकती रही।···ग्रिगोरी हँस पडा और उसने अपना हाथ उसके गरम, गोल घुटने पर रख दिया। हमदर्दी दिखलाते हुए बोला—"बेचारी···बेचारी ! इन बीस बरसो की जिन्दगी मे ही कितना दुख-दर्द देखा और सहा है !"

पर, दूसरे ही क्षण औरत के चेहरे से खुशी बिजली के कौधे की तरह लापता हो गई। उसने झटककर ग्रिगोरी का हाथ हटा दिया। उसकी भौहे चढ गई और गाल इस तरह तमतमा उठे कि नाक की हड्डी के पास की सारी चित्तियाँ गायब हो गईं। बोली—"हमदर्दी, घर पहुँचने पर, अपनी बीवी के साथ दिखलाना ! मेरे साथ हमदर्दी दिखलाने वाले ऐसे भी काफी है···तुम्हारी मुझे कोई जरूरत नही।"

"सुनो तो, बिगडो नही।"

"उफ···ऐसी-तैसी मे जाओ तुम।"

"मैने तो यह बात इसलिए कही, क्योकि मेरा दिल सचमुच तुम्हारे लिए दुखा।"

"तुम्हारा दुख जाए।" मर्दानी गाली सफाई से देखते-देखते उसके होठो पर आ गई और उसकी काली आँखे क्रोध से जलने लगी।

ग्रिगोरी ने पलकें उठाईं और परेशानी से बोला—"यानी तुम इस तरह की गाली भी इतनी आसानी से दे सकती हो। कैसी जगली हो तुम !"

"और, तुम क्या हो ? जुओ से भरा बरानकोट पहने कोई सन्त महात्मा। मैं तुम लोगो को अच्छी तरह जानती हूँ कि शादी कर लो फिर तो सब-कुछ चलता ही है। लेकिन यह बतलाओ कि यह महात्मागीरी क्या बहुत पहले से अख्तियार कर रखी है तुमने ?"

"नही, ऐसे कोई बहुत पहले से तो नही।" ग्रिगोरी ने हँसते हुए कहा।

"तो मेरे नाम पर यह कानून क्यो बघार रहे हो ? यह सब करने के लिए घर पर मेरी सास है।"

"अच्छा, बस करो···इसमे इतना बिगडने की क्या बात है ? बिल्कुल बेवकूफ हो तुम। मैंने तो महज एक बात कही।" ग्रिगोरी ने समझौते की कोशिश करते हुए कहा—"ज़रा देखो, हम लोग इधर बातो मे खोए रहे और उधर बैल सडक से बिल्कुल हट गए।"

ग्रिगोरी ने गाडी मे और आराम से लेटते हुए खुशमिज़ाज औरत पर एक सरसरी नज़र डाली तो उसकी आँखो मे आँसू छलछलाते हुए मिले। उसे बडा अटपटा-अटपटा-सा लगा। मन-ही-मन सोचा—'हो गया···यह है इनकी आखिरी ताकत···ये औरते हमेशा यही करती है।'

इसके ज़रा देर बाद ही उसने बरानकोट के सिरे से अपना चेहरा ढँक लिया और पीठ के बल पडकर सो गया। फिर उसकी आँख दोनो वक्त मिलने पर खुली तो साँझ के सितारे आसमान मे टिमटिमाते दीखे और उसके नथुने सूखी घास की ताज़ी प्यारी महक से भर उठे।

"बैलो के चारा-पानी का वक्त हो गया।" गाडीबान औरत बोली।

"ठीक···तो रोक लो गाडी।" ग्रिगोरी ने कहा, खुद बैलो की जोत खोली, फिर अपने थैले से गोश्त का एक टीन और रोटी निकाली। इधर-उधर से सूखी चैलियाँ जमाकर गाडी के पास ही आग जलाई और औरत से बोला—"आओ···बैठो, थोडा-सा खाना-पीना हो जाए। बहुत नाराज़ हो ली।"

औरत आग के पास बैठ गई और मुँह से बिना कुछ कहे, उसने बोरा झाड़कर रोटी और सूअर की, जाने कब की फफूँदी लगी चरबी का एक लोदा निकाला। खाने के बाद गाडी मे जाकर सो गई। पर ग्रिगोरी ने आग बनाए रखने के लिए कंडियो के कुछ टुकड़े उसमे डाले और फौजी तरीक़े से अलाव की बगल मे ही पड़ रहा। फिर बहुत देर तक आसमान

के जगमगाते सितारो को देखता और अपने बच्चों और अकसीनिया की इधर-उधर की बात सोचता रहा। इसके बाद औघा गया तो उसे जगाया उस हट्टी-कट्टी औरत की ज़ोरदार आवाज ने—"सो गए फौजी, नीद आई या नही ?"

ग्रिगोरी ने सिर उठाया तो देखा कि औरत गाडी से आधी लटकी हुई है···चेहरे पर नीचे की, ठडी पडती आग की हलकी-हलकी रोशनी पड रही है···गुलाबी चेहरे पर ताज़गी है, और रूमाल की बेल अँधेरे मे चमक रही है। औरत इस तरह मुस्कराई, जैसे कि उनके बीच किसी तरह की कोई कहा-सुनी कभी हुई ही न हो। साथ ही भौहे नचाती हुई बोली—"ऐसा न हो कि तुम जम जाओ वहाँ। ज़मीन ठडी है। बहुत सर्दी लग रही हो तो मेरे पास आ जाओ। मेरी भेड की खाल बहुत गरम है। आते हो ?"

ग्रिगोरी ने एक क्षण सोचा और फिर आह भरकर बोला—"शुक्रिया···मगर मेरा जी नही कहता ··अगर एक-दो साल पहले की बात होती तो···वैसे आग के पास हूँ···सर्दी से जमने की नौबत नही आएगी।"

औरत के मुँह से भी आह निकल गई। बोली—"जैसा तुम्हारा मन।" और फिर भेड की खाल उसने सिर तक खीच ली।

ज़रा देर बाद ग्रिगोरी उठा, अपनी चीज़-बस्त जमा की और तातारस्की तक की मज़िल पैदल ही मार देने का फैसला किया। सोचा—'मैं कमाण्डर हूँ···फौज से लौट रहा हूँ ··दिन मे सभी देखेगे···बैलगाडी पर सवार होकर गाँव पहुँचना बहुत ही भद्दा लगेगा। लोग हर तरफ बेकार की बातें करने और मजाक बनाने लगेगे। ऐसे भी तडका होते-होते तो वहाँ पहुँच ही जाऊँगा।'

उसने गाडीवान औरत को जगाया। बोला—"मैं पैदल जा रहा हूँ···यहाँ अकेले डर तो नही लगेगा तुम्हे ?"

"नही, मैं डरने वाली औरत नही···फिर पास ही तो एक गाँव है। लेकिन हुआ क्या ? सब्र नहीं करते बनता ?"

"नही···ठीक समझा तुमने। अच्छा···अलविदा···मुझे बुरा

आदमी न समझना।"

वह सड़क पर आया और उसने अपने बरानकोट का कॉलर उलटा लिया। वर्फ के पहले फूल उसकी बरौनियो पर बरसे। हवा उत्तर की ओर से बहने लगी, और उसकी साँस बर्फ की सुहानी महक से बस गई। ग्रिगोरी को यह महक सदा की जानी-पहचानी मालूम हुई।

कोशेवोइ व्येशेन्स्काया से शाम को लौटा। दून्या ने उसे फाटक के पास पहुँचते देखा तो जल्दी-जल्दी कन्धे पर शाल डाला। बाहर निकलकर अहाते मे आई और अपने पति की ओर चिन्ता से एकटक देखती हुई बोली—"आज सवेरे ग्रीशा आ गया।"

"तो तुम खुशियाँ मनाओ।" ग्रीशा ने तटस्थ भाव से बात मे परिहास घोलते हुए कहा और ज़ोर से होठ भीचते हुए बावर्चीखाने मे आया। इस बीच उसके गालो की हड्डियो के नीचे की माँस-पेशियाँ थरथराती रही। दूसरी ओर बूआ के पहनाए, सफेद फ्रॉक मे सजी-बजी पोल्युशका अपने पापा के घुटनो पर सवार बैठी रही। पर बहनोई को देखते ही ग्रिगोरी ने बच्ची को धीरे से फर्श पर बैठा दिया और मुस्कराकर अपना बडा साँवला हाथ आगे बढाते हुए उससे मिलने को लपका। उसने तो उसे अपनी बाँहो मे भरना तक चाहा, पर उसकी स्नेहहीन, भावशून्य गम्भीर आँखे देखते ही अपना मन मार लिया। बोला—"प्रीवियत मीशा!"

"प्रीवियत!"

"एक ज़माना हुआ तुमसे मिले···लगता है कि पूरी एक सदी बाद मुलाकात हो रही है।"

"हाँ, सचमुच ज़माना हुआ···तुम्हारा घर लौटना मुबारक।"

"शुक्रिया···अब तो हम नज़दीकी रिश्तेदार हैं एक-दूसरे के?"

"सो तो है···पर तुम्हारे गाल पर यह खून कैसा है?"

"कुछ नही, जल्दी मे दाढी बनाते कट गया।"

दोनो मेज़ के किनारे आ बैठे और एक-दूसरे को ग़ौर से देखने लगे। उनकी निगाहो मे जितना अटपटापन रहा उतना ही परायापन।

फलतः गम्भीरता से बातचीत प्रारम्भ करना सम्भव न लगा। फिर भी मीशा ने बडे आत्म-सयम से काम लिया और फार्म और फार्म मे होने वाले परिवर्तनो की चर्चा छेड दी।

ग्रिगोरी खिडकी से पहली निलछरी बर्फ से ढकी धरती और सेब के पेडो की नगी डालो को एकटक देखता रहा। मिखाइल से इस तरह मिलने की बात शायद ही कभी उसके दिमाग मे आई हो।

फिर, जल्दी ही मिखाइल बाहर चला गया। गलियारे मे उसने सिल्ली पर रगड-रगडकर अपने चाकू की धार तेज की और दून्या से बोला—"किसी मेमने को हलाल करने के लिए किसी को देखने जा रहा हूँ···घर का मालिक घर आया है तो आखिर उसकी खातिर तो होनी ही चाहिए। तुम दौडकर जाओ और कही से थोडी-सी वोदका ले आओ। नही, ठहरो·· तुम प्रोखोर के पास जाओ और उससे कहो कि वह, जहाँ से भी हो, वोदका लेकर आए···इसके लिए उसे दुनिया के दूसरे छोर तक जक जाना पडे, तब भी कोई बात नही। यह काम वह तुमसे बेहतर कर सकता है। और देखो, साथ ही उसे शाम को यहाँ आने की दावत भी दे आना।"

दून्या का चेहरा खुशी से खिल उठा और उसने अपने पति को मौन कृतज्ञता से भरी दृष्टि से देखा। मन-ही-मन सोचा—'शायद आगे सब-कुछ अच्छा-ही-अच्छा हो···लडाई ये लोग कर चुके···अब है क्या जिसे लेकर झगडा करेंगे ये दोनो ? नीली छतरीवाले ऐसा कर कि ये अक्ल से काम करें !' प्रोखोर की झोपडी की तरफ बढते हुए उसका अन्तर आशा से भर गया और आधे घटे के अन्दर-अन्दर प्रोखोर हाँफता हुआ भागा आया।

"ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच···प्यारे ग्रिगोरी·· मैंने तो सोचा था कि तुमसे अब शायद ही मुलाकात हो।" वह रुआँसी आवाज मे चीखा और ड्योढी पर लड़खडा गया तो हाथ की वोदका-भरी सुराही टूटते-टूटते बची।

उसने सुबकते, मुट्ठी से आँखें पोछते और आँसुओ से तर मूँछो पर हाथ फेरते हुए ग्रिगोरी को गले लगाया। ग्रिगोरी के गले मे भी कुछ

ग्रा ग्रटका, पर उसने ग्रपने को सम्हाल लिया । फिर भी बुरी तरह द्रवित होते हुए उसने ग्रपने वफादार ग्रर्दली की पीठ थपथपाई ग्रौर ग्रस्फुट स्वर मे बोला—"यानी हमारी मुलाकात फिर हो गई···बडी खुशी हुई है···प्रोखोर, मुझे सचमुच बडी खुशी हो रही है । मगर बुड्ढे, तू इस तरह रो क्यो रहा है ? मन कमज़ोर हो गया है ? मन के कल-पुर्ज़े ढीले हो गए हैं ? ग्रच्छा यह बतला कि तेरा हाथ कैसा है ? यानी तेरी बीवी ने तेरा दूसरा हाथ ग्रभी तक नही तोडा ?"

प्रोखोर ने नाक बारम्बार छिनकी ग्रौर ग्रपनी भेड की खाल उतारी ।

"ग्ररे बुढिया की कुछ न पूछो, ग्रब तो हम दोनो पेडकी जोडे की तरह रहते है । जैसे तुमने ग्रभी-ग्रभी देखा, मेरा दूसरा हाथ ग्रब तक सही-सलामत है, ग्रौर गोरे गारदो ने जो हाथ काट दिया था वह भी दुबारा उग रहा है· 'ऊपरवाला देखने वाला है । एक साल के ग्रन्दर-ग्रन्दर उस पर भी उँगलियाँ न ग्रा जाएँ, तब कहना ।" प्रोखोर ने हमेशा की तरह हँसते ग्रौर ग्रपनी छूँछी ग्रास्तीन झुलाते हुए कहा ।

लडाई ने उन्हे सिखला दिया था ग्रपनी सच्ची भावनाग्रो पर मुस्कान का पर्दा डाल लेना ग्रौर रोटियो ग्रौर बातो दोनो को ही खासा नमकीन बना लेना । इसलिए ग्रिगोरी इसी तरह हँसता ग्रौर मजाक करता रहा—"बुड्ढे बकरे, क्या हाल है ज़िन्दगी के ? रफतार बदस्तूर तेज़ है ?"

"ग्ररे बूढा हुग्रा तो वह पुरानी बात ग्रब कहाँ से ग्राएगी ? उतनी तेज़ी तो ग्रब सपने की बात हो गई है ।"

"मुझसे ग्रलग होने के बाद फिर कुछ नही फाँसा तुमने ?"

"क्या मतलब ?"

"मतलब क्या···ग्ररे पिछले जाडे मे जिस माल को लेकर दून की ले रहे थे, वह हाथ लगा कि नही ?"

"पैन्तेलेयेविच, क्या कह रहे हो तुम ! ऊपर वाला बचाए ऐसे गुनाहो से ! ग्रब उस ऐयाशी से फायदा भी क्या ? दूसरे, एक हाथ से बात भी क्या बनेगी ! यह सब तो ग्रब तुम्हारे लिए है···जवान ग्रादमी

के धन्धे है ये सब ! मेरा तो अब वह वक्त है कि अपनी बुढिया से कह दूँ ले भई, बची-बचाई चिकनई से अपने तवे चिकना ले।"

खाइयो मे एक-दूसरे का साथ देने वाले दोनो खडे एक-दूसरे को देखते और हँसते-हँसाते रहे। इस भेट की खुशी ही जैसे उनके सम्हाले न सम्हली।

"लडाई को हमेशा-हमेशा के लिए सलाम कर आए ?" प्रोखोर ने पूछा।

"हाँ हमेशा-हमेशा को सलाम कर आया।"

"आखिरकार पहुँचे किस ओहदे तक ?"

"रेजीमेट के कमाण्डर के बाद दूसरी जगह थी मेरी।"

"फिर इतनी जल्दी वापस कैसे भेज दिए गए ?"

ग्रिगोरी के चेहरे पर एक बादल-सा घिर आया। रुखाई ने बोला—"उनके लिए मेरा कोई इस्तेमाल नही रह गया शायद।"

"यह कैसे ?"

"पता नही···शायद मेरे पिछले रिकार्ड की वजह से।"

"लेकिन तुम्हे तो अफसरो का चुनाव करने वाले खास कमीशन से चुना था·· फिर पिछली कारगुजारियो का सवाल कैसे उठा ?"

"कौन क्या कह सकता है !"

"लेकिन···मिखाइल कहाँ है· नजर नही आता ?"

"अहाते मे है···ढोरो को ठिकाने लगा रहा है।"

प्रोखोर ग्रिगोरी के और पास आया और आवाज धीमी करते हुए बोला—"इन लोगो ने प्लातोन र्याबचिकोव को गोली से उडा दिया···कोई एक महीने पहले।"

"सचमुच ?"

"ऊपर वाला गवाह है !"

इसी समय बरसाती का दरवाजा चरमराया।

"बातें अब बाद मे होगी।" प्रोखोर जरा जोर से बोला—"तो साथी कमाण्डर तुम्हारे घर आने की खुशी मे वोदका तो चलेगी न ? मैं जाकर मिखाइल को बुला लाऊँ ?"

"हाँ बुला लो ज़रा।"

दून्या ने मेज़ लगाई। उसका मन उमडा कि अपने भाई की खातिर के लिए क्या-क्या न कर डाले। उसने एक साफ तौलिया उसके घुटने पर बिछाया। तरबूज़ के सिरके की तश्तरी खीचकर उसकी ओर कर दी और उसका गिलास कम-से-कम पाँच बार पोछा। वह ग्रिगोरी से सकोच करती और 'तुम' या 'तुम्हे' कहने मे सकुचाती लगी।

मिखाइल मेज़ पर पहले-पहले बिलकुल सन्न बैठा रहा और ग्रिगोरी की एक एक बात बडे ध्यान से सुनता रहा। वोदका उसने थोडी पी और जितनी भी पी, हिचक-हिचककर पी। पर प्रोखोर गिलास-पर-गिलास ढालता रहा। आखिरकार उसका चेहरा बिलकुल जर्द पड गया और वह अपनी मूँछो पर और भी जल्दी-जल्दी हाथ फेरने लगा।

और फिर बच्चो को सुलाने के बाद दून्या ने उबले हुए गोश्त की एक तश्तरी मेज पर रखी और ग्रिगोरी से फुसफुसाकर कहा—"भई मै दौडकर अकसीनिया को बुलाए लाती हूँ·· ठीक रहेगा न ?"

ग्रिगोरी ने मुँह से कुछ नही कहा, सिर्फ सिर हिला दिया। सारी शाम उसका मन कलपता रहा था। उसने यह बात किसी के सामने नही आने दी थी। पर दून्या ने उसे हर आहट पर कान देते और कनखी से दरवाज़े की ओर घूरते देखा था। लडकी की निगाह काफी तेज़ थी। उससे कुछ भी बच सकना मुश्किल ही था··।

"और वह कुबान-कज्जाक तेरेशचेंको···अब भी ट्रूप की कमान उसके हाथो मे है ?" प्रोखोर ने गिलास को इस तरह हाथो से जकडे-ही-जकडे पूछा, जैसे कि कोई उसे छीनकर भाग जाने की कोशिश कर रहा हो।

जवाब मिला—"उसे ल्वोव मे मार डाला गया।"

"खैर···ऊपर वाला उस पर रहम करे! घुडसवारो मे शानदार फौजी था वह!" प्रोखोर ने जल्दी-जल्दी क्रॉस बनाया और कोशेवोइ की मुस्कान के व्यग्य की अनदेखी करते हुए ज़ोर की चुस्की ली। "और क्या हालचाल हैं उस आदमी के·· अजीब-सा नाम था उसका ? अरे वही जो दाहिने बाजू अपना घोड़ा रखता था···क्या नाम था उसका ?

···शायद मैबोरोदा था···वह मोटा, हँसमुख उक्रइन था न एक···उसने ब्रोदी मे एक पोलिश अफसर को बीच से दो कर दिया था···वह ज़िन्दा और ठीक-ठाक तो है ?"

"बिलकुल स्टैलियन है अब तक । उसका तबादला मशीनगन वाली स्क्वैड्रन मे कर दिया गया है ।"

"और अपना घोडा तुमने किसको सौपा ?"

"मेरे पास दूसरा घोडा आ गया था बाद मे ।"

"तो उस सितारे वाले घोडे का क्या हुआ ?"

"उसे तोप के गोले का एक टुकडा लगा और वह मर गया ।"

"लडाई मे ?"

"हमने एक गॉव मे पडाव डाल रखा था कि तोपो के गोले आ-आकर गिरने लगे, और उसी मे उसका काम तमाम हो गया ।"

"आह···बहुत ही बुरा हुआ···कैसा शानदार घोडा था वह !" प्रोखोर ने आह भरी और फिर होठ गिलास पर जमा लिए ।

इसी समय बाहर दरवाज़ा खडका तो ग्रिगोरी चौक-सा उठा । अकसीनिया ने ड्योढी के इस पार कदम रखा और अस्पष्ट शब्दो मे कहा—"प्रीवियत !" इसके बाद, बुरी तरह हॉफते और ग्रिगोरी को फटी-फटी चमचमाती ऑखो से एकटक देखते हुए उसने रूमाल उतारा और दून्या के बगल मे आ बैठी । उसकी भौहो, बरौनियो और पीले गालो से बर्फ के फूल एक-एक करके उडने लगे । उसने अपनी ऑखें सिकोडकर हथेली से चेहरा पोछा, लम्बी सॉस ली और केवल तब अपने ऊपर काबू पाते हुए भावना से गद्गद दृष्टि से ग्रिगोरी की ओर देखा ।

"साथी-फौजो ! अकसीनिया ! हम साथ-साथ पीछे हटे । हमने साथ-साथ जुओ को खून पिलाया···। दु ख है कि कुबान मे तुम्हे छोड देना पडा, पर और हम करते भी क्या ?" प्रोखोर ने अपना गिलास अकसीनिया की ओर बढाया तो वोदका मेज़ पर छलक गई । बोला—"पियो, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच की सेहत का जाम पियो ! घर वापस आया है···इसे मुबारकबाद दो । मैंने तुमसे कहा था न कि वह सही-सलामत लौटेगा···और देखो कि लौट आया । सामने बैठा है···नई

पिन की तरह चमचमा रहा है।"

"वह काफी मजे मे है···उसकी बात सुनने की जरूरत नही।" ग्रिगोरी हँसा और उसने प्रोखोर की तरफ आँखो से इशारा किया।

अकसीनिया ग्रिगोरी और दून्या के सामने झुकी और गिलास थोडा उठाया। और उठाने मे उसे आशका हुई कि दूसरे लोग उसके हाथो का काँपना कही देख न ले।

"ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच, यह है तुम्हारी अवाई, और दून्या, यह है तुम्हारी खुशी का जाम!"

"और, तुम्हारा···तुम्हारे गम का जाम?" प्रोखोर ने हँसी का ठहाका लगाया और मिखाइल को बगल मे कुहनी मारी।

अकसीनिया के चेहरे पर लाली दौड गई। उसके कानो के छोटे-छोटे नीचे के हिस्से भी एकदम गुलाबी हो गए। लेकिन प्रोखोर की ओर जमकर क्रोध से देखते हुए उसने जवाब दिया—"और यह है मेरी खुशी·· मेरी दिली खुशी का जाम।"

प्रोखोर का हथियार जैसे किसी ने उसके हाथ से छीन लिया। वैसे इस साफगोई का उसके दिल पर बडा गहरा असर पडा। चिल्लाकर बोला—"लगाओ होठो से···ऊपर वाले के नाम पर लगाओ होठो से और एक घूंट मे ही आखिरी बूँद तक गले के नीचे उतार लो· इतनी साफ बात करनी आती है तो इतनी ही सफाई से पीना भी आनी चाहिए। अच्छी शराब कोई गिलास मे छोडता है तो कलख से मेरा कलेजा टूक-टूक हो जाता है।"

अकसीनिया देर तक वहाँ न रही। जितनी देर ठहरना उसने ठीक समझा, उतने समय के बाद वह उठ खड़ी हुई। इस बीच भी उसने अपने मन के राजा की ओर कभी-कभी ही देखा और सो भी एकाध क्षण को ही देखा। उसने ग्रिगोरी की निगाह जान-बूझकर बचाई और बरबस दूसरो की तरफ देखती रही, क्योकि ग्रिगोरी के प्रति तटस्थ रहने का ढोग भरना उसे सम्भव न लगा और दूसरो के सामने अपने मन को खोलकर रख देना उसने ठीक न समझा।

बस, तो ग्रिगोरी की निगाह से उसकी निगाह सीधे-सीधे सिर्फ तब

मिली जब वह दहलीज तक पहुँच गई। उस निगाह मे जाने कितना प्यार और जाने कितना समर्पण घुला रहा। यही कारण है कि वह एक निगाह ही जाने कितना कुछ कह गई। ग्रिगोरी उठा और उसे पहुँचाने के लिए बाहर गया। नशे मे धुत प्रोखोर पीछे से चीखा—"बहुत देर न लगाना। देर लगाई तो एक बूँद न मिलेगी। हम लोग पी-पाकर बराबर कर देंगे।"

ग्रिगोरी ने बरसाती मे पहुँचने पर, मुँह से एक शब्द कहे बिना, अकसीनिया की भौहे और होठ चूमे और पूछा—"कहो अकसीनिया, क्या हाल है ?"

"उफ·· इस वक्त एक साँस मे ही सब-कुछ बतला देना मेरे लिए मुमकिन नही है·· कल आना घर···आओगे न ?"

"जरूर आऊँगा।"

औरत घर की तरफ इस तरह तेजी से लपकी जैसे कि वहाँ कोई जरूरी काम पडा हो। फिर, सिर्फ अपने दरवाजे पर पहुँचने के बाद उसने चाल धीमी की और चरमराती हुई सीढियो पर होशियारी से चढी। अपने मन के विचारो मे खोने और अपने अन्तर की खुशी को सहेजने के लिए उसने जल्दी-से-जल्दी एकान्त चाहा। यह प्रसन्नता उसे बहुत ही अप्रत्याशित लगी।

उसने अपनी जैकेट और रूमाल एक तरफ लुढ़काया और दीया-बत्ती किए बिना सोने के कमरे मे पहुँची। रात का गहरा बकाइनी अँधेरा बिना झिलमिली की खिडकी से चोरी-चोरी अन्दर आता रहा। स्टोव के पीछे एक चमगादड सुर मे गाता रहा। अकसीनिया ने आदत के अनुसार शीशे मे अपना चेहरा देखा, और अँधेरे मे कुछ भी न दीखने के बावजूद बाल ठीक किए। ब्लाउज के सीने की सलवटे दूर की, फिर खिडकी के पास आई और बेंच पर ढह पडी।

जिन्दगी मे कितनी ही बार उसकी अभिलाषाएँ झूठी हो चुकी थीं। शायद इसलिए उसकी नई खुशी की जगह बार-बार चिन्ता लेती रही। सवाल उठा—जिन्दगी आखिर कौन-सा मोड लेगी अब ? आगे आखिर बदा क्या है ? हर औरत की तरह मेरी जिन्दगी मे भी खुशी नजर

ग्रा रही है, लेकिन इसका सही वक्त क्या सचमुच निकल नही, गया है ?

ग्रौर, वह सारी शाम परेशान ग्रौर चूर-चूर रही। खिडकी के ठडे पाले से मढे शीशे से गाल सटाए, ग्रन्धकार मे दृष्टि गडाए, चुपचाप, उदास बैठी रही। ग्रधेरे मे सिर्फ बर्फ ही हलके-हलके चमकती रही।

ग्रिगोरी मेज के किनारे ग्रा बैठा। फिर उसने वोदका से गिलास भरा ग्रौर एक साँस मे ही पूरा गिलास खाली कर दिया।

"ग्रच्छी है न ?" प्रोखोर ने पूछा।

"मै कुछ नही कह सकता ··मैंने तो एक जमाने मे चखी तक नही।"

"बिल्कुल जारो वाली वोदका है···ऊपर वाला गवाह है।" प्रोखोर ने विश्वास के साथ कहा ग्रौर झूमते हुए मीशा को बाँहो मे भर लिया। मीशा बोला, "तुम्हे शराब की उतनी ही तमीज है जितनी गाय के बछडे को मोरी के पानी की होती है। मगर·· जहाँ तक शराब का मामला है, मै जानता हूँ कि कौन चीज क्या होती है। उफ क्या-क्या शराबें पी है मैने ग्रपने जमाने मे! एक शराब ऐसी होती है कि डाट खोलने के पहले ही उसकी बोतल से झाग निकलने लगते हैं···बिल्कुल वैसे ही जैसे पागल कुत्ते के मुँह से ऊपर वाला झूठ न बुलवाए···पोलैंड मे हमने मोर्चा तोडा ग्रौर घोडो पर सवार होकर ग्रागे बढे तो एकाएक एक खास जागीर मे जा निकले। उस जागीर मे दोमजिला या शायद दो से भी ज्यादा मजिलो का एक मकान था···ग्रहाते मे मवेशी बिल्कुल गँजे हुए थे · जाने कितनी तरह की चिडियाँ इधर-उधर फुदकती फिर रही थी ··थूकने को भी जगह नही थी कही···कहने की गरज यह कि वह जमीदार बिल्कुल शहजादे की तरह रहता था···हम लोग पहुँचे तो वहाँ ग्रफसरो की दावत चल रही थी· हमारी उम्मीद किसे थी···सो, हमने तमाम लोगो को बगिया ग्रौर सीढियो पर काटकर फेक दिया·· सिर्फ एक ग्रादमी को कैद किया···ग्रादमी देखने-सुनने मे बडा ग्रफसर लगा···कैद होते ही उसकी मूँछे झूल गईं ग्रौर डर से उसका सारा बदन सुन्न पड गया···ग्रिगोरी उस वक्त था नही·· उसे स्टाफ के

दफतर ने बुला लिया था···सो, मालिक हम ही थे···हम सीढियो से उतरकर कमरो मे गये तो बडी-सी मेज सजी-सजाई देखी हमने···क्या-क्या चीजें दिखाई पडी मेज पर···हम खडे-खडे तारीफें करते रहे, पर भूखे होने पर भी खाने की हिम्मत हमारी न पडी···हमने सोचा—कौन जाने, इन चीजो मे कही जहर-वहर न मिला हो। इस बीच हमारा कैदी हमे कनखी से देखता रहा···बस, तो हमने उसे हुक्म दिया—"ए···खाओ तो ये चीजें ज़रा।" और वह लाख न चाहने पर भी खाने लगा। हमने कहा—"पियो, यह शराब।"···और उसने पी ली···होते-होते हमने उसे हर तश्तरी से थोडाथोडा खिला दिया और बोतल से थोडा-थोडा पिला दिया···नतीजा यह हुआ कि उसका पेट घडे की तरह फूलता गया और हम खडे-खडे तरसते और मुँह से लार टपकाते रहे···और फिर उसे हर तरह ठीक-ठाक देखकर हम भी मेज पर टूट पडे ··फिर तो हमने खूब माल उडाए और खूब ढाली···इसी वक्त उस अफसर ने ताबडतोड कै करनी शुरू की···हमने सोचा—'भाड मे जाए। अपना काम तो हो लिया। यह जहरीला साँप जान-बूझकर इस तरह ठूँसता चला गया··· और अब इसने हमारी भीजाने ली।' तो, अपनी-अपनी तलवारें खीचकर हम सब उसकी ओर झपटे, पर उसने अपने हाथ-पैर दोनो हिलाए और चीखकर बोला—"आपकी मेहरबानी से मैनें थोडा ज्यादा खा लिया है··· मगर आप परेशान न हो···खाने मे किसी तरह की कोई खराबी नही है।" बस, तो हमने फिर शराब पीनी शुरू कर दी···हमने एक बोतल खोली तो उसकी काग बन्दूक की गोली की तरह हवा मे उडी और झाग का एक बादल-सा छा गया और फिर उस शराब का ऐसा नशा चढा कि उस रात मै तीन-तीन बार घोडे से गिरा···यानी घोड़े की पीठ पर सवार होते ही हर बार जैसे हवा मुझे उडा-उडा ले गई···मगर वही शराब, जो इस ज़माने मे एकाध गिलास खाली पेट पीने को मिल जाए तो मै सौ बरस पार कर जाऊँ···लेकिन आज जो हालत है उसमे कौन जी सकता है इतना? मिसाल के तौर पर इसे शराब कहेगा कोई? यह तो ऐसी है कि इसे पियो तो अपने वक्त के पहले ही सिधार जाओ।" प्रोखोर ने सिर हिलाकर वोदका की सुराही की तरफ इशारा किया

और गिलास दुबारा लबालब भर लिया।

दून्या बच्चो के पास सोने को चली गई। इसके जरा देर बाद ही प्रोखोर भी उठ गया, लडखडाते कदमो से भेड की खाल अपने कधो पर डाली और बोला—"मै खाली सुराही यहाँ से लेकर जाने से रहा। मेरी रूह गवाही नही देगी कि मैं खाली बरतन लेकर यहाँ से जाऊँ। घर पहुँचते ही बीवी मेरा बुखार उतारकर रख देगी···इस मामले मे उसका जवाब नही है। जाने कहाँ से एक-से-एक गदी गालियाँ खोज लाती है! मैं ज़रा भी पीकर घर पहुँचता हूँ कि वह मुझ पर बरसने लगती है— शराबी बुलडॉग · हथकटे कुत्ते···तू यह है, तू वह है।' इस पर मैं बडे ही ठडे दिमाग से, शराफत के साथ उसे समझाने की कोशिश करता हूँ—'तू बिल्कुल गधी है···कभी किसी बुलडॉग या हथकटे कुत्ते को तूने पीते देखा है? इस दुनिया मे तो ऐसे कुत्ते कही नज़र आते नही।' फिर तो यह होता है कि मै उसकी एक बेहूदी बात काटता हूँ तो वह दूसरी कह देती है, और दूसरी काटता हूँ तो तीसरी उगल देती है। और, फिर यह सिलसिला रात-भर चलता रहता है। कभी-कभी मै इन बातो से ऊब जाता हूँ, छानी मे जाकर सो जाता हूँ। फिर, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मैं पीकर घर पहुँचता हूँ और वह बिल्कुल गाली-गलौज नही करती। मगर, ऐसे में भी मैं सो नही पाता। किसी चीज की कमी जैसे खटकती है। बदन मे एक तरह की खुजली-सी होने लगती है, आँखें किसी भी तरह लगती ही नही और सारी मोहब्बत दम तोडती मालूम होती है। बस, तो मैं अपनी बीवी को छेड देता हूँ, और फिर उसके मुँह से फूल बरसने लगते हैं। आखिरकार मेरा सारा नशा काफूर हो जाता है। उस औरत के अन्दर कही-न-कही शैतान का बासा है, और मैं इस मामले मे कुछ भी नही कर सकता। मैं भी सोचता हूँ—चलने दो ··रियाज बढेगा। ठीक है कि नही? अच्छा, मैं चला, अलविदा! मगर, दूसरा मन करता है कि मैं अपनी औरत की नीद खराब न करूँ और अस्तबल मे ही रात बिता लूँ। क्या खयाल है?"

"घर पहुँच जाओगे आराम से?" ग्रिगोरी ने हँसते हुए पूछा।

"केकडे की रफ्तार से पहुँचूँगा' मगर पहुँच जाऊँगा। आखिर तो

मै कज्जाक हूँ···है कि नही ? तुम्हारे मुँह से ऐसा सवाल सुनकर मेरा दिमाग खराब हो गया है।"

"अच्छा···तो···जाओ!"

ग्रिगोरी ने प्रोखोर को छोटे फाटक तक पहुँचाया और फिर बावर्चीखाने मे लौट आया। बोला—"क्यो मिखाइल, हम बाते कर अपने मन हल्के कर ले ?"

"जरूर कर ले।"

वे मेज के आरपार आमने-सामने बैठ गये, मगर चुप रहे आए। अत मे ग्रिगोरी ने मौन तोडा—"हमारे बीच कोई-न-कोई दीवार है। तुम्हारे चेहरे से साफ है कि तुम्हारे जी मे कोई-न-कोई बात खटक रही है। मेरे वापस आने से तुम्हे खुशी नही हुई···ठीक है न ?"

"ठीक···तुमने ठीक समझा ··मुझे खुशी नही हुई।"

"क्यो नही हुई ?"

"एक परेशानी और बढी।"

"मै अपना पेट आप भर लूँगा···तुम फिक्र न करो।"

"यह बात मेरे दिमाग मे नही है।"

"फिर क्या है तुम्हारे दिमाग मे ?"

"हम एक-दूसरे के दुश्मन है।"

"है नही, कभी थे।"

"हाँ थे, और लगता है कि आगे भी रहेगे।"

"मैं नही समझता कि आखिर आगे भी क्यो रहेगे ?"

"तुम पर इत्मीनान नही किया जा सकता।"

"तुम बिल्कुल गलत बात कह रहे हो···बिल्कुल बकवास कर रहे हो।"

"नही, न मै गलत बात कह रहा हूँ और न बकवास कर रहा हूँ·· सवाल है कि ऐसे वक्त तुम फौज से वापस क्यो भेजे गये ? दे सकते हो इस सवाल का जवाब ?"

"मै बिल्कुल नही जानता।"

"नही, वजह तुम जानते हो, सिर्फ बतलाना नही चाहते···वे लोग

तुम पर यकीन नही करते—है न ?"

"अगर वे लोग मुझ पर यकीन न करते तो अपनी एक स्क्वैड्रन की कमान मुझे न सौपते।"

"यह कमान तो उन्होने शुरू मे सौपी थी ··लेकिन, तुम जब फौज मे रहने के लायक नही समझे गए तो बात साफ है, मेरे भाई !"

"पर, तुम मेरा यकीन करते हो या नही ?" ग्रिगोरी ने मीशा की आँखो मे आँखे डालते हुए पूछा।

"नही भेडिये को चाहे जितना खिलाओ-पिलाओ, मगर मुँह उसका जगल की ही तरफ रहता है !"

"तुम पी कुछ ज्यादा गए हो, मिखाइल !"

"छोडो यह बात ·नशा मुझे उतना ही है, जितना तुम्हे। उन लोगो ने तुम्हारा भरोसा वहाँ नही किया और वे तुम्हारा भरोसा यहाँ भी नही करेगे। समझे बात ?"

ग्रिगोरी चुप हो गया। उसने, यो ही, सिरके के खीरे का एक टुकडा तश्तरी से उठाया, कुचला और थूक दिया। मिखाइल बोला—"मेरी बीवी ने तुम्हे किरील-ग्रोमोव का किस्सा सुनाया ?"

"हाँ, सुनाया।"

"मुझे उसका भी यहाँ लौटना पसद नही आया और उसकी वापसी की बात सुनते ही मैने दिन के दिन···।"

ग्रिगोरी के चेहरे का रग उड़ गया और उसकी आँखो से क्रोध की चिनगारियाँ फूटने लगी—"यानी मै तुम्हारे लिए किरील-ग्रोमोव हूँ ?"

"चीखो मत···किस मानी मे उससे बेहतर हो तुम ?"

"खैर ··यह तो तुम जानते हो कि···"

"यह जानने और न जानने का सवाल नही है ··जानते तो हम सब-कुछ एक जमाने से है। अच्छा, मान लो कि तुम्हारी तरह ही मीत्का-कोरशुनोव भी लौट आए, तो मै क्या कोई जश्न मनाऊँगा··· नही, अच्छा होता कि तुमने गाँव मे अपना मुँह न दिखलाया होता।"

"तुम्हारे लिए अच्छा होता ?"

"मेरे लिए तो अच्छा होता ही, बाकी लोगो के लिए भी अच्छा होता···जरा धीरे से बात करो।"

"मेरा मुकाबला दूसरो से न करो।"

"ग्रिगोरी, मै तुमसे पहले ही कह चुका·· उस बात को लेकर सिर मारने से कोई फायदा नही। तुम किसी मानी मे बाकी लोगो से बेहतर नही। सच पूछो तो उनसे भी बदतर हो तुम। तुम उनसे कही ज्यादा खतरनाक हो।"

"कैसे खतरनाक हूँ मै ? तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"बात साफ है·· वे कुछ भी है तो मामूली कज्जाक है · मगर तुमने तो बगावत शुरू की है।"

"मैने बगावत शुरू नही की ··मै तो महज एक डिविजन का कमाडर था।"

"इतना काफी नही है क्या ?"

"काफी है या काफी नही है, यह तो सवाल ही नही है···अगर उस दिन शाम को लाल फौजी मुझे मार डालने के मनसूबे न बाँधते तो मै शायद बगावत मे हिस्सा ही न लेता।"

"अगर तुम फौजी अफसर न होते तो कोई तुम्हारे बदन को हाथ लगाने तक की बात न सोचता।"

"अगर फौज मे न लिया जाता तो अफसर मै होता ही नही··· यह तो बात को खीचना और तिल का ताड बनाना है।"

"बात तुम्हारी लम्बी भी है और सडी-गली भी···"

"खैर, जो बीत गया, वह तो बीत गया, उसके लिए अब किया भी क्या जा सकता है !"

दोनो चुपचाप धुआँ उडाने लगे। कोशेवोइ ने नाखून से सिगरेट की राख झाडते हुए कहा—"मै तुम्हारी बहादुरी के कारनामो के बारे मे सभी कुछ जानता हूँ। पूरी दास्तान सुन चुका हूँ। तुमने हमारे अनगिनत लोगो को तलवार के घाट उतार दिया। तुम्हे इस तरह, यहाँ अपनी आँखो के सामने पाना और बर्दाश्त करना, मेरे लिए जरा भी आसान नही है···यह कोई एक झटके मे भूल जाने की चीज़ नही।"

ग्रिगोरी व्यग्य से हँसा—'तुम्हारी याददाश्त के क्या कहने है ! तुमने मेरे भाई प्योत्र को काटकर फेक दिया। मैंने तो तुम्हे उसकी याद नही दिलाई—अगर हम हर बात याद करने पर आ गए तो इन्सानो की बजाय भेडियो का-सा बरताव करना पडेगा हमे।"

"हाँ, मैने प्योत्र को मारा·· मै उससे इन्कार नही करता···और, उस वक्त, अगर तुम मेरे हाथ आ गए होते तो तुम्हारी भी मै वैसी ही खातिर करता।"

"लेकिन मै···जब उन लोगो ने उस्त-खोपरस्काया मे इवान-अलेक्सेयेविच को कैद कर लिया तो मै भागा-भागा घर आया कि कही तुम उनके बीच न हो, और कज्जाक कही तुम्हे न मार डाले ··लगता है, उस वक्त मैंने कुछ ज्यादा जल्दबाज़ी से काम लिया।"

"क्या कहने है आपकी शराफत के ! ··मै सोच सकता हूँ कि अगर आप जीत जाते तो मुझसे किस तरह बातें करते ! आप मेरी बोटी-बोटी काटकर रख देते। यह तो वक्त की बात है कि आज आप इतने मेहरबान नजर आ रहे है · "

"हो सकता है कि दूसरे यही करते ··मै तो अपने हाथ गन्दे करता नही।"

"तो यह बात साफ हुई कि तुम किसी दूसरी मिट्टी के बने हो, और मैं किसी दूसरी मिट्टी का बना हूँ। ··जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं अपने दुश्मनो पर हाथ साफ करने से कभी नही हिचका, और जरूरत पडने पर आज भी मुँह से उफ करके नही दूँगा।" मिखाइल ने बाकी वोदका गिलासो मे उँडेली और पूछा—"पियोगे इसे ?"

"ठीक है ··पिये लेता हूँ ··ऐसी बातें इतनी सजीदगी से नही की जाती···।"

उन्होने आपस मे गिलास लडाए और शराब गले के नीचे उतार ली। ग्रिगोरी मेज़ की ओर आगे झुका और अपनी मूँछे ऐंठते हुए, अधमुँदी आँखो से मिखाइल को सिर से पैर तक देख गया।

"लेकिन तुम्हे मुझसे डर क्या है, मिखाइल ? तुम्हारा खयाल है कि मै सोवियत हुकूमत के खिलाफ दुबारा बगावत कर दूँगा ?"

"मुझे कोई डर नही है · लेकिन यह मै जरूर सोचता हूँ कि अगर कुछ हो गया तो फिर तुम उछलकर दूसरी तरफ पहुँच जाओगे।"

"तो क्या मै पोलो से नही मिल सकता था ? उस वक्त तो पूरी एक रेजीमेट की रेजीमेट पोलो से जा मिलती।"

"तुम यह कर नही सकते थे।"

"नही, यह बात नही है·· मैंने तो यह कभी चाहा ही नही। बात यह है कि मै अपने हिस्से की लडाई लड चुका और अब किसी की तरफ से लडने का मेरा जी नही। उम्र के हिसाब से कही ज्यादा लडाई देख चुका हूँ · बिलकुल चूर-चूर हो गया हूँ···हर चीज से ऊब गया हूँ··· क्या इन्कलाब से और क्या इन्कलाब के बदले किए जाने वाले इन्कलाब से ! सब-कुछ जाए ऐसी-तैसी मे·· बाकी जिन्दगी मैं अपने बच्चो के साथ बिताना चाहता हूँ···फिर से अपनी खेती-बारी मे लग जाना चाहता हूँ, और बस ! यकीन करो···मिखाइल·· मेरा यकीन करो ··दिल की पूरी ईमानदारी से कह रहा हूँ यह बात।"

लेकिन मिखाइल की दिलजमई किसी तरह न हुई। ग्रिगोरी ने सच्चाई समझी और आगे कुछ नही कहा। उसे क्षण-भर अपने ऊपर खीझ भी आई। सोचने लगा—'मैने अपनी तरफ से इतनी सफाई दी ही क्यो ? अपने को पाक-साफ करने की कोशिश ही की क्यो ? क्या जरूरत थी कि शराब के नशे मे इस तरह की बाते की जाएँ और मिखाइल की बेसिर-पैर की नसीहते सुनी जाएँ ? भाड मे जाए···' और वह उठ खडा हुआ। बोला—"आगे बात करना बिलकुल बेकार है···काफी बाते हो चुकी। आखिर मै तुमसे बस एक बात कहना चाहता हूँ—मेरे गले पर ही कुछ आ जाए तो बात और है, वरना मैं हुकूमत के खिलाफ कभी कुछ न करूँगा। लेकिन मेरी गर्दन पर कुछ आ ही जाएगा तो मैं अपना पूरा बचाव करूँगा। मै प्लातोन-र्याबचिकोव की तरह बगावत के नाम पर अपना सिर देने को तैयार नही।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब वही है, जो मै कह रहा हूँ। उन्हे चाहिए कि वे लाल फौज की मेरी खिदमत को समझे और उस खिदमत के सिलसिले मे

खाए जख्मो का लेखा-जोखा करे। मै बगावत के नाम पर जेल जाने को तैयार हूँ, लेकिन अगर तुम कहोगे कि नही, इसके लिए अपना सिर दो, तो मै कहूँगा कि यह नही होगा, माफ करो, जरूरत से जरा ज्यादा कीमत चाहते हो तुम।"

मिखाइल नफरत से हँसा—"क्या बात की है तुमने! क्रातिकारी अदालत या 'चेका' के लोग यह तो पूछेगे नही कि तुम क्या चाहते हो और क्या नही चाहते? वे तुमसे सौदेबाजी तो करेंगे नही। तुम एक बार मुजरिम साबित हुए कि हुए। फिर तो पुराने कर्ज साफ करने ही पडेगे।"

"खैर देखा जाएगा···।"

"बेशक···वह तो देखा ही जाएगा··।"

ग्रिगोरी ने अपनी पेटी और कमीज़ उठाई, भुनभुनाते हुए बूट उतारना शुरू किया और उनके टूटे हुए तल्लो को जरा ज्यादा गौर से देखते हुए बोला—"हम लोग क्या साथ रहेगे यहाँ?"

"इस सवाल के तय होने मे बहुत वक्त न लगेगा ··मैं अपनी जगह ठीक कराए लेता हूँ, और फिर वहाँ चला जाऊँगा।"

"हाँ हम दूर-ही-दूर रहे तभी अच्छा ·साथ हम नही रह सकते।"

"हाँ साथ हम सचमुच नही रह सकते।"

"खैर मै यह नही समझता था कि मेरे बारे मे तुम्हारी यह राय है ··फिर भी मेरा खयाल है कि··।"

"मेरे दिल मे जो कुछ था मैने तुमसे साफ-साफ कह दिया अच्छा यह बताओ कि तुम व्येशेन्स्काया कब जा रहे हो?"

"जल्दी ही किसी-न-किसी दिन हो आऊँगा।"

"यह कुछ नही···तुम्हे कल ही जाना होगा।"

"मैने अभी-अभी चालीस वर्स्ट की मजिल पैदल तय की है, और मै बुरी तरह थका हुआ हूँ। तो कल आराम करूँगा और परसो चला जाऊँगा वहाँ।"

"हुक्म तो फौरन ही नाम दर्ज कराने का है। तुम कल ही जाओ।"

"एक दिन आराम कर लेना कोई गुनाह है क्या? कही भाग तो

जाऊँगा नही।"

"कौन जाने कि क्या करो और क्या न करो तुम, मै तुम्हारी जिम्मे-दारी अपने ऊपर नही ले सकता।"

"कैसे सुअर हो गए हो तुम, मिखाइल···?" ग्रिगोरी ने अपने पहले के गहरे दोस्त के गम्भीर चेहरे की ओर देखकर आश्चर्य से कहा।

"देखो बेकार को सुअर-वुअर न बनाओ···मुझे यह सब सुनने की आदत नही है···" मिखाइल ने तेजी से साँस ली और अपनी आवाज ऊँची की—"ये फौजी अफसरो वाली अपनी आदते छोडो! तुम कल जाओ व्येशेन्स्काया ··अगर ऐसे न जाओगे तो मुझे सिपाहियो के साथ भेजना पडेगा तुम्हे ··समझे ?"

"हाँ समझ गया · अब सब-कुछ मेरी समझ मे आ गया।" ग्रिगोरी ने कमरे से बाहर जाते-जाते मिखाइल की पीठ की तरफ घृणा से देखा और फिर बिना कपडे उतारे उसी तरह पलग पर पड रहा।

बस तो सब-कुछ आशा के अनुरूप ही हुआ। आखिर ग्रिगोरी ने वापसी पर और उम्मीद ही किस तरह के बरताव की की थी ? आखिर उसने यह सोचा ही क्यो था कि लाल सेना के थोड़े दिनो के काम से पहले के सारे पाप धुल जाएँगे ? शायद मिखाइल ने ठीक ही कहा था कि हर चीज़ माफ नही की जाएगी और पुराने कर्जे तो पूरी तरह चुकता करने ही पडेगे· ।

ग्रिगोरी ने सपने मे देखा स्तेपी का खुला मैदान और मैदान मे हमले के लिए तैयार एक रेजीमेट। सहसा ही दूर से कमान की आवाज कान मे आई—"एक स्क्वैड्रन · !" इस आवाज के साथ ही ग्रिगोरी ने समझा कि उसके घोडे के बद कसे हुए नही है। तो उसने बदन का पूरा बोझ बाई रकाब पर डाला। काठी नीचे से फिसल गई। शर्म और डर से भरकर वह बन्द कसने के लिए घोड़े की पीठ से कूदकर नीचे आया। इसी समय घोडो की टापो की टपाटप एकाएक बढी और फिर तेज़ी से हलकी पड़ गई। पता चला कि रिजीमेट ने बिना उसके ही हमला बोल दिया···।

उसने करवट बदली और नीद खुली तो भर्राये गले की अपनी ही

कराह अपने कानो से सुनी।

खिडकी के बाहर नज़र दौडाई तो लगा कि दिन का उजाला अभी-अभी ही छिटकने लगा है और शायद रात को हवा ने झिलमिली खोल दी है···पाले से मढे शीशे से ढलते चाँद की चमचमाती थाली दीखी। ग्रिगोरी ने अपनी थैली खँखोरी और सिगरेट जलाई। उसका दिल अब तक जोर-ज़ोर से धडकता रहा। दिल ने कहा—'सपना था कि बकवास थी! यानी लडाई के वक्त और तुम पीछे छूट गए···! और सुबह की उन पहली घडियों मे एक बार भी उसके अन्तर ने यह न कहा कि अभी क्या है, अभी तो कई बार लडाई पर जाना पडेगा—सपने मे नही, होशहवास मे!'

· ७ :

दून्या दूध दुहने के खयाल से तडके ही उठ बैठी। ग्रिगोरी खाँसता और बावर्चीखाने मे चहलकदमी करता रहा। दून्या ने बच्चो को अच्छी तरह कम्बल ओढाया, फुर्ती से कपडे पहने और बावर्चीखाने मे आई। भाई बरानकोट के बटन बन्द करता दीखा।

"इतने सवेरे कहाँ जा रहे हो भैया?"

"जरा गाँव का एक चक्कर लगाने जा रहा हूँ ।

"पहले कुछ नाश्ता तो कर लो।"

"नही, कुछ भी खाने की तबीयत नही है···सिर दर्द कर रहा है।"

"तो नाश्ते के वक्त तक तो आ जाओगे न? मैं स्टोव जलाने जा ही रही हूँ।"

"मेरा इन्तज़ार न करना···मैं देर से लौटूँगा।"

ग्रिगोरी निकलकर सडक पर आया। अनुभव हुआ कि सुबह से ही बर्फ गलने लगी है, हवा दक्षिण की ओर से बढ रही है और उसमे नमी के साथ गरमी भी है।···सो मिट्टी-मिली बर्फ ग्रिगोरी के बूटो की एड़ियो से चिपक-चिपक गई। गाँव के मध्य भाग की ओर धीरे-धीरे कदम बढाते हुए बचपन से जाना-पहचाना एक-एक घर और एक-एक शेड उसने गौर से देखा। जैसे कि किसी अजनबी बस्ती मे आ

गया हो । पिछले साल कोशेवोइ ने सौदागरो के जो मकान और दुकाने जला दी थी, उनके अधजले काले खडहर चौक मे खडे मिले । गिर्जे की अघढही दीवार जैसे मुँह फैलाकर जम्हाई लेती रही ।

'ईटे स्टोव बनाने के काम आ गई होगी ।' ग्रिगोरी ने तटस्थ भाव से सोचा। छोटा गिरजा पिछले जमाने की तरह ही जमीन मे धँसता लगा । उसकी लम्बी बिना पालिश की छत मे जग नजर आई। दीवारे नमी से भूरी मालूम हुई । जहाँ का पलस्तर उखड गया था, वहाँ की चमकदार ताजी ईटे रह-रहकर बाहर झाँकती समझ पडी ।

सडके और गलियाँ वीरान मिली । कुएँ के पास दो-तीन निंदासी औरते उसकी बगल मे गुजरी । उन्होने झुककर उसका इस तरह अभिवादन किया, जैसे कि वह परदेसी हो । उसके आगे निकल जाने पर वे ठिठकी और उसे एकटक देखती रही ।

वह मुडा तो उसे ख़याल आया, कि माँ उसे और नताल्या की कब्र पर जाना चाहिए । बस तो वह कब्रगाह की सडक पर बढ चला, परन्तु कुछ दूर जाने के बाद रुक गया । वहाँ गए बिना भी उसे अपना मन काफी भारी और उदास लगा । मन-ही-मन बोला—'फिर कभी हो आऊँगा कब्रो पर !' · इस फैसले के साथ ही वह मुड दिया और उसके कदम प्रोखोर के घर की तरफ बढने लगे । रास्ते मे सोचने लगा—'माँ या नताल्या के लिए मेरे वहाँ जाने या न जाने से क्या फर्क पडता है ! उनके लिए दोनो बराबर है । उनकी रूहे आराम कर रही है । उनकी कब्रो पर बर्फ के फूल बिछे होगे, मगर अन्दर की जमीन जरूर ठडी होगी· खैर उन्होने अपना वक्त गुजारा 'जिन्दगी कितनी जल्दी सपने की तरह गुजर गई । अब वहाँ वे लोग अगल-बगल लेटी हुई है· मेरी बीवी और मेरी माँ·· प्योत्र और मेरी भाभी दार्या ··पूरा खानदान-का-खानदान दूसरी दुनिया मे पहुँच गया है · वहाँ उन सभी को चैन है··· सिर्फ मेरे पापा एक ऐसे है, जो अनजाने मुल्क मे पडे हुए है···अजनबियो के बीच, हो-न-हो वे ऊब रहे होगे···।"

इसके बाद ग्रिगोरी ने आसपास, इर्द-गिर्द नजर नही दौडाई । वह अपने पैरो और जमीन पर पडी गलती हुई बर्फ़ को एकटक देखता हुआ

आगे बढता गया । बर्फ इतनी मुलायम लगी, इतनी मासूम लगी कि कदमो के नीचे आ-आकर भी जैसे उसने अपना किसी तरह का कोई एहसास नही कराया ।

सहसा ही उसे अपने बच्चो का ध्यान हो आया । सोचने लगा—दोनो कितने अजीब हो गए है ! बिलकुल बँधे बँधे-से रहते है । बहुत ही कम बोलते है । इस उम्र मे तो ऐसा नही होना चाहिए । उनकी अपनी माँ थी तब तो वे ऐसे नही थे । मौत की बडी कीमत अदा की है उन्होने । हमेशा सहमे-सहमे-से मालूम होते है । ··और मुझे देखते ही पोल्युशका फूट क्यो पडी थी ? बच्चे किसी से मिलते है तो अकसर रोते तो नही ! वह तो बच्चा जैसे रही ही नही । आखिर मुझे देखने पर उसे किस बात का खयाल हो आया ? और मैंने उसे गोद मे लिया तो उसकी आँखे कौध आखिर क्यो उठी ? शायद अब तक उसने अपने पापा को मर गया माना हो, और उसके आने की उम्मीद ही न की हो । शायद इसीलिए उसे देखते ही डर गई हो । खैर इन बच्चो के लिए मुझे अपने ऊपर लानत बरसाने की जरूरत नही ··लेकिन इतना जरूर है कि मुझे अकसीनिया से कहना चाहिए कि अब वह उन्हे ममता दे और जहाँ तक हो सके माँ की कमी खलने न दे !·· हो सकता है कि वक्त के साथ उन्हे इस सौतेली माँ से भी लगाव हो जाए ! औरत भली है···दया-माया वाली है मुझे प्यार करती है । इसी नाते मेरे बच्चो को भी जरूर ही अपनायेगी और उन्हे जी-भर दुलार देगी · !'

पर यह विषय भी उसे काफी दर्द-भरा और भारी लगा ।

उसे सब-कुछ जैसा आसान लगा था, वैसा निकला नही । जिन्दगी अभी कुछ समय पहले जितनी सहज प्रतीत हुई थी, उतनी साबित नही हुई । अपने भोले-भाले स्वभाव और अपनी बाल-सुलभ सरलता के आधार पर उसने कभी सोचा था कि मै घर पहुँचा नही और मैंने अपने फौजी बरानकोट को उतारकर किसानो वाला कोट पहना नही कि सब-कुछ मुँह का कौर हुआ । उसने कभी सोचा था कि घर पर मुझसे कोई कुछ न कहेगा·· डाँट-फटकार बिलकुल न होगी सब कुछ अपने-आप ठीक-ठाक हो जाएगा । और मै अपनी जिन्दगी के आखिरी दिन

तक चैन से जिऊँगा···खेती-बारी करूँगा···खानदान पालूँगा···और मेरा खानदान दूसरो के लिए एक मिसाल होगा·· लेकिन नही, सपने जब सच्चाई के धरातल पर उतरे तो उनकी कलई देखते-देखते उतर गई···

वह जिकोव के घर पहुँचा तो छोटा फाटक एक कब्जे पर झूलता मिला। उसने उसे बडी होशियारी से खोला। प्रोखोर कायदे के जोडो वाले फेल्ट के बूट पहने, और तिकोनी टोपी अपनी आँखो तक खीचे, दूध की खाली बाल्टी झुलाता सीढियो की ओर बढता दीख पडा। बर्फ पर दूध की सफेद बूँदें जहाँ-तहाँ पडी रही।

"रात चैन से बीती, कॉमरेड-कमाण्डर ?" प्रोखोर ने ग्रिगोरी का अभिवादन किया।

"ऊपर वाले का रहम है।"

"सुबह भी थोडी-सी वोदका चाहिए थी—मेरा दिमाग तो बिलकुल ऐसा हो रहा है, जैसी यह खाली बाल्टी।"

"बात तो कायदे की कही है तुमने···मगर यह बाल्टी खाली क्यो है ? खुद गाय दुही है क्या ?"

प्रोखोर ने जवाब मे सिर हिलाया तो टोपी खोपडी के पहले हिस्से पर जा पहुँची। सहसा ही ग्रिगोरी का ध्यान गया तो उसे अपने मित्र का चेहरा गैर-मामूली तौर पर उदास लगा।

"अरे, मैं न दुहूँगा तो क्या वह शैतान की बच्ची गाय दुहेगी मेरे लिए ? हाँ, मैने ही दूध दुहा है। इसके बदले उसका पेट ऐंठ-ऐंठकर न रहे, तब कहना।" प्रोखोर ने क्रोध से बाल्टी एक तरफ को लुकाई और उसी रौ मे बोला—"आओ अन्दर चलें।"

"तुम्हारी बीवी ने दूध क्यो नही दुहा ?" ग्रिगोरी ने यो ही पूछा।

"शैतान लग गए है उसे।···मैं कल रात आया तो मुझे देखते ही हाथ धोकर पीछे पड गई। तमाम तकरीरें दे डाली·· हुक्म दे दिए और फिर बोली—'मै काले बेर बीनने के लिए गाडी से क्रूजलिन्स्की जा रही हूँ···मकसायेव की बहुएँ भी साथ जा रही हैं···।' मैंने मन-ही-मन कहा—'जाओ भी' तुम्हारा जी करे तो नाशपातियाँ बीनने जाओ···

जान तो छूटे तुमसे किसी तरह !'···फिर, मैं उठा, स्टोव जलाया और गाय दुही। दुहाई मे कही कोई गडबडी नही हुई। सोच सकते हो तुम कि आदमी एक हाथ से ऐसे-ऐसे काम भी कर सकता है ?"

"अरे ! तो तुम किसी औरत से कहते और वह दुह देती···निरे काठ के उल्लू हो तुम !"

"काठ का उल्लू होती है भेड़···माँ-मेरी की दावत के दिन तक अपनी माँ के थन से ही चिपकी रहती है, मगर मैं तो ज़िन्दगी-भर कभी ऐसे नही रहा। इसीलिए मैंने सोचा कि मैं ही कर लूंगा सब-कुछ। और आखिरकार कर भी लिया। मैं गाय के थनो के पास उकड़ूं बैठ गया। लेकिन, पहले तो वह एक जगह खडी नही हुई—कभी इधर को हट तो कभी उधर को हट···यह देखकर मैने अपनी टोपी उतार ली कि शायद इसे देखकर भडकती हो, मगर उससे भी कोई बात नही बनी। होते-होते मेरी कमीज़ पसीने से तर हो गई, तब कही वह सधी। फिर मैंने दूध निकालना शुरू किया और काम खत्म कर बाल्टी खीचने को हाथ बढाया कि गाय ने नाचना शुरू कर दिया। नतीजा यह कि बाल्टी एक तरफ को लुढक गई और मैं दूसरी तरफ को। यह तमाशा हुआ। वह गाय थोड़े ही है, वह तो शैतान है और इस शैतान के सीग है। मैंने उस जानवर के मुँह पर थूक दिया और चला आया। दूध के बिना भी काम चल जाएगा। थोड़ी शराब चलेगी।"

"घर मे है ?"

"एक बोतल है···जाने कब से छिपाकर रखे रहा हूँ।"

"हम दोनो के लिए काफी होगी।"

"आओ·· अन्दर तो आओ। मेरे मेहमान, कुछ अडे-वडे तलूं। दो सेकेंड मे तैयार हो जाएँगे।"

ग्रिगोरी ने सूअर की थोडी-सी चर्बी काटी और आग जलाने मे प्रोखोर की मदद की। फिर दोनो चुपचाप ध्यान से देखते रहे। चर्बी के छोटे-छोटे टुकडे छनछनाए, पिघले और फ्राइग-पैन मे फिसलने लगे। इसके बाद प्रोखोर ने देव-मूर्तियो के पीछे से गर्द से नहाई एक बोतल निकाली और सफाई देते हुए बोला—"अपनी बीवी की निगाहो से

बचाकर जो कुछ रखना चाहता हूँ, वह यही रखता हूँ मैं ।"

दोनो मित्र छोटे, खूब गरम सोने के कमरे मे बैठकर खाने-पीने और धीमे-धीमे बातें करने लगे । ठीक भी है···अगर ग्रिगोरी प्रोखोर से अपने मन की बात न कहता तो फिर किससे कहता ?

वह मेज के किनारे अपने लम्बे-लम्बे, कसे हुए पैर फैलाए बैठा रहा और गहरी, भारी, फटी-फटी-सी आवाज मे बातें करता रहा । बोला—"मैं जब तक फौज मे रहा या जब तक घर के रास्ते मे रहा, मैंने कितनी हसरत से सोचा कि लडाई का यह शैतानी रोज़गार खत्म···अब इस तरह अपनी धरती के सीने से लगकर रहूँगा···इस तरह अपने खानदान के लोगो के बीच आराम की ज़िन्दगी बसर करूँगा···आखिर सात साल तक घोडे से नीचे कदम न रखना, कोई मज़ाक बात तो है नही । इतने वक्त के बाद तो हर रात लडाई के सपने आने लगते है और वही सब तूफान नजर आते है कि या तो तुम दुश्मन को मार रहे हो या दुश्मन तुम्हे मार रहा है···लेकिन, प्रोखोर, अब लगता है कि हसरत पूरी कभी न होगी···मसूबे मसूबे ही रह जाएँगे·· मुझे तो दिखलाई यह पड रहा है कि ज़मीन की देखरेख करेंगे दूसरे लोग···उसे जोते-बोएँगे दूसरे लोग—मै नही···"

"मिखाइल से कल कोई बातचीत हुई ?"

"हाँ । तबीयत बाग-बाग हो गई ।"

"उसने कहा क्या ?"

ग्रिगोरी ने दो उँगलियो से तलवारो की कैंची बनाई । बोला—"यह है हमारी दोस्ती की सूरत । वह गोरे गारदो की मेरी नौकरी रह-रहकर मेरे चेहरे पर मारता है । उसका खयाल है कि मैं नई हुकूमत का दुश्मन हूँ और उसके लिए अपनी बगल मे छुरी छिपाए फिरता हूँ । उसे दुबारा बगावत के भडक उठने का डर है, लेकिन मुझे जर्रा बराबर तमन्ना नही है अब इस या उस बगावत की, यह बात वह समझता ही नही···बेवकूफ कही ।"

"यही बात उसने मुझसे कही थी ।"

ग्रिगोरी के होठो पर दर्द-भरी खोखली मुस्कान दौड़ गई । कहने

लगा—"पौलैण्ड की मार्च के वक्त हमें एक उक्रइन मिला और उसने अपने गाँव की हिफाजत के लिए हमसे हथियार माँगे। बात यह थी कि डाकुओ ने उसकी जगह लूट ली थी और उसके सारे ढोर-डगर काटकर फेंक दिए थे। पर रेजीमेट का कमांडर मेरे सामने बोला—'तुम्हे हथियार दें हम, ताकि तुम खुद डाकुओ से जा मिलो।' मगर वह उक्रइनी हँसा और बोला—'हमे हथियार-भर दे दो, साथी···फिर देखो हम डाकुओ को गाँव के पास न फटकने देंगे और तुम्हे भी गाँव से दूर-ही-दूर रखेंगे।' और इस वक्त बिल्कुल उसी इक्रइनी की तरह मेरा दिमाग काम कर रहा है···मैं सोचता हूँ कि कितना अच्छा होता कि तातारस्की मे न गोरे गारद आते और न लाल फौजी। मेरे खयाल से तो मेरे रिश्तेदार मीत्का कोरशुनोव और मिखाइल कोशेवोइ दोनो एक ही रग मे रगे हैं। मिखाइल सोचता है कि गोरे गारदो से मुझे इतनी मोहब्बत है कि मै उनके बिना जी नही सकता। उल्लू का पट्ठा कही का! मुझे उनसे सचमुच बडी मोहब्बत है। थोडे वक्त की बात है—हम क्रीमिया मे बढ रहे थे कि कोरनीलोव का एक नाटा-छोटा कर्नल मुझसे आ टकराया···अग्रेज़ी काट की मूँछे थी उसकी, सो मैंने ऐसे ठाठ से उसका हिसाब-किताब किया कि मेरा कलेजा खुशी से खिल गया। उस नाटे कर्नल के सिर पर बाकी रह गई आधी टोपी और धड पर रह गया आधा सिर···उसका अफसरो वाला सफेद तुर्रा तो हवा में उड़ता चला गया···ऐसी मोहब्बत है मुझे इन गोरे गारदो से! उन्होंने ज़िन्दगी मे मुझे कुछ कम तकलीफे नही दी है। मै अपने खून की कीमत अदा कर अफसर के ओहदे तक पहुँचा, लेकिन अफसरो के बीच मैं सदा हसो,की पाँत मे कौआ ही समझा गया। सूअर के बच्चो ने मुझे आदमी तो कभी समझा ही नही। मुझसे हाथ मिलाने मे उन्हे हमेशा घिन छूटी···गाज गिरे उन पर! इसके बाद तो उनका नाम लेने मे भी मेरा जी मिचलाने लगता है। और यह कहना तो कमाल ही है कि मैं दुबारा उनकी हुकूमत चाहता हूँ। यानी···मै जनरल फित्सालौरोव को यहाँ आने की दावत देना चाहता हूँ।···यह खेल भी एक बार कर देखा···पूरे एक साल तक हिचकियाँ आती रही। काफी हो लिया···सबक सीख

लिया मैंने···खुद मुझी पर बीती है ।"

ओखोर, गरम चर्बी मे रोटी तलते हुए बोला—"अब बगावत-अगावत तो होती नही । पहली बात तो यह कि कज्जाक ही कितने है ! जो वापस आए है उनकी भी आँखे खुल गई है । हमारे इन भाइयो ने लडाई मे इतना खून बहाया है और अब ये इतने होशियार और अमन-पसद हो गए है कि गर्दनो मे फदे डालकर भी इन्हे बगावत मे खीचना मुमकिन नही है । फिर यह भी है कि लोग चैन की जिन्दगी के लिए तडप रहे हैं। काश कि तुम लोगो को इस गरमी मे काम करते देखते ! उन्होंने सूखी घास की टालो पर टालें लगा डाली और कटाई करने पर आए तो एक दाना भी खेत मे बाकी नही छोडा । वे थकान से कराह रहे है, लेकिन इस पर भी इस तरह जुताई और बोआई कर रहे है, जैसे कि उनमे से हर एक सौ साल जीने के सपने देख रहा हो । नही, बगावत का तो सवाल उठाना ही बकबास है । बिल्कुल बेमतलब बात है । वैसे यह तो ऊपर वाला ही कह सकता है कि कज्ज़ाको के मन मे कब क्या आ जाएगा ।

"क्या आ जाएगा उनके मन मे ? क्या कहना चाहते हो तुम ?"

"मिसाल के लिए हमारे पडोसियो के दिमागो मे कुछ आ गया है···"

"क्या ?"

"क्या से क्या फर्क पड़ता है ! वोरोनेज़ के इलाके मे बोगुचार के पार कही लोगो ने सिर उठा लिए है ।"

"बेकार की बात है ।"

"नही, बेकार की बात बिल्कुल नही है । मिलिशिया के एक आदमी ने कल मुझे यह खबर दी है । लगता है कि अफसर वहाँ मिलिशिया भेजने का इरादा कर रहे है ।"

"वहाँ यानी कहाँ ?"

"मोनास्तिरश्चिना, सुखोई-दोनेत्स, पासेका, स्ताराया, नोवया कालीत्वा और ज़िले की और जगहो को । कहते है कि बगावत बड़े पैमाने पर की गई है ।"

"लेकिन इसका जिक्र तुमने कल क्यों नही किया ··गधे कही के?"

"मिखाइल के सामने मैंने जान-बूझकर यह बात नही छेड़ी। फिर ऐसी बाते करने मे मजा भी तो कुछ नही है। मैं तो अगावत-बगावत का नाम तक सुनना नही चाहता।"

ग्रिगोरी का चेहरा उतर गया। कुछ देर सोचने के बाद बोला—"बुरी खबर सुनाई तुमने।"

"लेकिन, तुम्हें इससे क्या लेना-देना! खोखोलों को होना हो तो वे फिक्र से दुबले हों। इतनी ठोकरें पड़ेंगी कि चूतड कटकर गिर जाएँगे। तब समझ में आएगा उनके कि सिर उठाना किसे कहते हैं। मगर, इसका तुमसे या मुझसे कोई मतलब नहीं। मुझे उन खोखोलो के लिए कोई अफसोस नही।"

"ऐसा नही है···इससे मेरी गुत्थी उलझेगी।"

"यह कैसे?"

"तुम्हारी समझ मे नही आता? अगर रीजन के अफसरो की राय मेरे बारे में वही हुई जो कोशेवोइ की है, तो मैं जेल मे ठूँसे जाने से बचाए नही बचता। बगल के इलाके मे लोग सिर उठा रहे हैं, मैं अभी कल तक अफसर रहा हूँ और बाग़ी के नाम से जाना-माना जाता रहा हूँ···अब हुई बात साफ?"

प्रोखोर ने मुँह चलाना बन्द कर दिया और सोच मे पड गया। यह बात उसे पहले खटकी ही न थी।···मगर, इस वक्त शराब के कारण उसके दिमाग ने काफी धीरे-धीरे, और सो भी काफी मुश्किल से काम किया। ताज्जुब से पूछा—"मगर, तुम इस झगड़े मे आते कहाँ हो, पैन्तेलेयेविच?"

ग्रिगोरी की भौंहों पर बल पड़ गए और उसने कोई जवाब नही दिया, जैसे कि बगावत के इस समाचार ने उसे हिलाकर रख दिया हो। इसी समय प्रोखोर ने गिलास उसकी ओर बढाया, पर ग्रिगोरी ने अपने दोस्त का हाथ एक तरफ को झटक दिया और दृढता से बोला—"अब मुझे नही पीना।"

"अरे, बस···एक गिलास और पियो···जब तक चेहरे का रंग एकदम बदल न जाए, तब तक पियो। हँसी-खुशी से भरी इस ज़िन्दगी का महज एक इलाज है, और वह है वोदका।"

"तुम बदलो अपने चेहरे का रँग। दिमाग ने काम करना यो ही बन्द कर दिया है···देर-सबेर मरक रहोगे। मुझे अपना नाम दर्ज कराने आज व्येशेन्स्काया जाना है।"

प्रोखोर ने उसे घूरकर देखा तो उसका धूप से सँवराया चेहरा गहरा भूरा लगा। सफेदी सिर्फ उलटे हुए बालो की जडो मे ही नज़र आई। आदमी मन से काफी शान्त रहा। उसने ज़िन्दगी मे कितना ही कुछ देखा था और लडाई और मुसीबतो ने प्रोखोर को उसके स्नेह-सूत्र मे बाँध दिया था। वह उसका अपना हो उठा था।

उसकी कुछ-कुछ सूजी आँखो से उदासी टपकी और निगाह से सख्ती और थकान। प्रोखोर ने पूछा—"तुम व्येशेन्स्काया जा रहे हो···तुम्हें डर नही लगता कि वे लोग तुम्हे जेल मे डाल देंगे?"

ग्रिगोरी ने तड से जवाब दिया—"यही तो डर लग रहा है, भाईजान! मैंने जेल कभी देखी नही, इसलिए मुझे मौत से ज़्यादा डर जेल जाने से लगता है। लेकिन, लगता है कि इसका मज़ा भी एक बार चखना ही पडेगा।"

"तुम्हे घर नही आना चाहिए था।" प्रोखोर हमदर्दी से बोला।

"लेकिन, घर न आता तो फिर जाता कहाँ?"

"तुम कस्बे मे कही छिप रहते, यह ऊँट किसी करवट बैठ जाने देते और तब आते।"

ग्रिगोरी ने हाथ हिलाया और हँसा—"यह मेरे काम करने का तरीका नही। इन्तज़ार से बुरा कोई नही। फिर मैं अपने बच्चो को कैसे छोड़ देता?"

"क्या बात कही है! आखिर अभी तक तुम्हारे बिना भी तो रहते ही रहे है वे। बाद मे उन्हे भी ले जाते और उनके साथ ही अपनी जानमन को भी ले जाते। अरे हाँ यह बताना तो तुम्हे भूल ही गया कि तुम्हारे यानी तुम्हारे और तुम्हारी अकसीनिया के पुराने मालिक

इस दुनिया से चल बसे।"

"यानी, दोनो लिस्तनित्स्की नही रहे ?"

"हाँ, यही नाम तो है। फौज पीछे हटी तो मेरा रिश्तेदार जाखार छोटे लिस्तनित्स्की का अर्दली रहा। उसने बताया कि बूढा तो मोरोजोव्स्की मे टायफस से मर गया। छोटा लिस्तनित्स्की येकेतेरीनोदार पहुँच गया। पर वहाँ उसकी बीवी जनरल पोकरोवस्की से फँस गई। यह उससे बर्दाश्त न हुआ और उसने गुस्से मे अपने को ही गोली मार ली।"

"खैर…भाड़ मे जाएँ वे दोनो।" ग्रिगोरी ने तटस्थ मन से कहा—"मैं तो उन शरीफ लोगो के लिए दुखी हूँ जो इस धरती से उठ गए हैं। इन दोनो के लिए सीना पीटने कोई नही बैठेगा।" फिर वह उठा, बरानकोट पहना और दरवाजे के हत्थे को पकड़कर कुछ सोचते हुए बोला—"हालाँकि मैंने कहा कि भाड मे जाएँ लिस्तनित्स्की…मगर छोटे लिस्तनित्स्की या मीशा-कोशेवोइ जैसो से मुझे डाह बहुत होती है… उनके सामने हर चीज शुरू से ही साफ रही है, लेकिन मेरे सामने तो आज भी कुछ भी साफ नही है। दोनो के सामने सीधे रास्ते हैं और दोनो के सामने एक मंज़िल रही है। लेकिन, मैं १६१७ से अब तक बराबर शराबी की तरह एक ही घेरे का चक्कर काटता रहा हूँ… मैं गोरे गारदो से कट गया, मगर लाल फौजियो मे नही खपा…मैं तो जैसे जमे हुए पानी के छेद मे उतराता हुआ गोबर हूँ…देखो न प्रोखोर, मुझे चाहिए था कि मैं लाल फौजियो के साथ चिपक जाता…उस हालत मे जो कुछ होता मेरे भले के लिए होता। तुम तो जानते हो कि शुरू मे मैने पूरी ईमानदारी से सोवियत सरकार की खिदमत की। मगर बाद मे सब-कुछ गडबड़ा गया। गोरे गारदो मे उनकी कमान के लोगो के बीच मैं अजनबी माना गया…हमेशा शुबहा की नज़र से देखा गया… और आखिर होता भी क्या ? मैं एक किसान का बेटा, बेपढा-लिखा कज़्ज़ाक…मेरी उनसे रिश्तेदारी कौन-सी हो सकती थी ? बस, तो उन्होने मेरा कभी यकीन नही किया। और, यही हालत मेरी लाल फौज़ियो के बीच हुई। आखिर मैं अन्धा तो नही हूँ न…कमीसारो और स्क्वैड्रन के कम्यूनिस्टो की निगाह मैंने खूब समझी…एक बार

लड़ाई के दौरान तो उन्होने मेरे मामले मे ऐसी होशियारी बरती कि जहाँ मेरा कदम पड़ा, वहाँ उनकी नज़र पड़ी। शायद उन्होने सोचा—'ओ यह सूअर पहले का गोरा गारद कज्ज़ाक अफसर है···हमे चौकस रहना चाहिए···कही ऐसा न हो कि दगा दे जाए हमे।' और जब मैंने यह देखा तो मेरी नसो का खून जम गया। और बाद मे तो उनका इस तरह यकीन न करना मेरी बर्दाश्त के बाहर हो गया। आखिरकार गरमी से तो पत्थर तक पिघल जाता है। और यह सचमुच बहुत ही अच्छा हुआ कि उन्होने मुझे फौज से घर भेज दिया। इससे बात जल्दी ही खत्म हो गई।" उसने अपना भर्राता गला साफ किया, एक क्षण चुप रहा और फिर प्रोखोर की तरफ देखकर बदलती हुई आवाज़ मे बोला—"खाने के लिए शुक्रिया! अब मैं चला। ठीक-ठाक रहना। अगर सही-सलामत वापस आ गया तो शाम तक आऊँगा तुमसे मिलने। मगर यह बोतल तो हटा दो यहाँ से···नही तो तुम्हारी बीवी आकर फ्राइंग पैन तोड डालेगी तुम्हारी पीठ पर।"

प्रोखोर सीढियो तक उसके साथ गया और बरसाती मे पहुँचने पर फुसफुसाकर बोला—"उफ···पैन्तेलेयेविच, देखना कि वे लोग तुम्हे वही न रख लें।"

"देखो, देखूंगा।" ग्रिगोरी ने उत्तर दिया।

फिर ग्रिगोरी घर नही गया। वह दोन के किनारे आया। यहाँ उसने किनारे से किसी की नाव खोली, अँजुरी-अँजुरी कर पानी निकाला। बाड़ से एक सरकडा खीचा, किनारे की बर्फ काटी और नाव खे चला।

हवा के थपेडो से चचल गहरी-हरी लहरें पश्चिम की ओर उमडती रही। वे किनारे के शान्त पानी की हलकी झलाझल बर्फ चटखाती रही और सेवार के पन्ने से हरे पसारे को रह-रहकर झकझोरती रही। जमे हुए पानी के बिल्लौरी टुकड़े जहाँ-तहाँ चमचमाते रहे और पानी से धुल-धुल कर किनारे के कँकड़ हलके-हलके खड़खड करते रहे। लेकिन, मँझधार मे तेज़ और जमे हुए प्रवाह के बीच लहरें नाव के बाएँ बाज़ू पर आ-आकर पानी की बौछार करती रही और किनारे के जंगल मे हवा के

बराबर हरहराने की गूँज होती रही।

ग्रिगोरी ने दूसरे तट पर पहुँचने पर नाव का आधा हिस्सा पानी के बाहर निकाला, फिर ज़मीन पर बैठकर बूट उतारे और आसानी से चलने के लिए पैर की पट्टियाँ फिर से बाँधी।

दोपहर होते-होते वह व्येशेन्स्काया पहुँच गया।

क्षेत्रीय सैनिक-कमीसारियट मे बडी भीड़ नज़र आई और काफी शोरगुल सुन पड़ा। टेलीफोन की घंटियाँ ज़ोर-ज़ोर से घनघनाती रही, फौजियो के आने-जाने पर दरवाजे भडाक-भडाक बजते रहे और अलग-अलग कमरो से टाइप राइटरो की खडखड सुनाई पड़ती रही। गलियारे मे भेड की खाल की जैकेट से लैस एक नाटे आदमी को घेरे खड़े कोई एक दर्जन लाल सैनिक ज़ोर-ज़ोर से बातें करते एक-दूसरे के बीच मे बोलते और हँसी के ठहाके लगाते रहे। ग्रिगोरी ने गलियारे मे कदम रखा कि दो लाल सैनिक एक मशीनगन की गाड़ी दूसरी तरफ के किनारे से इस तरफ लाते दीखे। लकडी के ऊँचे-नीचे फर्श पर गाड़ी के छोटे-छोटे पहिए खड़खड़ाते रहे। मशीनगन के साथ के लोगो मे से एक लम्बा हट्टा-कट्टा आदमी हँसते हुए चिल्लाकर बोला—"सज़ा देने वाली कम्पनी के लोगो···एक तरफ हो जाओ···वरना तुम पर चला दूंगा गाड़ी।"

ग्रिगोरी ने मन-ही-मन सोचा—'लगता है जैसे कि सचमुच लोग बग़ावत को दबाने की तैयारी मे हैं।'

उसे रजिस्ट्रेशन मे बहुत देर न लगी। जल्दी-जल्दी उसके कागज़ात देखने के बाद फ़ौजी कमीसारियेट बोला—"दोन चेका के राजनीतिक विभाग मे जाइए। आप पहले अफसर रहे हैं, इसलिए आपको वहाँ हाज़िर होना पड़ेगा।"

"बहुत अच्छा।" ग्रिगोरी ने सेल्यूट मारी, पर उसके मन की उथल-पुथल अब तक कही से घटी नही।

चौक मे उसके कदम अपने-आप रुक गए। अंतर अपनी पूरी शक्ति से विद्रोह करने लगा। मन ने कहा—'तुम्हें उस महक़मे में जाना है, मगर वहाँ तुम जेल मे ठूँस दिए जाओगे।' वह आशंका, भय और घृणा से

काँप उठा और स्कूल के पास खडा-खडा अनदेखी आँखों से देखता रहा तो उसके सामने आ गई जेलखाने की ज़मीन, तहखाने मे जाने वाली एक गन्दी सीढी से नीचे उतरते उसके अपने पैर और पीछे पिस्तौल का हत्था कसकर जकडे, पिस्तौल उसकी ओर ताने एक आदमी।··· उसने अपनी मुट्ठियाँ बाँध ली और अपने हाथो की फूली हुई नीली नसो पर नजर डाली। सोचा—'और, इन्ही हाथो को बाँध लेगे वे।' उसके चेहरे पर खून दौड गया—"नही, आज वहाँ नही जाऊँगा। ज़रूरत होगी तो कल चला जाऊँगा। आज का दिन अपने बच्चो के साथ बिताऊँगा, अकसीनिया से मुलाकात करूँगा···और कल व्येशेन्स्काया लौट आऊँगा। इतना ज्यादा चल पड़ने से पैर दर्द करते हो तो करें। आज तो मै घर जाऊँगा ही, कल लौट आऊँगा···जरूर लौट आऊँगा यानी जो होना हो कल हो, आज कुछ नही···'

"ओह मेलेखोव, उमरें हो गईं तुमसे मिले !"···

ग्रिगोरी ने मुडकर देखा। प्योत्र की रेजीमेट का साथी दोन सेना की २८वी विद्रोही रेजीमेट का पूर्व-सेनापति याकोव-फोमीन पास आया। वह ग्रिगोरी को बिल्कुल बदला हुआ लगा।

अब उसके बदन पर अतामान रेजीमेट के जमाने के भद्दे, लापरवाही से पहने गए कपडे न थे। इन वर्षों मे उसमे ज़मीन-आसमान का अन्तर हो गया था। घुड़सवार फौज का शानदार काट का कोट उसके बदन पर बहुत ही फिट बैठ रहा था। लाल मूँछें किसी चीज़ से ऐंठी हुई थी। उसकी चाल की आन-बान-शान, आत्म-सन्तोष से भरी मुस्कान और उसके आसपास की हर चीज़ से लगता था कि उसे अपने बड़प्पन और विशेष सम्मान का पूरा बोध है।

सो, ग्रिगोरी से हाथ मिलाते और उसकी आँखो मे अपनी बडी-बडी नीली आँखे डालते हुए उसने पूछा—"कैसे आए यहाँ ?"

"फौज से अलग कर घर भेज दिया गया था···फौजी कमीसारियट से अभी-अभी मिलकर चला आ रहा हूँ।"

"आए देर हुई ?"

"नही, कल ही गाँव पहुँचा।"

"मुझे अकसर ही तुम्हारे भाई प्योत्र-पैन्तेलेयेविच का खयाल आता है। शानदार कज्ज़ाक था, मगर उसकी मौत बुरी हुई। हमारी तो दाँत-काटी रोटी थी।·· तुम्हे पिछले साल की बगावत मे हिस्सा नही लेना चाहिए था मेलेखोव! वह तुमने बडी गलती की।"

ग्रिगोरी को जवाब मे कुछ कहना ज़रूरी लगा। बोला—"हाँ, कज्ज़ाको ने ही गलती की···"

"किस फ़ौज मे थे तुम?"

"पहले घुडसवार ब्रिगेड मे।"

"क्या थे?"

"स्क्वैड्रन-कमाडर।"

"अच्छा···इस वक्त मैं भी स्क्वैड्रन-कमाडर हूँ। यहाँ व्येशेन्स्काया मे एक बचाव-टुकड़ी है।" फिर अपने चारो तरफ निगाह दौड़ाकर, आवाज़ नीची कर बोला—"सुनो, चलते चलो···मेरे साथ चलो थोड़ी दूर···यहाँ लोग बहुत हैं···बात करने का मौका न मिलेगा।"

दोनों सडक पर बढते गए। ग्रिगोरी को कनखी से देखते हुए फोमीन बोला—"घर पर ही रहने की सोच रहे हो?"

"हाँ, वही रहूँगा···और कहाँ रह सकता हूँ?"

"खेती-बारी करने का इरादा है?"

"हाँ।"

फोमीन ने हमदर्दी से सिर हिलाया और आह भरी। "मेलेखोव, बहुत बुरा वक्त चुना है तुमने ··सचमुच बहुत बुरा वक्त चुना है।··· अभी साल-दो-साल तुम्हे आना नही चाहिये था।"

"क्यो नही आना चाहिए था?"

फोमीन ने ग्रिगोरी की बाँह पर हाथ रखा और उसकी ओर थोड़ा झुकते हुए धीरे से बोला—"इलाके मे उथल-पुथल है···कज्ज़ाक खाने के सवाल को लेकर काफी गरम हैं···बोगुचार ज़िले मे लोग बगावत कर रहे हैं। उन्हे दबाने के लिए हम लोग आज जा रहे हैं। मेरी सलाह मानो जवान, तो तुम यहाँ से फौरन ही खिसक दो। प्योत्र मेरा बड़ा दोस्त था, इसीलिए तुम्हे यह राय दे रहा हूँ मैं।"

"लेकिन, जाने को कहीं ठौर भी तो हो।"

"अरे, यहाँ से दूर रहकर चीजों को देखो-समझो! मैं तो तुमसे यह इसलिए कह रहा हूँ कि राजनीतिक विभाग पहले के अफसरो को गिरफ्तार कर रहा है। इसी हफ्ते तीन अलमबरदार दुदारेवका से और एक रेशेतोवका से लाया गया है। दोन के दूसरे किनारे से तो लोगो के झुंड-के-झुंड लाए जा रहे हैं। ये लोग तो इस वक्त मामूली कज्जाको को भी कस रहे है···अब अपना फैसला आप कर लो, ग्रिगोरी-पैन्ते-लेयेविच!"

"सलाह के लिए शुक्रिया···मगर मै इस सबके बावजूद कही जाऊँगा नही।" ग्रिगोरी ने हठपूर्वक कहा।

"खैर, तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।"

फिर फोमीन, क्षेत्र की स्थिति, क्षेत्रीय अधिकारियो से अपने सम्बन्धो और क्षेत्रीय सैनिक कमीसार शाखायेव की चर्चा करने लगा। पर ग्रिगोरी अपने विचारो मे ही डूबा रहा, इसलिए उसकी बातें उसने ध्यान से सुनी नही।

इस तरह तीन ब्लाको तक वे साथ रहे कि फोमीन एकदम रुका, "मुझे किसी से मिलने जाना है···अच्छा, 'पॅका'।[1] अपनी फर की टोपी पर हाथ रखकर उसने सैल्यूट मारी। ग्रिगोरी से उदास मन से अलग हुआ और किनारे की एक गली मे मुड गया। इस समय वह जिस तरह शान से तनकर चला, उससे उसकी नई पेटी चरमराई और पूरा नक्शा बहुत भद्दा लगा। ग्रिगोरी उसे कुछ देर तक देखता रहा और फिर लौटा दिया।···

वह राजनीतिक विभाग पहुँचा और वहाँ की पत्थर की सीढियो पर चलते समय मन-ही-मन बोला—'अगर खेल खत्म ही होना है तो हो··· जितनी जल्दी हो, उतना ही अच्छा! मामले को खीचने से कोई फायदा नहीं···ग्रिगोरी, अगर तुम्हें उस वक्त नुकसान पहुँचाना आता था, तो इस वक्त उसकी कीमत अदा करना भी आना चाहिए···उसके लिए जवाब भी देना चाहिए।'

---

१. फिलहाल अलविदा!

: ८ :

सबेरे कोई आठ बजे अकसीनिया ने स्टोव के कोयले उलटे-पलटे और बेंच पर बैठकर ऐप्रन से अपना तमतमाया हुआ, पसीने से तर चेहरा पोछने लगी···

खाने की तवालत से फुरसत पाने के लिए वह तड़के ही उठ बैठी थी। उसने चूज़ा उबाल लिया था। पैन टिकियाँ बना ली थी। पकौडियो पर खूब क्रीम डाल दी थी और उन्हे तल लिया था। उसे पता था कि ग्रिगोरी को पकौडियाँ बहुत पसन्द हैं। यानी, उसे ग्रिगोरी के साथ खाने की आशा थी, इसीलिए उसने खास चीजें तैयार की थी···

उसका बडा जी चाहा कि वह किसी-न-किसी बहाने मेलेखोव-परिवार मे जाए और एकाध मिनट वहाँ रहकर अपने मन के राजा की एक झाँकी ले आए। उसे अजीब-सा लगा कि वह बगल मे हो और वह उसकी एक झलक को तरसे। इस पर भी उसने अपना मन मार लिया और गई नही। उसे लगा कि इस उम्र मे इस तरह चचल होना भी क्या!

उसने हाथ-मुँह कही ज्यादा मन और सावधानी से धोया, कसीदेवाली समीज़ के ऊपर साफ कमीज़ पहनी, और स्कर्ट चुनने के लिए बहुत देर तक खुले बक्से के सामने खड़ी रही। काम के मामूली दिन खास कपडो की वैसे कोई ज़रूरत न थी, पर उसका किसी तरह जी न माना कि आज के दिन भी वह रोज़ के-से कपड़े पहने। मगर उसकी समझ मे न आया कि निकाले तो निकाले क्या? उसके माथे पर बल पड़ गए और उसने लोहा की हुई तमाम स्कर्टे लापरवाही से उलट डाली। आखिरकार उसने गहरी-नीली स्कर्ट और काली गोटवाली नई, नीली चोली निकाल ली। इससे अच्छे कपड़े उसे नज़र ही न आए। सोचा उसने—'मैं क्यो फिक्र करूँ कि पडोसी क्या सोचेंगे और क्या नही सोचेंगे? उनका हो काम का दिन···मेरा तो आज जश्न का दिन है···'

सो, उसने जल्दी-जल्दी सारे कपड़े पहने और शीशे के सामने जा खड़ी हुई, आश्चर्य से भरी। मद मुस्कान उसके होंठो पर दौड़ गई। उत्सुकता से भरी और प्रसन्नता से चमकती आँखें उसे एकटक देखने लगी। उसने अपना चेहरा गौर से देखा और उसके मुँह से सन्तोष की

साँस निकल गई। उसे लगा, नही, अभी मेरा हुस्न मुरझाया नही··· अभी भी कितने ही कज्ज़ाक ऐसे निकलेंगे जो मुझे देखते ही राह मे ठिठक जाएँगे और मुझे हसरत से घूरते रह जाएँगे।'

और शीशे के सामने अपनी स्कर्ट ठीक करते समय उसने जोर से कहा—"हाँ, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, अब देखो जरा!" फिर अपने चेहरे पर लाली दौडते देखकर मन-ही-मन हस पडी। इस पर भी कनपटियो पर कुछ सफेद बाल दीख ही गये तो उसने उन्हे तोडकर फेक दिया। उसे लगा कि ग्रिगोरी को ऐसा कुछ दिखलाई नही पडना चाहिए जिससे उसे उसकी उम्र का खयाल आए। उसके लिए तो उसने आज सात साल पहले के रूप का गुलाब अपने चेहरे पर खिलाने की कोशिश की।

फिर दोपहर के खाने के समय तक वह जैसे-तैसे घर पर बनी रही। लेकिन, इसके बाद अपने को रोक न पाई और सफेद बकरे की खाल का शॉल अपने कंधे पर डालकर मेलेखोव परिवार के घर की ओर चल पडी। दून्या घर मे अकेली मिली। अकसीनिया ने उसका अभिवादन किया और पूछा, "अभी तक खाना नही हुआ तुम्हारे यहाँ?"

"ऐसे घुमक्कड घर मे हो तो कही वक्त पर खाना हो सकता है? मीशा सोवियत के दफ्तर मे है। ग्रिगोरी व्येशेन्स्काया गया है। बच्चो को खिला चुकी हूँ···बडो का इन्तजार है।"

अकसीनिया को यह सुनकर बडी निराशा हुई, पर अपनी किसी गतिविधि या बात से उसने मायूसी झलकने नही दी। बोली—"मैंने तो सोचा कि सभी लोग इस वक्त घर पर ही होगे। अच्छा ग्रीशा, मेरा मतलब, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच लौटेगा कब तक? आज आजाएगा न?"

दून्या ने अपनी पडोसिन के शानदार कपडो पर निगाह डाली और ज़रा हिचकती हुई बोली—"वह अपना नाम दर्ज कराने गया है।"

"कब तक लौटने की उम्मीद है?"

दून्या की आँखें छलछला आईं। अपनी अटकती आवाज़ मे फटकार घोलते हुए बोली—"क्या वक्त चुना है तुमने इस तरह सजने का···तुम्हें यह पता नहीं कि हो सकता है कि वह बिल्कुल लौटकर आए ही नही···"

"क्या मतलब ?"

"मिखाइल का कहना है कि उसे व्येशेन्स्काया मे गिरफ्तार कर लिया जाएगा···' दून्या की पलको से आक्रोश-भरे आँसू टपकने लगे। उसने आस्तीन से आँखे पोछी और चीख पड़ी—"गाज गिरे···इस ज़िन्दगी पर गाज गिरे···पता नही यह सब खत्म कब होगा ? ग्रीशा वहाँ चला गया है, और बच्चे जैसे पागल हो गए हैं। मुझे दम-भर को भी चैन नही लेने देते। बार-बार पूछते है पापा कहाँ गये हैं ? कब तक लौटेंगे ? अब मैं कहाँ से जवाब दूँ ? मैंने बच्चो को तो अहाते मे भेज दिया है, पर मेरा अपना दिल कचोट रहा है···क्या कहोगी तुम इस कम्बख्त जिन्दगी को ? लाख कलेजा छलनी कर डालो, मगर किसी को कभी चैन नही मिलता।"

"अगर वह शाम तक वापस नही आएगा तो कल मैं खुद व्येशेन्स्काया जाऊँगी और पता चला लाऊँगी।" अकसीनिया ने यह बात ऐसे तटस्थ भाव से कही, जैसे कि किसी ऐरे-गैरे की चर्चा कर रही हो, और परेशानी की ज़रा भी ज़रूरत न हो।

दून्या ने उसके चित्त के सन्तुलन और मन के सब्र पर अचरज करते हुए आह भरकर कहा—"आज उसका इन्तज़ार करने से कोई फ़ायदा नही···यह तो साफ है···आते ही हज़ार तरह की मुसीबतों से घिर गया है।"

"हमे अभी तक कुछ पता तो है नही···तुम रोना बन्द करो, दून्या, वरना बच्चे जाने क्या खयाल करेंगे।···अच्छा···मैं चली। अलविदा !"

ग्रिगोरी शाम होने के काफी देर बाद लौटा घर मे थोडी देर रहा और फिर अकसीनिया से मिलने चल दिया······

परन्तु अकसीनिया पूरे दिन जिस तरह चिंता मे घुलती रही, उसने दोनो की मुलाकात का मज़ा किरकिरा कर दिया···शाम होते-होते उसे ऐसा लगने लगा, जैसे कि वह बिना कमर लचाए सारे दिन काम करती रही है। आखिरकार इन्तज़ार करते-करते उसका दिल टूट गया और वह थकान से चूर होकर पलंग पर जा लेटी। लेकिन खिड़की के बाहर पैरो की आहट आते ही औरत कमसिन लड़की की

तरह फुर्ती से उठकर खड़ी हो गई।

उसने ग्रिगोरी को देखते ही उसके गले मे हाथ डाल दिया। पूछा—'तुमने मुझे बतलाया क्यो नही कि तुम व्येशेन्स्काया जा रहे हो?···" और इसके साथ ही वह उसके बरानकोट के बटन खोलने लगी।

"कहने का मौका ही नही मिला···मैं बड़ी हड़बड़ी मे था।"

"तुम उधर गये और इधर हमने यानी दून्या ने और मैंने रो-रोकर आँखें काली कर डाली—हमने सोचा कि अब तुम लौटोगे ही नही।"

ग्रिगोरी उदास मन से मुस्कराया।

"नही, अभी वह नौबत नही आई।" और, एक क्षण रुकने के बाद फिर बोला—"कम-से-कम अभी तक तो जान बची ही है।"

वह लगडाता हुआ गया और मेज के किनारे जा बैठा। खुले दरवाज़े से सोने के कमरे मे नजर आया कोने मे पडा लकडी का चौडा पलग, और बक्से की हल्के-हल्के चमकती ताम्बे की पत्तियाँ। पूरी व्यवस्था को देखकर उसे जवानी के दिनो मे, स्तेपान के न रहने पर, वहाँ अपना आना याद हो आया। कोई फेर-बदल कही समझ ही न पडा। ऐसा लगा जैसे कि वक़्त इस तरफ से तो गुज़रा, पर उसने अन्दर झाँककर नही देखा। और तो और हॉप की ताज़ी लतरो, रगडे हुए साफ़ फर्श और अजवाइन के मुरझाए पौधो से भी वैसी ही भीनी-भीनी महक आती रही। यो अनुभव हुआ जैसे कि अभी कल सबेरे ही वह यहाँ से गया हो···पर, वास्तव मे समय कितना बीत चुका था।···

उसने उमड़ती आह रोकी और जान-बूझकर सिगरेट रोल करने लगा। लेकिन, जाने क्यो उसके हाथ काँपने लगे और तम्बाकू घुटनो पर बिखर गई।

अकसीनिया ने जल्दी-जल्दी मेज़ लगाई। लपसी को गरम करना ज़रूरी लगा तो भागकर शेड से लकडी लाई और हाँफते हुए स्टोव मे आग जलाने लगी। चेहरा पीला नज़र आया। उसने मुँह से फूँक-फूँककर कोयले दहकाने की कोशिश की तो चिनगारियाँ इधर-उधर उडने लगी। इसके बावजूद उसने मुडीमुडी बनकर बैठे, धुआँ उड़ाते ग्रिगोरी को बीच-बीच मे भर-आँख देख ही लिया।

"कैसा, क्या रहा ? हर बात का फैसला हो गया ?"

"सब-कुछ ठीक ही रहा ।"

"तब फिर तुम्हारी गिरफ्तारी की बात दून्या के दिमाग मे कहाँ से आ गई ? उसने तो मुझे बहुत ही डरा दिया ।"

ग्रिगोरी की भौहे चढ गईं और उसने खौफ से हाथ की सिगरेट एक तरफ को फेंक दी ।

"मिखाइल उसके कान फूंकता रहा है । वही तो मेरे लिए सारी मुसीबत खडी कर रहा है ।"

अकसीनिया मेज़ के पास गई तो ग्रिगोरी ने उसे अपनी तरफ खीचकर कस लिया और उसकी आँखो की तरफ देखते हुए बोला—"लेकिन, सच बात यह है कि मेरी हालत डाँवाडोल है । मै वहाँ गया तो खुद भी मुझे लगा कि अब मै लौटता नही । इससे तो इन्कार नही कि बगावत के ज़माने मे एक डिविज़न की कमान मेरे हाथो मे थी और मैं स्क्वैड्रन-कमाण्डर था । मेरे जैसे लोग तो फ़ौरन से पेश्तर धर ही लिए जाते हैं ।"

"लेकिन, वहाँ के लोगो ने तुमसे क्या कहा ?"

"वहाँ मुझे एक फार्म भरने को दिया गया और मुझे बताना पडा कि फौज मे मैने क्या-क्या किया है । लेकिन, लिखने की आदत तो मुझे है नही·· वैसे भी लिखने का काम मैंने कम ही किया है··· इसलिए दो घण्टे लगे मुझे सारा कुछ लिखने मे । फिर दो फौजी कमरे मे आए और उन्होने मुझसे बगावत के बारे मे तरह-तरह के सवाल पूछे । लोग ठीक-ठाक ही लगे । मुझसे काफी मोहब्बत से बाते करते रहे । उनमे से ज़रा सयानी उम्र के आदमी एक ने पूछा—'चाय पियोगे··· वैसे यह है कि काम सेक्रीन से चलाना पड़ेगा ।' मैंने सोचा—'क्या करना है मुझे चाय का ? यहाँ से सही-सलामत वापस लौट सकूँ, यही बहुत है ।···"

फिर ज़रा देर चुप रहने के बाद नफरत से यो बोला, जैसे कि किसी बाहरी से बातचीत कर रहा हो—"हिसाब-किताब साफ करते-करते मेरी तो आँखें छलछला आईं । मैंने खासा बुजदिल पाया अपने को ।"

वह अपने-आप पर काफी खीझा लगा कि व्येशेन्स्काया मे न वह हिम्मत से काम ले सका और न अपने मन की दहशत निकाल सका। और गुस्सा उसे इस बात पर आया कि डर बे-बुनियाद साबित हुआ। उसकी सारी परेशानी बेहूदी और शर्मनाक मालूम हुई। वह तो सारे रास्ते यही सोचता रहा था। शायद इसीलिए उसने अपने-आप पर हँसते हुए अकसीनिया से सब-कुछ बतलाया और जरा बढा-चढाकर बताया।

अकसीनिया ने उसकी पूरी बात ध्यान से सुनी, फिर अपने हाथ छुडाए और स्टोव के पास गई। आग जलाते हुए पूछा—"आगे का क्या है अब ?"

"एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर वहाँ फिर जाकर हाजिर होना है मुझे।"

"तुम्हारा खयाल है कि आखिरकार वे तुम्हे गिरफ़्तार कर ही लेंगे ?"

"लगता तो ऐसा ही है कि देर-सबेर गिरफ्तार कर ही लिया जाऊँगा।"

"उस हालत मे हम लोग क्या करेंगे ? हम कैसे रहेंगे, ग्रीशा ?"

"कुछ समझ मे नही आता···बाद मे बात करेंगे इस मामले मे···मुँह-हाथ धोने को थोडा पानी है ?"

ग्रिगोरी मुँह-हाथ धोने के बाद खाने को बैठा तो औरत की सुबह की खुशी लौट आई और सारे बाँध तोड चली। उसके मन का राजा पास ही नजर आया कि न देखने मे चोरी से काम लेने की ज़रूरत और न यह सोचने की मजबूरी कि दूसरे देख रहे है या नही देख रहे हैं। उसकी निगाहो ने सीधे-सीधे सब-कुछ साफ-साफ बेहिचक कह दिया।

···हे भगवान्! वह उसके लिए कितनी कलपी थी! उसके मोटे, खुरदरे हाथो के लिए उसके शरीर का अग-अग किस तरह प्यासा हो उठा था!

सो, उसने खाने की किसी चीज़ को हाथ से छुआ तक नही। वह

आगे की ओर झुककर ग्रिगोरी का खाना देखती रही। उसकी धुँधलाई आँखे उसके चेहरे, ट्यूनिक के ऊँचे कॉलर से कसी साँवली गर्दन, चौडे कधो और मेज पर रखे हाथो पर प्यार बरसाती रही। वह उसके बदन से उमडती पसीने और तम्बाकू की खारी, चिर-परिचित गध से अपनी साँसे सीचती रही। उसे लगा कि यह गध बेशकीमती है और सिर्फ उसके तन-बदन से उभर सकती है। इस गध के सहारे ही आँखो पर पट्टियाँ बाँधकर भी, हज़ार लोगो मे वह अपने ग्रिगोरी को पहचान लेती। उसके चेहरे पर गुलाब खिल गए और दिल की धडकनो की रफ्तार तेज हो गई। पर, आज शाम को घर की मालकिन के रूप मे अपने कर्त्तव्यो के पालन मे वह सचमुच असमर्थ हो उठी। ग्रीशा के अलावा, आस-पास उसे और कुछ दीखा ही नही। लेकिन, ग्रीशा ने उसकी चिंता की अपेक्षा भी न की। खुद अपने लिए रोटी काटी, खुद स्टोव से नमकदानी खोज लाया और खुद अपनी तश्तरी मे दुबारा लपसी उँडेल ली।

मुस्कराकर जैसे कि माफी माँगते हुए बोला—"बिल्कुल कुत्ते की तरह भूखा हो रहा हूँ। सुबह से कुछ नही खाया है।"

और, अब, इस वाक्य के बाद अकसीनिया को अपने घरेलू कर्त्तव्य का ध्यान आया। वह तेज़ी से उछलकर खड़ी हो गई—"उफ कैसा दिमाग हो गया है मेरा! मैं तुम्हे पकौडियाँ और पैनकेक देना तो बिल्कुल भूल ही गई! लो, थोडा-सा चूज़ा तो लो! और खाओ···जी भरकर खाओ, मेरे राजा! अभी लाई हर चीज!"

लेकिन ग्रिगोरी एक-एक कर सारी चीज़े इस तरह और इतनी देर तक खाता रहा, जैसे कि पूरे एक हफ्ते से खाना न खाया हो। कहने-सुनने की जरूरत ही नही हुई। औरत बडे धैर्य से राह देखती रही, पर आखिरकार और न रुका गया तो उसकी बगल मे बैठ गई। उसने बाएँ हाथ से उसे अपनी ओर खीचा और दाएँ हाथ से कसीदेकारी वाला, साफ तौलिया लेकर अपने प्रियतम के चिकने होठ और ठुड्डी पोछ दी। इसके बाद साँस खीचकर उसने आँखे बद की तो उनसे छोटी-छोटी नारगी चिनगारियाँ फूटने लगी। और फिर औरत ने

अपने होठो से उसके होठ भीच लिए।

मनुष्य के मन की प्रसन्नता सचमुच बहुत ही सहज होती है। जो भी हो, उस दिन शाम को अकसीनिया की खुशी का ठिकाना न रहा।

: ६ :

ग्रिगोरी को कोशेवोइ से मिलना बहुत ही खलने लगा, बर्दाश्त के बाहर हो गया। उसके मन ने कहा—मेरे और उसके ताल्लुक तो, वापसी के बाद, पहले दिन ही साफ हो गए। अब मिलने-बोलने-बतलाने को रहा ही क्या है ? और, उससे फायदा भी क्या है ?

शायद मिखाइल को भी ग्रिगोरी से मिलना-जुलना उतना ही खला। उसने दो मजदूर रख लिए और उन्होने तड-पड उसका छोटा घर ठीक-ठाक कर दिया। छत की अधसडी धन्नियो की जगह नई धन्नियाँ लगा दी। गिरती दीवारे नए सिरे से बना दी, नए चौखटे लगा दिए और दरवाजे नए कर दिए।

व्येशेन्स्काया से लौटने के बाद ग्रिगोरी गाँव की क्रातिकारी समिति मे गया, सैनिक कमीसारियट द्वारा प्रमाणित अपने कागजात कोशेवोइ को दिये, मुँह से एक शब्द कहे बिना वापस आ गया, और काम की थोड़ी चीज-बस्त और बच्चो को लेकर अकसीनिया के यहाँ जाकर रहने को चलने लगा। दून्या ने उसे नए घर मे जाते देखा तो फूट पडी और आग्रह से बोली—"मेरे दुलारे भैया, मुझसे नाराज न हो···मैने तुम्हारी कोई बुराई नही की है।"

भाई ने बहन को धीरज बँधाया—"तुमसे नाराज होने की क्या बात है ? जब तुम्हारा जी चाहे, वहाँ आना और आकर मिल जाना। तुम्हारे अपनो के नाम पर खानदान मे एक मैं ही तो बाकी बचा हूँ। मुझे तुमसे हमेशा मोहब्बत रही है और आज भी है···लेकिन·· तुम्हारा आदमी···वह कुछ और ही किस्म का इन्सान है। मेरे यहाँ से जाने मे तुम्हारा और मेरा रिश्ता थोडे ही टूट जाएगा।"

"हम दोनो जल्दी ही यहाँ से चले जाएँगे ··तुम इस तरह बिगाड

कर कही मत जाओ ।"

"तुम यहाँ से भला क्यो जाओगी ?" ग्रिगोरी ने परेशानी से कहा—"बहार तक तो यहाँ रहो ही । तुम मेरे लिए कोई मुसीबत नही । फिर, अकसीनिया के यहाँ बहुत जगह है · मै बच्चो के साथ वहाँ बहुत आराम से रह सकता हूँ ।"

"तुम अकसीनिया से शादी करने जा रहे हो, ग्रीशा ?"

"अभी बहुत वक्त पडा है इसके लिए ।" ग्रिगोरी ने अनिश्चय से कहा । परन्तु दून्या जैसे फैसला देती हुई बोली—"तुम उससे शादी कर लो, भैया···बडी अच्छी औरत है । माँ जिन्दा थी तो कहती थी कि एक वही औरत तुम्हारी बीवी बनने के लायक है । अपनी जिन्दगी के आखिरी दिनो मे वे उसे बहुत मानने लगी थी । अकसर उससे मिलने भी जाती थी ।"

ग्रीशा मुस्कराते हुए बोला—"तुम तो जैसे मजबूर कर रही हो मुझे ! मगर, उससे न करूँगा तो और किससे शादी करूँगा मै ? तुम्हारा खयाल है कि उस बूढ़ी अन्द्रोनीखा को बीवी बनाकर लाऊँगा ?

अन्द्रोनीखा गाँव मे सबसे बडी उम्र की, चुडैल-सी औरत थी । सौ साल कभी के पूरे कर चुकी थी । सो, उसकी दोहरी कमर का खयाल आते ही दून्या ठठाकर हँस पडी ।

"कैसी बाते करते हो, भैया ? मै तो सिर्फ यो ही पूछ रही थी । फिर, मेरे पूछने की एक वजह यह भी थी कि तुम अपनी शादी का ज़िक्र कभी करते ही नही ।"

"मै चाहे जिसे बीवी बनाने का इरादा करूँ, पर शादी मे तुम्हे ज़रूर बुलाऊँगा ।" ग्रिगोरी ने हँसकर कहा, बहन की पीठ थपथपाई और मन का बोझ-सा उतारते हुए घर से चला आया ।

सच तो यह कि उसे इसकी चिन्ता ही न थी कि वह कहाँ रहता है और कहाँ नही । वह तो सिर्फ चैन से रहता था । लेकिन, यह मन की शान्ति उसे ढूँढे से भी न मिल पा रही थी ।

लो, अकसीनिया के यहाँ दो-चार दिन उसने इस तरह काहिली में गुज़ारे कि खुद अपने को ही काटने लगे । उसने उसके फार्म के एक-

दो कामो मे हाथ लगाया भी, तो उसे कुछ भी कर सकना मुमकिन न लगा। किसी चीज मे जैसे उसकी तबीयत जमी ही नही। अपने भविष्य का अनिश्चय उसे काटता रहा और उसकी जिन्दगी हराम करता रहा। एक क्षण को भी यह बात उसके दिमाग से न उतरी कि मै कभी भी पकडकर जेल मे ठूँस दिया जा सकता हूँ और जेल मे ठूँस दिया जाना ही क्या है, गोली से भी उडाया जा सकता हूँ।

ऐसे मे अकसीनिया की जब भी आधी रात के वक्त आँख खुली उसने उसे जागता पाया। वह हमेशा पीठ के बल लेटा, हाथ सिर के नीचे रखे, भावहीन, कडी निगाहो से अधकार भेदता मिला। अकसीनिया को उसकी चिन्ता की पूरी जानकारी रही, पर उसकी सहायता कर सकने का रास्ता उसकी समझ मे कुछ न आया। उसे पीडित देखकर वह सदा ही दुखी रही और उसके साथ जीने के मंसूबे तक उसे बुझते समझ पडे। पर, उसने उससे पूछा कभी कुछ नही कि जो कुछ तय करना हो यह अपने आप करे।···सिर्फ एक दिन ऐसा हुआ कि उसकी आँख खुली तो उसने अपने पास ही सिगरेट जलती देखी। बोली—"ग्रीशा, तुम तो बिल्कुल सोते ही नही। कुछ दिनो के लिए गाँव छोड ही क्यो न दो! या कहो तो हम लोग भी चलें और कही छिप रहे?"

ग्रिगोरी ने अपने पैर कम्बल से अच्छी तरह ढँक लिए। जवाब दिया—"सोचूँगा···फिलहाल, तुम सो जाओ।"

'फिर, जब कुछ अमन-चैन हो जाएगा, हम यहाँ लौट आएँगे··· क्यो, क्या खयाल है?"

उसने फिर यो ही-सा जवाब दिया, जैसे कि इस विषय मे कोई फैसला किया ही न हो—"खैर देखो, क्या होता है! तुम सो रहो, अकसीनिया!" और, उसने उसके नगे, रेशम की तरह ठडे कधे पर अपने होठ जमा दिए।

परन्तु, फैसला तो मन-ही-मन वह कर ही चुका था—'मैं अब दुबारा व्येशेन्स्काया न जाऊँगा। राजनीतिक विभाग का वह आदमी मेरा इन्तजार करता हो तो करे। बगावत की दास्तान मुझसे सुनते

वक्त कैसे बैठा था मेज़ की दूसरी तरफ पसरकर···बरानकोट कंधों पर डाले···उँगलियाँ चटखाते और बनावटी जम्हाइयाँ लेते हुए ! खैर, अब फिर उसे वह दास्तान सुनने को मिलने से रही। कहानी खत्म हो चुकी। जिस दिन वहाँ पहुँचने की बात है, उस दिन मैं गाँव से ही गायब हो जाऊँगा। जरूरी होगा तो लम्बे वक्त तक गायब रहूँगा।'

पर, वह कहाँ जाएगा, यह बात उसके सामने साफ न थी। निकल भागने का इरादा उसने ज़रूर कर लिया था क्योकि न तो वह मरना चाहता था और न जेल मे बद रहना चाहता था। परन्तु, अपने इस निश्चय का ज़िक्र उसने अकसीनिया से पहले से करना ठीक न समझा था।

सो, उसने सोचा—'इसके दिन मेरे साथ इने-गिने हैं। इनमे जहर घोलने से कोई फायदा नही। वैसे भी दिन कोई खास हँसी-खुशी से नही गुज़र रहे। अपने फैसले का जिक्र तो मैं इससे आखिरी दिन करूँगा। इस वक्त मेरी बगल मे चेहरा दुबकाए सो रही है तो सोने दो। इस बीच कई बार रह चुकी है कि तुम्हारी बाँह की छाँह मे सोना मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। तो ठीक फिलहाल सोने दो इसे। बेचारी···बेचारी···मेरे सीने से लगकर सोने की गिनती की घडियाँ बाकी रह गई है इसकी ··इस तरह एकाध दिन बीते। क्रम-सा बँध गया। सवेरा होता तो ग्रिगोरी बच्चो से खेलता और फिर बेमतलब ही, गाँव मे इधर-उधर चहलकदमी कर आने को निकल पडता। लोगो के साथ उठता-बैठता तो तबीयत ज़रा बहल जाती।

ऐसे ही ऐसे एक दिन प्रोखोर बोला—"सुनो, चलो निकिता मेलनीकोव के यहाँ चलें। थोडा पीना-पिलाना रहेगा, और साथ ही अपनी पुरानी रेजीमेट के जवान कज्ज़ाको से भी मुलाकात हो जाएगी।" पर, ग्रिगोरी ने साफ इन्कार कर दिया। वह गाँव वालो से बातें कर चुका था, और जानता था कि अनाज-वसूली को लेकर वे काफी असन्तुष्ट है। वह यह भी समझता था कि पीना-पिलाना होगा तो यह बात भी छिड़ेगी। पर, वह नही चाहता था कि उस मामले मे सन्देह उस पर किया जाए। वह तो परिचितो से मिलने पर राजनीतिक बातें

करने से यो भी बचता था। राजनीति उसके जीवन मे काफी रही थी, और उसकी जिन्दगी को काफी हद तक चौपट कर चुकी थी।

उसकी तरफ से यह सावधानी वैसे भी आवश्यक थी, क्योकि अनाज-वसूली कुछ खास हो नही पा रही थी और परिणामस्वरूप तीन बूढे, सिपाहियो के साथ, व्येशेन्स्काया रवाना कर दिए गए थे।···

अगले दिन सहकारी दूकान के पास उसकी भेट, लाल सेना से अभी-अभी लौटे, तोपची जाखार क्राम्स्कोव से सहसा ही हो गई। वह नशे मे धुत, लडखडाता नजर आया, परन्तु ग्रिगोरी के पास आते ही अपनी गदी जैकेट के सभी बटन बन्द करते हुए, भर्राए गले से बोला—"हमेशा तन्दुरुस्त रहो, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच!"

"तुम्हे भी ऊपर वाला हमेशा सेहतमद रखे!" ग्रिगोरी ने मोटे-तगडे तोपची की जोरदार मुट्ठी हिलाई।

"मुझे पहचाना ?"

"क्यो, पहचानूंगा क्यो नही ?"

"याद है, पिछले साल तुम्हारी जान बोकोव्स्काया के पास हमारे तोपखाने ने कैसी बचाई थी ? हम न होते तो तुम्हारी घुडसवार टुकडी को दाँतो चने चबाने पड जाते। उस दिन लाल फौजियो को हमने किस तरह मसला। अव्वल दर्जे की तोप थी उस दिन मेरे हाथ मे।" जाखार ने अपने चौडे सीने पर मुट्ठी बजाई।

ग्रिगोरी ने निगाह बचाकर चारो तरफ देखा तो जरा दूर पर ही खडे कुछ लोग बातचीत सुनते दीखे। उसके होठ फडके। उसने क्रोध से दाँत पीसे और धीरे से बोला—"तुम नशे मे हो। जाओ और सो रहो। बेकार गाल न बजाओ।"

"नही, मै नशे मे नही हूँ।" तोपची आपे से बाहर होते हुए चीखा—"शराब का नशा नही है·· अगर कोई नशा है तो दुख-दर्द का है··· मुसीबतो का है। मै घर वापस आया हूँ···मगर यहाँ की जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है···दोजख है हर तरफ···कज्जाक यहाँ रहते नही और जो रहते है, उनमे एक कज्जाक नही है। आधा अटन नाज उन्होने एक अकेले मुझसे वसूल लिया है···क्या कहोगे इसे तुम ? बोया-काटा था

उन्होने जो अनाज पर हक जमाने को आ गए ?"

उसने खून की तरह लाल-लाल आँखो से घूरकर देखा, लडखडाते हुए ग्रिगोरी के हाथ पर जोर का हाथ मारा और वोदका की बू से उसका चेहरा भर दिया—"मगर, तुमने यह बिना धारियो का पतलून क्यो पहन रखा है ? किसान बन गए क्या ? यह हम नही होने देंगे। प्यारे ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, एक बार फिर जमकर लोहा लेना होगा। पिछले साल की तरह हम फिर नारे लगाएँगे—'कम्यून मुर्दाबाद, मगर सोवियत हुकूमत जिन्दाबाद'।"

ग्रिगोरी ने उसे भद्दे ढग से एक ओर को ढकेल दिया और बुद-बुदाया—"जा घर जा अपने, शराबी, सूअर कही का·· समझता भी है कि क्या कह रहा है ?"

क्राम्स्कोव ने एक हाथ झटके से आगे बढाया, तम्बाकू के दागो से भरी अपनी उँगलियाँ फैलाईं और अटकते हुए बोला—"अगर · कोई· · ऐसी-वैसी गलत बात मुँह से निकल गई हो तो माफ कर दो। मुझे अफ-सोस है···मगर तुमसे पूरी ईमानदारी से बात कर रहा हूँ ··तुम्हे अपना कमाडर जानकर तुमसे कहना चाहता हूँ कि एक वार तो फिर लोहा लेना ही पडेगा।'

ग्रिगोरी चुपचाप मुडा और चौक पार कर घर की ओर बढ दिया। पर, इस बेवक्त की बातचीत का असर उसके दिमाग पर शाम तक बना रहा। उसे नशे मे धुत क्राम्स्कोव की चीखो, हमदर्दी से भरी चुप्पी और मुस्कानो का ध्यान रह-रहकर आता रहा। उसने सोचा—'मुझे जल्दी-से-जल्दी निकल जाना चाहिए यहाँ से···इस तरह रहने से कोई फायदा नही···'

उसे शनिवार को व्येशेन्स्काया पहुँचना था। यानी तीन दिन मे अपना प्यारा गाँव यो भी छोड देना था। पर, वह नौबत ही नही आ पाई। बृहस्पति की रात को वह सोने की तैयारी मे रहा कि किसी ने बहुत ही ज़ोर-जोर से दरवाज़ा खटखटाया। अकसीनिया बाहर निकलकर बरसाती मे गई। पूछा—"कौन है ?" ग्रिगोरी ने सवाल तो सुना, पर जवाब नही सुना। इसलिए उत्सुक होकर पलग से उठा और खिडकी

के पास पहुँचा। इसी समय गलियारे मे सिटकनी बजी और सामने आई दून्या। ग्रिगोरी ने उसका पीला चेहरा देखते ही, बिना कुछ पूछे बेंच से अपनी टोपी और बरानकोट उठा लिया।

"भैया · !"

"क्या बात है ?" बरानकोट की बॉहो मे हाथ डालते हुए उसने धीरे से पूछा।

दून्या तेजी से हॉफती हुई, जल्दी-जल्दी बोली—"भैया, तुम यहाँ से फौरन भाग जाओ। व्येशेन्स्काया से चार घुडसवार आए है और सोने के कमरे मे बैठे है ··उन्होने बात फुसफुसाकर की, मगर मैने सभी कुछ सुन लिया ··मिखाइल कहता है कि तुम्हे फौरन ही गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिए ··वह उनसे तुम्हारे बारे मे सभी-कुछ बतला रहा है · तुम निकल भागो यहाँ से।"

ग्रिगोरी उसके पास पहुँचा और उसके गले मे हाथ डालकर उसने उसका गाल भरपूर स्नेह से चूमा। बोला—"शुक्रिया···दून्या, तुम लौट जाओ, वरना वे लोग समझ जाएँगे कि तुम यहाँ आई हो। जाओ ···अलविदा !" फिर अकसीनिया की ओर मुडा—"रोटी जल्दी करो··· नही, पूरी रोटी न दो·· सिर्फ बडा-सा टुकडा दे दो एक।"

इस तरह उसकी चैन की जिन्दगी ने उससे रुखसत ले ली···वैसे रही भी वह कै दिन थी !

ग्रिगोरी ने इस तरह तडपड, मगर आत्मविश्वास के साथ काम किया, जैसे कि लडाई के मैदान मे हो। वह सोने के कमरे मे आया और बच्चो को चूमने के बाद उसने अकसीनिया को बॉहो मे भर लिया। बोला—"अच्छा फिलहाल अलविदा···तुम्हे मेरी खैर-खबर जल्दी ही मिल जाएगी···प्रोखोर बतला देगा तुम्हे। बच्चो की फिक्र रखना···दरवाजा अन्दर से बन्द कर लो। अगर वे लोग यहाँ आकर खटखटाएँ तो कहना कि ग्रीगोरी व्येशेन्स्काया गया है। अच्छा, मैं चला···बेकार दुखी न हो अकसीनिया !" और उसने उसे चूमा तो खारी आँसू उसके होठो पर आकर टपाटप गिरने लगे।

पर, उसे धीरज बँधाने या उसके मायूम, टूटे हुए दिल की बातें

सुनने का समय उसके पास नही था। उसने अकसीनिया की बाँहे धीरे से अलग की, गलियारे मे आया, आहट ली और फिर बाहर का दरवाजा पूरा खोला। दोन की तरफ से आती हवा के झोके ने उसके मुँह पर तमाचा-सा मारा। ग्रिगोरी ने अँधेरे का आदी होने के लिए क्षण-भर को अपनी आँखे मूँद ली।

ग्रिगोरी ने सडक पर पैर बढाए तो बर्फ नीचे चरमराई। अकसीनिया ने यह आवाज़ सुनी और हर कदम के साथ उसके दिल की कचोट बढती गई। फिर, कदमो की आवाज़ दूरी मे खो गई तो उसने बेंतो वाला छोटा फाटक बद कर दिया। हर तरफ सन्नाटा भायँ-भायँ करने लगा। सिर्फ हवा, दोन के पार के जगल मे सर्राटे भरती रही।

अकसीनिया ने हवा के झकोरो के बीच भी आहट लेने की कोशिश की, पर कुछ भी सुनाई न पडा। उसका शरीर एकदम बर्फ हो उठा। फिर, वह बवर्चीखाने मे गई और उसने चिराग बुझा दिया।

: १० :

सोवियत सरकार की अनाज-वसूली की नीति कामयाब न हुई तो १९२० की बहार के बाद के दिनो मे हुकूमत ने इस काम के लिए खास टुकडियाँ बना दी। फलस्वरूप दोन की कज्ज़ाक आबादी के बीच उथल-पुथल मच गई। ऊपरी दोन के शुमिलिन्स्काया, कज़ान्स्काया, मिगुलिन्स्काया, मेश्कोव्स्काया, व्येशेन्स्काया और येलान्स्काया ज़िलो के साथ-साथ दूसरी जगहो मे भी छोटे-छोटे हथियारबन्द जत्थे बन गए। सगठन के मूल मे रहा अमीर कज्ज़ाको का सरकारी अनाज-वसूली का विरोध और इस आग मे घी का काम किया इस मामले मे ज्यादा-से-ज्यादा सख्ती बरतने और कडे-से-कडे कदम उठाने के सोवियत सरकार के फैसले ने।

अधिकाश जत्थो मे रहे पहले के सक्रिय श्वेत-गारद, स्थानीय कज्ज़ाक शामिल हुए और इनमे से एक-एक जत्थे मे पाँच-पाँच से बीस-बीस के बीच लोग रहे। यह रहे १९१८ और १९१९ मे सजा देने वाली फौजी टुकडियो के सदस्य; सोवियत सरकार की सितम्बर की फौजी

भरती से जान चुराने वाले पहले की दोन सेना के नॉन-कमीशन अफसर और जूनियर अफसर, और पिछले वर्ष के विद्रोह के समय फौजी लूट-पाट कर और कैद लाल फौजियो को फॉसी देकर नाम कमाने वाले कातिल। सक्षेप मे यह कि सोवियत शासन मे किसी भी तरह कही भी पैर न जमा सकने वाले तमाम लोग इस तरह एक सूत्र मे बँधे।

ये जत्थे अलग-अलग गाँवो मे अनाज उगाहने वाली टुकडियो पर टूट पडे। उगाही के केन्द्रो को जाने वाली अनाज से भरी गाडियाँ राह मे उलट दी और सोवियत शासन के प्रति वफादार रहने वाले कम्यूनिस्टो और गैर-पार्टी कज्जाको को मार डाला।

इन जत्थो को पूरी तरह बरबाद कर देने का काम व्येशेन्स्काया और बाजकी के गॉव मे तैनात एक रक्षक बैटालियन को सौपा गया। लेकिन जत्थे पूरे दोन प्रदेश मे फैले रहे और इन्हे कुचलने की सारी कोशिश बेकार गई, क्योकि सबसे बडी बात यह कि स्थानीय लोगो की हमदर्दी दगाइयो के साथ रही। उन्होने उनके खाने-पीने की व्यवस्था तो की ही, उन्हे लाल सेना की गतिविधि की सूचना बराबर दी और छिपाकर अधिकारियो के हाथो मे पडने से बचाया। इसके अतिरिक्त एक समाजवादी क्रान्तिकारी जारशाही सेना का भूतपूर्व स्टाफ-कैप्टन, बटेलियन कमाण्डर कापारीन क्षेत्र की क्राति-विरोधी शक्तियों को दबाने के मामले मे जरा भी उत्सुक न लगा और उसने उनके खिलाफ की जाने वाली हर कार्रवाई की कलाई मरोडी। केवल क्षेत्रीय पार्टी कमेटी के अध्यक्ष द्वारा विवश किए जाने पर ही कभी-कभी अपनी टुकडियाँ लेकर जहाँ-तहाँ गया। मगर जल्दी-से-जल्दी व्येशेन्स्काया लौट आया। बहाना बनाया कि व्येशेन्स्काया, उसके क्षेत्रीय सगठनो और गोदामो को अरक्षित छोडकर न तो मै अपनी फौजी टुकडियाँ इधर-उधर भेज सकता हूँ, और न गफलत मे आकर खतरे मोल ले सकता हूँ···।

सो कोई चार सौ सगीनो, और चौदह सौ मशीनगनो से लैस उस बटेलियन ने गढ की रक्षा की। लोग कैदियो की रक्षा करते, पानी लाते, जगल के पेड काटते और अपने अनिवार्य कर्तव्य के रूप मे स्याही के लिए माजूफल बटोरते रहे। बटॅलियन ने अनगिनत क्षेत्रीय सगठनो और

दफतरो की स्याही और लकडी की जरूरते बडी ही कामयाबी से पूरी की। पर इस बीच इलाके मे बागी जत्थो की गिनती ताबडतोड बढती गई। मगर जब तक दिसम्बर का महीना नही आया और ऊपरी दोन-क्षेत्र की सीमा पर स्थित वोरोनेज़ प्रान्त के बोगुचार जिले मे लोगो ने एकदम सिर नही उठा लिए, तब तक बटेलियन इमारती लकडी बदस्तूर काटती रही और माज़ूफल बाकायदा बटोरती रही, परन्तु फिर मजबूरी हो गई और यह सिलसिला एकदम टूट गया। दोन प्रान्त के फौजी कमाडर के हुक्म से तीन फौजी कम्पनियो और एक मशीनगन विभाग वाली इस बटेलियन को बगावत को कुचलने के लिए भेजा गया। उसके साथ ही इस काम मे योग देने के लिए भेजी गई एक घुडसवार टुकडी, अनाज-वसूली वाली बारहवी रेजीमेट की पहली बटेलियन और दो छोटी-छोटी स्थानीय रक्षा-टुकडियाँ···।

फिर सुखोई-दोनेत्स नामक गाँव के पास जो मुठभेड हुई तो याकोव फोमीन की कमान मे व्येशेन्स्काया की स्क्वैड्रन ने बाजू से बागियो की कतारो पर हमला किया, उन्हे घेरकर मार भगाया और पीछे खदेडते समय कोई एक सौ सत्तर लोगो को काटकर फेक दिया। उनके अपने सिर्फ तीन आदमी मारे गए। कुछ इने-गिने लोगो को छोडकर स्क्वैड्रन मे सभी कज्जाक रहे और प्राय ऊपरी दोन के इलाके के रहने वाले निकले। नतीजा यह हुआ कि इस लडाई मे उन्होने एक बार फिर सदियो पुरानी कज्जाक परम्पराओ के प्रति अपनी वफादारी का परिचय दिया। लडाई खत्म होने पर साथ के दो कम्यूनिस्ट लाख विरोध करते रहे, मगर उन्होने अपने पुराने बरानकोट और रूईदार जैकेटे उतार फेकी और भेड की शानदार खाले मुर्दा बागियो के ऊपर से उतारकर खुद ओढ ली।

विद्रोह के दब जाने के कुछ दिन बाद स्क्वैड्रन को कज़ान्स्काया बुला लिया गया। फोमीन ने अपनी फौजी जिम्मेदारियो से राहत पाने के बाद यहाँ जी-भर आराम और तबीयत-भर ऐश की। यह पूरी तरह बिगडा हुआ, औरतबाज, बैठक बाज़ कज्ज़ाक कई-कई रातो को बराबर र गायब हर दिन तडका होने पर ही ठिकाने पर लौटा।

एक दिन शाम को उसके मुँह-लगे फौजियो ने उसे चमाचम बूट पहने सडक पर जाते देखा तो आपस मे एक-दूसरे को आँखे मारते हुए बोले—"यानी हमारा स्टैलियन फिर घोडियो के पास चला···अब सुबह होने तक इसकी परछाईं तक मिलने से रही ।"

यो स्क्वैड्रन के कमीसार या राजनीतिक निर्देशक को तो कभी मालूम न हुआ; पर फोमीन के यार-कज़्ज़ाको ने जब भी उसे वोदका का लालच दिलाया और परियो से रोशन जश्न का जिक्र किया, वह बिना चूके उनमे से किसी के भी यहाँ पहुँच गया। होते-होते ये दावते आदत बन गईं। जश्न जब-तब ही रखे जाने लगे और वह उनमे अक्सर ही जाने लगा। लेकिन जल्दी ही वह जीवट का कमाण्डर इस नई जिन्दगी से ऊब गया। उसका जी जैसे कि भर गया, और वह दिल बहलाने के सारे नए तरीके रहे-रहे भूलने लगा। ऐसे मे न हर शाम उसने जूते चमचमाये और न हर दिन दाढी बनाई। वह स्क्वैड्रन के अपने साथियो के यहाँ तो पीने-पिलाने के लिए भूले-भटके जाता रहा, पर बातचीत मे हिस्सा लेना उसने सचमुच बन्द कर दिया।

फिर व्येशेन्स्काया से एक रिपोर्ट आई तो लगा कि ऐसी हालत मे यह सब बकवास चलनी नही चाहिए। रिपोर्ट मे दोन-चेका के राजनीतिक विभाग ने नपे तुले शब्दो मे लिखा कि उस्त मेदवेदित्स्काया के पास के मिखाइलोवका मे गढरक्षक बटेलियन ने वाकुलीन की कमान मे विद्रोह कर दिया है।···वाकुलीन उसका रेजीमेंट का साथी और दोस्त था। कभी मिरोनोव की विद्रोही सेना मे उन्होने साथ काम किया था, और बुदयोन्नी की घुडसवार-फौज द्वारा उस सेना के घिर जाने पर उन्होने हथियारो के अम्बार एक साथ लगाए थे। दोनो के बीच मित्रता के सम्बन्ध इस बीच बराबर रहे थे। उनमे कभी किसी तरह की कोई ढील न पडी थी और अभी थोडे समय पहले सितम्बर के आरम्भ मे वाकुलीन व्येशेन्स्काया आया था। उस समय भी उसने दाँत पीसकर कहा था—"आज तो इन्ही कमीसारो की हुकूमत है। वे अनाज वसूल कर-करके इन किसानो की ज़िन्दगी चौपट कर रहे है और देश को बरबादी के रास्ते पर ढकेल रहे है।" और अपने अन्तरतम मे अपने

मित्र की बात से सहमत होने पर भी फोमीन ने विवेक और सावधानी से काम लिया था। यो भी वह बहुत चौकन्ना रहता था और न हडबडी मे कभी कुछ करता था, और न फौरन ही अपने को किसी तरह बाँधता था ·।

परन्तु, बाकुलीन की बटेलियन के बगावत करने की खबर पाते ही उसकी स्वभावगत सावधानी ने उसका हाथ सहसा ही छोड दिया।···

एक दिन शाम को, स्क्वैड्रन के व्येशेन्स्काया के लिए रवाना होने से ज़रा पहले कितने ही कज्जाक ट्रुप-कमाडर अलफेरोव के यहाँ जमा हुए। वोदका घोडे वाली बाल्टी मे लबालब भर दी गई। मेज़ की चारों तरफ बैठे लोग बडे जोश मे बाते करने लगे। शराबियो की इस महफिल मे फोमीन बातें चुपचाप सुनता रहा और फिर उसने उसी तरह धीरे से बाल्टी की सारी वोदका नीचे लुढका दी। पर एक कज्ज़ाक ने सुखोई-दोनेत्स के पास के हमले की याद दिलाई तो विचारो मे खोए-खोए ही अपनी मूँछ ऐंठता हुआ बोला—"माना कि हमने उक्रइनो को गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया, मगर कही ऐसा न हो कि अब हम इसी तरह काटकर फेक दिए जाए। मान लो कि व्येशेन्स्काया पहुँचने पर हमे लगे कि अनाज की वसूली करने वाली टुकडियाँ लोगो के घरो का दाना उँडेल कर ले गई है · तब बतलाओ कि क्या होगा? कज़ान्स्काया के लोगों को तो इन टुकडियो के ये लोग फूटी आँखो नही सुहाते। वे बुहारियो से झाड-झाडकर खत्तियाँ खाली करते रहे है।"

कमरे मे सन्नाटा छा गया। फोमीन ने अपने साथियो की ओर देखा और बरबस मुस्कराते हुए बोला—"मैं तो महज़ मज़ाक कर रहा था··· खयाल रखना और किसी के सामने बेकार मुँह न खोलना·· पता नही हँसी की बात का मतलब कौन क्या लगा ले।·· "

फिर, व्येशेन्स्काया लौटते समय अपनी घुडसवार टुकडी के आधे ट्रुप के साथ वह अपने गाँव, रुबेजनी की तरफ मुड आया। घर के फाटक के पास घोडे से उतरा, रासें साथ के एक आदमी को थमाईं और अन्दर दाखिल हुआ। यहाँ उसने भावहीन ढँग से झुककर अपनी

पत्नी का अभिवादन किया, माँ का नमन किया। आदर से हाथ मिलाया और अपने बच्चो को सीने से लगाया। फिर स्टूल पर बैठते और अपनी तलवार, अपने घुटनो के बीच रखते हुए पूछा—"लेकिन पापा कहाँ है ?"

"चक्की पर गये हैं।" माँ ने जवाब दिया और बेटे को सिर से पैर तक कडी नजरो से देखते हुए जैसे आदेश दिया—"टोपी उतार··· पापी कही का! देवताओ के नीचे टोपी लगाकर भला कौन बैठता है ? उफ याकोव, मुझे लगता है कि तुम्हारा दिमाग एक-न-एक दिन खराब होकर ही रहेगा।"

फोमीन जबरदस्ती मुस्कराया, टोपी उतारकर हाथ मे ले ली, मगर बाहर के कपडे उतारने की नही सोची।

माँ ने फिर पूछा—"कोट क्यो नही उतारते आखिर ?"

"मैं तो एकाध मिनट को तुम सबको देखने आया हूँ।···काम के मारे वैसे कभी साँस तो मिलती नही।"

"चलो-चलो, तुम्हारे काम का सबको पता है।"···बुढिया ने रुखाई से कहा और व्येशेन्सकाया मे औरतो के साथ गुलछर्रे उडाने की ओर सकेत किया। अफवाहे पर लाकर रुबेजनी तक आ चुकी थी।

समय से पहले ही बूढी, चहरे से पीली और सबकी निगाहो में गिरी हुई वह औरत यानी फोमीन की बीवी घबराकर सास की ओर देखने लगी और उठकर स्टोव के पास चली गई। फिर अपने पति को खुश करने के लिए, उसका अनुग्रह करने के लिए और अधिक नही तो एक बार ही उसकी कृपा-दृष्टि से कृत्कृत्य होने के लिए उसने स्टोव के नीचे से कपडे का टुकडाउठाया, आकर घुटनो के बल बैठी और उसके बूटो का कीचड साफ करने लगी।

"कैसे शानदार बूट है तुम्हारे, याकोव ? लेकिन गीली मिट्टी बहुत चिपकी हुई है···मैं अभी साफ कर चमकाए देती हूँ इन्हे।" बिना सिर ऊपर उठाए उसने बहुत ही धीरे से कहा और फोमीन के चारो ओर, घुटनो के बल घूमने लगी।

फोमीन को कभी इस औरत से बहुत प्यार था, पर इधर वर्षों से

वह उसके साथ न रहा था और उसके मन मे उसके लिए एक घृणाभरी करुणा के अतिरिक्त और कुछ न था···न कोई प्यार···न कोई स्नेह···और न कोई ममता। पर औरत उसे उसी तरह प्यार करती और उसका हर गुनाह माफ करती गई थी। उसके देर-सबेर लौटने की आशा भी उसने अपने मन मे कही-न कही चुपचाप, सँजो रखी थी। फार्म का सारा कामकाज सम्हालना, बच्चो को पालना पोसना और सनकी सास को खुश रखने के लिए भरसक सभी कुछ करते रहना, इतने समय से उसकी जिन्दगी थी। खेतीबारी के काम का ज्यादातर बोझ उसी के कन्धो पर था। इस तरह जीतोड मेहनत और दूसरे बच्चे की पैदाइश के बाद लग जाने वाली बीमारी ने उसे चूसकर रख दिया था। हर साल बदन की ताकत चुसती गई थी, कमजोरी आती गई थी, चेहरे के गुलाब मुरझाते गए थे और बुढापे ने उम्र से पहले ही गालो पर झुर्रियो का मकडी का जाला बुन दिया था। समझदार पर बीमार जानवरो की आँखो मे नाचने वाली भयजन्य विनय की भावना उसकी आँखो मे भी नजर आने लगी थी। पर तेजी से बुढाने और हर दिन स्वास्थ्य के गिरते जाने का अनुभव खुद उसे जैसे कभी हुआ ही न था। उसके अन्तर मे अब भी कही आशा लौ देती थी और साल-छ महीने बाद भी पति से मिलने पर उसके मन मे उसके लिए इस तरह प्यार उमड़ता था कि निढाल हो उठती थी। मन-ही-मन उसकी सराहना करते थकती न थी।···

फोमीन ने अपनी पत्नी की दोहरी कमर, उसके कन्धो की उभरी हुई शानदार हड्डियाँ और बूटो की गीली मिट्टी पोछते हुए बडे-बडे मेहनती हाथ नजर गडाकर देखे। मन-ही-मन सोचा—'औरत हसीन है, इसमे दो रायें नही···यानी यह औरत है जिसके साथ कभी मैं राते बिताता था। पर अब तो चेहरे से किस तरह उम्र टपकने लगी है। कैसे बुढिया लगने लगी!'

"चलो-चलो···काफी है···हो गए साफ बूट, अभी फिर कीचड मे सन जाएँगे।" पत्नी के हाथो से पैर छुडाते हुए उसने नाराज़ होकर कहा।

औरत ने बडी कोशिश से कमर सीधी की और उठकर खडी हो गई। चेहरे पर हलकी-हलकी लाली दौड गई। प्यार के साथ-साथ कुत्तो की-सी वफादरी ने भी आँसू-भरी आँखो के कोनो से उसे झाँककर देखा तो फोमीन दूसरी तरफ को मुड गया और अपनी माँ से बोला—"खैर, और हालचाल क्या है · कैसा कामकाज चल रहा है ?"

"कोई नई बात नही है···सब बदस्तूर है।"

"अनाज वसूल करने वाली कोई टुकडी अभी तक यहाँ आई या नही ?"

"अभी कल ही तो यहाँ से नीज़्ने-क्रीव्स्काया गई है।"

"हमारे यहाँ से भी अनाज वसूला उन लोगो ने ?"

"हाँ, यहाँ से भी लिया···कितना अनाज लिया उन लोगों ने दावीदका ?"

"दादा ने देखा था···वे ही जानते हैं। मेरे खयाल से दस बोरे ले गए है।" बच्चे ने जवाब दिया। चौदह साल के उस बच्चे की बडी नीली आँखें, बिल्कुल अपने पिता की आँखो-जैसी थी।

"उ···फ ··।" फोमीन उठा और अपने बेटे पर एक तेज़ नज़र डालकर अपनी पेटी ठीक करने लगा। फिर एक सवाल मन मे आते ही उसका चेहरा ज़र्द पड गया। पूछा—"तुमने उन लोगो से मेरा नाम नही लिया ? उन्हे पता तो लगता कि वे किसका अनाज उठाकर ले गए यहाँ से।"

बुढिया ने हाथ झटका और मुस्कराई तो उसकी आवाज़ मे कुछ-कुछ हिकारत भी घुल उठी। बोली—"उन्होने तुम्हारे नाम से कोई खास रोब नही खाया। उनका कमाडर बोला—'जिसके पास जितना फालतू होगा, उसे उतना सब देना पडेगा। इस मामले मे कही किसी तरह का कोई फ़र्क नही किया जाएगा। चाहे फोमीन हो चाहे खुद क्षेत्रीय अध्यक्ष, अनाज फालतू होगा तो हम लेंगे। हम किसी को नहीं जानते।'···और इसके बाद वे लोग अनाज की खत्तियाँ खखोरने लगे।"

"इन लोगों से भी समझूँगा माँ···मैं इन लोगों से भी समझ लूँगा।" फ़ोमीन ने भारी आवाज़ मे कहा और घर के लोगो से जल्दी-जल्दी

बिदा लेकर चलता बना।

घर के इस दौरे के बाद वह बडी ही सतर्कता से अपनी स्क्वैड्रन के लोगों के मन की थाह लगाने लगा। जल्दी ही उसे पूरा विश्वास हो गया कि अधिकाश लोग अनाज वसूली की नीति से असन्तुष्ट है। उनकी पत्नियाँ और दूर-पास के नाते-रिश्तेदार आ-आकर अनाज वसूली करने वाली टुकडियो की कहानियाँ उन्हे सुनाते थे कि कैसे कहाँ-कहाँ उन्होने तलाशी ली और बोआई और खाने-भर को छोड़कर बाकी सारा अनाज ढो ले गए।···

फलत रक्षक-बटेलियन की जो बैठक बाजकी मे जनवरी के अन्त मे हुई, उसमे क्षेत्रीय सैनिक कमीसार शाखालेव का बोलना लोगो ने असम्भव कर दिया। क्षण-क्षण पर बात काटी और बीच-बीच मे चीख-चीखकर कहा—"अनाज-वसूली करने वाली टुकडियाँ वापस बुला लो।"

"अब तो हमारा अनाज लेना बन्द कर लो।"

"अनाज-वसूली करने वाले कमीसारो का नाम मिटे।"

बदले मे रक्षक टुकडी के लाल सैनिको ने चिल्लाकर कहा—"क्रान्ति-विरोधी हो तुम सब।"

"इन सूअर के बच्चो के गिरोह तोडो और इन्हे अलग-अलग रेजीमेटो मे भेजो।"

बैठक तूफानी रही और काफी देर तक चली। रक्षक-बटेलियन के इने-गिने कम्यूनिस्टो मे से एक चिन्तित होते हुए फोमीन से बोला—"इस मौके पर अपनी तरफ से तुम कुछ कहो, कॉमरेड-फोमीन! ज़रा देखो कि तुम्हारी स्क्वैड्रन के लोग क्या तमाशा कर रहे है।"

फोमीन होठो-ही-होठो मुस्कराया—"लेकिन मै तो पार्टी का सदस्य नही हूँ···मेरी बात ध्यान से सुनेगा कोई?"

इस तरह फोमीन ने अपना मौन नही तोडा और बैठक समाप्त होने से बहुत पहले ही वहाँ से उठकर चला गया। उसके साथ ही बटेलियन-कमाण्डर कापारिन भी उठ गया। फिर व्येशेन्स्काया के रास्ते मे नई परिस्थितियो की चर्चा चली तो दोनो को अपने विचार बहुत-कुछ एक

से लगे। एक सप्ताह बाद फोमीन के ठिकाने पर बातें करते हुए कापारिन ने साफ-साफ कहा—"इस वक्त हालत यह है कि 'करो या मरो।' यानी या तो हमे फौरन ही कोई-न-कोई कदम उठाना चाहिए या कभी कोई कदम न उठाने का फैसला कर सब्र से बैठ रहना चाहिए। याकोव येफिमोविच, मौका मिला है तो हमे इससे फायदा उठाना ही चाहिए। बहुत ही सही वक्त है। कज़्ज़ाक हमारा पूरा साथ देंगे। पूरे इलाके मे तुम्हारा बड़ा मान है। इससे मुग्राफिक हवा दुबारा कभी न मिलेगी। आखिर चुप क्यो हो ? कुछ तो सोचो।"

"मुझे सोचना क्या है ?" फोमीन ने नीची आँखो ही कापारिन की ओर देखते हुए कहा—"सवाल तो तय हो ही चुका है···अब तो एक नक्शा-भर बनाना है कि सब-कुछ ठीक-ठाक ढग से चले और कोई गडबड़ी कही न हो···बस, तो, आओ, उस नक्शे के बारे मे ही बातें कर लें।"

परन्तु, फोमीन और कापारिन की इस दोस्ती ने सदेह उपजाया और यह अनदेखी न रही। बटेलियन के कम्यूनिस्टो ने पूरी निगरानी का इन्तजाम कर दिया और अपने मन के सदेह की बात राजनीतिक विभाग के अध्यक्ष अर्तेमयेव और सैनिक कमीसार शाखायेव को पहुँचा दी।

अतमयेव ने हँसते हुए कहा—"एक बार दहशत खानेवाला दो बार शरमाता है। कापारिन बुज़दिल है। तुम्हारा खयाल है कि वह पक्के इरादे के साथ कोई बडा कदम उठा सकता है। जहाँ तक फ़ोमीन का सवाल है, उस पर निगाह रखी जाएगी और काफी जमकर रखी जाएगी। वैसे बिल्कुल मुमकिन नही लगता कि वह खुद कुछ करने की हिम्मत करेगा।" फिर जैसे अपनी ओर से फैसला दिया—"यह सब तुम्हारे दिमाग का खलल है।"

पर, षड्यन्त्रकारियो के बीच समझौता पहले ही हो गया, इसलिए फ़ोमीन पर अब निगाह रखना बेकार ही रहा। उनके बीच निश्चित हुआ कि विद्रोह बारह मार्च को आठ बजे सबेरे आरम्भ किया जाए। उस दिन फ़ोमीन अपने स्क्वैड्रन को लड़ाई के पूरे साज-सामान के

साथ सुबह के अभ्यास के लिए बाहर ले जाए और इसी समय व्येशेन्स्काया के बाहरी इलाके मे ठहरी मशीनगन वाली टुकडी पर अचानक ही हमला बोल दिया जाए, मशीनगनें छीन ली जाएँ और इसके बाद क्षेत्रीय सगठनो के माँजे जाने के काम मे रक्षक-सेना की भरपूर सहायता की जाए।

पर, कापारिन का मन दुबिधा मे पडा कि शायद पूरा बटेलियन मेरा साथ दे। और, उसने मन का यह चोर फोमीन के सामने रख पूरी बात ध्यान से सुनने के बाद कहा—"मशीनगनें हाथ मे आ जाएँ, फिर तो दो मिनट मे तुम्हारी बटेलियन के पूरे-के-पूरे लोगो का मुँह बद हो जाएगा।"

इस बीच फोमीन और कापारिन पर बहुत ही कडी निगाह रखी जाने लगी। पर, उसका नतीजा कुछ न निकला। वे आपस मे बहुत ही कम मिले। जब मिले तो फौजी काम से ही मिले। हा, फरवरी के अत मे ज़रूर एक गश्तीटुकडी ने एक रात उन दोनो को एक खास सडक पर, एक साथ देखा। उस समय फोमीन अपने घोडे की लगाम थामे आगे-आगे चलता नजर आया और कापारिन उसकी बगल मे कदम बढाता दीखा।

गश्ती टुकडी ने अपनी रिपोर्ट देते हुए कहा—"हमने ललकारा तो कापारिन ने जवाब मे कहा—'दोस्त!' और फोमीन को अपने क्वार्टर मे ले गया। फोमीन ने वहाँ अपना घोडा बरसाती के जगले से बाँधा। क्वार्टर मे कोई दीया-बत्ती नही की गई। तडके चार बजे फोमीन बाहर निकला, घोडे पर सवार हुआ और अपने क्वार्टर की तरफ रवाना हो गया। इससे ज्यादा हमसे कुछ नही कह सकते।"

क्षेत्रीय सैनिक सेनापति शाखायेव ने कोड-भाषा मे एक तार दोन-प्रदेश के फौजी कमाडर के नाम भेजा और उसमे फोमीन और कापारिन की सदिग्ध स्थिति के बारे मे सब-कुछ लिखा। दो-चार दिनो मे ही तार का जवाब आ गया कि दोनो को उनकी जगहो से हटा दिया जाए और गिरफ्तार कर लिया जाए।

फिर, क्षेत्रीय पार्टी ब्यूरो की एक बैठक बुलाई गई। बैठक मे तय

किया गया कि फोमीन को एक सदेश भेजा जाए। संदेश मे कहा जाए कि क्षेत्रीय सैनिक कमीसारियट का हुक्म है कि तुम नोवोचेरकास्सक लौट जाओ फौजी-कमाडर के सामने हाजिर हो, और यहाँ अपनी बटेलियन अपने सहायक ओवचिन्निकोव को सौप दो।

साथ ही आशका हुई कि फोमीन की गिरफ्तारी की खबर पाते ही कही वह बटेलियन बगावत न कर दे। इसलिए तय पाया कि कजान्स्काया मे हथियारबद जत्थे के आ धमकने का बहाना बनाकर उसे उसी दिन वहाँ भेज दिया जाए और अगले दिन षड्यन्त्रकारियों को गिरफ्तार कर लिया जाए।

रक्षक-सेना की दूसरी कम्पनी के कमाडर त्काशेको नाम के कम्यूनिस्ट को आदेश दिया गया कि अपनी बटेलियन के कम्यूनिस्टों और प्लैटून कमाडरो को बगावत की हालत से आगाह कर दो और अपनी कम्पनी के साथ-साथ, मशीनगनवाली टुकडी को भी लडाई के लिए पूरी तरह तैयार रखो।

फोमीन को अगले दिन सबेरे वापसी का हुक्म मिल गया। उसने बहुत ही शात और सधे हुए स्वर मे कहा—"ठीक है···तुम स्क्वैड्रन सम्हालो, ओवचिन्निकोव! मै नोवोचेरकास्सक चला। स्क्वैड्रन का हिसाब-किताब देखना चाहते हो?"

ओवचिन्नकोव गैरपार्टी-ट्रुप कमाडर था। उसे न कभी चेतावनी मिली थी और न उस पर किसी तरह का कोई सदेह किया गया था। वह स्क्वैड्रन के कागज़ात मे डूब गया।

फोमीन को मौका मिला तो उसने फौरन ही कापारिन के नाम एक पत्र-लिखा—"हम आज ही पूरी कारंवाई करेंगे। मुझे वापस बुला लिया गया है। तैयार रहना।" और बरसाती मे उसने चिट अपने अर्दली को देते हुए फुसफुसाकर कहा—"इसे अपने गाल मे दबा लो। घोड़े पर सवार होकर कदम चाल से कापारिन के पास जाओ, यह कागज़ उसे दो और फौरन ही लौट आओ! हाँ, खयाल रखना, अगर सड़क पर तुम्हे कही कोई रोके-टोके तो इसे साफ निगल जाना।"

उधर कजान्स्काया जिला-केन्द्र ले जाने का हुक्म मिला तो

ओवचिन्निकोव ने मार्च की तैयारी की और स्क्वैड्रन को गिरजे के चौक मे परेड कराना शुरू किया। फोमीन अपने घोडे पर सवार होकर उसके पास पहुँचा। बोला—"मै अपनी स्क्वैड्रन के लोगो से अलविदा तो कह लूँ ?"

"जरूर···ज़रूर, मगर जल्दी करो···हमे रोको नही।"

और फिर अपना उछलता हुआ घोडा स्क्वैड्रन के सामने रोकते हुए फोमीन ने लोगो की तरफ देखकर, चिल्लाकर कहा—"साथियो, तुम सब मुझे जानते हो। तुम जानते हो कि मैंने किस चीज़ के लिए हमेशा कशमकश की है। मैं हमेशा तुम लोगो के साथ रहा हूँ। लेकिन, आज मै तुम्हारे साथ नही रह सकता, क्योकि कज़्ज़ाक लूटे जा रहे है, और अनाज उगाने वालो से उनका अनाज लूटा जा रहा है। यही वजह है कि तुम्हारी कमान मेरे हाथो से ले ली गई है, और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे मामले मे लोगो के इरादे क्या हैं! बस, तो, इसीलिए तुमसे अलविदा कहना चाहता हूँ मै···"

एक क्षण तक स्क्वैड्रन के लोग बीच-बीच मे चिल्लाए-चीखे, मगर फोमीन रकाबो पर तनकर खड़ा हो गया और आवाज ऊँची करते हुए और तेजी से बोला—"अगर तुम इस लूटपाट और डाकेज़नी से अपने को छुटकारा दिलाना चाहते हो तो अनाज-वसूली करने वाली टुकड़ियो को बाहर निकाल दो और शाखायेव जैसे कमीसारो को मार डालो··· वे दोन तक बढ आए हैं···"

उसके अंतिम शब्द कोलाहल मे डूब गए। वह एक क्षण तक रुका और फिर उसने ऊँची आवाज़ मे कमान दी—"दाएँ तीन-तीन की कतार मे···क्विक-मार्च!"

स्क्वैड्रन ने कमान का पूरा पालन किया। ओवचिन्निकोव सारा-कुछ देखकर अवाक् रह गया। घोडा दौडाता हुआ फोमीन के पास पहुँचा और पूछने लगा—'जा कहाँ रहे हो, साथी फोमीन ?"

फोमीन ने, गर्दन मोडे बिना, उसी तरह उत्तर दिया—'कुछ नही, गिरजे के चारो ओर ज़रा घुड़सवारी करने···"

पिछले कुछ क्षणो मे जो कुछ सामने आया, उसका महत्त्व

ओवचिन्निकोव ने केवल अब समझा, और अपना घोडा कतार से बाहर निकाल लिया। उसके बाद बाहर आया राजनीतिक निर्देशक, उप-कमीसार और एक और आदमी। परन्तु उनके कोई दो सौ कदम निकल जाने के बाद उन पर फोमीन की नजर पडी। अपना घोडा मोडते हुए चीखा—"ओवचिन्निकोव···हाल्ट!" परन्तु वे चारो अपने घोडो को हवा की रफ्तार से दौडा चले। बर्फ घोडो की टापो के नीचे से उछल-उछलकर चारो तरफ उडने लगी। फोमीन ने हुक्म दिया—"आर्म्स! ओवचिन्निकोव को गिरफ्तार कर लो! पहला ट्रुप···पीछा करे इन लोगो का!"

और, गोलियाँ बरसने लगी। पहले ट्रुप के सोलह लोग उन तीनों का पीछा कर चले। इस बीच फोमीन ने बाकी स्क्वैड्रन को दो हिस्सों मे बाँट दिया। पहले हिस्से को, तीसरे ट्रुप के कमाडर चुमाकोव के अधीन मशीनगनवाली टुकडी को निहत्था करने के लिए भेज दिया, और दूसरे हिस्सो को लेकर खुद गाँव के बाहरी इलाको की ओर चल पडा। वहाँ रक्षा-सेना की कम्पनी ने बड़े-बड़े अस्तबलो मे पडाव डाल रखा था।

पहली विद्रोही टोली गोलियों से हवा को छलनी करती और तलवारे लपलपाती खास सडक पर घोडे दौडा चली। रास्ते मे लाल-सेना की मशीनगनवाली टुकडी के लोग अपने-अपने क्वार्टरो से दौडते हुए निकले तो उसने उनमे से चार को तलवार के घाट उतार दिया।

मशीनगनवाली टुकडी के लोग जिस घर मे ठहरे हुए थे, वह बाकी गाँव से जरा अलग-थलग था। लेकिन, उसमे और बाकी घरो मे सिर्फ कोई दो सौ कदमो का फासला था।

सो, मशीनगनो ने कज्जाको को बिल्कुल पास से भूनना शुरू किया, तो वे फौरन ही वापस हो लिए। पर, उनमे से तीन पास-से-पास की गली मे भी मुड न पाए कि वे गोलियो के शिकार हो गए और अपनी काठियो से नीचे आ रहे।

मशीनगनचालको पर एकदम हमला कर उन्हे हथिया लेने की पूरी कोशिश बेकार गई और विद्रोहियो ने इस दिशा मे दुबारा प्रयत्न

नही किया। टोली का कमाडर अपने फौजियो को छानी के नीचे-नीचे ले चला और, घोडे से बिना उतरे, पत्थर के शेड से चालाकी से झाँकते हुए बोला—"उन्होने दो को और ले डाला।" उसने अपनी फर की टोपी से पसीने से तर भौहे पोछी और दूसरो की तरफ मुडा—'जवानो, पीछे लौट चलो ··जाए और फोमीन अकेला मशीन-गनो को हथियाए···बर्फ पर कै लोगो को पडा छोड आए है हम—तीन को न ? खैर, अब वह खुद जोर लगाकर देखे ज़रा !"

गाँव के पूर्वी बाहरी इलाके मे गोलियाँ चलनी शुरू हुई तो कम्पनी का कमाडर त्काचेको भडभडाकर बाहर निकला और रास्ते मे कपडे पहनते हुए बैरको की तरफ भागा। वहाँ कोई तीस लाल सैनिक पहले से ही एक कतार मे खडे दीखे। उन्होने उसका अभिवादन किया और साथ ही सवालो की बौछार कर दी—"गोलियाँ कौन चला रहा है ?"

'आखिर मामला क्या है ?"

पर कमाडर ने सवालो के जवाब दिए बिना, बैरको से उमडते लाल फौजियो को भी कतार मे खडा होने का हुक्म दिया। वेरको मे दौडकर आ गये। क्षेत्रीय प्रशासन के कई कम्यूनिस्ट कार्यकर्त्ता भी उन्ही मे शामिल हो गये। राइफले गाँव मे जहाँ-तहाँ गोलियाँ बरसाने लगी। इसी समय बाहरी इलाके मे, पश्चिम की ओर कही हथबम का धडाका हुआ। कोई पचास घुडसवारो को, नगी तलवारे चमकाते हुए, बैरको की ओर आता देखकर त्काचेको ने इत्मीनान से अपनी पिस्तौल केस से बाहर निकाली। कतारो मे सन्नाटा छा गया और हुक्म पाने के पहले ही फौजियो ने अपनी राइफले तैयार कर ली।

"लेकिन ये तो अपने ही आदमी है। देखो न, वह रहा हमारी अपनी बटेलियन का कमाडर कॉमरेड कापारिन।" एक लाल सैनिक चिल्लाकर बोला।

घुडसवार, जैसे कि कमान पर, गली के किनारे-किनारे बढे और घोडो की गर्दनो से सटते हुए पूरी रफ्तार से बैरको की ओर उठ चले।

"देखो, ये लोग पास न आने पाएँ।" त्काचेंको ने पूरी आवाज़ से

चीखकर कहा।

और इसी समय जो गोलियाँ चली तो उसकी आवाज़ डूब गई। दूसरी तरफ घुड़सवार अभी सौ कदम दूर ही रहे कि उनमे से चार हडबडाकर काठियो से नीचे आ रहे और बाकी तितर-बितर होकर लौट गए। गोलियाँ उनका पीछा करती रही। एक घुडसवार हल्का जख्म खाने पर भी काठी से खिसककर नीचे आ गया। पर रासें उसने हाथो से नही छोडीं और सरपट दौडते घोड़े के साथ कोई सौ गज़ तक घसिटता चला गया। पर इसके बाद उसने अपने पैर जमाए। रकाब और काठी का पिछला हिस्सा कसकर थामा, देखते-देखते फिर घोड़े पर सवार हुआ। उसे झटके से मोडा और सबसे पास की गली मे गायब हो गया।

पहली टुकडी के लोगो को ओवचिन्निकोव की तलाश मे कोई कामयाबी नही मिली और वे गाँव लौट आए। कमीसार शाखायेव को ढूंढने का भी कोई नतीजा नही निकला। वह न वीरान फौजी कमीसारियट मे मिला और न अपने क्वार्टर मे। बात यह हुई कि गोलियो की आवाज सुनते ही वह दौडता हुआ दोन के किनारे पहुँचा। जमे हुए पानी की बर्फ पारकर जगल मे घँसा। वहाँ से बाज़की गाँव पहुँचा और अगले दिन व्येशेन्स्काया से पचास वर्स्ट से ज़्यादा दूर उस्त-खोपरस्काया के जिले मे जा जमा।

अग्रगण्य क्षेत्रीय अधिकारियो मे से अधिकाश समय रहते बच निकले और उनकी खोज फिर खतरे से खाली न लगी, क्योकि इस बीच मशीनगन वाली टुकड़ी के लाल फौजी हल्की मशीनगनें लेकर व्येशेन्स्काया के मध्य भाग की ओर बढ गए और उन्होने खास चौक को जाने वाले सभी रास्ते घेर लिए।

दूसरी ओर स्क्वैड्रन के लोग तलाश का काम छोडकर दोन के किनारे आए और फिर घोडो पर सवार होकर गिरजे के चौक मे पहुँचे। यही से उन्होने ओवचिन्निकोव का पीछा करना शुरू किया था।

होते-होते जल्दी ही सभी लोग वहाँ जमा हो गए। फोमीन ने उनमें से कुछ की गारद बिठा दी और बाकी लोगो को क्वार्टरो मे

जाने का हुक्म दिया, लेकिन हिदायत दी कि घोडे बराबर कसे खडे रहे ।

फिर फोमीन, कापारिन और ट्रुप कमाडर आपस मे सलाह-मशवरा करने के लिए गाँव के बाहर के एक मकान मे जमा हुए ।

"सारा खेल चौपट हो गया ।" कापारिन ने बेंच पर ढहते हुए, निराशा से कहा ।

"हाँ, बात तो ऐसी ही है···जिला-केन्द्र हम हथिया नही सके, तो अब यहाँ कदम जमाए रखना मुश्किल ही होगा ।" फोमीन ने शात भाव से कहा ।

चुमाकोव ने प्रस्ताव सामने रखा । "पूरे इलाके मे घेरा डाल दिया जाए, याकोव-येफिमोविच ! अब सहमने से कोई फायदा नही । आखिर मौत आने के पहले तो हम मरेंगे नही । हमे कज्जाको को उभारना चाहिए और इस तरह जिला-केन्द्र को हथियाना चाहिए ।"

फोमीन ने मुँह से बिना कुछ कहे उसे घूरकर देखा और कापारिन की ओर मुडा । "अब दिमाग खराब हो रहा है, सरकार ! यह रोना-धोना खत्म कीजिए । जैसा फन्दा गले मे भेड के मारने पर पड़ेगा, वैसा ही मैंमने को हलालने पर पडेगा । जब एक कदम साथ-साथ उठाया है, तो अब आखिर तक साथ-साथ चलिए । क्या खयाल है ? अब यह बतलाइए कि हम व्येशेन्स्काया से पीछे हटें या एक बार फिर कोशिश करे ?"

चुमाकोव तड़ से बोला —"नही, अब दूसरे लोग करे कोशिश । मैं मशीनगन का सामना करने नही जा रहा । यह बेकार का खिलवाड़ है । इससे आना-जाना कुछ नही ।"

"मै तुमसे तो पूछ नही रहा । तुम चुप रहो ।" फोमीन ने चुमाकोव पर नजर डाली, मगर उसने अपनी आँखें दूसरी तरफ कर ली ।

कापारिन एक क्षण बाद बोला—"हाँ, यह बात तो ठीक है ·· दुबारा कोशिश करने का कोई मतलब नही होता । लाल फौजियो के पास हमसे बेहतर हथियार है । उनके पास चौदह मशीनगने है जबकि हमारे पास मशीनगन एक नही है···लोग भी उनके पास ज्यादा हैं ··

हमे तो पीछे हटकर और कज्जाकों को उभारकर बगावत की तैयारी करनी चाहिए। यानी, जब तक लाल फौजो को कुमुक मिलेगी, तब तक पूरे इलाके मे आग फैल जाएगी। अब तो एक तिनके का जो आखिरी सहारा है, वह यही है।"

काफी देर तक चुप रहने के बाद फोमीन बोला—"खैर, तो हमे इसी तिनके का सहारा लेना होगा ··ट्रूप कमाडरो, तुम फौरन जुट जाओ, साज-सामान देखो और पता लगाओ कि हर आदमी के पास कितने कितने कारतूस है। साथ ही सख्त हुक्म दे दो कि एक भी कारतूस बरबाद न किया जाए। इसके बाद जो भी यह हुक्म तोडेगा उसकी गरदन मै खुद अपनी तलवार से उडा दूँगा। लोगो से कह दो यह!" फिर एक क्षण तक चुप रहने के बाद, उसने मेज पर ज़ोर से मुट्ठी मारी। "उफ···कम्बख्त मशीनगनें! काश कि हमने उनमे से चार भी हथिया ली होती अब क्या, अब तो वे लोग हमे यहाँ से खदेड बाहर करेगे ही। अच्छा, तो यह बातचीत अब खत्म···अगर हम हाँक-कर बाहर ही न कर दिये गए तो रात व्येशेन्स्काया मे बिताएँगे और कल तडके इलाके मे आगे कदम बढाएँगे···"

और रात चैन से बीत गई। व्येशेन्स्काया के एक सिरे पर विद्रोही स्क्वैड्रन के लोग रहे और दूसरे छोर पर कम्यूनिस्टो और नवागन्तुक जवान कम्यूनिस्टो वाली रक्षक सेना के सदस्य। यानी दोनो पक्षो के बीच मकानो के सिर्फ दो सिलसिले रहे, मगर रात मे हमला करने की हिम्मत दो मे से एक की भी न हुई।

अगले दिन सबेरे बागियो ने बिना लडे गाँव छोड दिया, और दक्षिण-पूर्व की ओर बढ चले।

: ११ :

ग्रिगोरी अपना गाँव छोडने के बाद, तीन सप्ताह तक, येलान्स्काया-ज़िले के वेर्खने-क्रिव्स्कोइ नाम के गाँव मे अपनी रेजीमेट के एक जान-पहचानी कज्जाक के यहाँ रहा। इसके बाद वह गोरबातोव्स्की नामक गाँव मे चला गया, और एक महीने से अधिक समय तक अकसीनिया के दूर के एक रिश्तेदार के साथ टिका रहा।

यहाँ वह दिनो-दिन घर के अन्दर बद रहा। सिर्फ रात को बाहर निकलकर अहाते मे आया। लेकिन यह जिन्दगी कैद की जिन्दगी से बेहतर किसी मानी मे न लगी। निकम्मेपन के कारण मन गिरा-गिरा-सा बराबर रहा। इसके अलावा वह निरन्तर अपने बच्चो और अकसीनिया की ओर खिचता रहा।

अकसर ही रात को नीद न आती तो वह बरानकोट पहनता और तातारस्की लौटने का पक्का इरादा करता। परन्तु फिर विचार बदल जाता। वह अपना कोट उतार देता और कराह के साथ चेहरा तकिए मे गडाकर, पलग पर पड रहता। जिन्दगी जरूरत मे ज्यादा इम्तहान लेती लगती। मेज़बान उसके साथ बडी हमदर्दी दिखलाता, लेकिन ऐसे मेहमान को हमेशा अपने यहा बनाए रखना उसे बस के बाहर की बात लगती।

एक दिन रात को ग्रिगोरी खाना खाने के बाद अपने कमरे मे गया तो मालकिन की नफरत से भरी पतली आवाज उसके कानो मे पडी—
"यह खटराग आखिर खत्म कब तक होगा ?"

"कैसा खटराग ? क्या कह रही हो तुम ?" मालिक ने भारी आवाज मे पूछा।

"मेरा मतलब है कि इस अपाहिज अजगर से आखिर हमे कब छुटकारा मिलेगा ?"

"जबान बद कर !"

"मैं बिल्कुल ज़बान बद नही करूँगी···अनाज घर मे इतना थोडा है कि बिल्ली भी देखे तो रो दे। मगर, तुम हो कि इस पर भी इस कुबडे को घर मे डाले हुए हो·· दिन-पर-दिन ठुँसाते जा रहे हो, शैतान के बच्चे को ! मै पूछती हूँ कि यह कब तक चलेगा ? और, मान लो कि सोवियत को जानकारी हो जाए इस बात की ? वे लोग हमारे सिर धड से अलग कर देंगे और हमारे बच्चे यतीम होकर रह जाएँगे।"

"मुँह बद कर, अवदोत्या !"

"मैं किसी तरह मानूँगी नही। हमारे आगे बच्चे है, और हमे

उनकी भी तो बात सोचनी है। कितना अनाज है हमारे घर मे जो तुम इस काहिल का पेट भाटते जा रहे हो ? वह कौन है तुम्हारा ? भाई है, भतीजा है, साला है, बहनोई है, क्या है ? तुम्हारा कोई पास-नज़दीक का नाते-रिश्तेदार तक तो है नहीं। मगर इसके बाद भी, उसके खाने-पीने का बोझ तुमने अपने ऊपर उठा रखा है···उफ···गजे, शैतान की ऑत···तू खुद मुँह बद कर, और मुझे मत डरा···नही तो कल चली जाऊँगी सोवियत मे और बतला आऊंगी कि घर मे कैसा गुलाब उगा रखा है तूने !"

अगले दिन मालिक ग्रिगोरी के कमरे मे आया और फर्श पर नजर गडाए-ही-गडाए बोला—"ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, तुम जो चाहो सो सोचो मेरे बारे में, मगर अब तुम्हारा यहां टिका रहना मुमकिन नही है। मैं तुम्हारा बडा लिहाज करता हूँ। वैसे तुम्हारे पापा थे तो मैं उनको भी जानता था और उनकी भी बडी इज्जत करता था। लेकिन अब तुम्हे यहाँ रखना और खाना खिलाना मुश्किल है। अब तो डर यह भी है कि कही लाल अफसरो को तुम्हारे यहाँ रहने का पता न चल जाए ! मेरे सामने पूरा खानदान है और मैं तुम्हारे नाम पर अपना सिर देने को तैयार नही हूँ। ईसा के लिए मुझे माफ करो···और जैसे भी हो मेरी जान छोडो !"

"ठीक !" ग्रिगोरी ने रुखाई से कहा—"यहाँ पनाह देने और खिलाने-पिलाने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया ! हर चीज के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया ! यह तो मै समझ गया हूँ कि मै तुम्हारे लिए एक बोझ हूँ, मगर अब सवाल यह है कि मैं जाऊँ तो जाऊँ कहाँ ? मेरे तो सभी रास्ते बन्द है।"

"यह तो तुम्हारे अपने तय करने की बात है···"

"अच्छा, मैं आज चला जाऊँगा यहाँ से···हर चीज़ के लिए तुम्हे बहुत-बहुत शुक्रिया अर्तामोन-वैसिलयेविच···"

"शुक्रिया की ऐसी कोई ज़रूरत नही।"

"तुम्हारी इस मेहरबानी को मैं कभी नही भूलूंगा। शायद मैं भी किसी दिन तुम्हारे कुछ काम आ सकूं।"

मेज़बान द्रवित हो उठा और उसने स्नेह से ग्रिगोरी की पीठ थपथपाई। बोला—"इसकी क्या बात है? जहाँ तक मेरा सवाल है, तुम दो महीने और भी यहाँ रहते तो भी मेरे लिए कोई खास फर्क नही पडता। लेकिन, झगडा तो सारा मेरी बीबी का है। वह नही चाहती कि तुम यहाँ रहो। हर दिन मेरी जान को पडी रहती है। भाड मे जाए वह! ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, हम दोनो कज्ज़ाक है, और हम दोनो सोवियत हुकूमत के खिलाफ हैं। मैं तुम्हारी भरसक मदद करूँगा। तुम आज यागोदनी चले जाओ। मेरे बेटे का ससुर वहाँ रहता है। मेरा नाम लेना। वह तुम्हें अपने बेटे की तरह रखेगा। और जब तक हो सके खिलाए-पिलाएगा। हम लोग बाद मे आपस मे हिसाब-किताब कर लेंगे। यह सब हो जाएगा, मगर इस वक्त तो तुम यहाँ से चले ही जाओ। मै यहाँ तुम्हे रख नही सकता। बीवी हाथ धोकर मेरे पीछे पडी है। दूसरे कही सोवियत वालो को पता लग गया तो और मुसीबत समझो! तुम जब तक यहाँ रहे, मज़े मे रहे, यह भी कुछ कम नही है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच! मुझे अपने सिर का भी तो कुछ-न-कुछ खयाल है।"

ग्रिगोरी काफी रात गए वहाँ से निकला। पर, वह गाँव के ऊपर की पहाडी की हवाचक्की तक भी न पहुँच पाया कि तीन घुडसवार जैसे धरती फोडकर उग आए और उसे टोकते हुए बोले—"रुक··· ओ···सूअर के बच्चे··रुक! कौन है तू?"

ग्रिगोरी का दिल जोर-जोर से धडकने लगा। पर, वह कुछ कहे बिना, ठहर गया। भागना पागलपन होता। दो गज आगे जाना भी मुश्किल हो जाता। सड़क के पास न कही कोई छेद-सूराख था और न कही कोई झाड़-झखाड था। यहाँ से वहाँ तक फैला सिर्फ खाली मैदान।

"कम्यूनिस्ट हो? लौटो··मौत ले जाए तुम्हे! चलो···क्विक मार्च!"

इतने मे ही एक दूसरा आदमी ग्रिगोरी के पास अपना घोडा लाया और हुक्म देते हुए बोला—"हाथ ऊपर करो···हाथ जेबो से

निकालो—निकालो, नही तो तुम्हारे सिर के टुकडे टुकडे करके रख दूँगा अभी।"

ग्रिगोरी ने हाथ चुपचाप जेबो से निकाल लिए। पर, उसकी समझ मे अब तक यह नही आया कि आखिर यह हुआ क्या, और ये लोग है कौन ? फिर भी उसने पूछा—"कहाँ चलना है ?"

"गाँव चलो···लौटो।"

एक घुडसवार उसके साथ गाँव तक गया। बाकी दो चरागाह के पास अलग हो गए और बडी सडक पर अपने घोडे बढा चले।

ग्रिगोरी बिना कुछ बोले, कदम बढाता रहा। पर, सडक के पास पहुँचने पर उसने अपनी रफ्तार धीमी कर ली और पूछा—"सुनो, तुम आखिर हो कौन ?"

"चलो ··चलो ··बेकार बात न करो ··हाथ पीछे रखो ··सुनते हो ?"

ग्रिगोरी ने चुपचाप आदेश का पालन किया, लेकिन थोडी देर बाद फिर पूछा—"यह सब तो ठीक है, मगर तुम हो कौन ?"

"रूसी सनातनी[1] समझते हो मुझे ?"

"मैं तो खुद सनातनी नही हूँ।"

"ठीक, तो खुशी मनाओ कि तुम सनातनी नही हो।"

"लेकिन, तुम मुझे कहाँ लिये चल रहे हो ?"

"कमाडर के पास···चल···चल···साँप कही का···नही तो, अभी मै···"

उस आदमी ने ग्रिगोरी के बदन मे तलवार की नोक चुभोई। नोक के तेज ठडे इस्पात ने बरानकोट के कॉलर और फर की टोपी के बीच के गर्दन के खुले हिस्से मे डक-सा मारा। क्षण-भर को उसके अतर मे डर बिजली की तरह कौध उठा और इसके बाद उसे क्रोध आया। मगर, क्या कर सकता था उसका यह क्रोध !

उसने अपना कॉलर उलटा और पहरेदार को भर-निगाह देखने

---

१. ऑरथॉडॉक्स।

घोडे हीसते और मुह चलाते दीखे। बरसाती के आसपास छ हथियार-बंद लोग चहलकदमी करते मिले। साथ के सवार ने घोडे से उतरते हुए तलवार से हवा काटी और बोला—"गलियारे से होकर सीधे चले जाओ ' पहली मजिल पर बाये से ! चलो, आगे बढो·· इधर-उधर निगाहे दौडाने की ज़रूरत नही। कितनी बार कहनी पडेगी तुमसे एक ही बात ?"

ग्रिगोरी धीरे-धीरे बरसाती की सीढियो पर चढा तो घुडसवार-फौजियो वाला लम्बा ओवरकोट डाटे और लाल सेनावाली टोपी लगाए एक आदमी जगले के पास खडा दिखलाई पडा। बोला, "किसी को पकडकर लाए हो ?"

"हाँ।" ग्रिगोरी के साथ आए सवार ने परिचित भर्राई हुई आवाज मे कहा—"हवाचक्की के पास पकडा।"

"कौन है·· पार्टी के ग्रुप का सेक्रेटरी है ?"

"शैतान ही जाने कि कौन है ! कोई सूअर का बच्चा होगा। लेकिन, जल्दी ही सब-कुछ मालूम हो जाएगा इसके बारे मे।"

'या तो यह गोरे गारदो का गिरोह है या व्येशेन्स्काया की चेका के लोग चालाकी से काम ले रहे है, और गोरे गारद होने का बहाना बना रहे है। जो भी हो, मै तो बुरी तरह फँस गया।' ग्रिगोरी ने जान-बूझकर पीछे रहते हुए सोचा और कुछ याद करने की कोशिश करने लगा।

फिर, दरवाजा खोलते ही सबसे पहले उसके सामने पडा फोमीन। वह एक मेज़ के पास बैठा था और उसे चारो ओर से घेरे बैठे थे फौजी वर्दियाँ पहने कितने ही लोग। ग्रिगोरी इनमे से किसी को भी न जानता था। बरानकोट और भेड की खाले पलग पर उल्टी-सीधी पड़ी थी, कारबाइन-बन्दूके बेच के पास जमा थी और खुद बेंच पर तलवारो, कारतूस के झोलो और घुडसवारी के थैलो का अम्बार लगा था। लोगों, बरानकोटो और आसपास की तमाम चीजो से घोडे के पसीने की तेज़ बू उड रही थी।

ग्रिगोरी ने अपनी फर की टोपी उतारी और शान्त भाव से

अभिवादन किया ।

"अरे, मेलेखोव ! सच ही कहा है कि स्तेपी का मैदान भले ही लम्बा-चौडा हो, मगर रास्ता सँकरा है। किस्मत ने हम लोगो को फिर एक-दूसरे से मिला दिया । मगर तुम आ कहाँ से रहे हो ? कोट उतारो, आओ और बैठो इधर ।" फोमीन उठा और हाथ आगे करते हुए ग्रिगोरी की ओर बढा—"इस जगह के आसपास भला क्या करते घूम रहे थे तुम ?"

"मै काम से गाँव आया था ।"

"किस काम से आए थे ? बडा लम्बा रास्ता तय किया तुमने ।" फोमीन ने ग्रिगोरी की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा—"ठीक-ठीक बतला दो···यही कही छिपे हुए थे···यही न ?"

"हाँ, सच बात तो यही है ।" ग्रिगोरी ने बरबस मुस्कराते हुए जवाब दिया ।

"लेकिन हमारे आदमियो के हाथ कहाँ आ गए तुम ?"

"गाँव के बाहर ।"

"जा कहाँ रहे थे ?"

"बिल्कुल नाक की सीध मे ।"

फोमीन ने फिर ग्रिगोरी की आँखो की तरफ गौर से देखा और मुस्कराया—"मैं तुम्हारे मन की बात समझ सकता हूँ । तुम्हारा खयाल है कि तुम हमारे हाथ आ गए हो, तो अब हम तुम्हे व्येशेन्स्काया ले जाएँगे । नही मेरे भाई, अपना रास्ता वह नही है···तुम्हें डरने की जरूरत नही···हम सोवियत हुकूमत की नौकरी को सलाम कर चुके··· हमारी उसके साथ पटी ही नही ।"

"तलाक दे दिया हमने ।" स्टोव के पास धुआँ उडाते, सयानी उम्र के एक कज़्ज़ाक ने गहरी आवाज मे कहा । इस पर मेज़ के पास बैठे एक दूसरे व्यक्ति ने हँसी का ठहाका लगाया ।

"तुमने मेरे बारे मे कुछ सुना नही ?" फोमीन ने ग्रिगोरी से पूछा ।

"नही ।"

"ख़ैर, तो आओ बैठो···बाते होगी···देखो पातगोभी का शोरबा और गोश्त लाओ मेहमानो के लिए।"

ग्रिगोरी ने फोमीन की किसी भी बात पर विश्वास न किया और उसका चेहरा उसी तरह पीला पडा रहा। उसने नपे-तुले ढँग से कोट उतारा और मेज के पास आकर बैठ गया। उसका जी सिगरेट पीने को हुआ, लेकिन ख़याल आया कि पिछले दो दिन से पास कुछ भी तो नही है।

"सिगरेट-विगरेट है कुछ ?" उसने फोमीन से पूछा।

फोमीन ने अनुग्रह-सा करते हुए अपना चमडे का सिगरेट-केस उसकी तरफ बढाया। पर सिगरेट लेते समय ग्रिगोरी का हाथ काँपता देखा तो होठो-ही-होठो फिर मुस्कराया—"हमने सोवियत हुकूमत के खिलाफ सिर उठाया है। हम आम जनता के साथ है और अनाज-वसूली और कमीसारो से हमारा तीन और छः का रिश्ता है। एक जमाने तक उन्होने हमे बेवकूफ बनाया है, लेकिन अब हम उन्हे बेवकूफ बनाएँगे। समझे, मेलेखोव ?"

ग्रिगोरी ने कुछ नही कहा। वह सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश-भर लेता रहा। होते-होते उसका सिर चक्कर खाने लगा। और जी मचलाने लगा। उसने केवल अब समझा कि पिछले एक महीने से कायदे का खाना न खाने के कारण उसे कितनी कमजोरी आ गई है। सो, सिगरेट बुझाकर वह खाने पर टूट पड़ा। इस बीच फोमीन ने उसे पूरी कहानी सक्षेप मे सुनाई और बताया कि कैसे विद्रोह हुआ और कैसे इस सिलसिले मे पूरे इलाके में जहाँ-तहाँ मारे-मारे फिरना पडा। यही नही, इस भटकन को उसने हमलो का नाम दिया। ग्रिगोरी सब-कुछ चुपचाप सुनता रहा और रोटी और मैमने का कच्चा-पक्का गोश्त बिना चबाए ही गले के नीचे उतारता रहा।

"मगर तुम तो दूसरे लोगो के यहाँ मेहमान क्या रहे, दुबले हो गए।" फोमीन ने सहृदयता से हँसते हुए कहा।

ग्रिगोरी ने हिचकियाँ लेते हुए, झटके से कहा—"कोई सास के घर तो रहा नही।"

"यह तो नजर ही आ रहा है ··फिलहाल, खाओ और जी भर खाओ···हमारे यहाँ कोताही किसी चीज की नही।"

"शुक्रिया···अब तो एक सिगरेट और चाहिए।" ग्रिगोरी ने अपनी ओर बढती सिगरेट ली, बेंच पर रखे बर्तन के पास पहुँचा और लकडी के मग मे थोडा-सा पानी उँडेला। पानी बर्फ की तरह ठडा और चखने मे थोडा-थोडा खारी लगा। सो, इस तरह छककर खाने के बाद उसने दो मग पानी पिया और फिर सिगरेट का धुआँ उडाने लगा।

फोमीन ग्रिगोरी की बगल मे आ बैठा और अपनी कहानी जारी रखते हुए बोला—"कज्जाक भी कुछ साथ दे नही रहे है·· पिछले साल की बगावत ने इन्हे हिलाकर रखा दिया है···इस पर भी कुछ वालटियर हमारे साथ है···कोई चालीस आदमी आ गये हैं· लेकिन हमारा मकसद इससे पूरा नही होता। हमारा मकसद सचमुच तब पूरा होगा, जब पूरे-का-पूरा इलाका सीना तानकर खडा हो जाएगा और खोपर और उस्त-मेदवेदित्सा के इलाके भी हमारी मदद को आ जाएँगे। इस वक्त क्या, उस वक्त हम सोवियत हुकूमत से दो-दो बाते करेंगे।"

इस बीच मेज के पास बैठे दूसरे लोग आपस मे जोर-जोर से बातें करते रहे और ग्रिगोरी ने फोमीन की बाते सुनते-सुनते उनमे से एक-एक को गौर से देखा। उसने फोमीन का यकीन अब भी न किया और हर बात के पीछे चालाकी देखते हुए अपनी जबान बराबर बद रखी। लेकिन, फिर चुप्पी साधे रहना मुमकिन न रहा। उसने आती हुई औंघाई को टालने की कोशिश करते हुए पूछा—"कॉमरेड-फोमीन, अगर तुम हर बात सजीदगी से कह रहे हो तो जरा यह बतलाओ कि तुम चाहते क्या हो ? नई लडाई शुरू करना चाहते हो ?"

"इसका जिक्र तो मै तुमसे कर ही चुका।"

"यानी तुम सरकार बदलना चाहते हो ?"

"हाँ।"

"और, इस सरकार की जगह किस तरह की सरकार चाहते हो तुम ?"

"यही अपनी कज्जाक सरकार।"

"यानी अतामानो की सरकार ?"

"खैर, अतामानो की इस चर्चा को फिलहाल एक किनारे रखो, इस पर बातचीत फिर होगी, हम तो वह सरकार चाहेगे जो आम जनता खुद बनाए। लेकिन यह मसला इस वक्त सामने नही है। साथ ही मैं राजनीति की गहराइयो मे जाना चाहता भी नही। मेरा काम तो है कम्युनिस्टो और कमीसारो की जड खोदना। सरकार के बारे मे तुम्हे सब-कुछ मेरा चीफ-ऑफ-स्टाफ कापारिन बताएगा। इस मामले मे मैं उसके दिमाग से चलता हूँ। आदमी वह अक्लमन्द और पढा-लिखा है।" फिर फोमीन, ग्रिगोरी की तरफ झुककर फुसफुसाते हुए बोला—"कापारिन पहले ज़ारशाही फौज मे स्टाफ कैप्टन रहा है। होशियार आदमी है। इस वक्त दूसरे कमरे मे सो रहा है। तबीयत शायद ठीक नही है। बात यह है कि इस तरह की जिन्दगी की आदत तो है नही। बडी-बडी लम्बी मज़िलें मारी है हमने।"

इसी समय अचानक ही बरसाती मे कदमो की आहट हुई। चीख-पुकार सुनाई पडी। कराह के साथ एक घुटी हुई आवाज कानो मे पडी—"दो तो इसे खाने-भर को।" इसके साथ ही मेज के पास की बातचीत खत्म हो गई और फोमीन उत्सुकता से दरवाज़े की ओर देखने लगा। दरवाजा भडाक से खुला तो भाप का एक सफेद बादल-सा कमरे मे उमडा। छीटदार खाकी जैकेट और भूरे फेल्ट-बूट पहने एक लम्बे कद के, नगे-सिर आदमी की पीठ पर किसी ने पीछे से भरपूर हाथ जमाया तो वह कमरे के अन्दर लडखडाता चला आया और उसका कन्धा स्टोव के बाहर निकले हुए हिस्से से जोर से जा टकराया। बरसाती मे खुशी से भरी आवाजे गूँजी। फिर दरवाजा बन्द कर दिया गया।

"एक आदमी और रहा यह।"

फोमीन उठा और उसने अपनी ट्यूनिकवाली पेटी ठीक की। इसके बाद अधिकार के साथ पूछा—"कौन हो तुम ?"

छीटदार जैकेटवाले आदमी ने, हाँफते हुए, अपने बालों पर हाथ फेरा, कन्धे झटके और दर्द से ऐंठ उठा। उसकी रीढ की हड्डी पर

चोट की गई थी···शायद राइफल के कुन्दे से ।

"बोल नही सकते ? मुँह मे जबान नही है ? कौन हो तुम ?" मैंने पूछा ।

"लाल फौजी हूँ ।"

"किस यूनिट के ?"

"बारहवी अनाज-वसूली-रेजीमेट का ।"

"क्या बात है ! यह रहा शिकार ।" मेज के पास बैठे एक आदमी ने मुस्कराकर फतबा-सा दिया ।

फोमीन ने अपने सवाल जारी रखे—"यहाँ क्या कर रहे थे तुम ?"

"हमे बचाव का इन्तजाम करना था···इसलिए भेजे गए थे ।"

"ठीक। तुम्हारे साथ के लोग गाँव मे थे कितने थे गिनती मे ?"

"चौदह ।"

"बाकी लोग कहाँ हैं ?"

लाल सैनिक ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नही दिया । मुँह खोलने मे मुश्किल होने लगी। आवाज मे पानी के बुलबुले-से फूटे और मुँह के बाएँ कोने से खून की पतली धार बहकर ठुड्डी पर आने लगी । उसने हाथ से होठ पोछे, हथेली देखी और पतलून पर रगड़ ली ।

"यह हैं, तुम्हारे सूअर···।" उसने खून निगलते हुए पानी के बीच से उभरते-से स्वर मे कहा—"मेरे फेफड़े जखमी कर दिए है ।"

"कोई बात नही···डरो मत, हम तुम्हारा इलाज करवा देंगे ।" एक मोटे कज्जाक ने मेज़ के पास से उठते और दूसरो की तरफ देखकर आँख मारते हुए व्यग्य से कहा ।

"तुम्हारे बाकी साथी कहाँ हैं ?" फोमीन ने फिर पूछा ।

"वे लोग मालगाडी के साथ येलान्स्काया चले गये हैं ।'

"और तुम कहाँ के हो ? किस जिले मे पैपाइश हुई तुम्हारी ?"

उस आदमी ने क्रोध से जलती आँखों से फोमीन की तरफ देखा, खून का थक्का फर्श पर थूका और साफ, बजती हुई भारी आवाज़ में बोला—'प्सकोव-इलाके का हूँ मैं ।"

"प्सकोव, मास्को···हम तुम्हारी किस्म के लोगों को खूब जानते

हैं।" फोमीन ने हँसी उडाते हुए कहा—"दूसरो का अनाज छीनने के लिए काफी दूर आना पडा तुम्हे, साहबजादे ! तो अब, क्या चाहते हो ? क्या करें हम तुम्हारे साथ ?"

"जाने दीजिए मुझे। छोड दीजिए।"

"साहबजादे, आदमी तुम भोले-भाले हो।···शायद इसे छोड ही देना चाहिए ···क्यो, क्या राय है, दोस्तो ?" मूँछो-ही-मूँछों मुस्कराते हुए फ़ोमीन मेज के पास बैठे लोगो की तरफ मुडा।

ग्रिगोरी ने भूरे, धूप मे सँवराए शान्त चेहरो पर समझदारी की मुस्कान देखी। एक आदमी बोला—"दो महीने यह हमारे साथ रहे··· हमारा साथ दे···इसके बाद हम इसे इसकी बीवी के पास रवाना कर देंगे।"

फोमीन ने भी अपनी मुस्कान छिपाने का असफल प्रयत्न करते हुए कहा—"हमारा साथ देना पसन्द करोगे तुम ? हम तुम्हे घोडा देंगे, काठी देंगे और फेल्ट-बूटो की जगह पिंडलियो तक के लम्बे, नए बूट देंगे।···तुम्हारे यहाँ के कमाडर इन चीजो का काफी खयाल नही रखते। इसे जूता कहते हो तुम ? बर्फ गल रही है और ऐसे मे इन फ़ेल्ट-बूटो मे बाहर जाओगे तुम। तो, आते हो हमारे साथ ?"

"बेचारा किसान है···ज़िन्दगी मे घोडे की पीठ पर काहे को सवार हुआ होगा कभी !" एक दूसरे कज्जाक ने बनावटी आवाज़ में कहा, जैसे कि अपनी तरफ से मज़ाक किया।

लाल सैनिक मौन रहा। इस बीच उसकी आँखे साफ हो गईं और स्वाभाविक ढग से चमकने लगी। उसने स्टोव की टेक लगा ली और चारो तरफ निगाह दौडाई। पर जब-तब ही दर्द के कारण उसके माथे पर बल पडे और साँस लेने मे दिक़्कत होने पर मुँह फैल गया।

"तो तुम हमारे साथ आ रहे हो या नही ?" फोमीन ने फिर पूछा।

"लेकिन आप लोग है कौन ?"

"हम लोग हैं कौन ?" फोमीन ने भौहे ऊपर उठाईं और गल-मुच्छो पर हथेली फेरी—"हम मेहनतकश लोगो की तरफ से लड़ने वाले

लोग है। हम कमीसारो और कम्यूनिस्टो की ज्यादतियो के खिलाफ हैं। हम नही चाहते कि वे लोगो को तरह-तरह से सताएँ । यानी मे है हम लोग।"

ग्रिगोरी को लाल सैनिक के चेहरे पर आकस्मिक मुस्कान थिरकती दीखी।

"तो ये है आप लोग···मैं इसी ताज्जुब मे पडा हुआ था कि किन लोगो से पाला पड गया।" बन्दी मुस्कराया तो उसके खून से नहाए दाँत चमके और उसके शब्दो से ऐसा लगा, जैसे कि इस समाचार से उसे जितना आश्चर्य हुआ उतनी ही प्रसन्नता का अनुभव हुआ। लेकिन उसकी आवाज मे एक खटका ऐसा भी लगा कि सभी लोगो के कान खडे हो गए—"तो अपने लफ्जो मे आप जनता की तरफ से लडने वाले लोग है ? हूँ···! हो सकता है। मगर हमारी नजर मे तो आप सिर्फ डाकू है। और कुछ नही। और आप चाहते है कि मै आपका साथ दूँ ? यानी मानना पडेगा कि मजाक करने का माद्दा आपमे खासा है।"

"तुम्हारी जबान भी कुछ ज्यादा-ही-ज्यादा चलती है।" फोमीन ने अपनी आँखे चढाईं और सख्ती से पूछा—"कम्यूनिस्ट हो ?"

"नही···बिल्कुल नही···मैं पार्टी का आदमी नही हूँ।'

"ऐसा लगता तो नही···"

"ईमान की बात है कि मै पार्टी का आदमी नही हूँ।"

फोमीन ने अपना गला साफ किया और मेज के पास बैठे लोगो की तरफ मुडा—"चुमाकोव, कर दो इसका काम तमाम।"

"मुझे मारने से कोई फायदा नही होगा···और मुझे मारने की वैसे कोई वजह भी नही है।" कैदी ने शात भाव से कहा।

जवाब किसी ने कुछ नही दिया। खूबसूरत बदन का, अग्रेज़ी चमड़े की जर्किन वाला, चुमाकोव नाम का कज्जाक बेमन से अपनी जगह से उठा और अपने चमकीले भूरे बाल बराबर करने लगा। फिर बेच पर जमा तलवारो के बीच से अपनी तलवार उठाते और अँगूठे से उसकी धार देखते हुए बोला—"मै तो ऊब गया इस धन्धे से!"

फोमीन ने अपनी तरफ से सलाह दी—"तुम खुद मत करो यह

काम···ग्रहाते मे तमाम लोग है···किसी से कह दो।"

चुमाकोव ने कैदी को सिर से पैर तक देखा और बोला—"सामने जाकर खडे हो, साहबजादे !"

लाल सैनिक ने कन्धे झटके और लडखडाता हुआ दरवाजे की तरफ बढा तो फर्श पर उसके गीले फेल्ट-बूटो के निशान बन गए।

"अन्दर आए थे तो पैर रगडकर आते···यह क्या कि आए और फर्श गन्दा कर दिया···अजीब जानवर हो तुम भी, बिरादर !" चुमाकोव ने उसके पीछे जाते हुए बनावटी गुस्से से कहा।

फोमीन ने पीछे से चिल्लाकर कहा—"लोगो से कहो कि इसे गली या खलिहान मे ले जाएँ। घर के पास मारोगे तो आसपास के घरो के मालिक शिकायत करेगे।"

इसके बाद वह आकर ग्रिगोरी के पास बैठ गया और बोला—"पूछताछ हम यो ही करते है और देखते-देखते मुकदमा खत्म कर देते है···क्या खयाल है ?"

"हाँ, सो तो है।" ग्रिगोरी ने उसकी निगाहे बरकाते हुए कहा। फोमीन ने आह भरी—"और कोई चारा नही है। अब तो यही करना पडेगा···।" और वह कुछ कहने को हुआ ही कि इतने में गलियारे मे पैरो की आवाज हुई। कोई चीखा और बन्दूक का खटका हुआ।

"यहाँ पता नही क्या तूफान कर रहे हैं ये लोग !" फोमीन ने नाराज होते हुए कहा।

मेज के पास बैठा एक आदमी झटके से खडा हुआ और ठोकर से दरवाजा खोलकर चीखा—"क्या हो रहा है यहाँ ?"

पर चुमाकोव अन्दर आया और तेजी मे बोला—"वह शैतान का बच्चा तो खासा तेज निकला। सबसे ऊपर की सीढी से कूदकर चलता बना। मुझे एक कारतूस उस पर बरबाद करना पडा। अब बाहर कज्जाक उसका हिसाब-किताब कर रहे है।"

"उनसे कहो कि उसे ग्रहाते से गली में घसीट ले जाएँ।"

"मैंने पहले ही कह दिया है, याकोव-येफिमोविच !"

इसके बाद कमरे मे एक क्षण तक सन्नाटा रहा। फिर किसी ने

जमुहाई लेते हुए पूछा—"मौसम कैसा है, चुमाकोव ? आसमान साफ़ हो रहा है ?"

"नही, बादल घिरे हुए है···"

"अगर पानी बरसा तो बची-बचाई बर्फ भी बह जाएगी।"

"आखिर तुम क्यो चाहते हो कि पानी बरसे ?"

"मैं नही चाहता कि बरसे···कीचड मे छप-छप करते हुए चलना मुझे पसन्द नही।"

ग्रिगोरी उठा और उसने पलंग से अपनी टोपी उठाई। फोमीन ने पूछा—"कहाँ जा रहे हो ?"

"जरा यो ही ताजा हवा लेने।" और वह बाहर निकलकर बरसाती की सीढियो पर आया।

इस समय चाँदनी बादलो के बीच से हल्के-हल्के छनती रही, और लम्बे-चौडे अहाते, शेडो की छानियो, चिनारो के सिरो और खूँटो से बँधे कपडो से ढके खडे घोडो के साथ-साथ हर चीज़ पर आधी रात की रोशनी बरसती रही।

ऐसे मे बरसाती से कुछ कदम के फासले पर वह लाल सैनिक पडा रहा और उसका सिर गलती हुई बर्फ की तलैया के मद्धिम चमकते पानी मे उतराता रहा। तीन कज्ज़ाक उसके ऊपर झुककर आपस मे धीरे-धीरे बातें करते जाने क्या करते रहे।

उनमे एक घबराहट से भरे स्वर मे बोला—"अभी साँस ले रहा है···ऊपर वाले की कसम! इस तरह मारा जाता है, बेहूदा, गधा कही का ? मैने कहा था कि सिर पर भरपूर वार करो। अरे, तू बिलकुल काठ का उल्लू है!"

ग्रिगोरी को यहाँ लाने वाला, कर्कश आवाज का कज्ज़ाक बोला—"निकल जाएगा दम···एक साँस और···और दम निकल जाएगा! लेकिन जरा ऊपर उठाओ न इसे! मुझसे इसका यह कोट तो किसी तरह उतरता ही नही·· बाल पकड़कर ऊपर उठाओ जरा···ठीक··· और अब पकडे रहो ऐसे ही!"

ग्रिगोरी ने पानी का छपाका सुना। इसी समय कैदी के ऊपर झुके

लोगो मे से एक आदमी सीधा हुआ । कर्कश आवाज वाला कज्जाक छींटदार जैकेट बदन से खीचते हुए कराह दिया और एकाध क्षण बाद बोला—"मेरा हाथ बहुत हलका है·· इसीलिए मुझ पर नही फुफकारा वह । घर पर कभी सूअर को हलालने का मौका आया तो···अरे साधे रहो उसे···गिरने मत दो···ऐसी-तैसी मे जाए·· हाँ तो मै कह रहा था कि घर पर कई बार सूअर हलालने का मौका मिला और मैने चाकू ऐन गर्दन के आरपार कर दिया, मगर इस पर भी कम्बख्त जानवर उठा और अहाते-भर मे टहल आया···और फिर काफी देर तक टहलता रहा। यानी खून की नदी बहती रही, पर जानवर जिन्दा बना रहा··· यानी अगर ऐसा है तो हल्का हाथ तो हुआ ही । अच्छा ठीक है, अब लिटा दो इसे···अब भी साँस चल रही है ·· हो नही सकता···मैने तो गर्दन बीच से करीब-करीब दो कर दी है ।"

तीसरे आदमी ने लाल फौजी की जैकेट उसके फैले हुए हाथ के ऊपर डाल दी । बोला—"हमने इसका बायाँ अग खून मे डुबो दिया है ···मेरे हाथ चिपक रहे है·· फु·· कैसी गदगी है !"

"साफ हो जाएँगे हाथ···खून है, कोई ग्रीज़ थोडे ही है ।" कर्कश आवाज़ वाला कज्जाक बोला और फिर जमीन पर बैठ गया—"छूट जाएगा या कम-से-कम धुल तो जाएगा ही । ऐसी कोई खास बात नही है ।"

"अच्छा अब क्या इरादा है तुम्हारा ? अब क्या उसका पतलून भी उतार लोगे तुम ?" पहले कज्जाक ने मन के असन्तोष को वाणी देते हुए कहा ।

कर्कश आवाज वाले व्यक्ति ने तड से उलटकर जवाब दिया—"अगर तुम हडबडी मे हो या तुम्हारा घोडो के पास जाना ज़रूरी हो तो तुम जाओ···यहाँ तुम्हारे बिना भी काम चल जाएगा । हम अच्छी चीज़ो को इस तरह छोड नही सकते ।"

ग्रिगोरी मुडा और घर के अन्दर चला गया । फोमीन ने तेज़ी से उस पर नजर डालते हुए उसका स्वागत किया और उठकर खड़ा हो गया । कहने लगा—"चलो दूसरे कमरे मे चलकर बातें करेंगे···यहाँ

बडा हंगामा है ।"

दूसरा कमरा काफी बडा और गरम महसूस हुआ । पर चुहियों और पटसन के बीजो का भभका उठता रहा । पलग पर छोटे कद का एक आदमी खाकी ट्यूनिक पहने गन्दे तकिए से गाल सटाए सोता दीखा। उसके बाल बिखरे रहे और उन पर रोओ और चिडियों के छोटे-छोटे परों का छिडकाव-सा नजर आया । छत से लटकते लैम्प की रोशनी उसके पीले गालो और बढी हुई दाढी से भरे चेहरे पर पडती रही ।

फोमीन ने सोने वाले को जगाया—"उठो···कापारिन···देखो मेहमान आया है एक·· यह है ग्रिगोरी-मेलेखोव·· हमारे दोस्त···कभी स्क्वैड्रन कमाडर थे ।"

कापारिन ने पैर पाटी से नीचे झुकाए, चेहरे पर हाथ फेरा और उठ बैठा—"बडी खुशी हुई तुमसे मिलकर···मै हूँ स्टाफ-कैप्टन कापारिन ।"

फोमीन ने ग्रिगोरी के लिए बडे स्नेह से एक कुर्सी खीची और खुद पास पड़े एक बक्से पर बैठ गया । उसने एक नजर मे ही भाँपा कि कैदी के कत्ल से ग्रिगोरी का मन बुरी तरह उदास हो गया है । बोला—"तुम यह न सोचो कि सारे कैदियो के साथ हम इसी तरह का बरताव करते है । यह तो अनाज-वसूली करने वाली टुकडी का आदमी था, और हम ऐसे लोगो और कमीसारो तक को इस तरह जाने नही दे सकते ।··· वैसे मामूली लोगो को हम छोड देते है । कल ही हमने मिलिशिया के तीन आदमियो को पकडा, मगर उनके घोडे, काठियाँ और साज-सामान लेकर उन्हे आजाद कर दिया । उन्हे मारने से फायदा ?"

ग्रिगोरी मौन रहा और घुटनो पर हाथ रखे अपने ही विचार मे डूबा रहा । फोमीन की आवाज़ तो जैसे उसने नीद में सुनी ।

फोमीन कहता गया—"फिलहाल हम इस तरह अपनी लडाई चला रहे है, लेकिन इस पर भी कज्जाको को उभारने का हमारा खयाल है । ···सोवियत हुकूमत चल नही सकती । देखो न करीब-करीब हर जगह ही लडाई छिडी हुई है । क्या साइबेरिया, क्या उक्रइन और क्या पेत्रोग्राद, हर जगह लोग बगावत कर रहे है । पूरे-के-पूरे बेड़े ने गदर मचा दिया है···उस गढी मे·· क्या नाम है उसका ?"

"क्रोन्स्ताद्त् ।" कापारिन ने सहायता की।

ग्रिगोरी ने सिर उठाया, खाली-खाली-सी अनदेखती आँखों से फोमीन की ओर देखा और फिर कापारिन को एकटक देखने लगा।

"लो सिगरेट पिओ।" फोमीन ने अपना सिगरेट केस आगे बढाया—"हाँ, पेत्रोग्राद ले लिया गया है, और लोग मास्को के पास तक पहुँच गए है। और हर जगह एक ही राग छिडा हुआ है। ऐसे मे कोई वजह नही कि हम बैठे ऊँघते रहे। हम कज्जाको को उभारेगे, सोवियत हुकूमत का नाम-निशान मिटा देगे और अगर कैडेट हमारा साथ दे देगे तो फिर मजा आ जाएगा। हम तो कहते है कि पढे-लिखे कैडेट सरकार बनाएँ। हम उनकी मदद करेंगे।" इसके बाद एक क्षण तक चुप रहने के बाद बोला—"तुम्हारा क्या खयाल है मेलेखोव ? अगर कैडेट काला सागर के इलाके मे जोर मारे और हम उनके साथ जा मिले तो वे यह तो मानेंगे न कि पीछे के इलाको मे सबसे पहले हमने सिर उठाया ? कापारिन कहता है कि मानेंगे और इसकी तारीफ करेंगे। मिसाल के लिए इसके लिए तो मुझे गुनाहगार ठहराएँगे नही कि १९१८ मे जब अट्ठाईसवी रेजीमेंट पीछे हटी तो मै उसके आगे-आगे रहा और दो साल मैने सोवियत सरकार की खिदमत की ?"

'तो इस निशाने पर गोली बिठा रहे हो तुम ! तुम बेवकूफ हो, हालाँकि घुटे हुए बेवकूफ हो !' ग्रिगोरी ने बनावटी ढग से मुस्कराते हुए सोचा। फ़ोमीन उसके उत्तर की प्रतीक्षा मे रहा। साफ है कि इस समस्या ने उसका दिल-दिमाग घेर रखा था।

ग्रिगोरी ने हिचकिचाते हुए कहा—"इसमे वक्त लगेगा।"

'सो तो लगेगा ही···सो तो लगेगा ही।" फोमीन ने सहमति प्रकट की—"ये सब बाद मे सोचने की बाते है। इस वक्त तो हमे कदम उठाना चाहिए और पीछे के इलाको मे कम्युनिस्टो को तार-तार कर देना चाहिए। अब हम उन्हें चैन की साँस किसी तरह लेने-देने से रहे ! उनका खयाल है कि अपने पैदल फौजियो को गाड़ियो मे भरकर वे हमारा पीछा कर सकते है। तो करें···कर देखें कोशिश। जब तक घुड़सवार फ़ौज उनकी मदद को आएगी, तब तक हम पूरे-का-पूरा इलाका

उलटकर रख देंगे।"

ग्रिगोरी ने फिर विचारो मे डूबते हुए अपने पैरो की ओर देखा। कापारिन माफी माँगकर पलग पर लेट गया। हल्के-हल्के मुस्कराते हुए बोला—"मैं बहुत थका हुआ हूँ···बात यह है कि मजिलो पर मजिले मारनी पडती है ··पागलो की तरह ··मगर, सोने को वक्त बहुत थोडा मिल पाता है।"

"काफी वक्त हुआ···हम भी सो जाएँ अब!" फोमीन उठा और उसने अपना भारी हाथ ग्रिगोरी के कन्धे पर रखा—"मेलेखोव, तुमने उस दिन व्येशेन्स्काया मे मेरी सलाह मान ली · बडी ही अक्लमदी का काम किया। अगर उस वक्त तुम छिप न गए होते तो वे लोग तुम्हे खत्म कर देते। तुम व्येशेन्स्काया के बाहर की बलुही पहाडियो पर पडे होते और तुम्हारे नाखून सड-गल गए होते। मेरी यह बात बिलकुल सच समझो तुम! · खर तो तुमने तय क्या किया? बतला दो···और फिर सोने चले!"

"क्या बतला दूँ तुम्हे मै?"

"यही कि तुम हमारा साथ दोगे या नही, या क्या करोगे? आखिर जिन्दगी-भर तो दूसरो के घरो मे छिपते फिरोगे नही?"

ग्रिगोरी को तो इस सवाल की आशा थी ही। सो उसने अपने-आपसे कहा—"भाई मेरे, रास्ते तीन है। पहला कि गाँव-गाँव मारे-मारे फिरो, भूखे प्यासे, बेघरबार मरो, और फिक्र से आप अपना कलेजा छलनी करते रहो कि कोई-न-कोई मेजबान किसी-न-किसी दिन दगा दे दे और अफसरो को पता दे आए; दूसरा कि राजनीतिक विभाग मे चलो और हथियार डाल दो; तीसरा कि फोमीन का साथ पकड़ लो। अब इनमे से एक का चुनाव कर लो·· ···।"

और उसने अपना रास्ता चुन लिया। उस दिन शाम को पहली बार उसने फोमीन की आँखो मे सीधे आँखे डाली और मुस्कराते हुए बोला—"मै क्या चुनूं और क्या न चुनूं? मेरी हालत तो परी देश की कहानी के राजकुमार-सी है। यानी बाईं तरफ गए कि घोड़े से हाथ धोया, दायी तरफ गए कि मारे गए। ··फिर मेरे सामने तो तीन रास्ते

है, लेकिन इनमे से एक भी मेरी मजिल की तरफ नही जाता···'

"तुम अपनी बात करो···और परी-कहानियो को फिलहाल, एक तरफ रखो ··यह सारी-की-सारी बाद मे कह लेना······"

"मेरा अपना कोई ठौर-ठिकाना नही है···यानी चुनाव तो हो ही गया···"

"यानी ?"

"यानी कि मै तुम्हारे जत्थे मे शामिल होता हूँ।"

फोमीन के माथे पर बल पड गए और वह असन्तोष से मूँछें चबाने लगा। "यह लफ्ज छोडो। तुम हमारी टोली को जत्था क्यो कहते हो? यह नाम तो हमे कम्यूनिस्ट देते है। तुम्हे यह जेबा नही देता। हम तो सीधे-सीधे वे तमाम लोग है जिन्होने हुकूमत के खिलाफ सिर उठाया है। बात जितनी ही मुख्तसर है, उतनी ही दोटूक है।"

पर फोमीन का यह असंतोष क्षणिक रहा। सच तो यह है कि ग्रिगोरी के फैसले से वह खुशी से खिल उठा और यह प्रसन्नता उसके छिपाए छिपी नही। हाथ रगडते हुए बोला—"अरे भई, एक और साथी मिला। सुनते हो, स्टाफ-कैप्टन ?···मेलेखोव हम तुम्हारी कमान मे ट्रूप दे देंगे···वैसे अगर तुम ट्रूप की कमान सम्हालना न चाहते हो तो स्टाफ पर रहो···कापारिन के साथ···मै तुम्हे खुद अपना घोड़ा दे दूँगा···मेरे पास एक घोडा फालतू है।"

: १२ :

तडका होते-होते हल्का-हल्का कोहरा पडने लगा। गढे-गढैयो पर जमे हुए पानी की झिल्ली तन गई। बर्फ मोटी पड़ गई और बुरी तरह चरमराने लगी। घोडो की टापो ने बर्फ पर गोल निशान छोडे। जहाँ कल बर्फ गलने से नगी जमीन निकल आई थी और जहाँ पिछले साल की मुर्दा घास अब भी जमीन के सीने से सटी हुई थी, वहाँ घोड़ो के पैर पडे तो बहुत मामूली निशान बने और खोखली-खोखली-सी झन-झनाहट हुई।

फोमीन का जत्था, गाँव के बाहर कतार बनाकर खड़ा हुआ।

अगुआ-पड़ताली गश्ती के छ घुडसवार बीच-बीच मे दूर सडक पर नज़र आते रहे ।

फोमीन अपना घोडा ग्रिगोरी के पास लाया और मुस्कराते हुए बोला—"वे रहे मेरी फौज के लोग ! ऐसे जवान हो तो खुद शैतान के टुकडे-टुकडे किये जा सकते हैं ।"

ग्रिगोरी ने कतार पर एक नज़र डाली और दर्द से मन-ही-मन सोचा—'अगर तुम और तुम्हारी फौज के लोग मेरी बुदयोन्नी-स्क्वैड्रन से टकरा जाते तो आधे घटे के अन्दर-अन्दर तुम्हारी धज्जियाँ उड जाती ।'

फ़ोमीन ने अपने चाबुक से इशारा किया और पूछा—"क्या ख़याल है तुम्हारा इनके बारे मे ?"

ग्रिगोरी ने नीरस ढग से कहा—"कैदियो का काम तमाम करने और मुर्दों के कपडे उतारने के लिए लोग ऐसे कोई बुरे नही । लेकिन कह नही सकता कि लडाई के मैदान मे कैसे हाथ दिखलाएँगे ये !"

फोमीन ने काठी पर मुडते हुए हवा की तरफ पीठ की, सिगरेट जलाई और बोला—"लडाई के मैदान मे इनके हाथ देखने का भी मौका मिलेगा तुम्हे । हमारे ज्यादातर लोग बाकायदा फौज से आए हैं, इसलिए वक्त पर तुम्हे नीचा नही देखना पडेगा ।"

लडाई के हथियारो और रसद की चीज़ो से भरी दो-दो घोडो वाली छ गाडियाँ, कतार के बीचों-बीच ला जमाई गईं । फिर फोमीन का घोडा सरपट दौडता आगे पहुँचा और उसने आगे बढने की कमान दी । टीले पर पहुँचने पर वह फिर ग्रिगोरी के पास आया और बोला—"क्यो, कैसा है मेरा घोड़ा ? तुम्हे पसन्द है ?"

जवाब मिला—"अच्छा घोडा है ।"

वे लोग कुछ देर तक घोडो पर अगल-बगल आगे बढते रहे । इसके बाद ग्रिगोरी ने पूछा—"तातारस्की से होकर चलेंगे हम लोग ?"

"अपने घर के लोगो से मिलना चाहते हो ?"

"हाँ, जरा मिल लेंगे ।"

"ठीक···तो हम उधर से ही चले चलेगे । वैसे मेरा इरादा चिर

चलने और कज्जाको को थोड़ा झकझोर देने का है।"

लेकिन कज्जाक 'झकझोरे जाने' के लिए तैयार न थे। ग्रिगोरी को दस्ते के साथ कुछ दिन रहने के बाद ही, इस बात का यकीन हो गया।

यो समझिए कि दस्ते के लोग जब भी कोई गॉव या जिला-केन्द्र हथियाते, फोमीन हुक्म देकर वहाँ के लोगो की सभा बुलवाता। ऐसे अवसर पर अक्सर तो वह खुद ही बोलता। पर कभी-कभी उसकी जगह कापारिन भाषण देता। इस तरह अनाज-उगाही के कारण नतीजा के कधो पर पड रहे बोझ की चर्चा की जाती और कहा जाता कि अगर सोवियत सरकार का तख्ता पलटा न जाएगा तो नतीजा सिर्फ एक निकलेगा—यानी हर तरफ बरबादी नजर आएगी और पूरी बरबादी नजर आयेगी।

फोमीन की वक्तृता, कापारिन की वक्तृता की भाँति व्याकरण की दृष्टि से पूरी तरह शुद्ध और क्रमबद्ध तो न होती, लेकिन हमेशा बोलता वह ऐसी भाषा मे जो कज्जाको के गले के नीचे उतरती चली जाती। भाषण के अन्त मे प्राय: कुछ रटे-रटाए वाक्य चिपकाता—"आज से हम तुम सबको अनाज देने की इस मुसीबत से बरी करते है। अब अनाज-उगाही के सदर मुकामो को गाडियाँ भर-भरकर अनाज भेजने की कोई जरूरत नही। निकम्मे कम्यूनिस्टो का पेट बहुत भर चुके। अब बस हुआ। वे तुम्हारे अनाज के सहारे फूल-फूलकर कुप्पा हुए है। मगर दूसरे के बल पर जीने के दिन उनके लद गए। तुम लोग आज़ाद हो। अपने को हथियारो से लैस कर हमारे निज़ाम के हाथ मजबूत करो।···कज्जाक···हुर्रा!"

इन सभाओ मे पुरुष तो ज़मीन पर आँखे गडाए चुप खडे रहते, लेकिन औरतो की जबानें चलने लगती और उनके बीच से व्यग्य-भरे सवालो की बौछार होने लगती।

"तुम्हारा निजाम तो ठीक ही लगता है, मगर हमारे इस्तेमाल के लिए साबुन लाये हो तुम?"

"कहाँ रहती है तुम्हारी सरकार··तुम्हारे घोडे की काठी वाले

थैले मे ?"

"लेकिन तुम खुद किसका अनाज खा-खाकर जी रहे हो ?"

"मेरा खयाल है कि अभी-अभी तुम अहाते-अहाते झोली फैलाते फिरोगे।"

"ओ बाबा, इनके पास तलवारे है···ये तो किसी से पूछेगे भी नही और चूजो को हलालना शुरू कर देगे।"

"कहना तो बहुत आसान है कि हम गाड़ियाँ भर-भरकर अनाज न भेजें ··मगर तुम आज यहाँ हो और कल कही और होगे···शिकारी कुत्तो के ढूंढे भी न ढूंढे जाओगे···उस हालत मे जवाबदेही तो आखिरकार हमी को करनी पड़ेगी न !"

"हम अपने आदमियो पर तुम्हे हाथ न रखने देगे···लड़ाई लडनी है तो जाओ और खुद जान दो।"

यही नही, औरतें तो अपनी सनक में और जाने क्या-क्या बक जाती। बात यह थी कि लडाई के वर्षों ने उनके सारे भ्रम दूर कर दिये थे, वे नई लडाई की सम्भावना-मात्र से डरने लगी थी और उन्होने एक बार मायूस होने के बाद अब अपने पतियो को अपने से अलग न करने की ज़िद-सी ठान रखी थी।···

फोमीन, उल्टी-सीधी चीख-पुकारें तटस्थ मन से सुनता, उनकी कीमत समझता, लोगो के शात हो जाने की राह देखता और फिर कज्ज़ाको की ओर मुडता। पर कज्जाक गम्भीरता से दोटूक जवाब देते। "हमे सताओ मत, साथी फोमीन···लड़ाई हम काफी लड़ चुके।"

"बगावत की भी आजमाइश कर देखी है···१९१९ मे हमने सिर उठाया था न !"

"हमारे पास बगावत करने को कुछ भी नही है, और बगावत करने का मतलब भी कुछ समझ मे नही आता। फिलहाल, तो उसकी कोई जरूरत महसूस होती नही।"

"यह बोआई का वक्त है, लड़ाई का नही।"

ऐसे-ही-ऐसे एक दिन भीड के पीछे से कोई चीख उठा—"इस वक्त तो बडी मीठी-मीठी बाते बना रहे हो, मगर १९१९ मे जब

हमने सिर उठाया था तब कहाँ गये थे तुम ? बहुत देर से चौके, फोमीन !"

ग्रिगोरी ने देखा कि फोमीन का चेहरा बदला, पर उसने अपने आप पर काबू रखा और कोई जवाब न दिया।

पहले हफ्ते जब कज्ज़ाको ने तरह-तरह के एतराज़ सामने रखे और साथ देने के अनुरोध पर साफ इन्कार कर दिया, तो फोमीन ने सब-कुछ चुपचाप सुना और शात रहा। औरतो की चीख-चिल्लाहट तक उसे हिला न पाई। वह सिर्फ मूँछो-ही-मूँछो मुस्कराया और अकड़-कर बोला—"ठीक है, हम रास्ते पर ले आएँगे इन्हे।" लेकिन इसके बाद उसे पूरी कज्ज़ाक आबादी अपने खिलाफ लगी और सभाओं मे बोलने वालो के प्रति उसका अपना रवैया बिलकुल बदल गया। अब घोड़े से उतरे बिना, उसने बाते कम की, धमकियाँ ज्यादा दी। लेकिन इस पर भी नतीजा वही रहा और जिन कज्ज़ाको का उसे बड़ा भरोसा रहा, उन्होने ही उसकी बाते जैसे चुप-चुप सुनी, वैसे ही चुपचुप वे अपने-अपने घरो को चले गये।···

एक गाँव मे फोमीन का भाषण समाप्त होते ही एक कज्ज़ाक-बेवा जबाब देने को उठ खडी हुई। लम्बी, हट्टी-कट्टी औरत, मर्दों की तरह ज़ोर-ज़ोर से हाथ नचा-नचाकर, बिलकुल मर्दानी आवाज़ मे चीखने लगी। उसके चौड़े, चेचक के दागो से भरे चेहरे पर क्रोध के साथ सकल्प झलका और होठ रह-रहकर नफरत से फडके। उसने घोडे की काठी पर पत्थर की तरह जमे-बैठे फोमीन की तरफ अपना सूजा हुआ लाल हाथ दिखा-दिखाकर बाते नही की, बातो के डक मारे। "यहाँ क्यो मुसीबत खडी कर रहे हो ? हमारे कज्ज़ाको को हाँककर कहाँ ले जाना चाहते हो तुम···किस सूराख मे ? तुम्हारी इस कम्बख्त लडाई ने अभी क्या कुछ कम औरतो को बेवा बनाया है ? अभी क्या कुछ कम बच्चे यतीम हुए है ? तुम मुसीबतों के नए पहाड ढाना चाहते हो हमारे सिर पर ?···ज़रा देखो कि क्या ठाठ का ज़ार आया है रेवेजनी गाँव से, हमे आज़ादी देने ! पहले अपना घर ठीक-ठाक करो और उसे बरबादी से बचाओ। पीछे सिखाना हमे कि हम कैसे जिएँ और

कैसे न जिएँ, कौन-सी हुकूमत मानें और कौन-सी न माने । हमे अच्छी तरह पता है कि अभी तो तुम्हारे घर के अन्दर तुम्हारी बीवी तक के गले का पट्टा कटा नहीं है । लेकिन तुम मूछे फुलाए, घोडे पर सवार लोगों के दिमाग खराब करते फिर रहे हो । अरे, अगर खुद हवा ने ही न साधा होता तो तुम्हारा-अपना घर अब तक कभी का मिट्टी मे मिल गया होता । क्या शानदार रहनुमा हो तुम !···कुछ बोलो न ··आखिर चुप क्यो हो ? कुछ झूठ कह रही हूँ मै ?"

इस पर भीड़ मे हँसी की एक लहर ने हवा की तरह सर्राटा भरा और हवा की तरह ही थम गई । काठी की कमानी पर रखे फोमीन के बाएँ हाथ की उँगलियाँ रासो के बीच चलने लगी और बँधे हुए गुस्से से उसका चेहरा काला पड गया । वह शात रहा और इस भद्दी स्थिति से निकलने का कोई रास्ता खोजने लगा ।

"और क्या है तुम्हारी यह सरकार, जिसका साथ देने की दावत तुम हमे दे रहे हो ?" औरत पूरी ताकत से चीखती गई, हालाँकि इस बीच उसकी शक्ति जवाब दे चली ।

उसने अपने हाथ कमर पर रखे और चूतड मटकाती फोमीन की ओर बढ चली । भीड के लोगो ने अपनी हँसी छिपाते और अपनी आँखें नीची करते हुए उसे रास्ता दे दिया । साथ ही एक-दूसरे से छेड़-छाड़ करते हुए उन्होने यो घेरा बना दिया, जैसे कि कोई नाचने जा रहा हो।

"तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारी सरकार एक लमहा न चलेगी ।" विधवा ने अपनी भारी, गहरी आवाज मे कहा—"यह सरकार तुम्हारे पीछे-पीछे घिसटती चलती है और एक घटे से ज्यादा एक जगह नहीं टिकती । आज यह तुम्हारे इस घोडे पर नज़र आती है तो कल धूल मे तुम्हारी इस तोद के ऊपर दिखलाई देगी । यह हो तुम और ऐसी है तुम्हारी यह सरकार !"

फोमीन ने घोडे को एड लगाई और उसे भीड मे धँसाया । हर तरफ लोग हडबडाकर पीछे हट गए । सिर्फ औरत घेरे के बीच मे खडी रही । फोमीन के दाँत भिचे रहे और उसका चेहरा गुस्से से सफेद

रहा, मगर जिन्दगी मे कितना ही कुछ देख चुकने के कारण वह उसे शात मन से घूरती रही।

फोमीन ने अपना घोडा उसके पास बढाया और चाबुक ऊपर उठाया। "मुँह बद कर अपना···चित्तीदार गिद्ध कहीं की! यहाँ हगामा आखिर क्यो मचा रखा है तूने ?"

घोडे के दाँत निकल आए और रास से खिचकर उसका थूथन बेधडक औरत के सिर के ऐन ऊपर तन गया। झाग का पिलछरा-हरा थक्का लगाम से उडा और औरत के काले रूमाल पर चू पडा। इसके बाद गाल पर भी गिर गया। उसने उसे हाथ से पोंछा और एक कदम पीछे हट गई।

"यानी, तुम जो चाहे सो कहो, मगर हम मुँह न खोलें ?" फोमीन की क्रोध से फटी-फटी-सी जलती हुई आँखो को घूरते हुए औरत चीखी। फोमीन ने उसे मारा नही, पर चाबुक लपलपाते हुए गरजा— "बोलशेविक···गलीज कही की! अभी तेरा सारा सूअरपन झाडकर रख दूंगा। तेरी अपनी स्कर्ट से बँधवाकर तुझे इतने बेंत लगवाऊँगा कि तबीयत हरी हो जाएगी। देखते-देखते होश ठिकाने आ जाएँगे।"

औरत और दो कदम पीछे हटी। सहसा ही फोमीन की तरफ पीठ कर जमीन पर झुकी और उसने अपनी स्कर्ट का पिछला सिरा एकदम उलट दिया—"सूरमा-अनीका, यह चीज शायद तुमने कभी देखी नही, तो आज देख लो···" उसने चीखकर कहा और ताज्जुब मे डालनेवाली फुर्ती से सीधी होती हुई फिर फोमीन की तरफ मुडी—"मुझे···यानी मुझे बेंत लगवाओगे···बडा दम मालूम होता है तुम्हारे बेंत मे!"

फोमीन ने बौखलाकर थूका और पिछड़ते हुए घोडे को रोकने के लिए रासे खीची।

"ज़बान बद कर···लद्द घोडी कही की! मास का एक भारी-भरकम लोथडा है तू, और कुछ नही।" वह तेज आवाज मे बोला और गम्भीर बनने का निष्फल प्रयत्न करते हुए घोड़ा नचाया।

भीड़ के लोग आपस मे बुदबुदाने और हँसने लगे। फ़ोमीन का एक आदमी उसके आहत सम्मान की रक्षा के लिए कारबाइन बन्दूक

ताने औरत की ओर लपका। पर, उससे दो हाथ ऊँचे एक कज्जाक ने अपने चौड़े कधो से उसकी आड कर ली। शात और सधे हुए ढग से बोला—"यह सब नही चलेगा!"

इसी समय तीन दूसरे कज्जाक आगे आए, और उन्होने औरत को धक्का देकर पीछे कर दिया। उनमे से चमकदार बालोवाले कम उम्र कज्जाक ने फोमीन के आदमी के कानों मे फुसफुसाकर कहा—"किसको अपनी गोली का निशाना बनाने जा रहे हो और क्यो? गोया, औरत को मारना कोई बडा आसान काम है! मर्दानगी दिखलानी है तो लडाई के मैदान मे जाकर दिखलाओ···अपने घर मे तो शेर सभी बनते है!"

फोमीन अपने घोडे को कदम चाल से बाड के पास ले गया, रकाबो पर बल देकर तना और धीरे-धीरे तितर-बितर होती भीड के लोगो को सम्बोधित करते हुए चिल्लाकर बोला—"कज्ज़ाको, खूब सोच लो···एक बार और सोच लो! अभी तो हम तुमसे सीधे सीधे बाते कर रहे है, मगर एक हफ्ते बाद लौटकर आएेगे, तो हमारी ज़बान बिल्कुल दूसरी ही होगी।"

पता नही क्यो और कैसे इस बीच उसका मन बिल्कुल बदल गया, वह हँसी-मजाक करने लगा और उछलते हुए घोडे को साधते हुए जोर से बोला—"हम लोग बुजदिल नही है··तुम औरतो से हमे डरा नही सकते!" इसके बाद उसने कुछ बातें ऐसी कही जिनका जिक्र यहाँ हो नही सकता···

फिर बोला—"हमने चेचक के दागोवाली तो देखी ही है, जाने कितने-कितने दूसरे दागोवाली औरते भी देखकर फेक दी है···फिलहाल हम जाते है, मगर फिर आएँगे और अगर उस वक्त तुम लोग अपने मन से हमारी टुकडी मे शामिल न होगे तो हम तमाम जवान कज्ज़ाकों का नाम जबरदस्ती लिख लेंगे। बात समझ मे आई न! हमारे पास वक्त नही है कि हम तुम्हारी बलाएँ ले, और आँखो मे आँखे डाले रहे।"

भीड के लोगो के दिल इस बीच एक क्षण तक सर्द रहे, मगर इसके बाद लोग फिर हँसने और सरगर्मी से बाते करने लगे। फोमीन

ने अब भी मुस्कराते हुए हुक्म दिया—"घोडो पर सवार हो!"

ग्रिगोरी का चेहरा हँसी दबाए रहने के कारण नीला पड गया और उसी हालत मे उसने अपना घोडा अपने ट्रूप की ओर बढाया।

फोमीन की टुकडी, कीचड से भरी सड़क, जैसे-तैसे पार कर, टीले की चोटी पर पहुँची और वह जान का दुश्मन गाँव आँख से ओझल हो गया। परन्तु 'ग्रिगोरी को बीच-बीच मे हँसी आती रही। मन-ही-मन सोचता रहा यह तो बडी ही अच्छी बात है कि हम कज्जाको को अपने मजाको से इतना प्यार है। हमारी जिन्दगी मे मजाक दर्द से ज्यादा जीता है। ऊपरवाला गवाह है कि जिन्दगी मे अगर सिर्फ सजीदगी होती, तो मैं तो जाने कब का गले मे फदा डालकर लटक गया होता!" और, फिर ग्रिगोरी की तबीयत काफी देर तक मिली रही। केवल दूसरा पडाव आने पर ही उसके मन को फिर कटुता और चिंता ने घेरा। बार-बार खयाल आया कि न तो हमे कज्जाको को उभारने मे कामयाबी मिलेगी, और न फोमीन के नकशे पूरे उतरेंगे। ये इमारतें तो ढहनी ही है, सो ये ढहकर ही रहेगी।

: १३ ·

फिर वसन्त आया। धूप मे और गर्मी आ गई। पहाड़ियो के दक्षिणी ढालो पर बर्फ गलने लगी और दोपहर को पिछले साल की सूखी घास से ढकी धरती पर बकाइनी धुध छाई रहने लगी। ढूहों पर रेत-भरी मिट्टी के बीच आधे दबे गोल पत्थरो के नीचे से नई घास की हरी-हरी, पतली-पतली, प्यारी पत्तियाँ झाँकने लगी। जुते हुए खेतो ने बर्फ का कण-कण झाड़ फेंका। जाड़े की वीरान सड़को से कौए खलिहानों और गली हुई बर्फ के पानी से लबालब, जाड़े की फसलो के खेतो मे उड़ आए। घाटियो मे बर्फ अब भी नीली झाईं मारती रही और यहाँ की साँसो मे अब भी तीखी ठडक घुली रही। लेकिन नालो मे बहार का सकेत देने वाले सोते बर्फ के नीचे कल-कल करने लगे। मैदान के चिनारो की शाखें, निगाह की पकड मे न आनेवाली हल्की-

हल्की हरियाली से नहाने लगी ।

इसके साथ ही मेहनत-मशक्कत के दिन आए और फोमीन के जत्थे के लोग धीरे-धीरे कम होने लगे। रात के हर पडाव के बाद दो-दो तीन-तीन लोग कम नज़र आने लगे। होते-होते एक दिन सबेरे टुकडी के आधे लोग गायब मिले। फिर आठ आदमी अपने घोडो और साज-समान के साथ, हथियार डालने के लिए व्येशेन्स्काया चले गए। धरती ने जोताई और बोआई के लिए अपने बेटो से गुहार की, कज़्ज़ाको को अपने मोह से खीचा तो सघर्ष को निरर्थक समझकर जत्थे के कितने ही लोग चुपचाप उड दिए और घोडो पर सवार होकर अपने-अपने घर जा पहुँचे। बचे सिर्फ ऐसे गए-बीते लोग जिनका जाना हर तरह असम्भव रहा। इन लोगो ने सोवियत शासन का विरोध करने के लिए बडे-से-बडे जुर्म किए थे, और इन्हे माफी की किसी तरह की कोई आशा न थी।

सो, अप्रैल का आरम्भ होते-होते फोमीन की कमान मे तलवारो से लैस सिर्फ अडसठ आदमी रह गए। पर, ग्रिगोरी अब भी जत्थे मे बना रहा। वह घर लौटने का हियाव न जुटा पाया।

वैसे उसे अच्छी तरह पता था कि फोमीन अपनी बाज़ी हार गया है और आज नही तो कल यह जत्था टूट ही जाएगा। वह यह भी जानता था कि लाल सेना की घुडसवार टुकडी से कही भी जमकर मुठभेड हुई नही कि जत्थे का एक-एक आदमी खत्म हुआ। इस पर भी उसने फोमीन का साथ नही छोडा और मन-ही-मन गुप्त योजना बनाई—'गरमी तक खिच जाए किसी तरह! उसके बाद मै टुकड़ी के अच्छे-से-अच्छे दो घोडे लूँगा, रातो-रात तातारस्की पहुँचूँगा और वहाँ से अकसीनिया को लेकर दक्खिन चला जाऊँगा···दोन का स्तेपी का मैदान इस छोर से उस छोर तक फैला हुआ है। हज़ारो सुनसान रास्ते है। गरमी मे सभी सडकें चालू रहती है, और मौका पडने पर कही भी पनाह ली जा सकती है।' उसने आगे सोचा—'घोडे कही छोड़ दूँगा, अकसीनिया के साथ पैदल कुबान चला जाऊँगा और फिर काकेशिया की तलहटी की पहाड़ियो मे आबादी से दूर, कही मुसीबत

का वक्त काट दूंगा। इसके सिवाय और कोई रास्ता नजर ही नहीं आता।'

पर कापारिन की सलाह पर फोमीन ने, बर्फ टूटने से पहले-पहले दोन पार कर बाएँ किनारे पहुँचने का निश्चय किया। उसे लगा कि खोपर के इलाके मे घने जगल बहुत है, और वहाँ, मौका पडने पर पिछयाए जाने से छुटकारा पाया जा सकता है।

फलत· दस्ते ने रिबनी गाँव के पास दोन पार की। जहाँ धार तेज मिली, वहाँ की बर्फ पहले से हो गायब दीखी, और अप्रैल की तेज धूप मे पानी ऐसा चमचमाता लगा, जैसे कि उसके ऊपर चाँदी की ऊँची-नीची सीढियाँ बनी हो। लेकिन जहाँ बर्फ का अम्बार दो फुट गहरा रहा, वहाँ नदी पत्थर-सी कडी पडी रही। नतीजा यह कि टूटे हुए सिरे पर टहनियाँ बिछाई गईं। एक-एक कर सभी घोडो को पार पहुँचाया गया, फिर खुद उस तरफ पहुँचा गया। एक पडताली गश्ती-टुकडी आगे-आगे भेजी गई और येलान्स्काया जिले की तरफ बढना शुरू कर दिया।

दूसरे दिन ग्रिगोरी को सुयोग से अपने गाँव तातारस्की का एक आदमी मिल गया। वह काना-बूढा अपने नाते-रिश्तेदारो से मिलने ग्रियाजनोव्स्की जा रहा था, और उस गाँव के पास ही, अनायास ही, जत्थे के सामने पड गया था।

ग्रिगोरी बूढे को एक ओर ले गया। पूछा—"बाबा, मेरे बच्चे तो ठीक-ठाक, सही-सलामत है न ?"

"ऊपर वाले का रहम है, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच! सभी सही-सलामत और ठीक-ठाक है।"

"बाबा, मुझे एक बडी ज़रूरी बात कहनी है। तुम गाँव मे मेरी बहन येवदोकिया-पैन्तेलेयेवना को मेरा बहुत-बहुत प्यार कहना···प्रोखोर-ज़िकोव को मेरी याद दिलाना, और अकसीनिया से कहना कि मै जल्दी ही आऊँगा। लेकिन, ख़याल रखना कि मुझसे यहाँ मिलने की बात किसी के सामने भूल से भी होठो पर न लाना। करोगे न इतना ?"

"करूँगा···जरूर करूँगा, बेटे···तुम डरो मत···तुमने जो-कुछ

कहा है, मै वह सब-कुछ, वैसे-ही कह दूँगा उन लोगो से ।"

"गाँव की और खबर क्या है ?"

"कोई बात नई नही है···सब-कुछ बदस्तूर है ।"

"कोशेवोइ अब भी सदर है ?"

"हाँ, अब भी सदर वही है ।"

"वह मेरे घरवालो को सताता तो नही ?"

"मैंने तो कुछ सुना नही । इसके मानी है कि उन लोगो को हाथ नही ही लगाया होगा उसने । फिर, उन्हे तग वह करेगा भी क्यो ? तुम्हारी हरकतो के लिए तुम्हारे घरवाले जिम्मेदार नही है ।"

"वैसे गाँव मे लोग क्या कहते है मेरे बारे मे ?"

बूढा नाक छिनकता और काफी देर तक लाल रूमाल से अपनी मूँछे और दाढी पोछता रहा । इसके बाद सवाल टालने की कोशिश करते हुए बोला—"ऊपर वाला जाने···तरह-तरह की बाते सुनाई पडती हैं···जो जिसके जी मे आता है, वही कह देता है···वैसे तुम सोवियत हुकूमत से समझौता जल्दी ही कर नही रहे ?"

ग्रिगोरी इस सवाल का जवाब देता भी तो क्या देता ? टुकडी के पीछे-पीछे जाने की कोशिश करते, अपने घोडे को रोकते हुए मुस्कराकर बोला—"कुछ नही कह सकता, बाबा ! फिलहाल तय कुछ भी नही है ।"

"यह क्यो ? हमने सिरकैशियनो से लड़ाई लडी, तुर्कों से लड़ाई लडी, और आखिर मे सुलह हो गई । लेकिन तुम···तुम सब अपने ही लोग हो और एक-दूसरे के साथ समझौता नही कर सकते···यह बात ठीक नही है, ग्रिगोरी···पैन्तेलेयेविच···सचमुच यह बात बिलकुल ठीक नही है···ऊपर वाला सब पर अपना रहम बरसाता है···वह सबको देखता है···मगर याद रखना मेरी बात कि वह तुम सबको माफ नही करेगा···। मैं तुमसे पूछता हूँ कि नीले आसमान वाले की मोहब्बत में यकीन रखने वाले रूसी क्या आपस मे ही इस तरह लडते जा सकते हैं कि यह रगडा कही खत्म हो ही नही । थोडी-बहुत लडाई की बात और है···लेकिन तुम एक-दूसरे की जान के गाहक रहे हो, और इसको यह

चौथा साल है···मेरे बूढे दिमाग मे तो यह आता है कि अब यह मारकाट खत्म होनी चाहिए।"

ग्रिगोरी ने विदा ली और अपनी टुकडी को पकडने के लिए घोडा सरपट दौडाया। बूढा अपनी लकुटिया पर झुका आस्तीन से अपनी खाली आँख का गढ़ा रगडता और दूसरी तेज आँख से ग्रिगोरी को एकटक देखता रहा। फिर उसके शानदार व्यक्तित्व को सराहना से उसका मन भर उठा तो धीरे-धीरे फुसफुसाकर अपने-आपसे बोला—'क्या शानदार कज्जाक है···क्या शानदार बदन है···क्या शानदार सब-कुछ है···मगर आदमी चौपट है···रास्ते से भटक गया है। हक की बात तो सिरकैशियनो से लडना है। मगर देखो कि इसके जी मे समाया क्या है। आखिर सरकार के लिए जाने देने का खलल क्यो है इनके दिमागो मे? आखिर सोच क्या रहे है, ये तमाम जवान कज्जाक? ग्रीशा से कुछ उम्मीद रखना वैसे भी बेकार है···उस खानदान के तो कुल-के-कुल लोग चौपट रहे हैं और जिन्दगी-भर चौपट रहे है! इसका बाप मर गया। मगर ज़िन्दा था तो बिलकुल इसी मिट्टी का बना था··· और उसका बाबा प्रोकोफी···मैंने तो उसे भी देखा है···आदमी क्या था, जगली सेब था पूरा! लेकिन सवाल तो यह है कि इसके सिवाय और भी तो कज्जाक है, और उनकी तबीयत मे आखिर क्या है?··· ऊपर वाला मेरा गुनाह माफ करे···मेरी समझ में कुछ-नही आता···।'

अब फोमीन ने किसी नए गाँव पर अधिकार किया तो वहाँ के लोगो की कोई सभा नही बुलाई। अनुभव से उसने बहुत-कुछ सीखा और प्रचार बिलकुल बेमतलब लगने लगा। उसे अपनी टोली के लोगो को ही साथ बनाए रखने के लिए इतना प्रयत्न करना पडा कि नए लोगों को जत्थे मे शामिल करने की उसने कोशिश ही नही की। वह प्रायः उदास और गुमसुम रहने लगा और मन की शाति के लिए वोदका की शरण लेने लगा। होते-होते यह हालत हो गई कि जब भी रात मे किसी गाँव मे पडाव डाला गया, शराबखोरी की महफिलें गरम हो उठी और अपने अतामान की देखा-देखी उसके साथ के लोग भी ढालने लगे।

नतीजा यह हुआ कि रोबदाब-कायदा-कानून खत्म हो गया, और लूट-पाट आम हो गई। जत्थे के पास पहुँचने पर जो भी सोवियत कर्मचारी जाने बचाने के लिए भागे उनके घर की एक-एक चीज खखोर ली गई और लादने लायक सभी सामान घोडो पर लाद लिया गया। कई लोगो ने तो कई बार काठियो वाले थैलो मे चीजे इस तरह ठूंस-ठूंसकर भरी कि वे फटने-फटने को हो गए। एक दिन ग्रिगोरी ने अपने जत्थे के एक आदमी को सिलाई की मशीन लेकर जाते देखा।

मशीन हाथ से चलाने की थी और उस आदमी ने रासें काठी की कमानी मे अटकाकर चीज को बाईं बगल मे दबा रखा था···।

ग्रिगोरी ने उसे इस काम से रोका, मगर उसने एक नही सुनी और ग्रिगोरी के चाबुक का स्वाद चखने पर ही उस मशीन को जहाँ-का-तहाँ छोडा।

उस दिन शाम को ग्रिगोरी और फोमीन के बीच काफी तेज बातें हुईं। हुआ यह कि शराब चलती रही और दोनो कमरे में अकेले रहे। फोमीन मेज़ के पास बैठा रहा और उसका चेहरा नशे से तमतमाया रहा। ग्रिगोरी, लम्बे-लम्बे डग भरता, कमरे मे चहलकदमी करता रहा। सहसा ही फोमीन गुस्से से चमकते हुए बोला—"बैठ जाओ··· इस तरह टहलते मत फिरो···मुझे अच्छा नही लगता।" पर ग्रिगोरी ने उसके शब्दो की ओर कुछ भी ध्यान नही दिया और वह उस छोटे कमरे मे उसी तरह घूमता रहा। आखिरकार बोला—"फोमीन, मेरा जी ऊब गया इस तूफान से! यह लूटपाट और यह शराबखोरी बन्द करो।"

"क्यो, कल रात कोई खराब सपना देखा क्या ?"

"ज़्यादा मज़ाक अच्छा नही ··लोग हमारे बारे मे उल्टी-सीधी बातें करने लगे है।"

फोमीन ने हिचकते हुए कहा—"यह तो मेरे साथ-साथ तुम भी जानते हो कि मैं इन जवानो का कुछ नही कर सकता।"

"लेकिन तुम इनका कुछ करने की कोशिश तो कर नही रहे।"

"खैर छोड़ो, मुझे तुमसे सीख नही लेनी···साथ ही यह भी है कि लोग भी इस लायक नही है···हम इन सूअरो के लिए मरते फिर रहे

हैं, मगर यह सब···अब तो मै सिर्फ अपनी फिक्र करूँगा···और बस !"

"लेकिन अजब यह है कि तुम तो अपनी फिक्र भी नही कर रहे। इस सदाबहार शराबखोरी की वजह से तुम्हे तो सोचने का भी वक्त नही मिलता। पिछले चार दिनो से तुम आदमी नही रहे हो, और तुम्हारे साथ ही बाकी लोग भी ढाल रहे है। वे तो चौकियो पर तैनात होने पर भी पीते है और रात-भर पीते रहते है। आखिर तुम्हारा इरादा क्या है ? तुम चाहते हो कि हम किसी गाँव मे फँस जाएँ और शराब के ये दौर चलते रहे कि काटकर फेक दिए जाएँ ?"

"और तुम्हारा खयाल है कि मौत से बच सकते है हम !" फोमीन ने मज़ाक बनाते हुए कहा—"एक-न-एक दिन तो मरना ही है। जिस बर्तन मे पानी भरकर लाया जाता है, वह भी एक-न-एक दिन तो टूट ही जाता है। यह बात तुम जानते हो न ?"

"अगर ऐसा है तो चलो, कल ही व्येशेन्स्काया चले और हथियार डाल दे कि लो, आ गए हम ··हम अपने को सौपते है तुम्हे !"

'नही, फिलहाल तो हम ज़िन्दगी का मज़ा लेगे।"

ग्रिगोरी मेज़ की दूसरी तरफ ठहर गया, पैर फैलाकर खडा हो गया और सधे हुए शात स्वर मे बोला—"अगर तुम जत्थे के लोगो को कायदे मे लाकर यह लूटपाट और शराबखोरी खत्म न करोगे तो मैं तुम्हारा साथ छोड दूँगा, और आधे लोगो को अपने साथ ले जाऊँगा।"

"ज़रा कोशिश करके देखो !" फोमीन ने धमकी दी।

"इसमे ज्यादा कोशिश की ज़रूरत नही पडेगी···"

"देखो···तुम·· तुम इस तरह मुझे धमकाना बन्द करो।" फोमीन ने अपनी पिस्तौल के केस पर हाथ रखा।

'पिस्तौल हाथ मे न लेना, वरना तुम्हारी गोली से पहले मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा।" ग्रिगोरी ने जल्दी-जल्दी कहा और पीले पडते हुए अपनी तलवार म्यान से आधी बाहर निकाल ली।

फोमीन ने हाथ मेज पर रख लिए और मुस्कराने लगा—"किसलिए परेशान कर रहे हो तुम मुझे ? मेरा सिर यो ही फटा जा रहा है। ऊपर से तुम बेवकूफी की बाते कर रहे हो। अपनी तलवार म्यान

मे कर लो। यानी मैं तुमसे मज़ाक भी नही कर सकता क्या ? बिलकुल छुई-मुई के फूल मालूम होते हो—बिलकुल सोलह साल की लड़की की तरह···"

"मेरे जो मन मे था, मैने तुमसे कह दिया···अब इसे समझ लो और सहेजकर दिल मे रख लो···हममें से हर एक का दिमाग तुम्हारा जैसा तो है नही।···"

"यह तो मै जानता हूँ।"

"बस तो इसे समझ लो और हमेशा याद रखो ! तुम्हे कल सुबह हुक्म देना है कि सारे थैले खाली कर दिए जाएँ···हमारे इन फ़ौजियो के ये घोडे फौजी काम के लिए है। वे किसी कारवो के लद्दू-घोडे नही हैं। उस पर मजा यह है कि ये लुटेरे आम जनता के नाम पर जान की बाजी लगाने का दावा भी करते है। इन्होने लूट का सामान लाद लिया है और अब ये बिसातियो की तरह गाँव-गाँव सौदागरी करते चलते है। मेरी तो गर्दन शर्म से झुक जाती है। सोचता हूँ कि मैं तुम्हारे इस जत्थे मे आखिर शामिल हुआ ही क्यो ?" ग्रिगोरी ने गुस्से और नफरत से ज़मीन पर थूका और वहाँ से हटकर खिड़की के पास जा खडा हुआ।

फोमीन ने हँसी का ज़ोर का ठहाका लगाया और बोला—"अभी एक बार भी किसी घुडसवार टुकडी ने दबोचा नही हमे। जब कोई शिकारी किसी मोटे-तगडे भेडिए को दौडाता है तो भेडिए की सारी खाई-पी डकार मे ही निकल जाती है। मतलब यह है कि अगर हमारे इन बदमाशो का भी कायदे से शिकार किया जाता तो इनकी यह सारी मस्ती हिरन हो जाती।···तो ठीक है, मेलेखोव, तुम बेकार परेशान न हो, सब-कुछ दुरुस्त कर लूँगा। बात यह है कि मेरे मुँह का ज़ायका जरा बिगड गया था, और इस गफलत मे इनकी लगाम मुझसे कुछ ढीली हो गई थी। अब उसे खीच दूँगा थोडा। हम अपनी टुकडी तार-तार नही होने देंगे और दुख-दर्द का जाम एक साथ पिएँगे।"

और उन दोनो की यह बातचीत खत्म भी न हो पाई कि पातगोभी का भाप छोडता शोरबा लेकर घर की मालकिन कमरे मे आ गई।

साथ ही चुमाकोव और दूसरे कज्जाक भी अन्दर घुस आए।

लेकिन बातो का असर हुआ। अगले दिन सबेरे फोमीन ने हुक्म देकर सभी थैले खाली करवाए और सामान अपनी देख-रेख मे बाहर पहुँचाया। इस सिलसिले मे एक घराऊ-लुटेरे ने बडी फूँ-फाँ की और लूट का माल देने को किसी तरह राजी ही न हुआ। इस पर फोमीन ने उसे खडे-खड़े गोली से उडा दिया और अपने बूट से उसकी लाश एक तरफ को ठेलते हुए बोला—"उठाकर बाहर फेक दो इसे। सूअर के बच्चो, यह लूटपाट बन्द···करो बहुत हो चुकी। सोवियत हुकूमत के खिलाफ मैंने तुम्हे इसलिए उभारा था? ज़िन्दा तो ज़िन्दा मुर्दा दुश्मन का पतलून तक उतार लेने का हक तुम्हे है। और चाहो तो उतार सकते हो। लेकिन खबरदार जो उनके घर के लोगो को तुमने उँगली से भी छुआ। हम औरतो से लडने नही आए, और जो ऐसा करेगा, उसकी वही हालत होगी जो इस गधे की हुई है।"

फौजियो के बीच धीरे-धीरे भनभनाहट शुरू हुई, और फिर खत्म हो गई।

इस तरह व्यवस्था स्थापित हो गई-सी लगी। टोली के लोग दो-तीन दिन तक दोन के बायें किनारे पर चक्कर काटते, स्थानीय-रक्षा-दलों के छोटे-छोटे दस्तो से टक्कर लेते और उन्हे बरबाद करते रहे।

फिर टुकडी शुमिलिन्स्काया जिले में पहुँची तो कापारिन ने वोरोनेज़ प्रान्त के सीमा-क्षेत्र मे प्रवेश करने का प्रस्ताव सामने रखा। बोला—"वहाँ के लोगो ने अभी-अभी सोवियत हुकूमत के खिलाफ सिर उठाया था। इसलिए वे हमारी बडी मदद करेंगे।" लेकिन जवाब मे फोमीन ने अपनी तजवीज़ सामने रखी तो सभी ने उसका एक स्वर से समर्थन किया। फोमीन बोला—"हम अपने इलाके के बाहर कदम न रखेंगे।"

परन्तु बाद मे टुकडी के लोगो की कई बैठकें हुईं, और फ़ैसला बदलना पड़ा, क्योंकि उन्हें एक घुडसवार टुकडी से मुठभेड बचाने के लिए चार दिन तक बराबर पूर्व की ओर पीछे हटना पडा। यह टुकडी उनका पीछा करते-करते कज़ान्स्काया ज़िले से यहाँ तक चली आई थी।

लेकिन उनके रास्ते रोकना कठिन हो उठा क्योकि खेतो मे बसन्त, कालीन कार्य चलता रहा, और स्तेपी के दूर-से-दूर स्थानों के लोग भी काम मे जुटे रहे।

सो उस दिन टुकडी सदा की तरह, रात मे पीछे हटी, और सबेरा होने पर घोडो के दाने-पानी के लिए रुकी कि दुश्मन की पडताली गश्ती टुकडी के लोग घोडो पर सवार पास ही नज़र आए और हल्की मशीन-गन देखते-देखते खडखडाने लगी। ऐसे मे फोमीन के लोगो ने घोड़ो के मुँह मे जल्दी-जल्दी जैसे-तैसे लगामे डाली और उड दिए। व्येशेन्स्काया जिले मे मेलनीकोव गाँव के पास फोमीन को दुश्मन को चकमा देने में कामयाबी मिल गई और वह अपनी टुकडी के साथ साफ बच निकला। फिर अपनी ही जासूसी गश्ती टुकडियो की रिपोर्ट से उसे पता चला कि लाल घुडसवार टुकडी की कमान, बुकानोव्स्काया जिले के एक बहुत ही जहीन और पक्के-दिल आदमी के हाथ मे है·· उस टुकडी मे इस टुकडी से लगभग दुगुने लोग है ··छ· हल्की मशीनगनें है और ताजा घोडे हैं···इन घोड़ो ने लम्बी मञ्जिले तय नही की है और ये जरा भी थके नही है।

ऐसी परिस्थिति मे फोमीन के लिए लडाई बरकाना और अपने फौजियो और घोडो को आराम देना ज़रूरी हो गया। उसने सोचा—'खुली लड़ाई मे तो मुमकिन है नही पर अब मैं छिपकर एकदम धावा बोलकर लाल घुडसवार टुकडी को तोडूँगा। इसके बाद वह पहले की तरह हमारा पीछा न कर सकेगी और शायद उससे ही हमे कुछ मशीनगनें और राइफल की गोलियाँ भी मिल जाएँगी।'

परन्तु फोमीन के अनुमान गलत निकले और ग्रिगोरी के मन मे दस्ते को लेकर जो शका थी उसकी पुष्टि १८ अप्रैल को हो गई।

१७ अप्रैल की शाम को फोमीन और दस्ते के आम फौजियो ने धुआँधार पिलाई की। तडके उन्होने रात के पड़ाव वाला गाँव छोड़ा। परन्तु रात-भर के जागरण के कारण अधिकाश लोग घोडो की पीठो पर बैठे-ही-बैठे ओघाने लगे। सबेरे कोई नौ बजे वे ओज़ोगिन गाँव के पास के जगल के बाहर रुके। फ़ोमीन ने गारद तैनात कर घोड़ो को जई

खिलाने का हुक्म दिया।

इसी समय पूर्व की ओर से अंधड-सा चलने लगा। रेतीली गर्द के भूरे-भूरे बादल क्षितिज पर नीचे उतर आए और उन्होने पूरे स्तेपी पर अँधेरे की एक चादर-सी तान दी। सूरज की किरणें कोशिश करके भी यह चादर भेद नही पाईं। लोगों के बरानकोटो के सिरे और घोडो की अयालो और दुमो के बाल हवा मे उडने लगे। जानवरो ने हवा की ओर पीठ की और जगल के किनारे फैली हॉथर्न की झाडियो के बीच जाकर पनाह ली। गर्द के रेतीले कण लोगो की आँखो मे आ-आकर पडने लगे, और बिलकुल पास की चीज को भी देख पाना असम्भव हो गया।

ग्रिगोरी ने अपने घोडे का मुँह और आँखे बडी सावधानी से साफ की, जई की कडिया उसकी गर्दन मे लटकाई और कापारिन के पास गया। कापारिन बरानकोट मे जई भरकर अपने घोडे को खिलाता मिला।

"क्या जगह चुनी है तुमने ठहरने के लिए!" ग्रिगोरी ने चाबुक से जगल की ओर इशारा करते हुए कहा।

कापारिन ने अपने कन्धे झटके, "मैंने तो उस बेवकूफ से कहा था, लेकिन उससे बहस कौन करे!"

"हमे स्तेपी के अन्दर या गाँव के बाहर रुकना चाहिए था।"

"जगल से हमला हो सकता है? क्या खयाल है तुम्हारा?"

"हाँ, हो सकता है।"

"मगर, दुश्मन तो दूर है···"

"मगर दुश्मन पास भी तो हो सकता है··वे कोई पैदल फौजी तो हैं नही।"

"जगल छूँछा है इस वक्त···वे लोग आएँगे तो दिखलाई पड जाएँगे।"

"मगर उन्हें देखेगा कौन? करीब-करीब सभी लोग तो सो रहे है। मैं तो सोचता हूँ कि गारद के लोग तक शायद ही जाग रहे हो।"

"कल रात की पिलाई के बाद तो लोग खड़े होने की हालत मे नही

हैं···कोई जगा नही सकता उन्हे !" कापारिन के माथे पर बल पडे, जैसे कि उसे बहुत दर्द महसूस हो रहा हो । फिर धीरे से बोला—"ऐसा रहबर है हमारा कि हमारी नाव तो डूबी समझो । आदमी बोतल की तरह खोखला है और ऐसा बेवकूफ है कि क्या कहो ! मैं कहता हूँ कि कमान तुम अपने हाथो मे क्यो नही ले लेते ? क्यो नही चाहते तुम ? कज्जाक तुम्हारा अदब करते है और बहुत खुशी-खुशी तुम्हारा हर हुक्म बजाएँगे।"

"मैं कमान अपने हाथो मे लेना बिलकुल नही चाहता । मैं तो दो-चार दिन का मेहमान हूँ यहाँ ।" ग्रिगोरी ने उत्तर दिया और अपने घोडे की ओर बढा । परन्तु बिना सोचे-समझे अपने अन्दर की बात सामने रख देने के कारण उसे मन-ही-मन दुख होने लगा ।

कापारिन ने बरानकोट की बची-खुची जई ज़मीन पर उँडेली और ग्रिगोरी के पीछे लपका । फिर उसके साथ-साथ बढते काँटो से भरी एक शाख तोडते और फूली हुई कलियो को उँगलियो से दबाते हुए बोला—"मेलेखोव, मेरा खयाल है कि अगर हम मास्लाक के ब्रिगेड जैसी किसी बडी सोवियत की खिलाफत करने वाली फौज मे शामिल न होगे तो अब बहुत देर तक कदम जमाए रखना मुमकिन न होगा । मास्लाक इलाके के दक्खिनी हिस्से मे कही घूम रहा है । हमे उससे मिलना चाहिए वरना एक दिन हम गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिए जाएँगे···।"

"लेकिन यह तो बाढ का वक़्त है । हम दोन पार नही कर सकते ।"

"अभी न सही—लेकिन बाढ का पानी उतरते ही हमे पीछे हट जाना चाहिए···क्या राय है तुम्हारी ?"

ग्रिगोरी ने कुछ सोचने के बाद जवाब दिया—"ठीक है···हमे यह इलाका तो खाली कर ही देना चाहिए ' यहाँ लटके रहना बिलकुल बेकार है···।"

कापारिन और उमग मे आ गया । बोला—"हमे उम्मीद थी कि लोग हमारा साथ देंगे । मगर इस मानी मे सिर्फ मायूसी हाथ लगी हमे । अब तो फ़ोमीन को जैसे भी हो, समझाना चाहिए, बिना मतलब

पूरा इलाका मँझाते फिरने से रोकना चाहिए और किसी और मजबूत फौज का दामन पकडने पर जोर देना चाहिए।"

ग्रिगोरी बकबास सुनते-सुनते थकने लगा। इस बीच उसने निगाह अपने घोडे पर गडा रखी। कडिया खाली होते ही उतारी, मुँह मे लगाम दी और तग कसी।

कापारिन ने कहा—"अब तो एक अर्से तक हम आगे बढ नही सकेंगे। इसलिए यह जल्दबाजी और हडबडी बिलकुल बेमानी है।"

ग्रिगोरी ने जवाब दिया—"अच्छा हो कि तुम जाओ और अपना घोडा कसो। बाद मे ज़ीन कसने का मौका न मिलेगा।"

कापारिन ने उसे बहुत ही घूरकर देखा और गाडियो की कतार के पास खड़े अपने घोडे की तरफ कदम बढाए।

ग्रिगोरी अपने घोडे को लगाम से साधे फ़ोमीन के पास पहुँचा तो कमाण्डर, उबले चूज़े का पंख कुटकुटाता, अपने लबादे पर टाँग फैलाए पडा मिला। वह उसे देखते ही एक तरफ को खिसक गया और ग्रिगोरी को बैठने का इशारा करते हुए बोला—"आओ बैठो, थोडा आराम कर लो।"

"अब यहाँ से निकल चलना चाहिए···आराम के लिए वक्त नही है।" ग्रिगोरी ने कहा।

"घोडे दाना-पानी कर लें तो हम लोग आगे बढें।"

'घोडो को दाना-पानी बाद मे भी कराया जा सकता है।"

'ऐसी जल्दी क्या पड़ी है?" फोमीन ने हड्डी लुकाई और हाथ लबादे मे पोछे।

"दुश्मन हमे यहाँ आ दबोचेगा···बहुत ही खतरनाक जगह है यह।"

"कैसे आ दबोचेंगे हमे वे शैतान के बच्चे? गश्ती टुकड़ी के लोग अभी-अभी आए थे। बतला गए हैं कि पहाडी पर कही कोई आदमी नही है। लगता है कि लोग रास्ते मे भटक गए है कही। अगर ऐसा न होता तो हमारा पीछा कर रहे होते। जहाँ तक हमले का सवाल है, बुकानोव्स्काया ज़िले से हमे इस तरह का कोई खतरा नही होना चाहिए। बहाँ का सैनिक कमीसार, आदमी तो बहादुर है, लेकिन उसकी

कमान मे फौजी बहुत नही हैं और वह सामने आकर हमारा सामना शायद ही करे। मेरा खयाल है कि यहाँ हम जी-भर आराम कर ले, इस हवा को रुक जाने दें और तब यहाँ से चलें।···ग्रिगोरी बैठो···लो थोडा-सा चूज़ा खाओ···इस तरह सवार क्यो हो मेरी खोपडी पर ? मेलेखोव, मुझे लगता है कि अब तुम बुजदिल हो गए हो, और हालत यह हो गई है कि जो भी झाडी सामने आएगी, तुम उसके चारो ओर घोडा नचाते फिरोगे।" उसने अपने हाथ से आधा घेरा बनाया और जी खोलकर हँसा।

ग्रिगोरी उसे बुरा-भला कहते हुए वहाँ से चला आया, एक झाडी मे घोडा बाँधकर पास ही लेट गया और हवा से बचाव करने के लिए बरानकोट का पल्ला चेहरे पर खीच लिया। हवा ने सीटियाँ बजा-बजाकर और बदन के ऊपर झुकी लम्बी-सूखी घास की पत्तियो ने सर-सर की मधुर लोरियाँ सुना-सुनाकर उसे सुला दिया।

फिर, उसकी आँख तब खुली जब मशीनगनें खडखडाने लगी और उनका यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। उसने चौंककर उठते ही झटके से अपना घोडा खोला। इसी समय बाकी सभी आवाजो को दबाता हुआ फोमीन का स्वर गूँजा—"टुकडी घोडो पर सवार हो।" इस बीच जगल की दाईं ओर से दो-तीन मशीनगनें गोलियाँ बरसाने लगी।

ग्रिगोरी घोडे पर सवार हुआ। उसने एक नजर मे ही सारी स्थिति का अनुमान लगा लिया। जगल के सिरे पर गर्द के बादल के कारण देखना सहज न रहा, तो कोई पचास लाल सैनिक धावा बोलते और पीछे हटकर पहाडियो तक पहुँचने का पूरा रास्ता काटते समझ पडे। उनकी चमचमाती तलवारें हलकी-हलकी धूप मे निलछरा रँग घोलती लगी। जगल के झाडी से ढके, एक ढूह से मशीनगनें तावडतोड गोलियाँ उगलती रही। बाईं तरफ लाल सेना की लगभग आधी स्क्वैड्रन के लोग चुपचाप तलवारें लपलपाते हुए घेरे को पूरा करने की कोशिश मे अपने घोड़े सरपट दौडाते रहे। ऐसे मे विद्रोही-टुकड़ी के बचाव का सिर्फ़ एक रास्ता रहा कि वह बाईं ओर के हमलावरो की पतली कतार

भेदे और दोन की तरफ पीछे हटे। सो, ग्रिगोरी ने चिल्लाकर फोमीन से कहा—"मेरे पीछे-पीछे चले आओ।···"और अपनी तलवार म्यान से निकालकर अपना घोड़ा हवा की रफतार से दौडा दिया। फिर कोई चालीस गज निकल जाने के बाद उसने मुडकर देखा तो करीब बीस गज के फासले पर फोमीन, कापारिन, चुमाकोव और कई दूसरे लोग अपने घोडे सरपट दौडाते हुए आते नजर आए। अब जगल की मशीनगनें शान्त हो गई और सिर्फ धुर दक्षिण वाली मशीनगन रुक-रुककर मालगाडियो के आसपास फोमीन के साथियो को अपने क्रोध का शिकार बनाती रही। जरा देर बाद उस मशीनगन ने भी जैसे हाथ खीच लिया तो ग्रिगोरी को लगा कि दुश्मन कैम्प के ऐन सिरे पर पहुँच गया है, और पीछे के लोग तलवार के घाट उतारे जा रहे है। उनके इस अनुमान की आधार रही मायूसी से भरी चीख-पुकार और अपने बचाव के लिए चलाई गई छिटपुट गोलियाँ। लेकिन पीछे मुडकर देखने का समय उसके पास नही था। यानी, उसकी ओर उमडते लाल सैनिको की ओर उसका घोडा सरपट दौडता रहा कि भेड की खाल के छोटे कोट वाले एक फौजी को उसने अपने निशाने के लिए मन-ही-मन तय कर लिया। फौजी के भूरे घोडे की रफतार कोई बहुत तेज़ न रही। एक क्षण मे ही ग्रिगोरी के सामने कौंध गया घोड़े का झाग से नहाया सफेद सीना, घोडे पर सवार जवान का उत्तेजना से तमतमाया चेहरा और उसके पीछे, दोन तक फैलता चला गया स्तेपी के मैदान का पसारा। दूसरे ही क्षण उसके लिए ज़रूरी हो गया विरोधी का वार बचाना और अपनी तलवार हाथ मे साधना।

बस, तो, घुडसवार अभी कोई दस गज के फासले पर रहा कि ग्रिगोरी ने अपना बदन तेजी से बाई तरफ झटका, सिर के ऊपर तलवार की तेज सनसनाहट महसूस की और दूसरे घोड़े की बगल से गुजरते हुए, सीधे होकर सवार के सिर पर अपनी तलवार से भरपूर वार किया। हाथ ने जैसे झटका अनुभव ही नही किया। लेकिन पीछे मुडने पर उसने देखा कि आदमी काठी से धीरे से नीचे खिसका और भेड़ की खाल के पीले कोट की पीठ खून की गाढ़ी धार से भर उठी।

भूरा घोड़ा मुँह ऊपर उठाए, तेज दुलकी मारता इस तरह किनारा काटने लगा जैसे कि अपनी परछाईं से डर रहा हो।

ग्रिगोरी अपने घोड़े की गर्दन पर झुक गया और उसने अपनी तलवार नीची कर ली। उसके सिर के ऊपर गोलियाँ तेज़ी से सर्राटे भरती रहीं। जानवर के कान सिर से लग गए और सिरो पर पसीने की बूँदें झलकने लगी। ग्रिगोरी ने अपने ऊपर चलाई गई गोलियो की सीटियाँ और अपने घोडे के तेज़ी से हाँफने की आवाज़-भर सुनी। उसने मुडकर देखा तो उसकी नज़र फोमीन और चुमाकोव पर पडी। कापारिन अब अब भी दूर उनसे कोई सौ कदम के फासले पर रहा। दूसरे ट्रूप का, स्तेरलयादनिकोव नाम का केवल एक लँगडा सैनिक हमला करने वाले दो घुडसवार फौजियो से जूझता किसी तरह आगे बढता लगा। समझ मे आया कि फोमीन के पीछे भागने वाले बाकी सभी आठ या नौ सैनिक तलवार के घाट उतार दिए गए है, उनके घोडे दुमें लहराते सभी दिशाओ मे भाग रहे है, लाल सैनिक उनका पीछा कर उन्हे पकड रहे हैं, फोमीन के फौज़ी का सिर्फ एक कुम्मैत घोडा अपने मालिक की लाश घसीटता कापारिन की बगल मे हीसता हुआ सरपट दौड रहा है और मालिक है कि गिरते समय उसका पैर रकाब मे फँसा-का-फँसा रह गया है।

ग्रिगोरी ने बलुहे ढूह के पार पहुँचने के बाद अपना घोडा रोका, कूदकर ज़मीन पर आते हुए अपनी तलवार झटके से म्यान मे डाली, मात्र एक हफ्ते की ही ट्रेनिंग मे कुशल अपने घोडे को देखते-देखते लिटाया और इस आड के पीछे से अपनी सारी-की-सारी गोलियाँ चला डाली। पर, हडबडी और परेशानी के कारण निशाने सधे नही और सिर्फ आखिरी गोली से एक लाल सैनिक का घोडा गिर सका। इस पर भी फोमीन के पाँचवें फौजी को पीछा करने वालो से जान बचाकर भागने का मौका मिल गया।

"घोड़े पर सवार हो और यहाँ से उड दो, वरना दुश्मन के हाथ पड जाओगे।" फोमीन ने ग्रिगोरी के बराबर आने पर चिल्लाकर कहा।

खून खूब बहा। पूरी टुकडी के लोग मारे गए। सिर्फ पाँच फौजी जान बचाकर भाग सके। उन्हे अन्तोनोवस्की गॉव तक खदेडा गया और गाँव के चारो ओर के जंगल मे उनके छिप जाने पर ही दुश्मन ने उनका पीछा करना छोडा।

जो पांच फौजी बचे उन्होंने पागलो की तरह अपने घोडे सरपट दौडाए और राह मे मुँह तक नही खोला। इस बीच छोटी-सी नदी पडी और वहाँ कापारिन का घोडा गिरा तो कुल मिलकर भी उसे उठा न सके। दूसरे घोडे भी थकान से चूर-चूरकर हो गए। वे लडखडाने लगे, कदम बढाना मुश्किल हो गया और मुँह से झाग के सफेद थक्के जहाँ-तहाँ ही नजर आने लगे।

ग्रिगोरी ने घोडे से उतरते और फोमीन की निगाह बचाते हुए कहा—"तुम्हे तो फौजी टुकडी की कमान सम्हालने के बजाय भेडें चरानी चाहिए।" इस पर फोमीन कुछ नही बोला और नीचे उतरकर अपने घोड़े की ज़ीन खोलने लगा। लेकिन फिर उसने ज़ीन छोड दी, पौधो से भरे पास के टीले पर जा बैठा, और भय से भरी आँखो से चारो ओर नज़र दौड़ाते हुए बोला—"घोड़ो को यहीं छोड़ना पड़ेगा हमे।"

"फिर क्या होगा ?" चुमाकोव ने पूछा।

"फिर हम पैदल दोन के उस पार चलेंगे।"

"कहाँ चलेगे ?"

"रात भीगने तक जगल मे रुकेंगे और फिर नदी पार कर फिलहाल रुबेज़नी मे छिपेगे। मेरे कितने ही रिश्तेदार है वहाँ।"

"एक दूसरा शानदार तीर देखिए आपका।" कापारिन क्रोध से लाल होते हुए बोला—"तुम्हारा खयाल है कि वहाँ दुश्मन हमारी तलाश नही करेगा ? अरे अब तो वह वही खोजेगा हमे। तुम्हारे पास दिमाग है या और कुछ ?"

"अच्छा तो वहाँ नही चलेंगे तो और कहाँ चलेगे हम ?" फ़ोमीन ने उदास मन से पूछा।

ग्रिगोरी ने गोलियाँ और एक टुकड़ा रोटी अपने थैले से निकाली

और बोला—"यानी, बातचीत कुछ देर तक करने का इरादा है क्या ? आओ चलें, घोडे बाँधे, उनकी ज़ीनें खोलें और आगे बढें, वरना लाल फौजी यही धर लेंगे हमे।"

चुमाकोव ने हाथ का चाबुक ज़मीन पर फेका, पैर से रौदकर कीचड मे दबाया और काँपती आवाज़ मे कहने लगा—"तो अब पैदल चलना पडेगा। हमारे सभी साथी नेस्तनाबूद हो गए है। हे माँ-मेरी, दुश्मन ने किस तरह झकझोरा हमे! मुझे उम्मीद नही थी कि मैं आज ज़िन्दा बचकर निकल आऊँगा···मौत अपने सिर पर मँडराती देखी मैने।"

इसके बाद उन्होने चुपचाप ज़ीनें खोली, चारो घोडे आल्डार की झाडी से बाँधे और ज़ीनें अपनी बाँहो मे भरकर, भेड़ियो की तरह एक-दूसरे के पीछे-पीछे एक-एक की कतार मे बढ चले। रास्ते मे जहाँ घनी झाड़ियाँ मिली, वहाँ उन्हे ओट मिल गई।

. १४ :

बसन्त मे जब दोन मे बाढ आती है और पानी सभी निचली चरागाहो मे भर जाता है, तब भी रुबेज़नी गाँव के सामने के बाएँ किनारे का एक ऊँचा हिस्सा सूखा और पानी से बिल्कुल अछूता रहता है। फिर यह कि नए सरपतो, शाहबलूतो और निलछरी ओसिर-बेत की झाडियो से भरा यह द्वीप नदी के किनारे की पहाडियो से दूर से ही नज़र आता है।

गरमी मे जगली हॉप-लतरें पेडों के सिरो तक चढ जाती है, नीचे की ज़मीन अभेद्य काँटेदार काली बेरियो की झाडियो से भर जाती है, पिलछरी नीली लबलाबी लताएँ झाड़ियो को हर ओर से घेर लेती हैं और खुली जगहो मे उपजाऊ मिट्टी के रस से प्राण खीचकर, घास आदमी के कद से भी ज़्यादा ऊँची हो जाती है।

इन दिनो दोपहर मे भी जगल मे उजियाले के साथ अधियारा घुला-सा रहता है। हर तरफ शान्ति और तरी रहती है। ऐसे मे मौन का तार सिर्फ़ काले और पीले पखो वाली ओरिओल चिड़ियाँ तोड़ती हैं

और कोयलें किसी की जिन्दगी के अनजिए वर्षों की गिनती करने मे एक-दूसरे से होड करते थकती नही। लेकिन जाडे मे जगल बिल्कुल लुटा लुटा-सा वीरान होता है। उसके पैरो मे मौन के-से सन्नाटे की बेडियाँ पडी रहती है। आसमान की बदरगी के बीच पेडो के सिरो के काँटे और काले लगते है। झुरमुटो के बीच सिर्फ भेडियो के बच्चे पनाह पाते है। वे दिन-भर बर्फ से लदे, सूखे घास-पात पर पडे रहते है।

सो ग्रिगोरी मेलेखोव और रक्तपात से बचकर निकल आने वाले दस्ते के बाकी लोगो ने यही अपना पडाव डाला और भरपूर आराम की जिन्दगी बिताई। जहाँ तक खाने का सवाल है, फोमीन का चचेरा भाई जो कुछ अच्छा-बुरा सडा-गला ले आया, उन्होने खाया। अक्सर उनका पेट नही भरा। पर घोड़ो की काठियो को सिरहाना बनाकर वे जब भी लेटे, जी-भर सोए। रात को उन्होने पारी-पारी से पहरा दिया और आग भूलकर भी न जलाई कि कोई उनका पता न पा ले।

द्वीप के चारो ओर का बाढ का पानी दक्षिण की ओर उमडता रहा। जहाँ पुराने देवदार के पेड़ राह के आडे आए वहाँ वह धमकी देते हुए द्रहराया। लेकिन बाद मे सगीत-भरे स्वर मे मर्मर ध्वनि करता आगे बढा तो बीच की झाडियो के सिरे हवा मे लहर-लहर उठे।

ग्रिगोरी जल्दी ही आसपास के पानी के निरन्तर कलकल का आदी हो गया। वह ढलवाँ कटे हुए किनारे के पास घटो पडा रहता और पानी के पसारे और धूप से नहाई, बकाइनी धुन्ध मे लिपटी नदी के किनारे की 'पहाडियो को घूरता रहता। उसे लगता कि वहाँ…धुन्ध के पार, उसका अपना गाँव है…अकसीनिया है…और उसके अपने बच्चे है… तो, उसके उदासी से भरे विचार पर लगाकर उडते और वही पहुँच जाते। उसे अपने स्वप्न याद आते तो क्षण-भर को उसके मन मे हसरत धधकने-सी लगती और वह एक बेजान नफरत से उबलने-सा लगता। लेकिन वह इन भावनाओ को दबाता और दोन के किनारे की पहाडियो की तरफ से नज़र बचाने की कोशिश करता। उसे दुख-भरी यादों को बेलगाम छोडना बेमतलब समझ पडता। जिन्दगी यो भी काफी दर्दीली महसूस होती। साफ है कि लडाई मे खाए जख्मो, लड़ाई

की मुसीबतो और टाइफस के अपना काम करने के कारण उसके दिल की धडकन अपना रग दिखलाती रहती और इसका भान उसे बराबर होता रहता। बाईं छाती के नीचे सीने मे कभी-कभी ऐसी पीडा उठती कि उसे छेद-छेद देती। तकलीफ इस तरह असह्य हो उठती कि उसके होठ खुश्क हो जाते और कराह भी गले मे आकर फँस-फँस जाती। लेकिन इस व्यथा से मुक्ति पाने का वह एक टकसाली रास्ता खोज निकालता, यानी वह गीली ज़मीन से अपना बायाँ सीना सटाकर लेट रहता या अपनी कमीज ठडे पानी से भिगो लेता, और इसके बाद दर्द धीरे-धीरे, मगर बेमन से उसके तन से रुख्सत ले लेता।······

ऐसे मे होते-होते वातावरण मे ठहराव आ गया और मौसम सुहाना हो गया। अब सिर्फ कभी-कभी ही हवा ऊपर के छोटे-छोटे, उजले बादलो को छेडती और वे आसमान के नीलम पर इस पार से उस पार तक उतराते चले जाते। उनके साए बाढ के पानी मे तैरते हसो की तरह सरकते और दूर के किनारे को छूते ही उडनछू हो जाते।······

ग्रिगोरी को किनारे पर भयकर रूप से उमडती तेज़ धार को एकटक देखना, पानी के मर्मर-सगीत को तन्मय होकर सुनना भला लगता। किसी और चीज़ का खयाल करना, मन को तकलीफ देने वाली किसी भी चीज की बात को दिमाग मे आने तक देना उसे खलता। वह सनकी की तरह, अनन्त रूप से बदलते हुए धार के घेरे को घटो घूरता रहता। लहरियाँ रह-रहकर अपने रूप बदलती। जहाँ सरपत की टहनियों, रूखी-सूखी पत्तियो और जडो सहित उखडी घास के गुच्छो को अपनी सतह पर सहेजे अभी-अभी स्थिर गति से बहती धारा दीख पडती, वही दूसरे ही क्षण एक अजूबा कुप्पी-सी बन जाती। यह कुप्पी अपनी पहुँच की हर चीज़ को मरभुखे की तरह गटक लेती और फिर जरा देर बाद गायब हो जाती। फिर वही पानी उबलने लगता और बेतरतीब भँवरें चक्कर काटने लगती। ये भँवरें कभी सेवार की काली-पड़ी जड, कभी शाहबलूत की कोई चौडी पत्ती और कभी, न जाने कहाँ से वह आए, पुआल के ढेर-के-ढेर तिनके ऊपर उछाल देती।

शाम को सूरज डूबने के बाद, पश्चिम का आसमान चेरी की

लाली से नहाया रहता कि किसी लम्बे-चौडे देवदार के पीछे से चाँद उगता। चाँदनी दोन पर चाँदी की शीतल लपटें बरसा देती। जहाँ हवा बढ-बढकर लहरियो से छेडा करती, वहाँ ये लपटे टूटकर परछाइयो मे ढल जाती या काजल के तालो मे बदल जाती। रात के समय पूरे द्वीप मे, पानी के कल-कल के गले मे बाँहे डालकर उत्तर की ओर उडते कलहसो के दलो के स्वर गूँजते। इन चिडियो को रोकने-टोकनेवाला कोई न होता, और वे अक्सर ही द्वीप के पूर्वी सिरे पर बसेरा ले लेती। पीछे की तरफ, पानी-भरे जगल के बीच नर मुर्गाबी चुनौती देता, बत्तखे की-की करती और ध्रुव-प्रदेश के हस और आम कलहस धीरे-धीरे कीकते और आपस में सवाल-जवाब करते···

ऐसे-ही-ऐसे एक दिन ग्रिगोरी दबे-पाँवो किनारे गया तो उसने द्वीप के पास ही हसो का एक बडा झुड देखा। सूर्य अभी अस्ताचल मे ही रहा, पर जगल के पार उषा की चटख लाली छिटकती मिली। यह लाली लहरो मे छनी तो पानी मे गुलाब घुले, और सूर्योदय की प्रतीक्षा मे पूर्व की ओर मुँह मोडकर बैठी बड़ी-बडी शानदार चिडियाँ गुलाबी मालूम हुईं। पर तट पर सरसराहट होते ही वे ज़ोर-ज़ोर से चीखकर उड दी, और जगल से ऊपर उठी तो उनके बर्फ के-से उजले पखो की अद्भुत चमक से ग्रिगोरी की आँखों मे चकाचौध पैदा हो गई।

······इस बीच फ़ोमीन और उसके हर साथी ने अपना वक्त, अपने ढग से काटा। मेहनती स्तेरलयादनिकोव अपने लँगड़े पैर को आराम देते हुए सुबह से रात तक काम मे लगा रहता। वह या तो कपडो और जूतो की मरम्मत करता रहता या होशियारी से अपने हथियारो की सफाई करता रहता। रात के समय गीली जमीन पर सोने से कापारिन के स्वास्थ्य मे कोई सुधार नज़र न आता और वह सिर तक भेड की खाल खींचे दिनो-दिन धूप मे पडा खो-खो करता रहता। फोमीन और चुमाकोव, मामूली कागज को काटकर बनाए गए ताश के पत्ते हर वक्त पीटते रहते। ग्रिगोरी द्वीप में इधर-उधर चहलकदमी करता और घटो पानी के किनारे बैठा रहता। वे अब

आपस मे कम-ही-कम बातें करते जैसे कि कहने लायक सभी बातें जाने कब की कर और कह चुके हो। एक-दूसरे से मिलते वे खाने के वक्त या शाम को फोमीन के चचेरे भाई की राह देखते वक्त। उन पर हर वक्त ऊब सवार रहती। यानी, यह समझिए कि इस द्वीप के पूरे प्रवास-काल मे ग्रिगोरी ने सिर्फ एक बार चुमाकोव और स्तेरलयादनिकोव को देखा कि न जाने कैसे उनके मन से बोझ उतरा और वे दोनो गरजते, हँसी-मज़ाक करते और रह-रहकर एक जगह पैर पटकते हुए आपस मे कुश्ती लडने लगे। उनके पैर घट्टो-घट्टो तक सफेद बालू मे धँस गए। लँगडा स्तेरलयादनिकोव जहाँ ज्यादा ताकतवर था, वही चुमाकोव ज्यादा फुर्तीला। वे पैरो पर निगाह जमाए, कधे आगे की ओर किए, एक-दूसरे की कमर कसे गुँथे रहे कि उनके चेहरे जोर पडने से सफेद पड गए और साँस तेज हो गई। ग्रिगोरी को यह तमाशा देखकर बडा ही मजा आया। इस बीच ठीक मौका पाते ही चुमाकोव अपने विरोधी को अपने साथ घसीटते हुए, सहसा ही ज़मीन पर पीठ के बल लेट गया और ऐसे पैर चलाए कि स्तेरलयादनिकोव दूर जा गिरा।

फिर एक क्षण बाद ही ध्रुव-प्रदेश की बिल्ली की तरह फुर्ती से वह झपटकर उसके सीने पर सवार हो गया। स्तेरलयादनिकोव नीचे हाँफते और हँसते हुए बोला—"लेकिन, तुम धोखेबाज़ी कर रहे हो··· हमने एक-दूसरे को लोका देने की बात तय नही की थी।"

"तुम लोग तो जवान मुर्गो की तरह एक-दूसरे से गुँथे हुए हो· · चलो, फ़िलहाल मामला यही छोडो·· हाँ, अगर सचमुच लड ही रहे हो तो बात और है।" फोमीन बोला।

लेकिन, उनका सचमुच लडने का इरादा तो था नही, इसलिए एक-दूसरे को बाँहो मे जकडे वे बालू पर आ बैठे और चुमाकोव ने प्यारी, भाती आवाज मे गाना छेड दिया। स्तेरलयादनिकोव ने अपना पतला स्वर मिलाया और फिर वे, आशा के विपरीत लय-तान मे बेधकर गाते रहे।

पर सहसा ही स्तेरलयादनिकोव से रहा न गया और अपनी उँगलियाँ चटकाते और लँगड़े पैर से बालू उड़ाते हुए वह नाचने लगा।

चुमाकोव ने गाते-ही-गाते अपनी तलवार उठाई, बालू मे एक छिछला गढा खोदा और बोला—"अबे ओ लँगडे, ठहर जरा···तेरा एक पैर छोटा पडता है और हमवार जमीन पर तुझसे कायदे से नाचते नही बनता···तो, या तो तू ढाल पर नाच या अपना लम्बा पैर इस गढे मे साध ले·· फिर देख कैसा जमता है तेरा नाच ··बस···शुरू कर।"

स्तेरलयादनिकोव ने भौहों का पसीना पोछा, और अपना ठीकठाक पैर गढे मे जमा लिया। बोला—"तुम ठीक कहते हो···अब सचमुच आसानी होती है।"

चुमाकोव ने हँसी से हाँफते हुए तालियाँ बजाई और तेजी से गाने लगा। स्तेरलयादनिकोव का चेहरा सभी नर्तको की तरह गम्भीर हो उठा और वह पूरी गति से नाचने लगा। यही नहीं, उसने इस नाच के सिलसिले मे, कूल्हो के बल जमीन पर बैठने और पैर चलाने की भी कोशिश की।······

दिन एक तरह से बीतते गए। हर रोज अँधेरा होते ही वे सब-के-सब फोमीन के चचेरे भाई का बेताबी से इन्तज़ार करते। वे नदी के किनारे जमा होते, दबे स्वरो मे बातें करते और अपने बरानकोटों के सिरो के नीचे जलती हुई सिगरेटें छिपाते हुए धुआँ उडाते।···

आखिरकार उन्होने एक सप्ताह और ठहरने, रात को नदी पार कर दाहिने तट पर पहुँचने, घोड़े हथियाने और फिर दक्षिण की ओर बढने का निश्चय किया। इस बीच अफवाह उनके कानो मे पड गई थी कि मास्लाक का ब्रिगेड अब भी प्रदेश के दक्षिणी इलाके मे कही घूम-फिर रहा है।···

सो फोमीन ने घोडे तलाशने और आसपास की हर घटना की सूचना देने का काम अपने रिश्तेदारो को सौंपा। पता चला कि फोमीन की खोज मे बायाँ किनारा मँझाया जा रहा है, और रुबेजनी आकर और उसके घर की तलाशी लेकर लाल फौजी अपने-अपने घोड़ो पर सवार होकर वहाँ से चलते बने है।···

होते-होते चुमाकोव एक दिन नाश्ते के वक्त बोला—"यहाँ से जल्दी ही निकल चलना चाहिए। आखिर यहाँ जमे रहने से फ़ायदा भी

क्या होगा ! तो, क्यो न कल ही यह जगह छोड दे हम लोग ?"

फोमीन बोला—"पहले यह तो मालूम हो जाए कि घोडे मिलेगे या नही ! ऐसी हडबडी भी क्या है ? खाना-वाना ज़रा कायदे का मिले तो मैं तो जाडे तक यहाँ से टस-से-मस होने का नाम न लूँ। ज़रा देखो कि यह जगह कितनी खूबसूरत है। थोडा आराम कर लें, फिर चलेगे यहाँ से। दुश्मन हमारे लिए चाहे जितना जाल डाले मगर हम आसानी से उनके हाथ आने से रहे ! मैं जानता हूँ कि मेरी बेअक्ली रही कि हम इस तरह तार-तार होकर रह गए। बात बड़े दर्द की है, लेकिन किस्सा यही खत्म नही होता। कोई बात नही। घोडे मुहय्या होते ही हम आसपास के गाँवो मे चलेगे और एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर आधी स्क्वैड्रन जमा हो जाएगी। हो सकता है कि पूरी कम्पनी ही बन जाए। मेरा खयाल है कि हमे अपने काम के आदमी मिल जाएँगे। न मिल जाएँ तब कहना।"

"बकवास है। बेकार की अकड़ और शेखी की बातें हैं।" कापारिन खीझकर बोला—"कज्ज़ाको ने हमे नीचा दिखाया है। वे हमारे कदमो पर नही चले और आगे भी नही चलेंगे। हमे न तो सच्चाई से आँखे बचानी चाहिए और न बेसिर-पैर की उम्मीदो से अपने को धोखे मे डालना चाहिए।"

"क्यो···क्यो नही चलेगे कज्ज़ाक हमारे कदमो पर ?"

"क्योकि पहले नही चले; और पहले नही चले तो अब भी नही चलेंगे।"

"देखा जाएगा।" फोमीन ने चुनौती-भरे स्वर मे जवाब दिया—"मैं तो हथियार डालने से रहा।"

कापारिन व्यर्थ की बातो से जैसे थकते हुए बोला—"इन बातो मे रखा कुछ नही है।"

"शैतान की खोपडी !" फोमीन क्रोध से उबलकर चीखा—"तू यहाँ लोगो के हाथ-पैर क्यो फुला रहा है ? ये डरके···ये आहे-कराहे··· तू तो मुर्दा जडो से भी गया-बीता है। अगर ऐसा है तो सवाल यह है कि आखिर हमने सिर उठाया ही क्यो था ? अगर तेरी नसें इस तरह

कमजोर हैं तो तू इस बगावत मे शामिल ही क्यो हुआ था ? तू ही तो है जिसने मुझे बगावत के लिए भडकाया, और अब तू हाथ झाडकर निकल जाने के मसूबे बाँध रहा है! और कुछ कहना है तुझे ?"

"मुझे तुझसे कुछ नही कहना…भाड मे जा तू · बेवकूफ कही का।" कापारिन ने बौखलाते हुए कहा। वह सिर से पैर तक काँपने लगा तो उसने भेड की खाल अच्छी तरह ओढ ली और कालर उलट लिया।

"ये मखमल के गद्दो पर पले लोग बडे नाजुक होते हैं। कुछ भी हुआ नही कि हिम्मत हवा और हाथ-पांव ढीले।" फोमीन आह भरते हुए बोला।

फिर वे बैठे कुछ देर तक पानी के एक तरह से हहराने की आवाज़ सुनते रहे। इसी समय एक कीकती बत्तख का पीछा करते मुर्गाबियो के दो नर सिर के ऊपर से गुजरे। मैनाओ का एक दल अपने बोलो से आसमान सिर पर उठाता, घाटी मे उतरा, पर इन्सानो को देखते ही फिर उड दिया। ऐसा लगा जैसे कि काले, रेशमी फीते हवा मे लहराते चले जा रहे हो।

ज़रा देर बाद कापारिन वापस आया, और फोमीन की ओर देखकर तेज़ी से पलकें झपकाते हुए बोला—"मैं आज रात को गाँव जाना चाहता हूँ।"

"किसलिए ?"

"अजीब सवाल है। तुम्हारी आँखें नहीं हैं ? तुम्हे नजर नही आता कि मुझे बुरी तरह सर्दी लग गई है और खडे होने मे पैर कँपकँपाते है ?"

"ठीक, लेकिन इससे हुआ क्या ? तुम्हारा खयाल है कि गाँव जाने से तुम्हारी सर्दी दूर हो जाएगी ?" फोमीन ने बहुत ही शाति से पूछा।

"कुछ रातें किसी गरम जगह बितानी चाहिए मुझे।"

"तुम गाँव-आँव कही नही जाओगे।" फोमीन ने दृढता से कहा।

"यानी, यही फना हो जाऊँगा मैं ?"

"हो जाओ फना!"

"लेकिन, आखिर मैं जा क्यों नही सकता ? आजकल सर्दी मे सोना

मौत होगा मेरे लिए।"

"और गाँव मे जाने पर तुम्हे कही दुश्मन ने धर पकड़ा तब ? यह बात आई है तुम्हारे दिमाग मे ? तब तो···तब तो हम सब खत्म हो जाएँगे। तुम्हारा खयाल है कि तुम्हे जानता नही मैं ? पहली जिरह में ही हमे ले डूबोगे तुम ! और यह गद्दारी तो तुम रास्ते में ही करोगे··· पहले···व्येशेन्स्काया तो बाद मे पहुँचोगे।"

चुमाकोव ने हँसी का एक ठहाका लगाया और बात का पूरा समर्थन करते हुए सिर हिलाया। लेकिन, कापारिन ज़िद पकड गया। बोला, "नहीं···मैं तो जाऊँगा ही···तुम्हारी इन शानदार कठबैठियो से मेरा इरादा बदलने का नही।"

"लेकिन, मैंने तुमसे कहा न कि फिलहाल, आराम से बैठो।"

"पर, याकोव-येफिमोविच, तुम्हारी समझ मे यह नही आता कि जानवरो की-सी यह ज़िन्दगी मुझसे अब आगे नहीं चलेगी। मुझे प्ल्युरिसी तो है ही, शायद निमोनिया भी है।"

"यह कोई बात नही···थोडा धूप मे लेटोगे तो ठीक हो जाओगे।"

इस पर कापारिन ने जमी हुई आवाज़ मे कहा—"जो भी हो, मैं आज जाऊँगा···मुझे रोकने का तुम्हे कोई हक नही। हर हालत मे जाऊँगा मैं।"

फोमीन ने उसे घूरकर देखा, सदेह से भरकर आँखे सिकोडी और चुमाकोव की तरफ देखकर आँखे मारते हुए उठ खडा हुआ—"कापारिन, लगता है तुम सचमुच बीमार हो गए हो···तुम्हे बुखार काफी तेज़ है···तुम्हारा माथा देखूँ जरा।" और अपना हाथ फैलाते हुए, वह कापारिन की तरफ बढा।

कापारिन ने फोमीन के चेहरे के भाव पढे, झटके से पीछे हटा और चीखकर बोला—"हटो···दूर हटो।"

"चीखो मत···इस तरह चिल्ला क्यो रहे हो ? मैं जानना चाहता हूँ कि आखिर मामला क्या है ?" फोमीन ने कापारिन के पास पहुँचकर उसका कॉलर थाम लिया—"सूअर कही के···दुश्मन को सौंप देना चाहते हो अपने को ?" और, उसने ज़ोर लगाकर उसे ज़मीन पर दे

मारने की कोशिश की ।

ग्रिगोरी बीच-बचाव बडी मुश्किल से कर पाया । उसे अपनी पूरी ताकत लगा देनी पडी ।

खाने के बाद गगारिन झाडी पर कोई धुला कपडा फैला रहा था कि कापारिन उसके पास पहुँचा और बोला—"मै तुमसे अकेले मे कुछ बाते करना चाहता हूँ···आओ, जरा बैठो इधर···" और वे एक गिरे हुए देवदार के सडे-गले तने पर बैठ गए ।

कापारिन खाँसते हुए बोला—"क्या खयाल है तुम्हारा उस गधे के बरताव के बारे में ? तुमने बीच-बचाव कर दिया । मैं तुम्हारा बडा एहसानमद हूँ । तुमने तो वही किया जो एक शानदार अफसर को करना चाहिए । लेकिन, अजब बेहूदगी है···मुझसे अब और नही चलेगा । हम जानवरो की-सी जिन्दगी बिताते है यहाँ · जाने कब से गरम खाना हमने आँखो से नही देखा ! उस पर इस तरह हर दिन गीली ज़मीन पर सोना···मुझे सर्दी लग गई है और पसलियो मे बुरी तरह दर्द हो रहा है । आग के पास बैठना, गरम कमरे मे सोना और अन्दर के कपडे बदलना मेरे लिए एकदम जरूरी हो गया है । साफ कमीजो और चादरो के तो मुझे सपने आते है । नही, इस तरह मुझसे नहीं चल सकता !"

ग्रिगोरी ने मुस्कराकर पूछा—"तुमने सोचा था कि लडाई के मैदान मे हर तरह की ऐश का सरजाम रहेगा और तुम आराम से लडोगे ?"

"लेकिन, आखिर यह लडाई भी क्या है ?" कापारिन जोश मे आते हुए बोला—"यह लडाई नही है ··यह तो ऐसा है कि चैन की साँस न लो और इधर-उधर मारे-मारे फिरो, सोवियत मजदूरो को एक-एक कर तलवार के घाट उतारो और उड दो । हाँ, यह सचमुच लडाई होती अगर लोग हमारी मदद करते, अगर बगावत छिड जाती···मगर, इसे लडाई कौन कहेगा···यह कोई और कही की लडाई नही है ।"

"इसके सिवाय कुछ और हम कर भी तो नही सकते । तुम क्या यह चाहते हो कि हम हथियार डाल दें ?"

"तुम्हारी बात अपनी जगह ठीक है···मगर हम भी आखिर क्या करें ?"

ग्रिगोरी ने कधे झटके और द्वीप मे इधर-उधर लेटे रहने पर अकसर ध्यान मे आनेवाली बात को शब्दो मे बाँधते हुए बोला—"आजादी आधी ही सही, शानदार कैदखाने से तो बेहतर होती है। तुम जानते हो, अपने यहाँ कहावत है कि क़ैदखाने की मजबूत सलाखो से सिर्फ शैतान खुश होता है।"

कापारिन एक टहनी से बालू पर तरह-तरह के नमूने बनाने लगा, और कुछ देर चुप रहने के बाद बोला—"हथियार डाल देना ऐसा कोई जरूरी नही है···जरूरी है बोलशेविको से लोहा लेने के नए तरीके निकालना···दम घोट देने वाली इस सडी-गली फिजा से तो हमे किसी तरह बाहर निकलना ही है·· तुम तो पढे-लिखे आदमी हो···"

"ऐसी राय तुमने किस तरह बना ली ?" ग्रिगोरी हँसा—"मैं तो यह बात तक सही ढग से नही कह सकता।"

"मगर फौजी अफसर हो तुम।"

"सिर्फ मौके की बात है।"

"नही, मज़ाक की बात अलग है, पर तुम अफसर हो, अफसरो के बीच तुम्हारी अपनी जगह है, तुमने असली इन्सान देखे है और तुम फोमीन की तरह छिछोरे नही हो! तुम्हे तो यह बात समझनी चाहिए कि हमारा यहाँ रहना बिल्कुल बेमानी है, और खुदकशी करने के बराबर है। फोमीन की वजह से ही हम जगल मे तार-तार हुए और अगर अब भी हम अपनी किस्मत उसकी किस्मत के साथ नत्थी रखेंगे तो आगे भी बार-बार यही नौबत होगी। वह लफगा है, और इस मामले मे बिल्कुल काठ का उल्लू है! हम उसके साथ रहेगे तो कही के न होगे।"

ग्रिगोरी ने पूछा—"तो तुम्हारा सुझाव है कि हम हथियार डाल दे, मगर फोमीन को छोड़ दे? ठीक···मगर जायेंगे कहाँ हम? मास्लाक के पास ?"

"नही, वह एक दूसरा जाँबाज़ है···ज़रा और बड़ा···मैं तो इस

पूरे मामले मे कुछ और ही ढग से सोचता हूँ···यानी, मास्लाक के पास तो हमे जाना किसी सूरत मे नही।"

"तो, फिर कहाँ जाना है ?"

"व्येशेन्स्काया चला जाए।"

ग्रिगोरी ने खीझ से अपने कधे झटके—"मै तो इसे यो समझता हूँ जैसे कोई खोटे सोने के पीछे खरा सोना लुटा दे···मुझे यह पसद नही।"

कापारिन ने चमकती आँखो से उसे तेज़ी से देखा—"तुम बात समझे नही, मेलेखोव···अच्छा, यह बतलाओ कि मैं तुम्हारा यकीन कर सकता हूँ ?"

"पूरी तरह।"

"अफसर हो···अफसरी-ईमान की कसम ?"

"कज़्ज़ाक हूँ···कज़्ज़ाक-खून की कसम।"

कापारिन ने फोमीन और चुमाकोव की तरफ देखा और उनके दूर होने पर भी, बात न सुन पाने की स्थिति मे होने पर भी आवाज़ नीची करते हुए बोला—"मैं जानता हूँ कि फोमीन और दूसरे लोगो से तुम्हारे ताल्लुक क्या और कैसे हैं। उनकी निगाह मे तुम उतने ही बाहरी हो, जितना मैं। मैं नही जानना चाहता कि सोवियत हुकूमत के खिलाफ तुमने हथियार क्यो उठाया···अगर मैं ठीक समझता हूँ, तो तुमने हथियार उठाया है जो कुछ गुजर चुका है उसकी वजह से और गिरफ्तारी के डर की वजह से···है न ?"

"तुमने तो कहा न कि वजह जानना तुम नही चाहते।"

"ठीक···ठीक···यह तो मैंने यों ही कहा। अब जरा अपने बारे मे तुम्हे कुछ बतला दूँ मैं···पहले मैं फौजी अफ़सर था और समाजवादी-क्रातिकारी पार्टी मे शामिल था। मगर, बाद मे मेरे ख़याल बिल्कुल बदल गए···मुझे लगने लगा कि रूस को अगर कोई बचा सकता है तो बादशाहत बचा सकती है···और सिर्फ बादशाहत बचा सकती है··· खुद किस्मत ने हमारे अपने मुल्क के माथे पर यह लकीर खीची है··· और वही आगे-आगे यह रास्ता दिखला रही है।··· सोवियत सरकार

का अपना निशान है—हथौडा और हँसिया···'मोलोत' और 'सेर्प'··· ठीक है न ?" कापारिन ने हाथ की टहनी से बालू पर हथौड़ा और हँसिया बनाया और लौ देती हुई आँखें गगारिन के चेहरे पर जमाईं—"अब जरा इन दोनो लफ्जो को मिलाकर उलटी तरफ से पढो···समझ में आया कुछ ? लफ्ज बनेगा 'प्रेसतोलोम', यानी सिर्फ शाही तख्त की मदद से ही क्राति और बोलशेविक हुकूमत का खात्मा किया जा सकता है। जानते हो, यह खयाल मेरे दिमाग मे पहले-पहले आया तो मैं एक अनजाने डर से एकदम भर उठा और सिर से पैर तक कॉप गया, क्योकि इस चीज को इस तरह देखो तो लगेगा कि खुद ऊपरवाले की उँगली हमारी मुसीबतों की तरफ है और वह खुद चाहता है कि इनके दिन लदें।"

कापारिन उत्तेजना से हाँफने लगा और चुप हो गया। उसने ग्रिगोरी की तरफ निगाहे जमाकर देखा तो आँखो के पीछे से जैसे पागलपन का सकेत मिला। लेकिन, कापारिन की बात से ग्रिगोरी न डर से भरा और न सिर से पैर तक काँपा। वह चीजो को और गम्भीर और यथार्थवादी दृष्टि से समझने का आदी था। इसलिए जवाब मे बोला—"कही किसी की कोई उँगली नही है···जर्मनी की लडाई के जमाने में मोर्चे पर थे तुम ?"

कापारिन इस सवाल से हैरान हो गया और एकदम कोई उत्तर न दे सका। फिर, जरा सम्हलकर बोला—"लेकिन, यह सवाल इस वक्त कहाँ से आया तुम्हारे दिमाग मे ? नही, मै तो सचमुच मोर्चे पर नही था।"

"तो, लड़ाई के दौरान कहाँ थे तुम ? पीछे की तरफ ?"

"हाँ।"

"बराबर ?"

"हाँ, मेरा मतलब···बराबर तो नही रहा, मगर फिर भी रहा··· लेकिन, यह सवाल पूछा क्यो तुमने ?"

"छोडो···बात यह है कि १९१४ से आज तक मैं बराबर मोर्चे पर रहा हूँ···सिर्फ कभी-कभी ही, थोड़े-थोडे वक्त के लिए मोर्चे से हटा

हूँ···सो, जहाँ तक उँगली की तुम्हारी बात का सवाल है, वह ऊपरवाले की उँगली कैसे हो सकती है, जब आसमान की नीली छतरी के पार, ऊपरवाला कोई है ही नही···इस बकवास से मेरा यकीन उठे तो अब एक ज़माना हुआ। १९१५ मे पहले-पहले सचमुच की लडाई देखी मैंने। तब से लेकर आज तक मेरा खयाल रहा है कि 'ऊपरवाला' या नीली छतरीवाला जैसा कही कुछ नही है···बिल्कुल नही है। अगर होता तो इन्सानों को वह सब-कुछ करने देता जो वे आज कर रहे है···हम आगे बढ़कर लडने वालो का तो उससे पीछा जाने कब का छूट चुका है···अब वह सिर्फ रह गया है औरतो और बूढो के लिए, और वे जायें और उसके खयाल में डूबकर हलके हो···तसल्ली हासिल करे··· ऊपरवाले की कही कोई उँगली नही है, और बादशाहत अब बिल्कुल नही चल सकती। बादशाहत को आम लोगो ने हमेशा-हमेशा के लिए मिटा दिया है, और यह खिलवाड जो तुम कर रहे हो, यह लफ्जो को इस तरह उलट-पुलटकर पढने की कोशिश जो तुम कर रहे हो, यह महज बच्चो का तमाशा है, और कुछ नही। बुरा न मानना। फिर मेरी समझ मे यह नही आता कि यह सारा-कुछ मुझे क्यो बतला रहे हो तुम ? बात जरा और खुलकर और साफ-साफ कहो। मैंने कैडेटों की अकादमी मे तालीम कभी नही पाई, और पढा-लिखा भी ज़रा कम ही हूँ, हालाँकि उसके बिना भी अफसर रहा हूँ। अगर मेरी तालीम और कायदे की होती तो मैं यहाँ तुम्हारे साथ बाढ की वजह से कट गए भेडिए की तरह, इस जजीरे पर बैठा न होता।'' गगारिन की आवाज़ से दर्द छलका और भाव चेहरे पर झलक आया।

"इससे कोई फर्क नही पड़ता।" कापारिन जल्दी-जल्दी बोला— ''कोई फर्क नही पडता कि तुम ऊपर वाले में यकीन करते हो या नही··· यह तो अपने यकीदे और अपनी तबीयत का सवाल है। साथ ही इससे भी कोई फर्क नही पडता कि तुम बादशाहन चाहते हो, या विधान सभा चाहते हो या अपनी हुकूमत के लिए लडने वाले एक कज्ज़ाक हो। इसमे काम की बात सिर्फ इतनी है कि हम एक हैं क्योंकि सोवियत हुकूमत के मामले मे हमारा रवैया एक है। मानते हो यह बात ?''

"आगे चलो।"

"यानी, हमने कज्जाको की आम बगावत से उम्मीद लगाई··· है न ?" मगर, वह उम्मीद काम न आई, और अब कोई दूसरा रास्ता निकालना है। हम बोलशेविको से अब भी लड सकते है, पर यह तो जरूरी नही कि हम फोमीन को ही अपना सरगना मानकर लडे। आज तो सबसे बडी बात है अपनी जान बचाना···और इसी के लिए मै तुमसे समझौता करना चाहता हूँ।"

"कैसा समझौता ? किसके खिलाफ समझौता ?"

"फोमीन के खिलाफ।"

"मैं तुम्हारी बात नही समझा।"

"बात बहुत आसान है। मै तुम्हे दावत देता हूँ कि आओ और मेरा साथ दो।" कापारिन एकदम उत्तेजित हो उठा और हाँफते हुए आगे बोला—"तुम और मैं मिलकर यानी हम दोनों इन तीनो को मार डालें और व्येशेन्स्काया चले चलें···क्या खयाल है ? इस तरह हमारी बचत हो जाएगी और सोवियत सरकार की इस खिदमत से, इस सजा से बच निकलेंगे, जीते रहेगे। समझ मे आई बात ? हम जिन्दा रह सकेंगे। और यह कहने की जरूरत नही कि मौका मिलते ही फिर बोलशेविको के खिलाफ हथियार उठा सकेंगे। मगर यह तब होगा कि जब कायदे से, किसी बडे पैमाने पर बात बनेगी। बोलो, राजी हो तुम ? इतना याद रखो कि आज की इस बीती हालत से छुटकारा पाने का सिर्फ एक यही रास्ता है और ठीक रास्ता है।"

"लेकिन यह काम होगा कैसे ?" ग्रिगोरी ने पूछा और वह अन्दर-ही-अन्दर नफरत से काँपने लगा। परन्तु उसने पूरी शक्ति से अपनी भावना पर पर्दा डालने की कोशिश की।

"मैंने सब-कुछ सोच लिया है। यह काम हम रात के वक्त, ठडे लोहे की मदद से करेंगे। कज्जाक खाना लेकर अगले दिन रात को आएगा, लेकिन तब तक हम नदी के उस पार तक पहुँच चुकेंगे, और बस। बहुत ही आसान है सब-कुछ···अक्ल और चालाकी का कुछ काम ही नही इसमे।"

ग्रिगोरी ने मुस्कराते हुए, बनावटी स्नेह के साथ कहा—"सुनने मे तो बात बहुत ही प्यारी लगती है। मगर कापारिन, आज सबेरे जब तुम सर्दी से बचकर भरकने के लिए गाँव जाना चाहते थे, तो तुम्हारा इरादा क्या इस बहाने व्येशेन्स्काया जाने का था? फोमीन ने बात भाँपी या नही?"

कापारिन ने मुस्कान के बदले मुस्कान होठो पर ही सजाते हुए ग्रिगोरी को गौर से देखा, पर उसके चेहरे से थोडी परेशानी झलकी—"सच पूछो तो हाँ, इरादा व्येशेन्स्काया जाने का ही था। बात यह है कि अपनी चमड़ी बचाने का सवाल सामने हो तो तरीके के चुनाव का खास खयाल कोई नही करता।"

"इसका मतलब यह है कि तुम हमारे साथ गद्दारी करते?"

कापारिन ने स्वीकार किया—"लेकिन अगर वे लोग तुम्हे यहाँ इस जजीरे मे पकड लेते तो मै अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता कि निजी तौर पर तुम्हे कोई तकलीफ न हो।"

"लेकिन खुद तुमने हम सबको क्यो नही मार डाला? रात के वक्त काम खासा आसान होता।"

"इसमे काफी खतरा होता···मैं एक से निबट रहा होता तो बाकी।···"

ग्रिगोरी ने अपनी पिस्तौल झटके से हाथ मे लेते हुए धीरे से कहा—"अपने हथियार यहाँ रख दो···रख दो, वरना यही-की-यही तुम्हे गोली से उड़ा दूँगा···मैं अभी खडा होकर आड़ करता हूँ ताकि फोमीन न देखे···तुम अपनी पिस्तौल मेरे पैर के पास फेंक दो··· इरादा क्या है? गोली चलाने की बात भी दिमाग मे न लाना, वरना देखते-देखते तुम्हें इस दुनिया के पार भेज दूँगा।"

कापारिन स्थिर बैठा रहा। मगर उसका चेहरा एकदम जर्द पड गया और वह अपने सफेद होठ हिलाते हुए बोला—"मारो नही मुझे।"

"मैं तुम्हे मारूँगा नही, लेकिन तुम्हारे हथियार जरूर छीन लूँगा तुमसे।"

"तुम धोखा करोगे मेरे साथ।"

कापारिन के रोएँदार गालो पर आँसू ढुलक चले। ग्रिगोरी के चेहरे पर नफरत और रहम के बल पडे और उसने जोर से कहा—"फेंको अपनी पिस्तौल ··फेको। मैं तुम्हारे साथ धोखा नहीं करूँगा, हालाँकि करना चाहिए···कैसे घिनौने कुत्ते के बच्चे साबित हुए हो तुम !"

कापारिन ने अपनी पिस्तौल गगारिन के पैरो के पास फेंक दी। गगारिन बोला—"और वह ब्राउनिंग ? उसे भी सौंपो फौरन। तुम्हारी ट्यूनिक की सीने वाली जेब मे है।"

कापारिन ने चमचमाता, निकल की पॉलिशवाला ब्राउनिंग भी निकालकर फेक दिया और चेहरा हाथ से ढँककर फफक-फफककर रोने लगा।

"बन्द कर यह ढरका बहाना···गलीज कही का !" ग्रिगोरी ने तेज़ी से कहा और उस पर एक भरपूर हाथ जमाने की अपनी इच्छा जैसे-तैसे रोकी।

"तुम धोखा करोगे मेरे साथ। मैं तो कही का भी नही रहा।"···

"मैंने कहा न कि मै धोखा नही दूँगा तुम्हे। मगर हमारे यहाँ से रवाना होते ही मुँह काला कर लेना और अपने बचाव का इन्तज़ाम आप करना। तुम्हारे जैसो की ज़रूरत हमे नही।"

कापारिन ने चेहरे से हाथ हटाया तो उसके आँसुओ से तर गाल, सूजी हुई आँखे और कँपकँपाता हुआ निचला जबडा देखने मे बहुत ही भयानक लगा। हकलाते हुए बोला—"तब क्यो···तब क्यो इस तरह निहत्था कर दिया तुमने मुझे ?"

ग्रिगोरी बेमन से बोला—"ताकि तुम कही पीछे से मुझ पर गोली न चला दो। तुम्हारे जैसे लोग···तुम्हारे जैसे पढे-लिखे लोग कुछ भी कर सकते है···तुमसे कुछ भी बाकी नही।···और मज़ा यह है कि उँगली, ज़ार और आसमान वाले को लेकर कैसे गाल बजा रहे थे तुम !·· तुम आदमी नही, जानवर हो और घिनौने जानवर हो।"

कापारिन बार-बार ज़मीन पर थूकता रहा। गगारिन ने फिर उसकी तरफ आँखें उठाकर भी नही देखा और धीमी चाल से, अपने

साथियो के पास लौट आया।

स्तेरलयादनिकोव मोम लगे तागे से, अपनी ज़ीन को एक जगह से सीता और सीटी बजाता मिला। फोमीन और चुमाकोव घोडे की पीठ पर बिछाए जाने वाले कपडे पर लेटे, हमेशा की तरह, ताश खेलते नजर आए।

फोमीन ने ग्रिगोरी पर एक तेज निगाह डाली और पूछा—"कापारिन क्या कह रहा था तुमसे ? क्या बाते हुई तुम लोगो मे ?"

"जिन्दगी का रोना रो रहा था, और जाने क्या-क्या बक-बक कर रहा था।"

ग्रिगोरी ने अपने वचन की रक्षा की और कापारिन के साथ धोखा नही किया। लेकिन उसी दिन शाम को उसने मौका निकाला, उसकी राइफल से खटका निकालकर छिपाकर रख दिया और लेटते-लेटते अपने-आपसे बोला—"रात मे कौन जाने, क्या आए इस शैतान के दिमाग मे !"

अगले दिन सबेरे फोमीन ने ग्रिगोरी को जगाया, और उस पर झुकते हुए धीरे से पूछा—"कापारिन के हथियार तुमने छीने इससे ?"

"क्या ? कैसे हथियार ?" ग्रिगोरी कुहनी के सहारे उठा और उसने दर्द से कन्धे सीधे किए। उसका बरानकोट, फर की टोपी और बूट वगैरह सभी कुछ ओस से गीला लगा। साथ ही उसे अपनी हड्डी-हड्डी ठड से अकडी महसूस हुई।

"हमे उसके हथियार मिल नही रहे। तुमने लिये हैं क्या ?···उठो न, मेलेखोव !"

"क्यों···लिये तो हैं मैंने उसके हथियार···मगर हुआ क्या ?"

इस पर फोमीन ने कुछ कहा और चला गया। ग्रिगोरी उठा और अपना बरानकोट झाड़ने लगा। थोडी दूर पर चुमाकोव नाश्ता तैयार करता दीखा। उसने बची-बचाई एकमात्र तश्तरी धोई, रोटी के एक बडे टुकडे को सीने से अड़ाकर चार बराबर-बराबर के टुकडे काटे, फिर सुराही से तश्तरी मे दूध उँड़ेला और जुन्हरी की खीर मुँह में डालते हुए ग्रिगोरी की तरफ देखा। बोला—"आज देर तक सोते रहे

तुम, मेलेखोव ! जरा देखो तो कि सूरज कहाँ-का-कहाँ पहुँच गया !"

"जिस आदमी की रूह साफ होती है, वह हमेशा जमकर सोता है।" स्तेरलयादनिकोव ने लकडी का चम्मच धोकर और अपने बरानकोट के सिरे से पोछते हुए कहा—"लेकिन कापारिन को सारी रात नीद नही आई···सिर्फ करवटे बदलता रहा।"

फोमीन ग्रिगोरी को देखकर मुस्कराया।

"बैठो और नाश्ता कर लो, बटमारो !" चुमाकोव बोला और फिर दूसरो की राह देखे बिना अपना दूध पीने लगा। इसके बाद उसने रोटी के टुकडे मे दाँत गडाए। इसी समय ग्रिगोरी ने अपना चम्मच उठाया और दूसरो को घूरकर देखते हुए पूछा—"कापारिन कहाँ है ?"

पर फोमीन और स्तेरलयादनिकोव चुपचाप खाते रहे। चुमाकोव ने ग्रिगोरी पर निगाह तो जमाई, पर बोला वह कुछ नही।

"कापारिन आखिर है कहाँ ?" ग्रिगोरी ने फिर यो पूछा, जैसे कि रात मे जो कुछ घटा हो और उसका धुँधला-धुँधला आभास उसे हो गया हो।

"कापारिन अब तक जाने कहाँ-का-कहाँ पहुँच गया होगा।" चुमाकोव ने स्थिर स्वर मे, मुस्कराते हुए कहा—"वह रोस्तोव की तरफ बहता चला जा रहा होगा। शायद उस्त-खोपरस्काया के पास टक्कर खा रहा हो कही। उसकी भेड की खाल लटक रही है, वह··· वहाँ।"

"तुम लोगों ने सचमुच मार डाला उसे ?" ग्रिगोरी ने कापारिन के भेड की खाल के कोट पर निगाह डालते हुए पूछा।

वैसे पूछने का मतलब कुछ नही था। सारा-कुछ अपनी कहानी आप कह रहा था। इस पर भी जाने क्यो, ग्रिगोरी ने सवाल कर ही तो दिया। पर, पहले कोई कुछ नही बोला तो उसने प्रश्न दोहराया।

"हुआ क्या ··बेशक हमने मारा उसे।" चुमाकोव ने कहा और अपनी भूरी औरतो-सी खूबसूरत आँखो की पलकें झुका ली—"मैंने उसे मारा···यही, यानी लोगो को मारना ही मेरा काम है इन दिनो।"

ग्रिगोरी ने उसे गौर से देखा तो उसके चेहरे से जितनी शान्ति

टपकी, उतनी ही प्रसन्नता उसके भूरे गलमुच्छे चेहरे की सँवराई के कारण और लौ देने लगे। भौहो और कायदे से सँवारे गए बालो का रँग जरा और गहरा मालूम हुआ।

एक शब्द में यो कह सकते है कि फोमीन के दल का यह सम्मानित जल्लाद देखने-सुनने मे सचमुच सुन्दर था।···उसने अपना चम्मच मोमजामे पर रख दिया। हाथ के पिछले हिस्से से अपनी मूँछें पोछी और बोला—"तुम्हे याकोव-येफिमोविच का एहसान मानना चाहिए, मेलेखोव! उसने तुम्हारी जान बचाई, वरना दोन मे कापारिन के साथ-साथ बहते चले जा रहे होते इस वक्त।"···

"आखिर क्यों?"

चुमाकोव सम्हल-सम्हलकर धीरे-धीरे बोला—"कापारिन अपने को दुश्मन को सौप देना चाहता था ··यह बात हमसे छिपी न रही थी। इस पर वह काफी देर तक कल तुमसे बातें भी करता रहा। तो, हमने और याकोव-येफिमोविच ने उसे इस गुनाह से बचाने की बात सोची··· गगारिन को सब-कुछ साफ-साफ बतला दूं?" उसने प्रश्नभरी दृष्टि से फ़ोमीन की ओर देखा।

फोमीन ने सिर हिलाया, और चुमाकोव खीर की जुन्हरी के कच्चे दानो को दाँत से चबाता हुआ, आगे बोला—"मैने शाम शाहबलूत की लकड़ी का एक डण्डा तैयार किया और याकोव-येफिमोविच से कहा—मैं कापारिन और मेलेखोव, दोनो का ही हिसाब साफ कर दूँगा एक साथ। लेकिन, वह बोला—कपारिन को बेशक खत्म कर दो, पर देखो, मेलेखोव को हाथ न लगाना।···यानी, इस तरह पूरी बात तय हुई और मैं कापारिन के सो जाने का इन्तजार करता रहा। फिर, जब वह सो गया और मैंने तुम्हारे भी खर्राटे सुन लिये तो मैं दबे-पाँव उसके पास गया और मैंने सोटा पूरी ताकत से उसके सिर पर दे मारा। हमारे उस स्टाफ कैप्टन ने पैर तक नही पटके। उसने बडे अन्दाज से हाथ फैलाए और इस जहान से रुखसत ले ली। हमने उसकी तलाशी ली, हाथ-पैर पकडकर उठाया, नदी के किनारे पहुँचाया, उसके बूट, ट्यूनिक और भेड़ की खाल सहेजी और पानी मे लुका दिया। मगर, तुम सोते रहे

श्रौर तुम्हें इस सबकी कानो-कान खबर तक नही लगी। हालाँकि याकोव येफिमोविच ने तुम्हे हाथ लगाने से मना कर दिया था, तो भी मुझे लगा कि ये दोनो कल जाने क्या षड्यन्त्र करते रहे है। कुछ दाल मे काला ही समझो जब पाँच मे से दो श्रादमी कट जाये श्रौर दूसरो से श्रलग जाकर कुछ घुस-फुस करने लगे!···बस, तो मैं पजो के बल तुम्हारे पास पहुँचा श्रौर मैने तुम्हे तलवार के घाट उतार देने की तैयारी की। डण्डा मुझे बेकार लगा। मन ने कहा—'तुमसे कही मज़-बूत है गगारिन···श्रगर एक हाथ मे ही काम तमाम न हुश्रा श्रौर वह उठकर बैठ गया तो तुम्हारी श्रपनी जान के लेने-के-देने पड जायेंगे!' लेकिन, फोमिन ने कुछ होने नही दिया। श्राडे श्रा गया। बोला—'उसे उँगली से भी मत छूना। वह हमारे साथ है श्रौर हम उसका यकीन कर सकते हैं।'···इसके बाद हम दोनो के बीच बाते हुईं, मगर यह समझ मे न श्राया कि कापारिन के हथियार हुए तो हुए क्या? इस तरह तुम्हारी जान बच गई श्रौर तुम चैन की नीद सोते रह गए। मगर सोते हो तुम घोड़े बेचकर! इतना सब सोचा गया, मौत तुम्हारे सिर पर मँडराती रही श्रौर तुम टाँगे फैलाए बेख़बर पड़े रहे।"

ग्रिगोरी शात भाव से बोला—"श्रौर, तुमने मुझे बेकार मार डाला होता···बेवकूफ हो तुम! मेरी श्रौर कापारिन की कोई साज़िश नही थी।"

"लेकिन, उसके हथियार तुम्हारे पास कैसे श्रा गए?"

ग्रिगोरी मुस्कराया—"मैंने कल उसकी पिस्तौलें उससे छीनी श्रौर शाम को उसकी राइफल का खटका निकालकर घोडेवाले कपड़े के नीचे छिपाया।"···फिर उसने श्रपनी श्रौर गगारिन के बीच की पूरी बात-चीत सुनाई श्रौर कैप्टन बहादुर के इरादो का ज़िक्र किया।

फोमीन ने नाराजगी दिखलाते हुए कहा—"लेकिन, ये सारी बातें तुमने कल क्यो नही बतलाईं?"

ग्रिगोरी ने स्पष्ट रूप से स्वीकारा—"उस घिनौने शैतान पर पता नही क्यो मुझे रहम श्रा गया!"

इस पर चुमाकोव सचमुच श्राश्चर्य मे पड़ते हुए बोला—"उफ···

मेलेखोव···तुम अपना यह रहम भी वही दबा आओ, जहाँ कापारिन की राइफल का घोडा दबाकर रखा है तुमने ! दफन कर आओ घोड़ेवाले कपड़े के नीचे। इस रहम से तुम्हारा कुछ भी भला होने से तो रहा !"

"अच्छा, आप मुझे नसीहत न दीजिए। मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नही करना चाहिए।" ग्रिगोरी ने रुखाई से जवाब दिया।

"मैं तुम्हे नसीहत क्यो देने लगा ! मगर जरा सोचो कि तुम्हारे इस रहम की बदौलत अगर कल रात, बेवजह मैंने इस दुनिया से तुम्हारा रवन्ना काट दिया होता तो ?···तो, क्या होता ?"

"अच्छा ही होता···सस्ता छूटता मै !" ग्रिगोरी ने एक क्षण सोचने के बाद कहा···फिर, जैसे अपने-आपसे बोला—"दिन के भरे उजाले मे मौत सामने आती है तो इन्सान के यो ही छक्के छूट जाते हैं···दम अटक-अटककर निकलता है···मगर, कोई सोता हो और उस वक्त मौत सिरहाने आ खडी हो तो काम जरा आसान हो जाता है···"

: १५ :

एक दिन, रात को उन लोगो ने नाव से नदी पार की तो नीज्नी-क्रीव्स्काया गाँव का अलेक्सान्द्र-कोशेलेव नाम का कज्जाक किनारे जैसे उनके इन्तजार मे खडा मिला। उसने फोमीन का अभिवादन किया और बोला—"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा, याकोव-येफिमोविच ! घर पर रहते-रहते ऊब गया हूँ।"

फोमीन ने ग्रिगोरी को कुहनियाया और फुसफुसाकर बोला—"देखा ? मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था ! हम जजीरे से दूर जा भी नही पाए कि लोग आ गए···एक आदमी तो यही रहा ! इसे मैं जानता हूँ···कज्जाक लडाई के मामले मे खासा जाँबाज है। आसार अच्छे नजर आते है। अब अपनी गाडी चल निकलेगी।"

फोमीन के स्वर ने उसकी सतोष-भरी मुस्कान पर मुहर मारी। साफ है कि एक नये साथी के आने से उसे सचमुच बड़ी खुशी हुई।

यानी, कामयाबी से नदी पार कर लेने और ऐन इसी वक्त एक और आदमी के साथ आ-जाने से वह फूला न समाया और उसकी आशाओं के नये पर निकल आए।

"तो एक राइफल और पिस्तौल के अलावा तुम्हारे पास जगी दूरबीन भी है ?" उसने कोशेलेव के सामान को अँधेरे मे ही देखते-समझते और सन्तोष की साँस लेते हुए कहा—"लो सहेजो ··यह रहा एक कज्जाक। असली कज्ज़ाक है यह। कोई ओगला-दोगला कुत्ता नही है।"

इस बीच फोमीन का चचेरा भाई, छोटे घोडे वाली एक गाडी लेकर आ गया, और खुद जल्दी मे होने के कारण फोमीन को हडबडियाते हुए धीरे से बोला—"काठियाँ गाड़ी मे रख दो और ईसा के लिए जल्दी करो···रात भीग रही है और अभी लम्बी मन्जिल सामने है।" पर द्वीप से सही-सलामत निकल आने और अपने गाँव की बलवती धरती पर अपने कदम महसूस करने के कारण फोमीन बडे इत्मीनान की साँस लेता लगा। उसने घर पर एकाध घटे रुककर गाँव के जान-पहचानियो से मिल-भर लेने का फैसला किया।···

···तड़का होने के जरा पहले यागोदनी गाँव के पास के घोडो के झुड से अच्छे-से-अच्छे घोडे चुने गए और उन पर जीने कस ली गई। चुमाकोव घोड़ो के बूढे रखवाले से बोला—"बाबा, इन घोडो के लिए बहुत परेशान होने की जरूरत नही।···फिक्र की ऐसी कोई बात नही··· हम थोडी दूर तक इन घोडो पर सवारी करेंगे और बेहतर घोडो के मिलते ही इन्हे उनके मालिक को लौटा देंगे। कोई कुछ पूछे तो कह देना कि क्रास्नोकुत्स्काया के मिलिशिया के लोग घोडे ले गए है···जाओ और वहाँ से वापस ले आओ···मै क्या, वे लोग दुश्मन के एक दस्ते का पीछा कर रहे थे।··"

फिर बडी सडक पर आते ही उन लोगो ने फोमीन के चचेरे भाई को विदा किया, बाईं ओर मुडे और घोड़ो को तेज़ दुलकी मे डालते हुए दक्षिण-पश्चिम की ओर उड चले।

एकाध दिन पहले ही मास्लाक के दस्ते के मेशकोव्स्काया-स्तनीत्सा

के पास ही नज़र आने की अफवाह इन लोगो के कानो मे पड गई थी, इसलिए फोमीन उसी तरफ बढा कि दस्ता मिल जाए तो हम पाँचो भी उसी मे शामिल हो जाएँ।

मास्लाक के दस्ते की तलाश मे वे लोग तीन दिन तक स्तेपी के तमाम रास्तो के चक्कर काटते फिरे। पर, बड़े गाँवो और बस्तियो को उन्होने बराबर बरकाया। फिर कारगिन्स्काया बस्ती की सीमा के उक्रइनी गाँवो मे उन्होने अपने घोड़े छोड़े और बदले मे मोटे-तगड़े, तेज़ उक्रइनी घोडे कसे।

चौथे दिन, सवेरे एक गाँव के पास ही ग्रिगोरी की नज़र पडी तो उसने पहाड़ियो की दूर की घाटी मे घुडसवारो की एक कतार को उस पार से इस पार आते देखा। सड़क पर कम-से-कम दो स्क्वैड्रन समझ पडे। उनके आगे-आगे और अगल-बगल नज़र आईं छोटी-छोटी गश्ती टुकडियाँ।

फ़ोमीन ने आँखों पर दूरबीन चढ़ाई। बोला—"यह या तो मास्लाक का दस्ता है या···।"

"हो सकता है पानी हो···हो सकता है बर्फ़ हो···हो सकता है हो और हो सकता है कि न हो।" चुमाकोव ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा—"ज़रा गौर से देखो याकोव-येफिमोविच···क्योंकि अगर लाल फौजी हों तो हमें चाहिए कि हम मुड़ें और फ़ौरन ही उड़ दें।"

"लेकिन यहाँ से कैसे बताया जा सकता है कि ये कौन हैं और कौन नही हैं?" फोमीन ने खीझते हुए कहा।

इसी समय स्तेरलयादनिकोव चीख उठा—"देखो। उन लोगो ने ताड लिया हमे। एक टुकड़ी-की-टुकड़ी इसी तरफ बढी आ रही है।"

और, उसकी बात ठीक थी। ये लोग सचमुच ताड लिये गए थे। इस पर कतार की दाईं ओर की एक टुकड़ी तेज़ी से मुड़ी थी और घोडे इन्ही लोगो की तरफ ताबडतोड़ दौड़े चले आ रहे थे।···

बस, तो फोमीन ने दूरबीन जल्दी-जल्दी केस मे डाली। पर ग्रिगोरी मुस्कराता रहा। वह ज़रा झुका और उसने फोमीन के घोड़े की लगाम लपककर थाम ली।

"हडबडाओ नही···उन लोगो को ज़रा और पास आने दो··· गिनती मे बारह ही तो है···जरूरत पडेगी तो हम घोडो को दौडा देंगे, और निकल भागेगे। घोडे हमारे ताजा है···तुम्हे डर किस बात का है ? अपनी दूरबीन से देखो तो ज़रा।"

बारह घुडसवार बराबर पास आते गए और उनके आकार प्रति पल बढते गए। आखिरकार पहाडी की ऊँची घास की पृष्ठभूमि मे वे बिल्कुल साफ नजर आने लगे।

ग्रिगोरी और उसके साथ के बाकी लोग फोमीन को एकटक देखते रहे। दूरबीन साधनेवाले फोमीन के हाथ थोडे-थोडे काँपने लगे। साथ ही उसने इस तरह आँखें गडाकर देखा कि धूप की तरफ वाले उसके गाल पर एक आँसू ढुलक आया। अन्त मे ज़ोर से चिल्लाया—"अरे, ये तो लाल फौजी है। टोपियो के लाल-सितारे साफ चमक रहे है।" और उसने अपना घोडा एकदम मोड़ लिया। बाकी लोग भी घोडे ताबडतोड दौडा चले। पीछे से रह-रहकर गोलियो की आवाज़ आई। कोई दो वर्स्ट तक ग्रिगोरी फोमीन की बगल मे रहा, और इस बीच रह-रहकर पीछे मुडकर नज़र दौडाता रहा।

फोमीन चुप और उदास रहा कि अपने घोडे की लगाम थोडी खीचते हुए चुमाकोव बोला—"हमे गाँवो से दूर-ही-दूर रहना चाहिए और व्येशेन्स्काया के मैदान की तरफ बढना चाहिए।···उधर सूना कुछ ज्यादा है।"

लगा कि घोडो को अगर इसी तरह कुछ वर्स्ट और सरपट दौडना पडा तो वे चूर-चूर होकर रह जाएँगे। अभी ही उनकी फैली हुई गर्दन झाग और पसीने से नहा उठी है।·· ग्रिगोरी ने कमान दी—"घोडे धीमे करो···इतनी तेजी की कोई ज़रूरत नही।"

होते-होते पीछे के बारह घुडसवारो मे केवल नौ बाकी बचे। बाकी राह में ही गिर गए। सो ग्रिगोरी ने मन-ही-मन अपने और उनके बीच की दूरी का अनुमान लगाया और चिल्लाकर बोला—"अब रुको और दुश्मन पर गोलियो के दो लहरे तो बरसा ही दो।"

पाँच के पाँचो ने घोड़े धीमे कर दुलकी मे डाल लिए, फिर खुद

नीचे ज़मीन पर सरक आए और अपनी राइफलें हाथो मे ले ली।

"घोडो की लगामे साधो। एकदम बाईं तरफ के आदमी पर निशाना साधो···और, अब···फायर !"

प्रत्येक ने कारतूस की एक-एक पेटी समाप्त कर दी, एक लाल फौजी के घोडे का काम तमाम कर दिया, फिर घोडो पर सवार होकर भाग निकले। दुश्मन ने उनका पीछा यो ही-सा किया, काफी दूर से गोलियाँ चलाईं और आखिरकार पीछा करने का इरादा बिल्कुल छोड दिया।

"घोड़ो को पानी पिला लेना चाहिए···वह···वहाँ एक तलैया नज़र आ रही है।" स्तेरलयादनिकोव ने दूर के नीले धब्बे की तरफ चाबुक से इशारा करते हुए कहा।

ग्रिगोरी और उसके साथियो ने घोडे तेज़ कदम चाल मे डाले, राह की हर खोह और हर खड्ड के मामले मे सावधानी बरती और मैदान की ऊँची घास की आड-ही-आड चलने की कोशिश की।

तलैया पर उन्होने घोडो को पानी पिलाया और फिर चल दिए। घोडे कदम-चाल मे रखे, बाद मे दुलकी मे। दोपहर हुई तो घोडो को खिलाने के खयाल से एक गहरे खड्ड मे रुके। फ़ोमीन, कोशेलेव को आदेश देते हुए बोला—"तुम पास के ढूह पर पैदल चढ जाओ, वही कही ज़मीन पर लेट रहो और चौकसी करो। खयाल रखना, घुडसवारो की मैदान मे कही भी झलक मिलते ही आगाह करना और फौरन ही भागकर घोडो के पास आ जाना।"

ग्रिगोरी ने अपने घोड़े की ज़ीन ढीली की, उसे चरने को छोडा और खुद, पास ही, खड्ड के ढाल पर एक खुश्क जगह लेट रहा।

खड्ड के धूपवाले इस बाज़ू पर घास कही लम्बी और कही घनी थी। धूप से तपती काली मिट्टी की साँस मुरझाते वायलेट-फूलो की भीनी-भीनी गध के प्राणो मे विष घोलने मे असमर्थ थी। वॉयलेट खाली बजर जमहो मे मुस्कराते, लम्बी तिनपतिया घास के सूखे डठलो के बीच से झाँकते, और एक पुराने खेत की मेड के सिरे पर फैलकर तरह-तरह के रगीन चित्र आँक रहे थे। और तो और, चकमक पत्थर

जैसी कडी, अछूती जमीन तक की पिछले साल की मुर्दा घास की पत्तियों को चीरकर, सिर उठाकर, अपनी बच्चो-जैसी नीली-निर्मल आँखो से दुनिया को भर-निगाह देख रहे थे। पर, इस वीराने मे भी, उनकी साँसो की गिनती जैसे किसी ने कर ही ली थी। बेचारो के दिन पूरे हो चुके थे। अब उनकी जगह ट्युलिप ले रहे थे और सूरज की तरफ देख-देखकर अपने सुर्ख, सफेद और पीले जाम छलका रहे थे। हवा फूलो की तरह-तरह की सुगन्धियो को एक-दूसरे मे पिरोकर दूर-दूर लिये जा रही थी।

चोटियो से घिरे उत्तरी ढाल के नुकीले ककड़ो वाले हिस्से मे अब भी बर्फ थी। बर्फ ने सिल्लियो की शक्ल ले ली थी। उससे भाप उठ रही और एक ठिठुरन-सी उमड रही थी ठिठुरन। अपने साथ ला रही थी सिर्फ वायलेट के बुझे हुए फूलो की हलकी-हलकी, उदासी से भरी महक, और यह महक ऐसी लग रही थी, जैसे कि याद हो जाने किस गुज़रे हुए ज़माने की, जाने किसीकी···

ग्रिगोरी कुहनियो के बल टाँग फैलाकर लेटा आराम करता रहा और धूप की धुध से नहाए स्तेपी मैदान, दूर के सिलसिले के किनारे-किनारे फैले, नीले रँग की झाईं मारते बडे-बडे ढूहो और ढाल की सीमा पर, दूधिया पत्थर की तरह पल-पल पर रँग बदलने वाले मृगजल के प्रवाह को प्यासी निगाहो से पीता रहा। फिर एक क्षण को उसने आँखें मूद ली और दूर-पास की बुलबुलो के गीत, चरते हुए घोडों के हलके कदमो की आहट, हीस की आवाज, लगामो की खनखनाहट और नई घास मे इधर-उधर डोलती हवा की फुसफुसाहट सुनता रहा। साथ ही उसने खुरदरी ज़मीन से अपना बदन सटाया तो उसका अन्तर एक अजीब तरह की विरक्ति और शान्ति से भर उठा। भावना चिर-परिचित लगी। बात यह कि वह जब भी चिन्ता से घिरा था, उसे ऐसा ही अनुभव हुआ था और उसने आसपास की हर चीज़ को बिल्कुल ही नई नजर से देखा था। ऐसे मे हर बार उसकी दृष्टि जैसे और पैनी हो गई थी और कान और सध गए थे। फिर यह कि परेशानी के ऐसे क्षणो बाद पहले की हर अनदेखी चीज उसका ध्यान अपनी ओर खीचने लगी थी।

सो, इस समय भी उसने किसी छोटी चिडिया का पीछा करने वाले छोटी जाति के बाज की सीटियाँ बड़ी उत्सुकता से सुनी और उसकी उडान की टेढी काट बडी ही दिलचस्पी से देखी। बडे ही मन से उसने देखा अपनी दोनो कुहनियो के बीच कशमकश करते एक काले गुबरैले का जान-बूझकर रेंगना और अछूते सौदर्य से जगमग करते खूनी-लाल रँग के ट्युलिप के एक फूल का हलके-हलके हवा मे लहराना।

फूल बिल्कुल पास ही, जंगली चूहे के एक धँसे हुए बिल के सिर पर उगा दीखा, जैसे कि हाथ को दावत दे रहा हो कि फलो, आगे बढो और मुझे चुन लो। पर गगारिन बिना हिले-डुले लेटा रहा और फूल और सुबह की ओस की बूँदो को अपनी परतो मे सहेजकर रखने वाली उसकी कडी पत्तियो की मन-ही-मन सराहना करता रहा। बाद मे उसने उधर से निगाह हटा ली और बिना कुछ सोचे-समझे एक बाज पर बहुत देर तक जमा रखी। बाज क्षितिज के ऊपर, जगली चूहो के बिलों के मुर्दा शहर पर मँडराता रहा।···

कोई दो घटे के बाद ग्रिगोरी और उसके साथी फिर घोडो पर सवार हुए और रात होने-होने तक येलान्स्काया-जिले के जाने-पहचाने गाँवो मे पहुँच जाने के खयाल से बढ चले।

कहना न होगा कि इस बीच लाल सेना की गश्ती टुकडी ने इन लोगो की खबर टेलीफोन से अधिकारियों तक पहुँचा दी। नतीजा यह कि ये लोग कामेन्का बस्ती मे पूरी तरह दाखिल भी न हो पाए कि नदी के पार से गोलियो ने इनकी अगवानी की। उनकी सनसनाहट से डरकर फोमीन एक ओर को मुड़ गया। बाकी लोगो ने भी आग की बारिश के बीच, बस्ती के बाहरी इलाको का चक्कर काटा और व्येशेन्स्काया के घोडोंवाली चरागाह की तरफ तेज़ी से घोडे बढाए। मगर, दूसरी बस्ती के पार मिलिशिया की एक छोटी टुकडी ने इनके आडे आने की कोशिश की।

फ़ोमीन बोला—"क्यो न हम बाएँ से इनके चारों ओर होकर निकल चलें!"

परन्तु ग्रिगोरी दृढ स्वर मे बोला—"हम हमला बोलेंगे इन पर। ये लोग गिनती मे नौ है, और हम पाँच···इनके बीच से आगे बढेंगे हम !"

चुमाकोव और स्तेरलयादनिकोव ने उसका समर्थन किया। इस पर सभी ने अपनी तलवारें निकाल ली और थकान से चूर-चूर घोडो को कदम-चाल मे डाल लिया। मिलिशिया के सिपाहियो ने, घोडो पर चढे ही चढे, गोलियो की बौछार की और फिर हमला बचाने के खयाल से एक तरफ को कट गए।

कोशेलेव ने मज़ाक बनाते हुए कहा—"बडे गए-बीते लोग है। इधर-उधर से गोलियाँ चलाकर वक्त खीचते रहेगे, मगर जमकर लडेंगे नही।"

फ़ोमीन और उसके साथी, मिलिशिया के सिपाहियो के जोर पकडने पर हर बार गोलियो का जवाब गोलियो से देते हुए पूर्व की तरफ पीछे हटे। उन्होने बीच-बीच मे झटके से मुडकर देखा, पर ठिठके वे ज़रा भी नही। यानी भागे ऐसे जैसे कि वे भेडिये हो और शिकारी कुत्ते उन्हे दौड़ा रहे हो। इसी सिलसिले मे स्तेरलयादनिकोव घायल हो गया। गोली ने उसके बायें पैर की हड्डी छेद दी। वह पीला पड गया और दर्द से कराह उठा—"पैर मे गोली मारी है···और पैर यह वही है··· लँगडावाला···सूअर की मौत मिले तुम्हे !"

चुमाकोव ठठाकर हँसा और इतना हँसा कि आँख से आँसू बहने लगे। फिर, उसने स्तेरलयादनिकोव को घोडे पर बिठाया तो ठहाका लगाते हुए बोला—"भला उन्होने इसी पैर को क्यो चुना ? जान-बूझकर गोली चलाई होगी इस पर ! तुम्हे लँगड़ाते देख लिया होगा और सोचा होगा कि इसके लँगडे पैर को निशाना बनाओ ··यह फौरन हाथ लग जाएगा। उफ़·· स्तेरलयादनिकोव···उफ ··तुम जानकर लेकर छोडोगे मेरी !··· तुम्हारा पैर तो जितना है, अब उसका भी एक-चौथाई रह जाएगा··· तब···तब···भला तुम नाचोगे कैसे ? मुश्किल मेरी आएगी ··मुझे और दो फुट गहरा गड्ढा खोदना पडेगा।"

"बक-बक बद कर···गधा कही का ! अभी तेरे लिए वक्त नही है

मेरे पास ! ज़बान बद कर…ईसा के लिए ज़बान बद कर!" स्तेरलयाद-निकोव ने दर्द से काँपते हुए कहा ।

इसके कोई आधे घटे बाद अनगिन खड्डे सामने आए और वे एक खड्ड से गुजरने लगे कि वह बोला—"थोडा रुको और साँस ले लो…मैं ज़रा जख्म का इन्तजाम कर लूँ…बूट भर गया है खून से !"

लोग रुक गए और ग्रिगोरी ने घोडे थाम लिए। फोमीन और कोशेलेव, मिलिशिया के दूर मंडराते सिपाहियो पर, बीच-बीच मे गोलियाँ चलाते रहे। चुमाकोव बूट खीचने मे स्तेरलयादनिकोव की मदद करने लगा। बोला—"लेकिन, बहुत खून निकल गया…सचमुच, बहुत ही ज़्यादा खून निकल गया।" फिर उसने भौहे सिकोडते हुए बूट मे भरा खून ज़मीन पर उँडेला और पतलून के खून से शराबोर पाँयचे को फाडने को हाथ लगाया। मगर स्तेरलयादनिकोव ने रोक दिया—"अच्छा-खासा पतलून है…इसे चौपट करने से कोई फायदा नही।" वह हथे-लियाँ टेककर, पिछियाकर बैठ गया और जख्मी पैर ऊपर उठाते हुए बोला—"उतार लो इसे…लेकिन ज़रा-धीरे से खीचना !"

चुमाकोव ने उसकी जेबें खँखोरते हुए पूछा—"पट्टी है कोई ?"

"अट्टी-पट्टी की क्या जरूरत है ? वैसे ही काम चल जाएगा।" स्तेरलयादनिकोव ने कहा, जख्म का मुँह देखा-समझा, कारतूस के केस से दाँतो से एक कारतूस खीची, उसकी बारूद हथेली पर डाली, थूक से मिट्टी सानी और फिर वह मिट्टी बारूद मे मिलाई। इस तरह मरहम तैयार कर उसने घाव के दोनो सूराख भरे और सन्तोष-भरे स्वर में बोला—"आजमाई हुई दवा है यह…इससे जख्म सूख जाएगा और दो दिन के अन्दर भर जाएगा।"…

इस बार वे पाँचों रवाना हुए तो चिर-नदी के पहले कही नही रुके। मिलिशिया के सिपाही दूर रहे। हाँ, जब-तब गोलियाँ ज़रूर चलाते रहे। फोमीन ने बार-बार मुडकर देखा और बोला—"बात क्या है, ये लोग हम पर निगाह रख रहे है, या कुमक का इन्तज़ार कर रहे हैं ? कोई-न-कोई वजह जरूर है कि इन्होने इतनी दूरी बना रखी है।"

चिर नदी इन लोगों ने एक गाँव के पास के घाट से पार की और

एक पहाडी के ढाल पर थकान से चूर घोडो को कदम-चाल से चढाया। यही नही, उन्हे इनकी लगामे थामकर इन्हे खीचना तक पडा। बीच-बीच मे इन जानवरो की बगलो और पुट्ठो पर झाग जमा हुआ तो वह भी साफ किया।

फोमीन की चिन्ता सार्थक निकली। एक गाँव से कोई पाँच वर्स्ट के फासले पर, ताज़ा, तेज़ और फुर्तीले घोडो पर सवार सात लोगो ने इन लोगो का पीछा किया।

कोशेलेव उदास होकर बोला—"अगर हमे ये लोग आपस मे एक-दूसरे को सौंपते गए, तो हमारा तो काम हो लिया!"

तो, जाने-समझे रास्तो को बरकाते, मुड-मुडकर गोलियाँ चलाते, और हर बार खुद मोड लेते हुए, इन लोगों ने स्तेपी मैदान के बीच घोडे दौडाने शुरू किए। इस सिलसिले मे दो आदमी घास के बीच लेट गए और अपना पीछा करनेवालो पर गोलियाँ चलाने लगे। बाकी लोग कोई पाँच सौ गज़ आगे निकल गए और घोडो से उतरकर दुश्मन पर आग बरसाने लगे। फिर पहले वाले दोनो लोग हज़ार गज आगे जाकर घास मे लेटकर गोलियाँ चलाने की तैयारी करने लगे। इस तरह इन लोगो ने मिलिशिया का एक आदमी, और मिलिशिया के एक दूसरे सिपाही का घोड़ा मार डाला। थोड़ी देर बाद ही चुमाकोव के घोड़े को भी गोली लग गई।

परछाइयो ने अपने आकार बढ़ाए। सूरज के कदम अस्ताचल की ओर बढे। ग्रिगोरी की सलाह पर वे लोग साथ-साथ रहे और अपने घोड़ो को कदम चाल से आगे बढाते रहे। चुमाकोव बाजू मे बना रहा। ज़रा देर बाद उन्होने दो घोड़ो वाली एक गाडी पहाडी के सिरे पर देखी और सड़क की तरफ मुडे। सयानी उम्र के, दाढीवाले गाडीवान ने चाबुक लगाकर घोड़ो को सरपट दौडाया, पर गोलियो ने गाड़ी रोक दी।

"मै इस गधे के बच्चे का एक हाथ मे ही काम तमाम किए देना हूँ···इसे घोडे भगाने का मज़ा मिल जाएगा।" कोशेलेव ने दाँत पीसकर कहा और अपने घोड़े पर चाबुक सटकारता आगे निकल चला।

"उसे हाथ मत लगाना, साशा···मेरा हुक्म है !" फोमीन ने चेतावनी दी और दूर से ही गाडीवान से चिल्लाकर कहा—"बाबा, घोड़े खोल दो···सुनते हो ? अपनी जान देना न चाहते हो तो घोड़ो को खोल दो !"

बूढे ने बड़ी आरजू-मिन्नत की, पर इन लोगो ने एक नही सुनी, खुद घोडो को बमो से बाहर किया, रासें और पट्टे खोले और जानवरों पर जल्दी-जल्दी जीनें कसी ।

बूढे ने रोते हुए भीख-सी माँगी—"बदले मे कम-से-कम अपना ही एक घोडा छोड़ दो ।"

कोशेलेव बोला—"होश मे रहो···कही ऐसा न हो कि तुम्हारे दाँत उखडकर बाहर आ रहे···घोडो की ज़रूरत हमे खुद है । तुम तो ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करो कि तुम जीते-जागते सही-सलामत खडे हो ।"

फोमीन और चुमाकोव नये घोडो पर सवार हो गए, परन्तु इसके जरा देर बाद ही इन लोगो का पीछा करनेवाले छ: घुड़सवारो मे तीन और आ मिले ।

फोमीन बोला—"हमे घोड़े और तेज़ी से उडाने चाहिए···आओ साथियो !···अगर रात होते-होते हम क्रीव्स्की की घाटियो तक पहुँच गए, तो समझ लो कि बच गए ।"

उसने चाबुक जमाया और उसका घोड़ा आगे-आगे सरपट दौड चला । बाएँ, हाथ से उसने एक दूसरा घोड़ा साध रखा । इन दोनो जानवरो की टापो से ट्युलिप के लाल फूल हर तरफ़ उड़ने लगे तो ऐसे लगे जैसे कि खून की बड़ी-बड़ी बूँदे हो । फोमीन के पीछे-पीछे घोडे पर सवार ग्रिगोरी ने लाली की यह बौछार देखी और पलकें मूँद ली । जाने क्यो उसका सिर चक्कर खाने लगा और एक जानी-पहचानी-सी पीर दिल को कचोटने लगी ।

इस तरह घोड़े दौड़ते-दौड़ते अधमरे हो गए और ये लोग भी घुड़सवारी और भूख से चूर-चूर अनुभव करने लगे । स्तेरलयादनिकोव का चेहरा लिनेन-सा सफेद पड़ रहा और वह काठी पर बुरी तरह

हिलने-डुलने लगा। एक ओर बहुत ज्यादा खून निकल जाने से एकदम कमज़ोरी आ गई तो दूसरी ओर प्यास और मतली ने झकझोरकर रख दिया। उसने थोड़ी-सी सूखी रोटी मुँह मे डाली, मगर वह फौरन ही बाहर आ गई।

साँझ के धुँधलके मे क्रीव्स्की गाँव के पास उन्हे स्तेपी से लौटते घोडो का एक झुड मिला। इस झुड के बीच से उन्होने कुछ गोलियाँ चलाई, मगर फिर किसी को पीछा करता न देखकर खुशी से फूले न समाए।

हुआ यह कि काफी पहले, पीछा करने वालो ने अपने घोड़े एक-दूसरे से सटाए, स्थिति पर विचार किया और लौटा दिए।

ग्रिगोरी और उसके साथ के लोग क्रीव्स्की मे, दो दिन, फोमीन के एक परिचित के यहाँ रहे। मेज़बान मालदार आदमी था, इसलिए उसने स्वागत मे किसी तरह की कोई कोर-कसर न की। घोडो को अँधेरे शेड मे रखा गया, उन्हे खाने को पेट से ज्यादा जई दी गई और दूसरे दिन की शाम होते-होते वे बिल्कुल ताज़ा हो गए। उनमे नई जान आ गई। लोगो ने पारी-पारी से घोडो की रखवाली की, मकडी के जालो की बन्दनवार के, भूसेवाले शेड मे फर्श पर चैन की नीद ली, और खाया-पिया इतना कि द्वीप पर बीते दिनो की कमी हर तरह पूरी हो गई। वहाँ तो आधा पेट खाकर समय काटना पडा था।···

यो तो वे दूसरे दिन उस गाँव से चल देते, पर स्तेरलयादनिकोव के कारण ऐसा हो न सका। उसके जख्म की हालत और बिगड गई, सिरो पर आग-सी लाली नजर आने लगी। शाम होते-होते पैर सूज गया और वह खुद बेहोश हो गया। प्यास उसे तोडती रही, सो अलग से। रात मे जब भी होश आया, उसने पानी की माँग की और टूटकर पानी पिया। परन्तु, दर्द के कारण, किसी की मदद से भी उठना दुश्वार हो गया। उसने पेशाब लेटे-ही-लेटे किया और बराबर कराहता रहा। आहो-कराहो मे कमी करने के खयाल से लोग उसे उठाकर शेड के दूर के कोने मे ले गए। मगर उससे भी कोई अन्तर नही पड़ा, उल्टे, कभी-कभी कराहे इतनी तेज़ हो गई कि क्या कहिए। इसके साथ ही

सन्निपात हो गया और वह रह-रहकर चीखने-चिल्लाने लगा।

फिर उसकी भी देख-रेख ज़रूरी हो गई। उसे पानी दिया गया, उसका तपता माथा पानी से तर किया गया और जोर से कराहने या बोलने के समय हर बार उसके मुँह पर हथेली या टोपी रखी गई।

दूसरे दिन के समाप्त होते-होते वह जरा सम्हला और अपने को बेहतर बतलाते हुए चुमाकोव की तरफ उँगली दिखलाकर बोला—"यहाँ से कब जा रहे हो तुम लोग ?"

"आज रात को।"

"मैं भी चलूँगा···मुझे यहाँ मत छोड देना···ईसा के लिए।"

फोमीन धीरे से बोला—"लेकिन, तुम कैसे चलोगे ? किस लायक हो ? तुम तो हिल-डुल भी नही सकते।"

"मैं हिल-डुल तक नही सकता ? देखो जरा !" स्तेरलयादनिकोव ने बडी कोशिश से अपने को आधा उठाया और फिर फौरन ही ढह पड़ा। उसका चेहरा तमतमा उठा और भौंहों पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें झलकने लगी।

चुमाकोव ने दृढ स्वर मे कहा—"हम ले चलेगे तुम्हे···हम साथ ले चलेंगे तुम्हे···तुम डरो नही। आँसू पोछो···तुम औरत तो नही हो न !"

"ये तो पसीने की बूँदें है।" स्तेरलयादनिकोव ने धीरे से फुस-फुसाते हुए कहा और अपनी आँखो पर टोपी खीच ली।

"हम तो तुम्हे खुशी-खुशी यहाँ छोड जाते, मगर दिक़्कत यह है कि इस घर का मालिक राजी नही होगा इसके लिए···तुम अपना दिल छोटा मत करो, वैसिली ! तुम्हारा पैर ठीक हो जाएगा और तुम और मैं यानी हम दोनो फिर डटकर कुश्ती लड़ेंगे और कज़्ज़ाक नाच नाचेंगे।"

दूसरो के मामले मे हमेशा सख्ती और जगलीपन बरतनेवाले चुमा-कोव ने ये शब्द इतने शात भाव से, इतनी ममता से और इतनी ईमानदारी से कहे कि ग्रिगोरी आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा।

फिर तड़के से ज़रा पहले उन लोगो ने उस गाँव से रवाना होने की तैयारी की। उन्होने स्तेरलयादनिकोव को जैसे-तैसे घोडे की काठी पर

बिठाया, परन्तु वह सधा न रह सका। कभी इस ओर को लुढक गया तो कभी उस ओर को। अन्त मे चुमाकोव उसकी बगल मे बैठा और उसने अपना दाहिना हाथ जख्मी साथी की कमर में डाल दिया।

"इस तरह घसीटना मुश्किल होगा। हमे तो इसे कही-न-कही छोड़ ही देना होगा।" फोमीन ने ग्रिगोरी के घोडे के बराबर अपना घोडा लाते हुए, सिर हिलाकर धीरे से कहा—"यानी मार डालोगे इसे, क्यो ?"

"और···और हो ही क्या सकता है ? उसकी आँखो मे आँखे डाली तुमने ? जहाँ तक हमारा सवाल है, हम उसके लिए कर भी क्या सकते है ?"

फिर वे कुछ देर तक चुपचाप अपने घोडो को कदम चाल से चलाते रहे। इसके बाद चुमाकोव की जगह ग्रिगोरी ने ली और फिर ग्रिगोरी की जगह कोशेलेव ने।···

सूरज उगा। नीचे, दोन की सतह के ऊपर धुध अब भी मँडराती रही। पर पहाडियो से स्तेपी मैदान दूर-दूर तक निर्मल और चमाचम नजर आता रहा। आसमान के गुम्बद का नीलम हर क्षण गहराता गया और क्षितिज पर पखोवाले, छोटे-छोटे बादल जमे-से लगने लगे। शबनम ने घास की पत्तियो पर रुपहली ज़री का बारीक काम किया। लेकिन घोड़े जहाँ-जहाँ से गुज़रे वहाँ-वहाँ गहरे रग का रास्ता बन गया और यह रास्ता जैसे पानी पर बहता रहा। स्तेपी को चारो ओर से घेरने वाले अकूत सन्नाटे का तार सिर्फ बुलबुलो ने तोडा।

बेचारे स्तेरलयादनिकोव का सिर घोडे की हर हरकत के साथ उछल-उछल जाता रहा। आखिरकार वह धीरे से बोला—"उफ···अब सहा नही जाता।"

हेतमान की बडी सडक के पास एक सारस, घोडो की टापो के बीच से एकाएक ऊपर उठा। उसके पैरो की फड़फड़ाहट ने स्तेरलयादनिकोव को जैसे बेहोशी से होश मे ला दिया। बोला—"भाइयो, घोड़े से नीचे उतार दो मुझे !"

कोशेलेव और चुमाकोव ने उसे बडी सावधानी से काठी से नीचे उतारा और गीली घास पर लिटा दिया।

"लाओ, तुम्हारा पैर देखें तो ज़रा···अच्छा, अपने पतलून के बटन तो बन्द करो !" चुमाकोव ने उसकी बगल मे बैठते हुए कहा ।

···स्तेरलयादनिकोव का पैर, इस बीच बहुत ही अधिक सूज गया था । खाल मे कही एक सिकुडन न थी और उसने पतलून के पांयचे की पूरी जगह घेर ली थी । ऐन चूतड तक खाल गहरी बैजनी पडकर धब्बों से भर गई थी । धब्बे छूने पर काफी चिकने और मुलायम लगते थे । ऐसे ही मगर जरा हल्के रग के धब्बे उसके सांवले, धँसे हुए पेट पर भी नज़र आ रहे थे । जख्म के साथ-साथ पतलून पर सूख गए भूरे खून से भी भयानक बू आ रही थी ।···

ऐसे मे चुमाकोव ने अपने मित्र का पैर गौर से देखना शुरू किया तो अपनी नाक झटके से ऊपर उठा ली, भौंहे सिकोड ली और मतली जैसे-तैसे रोकी । उसके बाद उसने स्तेरलयादनिकोव की झुकी हुई, नीली पलको को पास से, ध्यान से देखा, फोमीन की ओर आँखें की और बोला—"लगता है कि बदन का अन्दर से सड़ना शुरू हो गया है···ठीक है ।···तुम्हारी हालत ठीक नही है, वैसिली-स्तेरलयादनिकोव ! हालत सचमुच काफी खराब है । उफ···वास्या···वास्या···इतनी तकलीफ़ तुम्हे क्यों हुई आखिर ?"

स्तेरलयादनिकोव लम्बी-लम्बी साँस लेता रहा और कोई जवाब दे न पाया । फोमीन और ग्रिगोरी, जैसे कि किसी कमान पर घोडो से उतरे और हवा के रुख को बचाते हुए उसकी ओर बढे । वह कुछ देर तक स्थिर लेटा रहा, फिर हाथ के बल उठकर बैठा और खून-सी लाल आँखो से उनकी ओर देखते हुए बोला—"भाइयो, मुझे मौत के हाथो सौंप दो·· मैं यो भी जिन्दा नही हूँ···एकदम टूट गया हूँ···मेरी ताकत पूरी तरह जवाब दे गई है······"

वह फिर पीठ के बल लेट गया और आँखें बद कर ली । फोमीन और उसके साथ के दूसरे लोगो को यों भी इस अनुरोध की आशा थी । सो, कोशेलेव की तरफ देखकर आँख मारते हुए फोमीन दूसरी ओर को मुड़ गया । कोशेलेव ने विरोध मे कुछ न कहा, झटके से कधे से राइफल उतारी और चुमाकोव के होठो की हरक़तो को पढ़ते हुए

सुनने से अधिक समझा—"गोली मार दो !" पर, स्तेरलयादिनकोव ने फिर आँखे खोल ली, और अपनी उँगली से नाक की हड्डी की तरफ इशारा करते हुए बोला—"यहाँ गोली मारना ताकि रोशनी फौरन ही गुल हो जाए ··अगर कभी गाँव की तरफ जाना हो तो मेरी बीवी को पूरा किस्सा सुना देना और कह देना कि वह अब मेरा इन्तज़ार न करे।"

कोशेलेव, बहुत देर तक, राइफल के खटके से खिलवाड करता लगा। उस बीच स्तेरलयादनिकोव को समय मिल गया, और उसने पलकें झुकाते हुए कहा—"मेरे बीबी है सिर्फ·· बच्चे नही है · एक बच्चा हुआ था, पर वह पेट मे ही मर गया था · फिर और कुछ हुआ नही।"

कोशेलेव ने दो बार राइफल तानी, पर दोनो ही बार झुका ली और चेहरे की जर्दी बराबर बढती गई। इस पर चुमाकोव ने कधा पकडकर उसे क्रोध से ढकेल दिया और राइफल उसके हाथ से छीन ली।

"अगर काम नही कर सकते तो ज़िम्मा मत लो·· छुईमुई के फूल हो निरे !" भर्राये गले से वह चीखा, टोपी उतारी और बालो पर हाथ फेरे।

"जल्दी करो !" फोमीन ने एक पैर रकाब मे रखते हुए कहा।

चुमाकोव ने सार्थक शब्दो की खोज करते हुए शात भाव से, धीरे से कहा—"वैसिली, अलविदा ईसा के लिए मुझे और मेरे सभी साथियो को माफ कर देना ··अब मुलाकात दूसरी दुनिया मे होगी। और यहाँ हमने जो-कुछ अच्छा-बुरा किया है, उस पर फैसला वहाँ दिया जाएगा···तुम्हारी बात तुम्हारी घरवाली तक ज़रूर पहुँचा दी जाएगी।"

चुमाकोव ने उत्तर की प्रतीक्षा की, पर स्तेरलयादनिकोव चुप रहा। मौत के इन्तज़ार मे उसका चेहरा पीला पड गया। केवल उसकी बरौनियो के बाल, जैसे कि हवा से, फडफडाए। साथ ही उसके बाएँ हाथ की उँगलियो मे हरकत हुई और वह जाने क्यो अपनी ट्यूनिक

का एक ढीला बटन ठीक करने लगा।

ग्रिगोरी ने अब तक जाने कितनी मौतें देखी थी। इस पर भी स्तेरलयादनिकोव को मरता देखने की हिम्मत वह न जुटा सका, अपने घोडे की रासें तेज़ी से खीचता जल्दी-जल्दी आगे बढ गया, और इस गोली की राह यो देखने लगा, जैसे कि खुद उसकी अपनी खोपडी मे मारी जा रही हो। उसके दिल ने एक एक क्षण की गिनती की। परन्तु, जब पीछे गोली की आवाज़ हुई तो उसके घुटने काँप गए और वह बडी मुश्किल से पिछडते हुए घोडे को सम्हाल सका।

फिर कोई दो घंटे तक वे घोडो पर सवार मज़िल तय करते रहे, पर मुँह उनमे से एक ने भी नही खोला। उसके बाद मौन तोडा चुमाकोव ने। आँखो पर हथेली की ओट करते हुए, भारी गले से बोला—"मैंने गोली उसे पता नही क्यो मार दी ? उसे स्तेपी मे कही छोड दिया जाता। बेकार का गुनाह अपने ऊपर लिया मैंने। वह अब भी मेरी आँखों के आगे नाच रहा है।"

फोमीन बोला—"आखिर तुम कब आदी होगे इन चीज़ो के ? इतने लोगो को तुम तलवार के घाट उतार चुके, मगर अटपटा तुम्हें अब भी लगता है···आखिर क्यो ? तुम्हारे पास दिल नही है···दिल की जगह जँगलगा लोहे का एक ढोका है।"

चुमाकोव का चेहरा तमतमा उठा। उसने फोमीन की ओर क्रोध से नज़र गड़ाकर देखा और बोला—"इस वक्त मुझसे मत उलझो, याकोव-येफ़िमोविच ! मुझे छेड़ोगे तो मैं तुम्हे ठिकाने लगाकर छोडूँगा ···हाँ, तुम्हे भी ठिकाने लगा दूँगा·· और, सो भी बड़ी ही आसानी से देखते-देखते।"

"तुमसे भला क्यों उलझूँगा मैं ! मुझे अपनी ही परेशानियाँ कौन कम हैं !" फोमीन ने समझौता-सा करते हुए कहा और धूप के कारण आखें सिकोड़ते हुए पीठ के बल लेटकर आराम से हाथ-पैर फैला लिए।

: १६ :

ग्रिगोरी की आशा के विरुद्ध अगले दस दिनों के दौरान चालीस

से अधिक कज्जाक फोमीन के दस्ते मे आ शामिल हुए। ये सोवियत सेनाओ द्वारा तार-तार कर दिए गए छोटे-छोटे दस्तो के बचे-खुचे लोग थे। इनके नेता रह गए थे और पूरे इलाके मे जहाँ-तहाँ मारे-मारे फिरते थे। इनके सामने कोई उद्देश्य न रह गया था, और इसीलिए ये बडी खुशी-खुशी फोमीन से आ मिले थे। उनके लिए सब-कुछ बराबर था। वे किसीकी मातहत रह सकते थे और किसी को भी तलवार के घाट उतार सकते थे। चाहते सिर्फ इतना थे कि खानाबदोशो की-सी आजाद जिन्दगी बिताते रहे और जो हाथ आ जाए उसे लूटते-खसोटते रहे। इनमे से कितने ही लोग देखने मे छँटे हुए गुण्डे लगते थे। यही कारण है कि फोमीन ने इन्हे देखा तो नफरत से भरकर ग्रिगोरी से बोला—"मेलेखोव, हमारे दस्ते मे शामिल होने वाले ये तमाम लोग हर तरह गए-बीते है ··इन्सान नही है। ये तो फाँसी के तख्ने और फाँसी के फदे के लिए चुने गए लोग है।"

बात यह है कि फोमीन अपने अन्तरतम मे अपने को अब भी मेहनतकशों के लिए लड़ने वाला समझता था और पहले की तरह तो अक्सर नही, लेकिन फिर भी जब-तब कहता था—"हम कज्जाको को आज़ादी दिलाने वाले लोग है।" वह बेहूदी-से-बेहूदी आशा को सीने से लगाकर रखता था, सच्चाई को साफ नकार जाता था, अपने साथियो द्वारा की गई लूट-पाट से आँख बचा जाता था और कहता था—"यह सारा तूफान जरूरी है···इस सूरत से मुझे समझौता करना चाहिए··· हाँ जल्दी ही वह वक्त आएगा जब लूटपाट करने वाले इन लोगो से छुटकारा ले लूंगा, और डाकुओ के महज़ एक छोटे दस्ते का अतामान न रहकर, बागी फौजो का सच्चा कमाण्डर बन जाऊँगा।"

···लेकिन चुमाकोव तो अब भी सकोच न करता, फोमीन के सभी साथियो को लुटेरे डाकुओ की सज्ञा देता और पूरी आवाज़ से बहस-करखुद फोमीन को लुटेरा और डाकू साबित करता। कहता—"तुम और कुछ हो ही नही सकते···हॉ काम जरा बडे पैमाने पर करते हो।" यानी वे दोनो जब भी एक-दूसरे को अकेले मिलते, उनमे धुआँधार बहस छिड़ जाती और वे आपे से बाहर होते।

फोमीन गुस्से से लाल होते हुए चीखता—"मेरी लडाई तो सोवियत हुकूमत से है और यह उसूल की लडाई है···और तुम हो कि मुझे जाने क्या समझते हो। बेवकूफ कही के, तुम्हारी समझ मे यह नही आता कि मैं एक खास खयाल को लेकर अपनी लड़ाई चला रहा हूँ ?"

चुमाकोव जवाब देता—"मुझे चकमा देने की कोशिश न करो, और न मेरी आँखों पर पर्दा डालो। मैं कोई बच्चा नही हूँ कि तुम मुझे जो चाहोगे सो समझा दोगे। उसूल···फु। तुम तो पैदाइशी डाकू हो··· और सिर्फ डाकू हो। और अगर हो तो मेरी समझ मे नही आता कि इस लफ्ज से इस तरह भडकते क्यो हो ?"

"क्योकि यह बेइज्ज़ती की बात है। 'तेरी जबान कटकर गिर जाए।···मैंने सरकार के खिलाफ सिर उठाया है और सरकार के खिलाफ हथियार उठाए हैं·· इतने से ही तो मुझे डाकू नहीं कहा जा सकता।"

"बिल्कुल इसीलिए डाकू हो तुम ! सरकार के खिलाफ लडने की वजह से ही डाकू कहा जाना चाहिए तुम्हे। लुटेरे और बटमार शुरू से ही सरकार के खिलाफ रहे है। कोई सवाल नही कि सोवियत सरकार क्या है और कैसी है···वह एक सरकार है, १९१७ से काम कर रही है और जो भी उसके खिलाफ़ क़दम उठाता है, वह सिर्फ लुटेरा है, डाकू है।"

"तुम तो बहुत ही काठ के उल्लू निकले ! अच्छा, जनरल क्रासनोव और देनीकिन···वे भी बटमार और डाकू थे ?"

"और क्या थे वे ? वे लुटेरे थे ··सिर्फ यह कि उनके कन्धों पर फौजी पट्टियाँ थी···और, फौजी पट्टियो से कोई खास फर्क नही पडता··· तुम्हारे और मेरे कन्धो पर भी वे पट्टियाँ हो सकती हैं।"

फोमीन हाथ पटकता, थूकता और कोई कारगर दलील न सोच पाकर बेकार का झगड़ा खत्म कर देता। सोचता—'चुमाकोव से बहस करने से फ़ायदा ?'

तो, जो लोग दस्ते मे आ शामिल हुए थे, उनमे से अधिकाश के पास क़ायदे के कपड़े और शानदार हथियार थे। लगभग सभी के

पास ठाठ के घोडे थे। ये घोडे बिना रुके चलते जा सकते थे और एक सौ वर्स्ट आसानी से तय कर सकते थे। इनमे से कुछ लोगो के पास दो-दो तक घोडे थे। एक पर वे सवारी करते थे तो दूसरा बगल-बगल चलता था। जरूरत पडने पर वे एक से उतरकर दूसरे पर सवार हो जाते थे। इस तरह दोनो को ही पारी-पारी से आराम मिल जाता था और दो घोडे वाले लोग एक दिन मे दो सौ वर्स्ट की मजिल मार लेते थे।···

ऐसे ही एक दिन फोमीन, ग्रिगोरी से बोला—"अगर शुरू से ही हममे से हरएक के पास दो-दो घोडे होते तो दुनिया मे कोई ताकत ऐसी न होती जो हमे पकड लेती। मिलिशिया और लाल फौजी न लोगो से घोडे छीनते है और न उन्हे यह पसन्द है। लेकिन हम तो जो मन मे आए, वह कर सकते है। हमे अपने हर आदमी के लिए एक फालतू घोडे का इन्तजाम करना चाहिए। मैं कहता हूँ कि इतना हो जाए तो दुश्मन हमे क्या ही पकड पाए। अपने बूढे सयाने बतलाते है कि तातार इसी तरह धावे बोलते थे। उनमे से हरएक के पास कम-से-कम दो घोडे होते थे। कभी-कभी तीन भी होते थे। ऐसे घुडसवार किसके हाथ आ जाते भला? और अब हमे भी यही करना चाहिए। तातारो की अक्ल का मैं बडा कायल हूँ।"

और इन लोगो ने जल्दी ही और घोडे हथिया लिए और वे कुछ समय तक सचमुच ही दुश्मन के हाथ नही आए। व्येशेन्स्काया मे नए सिरे से सगठित मिलिशिया के लोगो ने उन्हे पकडने की बडी कोशिश की। पर, मेहनत बेकार गई। फोमीन के साथियो ने, गिनती मे कम होने पर भी फालतू घोडो की मदद से बडी ही आसानी से दुश्मन के छक्के छुडा दिए। वे काफी आगे रहे। इस तरह खतरनाक मुहिम का कोई मौका ही नही आया।

लेकिन इस पर भी मई के मध्य मे फोमीन के दस्ते से लगभग चौगुनी सेना ने दोन के सामने, उस्त-खोपरस्काया ज़िले के बोवरोवस्की गाँव के पास दस्ते को घेर लिया। परन्तु थोडी लडाई के बाद दस्ते के लोग कतार भेदकर नदी के किनारे की ओर भाग निकले। इस सिलसिले मे उनके आठ आदमी मारे गए और घायल

हुए। इसके थोडे समय बाद फोमीन ने ग्रिगोरी से चीफ-ग्रॉफ-स्टाफ का पद सम्हालने को कहा। बोला—"हमे किसी पढे-लिखे ग्रादमी की जरूरत है, ताकि हम एक नक्शा बनाकर चल सके, वरना एक-न-एक दिन दुश्मन हम पर हावी हो जाएँगे और हमे झकझोरकर रख देंगे। यह जिम्मेदारी तुम अपने ऊपर ले लो, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच!"

ग्रिगोरी ने जरा मौज मे आते हुए कहा—"मिलिशिया के लोगो को पकडने और उनके सिर धड से अलग करने के लिए चीफ-ग्रॉफ-स्टाफ की जरूरत नही।"

"हर फौजी टुकडी का अपना एक स्टाफ होना चाहिए।"

"वैसे अगर स्टाफ के बिना तुम्हारा काम नही चलता हो, तो चुमाकोव को बना दो स्टाफ।"

"लेकिन तुम इस जिम्मेदारी से क्यो बचना चाह होते ?"

"मुझे पता ही नही कि उसके मानी क्या होते है ?"

"और चुमाकोव जानता है।"

"नही, जानता तो चुमाकोव भी नही।"

"तब फिर इस काम के लिए तुम उसका नाम क्यों ले रहे हो ? तुम फौजी अफसर हो, और तुम्हे तो इसकी जानकारी होनी चाहिए। लडाई के सारे दाव पेच वगैरह तुम तो जानते ही होगे।"

"जैसे तुम इस दस्ते के कमाडर हो, बिल्कुल वैसा ही मैं फौजी अफसर रहा हूँ। हमने तो सिर्फ एक दाव-पेच जाना है, और वह यह कि पूरे स्तेपी का चक्कर काटो और आँखे हर वक्त खुली रखो।" ग्रिगोरी ने व्यग्य से कहा।

फोमीन ने ग्रिगोरी की ओर देखकर आँख मारी और उँगली से धमकी दी।

"मैं तुम्हारी बात समझ गया। अपने को आड मे रखना चाहते हो। सामने आना नही चाहते। इससे बच नही सकोगे, मेरे भाई! क्या फर्क पडता है कि तुम ट्रुप-कमान्डर हो या चीफ-ग्राफ स्टाफ। तुम्हारा खयाल है कि तुम दुश्मनो के हाथ लग जाओगे तो वे तुम्हारे साथ किसी तरह की रू-रियायत बरतेंगे ? खैर न मानते हो तो न मानो, मौका पडने पर देख लेना।"

"यह तो बात ही मेरे दिमाग मे नही आई·· गलत सोच रहे हो तुम।" ग्रिगोरी ने अपनी तलवार की मूँठ पर नजर गडाते हुए कहा—"लेकिन जिस काम के बारे मे मै कुछ नही जानता, उसे अपने हाथ मे ले नही सकता।"

"खैर अगर तुम नही चाहते तो न सही। हमारा तुम्हारे विना भी जैसे-तैसे काम चल ही जाएगा।" फोमीन ने क्रुद्ध होते हुए कहा।

इस बीच इलाके मे स्थिति पूरी तरह बदल गई। जो खाते-पीते कज्जाक फोमीन का पहले खुले दिल से स्वागत करते थे, उनके दरवाज़े उसके लिए बिल्कुल बन्द हो गए। अब दस्ता जब भी किसी गाँव मे पहुँचा, वहाँ के घरो के मालिक जल्दी-जल्दी इधर-उधर हो गए और बाग-बगीचो मे जा छिपे। व्येशेन्स्काया आने पर क्रान्तिकारी अदालत के लोगो ने फ़ोमीन की खातिर करने वाले कितने ही कज्ज़ाको को कडी-से-कडी सज़ा दी। फिर इसकी खबर हवा की तरह अलग-अलग ज़िलो मे फैल गई, और उसका असर इन लुटेरो की तरफ खुल्लमखुल्ला दोस्ती का हाथ बढाने वाले लोगो पर भी पडा।

फोमीन ने एक पखवारे के अन्दर-अन्दर ऊपरी दोन के सभी जिलो का दूर-दूर तक दौरा कर डाला। अब तक दस्ते के तलवार-बन्द लोगो की गिनती एक सौ तीन तक पहुँच गई और उनका पीछा करने वाले भी कुछ इने-गिने घुडसवार ही न रह गए, बल्कि दक्षिणी मोर्चे से भेजी गई तेरहवी घुडसवार रेज़ीमेट की कई स्क्वैड्रने उस काम मे लग गईं।

फोमीन के दस्ते मे हाल मे शामिल होने वाले लोग इलाके के अलग-अलग हिस्सो के थे और चक्करदार सडको से दोन तक पहुँचे थे। इनमें से कुछ लोग कैदियो के गिरोह, जेलखानो और जेल के कैम्पो से एक-एक कर भाग आए थे। लेकिन ज्यादातर लोग या तो कई दर्जन घुडसवारो के मिले-जुले दल के सदस्य थे, या तौर-तार हो गए और कुरोचकिन-दस्ते के बचे हुए आदमी थे। घुडसवार मास्लाक से कट गए थे और अपनी इच्छा से अलग-अलग टुकडियो मे बँट गए थे, पर कुरोचकिन दस्ते के लोगो ने इस तरह बिखरना पसन्द न किया था। उन्होने अपनी एक टुकड़ी अलग बना ली थी, अपने को एक दृढ सूत्र मे बाँध लिया था और अनेप

को दस्ते के दूसरे लोगो से अलग-थलग रखा था। फिर क्या लडाई के समय और पडावो के वक्त, उनका अपना हिसाब अलग ही रहा था ? यही नही, जब भी उन्होने कोई सहकारी दूकान या गोदाम लूटा था, लूट का पूरा माल एक जगह जमा किया था और फिर, पूर्ण समानता सिद्धान्त के आधार पर, उसे आपस मे बराबर-बराबर बाँट लिया था।

···फटे-पुराने सिरकैशियन कोटो से लैस, तेरेक और कुबान के कई कज्जाको, दो कालमीको, जाँघो तक पहुँचने वाले हटिंग बूटो के एक लातवियन और धारीदार जर्सियो और नौसैनिको के बदरंग किटो वाले पाँच नौ-सैनिक अराजकतावादियो के कारण फोमीन के दस्ते मे विविधता आ गई थी। दस्ता रग-बिरगा हो उठा था।

चुमाकोव ने एक दिन पूरी कतार पर नजर दौडाते हुए फोमीन से कहा—"तुम अब भी कहोगे कि तुम्हारी कमान मे लुटेरे और डाकू नही हैं ? क्या नाम दोगे तुम इन तमाम लोगो को ? किसी खास उसूल के लिए लडने वाले हैं ये सब ? बस बिना फ्रॉक वाले एक पादरी और पतलूनो मे सजे-बजे कुछ सूअरो की कसर है···ये और आ जाएँ तो दस्ता पहुँचे हुए फकीरो की एक जमात हो जाए।"

फ़ोमीन ने बात अनसुनी कर दी। वह तो अधिक-से-अधिक लोगो को अपने दस्ते में शामिल करने में उलझा रहा और स्वयसेवको को स्वीकार करते समय उसने किसी भी बात की तरफ कोई ध्यान नही दिया। वह अपनी कमान में आने की इच्छा रखने वाले हर आदमी से खुद सवाल-जवाब करता और रुखाई से कहता—"तुम बिलकुल ठीक हो। मैं तुम्हें लूँगा। अब जाकर मेरे चीफ-ऑफ-स्टाफ चुमाकोव से मिलो। वह तुम्हे किसी खास ट्रूप मे भेज देगा और हथियार दे देगा।"

इसी सिलसिले मे मिगुलिन्स्काया जिले के एक गाँव मे शानदार कपडो और घुँघराले बालो वाला एक साँवला, कम उम्र जवान फोमीन के पास लाया गया। जवान ने फोमीन के दस्ते मे शामिल होने की ख्वाहिश जाहिर की। पूछताछ के बाद पता चला कि वह रोस्तोव का रहने वाला है, हथियारबन्द डकैती के मामले मे हाल में सजा पा चुका

है, परन्तु रोस्तोव जेल से भाग निकला है, और फोमीन का जिक्र सुनकर ऊपरी दोन के इस इलाके मे चला आया है। ··

फोमीन ने उससे पूछा—"कहाँ के हो ? आर्मीनिया के या बुलगारिया के ?"

"मै यहूदी हूँ", लडके ने जरा परेशानी के साथ जवाब दिया।

इस पर फोमीन आश्चर्य से अवाक् रह गया, कुछ देर तक उसके मुँह से बोल न फूटा, और उसकी समझ मे न आया कि इस अप्रत्याशित परिस्थिति मे करे तो करे क्या !

थोडा सोचने के बाद उसने एक लम्बी साँस भरी और बोला—"खैर, तुम अगर यहूदी हो तो हो। हम यहूदियो पर भी नाक नही चढाते। हमे एक आदमी और मिला। पर घुडसवारी कर लेते हो तुम ?··· नही कर सकते ? कोई बात नही, सीख लोगे। तुम्हे कोई सीधी किस्म की घोडी दे दी जाएगी, और तुम्हे यह काम भी आ जाएगा। फिलहाल चुमाकोव के पास जाओ ··वह तुम्हे किसी-न-किसी ट्रुप मे भेज देगा।"

और कुछ क्षणो के बाद ही क्रोध से लाल चुमाकोव घोडा दौडाता, फोमीन के पास आया और रासे खीचकर जानवर को पिछले पैरो के बल खडा करता हुआ बोला—"तुम पागल हो गए हो या महज मज़ाक सूझा है तुम्हे ? यह यहूदी क्यो भेज दिया तुमने मेरे पास ? मैं उसे कबूल नही करूँगा·· जहाँ कही उसका सीग समाए, वहाँ चला जाए।"

फोमीन ने शात भाव से कहा—"ले लो उसे···ले लो·· हमारे दस्ते मे एक आदमी और बढेगा।"

परन्तु चुमाकोव के मुँह से गुस्से के मारे झाग निकलने लगा और वह चीखा—"मैं नही लूंगा उसे···मैं उसे जान से मार डालूंगा, मगर दस्ते मे शामिल नही करूँगा···कज्ज़ाक उसे लेकर आसमान सिर पर उठा रहे हैं·· तुम जाओ और खुद बात करो उनसे।"

मगर इधर बहस और गरमागरमी चलती रही, और उधर कज्ज़ाको ने उस यहूदी को एक मालगाडी के पास घर पकड़ा और उसके बदन

की कसीदेकारी की कमीज और सूती पाजामा उतार लिया। एक कज्ज़ाक ने कमीज खुद पहनते हुए कहा—"गाँव के पार वह···वहाँ पुरानी झाडी नज़र आती है तुम्हे! बस तो दुलकी चाल से दौडते हुए जाओ, और वहाँ लेट रहो ··यानी तब तक लेटे रहो जब तक कि हम यहाँ से चले न जाएँ···उठना सिर्फ हमारे जाने के बाद—और जहाँ चाहो वहाँ चले जाना···वैसे अब हमारे पास आने की हिम्मत न करना, वरना मार डाले जाओगे। बेहतर तो यह है कि तुम रोस्तोव लौट जाओ, अपनी अम्मीजान के पास! लडना यहूदियो के बस का नही है। आसमान वाले ने तुम्हें तिजारत सिखाई है, लडाई नही। लड़ाई हम तुम्हारे बिना भी चला लेंगे।"

इस तरह उस यहूदी को तो नही लिया गया, मगर उसी दिन कज्जाको ने व्येशेन्स्काया ज़िले के सभी गाँवो के लोगो के परिचित, 'अक्ल के धनी' पाशा को पकडा और हँसी से लोटपोट होते हुए दूसरे ट्रूप मे भेज दिया।

हुआ यह कि उसे स्तेपी मे पकडा गया, गाँव लाया गया और एक मृत लाल सैनिक की वर्दी ठाठ से पहनाई गई। इसके बाद कज्ज़ाको ने उसे राइफल चलाकर दिखलाई और बहुत देर तक तलवार चलाना सिखलाया।

ग्रिगोरी अपने घोडों की तरफ बढा कि उसने भीड़ जमा देखी और वह इधर ही चल पडा कि आखिर बात क्या है? फिर हँसी के ठहाके उसके कानो मे पडे तो उसने कदम और तेज़ी से बढाए। इसी समय पूर्ण शाति के बीच उसने किसी के निर्देश से भरे स्वर सुने—"नही, ऐसे नही पाशा! ऐसे तलवार कौन चलाता है? इस तरह तो लकडी-भर कट सकती है, आदमी नही। इस तरह चलाओ···इस तरह···देखा? जब किसी को पकडो तो उसे फौरन घुटनों के बल बैठने का हुक्म दो वरना अगर वह खडा रहेगा तो थोड़ी मुश्किल होगी···फिर···तुम यों ···यों पीछे से आकर उसकी गर्दन पर भरपूर वार करो···कोशिश करो कि हाथ सीधा न पड़कर ज़रा तिरछा पडे···।"

'बुद्धि का धनी' पाशा, डाकुओं से घिरा, अपनी नंगी तलवार की

मूँठ पकड़े अर्टेशन खड़ा रहा और मुस्कराकर खूबसूरती से अपनी उभरी हुई भूरी आँखें सिकोडते हुए निर्देशक कज्जाक की बाते सुनता रहा। उसके होठो के कोनो से यो पानी टपकता रहा जैसे कि वह कोई घोडा हो और उसके मुँह मे कोई झागदार खाने की चीज़ हो। थूक ताम्बे के रँग की दाढी से बह-बहकर सीने पर आता रहा कि सहसा ही उसने अपने गन्दे होठ चाटे और तुतलाते हुए बोला—"मैं सब-कुछ समझ गया···प्यारे—भाई···अब बिलकुल ऐसे ही करूँगा सब-कुछ··· जब भी किसी को कैद करूँगा घुटनो के बल बिठा लूँगा। और ऐन गर्दन पर तलवार जमाऊँगा···मगर सुनो, तुम लोगो ने मुझे पतलून, कमीज़ और बूट तो दिए, पर कोट नही दिया···कोट मेरे पास नही है ··वह भी दे दो तो मैं तुम्हारा जी खुश करके दिखा दूँ ! पूरी ताकत लगा दूँ अपनी।"

एक कज्जाक बोला—"कोई कमीसार मार डालो कही, कोट भी हो जाएगा···लेकिन ज़रा यह बतलाओ कि पिछले साल तुमने शादी किस तरह की ?"

पाशा की फैली-फैली-सी झलाझल आँखो मे जैसे कोई दहशत झलकी। उसने एक झटके मे अनगिनत गालियाँ दे डाली और फिर हँसी के ठहाको के बीच जाने कहाँ की कहानी सुनाने लगा। ग्रिगोरी को पूरा दृश्य ऐसा घिनौना लगा कि वह सिर से पैर तक गनगना उठा और तेजी से मुड गया। उसका मन अपने प्रात और अपनी आज की गई-बीती जिन्दगी के प्रति घृणा से भर उठा। उसने मन-ही-मन सोचा—'और ऐसे लोगो की किस्मत के साथ अपनी किस्मत नत्थी कर रखी है मैंने !'

वह घोडो के खूँटो के पास लेट गया, और उसने उस बुड्ढे की चीख-पुकारो और कज्जाको की गगन-भेदी हँसी को अनसुना करने की कोशिश की। साथ ही खा-पीकर मस्त नजर आते घोडो की तरफ देखते हुए फैसला किया—'मै कल यहाँ से निकल भागूँगा···अब और नही चलेगा—।"

इसके बाद उसने बहुत ही सावधानी और समझ-बूझ से दस्ता

छोडने की तैयारी की। मिलिशिया के उशाकोव नाम के एक मृत सिपाही के कागजात उसने पहले ही लेकर अपने बरानकोट के अस्तर मे सी लिए थे। कोई दो सप्ताह से अपने घोडो को सरपट दौड के लिए तैयार करता रहा था। उसने उन्हे समय से पानी पिलाया था, बडी मेहनत से खरहरा किया था। और सही-गलत ढग से जैसे भी हुआ हर रात उनके लिए दाना मुहय्या किया था। नतीजा यह कि उसके घोडे बाकी सभी घोडो से कही अच्छी हालत मे थे, और उन्हे देखकर पूरा भरोसा बँधता था कि कोई कितना ही पीछा करे, सवार को पा नही सकता।

तो ग्रिगोरी उठा, पास की झोपडी मे गया और खत्ती की ड्योढी पर बैठी वृद्धा से आदर से बोला—"हँसिया है, दादी ?"

"था तो एक हँसिया घर मे, पर पडा जाने कहाँ है! ऐसी क्या ज़रूरत आ पडी हँसिए की ?"

"तुम्हारी बगिया से अपने घोडो के लिए थोडी हरियाली काटना चाहता था···काट लूँ ?"

बुढिया थोडा सोचने के बाद बोली—"हमारी गरदनो से कब बोझ उतरेगा तुम लोगों का! आज तो यह कुछ नहीं है, लेकिन कभी यह दे दो तो कभी वह दे दो। एक झुड आता है और अनाज की माँग करता है। दूसरा गिरोह आता है और जिस चीज़ पर नज़र पड़ती है, उसे ही घसीट ले जाता है। मैं हँसिया नही दूँगी तुम्हे···तुम्हारा जो जी आए, सो करो···पर हँसिया हरगिज़ नहीं दूँगी मैं।"

"घास की ही तो बात है, थोडी-सी ले लेने दो, बुढिया माँ!"

"तुम्हारा खयाल है कि नंगी जमीन मे अब और घास उगेगी? अपनी गाय को भला क्या खिलाऊँगी मैं ?"

"यानी स्तेपी मे घास ही नही है ?"

"तो जाओ स्तेपी मे और काट लाओ वहाँ से, साहबज़ादे! मैदान में तो घास ही घास है।"

ग्रिगोरी ने खीझते हुए कहा—"दादी, बेहतर यही है कि तुम मुझे हँसिया दे दो और मैं थोड़ी-सी घास काट लूँ। बाक़ी ज्यों-की-त्यो रह

जाएगी। वरना, अगर हमने अपने घोडे कही छोड दिए तो तुम्हारी बगिया मे घास की एक पत्ती बाकी न बचेगी।"

बूढिया ने ग्रिगोरी की तरफ तेज निगाहो से देखा, रास्ते से हट गई और बोली—"जाओ और हँसिया उठा लो खुद···शेड मे टँगा होगा कही।"

ग्रिगोरी को शेड मे एक टूटा हुआ हँसिया मिला और वह बगल से गुजरा तो बुढिया के शब्द उसके कानो मे पडे—"तुम्हे मौत भी नही पूछती···भाड मे जाओ तुम!"

परन्तु ग्रिगोरी इसका आदी हो गया था। दस्ते के बारे मे कज्ज़ाक क्या सोचते है, यह बात वह एक अरसे से जानता था। सो सफाई से घास, जड-सहित काटते हुए उसने सोचा—'ये लोग भी अपनी जगह ठीक ही तो सोचते है। हमसे उन्हे क्या फायदा? हमारी ज़रूरत किसी को भी तो नही। हम हर एक के आराम से जीने और चैन से काम करने के आडे ही तो आते है। अब यह सब खत्म होना चाहिए, और जल्द-से-जल्द खत्म होना चाहिए···।'

और अपने विचारो मे डूबा, वह घोड़ो को दूब की कोमल पत्तियाँ अपने काले, मखमली होठो से उठाते हुए देखता रहा। फिर उसका यह तार तोडा जवानी से उमडती एक भारी आवाज़ ने—"कैसा शानदार घोडा है! घोडा है कि हस है सचमुच!"

ग्रिगोरी ने बोलने वाले की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि फोमीन के दस्ते मे हाल मे शामिल होने वाला एक कमउम्र कज्ज़ाक उसके भूरे घोडे को एकटक देख रहा है और गद्‌गद भाव से सिर हिला रहा है।

कज्जाक ने घोडे को मुग्ध मन से देखा और जीभ चटकाते हुए उसके चारो तरफ कई चक्कर काटे। पूछा—"यह घोडा तुम्हारा है?"

"क्यो? क्या बात है?"

"आओ, अदला-बदली कर लें। मेरे पास दोन की खालिस नस्ल का एक कुम्मैत घोडा है। वह बडी-से-बडी अड़चन पार कर सकता है और बड़ा ही जानदार है। जानदार तो इतना है कि तुम्हे आसानी से

यकीन नहीं आएगा। यह समझो कि बिजली है···बिलकुल बिजली!"

"ऐसी-तैसी मे जाओ तुम!" ग्रिगोरी ने उत्साहरहित मन से कहा।

कज्जाक एकाध क्षण तक तो चुप रहा, मगर फिर लम्बी आह भरकर पास ही बैठ गया, बहुत देर तक घोडे को घूरता रहा और फिर बोला—"तुम्हे पता है, इस घोडे को हँफनी छूटती है।"

ग्रिगोरी कुछ नहीं बोला और एक तिनके से दांत कुरेदता रहा। यह सीधा-सादा लडका जैसे उसके मन मे जगह करने लगा।

लडके ने ग्रिगोरी की ओर मिन्नत-भरी नजरो से देखा और शातभाव से पूछा—"अदला-बदली नही करोगे, चाचा?"

"नही···बिलकुल नही करूँगा···अपने घोडे के साथ तुम अपने को भी जोड दो। तो भी नही करूँगा।"

"लेकिन यह घोडा तुम्हे मिला कहाँ?"

"मैंने ईजाद किया है इसे।"

"हटाओ भी, ठीक-ठीक बतला दो न!"

"तो यह घोडा भी वैसे ही मिला, जैसे आम तौर पर घोडे मिलते हैं···किसी घोडी ने पैदा किया इसे भी!"

"ऐसे बेवकूफ आदमी से बात करने से कोई फायदा नही," लड़के ने खीझते हुए कहा और वहाँ से हट गया।

···ग्रिगोरी के सामने पूरा गाँव, मुर्दे की तरह वीरान और बेजान पड़ा रहा। फोमीन के लोगों के अलावा कही कोई नजर नही आया। गली में यों ही छोड़ दी गई एक गाडी, अहाते मे चिराई के लिए तैयार लकडी के एक कुदे, उसमे हडबडी मे गडा दी गई कुल्हाडी, आधे रदे के बाद छोड दिए गए, पास ही पडे लकडी के एक तख्ते, सडक के बीचोबीच घास की छोटी-छोटी पत्तियाँ, सुस्ती से चरते, बंधे हुए बैलो और कुएँ की जगत के पास औंधी पड़ी एक बाल्टी ने जैसे चिल्ला-चिल्लाकर कहा कि गाँव की जिन्दगी और चैन की साँस किसी ने एकदम घोट दी है, गाँववालों ने अपने-अपने काम अधूरे छोड़ दिए हैं, और वे जाकर जहाँ-तहाँ छिप गए हैं।···

···आज तो बात ग्रिगोरी के अपने देश की थी और उसे यहाँ यह

दिन देखना पडा था। परन्तु ऐसा ही अनुभव उसे एक बार और भी हुआ था। यानी, जब कज्जाक-रेजीमेंटों के घुडसवारो ने पूर्व-प्रशिया मे प्रवेश किया था, तो भी लोग इसी तरह टूटे थे और इसी तरह मायूस होकर सिर पर पैर रखकर भागे थे। उस समय जर्मनो ने उसका स्वागत तो किया था, पर निगाहो से उस पर उदासी और नफरत बरसाई थी। और, आज बिलकुल वही ऊपरी दोन के कज्जाक कर रहे थे।···

ग्रिगोरी को बुढिया का एक-एक शब्द याद आया और कमीज़ के कॉलर का बटन खोलते हुए उसने दर्द से चारो ओर नज़र दौडाई। पुरानी पीर आज फिर दिल को कुरेदने और कचोटने लगी।

सूरज धरती पर आग बरसाता रहा। गर्द, कुत्ताघास और घोडो के पसीने की बू जैसे गली की हवा मे लटकी रही। बगिया मे टूटे-फूटे बसेरों से लदे, लम्बे-चौडे बेतो पर कौए कॉव-कॉव करते रहे। घाटी के कही ऊपर के पानी से लबालब, एक जलधारा धीरे-धीरे बहती और गाँव को बीच से बाँटती रही। पानी की तरफ ढालू कज्जाको के अहाते घनी बगीचियो से भरे रहे। चेरी के पेडो की पत्तियाँ झोंपडियो की खिडकियो पर आड किए रही। सेब के पेड अपनी शाखो की लम्बी बाँहे बढाकर अपनी हरी पत्तियो और फलो की एक झाँकी सूरज को देते रहे।

ग्रिगोरी ने जगलीझाडी से भरे अहाते, पीली झिलमिलियो और फूस के छप्पर वाली झोपडी और कुएँ के दमकले पर एक धुँधली नज़र डाली। खलिहान के पास, टहनियो की पुरानो बाड के एक खूँटे के ऊपर घोडे की पानी से गली एक खोपडी टँगी दीखी। उसकी आँखो के खाली गढो मे सिपाही जमुहाई लेती लगी। उसी खूटे पर लौकी की हरी बेल चक्कर काटकर प्रकाश की ओर बढती नजर आई। सिरे पर उसके तन्तु खोपडी के दाँतो और उभरे हुए हिस्सो से चिपटे मालूम हुए और उसका आज़ाद सिरा, सहारे की तलाश मे, पास के गुलदार के झाड की ओर हाथ बढाता समझ पडा।

ग्रिगोरी को यह तो याद आया कि यह सब उसने पहले भी देखा

है, पर यह स्पष्ट न हुआ कि कभी सपने मे देखा है या दूर छूट गए बचपन मे देखा है। सो, भावावेश-भरे कलप ने सहसा ही उसे जकड़ लिया। वह बाड़ के नीचे, सीने के बल लेट गया और हथेली से चेहरा ढककर जाने कब तक पडा रहा। उठा केवल तब जब उसके कानो मे ज़ोर की आवाज पडी—'अपने-अपने घोडो पर सवार हो जाओ!"

उस दिन रात को मार्च करते-करते वह, कतार से अलग हो गया जैसे कि काठी ठीक करने के लिए नीचे उतरा और फिर एक जगह खड़ा होकर घोडों की दूरी में डूबती टपाटप सुनता रहा। इसके बाद उछलकर घोडे पर सवार हुआ और फिर सडक से समकोण बनाते हुए जानवर को सरपट दौड़ा चला।

कोई पाँच वर्स्ट तक उसने अपने घोडो को अंधाधुध दौडाया और नाम को भी दम नही लिया। मगर, फिर घोडा क़दम चाल मे डाल लिया और आहट लेने लगा कि कोई पीछा तो नही कर रहा है? पर, स्तेपी मे हर ओर सन्नाटा भाँय-भाँय करता रहा। बलुहे खड्डो मे केवल चहा पंछी एक-दूसरे को दर्द से आवाज देते रहे और कही दूर, बहुत दूर कोई कुत्ता भूँकता रहा।

काले आसमान मे टिमटिमाते सितारो का सोना छिटका रहा। स्तेपी के पूरे मैदान में हर तरफ़ सन्नाटे का राज्य रहा और हवा चिरायते की जंगली और तीखी गंध से भारी-भारी रही।

ऐसे में ग्रिगोरी रकाबों मे पैर जमाकर खड़ा हो गया, और चैन की गहरी साँस लेने लगा।

: १७ :

ग्रिगोरी, तडका होने के बहुत पहले ही, तातारस्की के पहले पडने वाले चरागाह में पहुँच गया और गाँव के नीचे, नदी के उथले पानी के पास कपड़े उतार डाले, फिर, उसने कपडों, बूटो और हथियारों को घोडो के सिरों मे बाँध लिया, कारतूस की थैली दाँतों से जकड ली और जानवरों के साथ तैरना शुरू किया। बर्फ-से ठडे पानी ने बदन छेद-छेद दिया तो अपने को गरम रखने के लिए उसने दायाँ हाथ पूरी तेज़ी से चलाया,

बाएँ हाथ से रासे साध रखी और हीसते और हिनहिनाते घोडो को आगे-ही-आगे खीचता रहा ।

किनारे पहुँचने पर उसने जल्दी-जल्दी कपडे पहने, घोडो के बन्द कसे और एक पर सवार होकर जल्दी-जल्दी गॉव की ओर बढ़ा । बरान-कोट, काठी के पट्टे और कमीज पानी से तर-बतर रही और उसके बदन को ठड से जमाती रही । उसके दॉत कटकटाते रहे, पीठ गनगनाती रही और वह सिर से पैर तक कॉपता रहा । लेकिन, घोडा दौडाने के कारण थोडी देर बाद ही बदन मे गरमी आ गई और गॉव के पास पहुँचने पर वह नीचे उतरकर, पैदल चलने लगा । अब उसने चारो तरफ नज़र गडा-गडाकर देखा, हर चीज की आहट ली और घोडो को नाले मे छोडने का फैसला किया । इसके लिए वह ढालू हिस्से से नीचे उतारा तो ककड घोडो की टापो के नीचे खडखडाए और उनकी नालो की रगड से आग की चिनगारियाँ फूटने लगी ।

उसने अपने बचपन के गवाह एल्म के पेड से घोडे बाँधे और गाँव की ओर चल पडा ।

सामने झलका मेलेखोव-परिवार का पुराना घर, सेब के पेडो का अँधेरा झुरमुट और सप्त-ऋषि की तरफ हाथ उठाए कुएँ का दमकल । ग्रिगोरी उत्तेजना से हाँफने लगा, नदी मे पैठा, बडी सावधानी से रेगता हुआ अस्ताखोव-दम्पती के अहाते के पेडो की टहनियो वाले फाटक में दाखिल हुआ और बिना झिलमिली वाली खिडकी के पास पहुँचा । इस समय सिर्फ अपने दिल की तेज धडकन और अपने दिमाग की नसो मे उमडते खून की तेजी उसे सुन पडी । उसने खिडकी का चौखटा इस तरह धीरे-धीरे खटखटाया कि आवाज उसके कानो मे भी मुश्किल से ही पडी ।

अकसीनिया चुपचाप खिडकी के पास आई, और बाहर झाँककर देखा । सहसा ही उसके हाथो ने सीना जकड लिया और होठो से हलकी कराह निकल गई । ग्रिगोरी ने खिडकी खोलने का इशारा किया और रायफल अपने कधे से उतार ली । अकसीनिया ने खिडकी पूरी तरह खोल दी ।

वह फुसफुसाते हुए बोला—"और धीरे से खोलो···बिल्कुल आवाज़ न हो !···कैसी हो तुम ?···दरवाजा बिल्कुल न खोलो···मैं खिडकी से ही आ जाऊँगा।"

ग्रिगोरी घर की दीवार के उभरे हुए हिस्से पर खडा हुआ तो अकसीनिया ने अपनी नगी बाँहे उसकी गर्दन मे डाल दी। इसके बाद वे प्यारी-प्यारी बेशक़ीमती बाँहे इस तरह काँपीं और सिहरी कि वह कम्पन और सिहरन ग्रिगोरी से भी अनजानी न रही। बहुत ही अस्फुट स्वर मे हकलाते हुए बोला—"अकसीनिया···ठहरो···यह राइफल ले लो ज़रा !"

और अपनी तलवार की मूठ थामकर, खिडकी का दासा पारकर अन्दर जा पहुँचा। उसने अकसीनिया को सीने से लगाना चाहा। लेकिन उसने घुटनो के बल बैठकर उसके पैर पकड लिए और उसके गीले बरानकोट से चेहरा सटा लिया। दबी हुई सिसकियो से बुरी तरह कँपकँपाने लगी। ग्रिगोरी ने उसे उठाकर बेंच पर बिठाया। वह उससे सटकर, अपना चेहरा उसके सीने मे छिपाकर चुप बनी रही, बार-बार सिर से पैर तक सिहरती रही और अपनी सिसकियाँ दबाने और बच्चो की नीद मे बाधा न डालने के खयाल से बरानकोट का सिरा रह-रहकर मुँह मे देती रही।

यानी, ऐसा लगा कि सदा की इतनी मजबूत औरत को भी यातना और दर्द ने तोड़ दिया। उसका अपना जीवन भी पिछले कुछ महीनो से बडा ही कटु रहा था।···ग्रिगोरी ने उसकी पीठ पर फैले बालो और जलते हुए, पसीने से तर माथे पर प्यार से हाथ फेरा। पूछा—"बच्चे ठीक-ठाक है ?"

"हाँ।"

"और, दून्या ?"

"दून्या भी जीती है···सही-सलामत है।"

"मिखाइल घर पर है ?···लेकिन, सम्हलो न···रोना बद करो··· मेरी सारी कमीज़ तर हो गई तुम्हारे आँसुओ से···अकसीनिया···मेरी रानी···बस भी करो न ! आँसुओ का मौका नहीं है···वक़्त बहुत ही

थोडा है·· हॉ, मिखाइल घर पर है ?"

अकसीनिया ने अपना चेहरा पोछा और गीली हथेलियो से ग्रिगोरी को दुलराने लगी। फिर आँसुओ के बीच मुस्कराते और अपने मन के राजा को प्यासी निगाहो से एकटक देखते हुए धीरे से बोली—"अब नही रोऊँगी ' अब बिल्कुल नही रोऊँगी मै···मिखाइल तातारस्की मे नही है···पिछले दो महीनो से व्येशेन्स्काया मे है ··किसी फौजी टुकडी मे काम कर रहा है ··इधर आओ, और जरा बच्चो को तो देखो···हमे तुम्हारे आने की बिल्कुल उम्मीद नही थी···जरा भी उम्मीद नही थी···"

मीशात्का और पोल्युशका, हाथ-पैर फैलाए, आराम से, पलग पर सोते दीखे। ग्रिगोरी ने पास पहुँचकर, झुककर उन्हे देखा, एकाध क्षण ज्यो-का-त्यो खडा रहा और फिर दबे पाँवो लौटकर अकसीनिया के पास आ बैठा। अकसीनया ने पूछा—"तुम कैसे हो ? यहाँ तक किस तरह आए ? और अब तक कहाँ रहे ? मान लो दुश्मन तुम्हे पकड ले तो ?"

"मै तो तुम्हे लेने आया हूँ। मेरा खयाल नही है कि मुझे पकड सकेंगे वे लोग। ··तुम चलोगी मेरे साथ ?"

"कहाँ ?"

"मेरे साथ ! मैं फोमीन के दस्ते मे था, पर अब उससे अलग हो गया हूँ ·तुमने सुनी मेरी बात ?"

"हाँ, सुनी ·पर कहाँ ले चलोगे तुम मुझे ?"

"दक्खिन की तरफ चलेंगे हम दोनो·· कुबान या उससे भी आगे। फिर, जैसे भी बनेगा, हम जिएँगे। खाने-पीने का भी कुछ-न-कुछ इन्त-जाम होगा ही। मैं तो कोई भी काम कर सकता हूँ। मेरे हाथो को जरूरत है काम करने की, लडने की नही···पिछले कुछ महीनो से मेरा दिल इस तरह टूटा-टूटा रहा है कि कुछ न पूछो·· लेकिन, खैर·· ये सारी बाते बाद मै होगी।"

"मगर, बच्चो का क्या होगा ?"

"इस वक्त हम उन्हे दून्या के साथ छोड देंगे·· पीछे देखा जाएगा ···बाद मे उन्हे भी ले जाया जाएगा···क्यो···तुम चलोगी न मेरे

साथ ?"

"ग्रीशा...मेरे मन के राजा...ग्रीशा..."

"नही.. अब नही...अब रोम्रो मत, रानी! बहुत हो लिया। इसके लिए बाद मे बहुत वक्त मिलेगा...फिलहाल...तैयार हो जाम्रो... घोडे साथ है...नाले मे कसे खडे है ..क्यों, तो चलोगी न.. ?"

"क्यो...चलूँगी क्यो नही।" अकसीनिया अचानक ही जोर से बोली, पर आशका से भरकर होठो पर हाथ रखने के बाद सोते हुए बच्चो की ओर देखने लगी। फिर फुसफुसाती हुई बोली—"तुमने क्या सोचा था ? अकेलेपन से तार-तार मेरी यह जिन्दगी कोई बहुत रस से भरी है क्या ? ग्रीशा, मेरे राजा, मै चलूँगी.. जरूर चलूँगी...तुम्हारे पीछे-पीछे पैदल चलूँगी...तुम्हारे पीछे-पीछे रेंग-रेंगकर मजिल पार करूँगी, मगर यहाँ अब किसी तरह नही रहूँगी...तुम्हारे बिना रह भी नही सकती...तुम मुझे अपने हाथो से मार डालो, मगर अब यहाँ मत छोडो।"

अकसीनिया ने ग्रीशा को पास खीच लिया। ग्रीशा ने उसे चूमा और तेजी से खिडकी पर एक निगाह डाली, जैसे कि कहना चाहता हो, गर्मी की रातें छोटी होती हैं...जल्दी करो न !

अकसीनिया बोली—"क्यो न लेट रहो और आराम कर लो थोडा-सा ?"

ग्रीशा घबराकर चिल्ला उठा—"आखिर तुम्हारे दिमाग मे है क्या? तडका होने का वक्त हो रहा है। हमे जल्दी-से-जल्दी चलना चाहिए यहाँ से। तुम कपडा पहनो और जरा दून्या को बुला लाम्रो। उससे बातें कर ली जाएँ। हमे अँधेरे-ही-अँधेरे सुखोइ-घाटी पहुँच जाना चाहिए। दिन हम जगल मे बिताएँगे, सफर रात मे करेंगे...तुम घोड़े पर तो चढ सकती हो न ?"

"अरे, जैसे भी होगा, चली चलूँगी मैं, और घोडे पर सवार होने मे तो बहुत हो खुशी होगी मुझे। लेकिन, मुझे बराबर लग रहा है कि कही मैं सपना तो नही देख रही। मैं तुम्हे तो अक्सर सपने मे देखती हूँ, लेकिन हर बार नए होकर आते हो तुम मेरे सामने।" उसने, दाँतों मे

बाल-पिनें दबाकर, जल्दी-जल्दी बाल काढे और इतने धीरे-धीरे बाते की कि ग्रिगोरी की समझ मे कुछ भी नही आया। फिर औरत ने जल्दी-जल्दी कपडे पहने और दरवाज़े की ओर बढी। पूछा—"बच्चो को जगा दूं ? उनसे भी मिल लो ज़रा।"

"नही, बिल्कुल मत जगाओ।" ग्रिगोरी ने दृढ स्वर में कहा। अपनी टोपी से थैली निकाली और सिगरेट रोल करने लगा। लेकिन अकसीनिया के बाहर निकलते ही वह पलग के पास गया और उसने बच्चो को बार-बार चूमा। इसी समय उसे नताल्या का खयाल हो आया और इसके साथ ही शुरू की बदनसीबी से भरी जिन्दगी की जाने कितनी बातें याद हो आईं। उसकी आँखे भर आईं।

इस बीच दून्या आ गई और ड्योढी पार करती हुई बोली—"अरे··· भैया ··प्रीवियत[1] ! तो तुम घर आ गए ? तुम पूरे मैदानी इलाके मे इस तरह मारे-मारे फिरे···" और उसकी आवाज पीडा से भारी हो उठी—"खैर ··बच्चे अपने बाप को भर-आँख देखने को आज तक सही-सलामत है · बेचारे बाप के रहते यतीम हो गए है।"

ग्रिगोरी ने बहन को गले लगाया और सख्ती से बोला—"धीरे से बोलो ! बच्चो को जगा दोगी क्या ?···छोडो···ये सब बेकार की बातें छोडो···यह सब तो मैं पहले भी सुन चुका हूँ ··मेरे अपने ही दुख-दर्द कुछ कम नही है···यह सब सुनने के लिए तो मैंने तुम्हे बुलाया नही। यह बतलाओ कि तुम इन बच्चो को ले जाओगी और इनकी देखभाल करोगी ?"

"लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो ?"

"मैं यहाँ से जा रहा हूँ, और अकसीनिया को अपने साथ लिये जा रहा हूँ। तुम बच्चो की देखरेख कर लोगी ? कोई काम मिल जाए··· फिर, मैं आकर ले जाऊँगा इन्हे।"

"इसमे पूछने की क्या बात है ? अगर तुम दोनो चले जाओगे तो मैं तो बच्चो को ले ही जाऊँगी। वे न तो सडको पर छोड दिए जा

---

१. अभिवादन।

सकते है और न अजनबियो को सौंप दिए जा सकते है।"

ग्रिगोरी ने मुंह से कुछ कहे बिना अपनी बहन को चूमा और बोला—"बहुत-बहुत शुक्रिया···मेरी बडी प्यारी बहन है तू···मैं जानता था कि तू इन्कार नही करेगी।"

नताल्या बक्से पर बैठ गई और पूछा—"तुम जा कब रहे हो? फौरन ?"

"हाँ।"

"लेकिन घर और फार्म का क्या होगा ?"

अकसीनिया ने सकुचते हुए कहा—"तुम जो चाहो सो करना! चाहो तो घर मे किसी को रख लेना वरना जो जी में आए वही ठीक। वैसे जो कपडे-लत्ते और दूसरी चीजें हो, उन्हे खुद ले लेना।"

दून्या ने पूछा—"लेकिन, मैं लोगो से क्या कहूँगी ? जब वे मुझसे पूछेंगे कि कहाँ गईं तुम, तो क्या जवाब दूंगी मैं ?"

"कह देना कि मैं कुछ नही जानती।" ग्रिगोरी ने कहा और अकसीनिया की ओर मुड़ा—"अकसीनिया, ज़रा जल्दी करो न। बहुत साज-सामान अपने साथ न लो ··ले लो सिर्फ एक गरम जैकेट, दो-तीन कमीजें, सारी-की-सारी लिनेन और एकाध वक्त का खाना और बस।"

उषा की प्रकाश-किरणें अन्तरिक्ष से झाँकी कि ग्रिगोरी और अकसीनिया ने दून्या से विदाई ली और अब तक सोते बच्चो को चूमकर दोनो बाहर आए। इसके बाद नाले की तरफ़ बढे।

ग्रिगोरी बोला—"हम दोनों इसी तरह एक बार यागोदनोये गए थे···मगर उस वक्त तुम्हारी गठरी ज़रा और बड़ी थी और खुद हम जवान कही ज़्यादा थे।"

अकसीनिया ने हर्ष से भरकर कनखी से उसकी ओर देखा और जवाब दिया—"लेकिन मेरा मन बराबर डर रहा है कि मैं हमेशा की तरह कही आज भी महज़ सपना ही तो नही देख रही। इसलिए तुम अपना हाथ इधर करो ताकि मैं उसे छूकर मन को यकीन दिलाऊँ।" औरत धीरे से हँसी और चलते-चलते ग्रिगोरी के कधे से सट गई।

ग्रीशा ने देखा तो उसे उसकी आँखें आँसुओ से सूजी हुई, पर खुशी

से लौ देती लगी । सुबह के अँधेरे मे गालो पर पीलापन छिटका नजर आया। उसके होठो पर मुस्कान दौड गई और वह मन-ही-मन सोचने लगा—'तैयार होकर इस तरह आई है जैसे कि किसी के घर मेहमानी खाने जा रही हो। किसी चीज से डरती नही। औरत दिलेर है।'

फिर जैसे कि उसके मन के विचारो के जवाब मे अकसीनिया बोली—"देखा कैसी औरत हूँ मैं···तुमने जैसे कि सीटी भर दी और मैं कुत्ते की तरह तुम्हारे पीछे दौडती चली आई···ग्रीशा, तुम्हारे लिए मेरे मन मे इतना प्यार और इतनी कलप है कि उसी मे जकड उठी हूँ मै···बच्चो के लिए मन जरूर दुख रहा है···मगर···खैर···अब तो मैं तुम्हारे कदमो के पीछे-पीछे चलूँगी···मुझे मौत तक की कोई परवाह नही।"

घोडे पैरो की आहट पाकर हीसे। इस बीच आसमान मे उजाला और छिटक गया और पूर्व की ओर एक हिस्सा गुलाबी मे नहा उठा। दोन के पानी से धुंध बराबर उठती रही।

ऐसे मे ग्रिगोरी ने घोडे खोले और अकसीनिया को मदद देकर एक पर बिठाया तो उसके पैरो के हिसाब से रकाबो की पट्टियाँ कुछ बडी लगी। उसे अपनी अक्ल पर गुस्सा आया। उसने पट्टियाँ छोटी की और फिर दूसरे घोडे पर खुद सवार हो गया। बोला—"मेरे पीछे-पीछे रहना अकसीनिया! नाले से बाहर निकलते ही हम घोडे सरपट दौडाएँगे। तुम बहुत हिलना-डुलना मत। साथ ही, रासें ढीली मत करना··· तुम्हारे घोडे को यह पसन्द नही। और हाँ, अपने घुटनो का खयाल रखना। घोडा अक्सर खिलवाड-खिलवाड मे घुटनो मे दाँत मार देता है···अच्छा·· तो फिर···चलो।"

सुखोई घाटी तक का कोई आठ वर्स्ट का फासला उन्होने जल्दी ही तय कर लिया और सूरज निकलते-निकलते वे जगलो के पास के इलाके मे पहुँच गए। यहाँ ग्रिगोरी घोडे से उतरा और हाथ देकर अकसीनिया को उसके घोडे से नीचे उतारने लगा। मुस्कराते हुए बोला—"क्यो, कैसा लगा? आदत न हो तो घुड़सवारी काफ़ी तकलीफ देती है···है न?"

अकसीनिया का चेहरा इस नए अभ्यास से तमतमाया रहा और उसकी काली आँखें बिजली-सी कौंध-कौंध उठी। उसने ग्रिगोरी की तरफ देखा। "अच्छा लगा···कम-से-कम पैदल चलने से तो बेहतर रहा ही।" फिर ज़रा परेशानी से मुस्कराई—"ग्रीशा, तुम ज़रा मुड़ो तो···देखूं···पीछे चिपका हुआ है कुछ······"

"कुछ नही है···जो कुछ भी है, छूट जाएगा।" ग्रिगोरी ने उसे विश्वास दिलाया—"थोडा चलो, लगता है कि तुम्हारे पैर कांप रहे हैं।" फिर, आँखें सिकोडकर, स्नेह और छेड़छाड-भरे स्वर मे बोला—"हो तुम शानदार कज्ज़ाक !"

घाटी के सिरे पर एक हरी-भरी, हमवार जगह देखकर बोला—"यहाँ पडाव रहेगा अपना···तुम ठीक-ठाक हो लो, अकसीनिया !"

उसने ज़ीने खोली, घोडे बांधे और काठियाँ और हथियार पास की एक झाड़ी के नीचे ला रखे। घास ओस से नहाई लगी और ओस की बूंदो के नीचे, घास की पत्तियाँ सिलेटी-भूरी मालूम हुईं। लेकिन, ढाल पर जहाँ तडके का अंधकार अब भी थोडा-बहुत बना हुआ था, वहाँ घास का रग हल्का नीला प्रतीत हुआ। फूलों की अधखुली पलको के साए मे शहद की बडी, नारंगी मक्खियाँ ऊँघती रही। स्तेपी के ऊपर बुलबुलो के बजते हुए स्वर गूँजते रहे और मैदान के अनाज के खेतों और घास के पसारों के बीच बटेरें कहती रही—"सोने का वक्त हुआ···सोने का वक़्त हो गया !"

ग्रिगोरी ने पास के, नए शाहबलूत के पेड़ के पास की घास पैरो से रौंदी और एक काठी की टेक लगाकर पड़ रहा। और फिर लवा-पंछियों के तेज़ स्वरो, चातक-पछियो की लोरियों और दोन के उस पार के, रात मे भी पूरी तरह ठडे न पडने वाले रेतकणो के पास से आने वाली हवा उसे थपक-थपककर सुलाने लगी। यानी, उसकी जगह कोई और होता तो शायद अपनी मनमानी करता, पर बराबर कई रातें पलको मे ही बिताने के कारण नीद पर उसका अपना कोई बस न चला। ऊपर से भी बटेरो ने बार-बार आग्रह किया तो उसने अपनी पलकें मूँद ही ली। अकसीनिया बग़ल मे चुपचाप बैठ गई, विचारो मे

डूबते हुए, एक फूल की बैजनी पखडियाँ अपने होठों से चुनने लगी, और, दाढी की खूँटियो से भरे गालो को फूल के डठल से छेडते हुए, धीरे से बोली—"ग्रीशा'' यहाँ कोई पकड नही सकता हम दोनो को ?'

ग्रिगोरी ने जैसे-तैसे ऊँघ काटी और भर्राई आवाज मे बोला—"मैदान मे हर तरफ सन्नाटा है···कही कोई नही है···अकसीनिया, मैं थोडा-सा सो लूँ···तुम घोडो पर नजर रखना···बाद मे तुम भी सो लेना···मैं नीद और थकान से चूर चूर हूँ···पिछले चार दिन से···खैर इसकी बात पीछे होगी।"

"सो जाओ···राजा मेरे···आराम से सो जाओ।" अकसीनिया उस पर झुकी, ग्रिगोरी की भौह के ऊपर से बालो का एक लच्छा हटाया और उसे हल्के से चूम लिया। जरा देर बाद फुसफुसाती हुई बोली—"मेरे राजा···मेरे ग्रीशा, तुम्हारे तो सफेद बाल है! तो, बूढे हो रहे हो तुम ? लेकिन, अभी कल की ही तो बात है कि तुम कम-उम्र थे···जवान थे···" उसने मुस्कराते हुए, उदासी से भरी निगाह उसके चेहरे पर डाली।

ग्रिगोरी चैन से सो गया और नीद मे उसका मुँह थोडा खुल गया। उसकी काली बरौनिया और उनके सिरे धूप मे धीरे-धीरे कँपकँपाते रहे। ऊपरी होठ रह-रहकर फडकता रहा और इस तरह भिचे हुए उजले दाँत चमक-चमक जाते रहे।

अकसीनिया ने उसे गौर से देखा और अब उसकी समझ मे आया कि उससे बिछुडने के बाद, पिछले कुछ महीनो मे वह सचमुच कितना बदल गया है! भौहो के बीच के गहरे, सीधे बलो, मुँह के भावो और गाल की उभरी हुई हड्डियो से सख्ती ही नही, बेरहमी तक छलकती लगी। औरत को पहली बार लगा कि घोडे पर सवार, हाथ मे नगी तलवार लिये, यह आदमी लडाई के मैदान मे बहुत ही खूँखार लगता होगा। उसने आँखे नीची कर उसके बडे-बडे, गाठ-गठीले हाथो पर एक निगाह डाली और जाने क्यो उसके मुँह से एक सर्द आह निकल गई।

थोडी देर बाद वह उठी, और शबनम से भीगने से बचाने के लिए अपनी स्कर्ट के सिरे को ऊपर उठाए हुए मैदान के दूसरे सिरे की ओर

बढी। पास ही पानी की एक धारा ककडो से खिलवाड करती, धीरे-धीरे बहती मिली। दोनो तरफ के पत्थरों पर हरी काई की गोट लगी दीखी। अक्सीनिया धारा के पास पहुँची, ठडा पानी पिया, हाथ-मुँह धोया और सूखे रूमाल से तमतमाया हुआ चेहरा पोंछा। उसके होठो पर शाति-भरी मुस्कान खिल गई···आँखे खुशी से लौ देने लगी। ग्रिगोरी एक बार फिर मिल गया था उसे। अनजानी उँगलियाँ इशारे कर रही थीं और खुशियो के देश की तरफ एक बार फिर बुला रही थी उसे···हालाँकि इन खुशियों की चाँदनी चार दिन की थी···पर, कितनी रातें उसने पलकों मे काटी थी और सिर्फ आँसू बहाए थे···कितने दु ख उठाए थे पिछले कुछ महीनो मे···अभी परसों ही वह बाग मे थी कि पास के खेतो मे आलू की खुदाई करते-करते औरतो ने दर्द-भरा एक गाना छेड दिया था···इस तरह दिल के जाने किस जख्म का टाँका खुल गया था कि वह तडप-तडप उठी थी और लाख न चाहते हुए भी कान लगाकर सुनती रही थी···गीत में कहा गया था :

मेरे दूधिया कलहस, लौट आओ,
अब तो घर लौट आओ।
तैरना खत्म करो।
बहुत वक़्त हो गया, पानी मे तैरना खत्म करो।
अब तो मेरे आँसुओ का तार टूटना चाहिए।
पलको के सारे मोती रीत गए हैं।
मैं यानी एक अबला।
अकेले पड़ी।
जाने कब से रो रही हूँ!

औरत ऊँचे स्वर मे अपनी फूटी किस्मत का रोना रोती रही थी और अकसीनिया पर उसका अपना काबू न रह गया था···आँखो से आँसू बह चले। इस पर अपने मन की कचोट और तड़प को बहलाने के लिए उसने काम मे डूबना चाहा था। लेकिन आँखें धुँधला उठी थी। आँसू आलू के पौधो और मेरे हाथो पर टपाटप गिरने लगे थे, और कुछ भी देखना मुश्किल और काम नामुमकिन हो गया था। उसने खुरपी एक

तरफ रख दी थी। खुद जमीन पर पड रही थी और फिर हाथो मे चेहरा छिपाकर फूट-फूटकर रोती रही थी।

यानी, अभी कल ही अकसीनिया अपनी जिन्दगी पर लानत बरसा रही थी और आस-पास की हर चीज़ उसे बादलो से भरे दिन-सी नीरस और उदास लग रही थी। लेकिन आज सब-कुछ बदल गया था···अब वही हर चीज उसे खुशी से खिली, और चमाचम नजर आ रही थी, जैसे कि गरमी का दिन हो और बादल टूटकर बरसने के बाद अभी-अभी छँटे हो।

सो, उगते सूरज की तिरछी किरणो में दहकती शाहबलूत की पत्तियो को एकटक देखते हुए अकसीनिया ने सोचा—'यह जिन्दगी हमे भी हमारी जगह देगी।'

झाडियो के पास और धूप के ऐन नीचे, रग-बिरगे, खुशनुमा फूल मह-मह करते दीखे। अकसीनिया ने अजरी भर चुने, ग्रिगोरी के पास जा बैठी और अपनी जवानी के दिनो की याद मे माला गूँथने लगी।

माला गुँथ गई तो वह उसे सराहती बैठी रही। फिर, उसने उसमे जगली जवा के कई गुलाबी फूल गूँथे और उसे ग्रिगोरी के माथे पर सजा दिया।

कोई नौ बजे घोडो के अचानक हिनहिनाने पर ग्रिगोरी चौककर उठ बैठा और हथियारो की तलाश मे चारो तरफ हाथ दौडाने लगा।

अकसीनिया शात भाव से बोली—"कोई भी तो नही है कही ·· तुम इस तरह डर क्यो गए ?"

ग्रिगोरी ने अपनी आँखे मली और नीद भरे-ही-भरे मुस्कराया—"मैं तो खरगोश की तरह चौकन्ना रहने का आदी हो गया हूँ···सोता हूँ तो भी एक आँख से झाँकता रहता हूँ और मामूली-से-मामूली आहट पर चौकता रहता हूँ···आदत छोड़ने मे वक़्त लगता है, रानी···मैं बहुत देर तक सोता रहा क्या ?"

"नही···ऐसा तो नही है···तुम और सोना चाहते हो क्या ?"

"इसकी न पूछो···बदन को पूरा आराम तो तब मिले जब मै चौबीसो घटे सोता रहूँ···खैर···आओ, चलो, नाश्ता कर ले···घोडे

की काठीवाले मेरे थैले मे रोटी और चाकू है···तुम निकालो··इस बीच मैं जाकर घोड़ों को पानी पिलाए लाता हूँ।"

ग्रिगोरी उठा और अपना बरानकोट सम्हालकर कधे झटकने लगा। इस बीच धूप मे खासी तपन आ गई। हवा से पेडो की पत्तियाँ खड़खडाने लगी और इस तरह खडखड़ाने लगी कि जलधारा की मद कलकल खो-खो गई।

वह घोड़ो को लेकर जलधारा के किनारे पहुँचा। वहाँ उसने कंकड़ो और पेडों की टहनियो की मदद से बाँध बनाया, तलवार से मिट्टी खोदी और ककडो के बीच की सधो मे भर दी। इस तरह पानी बाँध के उस पार जमा हो गया तो उसने घोडों को नीचे उतारा, जी भर पानी पीने दिया, फिर उनकी लगामो के दहाने हटाए और उन्हे दुबारा चरने को छोड दिया।

नाश्ता करते समय अकसीनिया बोली—"यहाँ से कहाँ चलेगे हम लोग ?"

"मोरोज़ोव्स्की ! हम प्लातोव तक घोड़ो पर चलेंगे और बाद मे पैदल।"

"घोड़ों का क्या होगा ?"

"इन्हें छोड़ देंगे कही।"

"यह तो बहुत ही खराब बात होगी, ग्रिगोरी ! बड़े अच्छे घोडे है। भूरावाला तो ऐसा है कि देखते जाओ, देखते जाओ, जी ही नही भरता। उसे भी छोड़ दोगे तुम ? वह तुम्हे मिला कहाँ था ?"

"मिला कहाँ था ?" ग्रिगोरी मुस्कराया और साथ ही उसका मन ग्लानि से भर उठा—"मैंने यह घोडा एक उक्रइनी से लूटा था।"

और, थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोला—"खराब बात हो और चाहे अच्छी बात हो, इन जानवरो को राह में कही-न-कही छोडना तो पड़ेगा ही···घोडो की तिजरात तो हमारा पेशा है नही।"

"लेकिन, यह रायफ़ल तुमने अपने साथ क्यो लाद रखी है ? फायदा ? आसमान वाला न करे कि उस पर किसी की नजर पडे··· कहीं पड़ गई तो इसकी बदौलत हमारी मुसीबतो की गिनती न

रहेगी ।"

"रात मे किसकी नज़र पडेगी ?" साथ रखी है वक्त-ज़रूरत के लिए । इसके बिना कुछ खाली-खाली-सा लगता है । वैसे घोडे कही छोड़ूँगा तो साथ ही इसे भी छोड दूँगा । इसके बाद इसकी ज़रूरत रहेगी नही ।"

नाश्ते के बाद दोनो बरानकोट पर लेट गए । फिर ग्रिगोरी ने नीद को टालने की बड़ी कोशिश की, मगर वह तो घिर-घिरकर आने लगी । दूसरी तरफ···अकसीनिया ने कुहनी की टेक लगाकर उसे पूरी दास्तान सुनानी शुरू की कि उसके बिना कैसे-कैसे ज़िन्दगी काटी और पिछले कुछ महीनो मे कितना कुछ सहा । ग्रिगोरी टूटकर घिरती नीद के बीच उसकी बाते सुनता रहा, पर आलस्य से भारी पलके उसके खोले न खुली । बीच-बीच मे तो पूरी बात-की-बात ही गोल हो गई । पहले आवाज़ दूर से आती लगी । फिर एकदम हल्की पडी और फिर बिल्कुल डूब-डूब गई । वह सिहरा और जागा, मगर कुछ क्षणो मे ही पलके दुबारा बद हो गईं । थकान इच्छा और कामना से इक्कीस बैठी ।

अकसीनिया कहती गई—"बच्चे तुम्हारे लिए बहुत कलपे । अक्सर पूछा—'पापा कहाँ है ?' मैंने उन्हे दुलार से सहेजा और उन्हे बहलाने की भरसक कोशिश की । नतीजा यह हुआ कि दोनो मुझसे खूब हिल गए और उनका दून्या के यहाँ जाना कम हो गया । पोल्युशका शरारती नही है···सीधी है···मैंने उसके लिए कपड़े के लत्तों की गुड़ियाँ बना दी तो वह मेज के नीचे बैठकर उन्ही मे उलझी रहने लगी । लेकिन मीशात्का ने एक बार परेशानी पैदा कर दी । गली से सिर से पैर तक काँपता हुआ, भागा-भागा आया । मैने पूछा—'क्या हुआ ?'···बस, फूट पडा और फिर फफक-फफककर रोया । बोला—'मेरे साथ लडके खेलते नही· कहते है तुम्हारा पापा डाकू है···माँ, क्या पापा सचमुच डाकू है ? और, डाकू कहते किसे है ?' मैंने कहा—'तुम्हारे पापा डाकू बिल्कुल नही···सिर्फ किस्मत के हेटे है ।' इस पर उसने सवालो की झडी लगा दी—'पापा किस्मत के हेटे क्यो है ?' और 'क़िस्मत का हेटा होता

क्या है ?' मुझसे जवाब देते न बना। ये बच्चे अपने-आप ही मुझे माँ कहने लगे। ग्रीशा, तुम यह मत समझना कि मैंने सिखलाया है इन्हे। लेकिन, मिखाइल बच्चो के साथ हमेशा ही मोहब्बत से पेश आया··· इनके मामले मे उसने हमेशा ही ममता बरती। मुझसे तो मुँह तक खोलकर नही दिया···मुझे देखा तो या तो पीठ फेर ली या तेजी से बगल से निकल गया। मगर, बच्चो के लिए तो कई बार व्येशेन्स्काया तक से चीनी लाया।···प्रोखोर तुम्हारे लिए बराबर कलपा। अकसर बोला—'हमने एक सचमुच नेक आदमी खो दिया।'···अभी पिछले हफ्ते आया और तुम्हारी बातें करते-करते उसकी आँखे छलछला आईं।··· हाँ, वे लोग आए तो उन्होने मेरे घर की तलाशी ली···कोना-कोना उलटकर फेंक दिया।"

परन्तु ग्रिगोरी पूरी बात सुन न पाया और बीच मे ही सो गया। उसके सिर के ऊपर एक नए एल्म के पेड की पत्तियाँ हवा मे सरसराने लगी और रोशनी के पीले ताने-बाने उसके चेहरे के आर-पार तन उठे। अकसीनिया उसकी बद पलकें बहुत देर तक चूमती रही। फिर उसके बाजू की टेक लगाकर खुद भी सो गई और सपनो मे भी मुस्कराती रही।

रात काफ़ी भीग गई और चाँद उग आया, तब कहीं वे दोनो सुखोइ की घाटी से रवाना हुए। कोई दो घटे घोड़े दौड़ाने के बाद वे टीले से नीचे उतरे और चिर-नदी के किनारे पहुँचे। इस समय चरागाह मे मुर्गाबियाँ चीकती रही, नदी के नरकुलो वाले हिस्सो मे मेढक टर्र-टर्र करते रहे और दूर कही तितलौवा की खोखली आवाज रह-रहकर हवा मे भाँय-भाँय करती रही।

नदी के किनारे-किनारे फैली बगीचियो मे धुध और भी उदास और मलिन लगने लगी।

···ग्रिगोरी छोटे पुल के पास ही रुका।···आधी रात का सन्नाटा पूरे गाँव पर छाया रहा कि उसने घोड़े को एड लगाई और एक तरफ को मुड़ा। पुल पार करने का खयाल उसे न भाया, क्योंकि सन्नाटे पर यकीन करना वाजिब न जँचा और मन अन्दर-ही-अन्दर डरा।

गाँव के बाहर ग्रिगोरी ने, अकसीनिया के साथ नदी पार की और एक पतली गली मे मुडा ही था कि पास की खाई से एक आदमी उभरा···तीन उसके बाद उभरे—"रुको···कौन है ?"

ग्रिगोरी चीख पर इस तरह चौका, जैसे कि उस पर किसी ने चोट कर दी हो। उसने एकदम रासें खीची, अपने-आप पर काबू पाते हुए चिल्लाकर जवाब दिया—"दोस्त !" तेज़ी से घोडा मोडा और अकसीनिया से धीरे से बोला—"लौटो ! मेरे पीछे-पीछे आओ।"

अनाज की वसूली से सम्बन्धित फौजी टुकड़ी द्वारा रात की रखवाली के लिए चौकी पर तैनात चारो आदमी चुपचाप, धीरे-धीरे उन दोनो की ओर बढे। उनमे से एक सलाई जलाकर सिगरेट सुलगाने लगा। ग्रिगोरी ने अकसीनिया के घोडे पर पूरी ताकत से चाबुक जमाया। जानवर पीछे हटा और सरपट दौड दिया। ग्रिगोरी अपने घोडे की गर्दन पर दोहरा हो उठा और उसने पहले घोडे के पीछे-पीछे अपना घोडा डाल दिया। कुछ क्षणो तक काटता-सा मौन चलता रहा। पर इसके बाद गोलियाँ बरसने लगी और राइफलो की आग अधकार भेदने लगी। ग्रिगोरी ने गोलियो की सरसराहट और चीख साथ-साथ सुनी—"हथियार सम्हालो।"

भूरा घोडा जान छोडकर अधाधुन्ध दौडता रहा कि नदी से कोई दो सौ गज़ के फासले पर ग्रिगोरी के घोडे ने उसे पकड लिया और ग्रिगोरी बराबर आते हुए अकसीनिया से बोला—"और नीचे झुको··· अकसीनिया और नीचे झुको।"

लेकिन उसने रासें खीची और अपने को पीछे की ओर झटकते हुए एक ओर को लुढकने लगी। इसके बाद गिरने-गिरने को हुई कि ग्रिगोरी ने उसे साध लिया। भर्राए हुए गले से पूछा—"जख्मी हो गई हो ? कहाँ लगी गोली ? बोलो न !"

अकसीनिया चुप रही और उसकी बाँहों पर अधिक-से-अधिक झूलती गई। उसने घोडा दौडाते-दौडाते उसे सीने से कसे रखा। लेकिन वह जल्दी ही हाँफने लगा और फुसफुसाते हुए बोला—"ऊपर वाले के नाम पर कुछ तो बोलो ! आखिर तुम्हे हुआ क्या ?"

लेकिन औरत के मुँह से न एक शब्द निकला और न एक आह-कराह···

गाँव के कोई दो वर्स्ट बाहर ग्रिगोरी तेज़ी से सडक से कटा, पास की घाटी की ओर बढा, नीचे उतरा और अकसीनिया को उसके घोड़े से उतारकर धीरे जमीन पर लिटाया।

इसके बाद उसने उसकी गरम जैकेट उतारी, पतला, सूती ब्लाउज़ चीरा और जख्म देखना शुरू किया। पता चला कि गोली बाएँ कधे की हड्डी चीरती हुई बदन मे धँसी और गले की दाईं हड्डी के नीचे से निकल गई। ग्रिगोरी ने खून से तर, काँपते हुए हाथो से काठी के थैले से लडाई के मैदान वाली अपनी पट्टियाँ और एक साफ बनियान निकाली। फिर उसने अकसीनिया को उठाकर अपने घुटने का सहारा दिया और गले की हड्डी के नीचे उमडती खून की धार को रोकने की कोशिश करते हुए घाव पर पट्टी बाँधना शुरू किया। मगर बनियान और पट्टियाँ जल्दी ही खून से नहा उठी और काली पड गईं। खून अधखुले मुँह से भी बहता दीखा और गले के अन्दर भी छलछलाता प्रतीत हुआ। ग्रिगोरी आशंका से सुन्न पड़ गया और उसे सारा खेल खत्म लगा। लगा कि जीवन की भयानकतम घटना घट गई।

उसने अकसीनिया को हाथों मे साधकर सीधा ढाल पार किया, घास और चरागाही हरियाली से भरा पतला रास्ता तय किया और पूरी सावधानी से घाटी की ओर बढ़ा। औरत का सिर बेसहारा होकर उसके कधे पर झूलता रहा। गले से सीटी की-सी आवाज़ होती रही, साँस सिसकियाँ भरती रही, बदन से खून बराबर चुसता रहा और मुँह से बह-बहकर ग्रीशा के सीने पर आता रहा।

घोडे उन दोनो के पीछे-पीछे घाटी तक आए और हींसते और लगाम के दहाने बजाते हुए हरी-हरी रस-भरी घास चरने लगे।

अकसीनिया ने तडका होने के जरा पहले ग्रिगोरी की बाँहो मे दम तोड़ दिया। होश आने का सवाल ही नही उठा। ग्रिगोरी ने बर्फ-से ठडे, खून से खारे उसके होंठ धीरे से चूमे, उसे सहारे से घास पर लिटाया और खुद उठकर खड़ा हुआ। मगर इसी समय जैसे किसी ने उसके

सीने पर जोर का घूँसा जमाया और वह ढह पडा। पर दूसरे ही क्षण वह आशंकित हृदय से, झटके से उठकर खडा हो गया। मगर दुबारा गिर पडा और इस बार सिर पत्थर से टकरा गया। इसके बाद पड़े ही-पडे उसने म्यान से तलवार बाहर खीची और उसकी मदद से कब्र खोदने लगा। मिट्टी जितनी ही नम, उतनी ही मुलायम महसूस हुई। ग्रिगोरी ने जल्दी-जल्दी हाथ चलाने शुरू किए, मगर सहसा ही अन्दर से गला घुटता-सा लगा तो आसानी से साँस लेने के लिए उसने कमीज़ का गर्दनवाला हिस्सा खीचकर चीर डाला। इस प्रकार सुबह की तरी, और ताजगी से भरी हवा पसीने से तर बतर सीने तक पहुँची तो उसे बहुत ही राहत मिली और काम उतना मुश्किल न रहा। उसने एक पल को भी दम नही लिया और बराबर मिट्टी खोदता रहा। मगर कमर तक गहरी कब्र की तैयारी मे, फिर भी बहुत वक्त लग गया।

इस बीच दिन चढ आया। ग्रिगोरी ने अपनी अकसीनिया को कब्र मे उतारा तो लिटाकर उसके जर्द साँवले हाथ सीने पर रख दिए और चेहरा रूमाल से ढक दिया कि आसमान को अपलक निहारती, अधखुली आखो मे मिट्टी न पडे।

इसके बाद उससे विदाई ली। सहसा ही मन के अन्दर से कोई विश्वास झाँककर बोला—'यह अलगाव बहुत दिन नही चलेगा···हम जल्दी ही मिलेगे।'

फिर, ग्रिगोरी ने हथेलियो से ढूह पर नम, पीली, चिकनी मिट्टी डाली और जाने कितनी देर तक सिर झुकाए, घुटनो के बल मजार की बगल मे बैठा रहा। उसका बदन हल्के-हल्के हरकत करता रहा।

अब उसे जल्दी कुछ न रही···उसका सब-कुछ उसके देखते-देखते दफन हो गया!

सूरज पूर्व की ओर से बहती, गरम हवा की धुआँ-भरी धुध को भेदता घाटी के ऊपर उठा। किरणो ने ग्रिगोरी के सिर के बालो मे चाँदी घोल दी और वे उसके पीले भयानक चेहरे पर फिसल आईं। वह जैसे कि घनघोर नीद से जागा और सिर उठाकर देखने लगा—ऊपर

का आसमान और आसमान में दमकता सूरज। आसमान उसे काला लगा और आँखो की रोशनी हर लेने वाले सूरज का गोला साँवला नज़र आया।

: १८ :

वसन्त के आरम्भ में बर्फ़ गलती है और जाडे मे नीचे दबी रहने वाली घास सूखना शुरू करती है तो स्तेपी मे जहाँ-तहाँ आग लग जाती है। फिर हवा के झोंकों के इशारे पर आग की लपटो की धाराएँ प्रवाहित हो उठती हैं। वे खुश्क फॉक्सटेल-घास को निगल लेती हैं, भटकटैया के लम्बे-लम्बे डठलो पर उछलती फिरती हैं, मगवोर्ट के भूरे सिरो पर फिसलती है, और गढे-गढैयो मे फैल जाती हैं। बाद मे आग से काली ज़मीन की जलायँध पूरे पसारे के ऊपर टँगी-सी रहती है। वैसे जहाँ यह सब नही होता, वहाँ हर ओर नई घास उगती है। हरियाली बडी ही सुहानी लगती है। अनगिनत बुलबुलें आसमान के नीलम में पर तोलती हैं, प्रवासी कलहंस घास-पात पर इधर-उधर मुँह मारते हैं और सारस गरमी के अपने बसेरे ठीक-ठाक करते हैं।

लेकिन दावानल जिधर से भी गुज़रता है, उधर ही धरती वीरान हो जाती है और कोयला बन जाती है। वहाँ कोई पछी घोंसला नही बनाता, कोई जानवर नही आता। सिर्फ़ हवा सफ़ेद राख और काली गर्द लिए-दिए दूर-दूर तक सर्राटे भरती रहती है।

आग मे झुलसे स्तेपी की तरह, ग्रिगोरी की ज़िन्दगी भी कोयला होकर रह गई। वह अपने मन की हर प्यारी चीज़ से महरूम हो गया। बेरहम मौत ने उससे सब-कुछ छीन लिया, सभी कुछ मिटाकर रख दिया। बचे महज़ बच्चे। लेकिन, इस पर भी वह खुद धरती से इस तरह चिपका रहा, जैसे कि उसकी टूटी और बिखरी हुई ज़िन्दगी का उसके और दूसरो के लिए सचमुच कोई बड़ा महत्त्व हो।···

सो, अकसीनिया को दफन करने के बाद वह तीन दिन तक स्तेपी मे मारा-मारा फिरता रहा। लेकिन न तो घर लौटा और न हथियार डाल देने की नीयत से व्येशेन्स्काया गया। चौथे दिन घोड़े उस्त खोपर-

स्काया जिले के एक गाँव मे छोडे, दोन पार की और स्लाशचेव्स्की के शाहबलूत के जगल की तरफ पैदल रवाना हुआ। इसी जगल के सिरे पर पिछली अप्रैल के महीने मे फोमीन के दस्ते ने मुँह की खाई थी। उस समय भी यानी पिछली अप्रैल मे भी उसने भागकर आने वाले लोगो के वही कही बसने की बात सुनी थी।

तो फोमीन के पास लौटने की बात तो उसके दिमाग में न आई, पर इन लोगो से मिलने का फैसला उसने जरूर किया।

फिर कई दिन तक लम्बा-चौडा जगल मँझाता फिरा। इस बीच भूख से कलेजा मुँह को आ गया, मगर इन्सान की कोई बस्ती कही नजर नही आई।

इस पर अकसीनिया की मौत के कारण तो वह आदमी ही बिल्कुल दूसरा समझ पडने लगा। अब उसमे न वह जान नज़र आती, और न वह हिम्मत ठाठे मारती। अब तो एक टहनी भी कही टूटती, एक पत्ता भी घने जगल मे खडखडाता और एक पछी भी कही रात मे बोल देता तो वह चौक उठता और डर जाता। खाने के नाम पर बस, जगली स्ट्रॉबेरियो के कच्चे फल, छोटी-छोटी जगली सापछतरियाँ, और जैतून की पत्तियाँ खाता। नतीजा यह कि बराबर झटकता जाता।···

होते-होते पाँचवे दिन वह भागकर आनेवाले उन लोगो को सुयोग से मिल गया, और वे उसे अपनी खाई मे ले गए।···

वे लोग गिनती मे सात थे। सभी स्थानीय गाँव के थे और फौजी भरती से बचने के लिए, पिछले साल, पतझर मे यहाँ आ बसे थे। उनकी खाई बिल्कुल कमरे जैसी थी। अन्दर बिल्कुल घर का-सा आराम मिलता था। शायद ही कभी किसी चीज़ की कमी महसूस होती हो। रात को वे अकसर अपने-अपने घर चले जाते, और लौटते तो डबल रोटी के छोटे टुकडे, मामूली रोटियाँ, आटा और आलू साथ ले आते। इसके अलावा वे अकसर ही किसी-न-किसी गाँव से एक-न-एक भेड पकड लाते और इस तरह गोश्त भी मुहय्या हो जाता।···

बस तो, उन लोगो मे से एक ने, यानी कभी बारहवी कज्जाक रेजीमेट मे काम करनेवाले एक कज्जाक ने ग्रिगोरी को पहचाना और बिना किसी

खास टालमटोल के वह दल मे शामिल कर लिया गया।

इसके बाद दिन-पर दिन बीतते गए, मगर मन से वह बराबर इतना टूटा रहा कि दिनो की गिनती ही दिमाग से निकल गई। इस प्रकार वह अक्तूबर तक जैसे-तैसे उस जगल मे रहा। पर पतझर आरम्भ होते ही वर्षा की झडी लगी और फिर सर्दी आई तो उसमे एक नई तड़प-सी अप्रत्याशित रूप से पैदा हो गई, और वह कलपने लगा अपने बच्चो को देखने के लिए, अपने गाँव की एक झलक पाने के लिए….

अब समय काटने के लिए वह दिनो-दिन तख्तो के पलग पर बैठकर लकडी के चम्मच बनाता, तश्तरियाँ गहराता और नाजुक लकडी से लोगो और जानवरो की मूर्तियाँ गढता। यानी, वह हर तरह के खयाल से बचने और कलप के जहर को अन्दर ही घुलने से बचाने की कोशिश करता। दिन मे तो वह अपने प्रयत्नो मे सफल हो जाता, मगर रात होते ही पिछली यादे घेर लेती, हसरत उसके दिल को ऐंठ-ऐंठ देती और वह पुआल के बिस्तरे पर करवटें बदलता रहता। क्षण-भर को भी पलक न झपती। दिन मे किसी तरह की कोई शिकायत उसके मुँह से न निकलती, पर रात को वह अकसर सिर से पैर तक काँपता हुआ उठता और चेहरे पर हाथ फेरता तो गाल और छ. महीने की बढी दाढी के बाल आँसुओ से तर मिलते।

अगर किसी तरह आँख लग भी जाती तो वह बच्चों, अकसीनिया, माँ और सभी मृत सगे-सम्बन्धियो को सपने मे देखता। उसे अपनी पूरी जिन्दगी अतीत के चारो ओर लिपटी लगती और वह अतीत उसे क्षणिक और उड जाने वाली नीद-सा मालूम होता। अक्सर सोचता—'बस, एक बार…सिर्फ़ एक बार पुरानी जगहो की एक झाँकी मिल जाए…सिर्फ़ एक बार अपने बच्चो को भर-नजर देख लूँ…फिर आँखें मुँदती हो तो भले ही मुँद जाएँ!…'

ऐसे मे वसन्त के आरम्भ में एक दिन अचानक ही चुमाकोव जाने कहाँ से आ गया, और कमर तक भीगा रहने पर भी हमेशा की तरह खुश और चुस्त लगा। उसने आग के पास खड़े होकर अपने कपड़े सुखाए,

और फिर तख्तो के पलग पर, ग्रिगोरी की बगल मे जा बैठा। बोला—"तुम्हारे चले आने के बाद हमने बडी लम्बी-लम्बी मजिले मारी, मेलेखोव! हमने करीब-क़रीब अस्त्राखान तक धावा मारा · काल्मीक का मैदान मँझाया···बडी लम्बी-चौडी दुनिया देख डाली। और, जितना खून बहाया, उसका तो कोई हिसाब ही नही है! लाल फौजियो ने याकोव-येफिमोविच की बीवी को धरोहर की शक्ल मे रख लिया और उसकी सारी जमीन-जायदाद ज़ब्त कर ली। नतीजा यह कि वह पागल हो गया और उसने सोवियत हुकूमत की मातहत काम करने वाले हर आदमी को तलवार क घाट उतारने का हुक्म दे दिया। और, हम मुदर्रिसो, डॉक्टरो और खेतिहर-रहनुमाओ वगैरा सभी को काट-काट-कर फेंकने लगे।···कहना मुश्किल है कि हमने किसे बख्शा! लेकिन आज हालत यह है कि उन्होने हमे हमेशा-हमेशा के लिए मिटाकर रख दिया है!" चुमाकोव आहे भरते और अब भी ठड से काँपते हुए बोला—"उन्होने पहले हमारी ताकत तीशान्स्काया के पास तोडी और फिर दुबारा, अभी एक हफ्ते पहले, हमे सोलोम्नी के पास कुचला। रात को तीन तरफ से घेर लिया। सिर्फ पहाड़ी की चोटी का एक रास्ता छोडा, मगर वहाँ घोडो के पेट तक बर्फ रही। इसके बाद तडका होते ही मशीनगनो से आग बरसानी शुरू की। इस तरह खात्मे की शुरुआत हुई।···लाल फौजियो ने हमे गाजर-मूली की तरह काटा। सिर्फ दो लोग बचकर निकल पाए—एक मैं, और एक फोमीन का कम उम्र बेटा दावीदका···फोमीन पिछले पतझर से उसे बराबर अपने साथ ही रखता रहा था···याकोव-येफिमोविच खुद मारा गया···मेरे देखते-देखते मार डाला गया···पहली गोली पैर मे लगी और घुटने की हड्डी उडा ले गई ···दूसरी गोली खोपडी के आर-पार हो गई। तीन बार अपने घोडे से गिरा···हमने हर बार उसे उठाया और काठी पर बिठाया, मगर थोडी दूर के बाद ही वह फिर भहरा पडा। तीसरी गोली, दाईं तरफ पसलियो मे लगी···इसके बाद हम मजबूर हो गए और हमे उसे जहाँ-का-तहाँ छोड देना पडा। मैंने थोडी देर तक घोडा सरपट दौडाने के बाद मुडकर देखा तो वह ज़मीन पर पड़ा दीखा और दो घुडसवार तलवारो से उसकी

बोटी-बोटी काटते नजर आए···"

ग्रिगोरी तटस्थ भाव से बोला—"खैर···यह तो होना ही था।"

चुमाकोव ने रात खाई मे बिताई और सुबह होते ही चलने को उठ खडा हुआ। ग्रिगोरी ने पूछा—"कहाँ जा रहे हो तुम ?"

चुमाकोव ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—"ऐशो-आराम की जिन्दगी की तलाश मे। तुम चलोगे मेरे साथ ?"

"नही···तुम अकेले ही जाओ।"

"तुम ठीक कहते हो···मेरी तुम्हारे साथ निभ भी तो नहीं सकती। तुम्हारा पेशा है प्याले और चम्मच बनाना, और इसमे मुझे कोई दिलचस्पी नही है।" चुमाकोव ने चुटकी लेते हुए कहा, टोपी उतारी और झुकते हुए बोला—"अमनपसन्द-डाकुओ···ऊपरवाला तुम्हे बचाए··· मेहमान-नवाजी और पनाह के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया···नीली छतरी-वाला तुम्हारी जिन्दगी को खुशी बख्शे! यहाँ तो खासी घुटन महसूस होती है। दिन-रात महज़ उँगलियाँ चटकाते रहते हो···यह भी कोई जिन्दगी है ?"

चुमाकोव चला गया। ग्रिगोरी इसके बाद सिर्फ एक सप्ताह जगल मे और रहा। फिर वहाँ से रवाना होने की तैयारी करने लगा।

वहाँ रहने वालो मे से एक ने पूछा—"घर जा रहे हो ?"

और, इस खाई में आने के बाद पहली बार ग्रिगोरी हल्के-हल्के मुस्कराया और बोला—"हाँ, घर जा रहा हूँ।"

"बहार तक रुको···मई-दिवस पर सरकार की तरफ से आम माफी दी जाएगी···और तब हम सभी लोग अपने-अपने घर चलेंगे।"

"नही···मैं ठहरूँगा नही।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया और सभी से बिदा ली।···

अगले दिन सवेरे वह दोन के ठीक सामने बसे अपने तातारस्की गाँव मे पहुँच गया, वहाँ अपने अहाते को एकटक देखता बहुत देर तक खडा रहा और प्रसन्नता और उमग से उसके चेहरे का रग जर्द पडता गया। फिर उसने राइफ़ल कधे से उतारी, उसे साफ़ करने का पटुआ और मशीनी तेल की छोटी-सी शीशी निकाली और जाने क्यो कारतूस

गिन डाले। बारह पूरे क्लिप और छब्बीस छुट्टा गोलियाँ निकली।

चट्टान के नीचे की बर्फ सिरे से पीछे हट गई लगी। हरा पानी रह-रहकर बौछार करता और किनारे की बर्फ की परत को तोडता दीखा। ग्रिगोरी ने अपनी राइफल और पिस्तौल नदी मे लुका दी, फिर कारतूस फेक दिए और अपने हाथ बरानकोट के सिरे से रगड-रगडकर पोछ लिए।

उसने गाँव के नीचे की तरफ से नदी पार की और मार्च की नीली, अध-गली, ऊँची-नीची बर्फ पर लम्बे-लम्बे डग भरता घर की ओर बढा। पर अभी थोडा फासला रहा कि मीशात्का घाटवाले ढाल पर नजर आया। पिता अपनी सम्हाल मे नही रहा और दौडता हुआ बेटे की ओर लपका।

मीशात्का पत्थर से लटकते बर्फ के नीले टुकडो को तोडता और फिर उन्हे ढाल पर फेक-फेककर एकटक देखता रहा। दूसरे शब्दो मे, उनका पूरा मजा लेता रहा।

ग्रिगोरी ढाल के पास पहुँचा और हाँफते हुए, भरे हुए गले से बेटे को आवाज देने लगा—"मीशात्का···नन्हे-मुन्ने, बेटे मेरे!"

मीशात्का ने डर से भरकर उसकी ओर देखा और पलके झुका ली। यानी, दाढी और भयावने चेहरे से उसने मन-ही-मन अनुमान लगाया और अपने पिता को पूरी तरह पहचान लिया।

दूसरी ओर ग्रिगोरी की हालत अजीब हो उठी। शाहबलूत के जगल मे बच्चो की याद आने पर वह जो प्यार-दुलार-भरे शब्द हर रात होठो-ही-होठो दोहराता रहा था, इस समय ये सब-के-सब एकदम दिमाग से उतर गए। वह घुटनो के बल बैठ गया और बच्चे के गुलाबी नन्हे-नन्हे ठडे हाथ चूमने लगा। आवाज़ गले मे फँसने लगी। मुँह से केवल निकला—"मेरे नन्हे राजा · मेरे प्यारे बेटे · "

फिर ग्रिगोरी ने बच्चे को गोद मे उठा लिया और भावावेश से लौ देती, प्यासी आँखें मीशात्का के चेहरे पर टिका दी। पूछा—"तुम सब लोग कैसे हो? बूआ कैसी है? पोल्युशका कैसी है? सब लोग ठीक-ठाक तो हैं?"

मीशात्का ने, अब भी अपने पिता की ओर देखे बिना, शात भाव

से उत्तर दिया—"दून्या बूआ ठीक हैं। लेकिन पोल्युशका पतझर मे मर गई···उसे डिप्थीरिया हो गया था···फूफा मिखाइल लाम पर हैं"

इस तरह आज ग्रिगोरी की एक ज़माने की हसरत पूरी हुई। इस छोटी-सी हसरत ने उसकी अनेक रातें काली की थी, पलक नही लगने दी थी···और, कलप से तलझा-तलझा कर रखा था। सो इस समय उसका अपना घर सामने था···वह खुद अपने फाटक पर खडा था···और, उसका दुलारा बेटा उसकी बाँहो में था।

इतना ही तो ज़िन्दगी ने बाकी छोडा था उसके लिए···बस, इतना ही तो था, जिसने उसकी साँसों का तार इस धरती और इस लम्बी-चौडी दुनिया से जोड रखा था।

नीचे धरती और लम्बी-चौडी दुनिया पडी दमक रही थी· आसमान से ठिठुरन से ऐंठी-अकडी धूप बरस रही थी।

●●●